श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

5

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

(दसवीं से बारहवीं रासि तक)

पांचवा खण्ड

भाई संतोख सिंह

भाषा विभाग, पंजाब

Shri Gur Pratap Suraj Granth

(Hindi) Vol. V

by

Bhai Santokh Singh

Transliterated and Annotated by
Harnam Singh

प्रथम संस्करण : --

मूल्य :--11 रु० 10 पैसे

प्रकाशक :
भाषा विभाग, पंजाब
पटियाला

मुद्रक :
स्वैन प्रिंटिग प्रैस,
अड्डा टाँडा, जालन्धर---1
द्वारा कण्ट्रोलर, प्रिंटिंग और स्टेशनरी विभाग,
पंजाब, चण्डीगढ़ ।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

प्राक्कथन

पंजाब को भारत की खड्ग भुजा कहा जाता है। यह ठीक भी है, किन्तु पंजाब को मात्र शक्ति एवं सम्पन्न प्रदेश कहना या समझना भ्रामक है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के कोष को भी पंजाब ने जगमगाते रत्नों से भरा-पूरा है। भ्रान्ति का कारण काफ़ी हद तक तालमेल की कमी तथा हमारी परतन्त्रता थी। इन्हीं कारणों से भारतीय अपने साहित्य और संस्कृति से कट गए और पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान को ही अपने जीवन की इति श्री मान बैठे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमारी भाषाओं और साहित्य ने भी करवट ली और इस दिशा में नवजागरण हुआ। इसका प्रभाव यह हुआ कि हम अपने प्रति जागरूक होकर अपने साहित्य और संस्कृति की ओर मुड़े। फलतः जहाँ देशीय भाषाओं में नव साहित्य सृजन प्रारम्भ हुआ वहाँ हमारी दृष्टि उस भूले-बिसरे साहित्य की ओर गई जो किन्हीं कारणों से जनता के सम्मुख नहीं आ पाया था।

भाषा विभाग, पंजाब ने ऐसे साहित्य को प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है और अब तक कई दुर्लभ ग्रन्थ यथा गुरु नानक प्रकाश, कथा हीर रांझणि की, पंचनद, ज्ञान त्रिवेणी इत्यादि हिन्दी जगत् को भेंट कर चुका है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' एक महान् रचना है। कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी ने इस अपूर्व काव्य-ग्रन्थ का सृजन बीस वर्ष की निरन्तर साहित्य साधना के पश्चात् किया। कवि का जन्म गाँव नूरदी, तहसील तरनतारन, जिला अमृतसर में भाई देवा सिंह जी के घर 1785 ई० में हुआ। भाई देवा सिंह जी, जिन्हें अपने काम धन्धे के लिए प्रायः अमृतसर आना पड़ता था, ने अपने सुपुत्र संतोख सिंह की शिक्षा-दीक्षा का भार ज्ञानी संत सिंह जी के हाथों सौंप दिया। इनके यहाँ रह कर भाई संतोख सिंह ने गुरुमत विद्या, संस्कृत और ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया। लगभग दस वर्ष तक 'बूड़िए' गाँव में रहने के पश्चात् वे कुछ समय के लिए पटियाला दरबार में आ गए। मगर महाराजा राम सिंह के यहाँ वे बहुत दिन टिक न सके। इसके पश्चात् वे श्री उदय सिंह, कैथल नरेश के राजाश्रय में आ गए जहाँ उनको सादर रखा गया :—

उदे सिंह बड भूप बहादुर।
कवि बुलाए राखिउ ढिग सादर।

(गरब गंजनी)

और फिर 1829 से जीवन पर्यन्त अर्थात् अक्तूबर, 1845 तक वहीं दरबारी कवि रहे और इस काल में उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इससे पूर्व वे नामकोष, गुरु नानक प्रकाश, गरब गंजनी, बाल्मीकि रामायण का काव्यानुवाद, आत्म पुराण आदि रचनाएं लिख चुके थे।

वस्तुतः गुरु नानक प्रकाश भी "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" का ही एक अंग है। गुरु नानक प्रकाश, जिसे पिछले वर्ष हम पाठकों के सम्मुख भेंट कर चुके हैं, में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्त काव्य-रूप में लिखा गया है। भाई संतोख सिंह जी इसी प्रकार अन्य गुरुओं के जीवन-काव्य लिखना चाहते थे। इसी आशा को फलीभूत करने के लिए उन्होंने गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की रचना की। उन्होंने स्वयं लिखा है :—

श्री गुरु को इतिहास जगत महि, रलमिल रह्यो एक थल सम नाहि
जिम सकता महिं कंचन मिले, बीन डावला ले तिह भले,
तथा जगत ते मैं चुनि लेऊँ कथा समसत सु लिख कर देऊँ।
बानी सफल बरन के कारण, करिहौ सत गुरु सु जस उचारन।
जिम दधि बिखै घ्रित मिल रहै, करहि कथन नीके शुभ लहै,
तिम जग महि बाद बिवादु, गुरु जस संची दे अहिलादु।

(गु० प्र० सू० अंशू 5)

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु-काव्य लिखने का बीड़ा उठाया। मगर यह कार्य कोई सरल नहीं था। गुरुओं के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए उन्हें कोई भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध न हुई। फिर भीउ न्होंने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, दशम ग्रन्थ, वारां भाई गुरदास, बाले वाली जन्म साखी, पंज सौ साखी, भक्त माल, ज्ञान रत्नावली, महिमा प्रकाश आदि ग्रन्थों का गहन अध्ययन तथा अनुशीलन किया। ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना एवं प्रतिभा का रंग चढ़ा कर इन्होंने अपने अद्भुत काव्य-भवन का निर्माण कर डाला।

इस बृहद् काव्य रचना का नाम उन्होंने गुरु प्रताप सूरज रखा था। इसलिए सम्पूर्ण कथानक को सूर्य की गति के आधार पर 12 राशियों, 6 ऋतुओं और 5 अयनों अर्थात् कुल बीस बड़े भागों में विभक्त किया है। पुनः सूर्य की किरणों के आधार पर अध्यायों को अंशुओं की संज्ञा प्रदान की गई है। इसलिए रचना के नामकरण तथा इसके रचना विधान में एक सुन्दर रूपक की कल्पना की गई है। सूर्य की भाँति गुरुओं का जीवन भी अंधकार को दूर करता है।

बारह राशियों में गुरु नानकोत्तर गुरुओं की जीवन गाथा है, छः ऋतुओं और अयनों में संत सिपाही श्री दशमेश जी का जीवन वृत्त दिया गया है। इस सम्पूर्ण रचना के कुल 1150 अध्याय हैं, जिनका विवरण निम्न अनुसार है :—

सूरज गुरु प्रताप ते, बरनी द्वादश रासि,
अपट साच पातशाह के, बरनों वर गुण रास । (15)
दछणाइने उतराइणे, अयन बनैंगे दोइ,
बरनत रितु जो खषट शुभ, तिम पर बरनन होइ । (16)
प्रथम कही कविता रुचिर, श्री नानक प्रकाश,
पूरबारध उतरारध इम, बर बरने गुण लास । (17)
अब कलगीधर की कथा, खषट रुतन पर होइ,
गुरु प्रताप सूरज भयो, या ते सभ गति जोइ । (18)

(गु० प्र० रु०, अंशु 1)

केवल परिमाण और आकार की दृष्टि से देखें तो पंजाब के इस हिन्दी कवि की इस अद्वितीय रचना की तुलना में विश्व भर के किसी अन्य कवि की रचना नहीं ठहर पाती । पंजाब के प्रत्येक गुरुद्वारे में सायंकाल इस ग्रंथ की विधिवत् एवं नियमित कथा की जाती है ।

भाई साहिब ब्रजभाषा के विद्वान् कवि होने के साथ-साथ, संस्कृत, पंजाबी तथा अन्य कई भाषाओं के महान् पण्डित थे । बाल्मीकि रामायण तथा आत्म पुराण जैसे संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद इसका ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं । यह तो गुरु प्रताप सूरज के प्रारम्भ में दिए गए, 'मंगलाचरण' से भी भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं पर कितना अधिकार प्राप्त था ।

कवि की काव्य प्रतिभा को परखने के लिए हमारे पास उनके दो ग्रंथ हैं, गुरु नानक प्रकाश और श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ । इनमें ऐसा काव्य सौष्ठव है कि हर पंक्ति पर कवि की काव्य प्रतिभा को देखकर चकाचौंध हो जाना पड़ता है । भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से ही ये अनुपम काव्यत्व के स्वामी ठहरते हैं ।

सोलहवीं-सत्तारहवीं शती में हिन्दी साहित्य में भक्ति-भाव की काव्य रचना का बाहुल्य था । इस धारा के शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास (1532-1625) और सूरदास (1475-1563) थे । गोस्वामी तुलसीदास जी और सूरदास के काव्य मृदुलता और मधुरता के लिए अद्वितीय हैं और इनका काव्य लोक-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत है । कुछ ऐसी ही बात चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी के समूचे काव्य-जगत के बारे में भी कही जा सकती है । चाहे इनकी रचना भक्ति भावना प्रधान है फिर भी यह भक्ति काल के अन्तर्गत नहीं आती ।

इस ग्रंथ के हिन्दी में प्रकाशित होने से आलोचक इसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे और अन्य हिन्दी कवियों के परिप्रेक्ष्य में पंजाब के इस मेधावी हिन्दी-सेवी का यथोचित स्थान निर्धारित कर पायेंगे । कवि ने इसमें पौराणिक शैली को अपनाया है । इस रचना को इसी दृष्टि से देखना उपयुक्त होगा । भाई संतोख सिंह का काव्य [illegible] है जिसकी [illegible] के बारे में किसी [illegible] कवि ने लिखा है —

कविता अपार है कि गुन को पहार है,
कि माधुरी आगार है, कि भाव कवि कोश है ।
भूखन है कवि के कि दूखन हा कवि के,
बिदूखन के बीच भी प्रसिद्ध हरि दोष है ।
बानी ही उतंग है सु अंक हीऊ रंग है,
अनग अंग अंग के बिसूत्रन निसेस है ।
नानक अरथ जोऊ कीनो कली कल सोऊ,
नाम तो संतोख सिंह धीयवर कोश है ।

पाँचवी जिल्द का लिप्यन्तर प्रो० हरनाम सिंह जी ने किया है । इसमें गुरु हरि राइ जी के कर्त्तारपुर आने से उनके बैकुण्ठ गमन, गुरु हरि कृष्ण जी का सम्पूर्ण जीवन एवं गुरु तेग बहादुर जी की अद्वितीय शहादत तक का वृत्तान्त है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत् पंजाब के इस महाकवि की महान् रचना का भव्य स्वागत करेगा ।

रजनीश कुमार
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब ।

पटियाला
1.10.75

विषय सूची

अंशु पृष्ठ

दसवों राशि

ग्यराहवीं राशि

बारहवीं राशि

राशि दसवीं

१ओं सतिगुर प्रसादि ।

श्री वाहिगुरु जी की फते ॥

अथ दसमि राशि कथनं ॥

अंशु १

श्री हरिराइ करतारपुर आवनि प्रसंग

१. इष्टदेव – स्री अकाल पुरख —मंगल

दोहरा

सति चित अनंद प्रमातमा सभि जीवन को जीव ।
सदा शांति, नभ सम रव्यो, सरब शकति को सीव[1] ।। १ ।।

२. मिर्यादा का मंगल ।

कबित्त

चंद्रमा बदन, शुभ मत्ति की सदन सद,
बिसद रदन की दिपति दुति दामनी ।
बेनु दंड पाणी तीन लोक मैं सुजान जाणी,
सभैं मन भाणी[2] महाराणी अभिरामनी ।
पुंज गुन खाणी, गन बिघन पराणी गाणी,
अरुण बरण पाणी, सलिता प्रगामनी ।
महां मोद माणी, बाणी रूप है समाणी जग,
बंदना संतोख सिंह राणी दिन जामनी ।। २ ।।

३. इष्ट गुरु—श्री गुरु नानक देव जी का—मंगल ।

सुंदर कीरति चंद्रिका चहुंदिशि तन्यो बितान ।
श्री नानक जग गुरु को नमो जोरि जुग पान[3] ।। ३ ।।

४. इष्ट गुरु—श्री गुरु अंगद देव जी का—मंगल ।

अजर जरनि, धीरज धरनि धरनि मनिंद बिलंद ।
श्री अंगद पद पदम को बंदन बिघन निकंद ।। ४ ।।

५. इष्ट गुरु—श्री गुरु अमरदास जी का—मंगल ।

कुल भल्लयनि की कलस भे अजमत[4] के दातार ।
श्री गुर अमर अनंद मैं नमो चरन परि धारि ।। ५ ।।

1. सीमा । 2. मन को अच्छी लगने वाली । 3. हाथ । 4. करामात ।

६. इष्ट गुरु—श्री गुरु रामदास जी का—मंगल ।

सदा शांति चित ग्रिहसत महिं बडि सोढी सुलतान ।
रामदास श्री सतिगुरु तिनि पद बंदन ठानि ॥ ६ ॥

७. इष्ट गुरु—श्री गुरु अरजन देव जी का—मंगल ।

हेत भविक्ख्यत तारिबे[1] रच्यो ग्रिथ श्रुति सारि ।
श्री अरजन पग कमल पर नमसकार सिर धारि ॥ ७ ॥

८. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि गोबिंद जी का—मंगल ।

कट निखंग[2], कर धनु धरे, सिपर[3], दोइ शमशेर ।
म्रिग शत्रू समुदाइ को संघर महिं सम शेर ॥ ८ ॥

९. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि राइ जी का—मंगल ।

करे रंक ते राव गन श्री मुख ते कहि बैन ।
श्री सतिगुर हरि राइ जी सिमरे जिन जम भै न ॥ ९ ॥

१०. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि क्रिशन जी का—मंगल ।

बालिक बय[4] अति शकति महिं दरशन ते दुख जाइ ।
श्री हरि क्रिशन अनंद घन बंदौं पंकज पाइ ॥ १० ॥

११ इष्ट गुरु—श्री गुरु तेग बहादर जी का—मंगल ।

सिमरे हादर[5] होति हैं चादर सेवक ब्रिंद ।
तेग बहादर सतिगुरु सादर तिनि पद बंदि ॥ ११ ॥

१२. इष्ट गुरु—श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का—मंगल ।

तुरक तेज तम[6]—तोम[7] को हरता भानु[8] मनिंद ।
श्री गुरु गोबिंद सिंह जी करता दास नरिंद ॥ १२ ॥

कबित्त

सभै गुन ऊर, भरपूर भयो औगुननि,
काम क्रोध कूर हूं की ब्रिद्धता फरद[9] की ।
होयो मनि चूर चूर, रही मति झूरि झूरि,
देखि रह्यो दूर दूर, दारु न दरद की ।
मिले गुरु पूरन संतोख सिंह तूरन[10],
सो लखि दुख भूर गति एकली नरद की ।
नाम है शरन सूर पावन पतित हूर,
राखि हैं जरूर लाज आपने बिरद की ॥ १३ ॥

---

1. उद्धार करने के लिए 2. तर्कश । 3. ढाल । 4. आयु । 5. हाज़र । 6. अंधेरा । 7. गहरा । 8. सूरज । 9. फर्द । 10. प्रसन्न ।

१३. समसत गुरुओं का मंगल ।

दोहरा

बरनौं दसमी रास को सभि सतिगुरु मनाइ ।
बिघन बिनाशनि को करहिं होवहिं सदा सहाइ ।। १४ ।।

चौपई

कीरतिपुर केतिक दिन बासे । दास उधारनि बिलस बिलासे ।
नेती माता दोनहु भ्राता । प्रिथक प्रिथक जाने निज ताता ।। १५ ।।
हित के मधुर बचन कहि करि कै । चहिति मिलावनि को सुख धरि कै ।
श्री हरि राइ संग बहु कह्यो । 'गुरता पद दीरघ तुम लह्यो ।। १६ ।।
बडे भ्रात सों राखहु मेल । चलो पितामे पुरि के गैल' ।
इत्यादिक जननी बहु भाखा । 'पुरि करतार चलनि की कांखा[1] ।। १७ ।।
निज मसंद धीरमल्ल एक । भेज्यो तबि कहि बात अनेक ।
अपने घर महिं इह बडिआई । हम तुम एक मात ते भाई ।। १८ ।।
अपर शरीक लेति जे कोई । नहिं आछी हम को किम सोई ।
क्रिपा करहु आवहु पुरि मांही । एको सदन भेद को नांही ।। १९ ।।
श्री हरि राइ शांति चित धीरा । कही मात की मानि गहीरा ।
त्यारी करी अरूढनि केरि । सभि महिं सुध बिदती तिस बेरी '। २० ।।
दुंदभि चोबनि हने बजाए । त्यारी सकल सैंन करिवाए ।
परे तुरंगनि पर बर जीन । बसत्र शसत्र भट धारनि कीनि ।। २१ ।।
चढे पालकी श्री हरि राइ । चमतकार दीपति बहु भाइ ।
कंचन लग्यो गोल गन मोती । लरी झालरां जोति उदोती ।। २२ ।।
सरब सनूखा[2] केर समेती । डोरे[3] स्यंदन[4] महिं चढि नेती ।
गमनी संगि हरख कहु धारा । तट थिर सततद्रव तीर निहारा ।। २३ ।।
केवट तरी[5] ल्याइ ततकाला । सरिता सरब तराइ उताला ।
सैना सहित समाज बिसाले । परे पार तट मारग चाले ।। २४ ।।
क्रम क्रम पंथ उलंघति भए । श्री करतार पुरा नियरए ।
आगै लैनि धीरमल्ल आयो । अनुज समाज पिख्यो बिरधायो[6] ।। २५ ।।
मिले परसपर हरख उपावति । बूझति सगली कुशल बतावति ।
डेरा कर्यो आनि पुरि मांही । उपबन छाया पिखि करि तांही ।। २६ ।।
उतरी चमूं सुथल अविलोका । हरखे हेरि नगर के लोका ।
सभि मिलि लै लै करि उपहारे[7] । आनि धरी सतिगुरु अगारे ।। २७ ।।

---

1. इच्छा । 2. सामान । 3. डोली । 4. रथ । 5. किश्ती । 6. बढ़ा-हुआ । 7. भेंटें ।

करि करि बंदन बैठे पास। दरशन कीनो अनंद प्रकाश।
श्री हरिराइ सभिनि कै संग। बूझी कुशल अहै सरबंग ? ॥ २८ ॥
सुख सों बास अहै गुर पुरि मैं ? कहो जथारथ जैसे उर मैं।
गुरु पितामो ने रण कीनि। पुन चढि गए नरन सुख चीन[1] ॥ २९ ॥
तुरक सैन पुन आवहिं नांही। इस हित गे कीरतपुरि मांही।
पिता बसायहु नगर उदारा[2]। यांते सुख देवनि हित धारा ॥ ३० ॥
सुनि सभिहूं कर जोरि उचारी। 'सभि ही सुख है क्रिपा तुमारी।
सतिगुर मालिक हैं जिन केरे[3]। किम संकट तिन आवति नेरे ॥ ३१ ॥
रच्छा[4] करति हाथ दे सारे। लोक प्रलोक कशट निरवारे।
तुरक सैन जबि गन चढि आई। हित श्री हरिगोबिंद लराई ॥ ३२ ॥
सगरो नगर बचावनि करिओ। रिपु को दल बाहर परहरिओ।
करति रहे बल अनिक प्रकारे। प्रविशे पुरि ते वहिर निकारे ॥ ३३ ॥
कै खड़गनि सो कटा करे हैं। करति हेल[5] ततकाल मरे हैं।
रण बिसाल ते शसत्र प्रहारे। सतिगुर जोधा बल महिं भारे ॥ ३४ ॥
श्री गुर अरजन नगर बसायो। तबि को संकट नेर न आयो।
भए सहाइक जिस किस भाइ। जानि आपने लेति बचाइ ॥ ३५ ॥
बडे जतन ते नर बुलिवाए। दे दे हित[6] पुरि बिखै[7] बसाए।
तबि के बसहिं महां सुख पावहिं। श्री अरजन के गुन गन गावहिं ॥ ३६ ॥
अबि गादी के मालिक आप। धारहु शकति उथापन थाप'।
इम पुरि जन के बाकनि सुने। श्री हरिराइ बडनि जसु गुने ॥ ३७ ॥
सुने चहित गुन बहुर तिनहुं के। बरननि कीने प्रथम जिनहुं के।
'श्री अरजन पूरब किम आए ? कहां बैठि करि पावन[8] थांए[9] ? ॥ ३८ ॥
किम इहु पुरि करतार बसायहु ? अपरि बास हित महिल चिनायहु[10]।
कहहु प्रसंग बिलोक्यो जैसे। किधौं सुन्यो वडियनि ते कैसे' ॥ ३९ ॥
पुरि वसाइबे को ब्रितांत। श्री हरिराइ सु बूझी बात।
सुनि कै पुरि जन सकल बिचारा। हेतु सुनावनि बदन उचारा ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री हरिराइ करतारपुर आवनि' प्रसंग बरननं नाम प्रथमे अंशु ॥ १ ॥

---

1. देखने के लिए। 2. बड़ा (सुंदर)। 3. जिनके 4. रक्षा। 5. हमला-आक्रमण। 6. प्रेम। 7. में। 8. पवित्र। 9. स्थान। 10. चिनवाया, निर्माण करवाया।

अंशु २

करतारपुर वसावण प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर हरि राइ ते सुनि बूझनि पुरि बात ।
हुते ब्रिद्ध जे तिन बिखै जानति, भन्यो ब्रितांत ।। १ ।।

चौपई

'श्री सतिगुर ! तुम सभि के सुआमी । भूत भविक्ख्यत[1] अंतरजामी ।
हम अलपग्य कहां कुछ कहैं । तऊ आप की आइसु अहै ।। २ ।।
यांते जिम देख्यो हम तबै । रावरिं निकट बखानैं सबै ।
सहिज सुभाइक श्री गुर अरजन । गमन सुधासर ते गिन करि मन ।। ३ ।।
केतिक सिक्ख संग ले चाले । त्याग्यो माझा[2] देश बिसाले ।
गोइंदवाल बसे दिन चार । मिलि करि भल्लयनि कुल परिवार ।। ४ ।।
जथा जोग सादर मिलि करि कै । नदी बिपासा[3] पारि उतरिकै ।
शकरगंग जहिं कूप बनायो । इहां आनि उतरे सुख पायो ।। ५ ।।
हुतो तरोवरु संघनी[4] छाया । डेरा कर्‍यो भले मन भाया ।
बिप्र मलक जाती मतिवान । साथ संघेड़ा. जेठा आन[5] ।। ६ ।।
अमीआं हेहर राहक पास । मुहरू रिंधावा गुरदास ।
उद्दा दाऊ दोइ हरीके । इत्यादिक सिख संग गुरु के ।। ७ ।।
बसहि ग्राम लघु तबि इस थांइ । राहक केतिक सदन बनाइ ।
सद्दू, बूड़ा, अरु पीराणा । इत्यादिक तिन नाम बखाणा ।। ८ ।।
सभिहिनि को सतिगुरू हकारा । सुनि आए कुछ ले उपहारा ।
करि करि बंदन बैठे पास । दरशन करति भए सुखरास ।। ९ ।।
तिन की दिशा देखि गोसाईं । पुरि बसाइबे हेतु अलाई[6] ।
'दीजहि जाची[7] हमको अवनी[8] । करैं बसावनि नगरी रवनी ।। १० ।।

---

1. भविष्य को जानने वाले । 2. माझा नामक पंजाब का इलाका, **जिसमें** अमृतसर आदि जिले शामिल हैं । 3. व्यास नदी । 4. घनी । 5. और । 6. कहा । 7. मांगी गई । 8. भूमि ।

सभि सुख प्रापति होहिं तुमारे। गुर पुरि बसहि वधहि विवहारे।
बहु जन पर उपकार तुहारा। अरु सफलहि गुर सेव उदारा ॥ ११ ॥

राहक सुनहिं धिरां दुइ तिन की। इक तौ हुइ अनुसारि बचन की।
हाथ जोरि करि बिनै सुनाई। 'श्री गुर सभि रावर की थाईं ॥ १२ ॥

नगर बसाइ पालना करीयहि। आप ब्रास करि दास उधरीयहि।
दरशन दरसहिं अनंद हमेशा। हम ते अपर न भाग विशेशा' ॥ १३ ॥

सुनि करि सतिगुर भए प्रसंन। खुशी करी कहि म्रिदुल बचंन।
दूसर धिर[1] कौ बूझ्यो जबै। शरधा हीन कहति भा तबै ॥ १४ ॥

"हमरे मानव अहैं घनेरे। अवनी अलप न मेवहिं हेरे[2]।
यांते दई न जाइ हमहुं ते। इह साची कहि गिरा तुमहुं ते' ॥ १५ ॥

सुनि गुर बोले सहिज सुभाइ। 'नर थोरे छित[3] बहु रहि जाइ।
प्रानी बिनसनहार[4] सदाई। अविनी रहै सथिर इसि भाई ॥ १६ ॥

जित दिशि अधिक धरा तिन दीनि। बधहि ब्रिद मानव को चीन'।
इम दे स्राप सु बर तिन राहक[5]। नगर बसावनि को चित चाहक ॥ १७ ॥

डेरे को मुकाम करि रहे। इक दुइ दिन बीते जबि लहे।
बेलदार बुलवाइ मजूर। फिरि कै अविलोक्यो थल रूर[6] ॥ १८ ॥

भाई ब्रिद्ध, भगतू ते आदि। जे गुर दरशन ते अहिलाद[7]।
ब्रिंद प्रशादि मधुर अनवायो[8]। श्री नानक को पूरब ध्यायो ॥ १९ ॥

सरब गुरनि के सिमरे नामा। करि अरदास रीति अभिरामा।
सतिगुर सहित सीस को न्याइ। सभिहिनि मैं प्रसादि बरताइ ॥ २० ॥

बेलदार को आइसु दई। 'करहु कोट चहुंदिशि दिढ भई'।
सुनि गुरु हुकम सु कसी[9] उभारी। खननि[10] हेतु अविनी महिं मारी ॥ २१ ॥

हाल्यो तबि पगीआ[11] गिर परी। सभि लोकनि मन संसा करी।
श्री अरजन सभि उर की जानी। मुसकावति बोले गुन खानी ॥ २२ ॥

'चढी कमान जु चढि इत आवै। सो उतराइ अपनि घर जावै।
जंग जीतबे को इह थान। मरहिं तुरक हुइ बेईमान ॥ २३ ॥

---

1. ओर (वाले)। 2. कम भूमि में समाते नहीं दिखते। 3. भूमि। 4. नश्वर। 5. किसान। 6. सुंदर। 7. प्रसन्न। 8. मंगवाया। 9. कस्सी उठाई। 10. खोदने के लिए। 11. पगड़ी।

गुर घर की अबचल है नीव। जाइ न कबहू, रहै सदीव।
इम कहि सभि को भ्रमु निरवारा। लगे मजूर करनि गन कारा॥ २४॥
पुरि कोट रचि म्रितका संग। चहुंदिशि मैं भा रुचिर उतंग।
बहुर हुकम घर चिनिबे करिओ। सुन्दर नाम गुरु तबि धरिओ॥ २५॥
'श्री करतारपुरा सभि बीच। बिदत होइ कहिं ऊच रु नीच'।
श्री अरजन पुन लोक बुलाए। मान दान दे घेन बसाए॥ २६॥
पर्यो बजार सघन अरु सुंदर। बननि लगे पुनि पुरि महिं मंदिर।
धनी रंक धन के अनुसारा। अलप बिसाल रचैं घर बारा॥ २७॥
बनक[1] लगे बिवहार करनि को। लेति लाभ हुइ गुरु शरन को।
इस प्रकार पुरि गुरु बसायो। बाक उचार्यो बिदत दिखायो॥ २८॥
बर अरु स्राप राहकनि[2] जोइ। कहे जथा देखे द्रिग सोइ।
अनगन[3] सैन रिपुनि की आई। पिखि करि त्रास भयो समुदाई॥ २९॥
चहुं दिशि घेरा तुरकनि करिओ। बीच जामनी संघर[4] परिओ।
श्री हरि गोबिंद बली बहादुर। देखे शत्रु आइ भे हादर॥ ३०॥
दारुन जंग मच्यो इक सार[5]। चलै तेग तोमर तरवार।
तबि सतिगुर जी चढ़े तुरंग। भरि करि खपरे ब्रिंद निखंग॥ ३१॥
अलप चमूं[6] ही होती साथ। हने तुरक दिखराए हाथ।
संघर महिं जोधा अरु घोरा। मरि करि कोट भयो चहूं ओरा॥ ३२॥
चल्यो न जाइ किसू दिशि मांही। एतिक म्रितक भए इस जाही[7]
पुरि को ताती वाउ[8] न लागी। बची चमूं कुछ, रण तजि भागी॥ ३३॥
चढी आइ उतराइ सु गयो। श्री गुर बाक सपूरन भयो।
श्री अरजन का सुनहुं प्रसंग। निज हित जिम घर करे उतंग॥ ३४॥
लगे बसावनि पुरि करतारं। अपनि बास हित सुथल निहारं।
'रचहु सदन को' आइसु दीनि। तुरत मसंदनि उद्दम कीनि॥ ३५॥
कारीगर बुलाइ लगवाए। 'दीरघ रचहु' गुरु फुरमाए।
घर क्रित[9] अरु मसंद मिलि कै सबि। हाथ जोरि करि अरज़ करी तबि॥ ३६॥
'हे प्रभु ! द्वाबे देश[10] मझार। दीरघ मोट न प्रापति दार[11]।'
बिना दार ते सदन दराज़[12]। बनति नहीं किम, सभा समाज॥ ३७॥

1. बनिए, व्यापारी 2. किसान। 3. अनगिनत। 4. घमासान युद्ध। 5. एक जैसा, लगातार। 6. सेना। 7. जगह 8. हवा। 9. मकानों का निर्माण करने वाले राज। 10. दुआबा पंजाब का ब्यास तथा सतलुज नदी के बीच का क्षेत्र। 11. मोटी लकड़ी 12. बड़ा।

श्री सतिगुर सुनि गिरा उचारी। 'खोजहु दूर निकटि, जहिं भारी।
जितिक मोल को लेवहि कोइ। दे करि आनहु कारज होइ ॥ ३८ ॥
दार दराज लगे घर बने। तथा बनावहु दे धन घने।'
सुनि आइसु[1] को सकल मसंद। जित कित खोजति पठि नर ब्रिंद ॥ ३९ ॥
जिस थल काशट[2] होइ बिसाल। सुधि को देहु ल्याइ ततकाल।
दरब जितिक लै सो तिह दै हैं। गुरु हुकम, घर दीह बनै है" ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'करतारपुर वसावण' प्रसंग बरननं नाम दुतीओ अंशु ॥ २ ॥

1. आज्ञा। 2. कष्ट-दुःख।

अंशु ३

स्तम्भ प्रसंग

दोहरा

"जित कित नर खोजनि लगे जितिक दार बड़ चाहि।
करी बिलोकनि ग्राम बहु कतहूं प्रापति नांहि ॥ १ ॥

चौपई

श्री अरजन के निकटि मसंद। करी अरज़ 'नहिं दार बिलंद[1]।
दूर कि निकटि ग्राम समुदाइ। करे बिलोकनि जित कित थांइ ॥ २ ॥
हुइ प्रापति, दे दरब मंगावें। जथा हुकम घर तथा बनावैं।
आगै जिम रावर की मरज़ी। सो हम कर्यो चहैं सतिगुर जी ॥ ३ ॥

जबहि मसंदनि[2] एव उचारी। इक सिख बैठ्यो सभा मझारी।
हाथ जोरि तिन अरज़ बखानी। एक सिंसपा[3] खरी महानी ॥ ४ ॥
जिस के सम नहिं दूर कि नेरे। पीन[4] बडी अरु दीह[5] घनेरे।
बिन सति गुर सो हाथ न आवै। को नहिं तिह दल[6] तोरनि पावै ॥ ५ ॥
को इक शकतिवंति तिस मांही। वसति बित्यो चिरकालहि तांही।
बीस बीस कोसिक के ग्रामू। मानहिं जाइ करंति प्रणामू ॥ ६ ॥
मन वस्तुनि को अरपन करें। अनिक कामना उर मैं धरैं।
जित कित के नर सीस झुकावैं। नहिं त्रिसकार करैं, डरपावैं ॥ ७ ॥
सुनि करि सतिगुर बाक बखाने। 'गमनै सिख को तित ही थाने।
छेदन करै सिंसपा जाइ। जिस ते घर कारज सुधिराइ' ॥ ८ ॥
सुनति पिराणे[7] कीनि पयाना। जहां खरो तरु पीन महाना।
कर कुठार खाती[8] ले साथ। गयो तहां सिमरति गुर नाथ ॥ ९ ॥

---

1. बड़ी-मोटी। 2. मसंदों ने—मसंद गुरुओं के लिए दूर के स्थानों पर रहने वाले सिक्खों से भेंट इकट्ठी करके लाते थे। 3. शीशम का पेड़। 4. मोटी। 5. लम्बी। 6. पत्ता। 7. नाम है। 8. बढ़ई।

जाइ सिंसपा हेरनि करी। खरी दार जिस की दिढ खरी;
खाती नामु 'सधारण' कहैं। तन मन करि गुर को सिख अहै ॥ १० ॥
तिसने कीनि बिलोकन सारो। इक तौ थंभ थनहि शुभ भारो।
जिसते सुंदर मंदिर बने। सहै भार दिढ लखीयति घने ॥ ११ ॥
चिरंकाल की लकरी पाकी। अपर न प्रापति समसर यांकी।
और कार घर महिं जित होइ। काशट कांडनि[1] को लगि जोइ ॥ १२ ॥
निकटि होइ के हाथ कुठारा[2]। छेदनि हेतु स-ओज प्रहारा।
लाग्यो जबहि सिंसपा मांहि। छेदनि कीनि कुछक ही तांहि ॥ १३ ॥
निकस्यो शबद ब्रिच्छ ते तबै। 'सुनहु पिराणे! मम गति सबै।
चिरंकाल को इस महिं बासा। तू पहुंच्यो अबि करसि बिनासा ॥ १४ ॥
गुर अरु गुरु के सिक्ख अनंता। तिन पर मेरो बस न चलंता।
मैं सतिगुर की कुछ न बिगार्यो। क्यों मेरो चहिं बास बिदार्यो ॥ १५ ॥
पूजा अधिक जगत महिं मेरी। अरपहिं लोक अकोर[3] घनेरी।
हटि रहीअहि,नहिं ब्रिच्छ बिदारहु[4]। गुर आगे मम अरज़ गुज़ारहु ॥ १६ ॥
शरन परे की रच्छा कीजहि। अपनो जानि राखि करि लीजहि।
इम कहि सगरी ब्रिथा सुनावहु। जिम गुर हुकम होइ सुनि आवहु' ॥ १७ ॥
सुनि तिखाण पीराणा दोइ। उर बिसमाए अचरज होइ।
कहैं परसपर 'नांहिन आछे। इस तरु[5] सदा बास को बाछे ॥ १८ ॥
बहुर दीन हुइ बोलति बिनती। नहिं हंकार आदि को गिनती।
इक वारी गुर निकटि सुनाइ। बहुर बिदारहिं गे तरु आइ' ॥ १९ ॥
इम कहि गमने पुरि की ओर। श्री अरजन बैठे जिस ठौर।
हाथ जोरि करि अरज़ गुज़ारी। 'सुनहु प्रभू! सु महीरुह[6] भारी ॥ २० ॥
निकसी, छेदनि लगे, अवाज। क्यों मेरो तुम करति कुकाज।
मनता[7] मेरी ग्राम करंते। भांति भांति की भेट चढ़ंते ॥ २१ ॥
तरु बिनसे ते बिनसहि सारी। कोइ न जान सकहिं नर नारी।
इह मम ब्रिथा सुनावहु जाइ। पुन कीजहि जिम गुर फुरमाइ ॥ २२ ॥
श्री अरजन सुनि कै तिस काल। म्रिदुल रिदा सु क्रिपालु बिसाल।
कह्यो 'चलैं हम तिस के तीर। सरब प्रकार देहिं करि धीर' ॥ २३ ॥
इम कहि खासे पर चढि चले। पिखनि ब्रिच्छ को छेदनि भले।
सेवक ब्रिंद संग तबि गए। तरु महिं शबद बिसम उर भए ॥ २४ ॥

---

1. टहनियां आदि। 2. कुल्हाड़ा। 3. भेंट। 4. काटो (नष्ट करो)। 5. वृक्ष, पेड़। 6. वृक्ष। 7. मान्यता, पूजा।

सने सने चलि पहुंचे नेरे। थिर जबि होइ सरब ही हेरे।
भई अवाज नंम्रि करि नमो। बिनती करनि लग्यो तिह समो ॥ २५ ॥
'प्रभु जी! सभि के हो सुखदाता। मम सथान किम करि हो घाता।
गुर घर को नहिं काज बिगार्यो। को मेरो अपराध बिचार्यो ? ॥ २६ ॥
निकटि दूर के ग्राम घनेरे। नंम्री होति अगारी मेरे।
बिना सिंसपा सभि हटि जै हैं। नहीं उपाइन को पुन दै हैं' ॥ २७ ॥
सुनि सतिगुर तबि धीरज दीनो। 'तरु दीरघ ते देश बिहीनो।
काशट रहे खोज नहिं पायो। चाहति हैं हम सदन बनायो ॥ २८ ॥
दुरलभ दार हेतु घर जाना। अपर नहीं इस तरु समाना।
तव मनता को नहीं बिगारहिं। जहां थंभ[1] दे सदन उसारहिं ॥ २९ ॥
तिह ठां[2] होवहि पूजा तेरी। अबि ते भी बन जाहि घनेरी।
प्रथमे तो कहु माने जोइ। पाछे हमरो दरशन होइ ॥ ३० ॥
करहु सुखेन बास को तहां। होहि अनेक मंनता महां।
नहिं कीजहि चित मैं दुचिताई[3]। पूरब ते अबि बनहि सवाई ॥ ३१ ॥
इम सुनि कै सतिगुर ते सोइ। रिदै अनंद बिलंदै होइ।
करी बंदना तूशनि[4] होयो। अपनो हित छेदन महिं जोयो ॥ ३२ ॥
श्री मुख ते फुरमायो फेर। 'सुनहु त्रिखाण[5] सधारण हेरि।
जितो सथंभ राखिबो करनो। करि मिनती को भलो सुधरनो ॥ ३३ ॥
सभि बिधि करि कै इह ठां त्यार। हौरा होइ जाइगो भार।
बहुर सकट पर करि कै ल्यावहु। ब्रिखभ ब्रिंद तिह संग लगावहु' ॥ ३४ ॥
कहि सतिगुर पुरि को हटि आए। सेवक सुजसु करति समुदाए।
धरि कुठार पुन छेदति खाती। बल ते कर्यो मूल ते घाती ॥ ३५ ॥
बहु नर लगि करि दीओ गिराइ। कदन[6] सिकंध[7] करे समुदाइ।
मिन करि जितो चहिय परमान[8]। तितो राखि करि पीन महान ॥ ३६ ॥
नीके धर्यो गोल सभि कर्यो। आक्रित सुंदर करि तहिं धर्यो।
ब्रिखभ ब्रिंद जुति सकट मंगायो। बहु मानव मिलि तहां चढायो ॥ ३७ ॥
बडे जतन ते ल्यावनि कीनि। जहिं घर चिनहिं तहां धरि दीनि।
श्री सतिगुर हेरन हित आए। 'सुंदर घर्यो' कहति समुदाए ॥ ३८ ॥
तबि कारीगर जबै निहारा। खरो करनि को ब्योंत[9] बिचारा।
नर गन लगे उचायहु सोइ। खरो कर्यो आछो थल जोइ ॥ ३९ ॥

---

1. स्तम्भ। 2. स्थान पर (उस)। 3. चिन्ता। 4. प्रसन्न। 5 बढ़ई। 6. काट दिए। 7. टहनियाँ। 8. मिनती। 9. योजना।

चहियति हाथ सवा नौ थंभा। भयो कमी पिखि रिदे अचंभा।
अशट आंगुरी[1] घट सो होयो। बिगर्यो काज मिन्यो जबि जोयो ॥ ४० ॥
अपर न पययति[2] है सभ यांके। मंदिर बनहि आसरे कांके।
गुर आगे तबि अरज़ गुज़ारे। 'प्रभु जी! दीरघ काज बिगारे ॥ ४१ ॥
दुरलभ दार जतन करि लीनि। अशट आंगुरी भयो बिहीन[3]।
सगरो सदन बिगर करि जाइ। जे इस पर अबि चिनहिं बनाइ ॥ ४२ ॥
अपर उपाइ नहीं बन आवै। करहिं जथा रावर को भावैं'।
सुनि सतिगुर चलि आए तहां। खरो सथंभ हीन हुइ जहां ॥ ४३ ॥
बिघन सदन के बनिवे बिखे। ठांढे मानव सगरे पिखे।
पशचाताप करहिं मुख भाखे। 'इस के सम अबि कहां भिलाखे ॥ ४४ ॥
भारी तरु छेदनि करि खोयो। नांहिन काम धाम को होयो'।
श्री अरजन लघु देखनि कीना। भयो बिफल ही दीरघ पीना ॥ ४५ ॥
श्री मुख ते कीनसि फुरमावनि। 'गुर घर हित तरु छिद्यो घरावनि।
अपनि खुशी ते प्रथम बिसाला। वध्यो हुतो इह ब्रिद सडाला[4] ॥ ४६ ॥
सति संगति सतिनाम सदन मैं। इस घर महिं सिमरहिं निस दिन मैं।
यांते इह अबि हमरे कहे। वधहि बिसाल जितिक इत चहें' ॥ ४७ ॥
सभि नर ब्रिंद बिलोकति ठाढे। ततछिन अशट आंगुरी बाढे।
जितो चहति कारीगर तहां। भयो तितक बिसमे उर महां ॥ ४८ ॥
करि ठाढो नीके हरिखाए। रहिवे हेतु निकेत बनाए।
सति संगति जेतिक[5] चलि आवै। प्रथम भेट दे सीस निवावै ॥ ४९ ॥
गुर दरशन को देखहि पाछे। इम मनता इस थल भी आछै''।
सुनहु गुरू सिख थंम्ह प्रसंग। मानव मनहिं भावना संग ॥ ५० ॥
चिरंकाल तिस घर महि रह्यो। पूजा भई जथा गुर कह्यो।
राज खालसे का जबि भयो। तुरकनि साथ वैर बधि गयो ॥ ५१ ॥
पशचम दिशि के जमन[6] बिसाले। आए मिलि समुदाइ कराले।
सिंघ लरे बहु बने शहीद। भई रिपुनि की इहां रसीद[7] ॥ ५२ ॥
पूजन थान जानि खल मूढ़े। काशट ब्रिंद ल्याइ करि कूड़े।
वर सथंभ के चहुं दिशि मांही। लाइ हुतासन[8] तूरन तांही ॥ ५३ ॥

---

1. अंगुली। 2. प्राप्त (उपलब्ध)। 3. कम। 4. डाली सहित। 5. जितनी। 6. यवन, मुसलमान। 7. पहुंच। 8. आग।

बड चिघार मारि ततकाल। म्रितक जमन को मूरछ नाल।
अविनी बिखे प्रवेशनि होयो। बहुर किसू ने क्योंहुं न जोयो ॥ ५४ ॥
अबि लौ तिस थल सिख जे जाइ। अरपि उपाइन सीस निवाइ।
पुरि जन कह्यो "सुनहुं गुर पूरे। इम श्री अरजन के गुन रूरे" ॥ ५५ ॥

दोहरा

जिम प्रसंग बूझ्यो हुतो श्री सतिगुर हरिराइ।
पुरि करतार बसाइबे दीनो सरब सुनाइ ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'सयंभ' प्रसंग बरननं नाम त्रितीयो अंशु ॥ ३ ॥

अंशु ४

भाई भगतू प्रसंग

दोहरा

जेशट भ्राता संग मिलि नीके श्री हरिराइ।
डेरा कीनो कुशल जुति उतर्यो दल समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

केतिक दिन बिच पुरि करतारा। कर्यो वास सतिगुरनि सुखारा।
देश बिदेशनि ते सुनि आवैं। अनिक अकोरन को सिख ल्यावैं ॥ २ ॥
बिते चेता भा परब बिसाखी। चले आइं नर दरशन कांखी।
जंगल देश दासु समुदाई। अजमत[1] पूरन भगतू भाई ॥ ३ ॥
दीप मालका अपर बसोए। खशट मास गुर दरशन जोए।
सिख संगति केतिक के साथ। जाइ बिलोकहि सतिगुर नाथ ॥ ४ ॥
अलप बैस ते श्री हरिराइ। देखहिं भगतू को मुसकाइ।
हसन[2] हेतु मुख गिरा अलावैं। महां ब्रिद्ध को पिखि हरखावैं ॥ ५ ॥
'आवहु भाई ! को अबि घरनी। करहु सहेरनि सुंदर तरुनी'।
कहि सिक्खनि महिं उर हरखावैं। हसहिं हेरि करि मान बधावैं ॥ ६ ॥
सुनि भगतू बंदन करि पाइन। निकटि सु बैठहि अरपि उपाइन।
जबि डेरा लखि पुरि करतारु। गुर दरशन को समा बिचारु ॥ ७ ॥
गमन्यो घर ते मग महिं आयो। तन को अंत समां नियरायो[3]।
इह मन जानि बिचारति भयो। श्री गुर बाक बार बहु कियो ॥ ८ ॥
चरखा करहु सहेरनि कोई। कैसे निशफल हुइ है सोई।
करिबो बनहि मोहि कहु साचा। अनिक बार गुर हसनि उबाचा ॥ ९ ॥

---

1. करामात। 2. हंसने के लिए। 3. निकट आया।

अबि कै, मम तन तजिबो होइ। यांते करनि ब्याह भल जोइ।
नांहि त रहि जै है अध मांहि। इम मो कहु कवि नीको नांहि ॥ १० ॥
इस बिधि मग महिं चितवन आवति। देख्यो एक खेत मन भावति।
पाकन लग्यो बाजरा तहां। मिले बिहंगम[1] चुगिवे जहां ॥ ११ ॥
द्वादश बरखनि की इक कंन्यां। सुंदर रूप बिसाल सपंन्यां।
करति उडावन खग[2] समुदाइआ। खेत पकावति चुगनि बचाइआ ॥ १२ ॥
तिसे बिलोकति चित महिं आई। इह राहक की सुता सुहाई।
गुर को बाक सफल करि दै हौं। इस के संग ब्याह करि लैहौं ॥ १३ ॥
इम बिचार करि ब्रिध बहु भाई। हाथ लशटका चलति टिकाई।
सने सने मग महिं पग डालति। जबि ढिग पहुंच्यो तिस के चालति ॥ १४ ॥
ऊपर द्रिशटि करी तिस हेरा। फेरे फिरन हेतु कहि फेरा।
'बूट कास[3] को अहै उगाह। इस तिय संग करों मैं ब्याह ॥ १५ ॥
भई भारजा मेरी अबै। त्रिण खग आदि सुनहुं इह सभै।
कास बूट के चहुंदिशि मांहि। फेर लशटका जिम हुई ब्याह ॥ १६ ॥
तिस कंन्या कहु गिरा सुनाई। महां ब्रिध ते सुनति लजाई।
कछू न बोली तूशनि ठानी। चित महिं चितवति सुनी जु बानी ॥ १७ ॥
भाई मग चलि पर्यो अगारी। आयो पुरि करतार मझारी।
श्री हरिराइ सुहावति गादी। दरस बिलोकि भयो अहिलादी ॥ १८ ॥
करि बंदन को बैठ्यो पास। कह्यो गुरु कुछ ठांनति हास।
'आवहु भाई! ब्रिध बय मांही। कर्यो सहेरनि घर कै नाहीं ? ॥ १९ ॥
निरबल अबि सरीर हुइ गयो। सिक्खी को रस बहु नित लियो।
नीठ नीठ मग आवहु चले। अबि भी तप नहिं चित है भले' ॥ २० ॥
सुनि कर जोरति भगतू भाखा। 'सदा आप की सफलति कांखा।
ब्याह पंथ[4] महिं मैं करि आवा। बन त्रिण आदिक सभिनि सुनावा' ॥ २१ ॥
सुनि कै हसे अधिक गुर पूरे। 'भगतू सिक्ख महां गुन रूरे।
सिक्खी केरि म्रिजादा राखहु। गुर घर के मुखि, जसु अभिलाखहु ॥ २२ ॥
पुन मेला बैसाखी केरा। आइ मिल्यो गुर निकटि घनेरा।
अनिक अकोरन लगे अंबारा। दरशन करहिं लहे सुखसारा ॥ २३ ॥
पंच दिवस लगि मेला रह्यो। सुख सों सतिगुर दरशन लह्यो।
निज निज सदन गए पुन सारे। पाइ कामना सुजशु उचारे ॥ २४ ॥

---

1. पक्षी। 2. पक्षी। 3. एक प्रकार का घास। 4. रास्ता।

जानि अंत तन को तबि भाई। पुरि करतार रह्यो सुखदाई।
केतिक दिन मैं पर करि रह्यो। अतीसार[1] को संकट लह्यो ॥ २५ ॥
देखि देखि सिख उर बिसमाए। इनहुं कशट क्यों दीरघ पाए।
जिन के सिक्ख सैंकरे अहैं। हित परलोक भरोसे रहैं ॥ २६ ॥
इम बिचार करि केतिक मिले। जिह ठां परे तहां को चले।
देख्यो अतीसार को रोग। दुरबल देहि रह्यो दुख भोग ॥ २७ ॥
बंदन करि बैठे ढिग जाइ। बूझनि लगे होइ समुदाइ।
'तुम गुर के सिख पूरन अहो। अंत समें किम बड दुख लहो ? ॥ २८ ॥
सिक्ख हज़ारहुं रावर केरे। सो सहाइता चहैं अगेरे[2]।
जे तुम सके न अपनि हटाइ। किम दासनि के बनहु सहाइ ?' ॥ २९ ॥
सुनि भाई भगतू तबि कह्यो। 'हम ने जानि इतो दुख लह्यो।
गोधन[3] लूट लूट बहु ल्याए। हमरे सिख बिराड़ समुदाए ॥ ३० ॥
तिन धेननि को दुगध बिसाला। हम को देति रहे सभि काला।
सो लेखा अबि इहां निबेरैं। लैकरि गमनहिं नाहि अगेरे ॥ ३१ ॥
निरमल हुइ परलोक सिधाइं। निज सिक्खनि के बनहिं सहाइं।
सुनि कै सभिहिनि सीस झुकायो। 'भाई भगतू धंन' अलायो ॥ ३२ ॥
इम केतिक दिन दुख को पाइ। अतीसार नित चल्यो सु जाइ।
सतिगुर सिमरति तन को त्यागा। गुरु रूप होयहु बडभागा ॥ ३३ ॥
श्री हरिराइ सुनति चलि आए। संगि मसंद दास समुदाए।
दाहि देनि की कीनसि त्यारी। रच्यो बिबान लाइ धन भारी ॥ ३४ ॥
नगन चरन ते संग सिधारे। वहिर गए मिलिगे सिख सारे।
काशट संचै करि इक ठाइ। दियो चिखा पुर पुन पौढाइ ॥ ३५ ॥
भए त्यार लांबू के हेतु। निज सिख को गुर क्रिपा निकेत।
हाथ बंदि सिख ब्रिंद मसंद। करैं हटावनि, 'हे सुखकंद ! ॥ ३६ ॥
करहु अपर को हुकम क्रिपाला। दे लांबू सिख है जु बिसाला'।
सुनि गुर कह्यो 'उचित है हमको। इसकी सुधि नांहिन कुछ तुम को ॥ ३७ ॥
राम दास गुर बडे हमारे। तिन को अंश जनक इह धारे।
यांते हम को उचित पछानो। लांबू देनि भले मन मानों ॥ ३८ ॥
इम कहिकै सतिगुर हित धर्यो। अपने हाथ दाहु सो कर्यो।
सरब क्रिया करि कै बिधि नाल। कीनि शनान क्रिपाल किलाल[4] ॥ ३९ ॥

---

1. रक्त मिश्रित दस्त रोग। 2. परलोक में। 3. गउएँ। 4. जल (से)।

सने सने चलि निज थल आए। बैठि जथोचित सिख समुदाए।
सुजसु कह्यो श्री मुख ते आप। जिन के नाम लेति हति पाप ॥ ४० ॥
इम केतिक दिन पुरि करतार। श्री हरि राइ बसे मुद धारि।
बहुर कूच कीनो निज डेरा। जंगल देश चहति चित हेरा ॥ ४१ ॥
धौंसा धुंकारति चलि आगे। साथ मसंद सिक्ख बडभागे।
द्वै हजार दो सै भट[1] संग। चढि करि चंचल चलहि तुरंग ॥ ४२ ॥
उडहि धूल छादहि असमान। होति हिरेखा[2] हयनि महान।
ग्राम मुकंद पुरा इक थान। सने सने तहिं उतरे आनि ॥ ४३ ॥
दिन केतिक रहि तहां बिताए। गाडे किलक[3] बिरछ हुए आए।
अबि लौ तहां खरी तरु बनी। हम ने करी निहारनि घनी ॥ ४४ ॥
कच कर्यो तहिं ते चढि चले। सतुद्रव सलिता उतरे भले।
दक्खण दिशा करे मुख आए। जितहु पितामा जंग मचाए ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'भाई भगतू' प्रसंग बरननं नाम चारमो अंग ॥ ४ ॥

---

1. बार योद्धा। 2. प्रसन्नता। 3. खूंटे जो गाड़े थे वे वृक्ष बन गए हैं।

अंशु ५

कौरे राहक प्रसंग

दोहरा

जंगल देश प्रवेश भे श्री सतिगुर हरिराइ।
राहक कौड़े जहिं बसहिं मिलि भ्राता समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

तहां जाइ करि कीनसि डेरे। लशकर संग तुरंग बडेरे।
दोइ हज़ार दोइ सै रहैं। बली शस्त्र धारी भट अहैं ॥ २ ॥
गुर आगवन देश नर ताहू। सेवा हेत आइगे पाहू।
पूरब श्री हरिगोबिंद आए। ललाबेग कंबर जबि घाए ॥ ३ ॥
तबि मेला इक लग्यो बडेरा। श्री गुरु गमने हुते अखेरा।
सुनति कुलाहल तित दिशि आए। हित दरशन के नर उमडाए ॥ ४ ॥
हाथ जोरि वंदन बहु करैं। शसत्र सहत पिखि आनंद धरैं।
तबि इक कौड़े राहक ब्रिंद। करहिं मालकी वधहिं बिलंद ॥ ५ ॥
कुल ते भ्रात मिलहिं समुदाइ। सभि परि अपनो हुकम चलाइं।
मेले बिखै ओज दिखरावति। निज मरज़ी अनुसारि चलावति ॥ ६ ॥
से भी लखि करि गुर ढिग आए। हाथ जोरि सभि सीस निवाए।
हित दरशन के खरे अगारी। हुते ब्रिंद अरु आयुधधारी ॥ ७ ॥
तिन की दिशा बिलोक गुसाईं। जो समुदाइ खरे अगुवाई।
'किस को इस थल महिं लगि मेला?। किस कारन ते भयो सकेला[1]' ॥ ८ ॥
सुनि करि बोले राहक कौरे। 'हमरो बडो भयो इस ठौरे।
बरकतवंति[2] प्रताप बिसाला। चित बांछति को दे सभि काला ॥ ९ ॥
तिस को इह मेला लगि भारी। मिलैं आनि करि जो नर नारी।
सभि की अरज सुनहिं अरु देति। नर ते अपनि उपाइन लेति ॥ १० ॥

1. इकट्ठ। 2. भाग्यशील।

इम जबि बोले सहत बडाई। श्री मुख ते मुसकाइ गुसाईं।
बूझे बहुर 'कहां अबि सोई ? जिस ते बांछति ले सभि कोई ॥ ११ ॥
कित बैठ्यो सो बडो तुमारा ? लेति सभिनि ते जथा उचारा।
सुनि राहक कौरे पुन कहैं। 'सभि मेले महिं पूरन अहै ॥ १२ ॥
जहिं कहिं सभिनि कामनां देति। तिस हित बंदति सो निज लेति।
निज प्रवाह ते रह्यो समाइ। मानव मिले अधिक गुन गाइं' ॥ १३ ॥
श्री हरिगोबिंद चतुर सुजाना। गन राहक को मूरख जाना।
तिन सभि महि जो नर परधाना। अग्र खरो पिखि बाक बखाना ॥ १४ ॥
'मूंद बिलोचन रिदे जनावैं। अबहिं तांहि को तोहि दिखावें।
देखि लीजियहि अपनि वडेरा। जो मेले महिं रम्यो जिठेरा' ॥ १५ ॥
मानि बैन को मूंदे नैन। छटी जु कर महि करुणा ऐन[1]।
जबि तिस के सिर धारन करी। अपनि बडे की सोझी[2] परी ॥ १६ ॥
अनिक जनम धरि मरि मरि गयो। अबि तन काक पहारी भयो।
इक ऊची रोरी पर सोइ। रह्यो बैठि सुध जांहि न कोइ ॥ १७ ॥
अबि ऐसी सुध उर हुई आई। पुन बूझनि कीनसि गोसाईं।
'कहु अबि किस थल तोहि बडेरो ? सभिनि सुनाउ जथा बिधि हेरो' ॥ १८ ॥
सुनि सतिगुर ते तांहि बतायो। 'हमरे बड़े काक तन पायो।
ऊची रोड़ी[3] पर अबि बैसा। अहै पहारी बाइस[4] जैसा' ॥ १९ ॥
पुन गुर बूझ्यो 'इस थल मेला। कहु किस को बड भयो सकेला' ?
सुनि कै हाथ जोरि तबि कही। 'भेड चाल लोकनि की लही ॥ २० ॥
जित दिशि एक भेड चलि जाइ। देखति सगरी धाइ सिधाइ।
तिम ही जग के मूरख नर हैं। पिखि चलि जाइं, बिचार न उर हैं ॥ २१ ॥
देखा देखी सभि चलि आए। नहिं जानहि क्या पाय सिधाए।
कह्यो सभिनि महिं जबहि हवाल। भए अचंभे रिदे बिसाल ॥ २२ ॥
'हम हंकार छूठ ही करते। सतिगुर पुरख शकति सभि धरते।
जिनहूं बडे को जनम दिखायो। सिर धर छरी ब्रितंत जनायो' ॥ २३ ॥
महिमा अधिक गुरु की जानी। शरधा रिदे सभिनि ही ठानी।
भूम राज को तऊ हंकार। मन मैं राख्यो, नहि निरवार[5] ॥ २४ ॥
सतिगुर करि अखेर गे डेरे। उतरि थिरे प्रयंक तिस बेरे।
राहक कौरे मिलि समुदाए। गुर महिमा लखि करि मन भाए ॥ २५ ॥

---

1. कृपालु-गुरु जी। 2. सूझ-पता। 3. टीला। 4. पहाड़ी कौआ। 5. दूर (किया)।

सकल इकत्र होइ जबि आए। श्री हरि गोबिंद जहां सुहाए।
करि करि बंदन निकटि थिरे हैं। कुछुक उपाइन अग्र धरे हैं ॥ २६ ॥
भूम मालकी अपनी जानै। याते उर अहंकार महानै।
अंतरजामी सभि किछु जानी। भूत भविक्ख्यत जिम किन ठानी ॥ २७ ॥
हाथ जोरि सभि राहक कहैं। 'महां शकति धरि रावर अहैं।
सिक्ख आपने हमै बनावहु। दे उपदेश सु पंथ चलावहु ॥ २८ ॥
जिस प्रकार सिख अपर तुमारे। हम भी बनहिं तथा अनुसारे।
देते रहहिं उपाइन सदा। बनहु सहाइक तुम जद कदा' ॥ २९ ॥
श्री हरिगोबिंद लखि तिन खोटे। उर हंकारी बहु मत मोटे।
कह्यो कि 'हम नहिं सिक्ख बनावैं। अधिकारी तुम को नहिं पावैं ॥ ३० ॥
सिक्खी पद ले निरहंकारी। कबहुं न बनहि बिसाल बिकारी।
तिस के होहिं सहायक सदा। हलत पलत[1] दुख लहहि न कदा ॥ ३१ ॥
तुम ते लेनि उपायन जोई। हमरे चित मैं चाह न कोई।
तुमरी वसतु अकोर न लेहीं। अपनी सिक्खी को नहिं देहीं' ॥ ३२ ॥
इम जबाब जबि सतिगुर दयो। नहीं नंम्रि हुइ पुन पद लयो।
अविनी के मालिक हम अहैं। इस हंकार ते अफरे रहैं ॥ ३३ ॥
धरे मौन निज घर को गए। नहिं बडभाग तिनहुं के भए।
इम श्री हरि गोबिंद हटाए। नहीं आपने सिक्ख बनाए ॥ ३४ ॥
तिस थल श्री सतिगुर हरिराइ। पहुंचे डेरा दियो लगाइ।
कुल महांज के राहक जेई। सिरकी बास परे गन तेई ॥ ३५ ॥
बस्यो चहैं किस थल महिं सोइ। नहीं सथिरता किनहूं होइ।
श्री हरिराइ सुने जबि आए। मिलनि गए ह्वै कै समुदाए ॥ ३६ ॥
अधिक प्रेम धरि अरपि उपाइन। आनि लगे ततछिन गुर पाइन।
'बडे भाग अबि भए हमारे। दरस आप को निकटि निहारे' ॥ ३७ ॥
सतिगुर कुशल बूझ करि तिनकी। आश्वासन करि म्रिदुल बचन की।
सिक्ख आपने सकल बनाए। दे उपदेशे भले मग पाए ॥ ३८ ॥
सतिगुर को दरशन नित करैं। सेवहिं रिदे कामना धरैं।
बैठहिं निकटि सदीव सु आए। जिम भूपति चाकर के भाए[2] ॥ ३९ ॥
कबि कबि कौरे गुर दरसंते। निर हंकार न नंम्रि बनंते।
सिक्खी पद नहिं दीनसि तिन को। सतिगुर लखि बिकार बड मन को ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'कौरे राहक' प्रसंग बरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

---

1. इहलोक तथा परलोक । 2. भावना ।

अंशु ६

राहकनि को प्रसंग

दोहरा

बीते केतिक द्योस तहिं टिके गुरू हरिराइ।
निकटि निकटि के ग्राम जे सिक्ख बनहिं समुदाइ ।। १ ।।

चौपई

राहक जे मर्हाज के अहैं। तिन पर क्रिपा करति गुर रहैं।
नहिं कौड़े तिन आदर करें। सभा मांहि तिनको परहरें[1] ।। २ ।।
'इह परदेसी कित ते आए। करहिं गुजर बैठे इस थांए'।
तिन पर हुकम करति सद रहैं। मनभावाति मुख वाकनि कहैं ।। ३ ।।
रहिं मर्हाजि के सिरकी बास। निज छित छिन कित करहिं अवास।
बस्यो चहैं, पर प्रापति नांही। अविनी जहिं अपनाइ बसाहीं ।। ४ ।।
सतिगुर की सेवा महुं लागे। क्रिपा द्रिशटि ते मन अनुरागे।
जहिं कौरनि इक कूप लगायो। तहिं ते सभिहिन जल को पायो ।। ५ ।।
सभि मर्हाज के राहक जेय। इक की हुती भारजा सेय[2]।
तिसी कूप ते आनति बारी[3]। मिलि करि गमनति हैं तहिं सारी ।। ६ ।।
भरहिं कूप ते घट ले आवैं। खान पान बिवहार चलावैं।
तिहठां कौरे तरुन जि नर हैं। थिरहिं कूप पर सो इम करि हैं ।। ७ ।।
तरनी ते सो दाम[4] खिचावैं। चढ़ ऊपर जल को निकसावैं।
करहिं सपरश सरीरनि अंग। बहु बिधि के कहिं बाक अनंग[5] ।। ८ ।।
हसहिं बिलास करहिं मन भाए। बिनां लाज ते बाक सुनाए।
जल के हेतु सहहिं सभि नारी। जे कुबाक कहिं अनिक प्रकारी ।। ९ ।।

1. दूर करते हैं। 2. वह (स्त्री)। 3. पानी। 4. रस्सी। 5. अश्लील।

अपर थान जल प्रापति नांही। बिन जल ते नहिं जीवन पांही।
यांते बिना कोप चलि जाइं। दिन प्रति ऐसे कुमति कमाइं॥ १० ॥
श्री हरिराइ गए तहिं जबै। इम प्रसंग होवति भा तबै।
नवीं बधू तिन कै इक आई। सो घट[1] लै जल हेतु सिधाई॥ ११ ॥
कूप सथान तरुन नर खरे। नित सम हसनि बोलिबो करे।
गई त्रिया गन पानी भरिबे। घट को भरे टिकावनि करिबे॥ १२ ॥
दाम लगी खैंचनि तबि नारी। नर असवारी भयो पिछारी।
जथा बैल खैंचति चढि जाइ। तिम अरूढि करि अग्र चलाइ॥ १३ ॥
बधू नवीन संग तबि तैसे। करति हास को तिन ही जैसे।
करि सपरश ते क्रुद्धति ह्वै कै। घट को झटक पटकबो कै कै॥ १४ ॥
गारी देति गई निज डेरे। सभि त्रियनि सों कहि तिस बेरे।
कर्यो धिकार नरनि कै तांई। 'कहां आपनी लाज गवाई॥ १५ ॥
जिन की दारा सों नर हसैं। तिनके कहु कैसे घर बसैं।
खरे कूप पर कहति कुवाकनि। जिससे अपजस ह्वै सभि साकनि[2]॥ १६ ॥
मैं नहिं जैहौं ल्यावनि पानी। करहिं सपरशनि हास बखानी।
ह्वै निरलाज न जीवन आछो। अपर थान बसिबे चित बांछों॥ १७ ॥
इहां रहनि को धरम न कोई। जहां निशंकी अस नर होई।
इत्यादिक तिन निशठुर बानी। कही सभिनि सों तरक महानी॥ १८ ॥
सुनि मर्हाज के संकट पावैं। बिन जल ते कुछ बस न बसावैं।
सभि मिलि मसलत कीनि बिसाला। 'कित को चलहिं बसहिं इस काला॥ १९ ॥
बिनां बास ते नहिं गुज़रान। नहिं अवनी प्रापति किसु थान।
राहक कौरे दुशट बिलंद। करहिं वधीकी मिलि नर ब्रिंद'॥ २० ॥
बहुर परसपर भले बिचारा। 'अपर उपाइ न चलहि हमारा।
उतरे श्री सतिगुर हरिराइ। तिन ते होइ सकहि हम थांइ॥ २१ ॥
सरब कला समरथ बलवंते। करति न बिलमहिं जथा चहंते।
शरन परन करि लिहु तिन मरज़ी। ग़रज़ी होइ गुज़ारहु अरज़ी॥ २२ ॥
सो हम को कित करहिं बसावनि। चलहि हुकम तिन को सभ थावनि[3]'।
इम कहि सभि इकत्र नर होए। जाइ गुरु के दरशन जोए॥ २३ ॥
पद अरबिंदनि करि करि नमो। थिरि मर्हाज के भे तिह समो।
बंदि हाथ बोले निज बिनती। 'श्री प्रभु जी! हमरे बड गिनती[4]॥ २४ ॥

1. घड़ा। 2. रिश्तेदार। 3. सब स्थान पर। 4. चिंता।

बिना तुमारे परति न पार। रहे बूड चित चिता धार।
नहिं बैठनि कहु अविनी पावहिं। जहां बास करि समों बितावहिं ॥ २५ ॥
इत कौरे भ्राता समुदाइ। धरा मालकी करहिं बनाइ।
जैत पिराणा आदिक और। राखी सभि संभार करि ठौर ॥ २६ ॥
अस अवनी नहिं जानी जाइ। जहिं बैठहिं हम ग्राम बनाइ।
सरब कला समरथ गुनवंते। सभि ते अधिक आप बलवंते ॥ २७ ॥
कहहु बचन सिध होवति काज। चहहु त क्यों न होहि महाराज।
अपने करि कै हमहु बसावहु। जहिं जानहु तहिं अविनि दिवावहु[1]' ॥ २८ ॥
श्री हरिराइ लखे निज दास। बसहिं खेद जुति सिरकी बास।
जे कित धरा पाइं हुइ ग्राम। रहैं सुखैन करैं निज धाम ॥ २९ ॥
इम बिचारि गुर धीरज दीनि। 'खेद तुमारो हम लखि लीनि।
लै देहैं अविनी हित बास। करहु ग्राम अपनो बिन त्रास' ॥ ३० ॥
सुनि महांज के हरखति होइ। बोले पुन कर बंदे दोइ।
'सभि जानहुं तुम अंतरजामी। करति जितिक कौरे नर खामी ॥ ३१ ॥
सही न जाइ बिसाल खुटाई। गही आप की अबि शरणाई।
जल कारण त्रिय जाइं हमारी। तिन सों रचहिं हास डर डारी[2] ॥ ३२ ॥
सुनि सतिगुर सो दिवस बिताए। नर कौरे निज पास बुलाए।
करि बंदन को बैठै सबै। तिन की दिशा बिलोक्यो तबै ॥ ३३ ॥
अहैं ब्रिंद बलवान बडेरे। तिन के उर अहंकार घनेरे।
श्री सतिगुर हरिराइ उचारे। 'राहक जे महांज के सारे ॥ ३४ ॥
सिरकीबास बिखे दुखिआरे। बिन धरनी नहिं धाम उसारे।
जम नहिं सके पांइ[3] किस थांइ। आए अबहि बास नहिं पाइ ॥ ३५ ॥
हमरो कह्यो मानि करि लीजै। पंच हलनि की अविनी दीजै।
तिस मैं करिलै हैं गुजरान। बसहिं सदन करि सुख को मानि' ॥ ३६ ॥
सुनि राहक कौरन गुरबानी। नहिं मानी मुख कीनि बखानी।
'कहां पंच हल को छित होइ। कहां कमाइ खाइ हैं सोइ ? ॥ ३७ ॥
तिस पर कैसे ग्राम, बसावैं ? कहां जीवका सकल चलावैं'।
श्री हरिराइ बखान्यो फेरी। 'इन को तितनी अहै घनेरी ॥ ३८ ॥
छित थोरी मैं सकल कमावैं। हम बरकत तिस महिं बहु पावैं।
सहत कुटंबनि हुइ गुजरान। तिस महिं ते हुइ अंन महान' ॥ ३९ ॥

1. दिलवावो। 2. डाल दिया (डर)। 3. पैर।

सुनि कौरे बोले गुर पाही। 'हम अविनी देवहिं किम नांही।
हल की मुखी अग्र हुइ जिती। इन को हम नहिं दै हैं तिती ॥ ४० ॥

बसहिं शरीका[1] फेर कमावहिं। हुइ छित मालिक रार[2] वधावैं।
यांते अबि जवाब कहि देहिं। क्यों बसाइ सम के करि लेहिं ॥ ४१ ॥

स्याने पुरखनि की सिख एहो[3]। ग्रास[4] देहु पर बास न देहो'।
इम उत्तर दे तूशनि रहे। नहीं देति — सतिगुर उर लहे ॥ ४२ ॥

उठि करि गए आपने धाम। श्री हरिराइ कर्यो बिसराम।
सुन महांज के भए सचिंत। अपनि बास बहु थल चितवंति ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'राहकनि को' प्रसंग बरननं नाम खशटमो अंशु ॥ ६ ॥

---

1. शत्रुता। 2. झगड़ा। 3. यही। 4. भोजन।

अंशु ७

ग्राम मर्हाज के

दोहरा

भई प्रभाति मर्हाज के मिले परसपर ब्रिंद।
नहिं मानी कौरानि सभि श्री गुर गिरा बिलंद॥ १॥

चौपई

दरशन परम पावनो करि कै। पद अरबिंद सीस कहु धरि कै।
बैठे निकटि सकल कर बंदि। क्रिपा द्रिशटि सो पिखति मुकंद॥ २॥
अविनि लेनि को सकल प्रसंग। कह्यो भयो जिम कौरनि संग।
सुनि कै दीन होइ करि भनै। 'रावर ते सभि कारज बनै॥ ३॥
अगम[1] होइ बहु सुगम करंते। जिनहि सुगम तिह अगम रचंते।
नहीं आसरा दूसर कोई। तुमरे चरन पराइन[2] होई॥ ४॥
होइ उपाइ सु देहु बताई। जथा बास हम ते बनिआई।
बिन्ग बास ते नहिं बिसराम। लाज बडाई नहिं बिन धाम'॥ ५॥
श्री हरिराइ गुरु सुनि कान। बिनती सिक्खनि कीनि महान।
भए दीन से चाहति धरनी। तिन के हित की बानी बरनी॥ ६॥
'करहु कूच तुम अपनो डेरा। ले करि सरब साथ इक बेरा।
चलति जहां संध्या पर जाइ। तहिं डेरे को लेहु टिकाइ॥ ७॥
रचहु सदन सभि ग्राम बसावहु। करहु बास को मिलि सुख पावहु।
तहां बिघन जे होइ तुमारे। सतिगुर हुइं सहाइ, दैं टारें॥ ८॥
इम सुनिकै सगरे कर बंदि। कीनि बंदना पद अरबिंद।
मान्यो हुकम सिदक उर धारा। सफल काज हुइ—रिदे बिचारा॥ ९॥
जिन आइसु महिं चौदां भवन। नर बपुरे की गिनती कवन।
गुर ते होइ बिसरजन[3] चले। सिरकी बास लादि करि भले॥ १०॥

1. कठिन। 2. आश्रय। 3. विमुख।

मारग चलति दिवस को टारा। इसत्री पुरख सहत परिवारा।
गमनति जबि संध्या परि गई। डेरा करनि थावं लखि लई ॥ ११ ॥
अवनी रवनी बसिबो जोग। कीनि बिलोकन, उतरे लोग।
अबि महींज के ग्राम जहां है। गुरु हुकम ते थिरे तहां हैं॥ १२ ॥
कर्यो जामनी महिं बिसरामू। खान पान ते लीनि अरामू।
भई प्रभाति धाम जिम होइ। तिम बिथार करि उतरे सोइ ॥ १३ ॥
जैत पिराणा राहक रहै। मालक तिस अविनि को अहै।
जिसके सम दूजा बलवान न। पकरहि पानन[1] ते पंचानन[2] ॥ १४ ॥
तिसने इनकी सुध सभि सुनी। 'बसिबे हित अवनी चहिं घनी।
काला करमचंद जे राहक। मुखि महींज के महिं महि गाहक ॥ १५ ॥
अपनो मानुख तुरत पठायो। 'इहां न ठहिरहु' भाखि सुनायो।
'मैं बैठ्यो मालक निज धरनी। करौं संभारनि ज्यों निज तरुनी ॥ १६ ॥
बिना बिलंब कूच करि जावहु। आन थान कित बास बसावहु।
नांहि त मैं चढि कै चलि आवहुं। लरे हनौं नतु लूट मचावहुं ॥ १७ ॥
अपनी सीम निकासों सारे। जे अर परहिं लखहु से मारें'।
इत्यादिक भेज्यो कहि तबै। आयो नर बैठे जहिं सभै ॥ १८ ॥
कही जैत की सकल सुनाई। 'क्यों तुम उतरि परे इस थांई ?
नहिं बूझ्यो नहिं आइसु लई। रिदे ढीठता क्यों करि भई ? ॥ १९ ॥
लखहु कि नहीं जैत को ज़ोर ? जिसके सम नहिं जग मैं और।
बीर सैंकरे हेरति भाजे। लर नहिं सकहिं तजैं कुल लाजें' ॥ २० ॥
काले कह्यो 'बिसाल मही[3] है। सुन्यो जैत बलवान सही है।
हम बिरोध नहि सकहिं कमाइ। तिह समसरता पाइ न जाइ ॥ २१ ॥
श्री हरिराइ गुरु सभि जग के। तिन के रहैं आसरे लगि के।
कर्यो हुकम हमको इस थान। रचनि सदन हित बैठे आनि ॥ २२ ॥
जाची देहु, अधिक छित[4] अहे। समै बितावहिं हम इत रहे।
इक तो गुरु हुकम को मानो। दूजे हम पर करहु असानो ॥ २३ ॥
अपर बसहिं जिम हुई अनुसारी। तिम हम रहैं सदा हित धारी।
सुनति दूत ढिग जैत गयो है। इन को कह्यो सुनाइ दयो है ॥ २४ ॥
'श्री हरि राइ बिलंद बली हैं। पीरी मीरी धरैं भली हैं।
भए सहाइक, थान बतायो। सो चाहति हैं इनहु बसायो ॥ २५ ॥
कहै जैत 'गुर छीनसि कांहू। चहैं बसायो हम छित मांहू।
सो मैं देति नहीं किस रीति। नही सहारौं अस बिपरीत ॥ २६ ॥

---

1. हाथ। 2. शेर। 3. भूमि। 4. भूमि।

अबिके जाहु देहु समुझाइ। भला चहहु निज तो चढि जाइ।
आन थान खोजहु हित बास। रचीअहि जहां नचिंत अवास'॥ २७॥
आइ दूत पुन सकल सुनाई। काले आदिक चिंत उपाई।
महां बली इह बसनि न दै है। हमरो बैर नहीं निबहै है॥ २८॥
होइ दीन गुर के ढिग आए। हाथ जोरि करि सीस निवाए।
बैठति अपनी अरज़ गुज़ारी। 'सुनहु प्रभू! जिम जैत उचारी॥ २९॥
भई संझ तुम हुकम चितारा। पिखि सथान को सिवर उतारा।
जैत पिराणे की छित सोइ। सुनि नर भेज्यो रिस मैं होइ॥ ३०॥
लैहों लूट ततुर उठि जय्यै। आन सथान बास कौ कय्यै।
लियो आप को नाम न माना। लरिबे हेत द्वैश को ठाना'॥ ३१॥
सुनि गुर कह्यो 'धरहु उतसाहू। हतहु जैत करि बल रण मांहू।
उर ते कातुरता अबि त्यागहु। करि पुरशारथ को हित लागहु॥ ३२॥
अपनि ग्राम को लेहु बसाई। चढि आवहि को करहु लराई'।
काला करमचंद ते आदि। कह्यो 'कहां बनि आवहि बाद॥ ३३॥
जेत महां प्राक्रम[1] के संग। जिसके सम नहिं अपर स्रबंग।
गज सों भिरनि[2] समरथ बिसाला। इकलो केहरि हतहि कराला[3]॥ ३४॥
सभि शत्रू जिस ते भै मानैं। नहिं सनमुख ह्वै रण को ठानैं।
सगरे देश बिदति बलवंता। बरछी तीछन हाथ धरंता॥ ३५॥
जिस लगि पहुंचहि, जियति न फेर। इम घालहि घमसान घनेर।
तिस एकल के आगे ब्रिंद। भाजति हैं तजि लाज बिलंद॥ ३६॥
जैत अगारी हम हैं कहां। जिस की धांक सुनी जहिं कहां।
इस प्रकार जबि करी बडाई। सतिगुर बूझति भेतिन[4] तांई॥ ३७॥
'किस कारन ते बड बलवाना? भयो जैत के देह महाना।
सो हमको सभि देहु सुनाई। जिस ते रिपु पलाइं समुदाई॥ ३८॥
त्रास मानि तुम थिरहु न आगे। बिना लरे चहति हहु भागे।
तुमरो बसिबो भी किम होइ। कहि समुझावहु सभि ही सोइ॥ ३९॥
पुन उपाइ हम करहिं तुमारा। चहैं बसायहु ग्राम उदारा'।
काला करमचंद सुनि तबै। गुर ढिग चहिं प्रसंग कहि सबै॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'ग्राम महंाज के' प्रसंग बरननं सपतमो अंशु॥ ७॥

---

1. भाग्य (साहस)। 2. लड़ने के लिए। 3. भयंकर। 4. रहस्य।

अंशु ८

जैतबद्ध प्रसंग

दोहरा

कहिं महाजि के बंदि कर 'सुनहु प्रभू सुखदाइ ।
जैत पिराणे जनम की भई कथा जिस भाइ ॥ १ ॥

चौपई

जिस निस महिं ग्राम धारनि कीना । तरुनी इसकी मात नवीना ।
पति सों भई संजोगनि राती । करे बिलास जाग बहु भांती ॥ २ ॥

जाम जामनी जबि रहि गई । परी मंच निंद्रा बसि भई ।
ऊपर कोठे सुपत परी है । सगरी रात बितीत करी है ॥ ३ ॥

तट तलाउ के घर महिं रहैं । नीर संग सभि पूरन अहैं ।
सूरज उदै होनि को काला । आइ केहरी एक कराला ॥ ४ ॥

इक दिशि ग्राम दुतिय दिशि सोइ । आयो शेर त्रिखातुर होइ ।
जल को पान कर्यो मन भावा । पुन गरज्यो बड शबद सुनावा ॥ ५ ॥

जैत मात सुपती तबि जागी । औचक उतहि देखिबे लागी ।
रवि प्रतिबिंब पर्यो जल मांही । दूसर शेर खरो बड तांही ॥ ६ ॥

नेत्र उघारि प्रथम दो हेरे । दोनहुं के मुख लगी सवेरे ।
धीरज धरे देखती रही । इत उत द्रिशटि सु टारी नहीं ॥ ७ ॥

तिस कारन ते गरभ मझारा । भयो बली अरु सूर उदारा ।
लरहि हजारनि के संग सोई । धीर न धरहि अगारी कोई ॥ ८ ॥

तिस के संग लरहिं हम कैसे । जिसते त्रास धरहिं सभि ऐसे ।
हम ते नहिं समसरता होइ । नरनि मारि करि लूटहि सोइ' ॥ ९ ॥

श्री हरिराइ सुनी सभि गाथा । कह्यो बाक काले के साथा ।
'निशचे महां बली सो अहै । जिस ते डर करि सगरे रहैं ॥ १० ॥

हम चाहति हैं तुमहि बसायो। निफल न होइ बाक जो गायो।
सभि मानव जोधा मिलि करिकै। लरहु जैत सों प्राक्रम धरिकै। ११ ।।
जबि रण महिं चालहिं हथिआरे। तबि सहाइ हम होहिं तुमारे।
हतहु जैंत कारज करि लीजै। बिन चिंता पुन बास करीजै ।। १२ ।।
सभि अविनी बीरनि की अहे। रण करता भोगहि इस लहे।
करति जुद्ध जे मरि करि जाहि। भुगतहि सुखनि सुरग के मांहि ।। १३ ।।
जीवति रहै अविनि के मालिक। बसनहार भी हुइ तिस तालक[1]।
इउं महिमा रण की बड जानहु। होइ सुचेत जैंत को हानहु ।। १४ ।।
अंग संग हम रहैं तुमारे। करि उतसाह लेहु रिपु मारे।
नहीं त्रास को मन महिं धारहु। समुख जु आइ शसत्र गहि मारहु' ।। १५ ।।
इम कहि बार बार गुर पूरे। काले आदि करे सभि सूरे।
तऊ दीन ह्वै जोरति हाथ। 'श्री गुर बनहु आप जे नाथ ।। १६ ।।
तौ हम मार सकहिं रिपु भारो। तुमरे बल भरोस उर धारो।
तिस आगे हम कुछ नहिं अहैं। क्रिपा आप की ते पद लहैं' ।। १७ ।।
करि मसलत लरिबे की तबै। सतिगुर चरन बंदि करि सबै।
अपने डेरे महिं चलि गए। सावधान शसत्रनि जुति भए ।। १८ ।।
दूत जैंत को तबि चलि आयो। तुमहि उठावनि मोहि पठायो।
जे करि चले जाहु गे आज। बचहि प्रान जुति सरब समाज ।। १९ ।।
नांहि त मैं चढि ऐ हौं काली। लूट लेइ हौं वसतु बिसाली।
सुध हित मैं आयो लखि लेहो। लरहु कि अविनी को तजि देहो ?' ।। २० ।।
सुनि काले तबि तांहि सुनायहु। 'हम चाहति इन ग्राम बसायहु।
गुरू हुकम ते बैठे जानहु। नाहक द्वैश कहां तुम ठानहु ।। २१ ।।
जे नहिं जैति बैठिबे देहि। तौ हम सनमुख लोहा लेहिं।
नित निरबल के बल गुर अहैं। बिदित बात इह सभि जग कहैं ।। २२ ।।
भुज बल को भरोस है तांही। हमहिं आसरो गुर पग का ही।
लरिबे आइ त सनमुख लरैं। गुर प्रताप ते रण को करैं' ।। २३ ।।
सुनति दूत तूरन तबि गयो। जैंत साथ सभि उचरति भयो।
'लरिबे कहु बनि बैठे त्यार। अपनो गुरु आसरा धारि ।। २४ ।।
अवनी तजहिं नहीं अबि सोइ। हतहिं कि अपनि प्रान दें खोइ।
जिम हुइ पिता पितामे धरा[2]। तिम बैठे मन महिं हठ धरा ।। २५ ।।
लरहु संघारहु तो छित लेहू। धरहु छिमा तिन बसिबे देहू'।
सुनति जैंत मन कोप उपायो। 'को अमु मम छित पग जिन पायो ।। २६ ।।

---

1 अधीन । 2 भूमि ।

सुन्यों कि नहीं जथा बल मेरा। सम्मुख न होति हुतो जे हेरा।
बसत्र शसत्र आनहुं अबि मोरा। ज़ीन सजाइ चपल बलि घोरा'॥ २७॥
इम कहि सभि नर करि कै त्यारी। भ्रातादिक जे आयुध धारी।
लरनि हेतु बजवायसि ढोलू। बल हंकार के कहि करि बोलू॥ २८॥
निकस्यो वहिर ग्राम ते ठाढो। लरिबे हेतु चाउ चित बाढो।
तोमर शकती गहि शमशेर। सिपर तुपक जोधा समशेर॥ २९॥
ढोल बजावति चालि उताले। बोलति गरब बिसाल कराले।
काले करम चंद सुध पाई। तुरत त्यार भे हेतु लराई॥ ३०॥
गमने गहि गहि शसत्र अगारी। एक टेक सतिगुर की धारी।
श्री हरिराइ नाम को लै कै। निकसे वहिर कोप मन तै[1] कै॥ ३१॥
चितवहिं जैत ओज को सारे। 'कहहु कौन जो तिसं संहारे।
पकड़े शकति खड़ग जबि जावै। निज तन शसत्र खाइ अरु घावै॥ ३२॥
तिस के बनहिं सहाइक सारे। मिलि बल करहु तुरत लिहु मारे'।
कहि सुनि कै धारी सभि मौन। प्रथम अगारी अरहि सु कौन॥ ३३॥
धीरज सभि कै रिदै बिनासा। रिपु बल शकती ते बढ त्रासा।
श्री हरिराइ केर धरि आसा। सभि महिं काले बाक प्रकाशा॥ ३४॥
'गुरु बाक पर मोहि प्रतीत। निशचै होइ हमहुं की जीत।
बनहिं सहाइक जैत संघारैं। अपनो बिरद बिसाल संभारैं॥ ३५॥
मैं सभि ते आगे हुइ लरौं। हतौं जैत को कै अबि मरौं।
तुम सभि भ्राता बनहु सहाइक। सनमुख होइ हतहु खग सायक[2]॥ ३६॥
इम काले कीनसि उतशाहू। चले चौंप करि सभि चित मांहू।
खरे दूर कुछ तुपक चलाई। लरहिं परसपर भे अगवाई॥ ३७॥
देखि जुद्ध को ऋुद्धति भारी। ऊचे बोलि जैत अहंकारी।
गहि करि बरछी तीछन भीछन। रिस ईछन ते करति निरीछन[3]॥ ३८॥
जिम गज ब्रिंद न केहरि गिनहि। बिन डर तिम रिपु गन को हनहि।
आयो सनमुख शकति[4] उठाए। देति त्रास को शत्रु दबाए॥ ३९॥
काले तवहि बिलक्यो आवति। अधिक बली हमरे भट घावति।
श्री हरिराइ अराधनि करे। 'बनहु सहाइक निज बल धरे'॥ ४०॥
अपनो बिरद संभारनि कीनि। रच्छा हित पहुंचे जन चीन।
जैत रु काले को भट भेर। पर्यो सु गाढ होति भा नेर॥ ४१॥

1. तप कर (क्रोध से)। 2. तलवार और तीर। 3. निरीक्षण। 4. बरछी।

बरछी जबि उभार करि ऊचो। हतनि हेतु करि निकटि पहूचो।
चतुर बीर गुर तुरत पठाए। तिन महिं द्वै पाइनि लपटाए॥ ४२॥
द्वै भुज दंडन को गहि दोइ। जैत ओज को रोकति सोइ।
तऊ बेग ते शकति प्रहारी। तबि गुर अहिरण कीनि अगारी॥ ४३॥
मुख महिं मारन वार चलायहु। रुक्यो न बीरन ते, ढिग आयहु।
अहिरन कउ वेधनि करि गई। गुरु हथेरी लागति भई॥ ४४॥
तहां सांग की नोक थिरी है। रुक्यो बेग बिधिबो न करी है।
तऊ धकेला बल ते लागा। तोरे दंत गिरे तबि आगा॥ ४५॥
निफल वार काले तबि जाना। कहति लोक इह बली महाना।
हती सांग ते कुछ न सर्यो[1] है। अपनो बल इन सकल कर्यो है॥ ४६॥
अपनो वार करौं अबि इसको। इम बिचारि, करि दीरघ रिस को।
खैंचि खड़ग कर बल ते झार्यो। बह्यो जनेऊ के सम मार्यो॥ ४७॥
गिर्यो तुरत जिम बायू बहे। ब्रिच्छ पुरानो गिरनो लहे।
श्रोणत पसर्यो अवनी सारे। पर्यो प्रिथी पर पाऊं पसारे॥ ४८॥
मर्यो जैंत को देखि सु भ्राता। हटे तुरत लखि करि गुर त्राता[2]।
काले आदिक धर्यो अनंद। आइ सु डेरे महिं मिलि ब्रिंद॥ ४९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'जैंतबद्ध' प्रसंग बरननं नाम अशटमो अंशु॥ ८॥

---

1. कुछ न बन सका। 2. रक्षक।

अंशु ९

जंगल देश प्रसंग

दोहरा

चित प्रमोद काला भयो मिलि करि सो समुदाइ।
करति भए आगवन को निकटि गुरु हरिराइ ॥ १ ॥

चौपई

देखि दूर ते जुग कर जोरे। पहुंचे निकटि हरख नहिं थोरे।
चरन कमल पर सीस निवायहु। 'धंन गरीब निवाज' अलायहु ॥ २ ॥
'बिरद आपनो सदा ससारहु। जनु के दुशट अरिशट[1] निवारहु।
अबि हम बसहिं अनंदति धरा। महां बली सत्त्रू[2] रण मरा' ॥ ३ ॥
सतिगुर लगे बूझिबे फेर। 'कहु काले! किम कीनसि फेर?
रच्यो जंग तुम कौन प्रकारा? किम बल भयो, शत्त्रू किम मारा? ॥ ४ ॥
'सुनहु प्रभू! जिम सुनते रहे। संघर त्रिबै न कुछ बल लहे।
सभि ते दीरघ जिस को जाना। सो सभिहिनि ते लघु करि माना ॥ ५ ॥
वार शकति को एक चलायो। जिस ते कछू घाव नहिं आयो।
लग्यो धकेला समसर आइ। तोरे दंतनि दीए गिराइ ॥ ६ ॥
नहिं आगे तिस प्रविशी नोक। तहिं लौ बल करि रही सु रोक।
यांते अलप बली मैं जान्यो। खैंचि खड़ग मैं ततछिन हान्यो' ॥ ७ ॥
श्री हरिराइ सुनति मुसकाए। जैत हतनि को भेव बताए।
'अलप बली नहिं तिस को जानहु। सो बलवंत सदा पहिचानहुं ॥ ८ ॥
जबि तुम जुटे बीच रण खेत[3]। पहुंचे हम सहाइ के हेत।
दोइ बीर पाइन लपटाए। दोइ भुजा को बेग सकाए ॥ ९ ॥
तऊ पहुंचि तिन सांग प्रहारी। तबि हम अहिरण निज कर धारी।
साथ शीघ्रता कीनि अगारी। लग्यो वार तिस केर मझारी ॥ १० ॥

---

1. दुखदाई। 2. शत्रु। 3. रण-भूमि।

अहिरण फोरति अग्र धकेली। रड़की हमरी जाइ हथेली।
चुभी चुंच, इह देखनि कीजै। रुकी रही पुन रिदै जनीजै ॥ ११ ॥
इसते जानि लेहु मन मांही। अलप कि बडो हुतो बल तांही।
तुझ की जैत जानतो कहां। को नहिं समुख होति बलि महां ॥ १२ ॥
हाथ कि लात प्रहारहि मारति। हम बिन अपर कौन ध्रितु धारति[1]।
सुनि कै राहक हेरहिं तबै। बदति हाथ बंदि करि सभै ॥ १३ ॥
'धनं धन्नं गुर बिरद तुमारा। सिक्ख सहाइक शत्रू मारा।
इह कुछ नई बात है नहीं। रच्छहु सेवक जग जहिं कहीं' ॥ १४ ॥
इम सतिगुर सों मिलि हरखाए। नमो ठानि डेरे निज आए।
अपनो ग्राम बसावन कीना। गुर सेवा के रहे अधीना ॥ १५ ॥
केतिक समो बितायो जबै। साक सुता सुत के चहिं तबै।
नहिं तिस देश करहिं इन साथ। लखहिं बिदेशी कुल की गाथ[2] ॥ १६ ॥
'अहैं कौन कित ते इह आए'। लेति न देति न, साक[3] हटाए।
मिलि सभिहिनि गुर निकटि बखानी। 'मिलति न हम सों राहक मानी ॥ १७ ॥
ग्रिहसती को इम नहिं बनि आवै। बिन सरबंध करे किम भावै।
भए सुता सुत बैस बडेरे। बिना ब्याह ते हम तिन हेरें ॥ १८ ॥
इह चिंता नित उपजी रहे। शरन परे रावर कीं कहें।
श्री हरिराइ क्रिपालु सुभाइ। भाख्यो 'इह भी सिध हुइ जाइ' ॥ १९ ॥
गुर ढिग अपर ग्राम के आवैं। बनहिं सिक्ख अरु भेंट चढावैं।
तिन के संग उचारहिं वाक। 'लिहु अरू दिहु महंाज के साक ॥ २० ॥
इनकी कुल आछी पहिचानहु। निज मन महिं नहिं संसा ठानहु'।
गुर बो कह्यो सीस पर धारा। उत्तम तिनको वंस बिचारा ॥ २१ ॥
करति भए अपने सनबंध। सकल देश बासी किय संधि।
सुत अरु सुता ब्याहु सभि लीने। इक सम हुइ करि बासा कीने ॥ २२ ॥
गुर करुना ते चहति सु पायो। कुल महंाज को बास करायो।
बखशिश जथा बिसाली दीनि। सो अबि कथा सुनहु शुभ चीन ॥ २३ ॥

दोहरा

लोहीआ[4] दूसर संदली[5] बाल अवसथा मांहि।
काले केर भतीज द्वै पिता मात म्रितु तांहि ॥ २४ ॥

---

1. धैर्य धारण करे। 2. कथा, कहानी। 3. रिश्तेदार। 4. नाम है। 5. नाम है।

चौपई

अल्प बैस नहिं दोनहुं रहे। माता पिता म्रितू पद लहे।
काले तबि हित करि प्रतिपारे। निज पुत्रनि सम तिनहुं निहारे॥ २५॥
इक दिन दोनहु को ले संग। इक उठाइ लिय अंक[1] उतंग।
दुतीए को अंगुरी गहिवाई। आवति भा समीप सुखदाई॥ २६॥
मग महिं भले सिखावनि करे। बंदन ठानि भए तबि खरे।
दोनो बालिक थिनि तिस काला। पेट बजावति हाथ उताला॥ २७॥
देखि क्रिपाल तिनहुं की ढाल। बूझ्यो काले को सु हवाल।
'इह बालिक दोनहुं क्या करिहीं ? हाथि प्रहार उदर पर धरिहीं'॥ २८॥
कर जोरति काले बच भाखे। 'माता पिता हीन[2] मैं राखे।
क्रिपा आपकी ते प्रतिपारे। अबि इह पहुंचे निकटि तुमारे॥ २९॥
छुधति[3] रहति इह उदर बजावैं। कहिनि शकति नहिं, एव जनावैं।
आप ग़रीब निवाज महाने। बाल अनाथ गरीब निमाने'॥ ३०॥
सुनि कै श्री हरिराइ बखाना। 'इह महान ते बनहिं महाना।
जो तैं ऊपर रख्यो उठाइ। इस को बंस बधहि अधिकाइ॥ ३१॥
महिपालक बड सैन समेता। सकल पदारथ होहिं निकेता।
जमना महिं जल पान करावै। चढि तुरंग निज ओज[4] जनावै॥ ३२॥
बहु पुशतनि लौ राज कमावहि। गुर सेवक बन जगत सुहावहि।
नीचे बालिक जो अबि खरो। इस को बंस होहि जग खरो॥ ३३॥
राज सहित चौधरता करे। नाम चौधरी सभि महिं परे।
बर के सहित गुरु के बैन। सुनि काला परफुल्लति नैन॥ ३४॥
कर बंदन अपने घर गयो। संग भारजा बोलति भयो।
'श्री सतिगुर हरिराइ क्रिपाला। आज बाक कहि करे निहाला॥ ३५॥
जुगम[5] भतीजे ले दिखराए। इन कुल हुइ महिपाल—बताए।
जमना जल असु पान कराए। राज चौध्रता दीरघ पाएं॥ ३६॥
सुनति कोप करि बोली दारा। 'ए न्रिप हुइं सुनि तैं मुद[6] धारा।
मोर पेट ते जनमे जेई। प्रजा इनहुं की बनि हहिं सेई॥ ३७॥
करि खेती हाला[7] सो भरैं। हुकम इनहुं पर इह तबि करैं।
बिन समुझे बर ले करि आयो। कहां जानि एते हरखायो'?॥ ३८॥
सुनि काले दारा प्रति कह्यो। 'भाग इनहुं के गुर बच लह्यो।

1. गोदी। 2. अनाथ, यतीम। 3. भूखे। 4. शान। 5. दोनों। 6. प्रसन्नता। 7. भूमि का लगान।

मसलत[1] करि हउं गयो न कोई। औचक बाक गुरु किय सोई ॥ ३९ ॥
अबि उपाव कहु किम बनि आइ। तेरे पुत्र राज जिम पाइ।
सो बिधि करहि गुरु ढिग जै कै। जिसते दें बर उर हरखै कै ॥ ४० ॥
सुन त्रिय कह्यो 'जथा इह गए। जिस क्रित को करि बर को लए।
तिस बिधि निज सुत ते करिवावहु। मन भावति गुर ते बर पावहु ॥ ४१ ॥
कहे भारजा के लै नंदन। गयो गुरु ढिग कीनसि बंदन।
सिख्या देति उदर बजवाए। खरे समुख करि गुरहि दिखाए ॥ ४२ ॥
श्री हरिराइ हेरि मुसकाइ। तिन आशै लखि बाक अलाइ।
'भो काले! इह बालिक और। क्या अबि करति खरे इस ठौर ? ॥ ४३ ॥
बिनती बोल्यो जोरति कर को। 'इन की मात सुन्यो तुम बर को।
भए भतीजनि कुल महिपाला। मम सुत भरहि तिनहुं को हाला ॥ ४४ ॥
होइ प्रजा इम बसहि दुखारे। हुकम शरीकनि सदा सहारें।
दंड कैद आदिक जे होइ। 'इन पर बल ते करि हैं सोइ ॥ ४५ ॥
सुनति रिदे मैं नीक बिचारी। ले करि पहुंच्यो आप अगारी।
श्री हरिराइ रह्यो तबि ऐसे। 'सो महिपाल बन्यो बर जैसे ॥ ४६ ॥
इह भी अपनी बाही[2] करैं। खाइ आप नहि हाला भरैं।
जे इन को दुख दै हैं सोइ। बिघन दुखद तबि प्रापति होइ ॥ ४७ ॥
सुनि बर को ले काला गयो। निज दारा संग भाखति भयो।
'इस प्रकार सतिगुर बर दीनि। तऊ प्रथम ते शुभ ही चीन ॥ ४८ ॥
इम बर दीनि गुरु हरिराइ। निज सेवक कीने नर राइ।
सेवा अधिक सु राहक करै। तन मन करि सतिगुर अनुसरै ॥ ४९ ॥
तिन की कुल पटिआले वाले। करति राज को देश बिसाले।
दूसर नाभे पुरि सुख धरैं। राज सहत चौधरता करैं ॥ ५० ॥
काले सुतनि बंस जो अहै। अबि लौ तिसी देश महि रहै।
आपे बीज आपे ही खावैं। हाला लेनि नहीं को जावै ॥ ५१ ॥
श्री सतिगुर के बर[3] अबिनाशी। अबि लौ राजे हैं धन रासी।
बिदत जगत महि दोनहुं घर हैं। दीरघ देश हुकम को करि हैं ॥ ५२ ॥
इम सतिगुर कछु दिवस बिताए। जंगल देश बिखे सुख पाए।
निज दासनि को करति निहाल। जुग लोकनि दे अनंद बिसाल ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'जंगल देश' प्रसंग बरननं नाम नवमों अंशु ॥ ९ ॥

1. सलाह, मन्त्रणा । 2. खेती । 3. वरदान ।

अंशु १०
भाई गौरे प्रसंग

दोहरा

अपर कथा सुनि गुरनि की जंगल देश मझार।
भगतू के सुत दो भए एक बीर बल धारि ॥ १ ॥

चौपई

जेशट पुत्र गरभ जबि आयो। नौ मासनि को बास बितायो।
समैं प्रसूत होनि को भयो। टिक्यो गरभ महिं जनम न लियो ॥ २ ॥
जननी को संकट बड होवा। करे उपाइ न क्यों हूं खोवा।
तबि सगरे सिख मिलि समुदाए। पहुंचे थिर भगतू जिस थाएं ॥ ३ ॥
'करामात कामल[1] तुम अहो। घर संकट को क्यों नहिं लहो।
सिक्ख सैंकरे तुम ते जाचि[2]। चाहति हैं दुख ते नित बाच' ॥ ४ ॥
सुनि भाई सभि भेत बतायो। 'अंतर अर्यो कशट उपजायो।
दुहु लोकनि को राज अनंद। जाचति साहस धर्यो बिलंद ॥ ५ ॥
एक लोक को हम तिस देति। भोगहु राज अनंद निकेत।
समुझायो समुझति सो नांही। नहिं निकसति थिर भा ग्रभ मांहीं' ॥ ६ ॥
सुनति सिक्ख मन महिं बिसमाए। दुख हतिबे हित बहुत अलाए।
'अंतर बालक हठ करि रह्यो। तऊ तुमारे घर दुख लह्यो ॥ ७ ॥
तिसहि निवारन रिदै बिचारो। कहां पुत्र पर द्रिशटी धारो।
तीन दिवस बीते इकसार। हाइ हाइ बहु करति उचार ॥ ८ ॥
जे परोस[3] हैं सुन्यो न जाई। नतु मरि रहै कशट को पाई।
हम सिख सगरे करहिं अराधा। होइ क्रिपालु हतहु घर बाधा ॥ ९ ॥
जावत बालिक जनमहि नांही। तावत हम बैठहिं तुम पाही।
उत बालिक ने जिम हठ धारा। तिम हमको जानहु निरधारा' ॥ १० ॥
सुनि भगतू तबि कीनि बखान। 'जे करि सभि को मत इम जान।
दीनो राज लोक जुग केरा। लेहु जनम को जग इस बेरा' ॥ ११ ॥

1. पूरे। 2. माँगते हैं। 3. पड़ोस।

कर्यो बचन तबि जनम लियो है। गौरा नाम सु तांहि भयो है।
दूसर सुत जीवन तिस नाइ। करामात के सहति सुहाइ ॥ १२ ॥
बडे पुत्र ने राज कमायो। नगर बठिंडे आदिक पायो।
सैना संग चढै समुदाया। सभि महिं अपनो तेज बधाया ॥ १३ ॥
सो मिलिबे हित को चलि आयो। जहिं सतिगुर दीवान लगायो।
जबि इन सुन्यो हुतो पित काल। करिकै ब्याह बाक के नाल ॥ १४ ॥
सों राहक की कंन्या सुनिकै। लज्जति होति रिदे बहु गुनिकै।
गई सदन महिं दियो बताइ। 'ब्रिद्ध पुरख इक मारग जाइ ॥ १५ ॥
सो मुझ संग ब्याह करि गयो। तब ते मेरो मन थित भयो।
अपर संग मुहि नहिं परनावहु[1]। जिह थल होहि तहां पहुंचावहु' ॥ १६ ॥
सुनि तिस के पित खोजन कीनि। 'को कर गयो बतावहु चीन[2]'।
इक नर हेरति तांहि बतायो। 'भाई भगतू इत मग आयो ॥ १७ ॥
निशचै कर्यो बचन को ब्याह। करामात जुति बहु सिख जांहिं'।
सुनिकै केतिक मास बिताए। रह्यो प्रतीखति बहुर न आए ॥ १८ ॥
सुता न ब्याह अपर सों चाहा। तिम ही रही सु हठ उर मांहा।
बहुर सुन्यो 'भगतू म्रित भयो'। बिधवा भेख धारि तिह लयो ॥ १९ ॥
किस की कही न मानी कैसे। सत को धारि रही थित[3] तैसे।
तिस को पिता गयो तिस ठौरा। जहां सहत सैना थिर गौरा ॥ २० ॥
निज तनुजा की ब्रिथा सुनाई। 'तुम चलि ले आवहु घर माई।
पित को बसत्र संग करि ब्याहू। ले राखहु अपने घर मांहू' ॥ २१ ॥
सुनि गौरे निशचे करि सोई। पित कर लई लशटका जोई।
केतिक नर ले गयो निशंग। फेरे दए लशटका संग ॥ २२ ॥
डोरे महिं चढाइ करि आनी। राखी सदन मात करि मानी।
सो गौरा दरशन को आयो। कितिक बरार संग निज ल्यायो ॥ २३ ॥
श्री हरिराइ दरस की चाहू। उतरि तुरंग गयो पुन पाहू[4]।
धरी उपाइन धन ते आदि। हय दीनस जिस चढि अहिलाद[5] ॥ २४ ॥
करि बंदन गुर पद अरबिंद। बैठ्यो सभा संग नर ब्रिंद।
कुशल प्रशन सतिगुर सभि करे। 'सरब अनंद क्रिपा तुम धरे' ॥ २५ ॥
इक जस्सा कर महिं जिस चौर। करति हुतो गुर पर तिस ठौर।
सुंदर जिह सरूप सरबंग। मनहुं लीन अवतार अनंग ॥ २६ ॥

---

1. [illegible] 2. खोज करके। 3. दृढ़। 4. [illegible] 5. [illegible]

क्रिपा करहिं नित राखि हजूरी। सेवति सभि बिधि सूरत रूरी।
हास करति बोल्यो इस भाइ। 'भाई भगतु प्रलोक सिधाइ॥ २७॥
पीछे रहो त्रिया तिस तरुनी। सुंदर सुनी सु चंपक बरनी[1]।
सो दीजै मैं करि हौं दारा। उपजै हौं संतति[2] सु कुमारा॥ २८॥
श्री सतिगुर सिख भगतू जैसा। मो कहु भी जानहु तुम तैसा।
यांते भ्राता होयहु मेरो। दोश न लगहि भली बिधि हेरो॥ २९॥
नांहि त निशफल बैठी रहै। तुमरे किसू काज नहिं अहै'।
सुनि गौरे उर क्रोध उपायो। लाल बदन लोचन हुइ आयो॥ ३०॥
फरकति अधर[3] न बस कुछ चलै। कहिबे को फल किम इस मिलै।
चहति खड़ग को कर्यो प्रहार। तऊ आपनी रिस को मारि॥ ३१॥
गुर ते डरति बिलोकति रह्यो। प्रति उत्तर क्यों हूं नहिं कह्यो।
कितिक देर लौ बैठ्यो तीर। करि बंदन गमन्यो पुन बीर॥ ३२॥
लगी तीर सी बानी कही। बाधा अधिक, घाव किय नही।
क्रोध सचित बिसाल कराला। हतौं होइ गुर ते सु निराला॥ ३३॥
शसत्र घाव मिलि कै मिटि जाहि। बचन घाव करकति उर मांहि।
अदब करन को हुतो सथान। तऊ कुबचनी पीर महान॥ ३४॥
बहुर बीर बड आयुध धारी। बीच सभा किम सकहि सहारी।
सुन्यो श्रवन महिं, फोर्यो रिदा। जिम नटसाल[4], करक[5] बहु तदा॥ ३५॥
डेरे आइ सु उतर्यो गौरा। अपने सिक्ख करे इक ठौरा।
सभिनि सुनावति बाक बखाना। तुम हो हमरे हितू महाना॥ ३६॥
भो सिखहु ! सभि सभा मझारा। सुन्यो श्रवन जिम कुबच[6] उचारा।
कौन सकहि सहि एव कुचाली। जे जोधा बुधि आयुध नाली॥ ३७॥
चित महिं हुती हतौं शमशेर। करौं दुखंडि अवनि पर गेरि।
लै है स्वाद कहे को तबै। लखहिं सभासद बैठे सभै॥ ३८॥
मरिबे को डर उर नहिं धरौं। अस कुबाक ते दीरघ जरौं।
नीठ नीठ हिय महिं धरि धीर। खड़ग न खैंचि हत्यो गुर तीर॥ ३९॥
मम अपराध देखि रिस धरैं। सकल बंस को स्रापति करैं।
इम बिचारि उर कीनसि टारा। अबि मैं चाहति तिसहि संघारा॥ ४०॥
जग महिं जीवति सुनौं सु जावत। तावत मोहि न शांती आवति।
बुधि कर बल करि जतन करीजहि। जिस ते जस्से कहु हति लीजहि॥ ४१॥

---

1. सुन्दर (रंग वाली)। 2. सन्तान, औलाद। 3. होंठ। 4. कांटा। 5. पीड़ा।
6. दुर्वचन।

तां दिन शसत्र धरन फल होहि। नांहि त खान पान धिक मोहि'।
गौरसाल के बाकनि सुनि कै। सिख बैराड़ गुरु डर गुनि कै।। ४२।।
कहति भए 'कैसे तिस मारहिं। क्रिपा अधिक प्रभु जी नित धारहिं।
चौर दार सो रहै हजूर। समां पाइ कबहूं होइ दूर।। ४३।।
जेकरि बहिर इकांकी पाइं। करहिं संघारनि तुपक[1] चलाइ।
इह तौ गति है सकल असान। पाछे मुशकल बनहि महान।। ४४।।
हम ते मार्यो सुनैं गुरु जबि। दे करि स्राप बिनासहिंगे तबि।
इक बच कहि करि जरां[2] उखारहिं। सहत कुटंब[3] सभिनि को गारहिं।। ४५।।
ब्रह्म असत्र के मनहुं समान। कैधौं रामचंद्र के बान।
शिव त्रिसूल, जिम चक्र बिशनु को। जिम जम दंडा, बज्र जिशन[4] को।। ४६।।
तिम गुर बाक कह्यो सफलावै। त्रैलोकनि महि नहिं बिलमावै।
किम जग महिं जर रहै हमारी। क्रोध करहिं जबि स्राप उचारी।। ४७।।
सुनि गौरे त्रासति सिख जाने। धीर देनि के हेतु बखाने।
'अबचल जग महिं जहां तुमारी। रहैं सदा जिम अहैं हमारी।। ४८।।
तुमरी जर मेरी जर साथ। मम जर मिली जहां गुर नाथ।
सो अबचल जानहुं तुम ऐसे। मेरु[5] खरो महां द्रिढ जैसे।। ४९।।
सतिगुर को प्रसंन करि लेवैं। बनहिं दीन करि बिनती सेवैं।
जस्से कहु मारनि मम कामू। करहु अब्रहि ब्रिद्धहि सुख धामू।। ५०।।
इत्यादिक बहु कहि समुझाए। मारन मनो नीक ठहिराए।
बनी आइ अस अनबन बाती। उत गुर उर, इत सुलगति छाती।। ५१।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'भाई गौरे' प्रसंग बरननं नाम दसमो अंशु।। १०।।

---

1. बंदूक। 2. जड। 3. कुटंब। 4. इन्द्र (का बज्र)। 5. पर्वत।

अंशु ११

श्री कीरतपुर आगमन प्रसंग

दोहरा

मारनि की मसलत करी घात बिलोकति फेर।
'मिलहि इकाकी बहिर जबि हर्ताहिं तुपक दें गेर ।। १ ।।

चौपई

राख्यो लाइ निकटि नर कोई। इक दिन तुरंग अरूढ़्यो सोई।
गमन्यो बहिर इकाकी जबै। सुध जसूस करि दीनसि तबै ।। २ ।।
'अमकी दिशा गयो चढि सोइ। बडो तुरंग एकलो होइ।
सुनि सुचेत होइ चढे बरार। दुइ तीनक जोधा असवार' ।। ३ ।।
जित दिशि गयो सुन्यो तित गए। बहिर उजार बिलोकति भए।
फिरति इकाकी हट्यो सु आवति। चंचल बाजी[1] को चपलावति ।। ४ ।।
इनहुं तुफंग त्यार करि लीनि। सने सने सामीपी कीनि।
निकटि होइ करि ऊच बखाना। रहु ठांढो नहिं करहु पिआना ।। ५ ।।
कही बात को फल अबि लैहो। बनहु सुचेत जानि नहिं पैहो।
देखि अचानक पहुंचे आइ। ततछिन बन्यो न कोइ उपाइ ।। ६ ।।
छुटी तुफंग लगी बिच रिदे। दड़ गिर पर्यो भूम पर तदे।
करि संघार हटे असवार। डेरे पहुंचे तूरन[2] धारि ।। ७ ।।
गौरसाल को खबर सुनाई। 'कीनसि काज लीनि रिपु घाई'।
हरख्यो वर दासनि को दीए। 'पूरन करी भावना हीए ।। ८ ।।
उतर्यों रिण कुबाक जे कह्यो। सभा बीच दीरघ उर दह्यो।
उत सुध सुनी गुरु हरिराइ। जस्सा चौर दार दिय घाइ ।। ९ ।।
हय पर चढि बाहर सो गयो। मेल बिराड़नि के संग भयो।
औचक[3] मारि तुफंग गिरायो। क्रोध गुरु ले उर सुनि छायो ।। १० ।।
सकली बात घात की जानी। गौरे संग हास की बानी[4]।
सो रिस मन ते नाहिं गवाई। एकल खोजि तुपक ते घाई ।। ११ ।।

---

1. घोड़ा। 2. जल्दी। 3. अचानक—फुर्ती से। 4. मज़ाक की बात।

हम ते नहीं त्रास कुछ धारा। महां ढीठ ह्वै कीनि संघारा।
जे करि इसको कुछ नहिं कहैं। नहीं अदब सिक्खनि महिं रहै॥ १२॥
यांते देनी बनहि सजाइ। इम बिचार करि श्री हरिराइ।
महां क्रोध ते स्राप बखाने। सुनति सभासद सभि ही काने[1]॥ १३॥
भगतू केर ननावा नाइ। तबि ते धर्यो न अपर अलाइ।
'पाथर की जोनी तुम पावैं। कुनकी कैलां[2] टुटि टुटि जावैं॥ १४॥
आंखनि ते बिड़ाल सम अहैं। काक जोनि को मरि करि लहैं।
सूकर, कूकर, कोक[3], कुरंग[4]। केहरि, कुरकट, कीर[5], कुलंग[6]॥ १५॥
कान खजूर, कुंडली, क्रोधी। जून पसू की परहि अबोधी।
केक[7], भेक[8], किंचुल, कनकाया[9]। कीटनि की जूनी समुदाया॥ १६॥
पुन मेघनि की जूनी पावैं। जग महिं नीर अतोल ढुकावैं।
मरहिं अंत फाहे की मौत। तब कुल के बहु जैहैं औत[10]॥ १७॥
इस बिधि केतिक गिनीअहि स्राप। इक सौ एक दीए गुर आप।
'अबि ते मुख नहिं लगहि हमारे। रहै दूर नहिं परहिं निहारे॥ १८॥
नहीं सिपारश करि है कोई। करहि जु, संगी तिस को होई।
इम बहु दुखद स्राप गन कहे। जस्से को सिमरति रिस लहे॥ १९॥
लोथ मंगाइ दाह करिवाइव। पिखि गुर रिस को सभि डरपाइव।
एक निसा तबि राख्यो डेरा। कर्यो कूच पुन हेरि सवेरा॥ २०॥
गौरे निकटि गई सुध सारी। 'तव पर भयो क्रोध गुर भारी।
लोक प्रलोक बिखे सुख घने। दे दे स्राप सकल ही हने॥ २१॥
जे गुर भाखे सकल सुनाए। जाने गौर साल दुखदाए।
रिदे त्रास धरि बनि करि दीन। सेवा करनि बिखे चित दीनि॥ २२॥
करि गुर कारज भले रिझाऊं। नांहि त अपने प्रान गवाऊं।
दारुन स्राप बखशि हैं जाते। मन बच करमनि सेवौं ताते॥ २३॥
फुरनहार[11] भीखन दुखदानी। भई क्रोध ते सतिगुर बानी।
होहि प्रसंन न बखशहिं जावद। निस दिन सेवा लागौं तावद॥ २४॥
इम दिढ़ मन कौ करिकै गौरा। सेवन हित प्रन धरि तिस ठौरा।
गुर सों फरक कोस को राखि। चढ्यो पिछारी निज हित कांखि॥ २५॥
क्रम क्रम करि घालति मग डेरे। सैना गमनति संग घनेरे।
श्री हरिराइ पाल्की मांहि। होहि अरूढन सुख सों जाहिं॥ २६॥

---

1. कानों द्वारा। 2 टहनियां, अर्थात् सन्तान। 3. भेड़िया। 4. हिरन। 5. तोता 6. एक पक्षी (जलचर)। 7. केकड़ा। 8. मेंढक। 9. बिच्छू। 10. निःसंतान। 11. फलने वाली।

गन दुंदभि बाजत संग चाले। आयुध धारी[1] सुभट बिसाले।
कतहूं निकसहि अग्र कुरंग। देखति तूरन चढहिं तुरंग ॥ २७ ॥
बडे बेग ते चलहिं धवाइ। महां बली हय समता बाइ[2]।
खंड घीव करि पालन कीने। चपल चलाकी महिं चित दीने ॥ २८ ॥
म्रिगनि हराइ धाइ कै गहें। मेचक प्रिशट[3] जिनहुं की अहे।
दीरघ श्रिगनि[4] ते गहि लेति। पुन दासनि पकराइ सु देति ॥ २९ ॥
इस प्रकार मग करति बिलासा। पालति म्रिगनि, न होति बिनासा।
भए इकत्र हज़ारों जीवं। बन ते आनि पालना थीवं[5] ॥ ३० ॥
जहां सिवर को घालहिं जाइ। सुनि गौरा पीछे ठहिराइ।
कोस फरक ते डेरा करै। गुरु रिझावनि इच्छा धरै ॥ ३१ ॥
अपनी सैना राखहि संग। बडे सुभट बलि चपल तुरंग।
नहिं नेरे गुर के कबि होवै। महां कोप अपने पर जोवै ॥ ३२ ॥
दुखद भयंकर दीरघ स्राप। करौं प्रसंन, बखश हैं आप।
कोस फरक ते संग सिधारहि। तिम ही अपनो सिवर उतारहि ॥ ३३ ॥
आयुध धारी बीर बिसाला। रण ठानति रिपु ते नहिं चाला।
इस बिधि गमनति मग उलंघायो। श्री कीरतिपुर तबि नियरायो ॥ ३४ ॥
कोस दूर पुरि ते जहिं ठौरा। अपनि सैन जुति उतर्यौ गौरा।
श्री हरिराइ प्रवेशे जाइ। हरखे नर नारी समुदाइ ॥ ३५ ॥
चढ कोठनि पर फूल बसावैं। देखि देखि सभि सीस निवावैं।
उतसव कर्यो अनेक प्रकारा। पुरि प्रविश्यो सतिगुर निहारा ॥ ३६ ॥
निज मंदिर सुंदर जहिं बन्यो। चित्रिति अंदर ते सुख सन्यो।
वाहन त्यागि प्रवेशे जाइ। दीह प्रयंक बिछौना छाइ ॥ ३७ ॥
दासनि आनि उसावनि कीनि[6]। श्री हरिराइ हेरि आसीन[7]।
चहुंदिशि मांहि फरश जो होवा। रंग अनेकनि को सुठ[8] जोवा ॥ ३८ ॥
ले ले बहु बिधि के उपहार। पुरि जन पहुंचे आनंद धारि।
बंदन करि अरबिंद चरन को। देखति दरशन कशट हरनि को ॥ ३९ ॥
कुशल प्रशन सभि सों गुर कर्यो। 'क्रिपा आपकी' तिनहु उचर्यो।
पिता आप के नगर बसायहु। नर नारिनि आनंद उपजायहु ॥ ४० ॥
तुम भी नहिंन बिसारहु इनको। अहो आसरा इन पुरि जन को।
चिरंकाल बाहर भी रहे। सदा प्रतीखति हम मग लहे ॥ ४१ ॥

---

1. शस्त्रधारी। 2. वायु। 3. पीठ। 4. सींग। 5. पालन किया जाता है। 6. बिछाया। 7. सुशोभित। 8. सुंदर।

अपर नहीं इत पुरि को मालिक। राखनि पालनि तुमरे तालिक।
सुनि करि बोले श्री हरिराइ। 'रहे पितामा जी इस थाइं ॥ ४२ ॥
हम भी तिम इत बास करैंगे। पुरि को खेद न कोइ धरैंगे।
बसहु निचिंत अनंद उपजावहु। गुर गुर सिमरहु बिघन मिटावहु ॥ ४३ ॥
श्री हरि क्रिशन चंद को पास। आन्यो गोद उठाए दास।
पित के सनमुख ह्वै करि ठाढो। करी नमो सु चाउ चित बाढो ॥ ४४ ॥
लघु सुत को पिखि गहि करि बाहू। लीए बिठाइ अंक के माहू।
मुख हेरनि फेरति सिर हाथ। जानहिं – बनहिं तखत को नाथ ॥ ४५ ॥
पुन उठि करि तहिं जलधि बिबेका[1]। माता नेती पग सिर टेका।
सुत को पिखति आशिखा[2] दई। रिदे अनंद प्रफुल्लित भई ॥ ४७ ॥
पुन सभि महिलां दरशन कीनि। बंदहि पद रिद मुद महिं लीन।
इस बिधि कीरति पुरि महिं जाइ। बसे आनि श्री गुर हरिराइ ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री कीरतपुर आगमन' प्रसंग बरननं नाम इकादशमो अंशु ॥ ११ ॥

---

1. [illegible] 2. आशिर्वाद

अंशु १२
श्री गुर नित बिबहार प्रसंग

दोहरा

खशट मास पुरि महिं बसे नाना करति बिलास।
चहुं दिशि की गन संगतां संग मसंद सु दास ॥ १ ॥

चौपई

लै लै अनिक अकोरनि आवैं। दरसहिं मनो कामना पावैं।
देश बिदेश जगत महिं सारे। गुर कीरति पसरी सुख सारे ॥ २ ॥
दीपमाल बैसाखी आदि। मेला होइ संत संबाद।
भजन कीरतन आठहुं जामू। केतिक लिव लागी सतिनामू ॥ ३ ॥
सिक्ख अनेक मंजीअनि वारे[1]। निज निज संगति कीनि उदारे।
फुरहि बाक तूरन बर स्रापे। अजमत जुति गन, गुरु सथापे ॥ ४ ॥
सो सभि दरशन को चलि आवैं। बसतु अजाइब गुर हित ल्यावैं।
चक्रवति जिम महां अधीश[2]। सभि न्रिप आइ निवावैं सीस ॥ ५ ॥
तथा तखत पर श्री हरिराइ। देति दान बहु रहे सुहाइ।
मनो कामना मन ते जाचैं। केतिक जाचति बचन उबाचैं ॥ ६ ॥
गुपति बिदति दासनि की आस। पुरवति सगरी देति हुलास।
केचित पुत्र कामना पावैं। केचित बित प्रापति हरखावैं ॥ ७ ॥
केचित तन अरोगता जाचैं। केचित बिघन बिनासि उबाचैं।
केचित भीर परहि जबि आइ। जाचति बनि कै दीन सहाइ ॥ ८ ॥
को को कारज गिनीअहिं जग के। पावहिं निकट गुरु सरबग के।
गादी उचित बैठि छबि पावैं। भट चहुं दिशा दिवान लगावैं ॥ ९ ॥

---

1. गुरुओं द्वारा स्थापित आदरणीय सिक्ख (गद्दियों वाले)। 2. पृथ्वीपति, राजा।

चौरदार ढोरति बर चौर[1]। चोबदार ठाढे बड पौर।
हाथ लशटका कंचन धारैं। हुकम गुरु को अग्र उचारैं ॥ १० ॥
भाट नकीब सुजसु को कहैं। ब्रिद ढलैत[2] खरे द्रिढ रहैं।
सूरजमुखी सुहाइ अगारी। जगमगात सूरज अनुहारी ॥ ११ ॥
खरे मेवड़े संगति केरे। करि अरदास सुनाइ अगेरे।
घनी मसंदनि ते परिवारति। चहुंदिशि ते वाकनि सतिकारति ॥ १२ ॥
अनिक अकोरनि के अंबारे। हेति जाति हैं गुरु अगारे।
कर जुग जोरि जोरि चहू ओर। जाचहिं रार्चाहं चरन निहोरि ॥ १३ ॥
कबि कबि क्रिपा द्रिशटि को डारैं। सभि दिशि संगति खरी निहारैं।
इक सौ इक पालनि को जामा। सूखम बसत्र पहिरि अभिरामा ॥ १४ ॥
बहुत मोल को ललित दुकूल। डार्यो रहै दीह भुजमूल[3]।
मुकतालनि[4] की माल बिसाला। उज्जल गोल दिपति दुति जाला ॥ १५ ॥
बिच ललंतका[5] लुलित[6] ललामु[7]। हीरे बडे जटिति अभिराम।
नवरतने भुजदड बिराजे। नव ग्रह निजदुति जन उपराजे[8] ॥ १६ ॥
जात रूप के कटक सुहाइ। कोर दार जटिती समुदाइ।
छाप छलायनि शोभति हीरे। रचे चकोर चारु रुचि चीरे ॥ १७ ॥
दुइ मुख मंडल कानन कुंडल। डोलति शोभति मनहुं अखंडल।
सुंदर सूखम सिर उशनीक[9]। ऊपर जिगा बंधि बिधि नीक ॥ १८ ॥
मनहुं शांति रस के धरि बेस। सोहति सूरज ग्यान विशेश।
बोल अमोलक कोमल मीठे। मुख ते निकसति चित को ईठे ॥ १९ ॥
कमल पांखरी आंख बिसाला। क्रिपा भरी ते पिखहिं क्रिपाला।
गर शमशेर धरी खर धारा। जटति जवाहर मुशट सुधारा ॥ २० ॥
सर तीखन भीखन ते भर्यो। तरकश मुकता गुच्छनि जर्यो।
धरहिं धनुख को अधिक कठोर। अैंच्यो[10] जाइ न नर के जोर ॥ २१ ॥
सरब शसत्र कबि निकटि धरावैं। कबिहू अपने अंग लगावैं।
बाक पितामे को नित पालति। जिस कारन ते संग न डालति ॥ २२ ॥
तुरकादिक जे रिपु होइ आवै। औचक बिघन तिनहुं परि जावै।
आइ सकहिं नहि निकटि अराती। बिनसति बिना बार बिन धाती ॥ २३ ॥

---

1. चंवरंढार। 2. शूरवीर। 3. कंधों पर। 4. मोतियों की। 5. लम्बी माला। 6. टिक रही है। 7. सुन्दर। 8. शोभा पैदा करना। 9. पगड़ी। 10. खिंचा जाना।

जाम जामनी जागनि करि हीं। सौच शनान ठानि पट धरिहीं।
बैठहिं मन पावैं बिसराम। इक लिव लगहि आतमा राम ॥ २४ ॥
राग द्वैश द्वैत न जहिं लेश। इक अशेश महिं नहिं न कलेश।
आवहिं ब्रिद रबाबी[1] पासे। आसावारि स राग प्रकाशें ॥ २५ ॥
जिम अंम्रित की बरखा होइ। सुनहिं प्रीत वडभागी जोइ।
होइ प्रकाश भोग जबि परै। भाट नकीब सुजसु को करैं ॥ २६ ॥
घसि चंदन को केसर साथ। आनहिं दास धरे जुग हाथ।
सुभहि गुरमुखी दीरघ नीका। निजकर संग निकासहिं टीका ॥ २७ ॥
दरसहिं बिच आदरश बदन को। शोभति सुंदर दुती सदन को।
बारंबार शमश[2] पर हाथ। फेरति करहिं सुधारनि नाथ ॥ २८ ॥
सभा सथान बहुर चलि आवैं। सकल समाज देखि सुख पावैं।
चहुंदिश ते बंदन गन होवै। जित दिशि पिखैं ताप त्रै खोवैं ॥ २९ ॥
होति बिलावल चौकी फेर। बजति म्रिदंग रबाब बडेर।
सभा लगी सभि शबद सुनंते। ब्रिमल आतमा ह्वै मतिवंते ॥ ३० ॥
केचित ग्यान बारता बूझहिं। उपदेशहिं तिस आतम सूझहिं।
केचित सेवा करहिं बिसाला। होहि प्रसंन कटहिं जमजाला ॥ ३१ ॥
केचित करहिं भगति अभिरामू। उपदेशति गुर तिन सतिनामू।
ऐसी लिव लागहि उर अंतर। सिमरनि निसदिन रहै निरतर ॥ ३२ ॥
जिस ते मन हुइ जाइ इकागर। जथा जोति जोगीनि उजागर।
अंत समें गुर पुरि महिं बासहिं। जहां सदीव अनंद प्रकाशहि ॥ ३३ ॥
केचित पावहिं आतम ग्यान। जनम जनम के बंधन हानि।
डेढ जाम लौ जबि दिन आवै। तावत बैठे सभा सुहावैं ॥ ३४ ॥
जथा जोग उपदेशहिं दास। करहिं कुमति के बंध बिनाश।
पुनहि रसोइआ हादर होइ। ठाढो रहै बदि कर दोइ ॥ ३५ ॥
द्रिशटि परहि तब अरज़ गुज़ारहि। 'महांराज जी भोजन त्यारहि'।
उठहिं गुरु, सुच संग सथान। बैठहिं, चरन पखारहिं पान ॥ ३६ ॥
इक चौंकी पर दीरघ थार। इक पर बैठहिं आप उदार।
मन भावति अचि[3] भोजन नाना। पानी पान पखारहिं पाना[4] ॥ ३७ ॥
पुन उठि सुठ प्रयंक पर थिरैं। केतिक काल सुखोपति धरैं।
डेढ जाम दिन ते उठ करिकै। धरहिं सौच आलस परहरि कै ॥ ३८ ॥

---

1. कीर्तन करने वाले डूम-मिरासी। 2. दाढ़ी। 3 खाया। 4. हाथ धोते हैं।

बहुर दिवान बिखे थित होइ। दरशन करहि आन सभि कोइ।
संध्या लगि सुनि शबद सु राग। करहिं श्रेय जब पिखि अनुराग ॥ ३९ ॥
चतर घटी निस बीती हेरि। भोजन करहिं गुरू पुन फेर।
जाम जाई निंद्रा बसि होइं। पौढहिं बर प्रयंक पर सोइ ॥ ४० ॥
जाम जापनी ते पुन जागहिं। सौच शनान करनि को लागहिं।
इक सौ इक गागर के संग। सरब रितुनि मज्जति सरबंग ॥ ४१ ॥
इम निस दिन की क्रिया करंते। जिन ते जन अनेक उधरंते।
खशट मास कीरतिपुरि मांही। कर्यो बास सतगुर चितचाही ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री गुर नित बिवहार' प्रसंग बरननं नाम दवादशमो अंशु ॥ १२ ॥

अंशु १३

तुरकन सों बखेरा प्रसंग

दोहरा

रह्यो कोरा भर नगर ते गौरा सिवर लगाइ।
चाहति कर्यो प्रसंन गुरु घात कछू नहिं पाइ ॥ १ ॥

चौपई

निस दिन सिमरनि करति बितावै। निज सैना को धीर धरावै।
खान पान ते पोखनि करै। शसत्र बसत्र ते त्यारी धरै ॥ २ ॥
श्री हरिराइ चढनि को चाहा। बिचरहिं देशनि जंगल मांहा।
सने सने सतद्रव के तीर। गमने संग महां भट भीर ॥ ३ ॥
बजहि दुचोब दुंदभिनि दीहा[1]। जिह सुनि सूरनि हुइ रण प्रीहा[2]।
हय प्रेरहिं गहिं तुरक चलावहिं। केचति बाहनि पुशट कुदावहिं ॥ ४ ॥
श्री हरिराइ अरुढि तुरंग। बेगी चंचल वल सरबंग।
बाग उठाइ तुंद तबि कर्यो। नट सम फांदति चपलति चर्यो ॥ ५ ॥
करहिं कवाइद तोमर तीर। जिम रण मारति हैं बर बीर।
अधिक धवाइ दीनि मैदान। मन मनिंद जिह बेग महान ॥ ६ ॥
सभिनि दिखाइ फेरि करि आछे। खरे मिलावन सैना पाछे।
मारग चलति अनेक प्रकारा। कौतक करति गुरु करतारा ॥ ७ ॥
सिक्खी मग दिढ करनि अनूप। जगतेशुर को सपतम रूप।
सततद्रव तीर तीर चलि आवैं। दिन गमनै डेरा निस पावैं ॥ ८ ॥
केतिक महिलां[3] के संग डोरे। ल्याए सतिगुर इत ही ओरे।
स्यंदन[4] सकटनि[5] महिं गन दासी। सेवा ठानहिं जे निस पासी ॥ ९ ॥

---

1. भारी। 2. इच्छा। 3. स्त्रियां। 4. रथ। 5. बैल गाड़ियां।

जहां प्रभु उतरे सुख पायो। तिह ते गौरा कोस रहायो।
संग तीन सै भट असवार। रचहिं जंग बड आयुध धारि ॥ १० ॥
निस बिसराम कीनि सुख पाए। खान पान ते पुन सुपताए।
भई प्रभाति सौच इशनाने। जीन डारिहय कीनि पयाने ॥ ११ ॥
श्री हरिराइ अगारी चाले। दुंदभि बज्यो चढ्यो दल नाले।
पाछे सतिगुर को रणवास। डोरे स्यंदन दासी दास ॥ १२ ॥
सुध लेवरि गौरा चढि चाला। निज बजवाइ निशान बिसाला।
सत्तद्रव निकटि निकटि चलि आवैं। सकल बहीर पर्यो तित जावैं ॥ १३ ॥
लवपुरि[1] ते तुरकनि को डेरा। जाति चल्यो उमराव बडेरा।
दिल्ली पुरि तुरकेशर तीर। पहुंच्यो चहैं महां भट भीर ॥ १४ ॥
श्री हरिराइ अगारी आए। पाछे महिलादिक समुदाए।
सने सने चलिबो तिन होइ। तुरकनि अनी बिलोके सोइ ॥ १५ ॥
बूझ्यो 'इह किस को है डेरा ?। गमनति जाति वहीर बडेरा'।
कह्यो सुनाइ गुरु हरिराइ। आगे गए सैन समुदाइ ॥ १६ ॥
तिन को इह बहीर उत जाई। जबि तुरकनि ऐसी सुधि पाई।
सो उमराव कहनि तबि लाग्यो। प्रथम शत्रुता कोप सु जाग्यो ॥ १७ ॥
'इन को हुतो पितामा जबै। मोर पितामा मार्यो तबै।
मुगलसखान बीर बर बंका। रण मैं कर्यो संघार निशंका ॥ १८ ॥
अबि औचक भा मेल हमारा। लूट लेउ इन को दल सारा।
स्यंदन डोरे लीजहि घेर। जानि नहीं दिहु इनहिं अगेर ॥ १९ ॥
तोरे सकल धुखावनि करो[2]। जे करि खरो करहि तबि लरो'।
इम सुनि श्रोन तुरक समुदाए। घेरि बहीर खरे अगुवाए ॥ २० ॥
इक असवार धवावति[3] गयो। मिल्यो गुरु संग भाखति भयो।
'प्रभु जी ! आप चले इत जाते। पीछे मिल तुरक रिस राते ॥ २१ ॥
घेर्यो सकल वहीर तुमारा। हेरि फरि बनहु सहाई उदारा'।
सुनि करि प्रभु तुरंम ठहरायो। सकल प्रबल दल संग मिलायो ॥ २२ ॥
आनि जंग को कारज पर्यो। हमहि पितामे बरजनि कर्यो।
असमंजस होई अबि आन। खरे बिचार्यो गुर भगवान ॥ २३ ॥
श्री मुख बूझ्यो 'कौन पिछारी ?। अयेदार आवति बल भारी'।
हाथ जोरि तिन सकल सुनाई। 'प्रभु जी सैना सभि चलि आई ॥ २४ ॥

1. लाहौर। 2. पलीते को आग लगाओ। 3. दौड़ता हुआ गया।

शसत्रहीन सभि आइं पिछारे। सुन्यो दूर दुंदभि धुनकारे[1]।
भगतू केर निनावा[2] आवति। अपर न सैनापति को पावति'॥ २५॥
सुनि करि श्री हरिराइ बखाना। 'जे भगतू सुत है तिस थाना।
अपनी मातनि आपहि ल्यावहि। लरहि तुरक सों सकल बचावहि'॥ २६॥
इम कह चपल तुरंग चलायो। पाछे कटक[3] चल्यो उमडायो।
मन महिं गिनहिं न सतिगुर मुरे। हम को लरन हुकम नहीं करे॥ २७॥
दल तुरकनि को होइ घनेरा। हम मारहिं, तहिं कहैं न फेरा।
गुर सनमुख को कहे न बैन। संग चलति करि नीचे नैन॥ २८॥
आवति अंतहि पुरि गुर केरा। इह कारज भा खोट बडेरा।
सभि जोधा सैनापति आदि। तूशनि चले बिना अहिलाद॥ २९॥
जहां तुरक दल इकठो होयो। आनि तहां गौरे सभि जोयो।
निज असवारिक तहां पठायो। 'गुर वहीर क्यों तुम अटकायो?॥ ३०॥
आगा छोरि देहु हम जाना। नांहि त परहि शसत्र घमसाना।
इहां प्रजा के नांहिन लोक। करि बल को जिन लेते रोक॥ ३१॥
मारन मरनो काज हमारो। नहिं सनमुख हुइ खरे निहारो[4]।
सुनि तुरकनि मन मान बडेरे। भाखे बाक स कोप घनेरे॥ ३२॥
'शसत्र तुहारे लै हैं छीन। हतहिं न फेर बनहु जे दीन।
जे प्रिय प्रान आपने जानहु। हय आयुध को त्यागि पयानहु॥ ३३॥
इम गौरे जबि तिनकी सुनी। लरन हेतु रिस कीनसि घनी।
अबि गुर हित कै प्रान गवावौं। कै रण जीति खता बखशावौं॥ ३४॥
समां प्रतीखति रह्यो हमेश। पायो आज समों इह बेश[5]'।
मो को स्राप देइ समुदाइ। दोनहुं लोकनि कशट उपाइ॥ ३५॥
सो अबि मिटहि करहिं पुरशारथ। इस ते को आछो होइ स्वारथ।
इम गिन मन महिं उतसाहा। करौं जंग भीखन चित चाहा॥ ३६॥
जे अबि लरौं न मैं रिस धरि कै। करौं न मारन मरन बिचरिकै।
गुर को काज बिगर बड जैहै। तुरक न टरहिं लूटि सभ लै हैं॥ ३७॥
धिग जीवन मेरो जग माही। कहै जगत 'जोधा इह नांही।
बिगरति गुरु को काज निहारा। लरि करि यन रिपु को नहिं मारा'॥ ३८॥
यांते सफल मरन है मेरा। जीते सुधरहि काज बडेरा।
भए सहाइ आनि गुर नाथ। जिसते अवसर नहिं अस हाथ॥ ३९॥

---

1. बाजे बजते हैं। 2. एक व्यक्ति का नाम। 3. सेना। 4. देखो। 5. बढ़िया।

इम बिचार करि हुकम बखाना। जंगी देह बजाइ निशाना।
भो सिखहु ! लिहु बल संभारे। जुग लोकनि के गुर रखवारे ॥ ४० ॥
प्यारे प्रान नहीं अबि कीजहि। तुरक संघारनि महि मन दीजहिं।
सुभट तीन सै हुते जु संग। सभि को प्रेरति भा हित जंग ॥ ४१ ॥
सभि सूरनि को भयो अनंद। तुरक ब्रिंद को करहिं निकंद।
जबि दुंदभि इनहूं बजवायो। लशकर लरिबे को उमडायो ॥ ४२ ॥
सभि बहीर इक दिशि महि कर्यो। फरक साथ गुर दिशि चल पर्यो।
रोकनि लगे, सु गौरा अर्यो। त्याग तुफंगें तूरन लर्यो ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवम रासे 'तुरकन सों बखेरा' प्रसंग बरननं नाम त्रयोदशमो अंशु ॥ १३ ॥

अंशु १४

गौरसाल प्रसंग

दोहरा

शलख तुफंगनि की छुटी लगे तुरक तन घाइ।
गिरे तुरंगनि ते तुरत जे अति हैं अगुवाइ॥ १॥

भुजंग छंद

लियो घेर आगो खरो तांहि ठोरे। सभै रोकि सत्रू बडे बीर गोरे।
भयो दूर को पंथ चाल्यो बहीरा। गुरु ओर को, छोरि चिंता सधीरा॥ २॥
रिपू दौरि, जांही दिशा को चलंते। तितै घेरि आगै तुफंगें हनंते[1]।
नहीं जानि दीने बहीरं पिछारी। रच्यो जंग भीमं रिसे शसत्रधारी॥ ३॥
करे तेज ताजी धरे हाथ नेजे। परोए परे सो जमंधाम भेजे।
चलैं तीर तीखे धसैं देह फोरें। गिरे बीर भूमैं, फिरैं छूछ घोरे॥ ४॥
कड़ाकाड़ बंदूक छुटी कड़कैं। भए घाव जोधानि तेगे सड़्ड़कैं।
मिलैं बीर, बाहैं कटैं अंग डारैं। करैं बीर हेला सुमारं पुकारैं॥ ५॥
जबै मार ऐसी करी सूर गोरे। हटे मूंड फूटे पिखे तांहि ठोरे।
परे घाव खै के किते पानि जाचें। भकाभक्क लोहू[2] चलै धूल राचे॥ ६॥

दोहरा

ठटकी चमू बिलोक कै रिस्यो कहति उमराव।
'पिखहु कहां ठांढे अबहि क्यों न डालते घाव॥ ७॥
इनहि पलावहु जे खरे इक बिर हेला डाल।
पन बहीर लूटहु सकल बडो समालहु माल'॥ ८॥

रसावल छंद

सुनी कान बानी। पती जान मानी।
तुफंगैं संभारी। बरूदानि डारि॥ ९॥
ठुकी फेर गोरी। करी त्यार छोरी।
तड़ाके उठाए। पलीते भुखाए॥ १०॥

---

1. मारते हैं। 2. तेज़ी से रक्त बहता है।

धवाए तुरंगा। बडे बेग संगा।
करे नेर आए। सु नेज़े भ्रमाए ॥ ११ ॥
रिस्यो बीर गौरा। खरो तांहि ठौरा।
सु पैरं जमाए। नहीं चाल पाए ॥ १२ ॥
तुफंगानि गोरी। इकं बारि छोरी।
बकें सिक्ख सारे। 'लिजै शत्रु मारे' ॥ १३ ॥
तिन्हो ज़ोर घाला। महा हेल डाला।
सह्यो ठांढ ह्वै कै। हने क्रोध कै कै ॥ १४ ॥
उत्थलैं, पत्थलैं। नहीं पाइ हल्लैं।
रिपु तुंड[1] तोरा। दियो पाछ मोरा ॥ १५ ॥
पुनं कोप छाई। घनी सैन आई।
तुफंगें चलाई। सु धौंसे बजाई ॥ १६ ॥
उलंघ्यो बहीरं[2]। पिख्यो नांहि तीरं[3]।
तबै गौर बीरं। लर्यो धारि धीरं ॥ १७ ॥
हटे थोर पाछे। मच्यो लोह आछे[4]।
दिनं अंत जाना। हने तांहि बाना ॥ १८ ॥
क्रिपानें निकारी। ढिगं ढूक[5] मारी।
हत्था वत्थ होए। रिपू प्रान खोए ॥ १९ ॥
नहीं जानि दीने। जिन्हों वार कीने।
महां बीर गौरा। फिर्यो जंग दौरा ॥ २० ॥
भरी श्रोण सारी। क्रिपानै संभारी।
खचाखच्च बाहैं। कटैं, अंग लाहैं ॥ २१ ॥
घनो जंग घाला। भई भूम लाला।
गिरे रुंड मुंड[6]। करे खंड तुंड ॥ २२ ॥

दोहरा

लरति रह्यो गन तुरक सों हतहि तुपक तरवार।
नहीं जानि आगे दीए अर्यो मनिंद[7] किवार ॥ २३ ॥
अंतहि पुरि[8] सतिगुर को अपर बहीर समूह।
वसतु सहित सुख सों गए भयो न को प्रतियूह[9] ॥ २४ ॥

---

1. मुंह। 2. सेना। 3. पास, निकट। 4. भली भांति लोहा से लोहा टकराया अर्थात् युद्ध हुआ। 5. पास जाकर। 6. सिर। 7. भांति (दरवाज़े की)। 8. महल। 9. विघ्न।

तोटक छंद

दिन केर प्रकाश रह्यो जबि लौ। करि जंग अर्यो थिर ह्वै तबि लौ।
पुन सूर अथ्यो तम फैल गयो। रण मैं नहीं देखनि होति भयो ॥ २५ ॥
तुरकानि तबै तम जानि तहां। रण त्यागि हटे उमराव जहां।
अबि नाहिं चले बस रात परी। अरु सैन अरी करि जोरि लरी ॥ २६ ॥
बिचले नहिं धीरज धारि रहे। भट नाहक भेड़ म्रितू सु लहे।
तुरकानि तहां हटि डेर कियो। म्रितु घाइल देखि संभाल लियो ॥ २७ ॥
भगतू सुत दुंदभि वावति भा[1]। हरिराइ गुरु दिशि जावति भा।
जबि कोस रहे थिर होति भयो। निज सूर सुं डेर लगाइ दियो ॥ २८ ॥
गुर तीर बहीर गये सभि हूं। गुर बूझन कीनि मिले जबि हूं।
'तुरकानि नहीं नुकसान कियो। पहुंचे अपनी वसतु सु लियो ॥ २९ ॥
किम जंग भयो बड नाद उठ्यो। कहु केतिक सूरनि ब्रिंद लुठ्यो।
तिन बीच हुते मतिमान महां। सभि जंग प्रसंग सुनाइ कहा ॥ ३० ॥
'भगतू सुत शत्रु बिलोक लए। ललकारति नेर जि आन किए।
बरजे तरजे बहु बारि जवै। न मिटे करि दौर परे सु तबै ॥ ३१ ॥
निज सूरनि को ललकारि भले। थिर अग्र भयो नहि पैर चले।
रण थंभ मनो तिस खान खर्यो। तुरकानि बिलोकति ज़ोर कर्यो ॥ ३२ ॥
तबि मार तुफंगनि होन लगी। बहु जंग मच्यो रिस भूर जगी।
सभि रोक रखे हति शत्रु तहां। नहिं आवन दीनि बहीर जहां ॥ ३३ ॥
तरवारनि के सु प्रहार करे। गन शत्रु मरे अगवान[2] लरे।
बहु घाल रहे बल आवन को। तिनि थान रखे, करि घावन को ॥ ३४ ॥
वसतू न गई, नहिं त्रास भयो। पहुंचे चलि पंथ अनंद कियो।
तुम आप सहाइक होइ रहे। भगतू सुत बीर बिलंद अहे ॥ ३५ ॥
डरहीन लर्यो तुरकान हते। बहु शत्रु हुने पर लीन फते।
जबि लौ उलंघे सभि आइ गए। तबि लौ लरते थित होति भए ॥ ३६ ॥
जबि जानि लई-सुख संग सबै। पहुंचे गुर तीर-चल्यो सु तबै।
नहिं जाइ तरीफ करी तिस की। हति ब्रिंद, सहाइ नहीं किसकी ॥ ३७ ॥
गुर हेतु शरीर न प्यार धर्यो। भट थोर लीए बहु संग लर्यो।
तम होति भए पिखि शत्रु हटे। तजि दूर गए तबि एहु मिटे ॥ ३८ ॥
अबि दुंदभि वावति आवति भा। होइ दूर सु डेर लगावति भा'।
सुनि श्री हरिराइ प्रसंन भए। निज सिक्ख महान सु जानि लए ॥ ३९ ॥

---

1. नगारा बजाता था। 2. आगे बढ़कर लड़े।

ततकाल पठावन दास कर्यो। 'तिह ल्याउ हकारि, बिसाल लर्यो।
अपराध कर्यो, बखशें सभि हूं। दुख ब्रिंदनि ते छुटकैं अबिहूं ॥ ४० ॥

सुनि आइसु सेवक धाई गयो। गुर बाक सुनावनि तांहि कियो।
भगतू सुत हाथनि बंदि भले। अभिबंदन कीनि तहां सु खले ॥ ४१ ॥

कह 'तूं चल, मैं पुन आवति हौं। निज सूरन डेर लगावति हौं।
तन घाइल श्रोण थंभावत हौं[1]। म्रिदु बाकन धीर बतावत हौं ॥ ४२ ॥

सुनि सेवक बाज धवाइ गयो। जिम गौर कह्यो जु सुनाइ दयो।
गुर फेर पठावनि कीनि तबै। 'बिन देर इहां तिस ल्याउ अबै' ॥ ४३ ॥

पुनि धाइ गयो 'सहिसाइ[2] चलो। गुर तोहि प्रतीखति आप खलो।
कहि मोहि उताइल भेज दियो। अब चाहसि तीर मिलाइ लियो ॥ ४४ ॥

भगतू सुत फेर उचारति है। 'कहीए पग पान पखारति है।
रज अंग उतारि सु आवति है। गुर हेरनि को ललचावति है ॥ ४५ ॥

सुनि सेवक जाइ सुनाइ दियो। गुर दास पठावन आन कियो।
'अबि जाइ कहो भगतु सुत को। चलि जे नहिं आवति हैं इत को ॥ ४६ ॥

गुर तो ढिग आपहि आवति हैं। गमनो नतु, आप बुलावति हैं।
इम जाइ कह्यो सुनि तूरन ही। गमन्यो पिखिबे गुर पूरन ही ॥ ४७ ॥

दोहरा

रज समेत आयुध लगे चढि करि चल्यो तुरंग।
बैठे श्री हरिराइ जहिं भए प्रसंन उमंग ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'गोरसाल' प्रसंग बरननं नाम चौदशमो अंशु ॥ १४ ॥

---

1. घायलों का खून बहने से रोकता हूं, अर्थात् उनकी चिकित्सा करता हूं।
2. जल्दी।

अंशु १५

करतारपुर आवन प्रसंग

दोहरा

बेग गयो सतिगुरु ढिग डेरा जहां लगाइ।
पहुंच्यो उतरि तुरंग ते खरो भयो अगुआए॥ १॥

चौपई

अपराधी बहु आप बिचारे। हाथ जोरि थित भयो अगारे।
श्री हरिराइ बिलोकि क्रिपाला। मन ते भए प्रसंन बिसाला॥ २॥
निकटि बिठावन हेतु हकारे। सादर बोले 'आउ अगारे।
नाहन खरो दूर अबि होहू। जाचहु लखि प्रसंन मन मोहू'॥ ३॥
सुनति गुरु के बाक सुहाए। खरे रह्यो मुख बिनै अलाए।
'अपराधी मैं नाथ तिहारो। बखशहु अपनो दास बिचारो॥ ४॥
सभि बिधि ते इम औगुनहारे। गुरनि बिरद बखशिंद उदारे।
करि पावन पावन अबि लावहु। जुग लोकनि के कशट मिटावहु॥ ५॥
तन धन आदिक सकल समाजा। जो रावर के आवहि काजा।
सो सफलहि नतु बिरथा सारे। इहै भावना रिदै हमारे'॥ ६॥
सुनि गुर स्राप मिटावनि लागे। क्रिपा द्रिशटि पिखि ठांढो आगे।
'पाथर, पंनग[1], मेघनि[2] जोनी। कही सु बखशी, कोइ न होनी॥ ७॥
चलहि बंसु बिथरहि[3] जग मांही। कहे स्राप सो लागहि नांही।
तुव कुल के होइ हैं सभि सोत। बखशी अबि काहे की मोत'॥ ८॥
इम सभि स्राप बखश जबि दिए। गोरा कहे नंम्रिता लिए।
'बखशे आप स्राप करि करुना। तऊ शरीरनि सभि ही मरना॥ ९॥

---

1. सांप। 2. बादल। 3. विस्तार होगा।

थिर जग बिखै रहै नहिं कोई। अंत समां सभि तन जो होई।
यांते म्रितु मम पर कै फाही। एक स्राप इह बखशहु नांही॥ १०॥
फाहे मौत बिखै मैं मरौं। स्राप आपको ऐसो धरौं।
जे इक स्राप भी न सफलावैं। कितिक अशरधक एव अलावैं॥ ११॥
गुर के बचन भए सभि झूठे। सफल्यो एक न, फुरे अपूठे।
रहनि देहु इह क्रिपा निधाना'। सुनि पुनि गुरु प्रसन महाना॥ १२॥
'सिखनि को इम ही बनि आवैं। जिसते गुर महिमां अधिकावैं।
जांके करे हीनता होइ। तिस को करहिं नहीं सिख जोइ॥ १३॥
इह आछी तैं रिदै बिचारी। एक स्राप राख्यो इस बारी।
अपनो भलो सकल ही कीना। गुर महिमा महि रह्यो प्रबीना॥ १४॥
फाही[1] मौत जु राखनि करी। सो भी होइ सुखेन तिस घरी।
मरहिं सुछंद पाइ गर फाही[2]। अपर बहाना को बनि जाही'॥ १५॥
इम बखश्यो निज निकटि बिठायो। केतिक घाव लगे दरसायो।
'कितिक सिक्ख घाइल कै मरे ?। हते तुरक केतिक जे अरे ?'॥ १६॥
हाथ जोरि गौरा पुन कहै। 'जिस को राखहु सो जग रहै।
जिसको मारहु सो मरि जाइ। इह रावर की सरब रजाइ॥ १७॥
कहौं कहां मैं आप अगारी। कारन करन एक तुम भारी'।
सादर देखि गुरु निज हाथ। मुख ते धूल पौंछ पट साथ॥ १८॥
हुतो महां अपराधी जोइ। निज सेवक लखि बखश्यो सोइ।
सभि डेरा निज निकटि मंगायो। सैंन आपनी बिखै मिलायो॥ १९॥
हरख्यो गोरा गुर करुना ते। दुखद स्राप चिंता जुति हाते[3]।
निज डेरे महिं सभि की सार। जंग करति जे कितिक सुमार[4]॥ २०॥
खान पान की सुध सभि लीन। सो सरबरी बितावनि कीनि।
दिन महिं सतिगुरु कर्यो मुकामू। लग्यो दिवान भजन सतिनामू॥ २१॥
ब्रिंद मसंद मेवड़े पास। सुभटनि को समुदाइ सु दास।
संगति नई पुंज चलि आई। अनिक अकोरन को अरपाई॥ २२॥
तबि गौरा बुलिवायो पास। आयो निकटि संग गन दास।
कहि सादर सतिगुर बैठायो। सुजसु सूरता श्री मुख गायो॥ २३॥
कह्यो तबहि 'अपने घर जाओ। करहु राज सभि काज चलाओ।
दिवस घने बीते इत आए। जाइ संभालहु सुख उपजाए'॥ २४॥

1. फांसी। 2. गले में अपने आप फांसी लेकर मरेंगे। 3. चिंता से मौत।
4. गिनती।

हाथ जोरि गौरा तबि कहे। 'रावर की रजाइ महिं रहें'।
सिरोपाव तबि गुरु मंगायो। निज कर ते तिस तन पहिरायो ॥ २५ ॥
इह प्रसंन करि बिदा उचारा। 'हम गमनें हटि पुरि करतारा।
केतिक समां बितावहिं तहां। तूं चलि जाहु बठिंडा जहां ॥ २६ ॥
तिसी देश महिं घालहु जोर। अपना राज बधावहु होर'।
सभिनि सुनाइ भनी बडिआई। खरो होइ तबि ग्रीव निवाई ॥ २७ ॥
चरन सपरशति बंदन करिकै। चल्यो अधिक उर आनंद धरिकै।
एक निसा बीती पुन औरा। चलिबे को त्यार भा गौरा ॥ २८ ॥
जथा जोग सभि सों मिलि करिकै। श्री सतिगुर के पाइनि परिकै।
जंगल देश बिखे चलि गयो। अपनो जोर जनावति भयो ॥ २९ ॥
अधिक ग्राम तिह के अपनाए। सभि पर नर पठि हुकम चलाए।
महां कठोर होइ किय राजा। घर मैं बरध्यो सकल समाजा ॥ ३० ॥
रह्यो बठिंडे महिं चिरकाल। संग बिराड़नि[1] चमूं बिसाल।
अबि सतिगुर की कथा सुनीजै। जनम अनेक पाप हनि दीजै ॥ ३१ ॥
चढि करि सभि अनीक[2] ले साथ। सत्तद्रव तट पहुंचे गुर नाथ।
केवट[3] को ततकाल बुलायो। ब्रिंद तरी लै करि सो आयो ॥ ३२ ॥
द्रिढ तरनी पर बैठति भए। परले पार उतरि गुर गए।
पुन सभि सैना पारि उतारी। केवट को बखश्यो धन भारी ॥ ३३ ॥
तहिं निस बसि कै भोर सिधाए। मग महिं करि बिलास समुदाए।
श्री करतारपुरे चलि गए। धीर मल्ल आगू होइ लए ॥ ३४ ॥
गन पुरि जन बहु लीनि अकोर। दरसहिं आइ गुरु कर जोरि।
कुशल प्रशन करि सभि के साथ। भए प्रवेश नगर महिं नाथ ॥ ३५ ॥
दल उतर्यों बागनि की छाया। हेरि हेरि जिह जिह मन भाया।
अंतह्पुर गुर को तहिं गयो। सदन खास महिं उतरति भयो ॥ ३६ ॥
स्यंदन डोरे वाहन त्यागे। सुख के संग बसन घर लागे।
धीरमल्ल वूझी सु लराई। 'किम आवति इह बाद मचाई? ॥ ३७ ॥
तुरकनि सों बिरोध नहिं करीअहि। छेम सहत घर सभा गुज़रीअहि'।
श्री हरिराइ सकल समुझाई। 'मुगलसखां पौत्रे रिस छाई ॥ ३८ ॥
बैर पितामे को संभारा। हम सौं चह्यो करनि को रारा।
सैना प्रेरी निज समुदाई। सभि वहीर हमरे पर आई ॥ ३९ ॥

---

1. बैराड़ों की जाति की सेना। 2. सेना। 3. मल्लाह।

सुध पाई हम जाति अगारी। बहुर पितामे गिरा बिचारी।
जंग करन को बरजे हुते। हम हटि रहे जानि सो मते ॥ ४० ॥

भगतू सुत बड हुतो पिछारी। तिन तुरकनि की चमूं निहारी।
जबि बहीर पर आवन लागी। हते शसत्र तबि तिह रिस जागी ॥ ४१ ॥

अपने सभि बचाइ सो मारे। निसा परी निज दिशा सिधारे।
औचक भेर पर्यो[1] इस भांति। दुहि दिशि हटे परी लखि राति ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'करतारपुर आवन' प्रसंग बरननं नाम पंचदशमो अंशु ॥ १५ ॥

---

1. अचानक युद्ध हुआ।

अंशु १६

दिज प्रसंग

दोहरा

बसति भए स्री सतिगुरु अपने पुरि करतार।
ब्रिद संगतां दिशिनि ते आवहिं चलि उदार ॥ १ ॥

चौपई

पुरब दिवस महिं लागहि मेला। पुरि ग्रामनि ते होइ सकेला[1]।
संत महंत मसंद बिसालै। पहुंचे तजि निज देशन जालै ॥ २ ॥
सन्यासी बैरागी घने। सिक्ख संगतां की किम गिने।
भांति भांति की लै उपहार। पहुंचहि सतिगुर के दरबार ॥ ३ ॥
दरशन परसहिं बांछति पावहिं। मेला होति दिशनि ते आवहिं।
सतिनाम उपदेशनि करें। सुनि गुर ते मन महिं सिख धरें ॥ ४ ॥
केतिक ब्रहम ग्यान को पाइ। आनंद आतम बिखै समाइं।
केतिक नव निदिधनि को पावें। जनम जनम के कशट मिटावें ॥ ५ ॥
सिद्ध अठारहिं प्रापति होइ। अज़मत सकल भांति की कोइ।
सभि किछु बसहि गुरु दरबार। देति सेवकनि सदा उदार ॥ ६ ॥
इस बिधि केतिक दिवस बिताए। पुरि करतार बसे सुख पाए।
बलख बुखारा आदिक देश। आनहिं अरपहिं हयनि विशेश ॥ ७ ॥
आयुध अधिक मोल के ल्यावहिं। पशमंबर[2] आदिक अरपावें।
पुरि कशमीर और मुलतान। ठट्ठा[3], भक्खर देश महान ॥ ८ ॥
दक्खण पूरब परबति वासी। तपी दिगंबर जपी उदासी।
ग्रिहसती कैं बिरकत नर होइ। दरसहि आनि गुरु सभि कोइ ॥ ९ ॥
सिक्ख जि दरब कमावनि करिहीं। तिह दसवंध[4] अग्र गुर धरिहिं।
भूरी[5] भीर भरी नित रहै। श्री सतिगुर दरबार जि अहै ॥ १० ॥
देशनि महिं मसद जे ब्रिद। पहुंचहिं गुर धन लिये बिलंद।
केचित लच्छ दरब ले आवें। कितिक हज़ारनि करि इक थावें ॥ ११ ॥

---

1. इकट्ठे। 2. ऊनी वस्त्र। 3. सिंध प्रान्त का एक नगर। 4. आय का दसवां भाग। 5. अधिक।

खशट मास महिं को चलिआइ। को संमत महिं धन पहुंचाइ।
रहैं मसंद हज़ारहुं देश। ले संगति तें दरब विशेश॥ १२॥
गुर ढिग सो पहुंचावहिं आइ। वसतु अमोलक ले अरपाइं।
जहां जहां सिख संगति कोइ। सिमरे गुरु सहाइक होइं॥ १३॥
बिघन अनेक रीत के टारहिं। पुर इच्छा परलोक सुधारहिं।
नित नवीन महिमा अधिकाइ। सागर के टापू लगि जाइ॥ १४॥
सिक्खी गुर की देश बिदेश। शुभ मारग नर लगे विशेश।
राति पाछली करनि शनान। सिमरनि प्रभु को दे बहु दान॥ १५॥
करें नेम गुरबानी पढें। गुर के प्रेम छेम को बढें।
केतिक मास बास को कर्यो। मिलि मिलि गुर, शुभ मग जग पर्यो॥ १६॥
मेला बहुर बसोए[1] केरा। चहुं दिशि ते आगमन घनेरा।
लघु सुत भगतू को चलि आयो। जिसको जीवण नामु सुहायो॥ १७॥
गोरा बडो राजसी लच्छन[2]। इस को संत सुभाव बिचछन[3]।
संग बिराड़ संगतां केई। गुरु दरस को पहुंचे तेई॥ १८॥
अपर कहां लगि गिनीअहि मेला। जो सतिगुर दरबार सकेला।
खरे मेवड़े[4] सभा मझारें। सिक्खनि की अरदास उचारें॥ १९॥
ले ले धन मसंद समुदाए। आनि गुरू के दरशन पाए।
निज निज संग संगतां ब्रिंद। करहि जनावनि जुग कर बंदि॥ २०॥
भूत समय की भाखहि केई। केचित कहैं 'भविक्ख्यत लेईं।
बरतमान[5] कामना जु ब्रिंद। पूरी करी, पुरहु सुखकंद॥ २१॥
बिघन बिनाशहु दासन रास। बनहु सहाइक अनंद प्रकाश'।
दरसहि चहुंदिशि महिं नर भीर। मुख्य हज़ारहुं बैठे तीर॥ २२॥
दूर दूर लौ ठांडे ब्रिंद। देखहिं सतिगुर मुख अरबिंद।
करुना भरे सलाज बिलोचन। डारति द्रिशटि गुरु दुख मोचन॥ २३॥
ब्यापक घट घट की सभि जानति। आस कहे बिन पूरन ठानति।
जे सहकामी दास महानैं। कलप तरोवर की सम जानैं॥ २४॥
अभ्यासी जेतिक ढिग आए। बिशनु सरूप लखहिं मन भाए।
कितिक ममोखी[6] दरशन करहिं। पिखहिं ग्यान को सूरज चरैं॥ २५॥
इस प्रकार मेला बहु भयो। दरसति चित बांछति को लयो।
पंच दिवस लौ संगत रही। घर को जानि करहिं मन नहीं॥ २६॥

---

1. वैशाखी। 2. राजाओं के से लक्षण। 3. अद्भुत। 4. गुरु की सिक्ख सभा में अरदास करने वाले व्यक्ति। 5. वर्तमान। 6. मोक्ष के इच्छुक।

आपस महिं सिख संगत मेला। शबद अरथ संबाद सुहेला।
परचति अति अनंद को पाए। 'धंन धंन' गुर सतुति सुनाए ॥ २७ ॥
बहुर बिसरजनि गुर ते भए। हरखे सिरोपाव निज लए।
जिस जिस देश मसंद जु छोरे। लै लै खुशी चले तिस ओरे ॥ २८ ॥
जे नर मुख्य संगतां मांही। गुर ते सिरोपाव ले जांहीं।
धन धामनि की कुशल बिलंद। गुर दिशि ते चह चले अनंद ॥ २९ ॥
सागरांत अविनी लौं जावैं[1]। अनिक टापूअनि ते नर आवैं।
सुजसु महान बखानति जाते। 'सतिगुर सकल जंगत के दाते' ॥ ३० ॥
बहुर कितिक जबि दिवस बिताए। श्री करतारपुरे सुख पाए।
इक दिज को नंदन मर गयो। द्वादश संमत को जबि भयो ॥ ३१ ॥
गुर दसौंधीआ दिज सुत कर्यो। तऊ न जियो अचानक मर्यो।
इक ही हुतो प्रान ते प्यारो। अनिक उपाइ बिप्र कर पारो ॥ ३२ ॥
निस दिन मुख देखति सुख पावति। वहिर प्रान समसर मन भावति।
जबि मरि गयो शोक उपजायो। प्यारो जितिक तितिक दुख पायो ॥ ३३ ॥
जननी करहिं बिलाप घनेरे। 'अहो पुत्र! क्यों जनम्यों मेरे।
मर्यो कशट अतिशै दे गयो। अजहुं न जग कुछु देखति भयो' ॥ ३४ ॥
दिज रोदति करि ऊच पुकारा। 'हे सुत! गुर को करि मैं पारा[2]।
नहिं सहाइता मेरी कीनि। जम ने आइ कर्यो बय हीन' ॥ ३५ ॥
इत्यादिक दिज दंपति सोइ। करति बिलाप शोक मैं होइ।
लीए अंक बहु रोदन ठाने। मिले निकटि के लोक बखाने ॥ ३६ ॥
'अब क्या होइ शोक बड धरो। जाहु वहिर ले गति इस करो।
नहीं आरबल[3] लिखी बिधाते। क्यों दुख पावति रुदन महां ते' ॥ ३७ ॥
सुनि दंपति लोकन संग कहैं। 'हमरे श्री गुर राखे रहैं।
सदा भरोसा है तिन केरा। भयो अचानक म्रितु सुत मेरा ॥ ३८ ॥
अबि भी वहिर नहीं लै जावहिं। सतिगुर पौर अगारी पावहिं।
कै हमरो दें पुत्र जिवाइ। नांहि त तहिं दोनहुं मरि जाइं ॥ ३९ ॥
सुत कै शोक न जियनि हमारो। गुर बिन अपर नहीं उपचारो'।
इम कहि सुत को लियो उठाइ। ऊचे रुदन करति चलि आइ ॥ ४० ॥

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ को हुतो जहां बर पौर।
म्रितु सुत को तहिं पाइ करि दंपति रोदति रौर ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'दिज' प्रसंग बरननं नाम खोड़समो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. समुद्र के किनारे तक की भूमि। 2. पालन किया। 3. आयु।

अंशु १७

दिज सुत जिवावन प्रसंग

दोहरा

दिज जननी रोदति अधिक इकठे नर समुदाइ।
शोक बिलोकति रोकते 'रौर[1] न रुदन उठाइ' ॥ १ ॥

चौपई

केतिक नर सतिगुर ढिग आए। हेतु रौर को सकल सुनाए।
'म्रितक पुत्र को बिप्र उठाइ। पौर आपके दीनसि पाइ ॥ २ ॥
रहे हटाइ हटति किम नांही। कहै कि सुध दिहु सतिगुर पाही।
मेरो पुत्र जिवावनि करैं। नातुर हम दोनहु भी मरें ॥ ३ ॥
समझति नहीं रहे समझाइ। सुनि बोले श्री गुर हरिराइ।
'कहहु बिप्र सो करहु उठावनि। परालवध प्रानी भुगतावनि ॥ ४ ॥
पूरब जनम करम जिम करिही। जग महिं जीव सरीरनि धरिही।
दुख सुख जितिक भोगिबो होइ। उत्तम आदि जनम जो कोइ ॥ ५ ॥
जितिक समें लगि स्वासनि धरता। त्रै को अहै बिधाता करता।
जनम होनि ते पूरब काला। तीनहुं रचे जीव के नाला ॥ ६ ॥
ईशुर की इह करी म्रिजाद। को न हटाइ सकहि सुर आदि।
सुनति मसंद हाथ जुग जोरि। पाइ रजाइ गयो दिज ओर ॥ ७ ॥
कही गुरु की सकल सुनाई। 'बिप्र जाहु ले म्रितक उठाई।
इह किम होइ मर्यो पुन जीवै। जे इम जियहि मरन किस थीवै[2] ॥ ८ ॥
मेटहि प्रभु की कौन रजाइ[3]। जो सगरे जग पर चलि आइ'।
सुन दिज कह्यो 'गुरु सुत दियो। जनमति मैं दसवंधी कियो ॥ ९ ॥

---

1. शोर। 2. कैसे हो। 3. आज्ञा।

तन मन ते हौं गुर घर केरा। अपर अलंब न को जग मेरा।
जे राखे नहिं बनहिं गुसाईं। कहहु परहिं किस के दर जाई ?॥ १० ॥
कै सुत संग त्यागहौं प्रानू। कै जिवाइ हैं क्रिपा निधानू'।
इम कहि लोचन मोचत जल को। हनहि सीस सों जुग कर तल को[1] ॥ ११ ॥
कहि बहु रहे न मानहि सोइ। दर परि रहे गुर के दोइ।
बीत गए इम जाम अढाई। सौच शनान कीनि गोसाईं ॥ १२ ॥
सभा लगनि को समो बिचारि। सिख मसंद पहुंचे दरबार।
केचित करामात के साथ। बैठे जाइ बंदि करि हाथ ॥ १३ ॥
दासन ते परवारति भए। ढुरति चौर सिर पर दुति मए।
कमल बिलोचन चारु[2] बिसाले। भरे लाज करुना अनियाले[3] ॥ १४ ॥
दासनि पर डारति शुभ डीठ। ब्रह्म ग्यानि आदिक जन ईठ।
कितिक देश के रहैं मसंद। सो बैठे परवारति ब्रिंद ॥ १५ ॥
पूरन सभा शुभति सिख सारे। उडगन जथा चंद परवारे।
तबि प्रसंग दिज को तहि चाला। 'पर्यो बिहाल[4] सशोक बिसाला ॥ १६ ॥
सुत बिन जिसके जियनि न आसा। अधिक प्रेम ते संकट ग्रासा।
करहु क्रिपा जे आप क्रिपाला। मिटहि सभिनि संताप बिसाला ॥ १७ ॥
बालिक जियै पुन बड होइ। मरहिं जु दंपति उबरहिं सोइ।
गुर को सुत दसौंधीआ कीनि। बिरद क्रिपाल आपको चीनि ॥ १८ ॥
पुन परि रह्यो रावरे पौर। दंपति कहति मरहिं इस ठौर'।
सुनति सभा ते श्री हरिराइ। 'जो होवति सो प्रभु रज़ाइ ॥ १९ ॥
उपजनि बिनसनि प्रानी साथ। जो लगि क्रिपा करहिं नहिं नाथ।
जोग भगति कै हुइ ब्रह्म ग्यान। इन ते जनम मरण होइ हान ॥ २० ॥
मर्यो जिवावन भली न बात। जो सभि के सिर बीतति जाति।
राव रंक गन नित ही मरैं। सुनि इम हमरे दर पर परैं' ॥ २१ ॥
गुर ते सुनति सभा उपकारी। जियहि बाल जिम बहुर उचारी।
'रावर कहहु सकल ही साची। तुमरी शरण नहीं दुख आंची ॥ २२ ॥
सरब प्रकार महा समरत्थ। भंजन गड़न आपके हत्थ[5]।
बिप्र पर्यो बीत्यो चिरकाल। कशट शोक ते ह्वै बिकराल ॥ २३ ॥

---

1. दोनो हाथों से सिर धुनता है। 2. कमल की भाति सुन्दर आँखें। 3. करुणा तथा लज्जा के अणुओं से भरे हुए। 4. व्याकुल। 5. तोड़ना, बनाना (मारना-जिलाना) आपके हाथ में है।

अनिक लोक अविलोकन करैं। आस आपकी सगरै धरैं।
जे नहिं जियहि निरासै होइ। मति अनुसार बकैं सभि कोइ'॥ २४॥
सभा समेत मनोरथ सभिहिनि। दिज सुत जियहि भली ह्इ तिस छिन।
बारि बारि सिख दास मसंद। दिज की फुरमाइश कहिं ब्रिंद॥ २५॥
सभि ते सुनि करि श्री हरिराइ। रिस ते तमक कुछुक मन ल्याइ।
कह्यो सभिनि महिं ऊच सुनायो। 'जे तुम हम ते चहिति जिवायो॥ २६॥
लखि दिज दीन करहु फुरमाइश। इक उपकार करहु हम आइसु।
अपनी देहु आरबल कोइ। दिज को पुत्र जिवावहि सोइ'॥ २७॥
इह गुर बाक सभा सुनि सारी। भई तूशनी कुछ न उचारी।
ग्रीव नीव्र धीवनि चितवंते। निज बय[1] देनी उर न चहंते॥ २८॥
समुख नहीं सतिगुरु के हेरैं। जानहिं मुझ को नहिं इत प्रेरैं।
मरहि कौन दिन पुत्र जिवावैं। धर्यो त्रास नहिं धीरज पावैं॥ २९॥
सभि के मन की सतिगुर जानी। कितिक बार महिं पुन कहि बानी।
'सरब सभा फुरमाइश कारी। अबि कहि क्यों न बनत उपकारी॥ ३०॥
दीजहि बय दिज पुत्र जिवावहु। भलो करम करि जस जग पावहु।
दंपति मरति उबारहु कोइ। धरहि धीर सुभ गति ले सोइ॥ ३१॥
गुरु बचन दूजो इम भयो। किनहूं न उत्तर मुख से दयो।
पूरब कहति सभा जिम सारी। तिम ही तूशनि भई बिचारी॥ ३२॥
समुख न देखहिं नीचहि नैन। को धीरज धरि बोलहि बैन ?।
चहुंदिशि महिं गुर दिशटि चलावैं। को बय देह दास पतिआवैं॥ ३३॥
एक घरी लगि थिर सभि रहे। तीसर बचन गुरु पुन कहे।
'भो सिखहु ! पूरब सभि भाखति। क्यों उपकार करनि नहीं कांखति[2]॥ ३४॥
इक जो देय आपने प्रान। जियहि तीन, जसु लहे जहान'।
इम सुनि भगतू को सुत छोटा। पीछे बैठ्यो गुर द्रिग ओटा॥ ३५॥
उठि तूशनि ही निकस्यो बाहर। पर उपकार हेतु करि आहर।
जीवण नामु आइ करि डेरे। आसतरन करि त्रिणनि[3] हछेरे॥ ३६॥
ऊपर पौढ्यो बदन अछादि। किह सों कीनसि नहीं संबाद।
सरब शरीर बसत्र ते ढांपि। चाहृसि प्राण त्यागबे आप॥ ३७॥
गुर बच ते परलोक अनंद। चित मैं चाहृति भयो बिलंद।
जियनि झूठ जग महिं सच मरना। आगे पाछे सभि सिर परना॥ ३८॥

1. आयु। 2. इच्छा। 3. घास।

अबि तनि लगहि सकारथ मेरो। इस ते अपर भलो नहीं हेरो।
इत्यादिक मन कर बिचारा। धंन सु जीवण सभा मझारा ॥ ३९ ॥
निज जीवन जीवन दिय दान। गुर बच[1] ते पद लह्यो महान।
तत छिन अपने प्रान निकारे। गुर पुरि महिं पहुंच्यो बिन बारे ॥ ४० ॥
इत जीवण जबि जीवन त्याग्यो। गुरु पौर सिस ततछिन जाग्यो।
उठ्यो जीव करि ढिग पित माता। लोक बिलोकति हैं ढिग ब्राता[2] ॥ ४१ ॥

दोहरा

भयो अनंद बिलंद ही रिदे रहे बिसमाइ।
सुध अंतर पहुंची तबै जहिं श्री गुर हरिराइ ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'दिज सुत जिवावन' प्रसंग बरननं नाम सपतदसमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1 [illegible] । 2 [illegible]

अंशु १८

कूप प्रसंग

दोहरा

'धंन गुरु पूरन प्रभु' नर कहिं आपस मांहि ।
'रामचंद के पौर जिम म्रितक बिप्र सुत ज्याहि ॥ १ ॥

चौपई

सुनी कथा महिं दिज ले गयो । अधिक ब्रिलाप राम दर कियो ।
तबि रघुबर बहु करे उपाइ । जिम नारद मुनि दिये बताइ ॥ २ ॥
ज्यों क्यों करि दिज पुत्र जिवायो । राम चंद निज नेम निबाह्यो ।
सो गति भई गुरु दरबार । दिज संकट ते लीन उबार ॥ ३ ॥
इम संबाद करैं नर नारी । गुर कीरति को करें उचारी ।
सभा बिखै जबि सुध चलि गई । 'बिप्र पुत्र जीव्यो' सुध भई ॥ ४ ॥
सुन्यो अचानक श्री हरिराइ । बूझ्यो शीघ्र कह्यो जबि आइ ।
'किहं सिख अपनि आरबल दीनि? । पर उपकार किनहुं अस कीनि ? ॥ ५ ॥
सुनति सभासद बिसमै भए । चपल बिलोचन इत उत किए ।
निज निज निकटि पिखहिं सभि बैसे । मर्यो कौन बीचारति ऐसे ॥ ६ ॥
पुनहि शीघ्र गुर बूझनि कीनि । 'क्यों न कहो किन जीवन कीनि' ? ।
छरीदार कर जोरि उचारा । 'महाराज ! नहिं दुती सिधारा ॥ ७ ॥
इक जीवण भगतू सुत गयो । हटि करि सों नहिं आवति भयो ।
अपर सभा सभि बैठो अहै । बिप्र प्रसंग सुनति, जे कहै ॥ ८ ॥
सो रावर के हुतो पिछारी । निकस्यो तूशनि[1] बंदन धारी' ।
सुनि गुर कह्यो 'शीघ्र सुध लीजै । तिस बिलोकि हम संग कहीजै' ॥ ९ ॥
दौरे दास गए दुइ तीन । डेरे प्रथम जाइ पिखि लीन ।
बसत्र अछादति त्रिननि पर्यो है[2] । पिखि उघारि बिन प्राणु मर्यो है ॥ १० ॥
दौरे[3] गए गुर संग कह्यो । 'जीवन जाइ अजीवन लह्यो ।
बसत्र अछावि देह पर सारे । दिज सुन हित विय प्राण निकारे[4]' ॥ ११ ॥

---

1. चुपके से । 2. घास से ढका पड़ा है । 3. दौड़कर । 4. निकाल दिए ।

सुनति रिसे गुर सभिनि सुनायो। 'मम सुत हृति दिज पुत्र जिवायो।
प्रभु भाणे[1] को मानहिं नांही। बोलहिं निकटि सिपारश मांही' ॥ १२ ॥
इत्यादिक बच भने घनेरे। पठे दास पुन तिसके डेरे।
'होइ पुत्र इसको ले आवहु। शीघ्र जाइ सभि सुध को पावहु' ॥ १३ ॥
हुते बिराड़ कुछुकु तहिं मिले। बूझै सकल जाइ करि भले।
'गुरु हकारति[2] सुत इस जोइ। इहां किधौं धर महिंजे होइ ॥ १४ ॥
शीघ्र चलहु ले किधौं हकारहु। गुर सों मिलि पुन इस ससकारहु।
दासनि सौं बिराड़ चलि आए। ठाढे होइ हजूर बताए ॥ १५ ॥
'बरख अशटदस को इह भयो। अबि के इन मुकलावा लियो।
अबि लौ पुत्र न जनम्यो कोइ। गरभवती इस के धर जोइ ॥ १६ ॥
गुर दरशन हित चलि करि आयो। गुरु बाक ते तुरत समायो'।
श्री हरिराइ सुनति पुन कहैं। 'जो इस त्रिया गरभ मैं अहै ॥ १७ ॥
संत दास तिस नाम रखीजै। अधिक बंस जुति होइ जनीजै।
जनमहिं पुत्र प्यार करि पारो। इक ते हम करि देंह हज़ारों ॥ १८ ॥
ब्रिद बंस फैलहिं जग मांही। ब्रधै अधिक दूसर जिम नांही'।
उर प्रसंन ह्वै करि बर दीने। सो अब ज़ाहर जग महिं चीने ॥ १९ ॥
भगतू सुत गौरा बड जोइ। तांहि बंस बीसक नर सोइ।
संतदास जो जीवण केरा। तिस को बंस हजारों हेरा ॥ २० ॥
तीन ग्राम बसि नाहिं समावै। बहुर अगारी बधतो जावै।
जिस प्रकार बर गुरु उबाचा। जगत प्रसिद्ध देखि लिहु साचा ॥ २१ ॥
पुन भाई जीवण ससकारा। जिन दे प्राण कीनि उपकार।
सतिगुर धंन सिख भी धंने। प्रभु के बाक दास जिन मंने ॥ २२ ॥
श्री हरिराइ सु कीरति झूली। घर घर मनहुं मालती फूली।
देश बिदेशनि ऐसे भई। पांति मरालनि[3] जन उड गई ॥ २३ ॥
किधौं चंद्रिका जगत बिथारी। सुजन चकोरनि को सुखकारी।
दिज अनंद भा नंदन जीयो। मनहुं म्रितक ने अंम्रित पीयो ॥ २४ ॥
इम बासे गुर पुरि करतारा। करहिं चरित्र अनेक प्रकारा।
केतिक बासर[4] बहुर बिताए। दास उधारति हैं समुदाए ॥ २५ ॥
इक दिन बहिर कूप गुर केरा। शकर गंग जिह पुंनक[5] हेरा।
त्रिती जाम महिं सतिगुर गए। पिखि रमणीक थान थित भए ॥ २६ ॥

---

1. प्रभु आज्ञा। 2. बुलाना। 3. हंस। 4. वर्ष। 5. पवित्रता मे भरा हुआ।

सोच शनान कर्यो हरखाए। बैठि बहुर दीवान लगाए।
हुते ब्रिद्ध जे निकटि निहारे। तिन बूझनि हित बैन उचारे॥ २७॥
'श्री अरजन गुर बडे हमारे। जग पर जितहुं कीनि उपकारे।
जिस प्रकार इह कूप लगायो। फल बिसाल इशनान बतायो॥ २८॥
सो तुम जानति हमहि बतावहु। महिमा महां महान सुनावहु'।
पुरि जन ब्रिद्ध जु थे तिसकाल। जो जानति सभि कूप हवाल॥ २९॥
सो सतिगुर की आग्या पाइ। बोले हाथ जोरि सिर न्याइ।
'श्री प्रभु जी तुम अंतरजामी। भूत भविक्ख्य लखहु प्रभु स्वामी॥ ३०॥
तुम आगे हम कहां बिचारे। जो बीत्यो बिरतांत उचारें।
जेतिक गुपत बिदति है बात। कर बदरीफल[1] सम बख्यात॥ ३१॥
तऊ आपने बूझनि कीनी। करौं उचारनि जिम पिखि चीनी।
पूरब श्री अरजन उपकारी। पुरि करतार बसायहु भारी॥ ३२॥
पुन इक दिन आए इस थान। बैठै रुचिर लगाइ दिवान।
पावन थल को हेरि बिचारा। लगहि इहां उदपान[2] उदारा॥ ३३॥
इस पुरि संगत नित ही आवै। गुर थल दरसहि उर हरखावें।
इहां शनानहि हुइ तन पावन। यांते करहिं कूप लगवावनि॥ ३४॥
कह्यो तबहि आनहु मिशटान। बहु नर सिर उचवाइ महान।
सुन करि हुकम मसंद पयाने। पुरि ते मोल लीनि तहिं आने॥ ३५॥
श्री सतिगुर के आगे धर्यो। कारीगरनि हकारनि कर्यो।
भाई ब्रिध ते तबि अरदास। करवाइव कारज हुइ रास॥ ३६॥
सभि सतिगुर के नाम सिमरि करि। मूरति रुचिर ध्यान को उर धरि।
हाथ जोरि करि मसतक टेका। उठे आप तबि जलधि बिबेका[3]॥ ३७॥
कर महिं कसी धारि करि खरे। पूरब टक लगावनि करे।
पुन संगति दरशन जो आइ। सभि को महिमा कहैं सुनाइ॥ ३८॥
खुशी गुरु की कारज करे। पुरहि कामना जो उर धरे।
रहैं संग जे सिख्य हमेश। कार करन को लगे अशेश[4]॥ ३९॥
जो जो करहि कामना कोई। कूप कार ते पूरन होई।
भए अनंद संगतां सारे। सेवहिं भाउ रिदै बहु धारे॥ ४०॥
खन्यो[5] गयो ततछिन जल तांई। पुन काशट को चक धरिवाई।
बहु नर लाइ उतार्यो तरे। ऊपर महिल[6] नीव को धरे॥ ४१॥

---

1. बेर। 2. कुंआ। 3. विवेक के सागर, अर्थात् गुरु जी। 4. अधिक। 5. खोदा गया। 6. कुएं का महल।

चूना अपर ईटका धरि धरि। चिनि चिनि ऊच उताइल करि करि।
ब्रिंद नरनि तहिं सेव कमाई। कारीगरनि रची चतुराई ॥ ४२ ॥
तरै उतार्यो कर्यो उपाइ। पिखि आछो थल दीनि टिकाइ।
ऊपर ते पुन मन[1] बंधवाई। श्री मुख ते तबि महिमा गाई ॥ ४३ ॥
गंगा श्रोत[2] हमहुं इत आना। पावन कीनि लाइ उदपाना।
जिम इशनान सुरसरी केरा। मिटहिं ब्रिंद अघ, पावन फेरा ॥ ४४ ॥
श्री सतिगुर इत करति शनाने। कई बार स्री बदन बखाने।
यांते महिमा युति उदपान। करहिं संगतां आनि शनान ॥ ४५ ॥
तबि को इह श्री अरजन नाथ। कूप करायहु महिमा साथ।
श्री हरिराइ सुनति हरखाए। 'धंन धंन' बकता प्रति गाए ॥ ४६ ॥
उठि करि आए पुन निज डेरे। खान पान सुपते इस बेरे।
सवा जाम ते जाग्रनि करें। सौच शनान आदि सभि धरें ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'कूप' प्रसंग बरननं नाम अशटदसमो अंशु ॥ १८ ॥

---

1. किनारा। 2. सोता।

अंशु १६

धीर मल्ल काहिन प्रसंग

दोहरा

रामराइ पाती लिखी धीर मल्ल के साथ ।
अपनी महिमा बहुत बिध जिम बीती सभि गाथ ।। १ ।।

चौपई

'सुनि ताया जी इह बिपरीत । ज्यों मैं करी लखहुं शुभ रीति ।
दिल्ली पुरि महिं अवरंग[1] तीर । मिलनि हेतु किसहुं न धरि धीर ।। २ ।।
ठटक रहे लखि क्रूर बडेरा । मानहिं गुर न साध किस वेरा ।
अजमत जुति केते मरिवाए । बिदति सभिनि महिं नहिं गुपताए ।। ३ ।।
अलप आरबल तिस दिन मेरी । आइसु मानी गुर पित केरी ।
बिन संसै त्यारी करि लीनि । सतिगुर बच पर निशचा कीनि ।। ४ ।।
मरनि आदि को भय निरवारा । हुकम मानि मारग पग डारा ।
पहुंच्यो जाइ तुरक पुरि बीच । जहां संत द्रोही मति नीच ।। ५ ।।
पूरब कीनहिं कपट बडेरा । छांग जिवावनि को तबि प्रेरा ।
खाल असथि मैं सांभ सु धरे । काज़ी सदन पठनि पग करे ।। ६ ।।
भई भोर हठ कीनि बिसाला । छांग[2] जिवाइ देहु इस काला ।
असथी चरम नहीं जे राखौं । कहां जिवावनि पुन अभिलाखौं ।। ७ ।।
बिगर सु परति तुरक मद मत्ता । सभि जानहिं दुरमति चत्रगत्ता[3] ।
बहुर ज़हिर पोशिश को पठि करि । पहिर अचानक प्राननि परहरि ।। ८ ।।
इस ते आदि कहां लौ कहीअहि । सगरे जगत बिदति ही लहीअहि ।
ज्यों ज्यों करि हज़रत अपनायो । रस राख्यो जसु सभि पर छायो ।। ९ ।।
अनिक भांति की करि चतुराई । करामात बहु मति दिखराई ।
दुशट सभा अवरंग की सारी । बहु बारी बहु कीनि बिगारी ।। १० ।।

---

1. औरंगज़ेब । 2. बकरा । 3. मुग़ल ।

निज मति बल करि सकल दबाए। श्री नानक को जसु बिदताए[1]।
तनक बाता पर पित रिसाए। जे नहिं करति सभा बिगराए ।। ११ ।।
कहि भेज्यो निज मुख न दिखावहु। चहहु रहहु कै कहूं सिधावहु।
उचित नहीं गुरता के जाना। ब्रिद दोश को मो पर ठाना ।। १२ ।।
सतिगुर मम पित भ्रात तुहारो। अबि लौ कुछ नहिं पर्यो बिगारो।
लघु सुत की चाहति बडिआई। अरपहिंगे जग की गुरिआई ।। १३ ।।
आप करहु समझावनि आछे। ह्वै न बिखेरा इन ते पाछे।
यांते जथा जोग क्रित बनै। जिस ते सभि जग आछी भनै ।। १४ ।।
हेरहु पूरब बडे हमारे। श्री गुर रामदास मति भारे।
लाइक जेठो सुत न बिचारा। दियो अलप को निज अधिकारा ।। १५ ।।
आप अछत क्रित तौ करि गए। पीछै अधिक उपद्रव भए।
श्री अरजन दुशटनि घर जाइ। तज्यो सरीर खेद को पाइ ।। १६ ।।
प्रिथीए कीने दुखद उपाऊ। सुख सौं बैठनि दिय न कदाऊ।
बिदत जगत महिं लखहु कहानी। सो अबि रीति पिता गुर ठानी ।। १७ ।।
क्या मैं प्रिथीए समसर नहीं ?। हजरत निकटि बिदत जहिं कही।
समरथ हौं सभि जतन बनावनि। करन बिखेरा ज्यों मन भावन ।। १८ ।।
दादी नेती कहु ले संग। करहु संबाद उचारि प्रसंग।
क्यों निज घर महिं चहहु बिखेरा। जिम प्रिथीए[2] गुर अरजन केरा ।। १९ ।।
गुरता लेन अहै मम दावा। अनप पुत्र किम चहहु बनावा'।
इत्यादिक लिखि करि निज पाती। पठ्यो दूत सुलगति जिस छाती ।। २० ।।
सो ले धीर मल्ल ढिग आयो। 'मसतक टेकनि' प्रथम सुनायो।
'तुमरे पर धरि करि बिसवासा। दई पत्रिका भेज्यो पासा' ।। २१ ।।
खोलि पठी आशै सभि जाना। हितू आपनो करि बहु माना।
धीर मल्ल दे धीर बडेरी। राख्यो निकटि दूत तिस बेरी ।। २२ ।।
इक दिन माता नेती संग। बरननि कीनो सकल प्रसंग।
'जथा जोग जे होवति बात। तौ नहिं होइ सकहि उतपात ।। २३ ।।
क्रित अनुचित बनहिं दुखदाई। श्री हरिराइ देहु समुझाई।
जेशट पुत्र भलो अधिकारी। महां सुमति जुति लेहु बिचारी ।। २४ ।।
जिन कीनो अवरंग अनुसारे। अवरनि[3] की क्या बात बिचारें।
इम समुझाइ मात को भले। श्री हरिराइ निकट पुन चले ।। २५ ।।
हुते इकाकी हेरे जाइ। सतिगुर सादर लए बिठाइ।
नेती जननी गिरा उचारी। 'आप प्रवीन सकल मति भारी ।। २६ ।।

1. प्रकट किया। 2. गुरु अर्जुन का बड़ा भाई। 3. दूसरों की।

बाल आरबल महिं निज गुन ते। लिए रिझाइ पितामा मन ते।
जिस ते उचित पुत्र सभि त्यागे। गुरता तुमहिं दई अनुरागे ॥ २७ ॥
यांते कहिबो बनहि न कोई। जो कुछ करहु भली बिधि सोई।
तुमरे बडो भ्रात भी आयो। कहनि हेतु जिस बिधि बन आयो' ॥ २८ ॥
श्री हरिराइ सुनति पुन भाखा। 'कहहु जथा उर की अभिलाखा।
इक जननी हमर बड भ्राता। तुमरे सुनि हैं सरब ब्रितांता' ॥ २९ ॥
धीरमल्ल बोल्यो तिह समैं। 'जिम आछी हुइ सो कहिं तुमैं।
दीरघ द्रिशटि बिचरनि करो। पूरब के प्रसंग चित धरो ॥ ३० ॥
श्री गुर रामदास जिम कीनि। भए उपद्रव पाछे पीन[1]।
लघु सुत को निज थल बैठारा। प्रिथीए कीनो द्वैश उदारा ॥ ३१ ॥
अंत समैं लगि ढिग तुरकेश। करतो रह्यो पुकार हमेश।
श्री अरजन को कशट उपावनि। निस दिन कीने जतन बनावनि ॥ ३२ ॥
लघुता अपनी नांहिन चीनी। अधिक शरीके महिं मति भीनी।
तिस ही झगरे महिं मरि गयो। नहीं मेल भ्राता सग कियो ॥ ३३ ॥
सो बिधि मैं नीके करि जानी। सदन आपके हुइ तिम ठानी।
उचित पुत्र को त्यागनि कर्यो। हज़रत[2] साथ सूत जिन धर्यो ॥ ३४ ॥
कारज घर के सकल सुधारे। करि चतुराई जस बिसतारे।
संगत ब्रिंद आपनी कीनी। जिन कित ते पूजा बहु लीनी ॥ ३५ ॥
सरब भांति ते भा समरत्थ। तुरकेश्वर है जिसके हत्थ।
जो तुम गुरता देहु न तांही। तन के अंत हुइ सुख नांही ॥ ३६ ॥
वधहि सपरधा[3] भ्रातनि बिखै। लघु सुत बैस अलप को पिखै।
गुरता को बिगार सभि दै है। बल को करहि आप ही लै है ॥ ३७ ॥
क्यों पुत्रनि महिं द्वैश उपावहु। अनबन रचहु, कशट महिं पावहु।
घर बिगरहिं बहु परहि बिखेरा। इस महिं कहां भलो तुम हेरा ? ॥ ३८ ॥
जेशट को जग गुरु बनीजै। लघु तिसके अनुसारि करीजै।
सभि बिध पीछे इम सुख होइ। पुन किस बिधि उतपात न होइ' ॥ ३९ ॥
आशै मात भ्रात की बात। श्री हरिराइ सुनि सभि भांति।
कहिबे कहु गुर ह्वै करि त्यार। जथा जोग श्री प्रभु करतार ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'धीर मल्ल कहिन' प्रसंग बरननं नाम ऊनबिसती अंशु ॥ १९ ॥

---

1. अधिक। 2. सम्राट् (मुग़ल शासक)। 3. ईर्ष्या।

अंशु २०

श्री गुरु कीरतिपुर आगमन प्रसंग

दोहरा

सुनि माता ! भ्राता ! सुब्रित इह नहिं किस के हाथ ।
करैं उपाइ न प्रापती दाता इक जग नाथ ।। १ ।।

चौपई

सभि के बडे आदि श्री नानक । परखति गुननि ग्यान मनि मानिक ।
जिन ते परे अपर नहिं कोई । महति महति[1] महीआनहि सोई ।। २ ।।
तिन की करी सरब सिर धरें । बिना बिचारे मान्यो करें ।
सभि विधि शुभ सुत लाइक हुते । नहिं आइसु इक मानी किते ।। ३ ।।
सो लखि दोश, दास को दीनी । श्री अंगद गुरता तबि कीनी ।
दासू दातू जुग सुत भए । सभि बिधि के लाइक लखि लए ।। ४ ।।
श्री गुर अमर साथ मतसरी । नहीं सरलता उर महिं धरी ।
अंत समैं नहिं लाइक जाने । नहीं थिराए अपनि सथाने ।। ५ ।।
तिम श्री अमरदास सुत परखे । नहिं आग्या को सुनि मन हरखे ।
श्री गुर रामदास निरमान । मतसर आदिक दोशन जानि ।। ६ ।।
निज सथान पर आप बिठाए । करि सभिहिन के सीस निवाए ।
तिन को प्रिथीआ जेशट नंद । निज मति को चित गरब बिलंद ।। ७ ।।
बांख तरे नहिं आनति कांहू । दरब बटोर्यो बहु निज पाहू[2] ।
चित महिं चातुरता जग केरी । सुमति न शांत संतोख बडेरी ।। ८ ।।
तिस पर सबद बनावनि कीनि । धर्यो ग्रिंथ महिं गुरु प्रबीन ।
चहुं पीड़ी महिं आदि जुगादी । करहि बखीली जो बनि बादी ।। ९ ।।

---

1. महान । 2. अपने पास ।

हलत पलत महिं तिह मुख कारा। कहूं न आदर लहै कुचारा।
जो होवहि गुर के अनुसारी। सेवा आदि धरहि गुन भारी॥ १०॥
सो लाइक गुरता की बनहि। मतसर आदि हंकारहि हनैं।
रीत आदि ते इहु चलि आई। हम क्योंहूं नहिं नई बनाई॥ ११॥
रामराइ हम भेजनि कीनि। बचन शकति दीरघ तिस दीनि।
करी सु करी अपर, हम मानी। करामात नित दई महानी॥ १२॥
निरभै हुतो सभि ते किय बली। तिन भी जानि लीनि बिधि भली।
तऊ सुनहु श्री नानक बानी। चौदहि लोकनि सिर धरि मानी॥ १३॥
जथा जोग की बरननि करी। जिस महिं गरब रीति परहरी।
पठ्यो शलोक, अरथ को बूझा। गुपत बिदत जिस को सभि सूझा॥ १४॥
करनि तुरकड़े केर खुशामद। जानि दरब की तिस ते आमद।
अरथ बिपरजै कीनि सुनावनि। हम को भई न इह मनभावन॥ १५॥
हुतो समरथ सरब कुछ करिबे। नहीं भरोस अपनि बल धरिबे।
तऊ देखीअहि अधिक समाजा। भयो तिसी को जनु[1] बन राजा॥ १६॥
किसू बात की कमी न तांही। बन्यो पूज बड जग के मांही।
अहैं भविक्खयत मैं बड हेतु। पहुंचै गुरता किसू निकेत॥ १७॥
भावी रची प्रमेश्वर जथा। हुई चहै साची सो तथा।
तिस महि बस नहिं किस हूं केरा। ब्रिथा करै बल जतन बडेरा॥ १८॥
सुनि माता भ्राता गुर बैन। नहीं भई चित मैं किम चैन।
अपर बारता बहुर उचारी। रामराइ की कीरति वारी॥ १९॥
जथा जोग उत्तर गुर दीने। सो मति नहीं मानिबो कीने।
तऊ कहति ही रहैं हमेश। 'दिहु गुरता जो पुत्र विशेश[2]॥ २०॥
दिन प्रति कहनि जानि गुन खानी। रामराइ की उपम महानी।
पक्खी भए, टरति नहिं टारे। चढनि चह्यो सतिगुरु बिचारे॥ २१॥
अहै अनुचित न रुचित जु चित मैं। तिसके बनि पक्खी हुइ हित मैं।
दिन प्रति कहति बिचारति नांही। श्री नानक घटता जिस मांही॥ २२॥
बीच जामनी चितवति रहे। प्राति सौच मज्जन चित चहै।
बिदति सभिनि महिं सुनति ऊचारी। 'दुंदभि दिहु बजाइ ह्वै त्यारी॥ २३॥
जीन तुरंगनि पर अबि पावहु। दिवस न चढहि, चढनि उतलावहु[3]।
इम कह अपने शसत्र अनाए। कराचोल तरकश गर पाए॥ २४॥
सो पालनि को जामा फबै। सूखम अधिक दिपहि तन सभै।
कट सन दिढ लपेट पट लीनि। जेवर जिगा जिबाइश[4] कीन॥ २५॥

---

1. मानो (राजा बना हुआ है)। 2. बड़ा। 3. जल्दी से। 4. सजावट।

इतने महिं चंचल बल बाजी। आवति मनहुं करे नट बाजी।
चामीकर को ज़ीन सुहावा। जटति नगन गन ते दमकावा॥ २६॥
मात भ्रात को मिल ततकाला। तुरंग अरुढनि भए उताला।
दुंदभि ऊची धुनि धुंकारा। चढनि गुरु सभि के श्रुत डारा॥ २७॥
चमूं त्यार ततछिन हुइ आई। ज़री निशान झुलति अगुआई।
कीरतिपुरि के मारग चाले। फांदति[1] बीरनि तुरंग बिसाले॥ २८॥
बाई सहस सैन समुदाई। चली धूल चढि नभ पर छाई।
उलंघि[2] पंथ को कोस कितेक। उतरि परे प्रभु जलधि बिबेक॥ २९॥
सकल बहीर सिवर कहु घाला। त्रिण काशट को संचि उताला।
खान पान करि निसा बिताई। श्रम निरवार्यो बसि तिस थाईं॥ ३०॥
सौच शनान प्राति को करे। तूरन ज़ीन तुरंग पर धरे।
तंग ऐंचि तबि कीनसि त्यारी। गुरू चही सिवका असवारी॥ ३१॥
ततछिन आइ अरूढति भए। चमूं सहित मग गमनति भए।
इम दिन प्रति श्री सतिगुर चाले। पंथ उलंघि गए जिस काले॥ ३२॥
पुन सतद्रव सलिता अगुवाई। गन जल जंतुनि के जुति आई।
थिरे उतर कर तीर क्रिपाला। केवट को हकारि ततकाला॥ ३३॥
सुंदर नई नाउ अनवाई। प्रभु अरुढि जल पर चलिवाई।
परले पार उतरि थिर होए। पुन चढि चमूं आइ सभि कोए॥ ३४॥
गुरु अरुढति चले अगारी। सुभट सगल गमनंति पिछारी।
कीरतपुरि सुधगी सभि भवनू। क्रिपा निधान प्रभु आगवनू॥ ३५॥
सुनि सुनि मंगल नाना साजें। नौबत पुरी पौर पर बाजें।
धूप धुखावति[3] फूलन माला। गरी[4] मारजन[5] करी बिसाला॥ ३६॥
करि छिरकावनि धूर दबाई। पंचांम्रित होवति समुदाई।
सभि के उर आनंद भा आए। दरशन को हियरे ललचाए॥ ३७॥
श्री हरि क्रिशन से दास अगाऊ। मिले निमे नर गन धरि भाऊ।
बूझी कुशल गुरु सभिहिनि की। करी बतावनि तिन मन की॥ ३८॥
सुंदर सदन बिराजे जाइ। पुरि जन परवारे समुदाइ।
आइ तिहावल[6] बहु बरतायो। सभिनि अनंद करे मुख पायो॥ ३९॥

---

1. शूरवीर घोड़ों को खूब दौड़ाते हैं। 2. पार करके। 3. धूप जलाना। 4. गली। 5. साफ़ (की)। 6. कड़ाह प्रसाद।

सोढी सूरजमल ते आदि। मिले आइ धरि धरि अहिलाद[1]।
जथा जोग श्री गुर सतिकारे। कितिक समैं थिर सदन सिधारे ॥ ४० ॥
श्री हरि क्रिशन उछंग[2] सुहाए। बंदहिं सुभट हेरि समुदाए।
निज थल थिरता करनि निहारे। गुन गन धीरज आदि उदारे ॥ ४१ ॥
भयो सपूत परम प्रिय पित को। करता सिख संगति के हित को।
बसति भए कीरति पुरि आइ। सपतम शाहु[3] गुरु हरिराइ ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री गुरु कीरतिपुरि आगमन' प्रसंग बरननं नाम बिसती अंशु ॥ २० ॥

---

1. प्रसन्नता। 2. गोदी। 3. सातवें गुरु—श्री हरिराय जी।

अंशु २१

श्री हरिराइ सिखन प्रति बांक प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ जी इस बिधि समा बिताइं ।
सिख्यन को सुख देत हैं दुशटन दुख समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

एक द्योस महिं क्रिपा निधाना । बैठे रुचिर प्रयंक महाना ।
समों अराम करन को जाने । पौढि गए सुपते सुख साने ॥ २ ॥
सूखम बसत्र ऊपरे ताना । कुछ सिख हुते अलप तिस थाना ।
कितिक समो जबि एव बिताए । किसू देश ते दुइ सिख आए ॥ ३ ॥
उर शरधा धरि शबद सु गावति । बहुत प्रेम सुनिबे उपजावति ।
सुंदर सुर ते राग बसावैं । गन संगति को गाइ रिझावैं ॥ ४ ॥
दरशन हित आए दरबार । सुपते जानै गुरु उदार ।
उर मैं करैं बिचार बिसाला । गावहिं शबद कि नहिं इस काला ॥ ५ ॥
सुधि धुनि जागहिं कोपहिं नांही । हमरी निद्रा इनु उचटाही
कहहिं परसपर सतिगुर सदा । तुरी अवसथा महिं जद कदा ॥ ६ ॥
तीन अवसथा साखी रूप । ज्यों जल कमल अलेप अनूप ।
सुनि हरि सिमरन आनंद धरैं । हम पर खुशी आपनी करैं ॥ ७ ॥
इम बिचार करि गावन लागे । सुर[1] सुंदर ते उर अनुरागे ।
सुनि बानी पुन सतिगुर जागे । करी शीघ्रता सिहजा त्यागे ॥ ८ ॥
हरबराइ[2] जब निद्रा त्यागी । पाटी[3] चोट गोड पर लागी ।
तजि प्रयंक को उठे क्रिपाला । जान लग्यो उतरिबे काला ॥ ९ ॥
पाटी चोट सु दासनि हेरी । कर धरि मरदनि कीनि घनेरी ।
पुन कर जोरे पूछनि लागे । 'श्री सतिगुर तुम किस बिधि जागे ? ॥ १० ॥
बचन आप के शबद बने हैं । नर तारनि हित सुखद भने हैं ।
संकन[4] किस की रावर धरी ? । कारज कवन शीघ्रता करी ? ॥ ११ ॥

---

1. आवाज । 2. बड़बड़ाना । 3. खाट की बाँही । 4. भय ।

हड़बराइ अबि ऐसे जागे। पाटी चोट गोड महिं लागे'।
सुनि करि श्री हरिराइ उचारें। 'सुनहु सिख ! तुम हो मम प्यारे ॥ १२ ॥
गुर अनभै[1] बिच बानी रूप। यांकी महिमा अमित अनप।
भव अगनी सागर कहु तरनी। सतिगुर सिखन को सुख करनी ॥ १३ ॥
पाठक रिदै बिकारनि हरनी। हरनी त्रिशना सिघंनि बरनी।
बरनी गुर दुख तरु को करनी। करनी ग्यान अगनि को अरनी ॥ १४ ॥
जो सिख गुरबानी भै करै। बिन प्रयास भव सागर तरै।
गुरबानी महिमा महीयाने। जे मिरयादा हम नहिं ठाने ॥ १५ ॥
तो सिख भै न करै गो कोई। बिन भै करे श्रेय नहि होई।
गुरबानी को मै हम धरिकै। तज्यो प्रयक शीघ्रता करिकै ॥ १६ ॥
जो सिख है गुर शबद कमावै। शबद कमाइ परमपद पावै।
भगति प्रतीति नहीं जिस तन मैं। तिह गुरबानी भै नहि मन मैं ॥ १७ ॥
बिन भै भगति न प्रापति होइ। भगति बिना न ग्यान अविलोइ।
ग्यान बिना मुकती किम पाइ। मुकति बिना न अनंद समाइ ॥ १८ ॥
कारन कारज श्रिखल एही। गुरबानी भै ते सुख लेही।
बिन भै भगति न जगत तरावै। तीरथ ब्रत जग जोग कमावै ॥ १९ ॥
जो गुर भगति सु सिख है मेरा। गुरबानी भै तिसै घनेरा।
जिन भै अदब न बानीधारा। जानहु सो सिख नहीं हमारा' ॥ २० ॥
इम सतिगुर ते सुन उपदेश। लख्यो महातम शबद विशेश।
हाथ जोरि बंदति कर बंदि। सिर धरि करि गुर पद अरबिंद ॥ २१ ॥
'श्री सतिगुर जी करुना करीअहि। श्री मुख ते बर इही उचरीअहि।
हुइ गुरबानी को भै प्रापति। जिस ते मुकती को दर जापति ॥ २२ ॥
लगहि प्रेम गुर शबद मझारा। इस ते हुइ हमरो निसतारा।
बसहु रिदे महिमा इस केरी। कटहिं ब्रिंद करमनि की बेरी' ॥ २३ ॥
सुनि प्रसंन भे श्री हरिराइ। दीनसि बर बानी भै भाइ।
'गुर उपदेश जाहि मन लागा। कोटि जनम को सोवति जागा ॥ २४ ॥
मन जागे की इही निशानी। प्रिय लागहि उर सतिगुर बानी।
धंन सिक्ख जिनके उर भाई। सम सलिता मन मीन बनाई ॥ २५ ॥
परम सिख जिनको मन कानन[2]। बिचरहि नित गुर शबद पचानन[3]।
तारो चरम भिर्यो नह डोलहि। गुरबानी तारी संग खोलहि ॥ २६ ॥

---

1. अनुभव। 2. बन। 3. शेर।

भगति विराग ग्यान गुर घने। प्रविशहि कोशठ, सो तबि चुने।
सतिगुर बानी चंदन बावन। मन दासनि तर करहि सुखावन॥ २७॥
जिसके भाग पुरबले जागहिं। गुरबाणी तिस मीठी लागहि।
बिना भाग ते लखहि न कोई। किम कलि बिखै पाइ गति सोई'॥ २८॥
इम सतिगुर दे दे उपदेश। दासनि की श्रेय चहति विशेश।
इक दिन चंचल चढे तुरंग। गए वहिरि बहु संगति संग॥ २९॥
चलति चलति ऐसो थल पायो। हुतो उतंग देख मन भायो।
ऊचो परबत तिस के तीर। पहुंचे तहिं ले संगति भीर॥ ३०॥
थल अरूढि तिस सतिगुर ठांढे। सिख भी खरे प्रेम के गाढे।
चिरंकाल जबि बीत्यो तहां। संगत भई बिसम उर महां॥ ३१॥
थकति चरन सभि के हुइ गए। हाथ जोरि तबि बूझति भए।
'श्री सतिगुर जी! अंतरजामी। सेवक श्रेय देति हो स्वामी॥ ३२॥
कौन प्रयोजन ईहां खरे?। नहिं फुलवारी फूलनि खिरे।
सैल निकटि हैं, सैल न आन[1]। जिस को देखति क्रिपा निधान॥ ३३॥
खरे होनि को कारन और। नहिंन बिलोकति हम इस ठौर।
यांते सभि संगति बिसमाइ। कहि अरज़ी, मरज़ी जिम पाइ'॥ ३४॥
सुनिकर बोले श्री हरिराइ। 'सुनहुं सिक्ख, संगत समुदाइ।
जग तारन श्री नानक बाबा। खंड पखंडनि शोर शराबा॥ ३५॥
भर्यो जहाज तिनहुं जो भारा। पर्यो भ्रमर महिं भ्रमति उदारा।
घाट पहुंचबे मग छुट गयो। खंड खंड हुइ न्यारो भयो॥ ३६॥
जुदे जुदे सगरे हुइ गए। परे भंवर को अवघट लए।
को दुह पंथ परे बहि जाते। को को कंठे आनि लगाते॥ ३७॥
आप आप हुइ सभि को गए। तिसको हम अबि देखत भए।
सुनिकरि बचन भयंकर गुर के। सिक्खन के उर तबि बहु धरके॥ ३८॥
भए दीन भनते[2] पुन बिनती। 'श्री गुर! भई सभिनि के गिनती।
भेव न पाइ सकैं क्या आशै। समुझावहु इह करहु प्रकाशै॥ ३९॥
जिम दासनि ते समझी जाइ। तिस प्रकार दिहु हमहु बताएं।
क्रिपा सिंधु सुनि कै मुसकाए। 'भो सिखहु! बूझहु इस भाए॥ ४०॥
सिख सेवक अबि भूल गए हैं। बड भुलावनी बिखै पए हैं।
अरथ[3] लोभ के बसी परे हैं। पाखंडनि की पूज करे हैं॥ ४१॥

1. दूसरा। 2. कहते। 3. धन का लोभ।

काचे पाचे[1] गुरु कहावैं। तनक सिद्धि जग मैं दिखरावैं।
काची मति के हुइ तिन पाछे। चलहिं कुमग नहिं प्रापति आछे ॥ ४२ ॥
सति मति त्यागहिं तहिं अनुरागहिं। काचे की संगति महिं लागहिं।
तजि करि भगति कुमारग चले। किस प्रकार प्रापति हुइ भले ॥ ४३ ॥
जिस ते मंत्र करहिं मुख जाप। पुन निंदहिं तिन मूरख आप।
इम जहाज भौरी[2] पर फूट्यो। जुदो जुदे भा, जबहुं टूट्यो ॥ ४४ ॥
सुनि गुर बाक सिक्ख बिसमाए। कितिक काल धरि मौन बिताए।
बहुर समुझि करि गुरू प्रताप। बोली संगति छोर संताप ॥ ४५ ॥
'श्री प्रभु! तुम हो बखशन हारे। 'भवजल ते निज सिख्य उधारे।
बड कसूत संगत महिं भयो। श्री मुख ते जु सुनावनि कियो ॥ ४६ ॥
निज जहाज कबि मेलो इहै ?। जुदो जुदो कै इस बिधि रहै ?।
तुमरो नाम लाज तुम ही को। करहु कि नहिं संगति को नीको ? ॥ ४७ ॥
भगति खजाने बखशहु सदा। गई बहोरति हो जद कदा।
सरब भांति समरथ गुसाई। कारन करन सु अधिक बडाई ॥ ४८ ॥
बिनती सुनिकै श्री हरिराइ। बोले सभि को बाक सुनाइ।
'कितिक समों परि है असरीरा। बिगर जाइ सभि ठौरहिं ठौरा ॥ ४९ ॥
आदि मसंद सिख्य बिरमाइ। दरब लोभ के बसि पर जाइं।
सगति भूलहिं इनको देखि। निज निज महिं हंकार विशेश ॥ ५० ॥
तबि दसमो मैं धरौं शरीर। देग तेग को धनी गहीर।
दुशट पखडी करौं बिनाश। संत महातम होइं प्रकाश ॥ ५१ ॥
तबि जहाज मैं करौं इकत्र। प्रगट होइगो पंथ पवित्र।
दंड उचित को दै है दड। जानहिं सतिगुर एक अखंड ॥ ५२ ॥
फूटे तूटे जो तबि होइ। तिस जहाज पर चढिहैं सोइ।
भवसागर ते पार उतारौं। अपनी सगति सगल संभारौं ॥ ५३ ॥
भगति इकंगी[3] भजन अधारे। हुइ हैं मेरे दास अपारे,।
भरि करि पूर करौं सभि पार। प्रगटावौं अस पंथ उदार' ॥ ५४ ॥
सुनि सतिगुर के बाक सुहाए। सगति सुनति सकल हरखाए।
'धंन धंन सतिगुर गुनखानी। जिन तुम जाने धंन सि प्रानी ॥ ५५ ॥
पद अरबिंद बिलंद[4] तुमारे। धरहिं ध्यान, तिन कशट बिदारे'।
इम कहि करी बंदना ब्रिंद। गुर बिलद बलि श्री गोबिंद ॥ ५६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिराइ सिखन प्रति बाक' प्रसंग बरननं नाम एक बिसती अंशु ॥ २१ ॥

---

1. कच्चे। 2. भवर में, मँझधार में। 3. एक ईश्वर। 4. महान।

अंशु २२

श्री हरिराइ कथा प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ जी लाखहुं सिख्य उधारि।
सत्यनाम दे करि भगति करे पूर भरि पार ॥ १ ॥

चौपई

निज शरीर को पिखि करि अंत। चितवति चित सतिगुर भगवंत।
बैस[1] अलप महिं गुन ते महां। तखत बिठावनि कौ चित चहा ॥ २ ॥
पूरब अर दक्खन सिख जेई। पशचम उत्तर बासी केई।
सभि थल हुतै मसंद महाने। लाखहुं धन लेते तिस थाने ॥ ३ ॥
लिखे हुकम नामे गुर पूरे। 'देखति आवहु इहां जरूरे।
जेतिक संगति आवहि संग। आनहु सरब हकारि[2] उमंग' ॥ ४ ॥
लेकरि हलकारे गन दौरे। पहुंचे जाइ सु जित कित ठौरे।
सहत मसंदनि संगति सारी। पहुंचे कीरतिपुरी हकारी ॥ ५ ॥
चहूं दिशिनि ते संगति आई। सुंदर अनिक उपाइन ल्याई।
अपने अपने अवसर पाइ। दरसहिं श्री सतिगुर हरिराइ ॥ ६ ॥
आप जाइ लंगर के मांही। करैं अहार अनिक विधि तांही।
संगति की पंगति बैठाइ। निज कर ते सभि को त्रिपताइ ॥ ७ ॥
भगत करहिं उपदेश बिसाला। जिसते होवहि बसी क्रिपाला।
रिखि के प्रेरे दैत संघार्यो। संगति प्रती प्रसंग उचार्यो ॥ ८ ॥
"अस कारज जग द्रिशटि न परै। प्रेरैं भगत जु प्रभु नहिं करै।
तिस पर कथा पुरातन सुनीअहि। प्रेम बसी परमेशुर गुनीअहि ॥ ९ ॥

---

1. आयु। 2. बुलाकर।

दोहरा

मधुकैटभ[1] के देहि ते उपज्यो पुत्र बिसाल।
'धुंध' नाम जिसके भयो महां सरीर कराल ॥ १० ॥

चौपई

महद ताप को तप बहु कीनसि। खान पान मुख कछू न लीनसि।
एक चरन पर ठांढो रहै। बानी जीत न कबिहूं कहै ॥ ११ ॥
ऊरध बाहू, बिना अलंब। संकट सहै सरीर कदंब।
मन थिर, रोक रिखीकिनि[2] सारी। रहित अचल, भा पौन अहारी ॥ १२ ॥
इत्यादिक तप तपै घनेरे। ले देवनि ते बर बहुतेरे।
महां बाहु बलवान महाना। जहिं कहि दौरति मन अभिमाना ॥ १३ ॥
लीनस जीत सुरनि के थान। को नहिं अटकहि रण मैदान।
महां भयंकर दाढ़ बिसाला। लोचन लाल कराल सु काला ॥ १४ ॥
रह्यो बिशनु को खोजति सोई। जहिं जहिं सुनहि जाइ थल सोई।
नहिं पायो नहि कीनि लराई। अपर देव क्या तिह अगवाई ॥ १५ ॥
सभि भाजे भैभीत सु ह्वै कै। किनहूं जध न कीनि थिरै कै।
महां गरब को धरि धरि उर मैं। जहिं कहि धाइ सुरनि के घर मैं ॥ १६ ॥
सकल दिशिन को जीतनि कीनसि। जित गमनै तित त्रासनि भीनसि[3]।
इस प्रकार दिगबिजै सु करिकै। श्रमति होइ सुपत्यो धर परि कै ॥ १७ ॥
चिरंकाल सो पौढ्यो रह्यो। सुपति परो नहिं जाग्रनि लह्यो।
ऊपर परी म्रित्तका ब्रिंद। निपजे तरुवर अनिक बिलंद ॥ १८ ॥
इक संमत महिं ले इक स्वास। उडति धूल जिस ते चहु पास।
गमनहि कंकर सहित अंधेरी। देशनि को अछादि तिस बेरी ॥ १९ ॥
सभि जीवनि को पीड़न करिही। जबहि नासका स्वास उसरही।
भूमचाल तबि होइ बिसाला। डगमग डोलति महद कराला ॥ २० ॥
केतिक ब्रिच्छ उखरि गिर परैं। अधिक पौन जबि स्वास निकरैं।
सरब सरीर अछादन होवा। लख्यो परै नहि जब को सोवा ॥ २१ ॥
जहां नासका बिवर[4] महाना। सैल कंदरा केर समाना।
अपर सरीर जु सकल बिसाला। पर्यो पौन ते सिकता जाला[5] ॥ २२ ॥
तन को चिन्ह न देति दिखाई। अस म्रितका बहु लीनि दबाई।
निकसहि पौन नासका जहिंवा। जानहिं लोक कंदरा तहिंवा ॥ २३ ॥

1. एक राक्षस। 2. ऋषियों की। 3. भयभीत। 4. नाक का छेद।
5. अधिक रेत।

इस प्रकार सो दैत बिसाला। पयो अछाद्यो देह कराला।
आश्रम तहां उतंक मुनी को। बिशनु भगति तप तापति नीको ॥ २४ ॥
पंचागन[1] को तपहि महाना। हिम रितु जल महि कंठ प्रमाना।
फल फूलनि कहु करहि अहारा। सिमरहि 'बिशन बिशन' इकसारा ॥ २५ ॥
होयो रिदा शुद्ध जिस केरा। इस प्रकार तप तपे घनेरा।
सम दम सहि अनसूयक[2] साचो। जीते सभि बिकार नहिं बांचो ॥ २६ ॥
महां जितिंद्रै धीरजवंता। धरम आतमा, बेद पठंता।
मननिशील, बुधिवान महाना। म्रिदुल सरल आदिक गुन नाना ॥ २७ ॥
रोकि वायु को लाइ समाधा। करति अराधनि बिशनु अगाधा।
म्रिदुल लाल शुभ ललित बिसाला। पावन परम चरन दुति जाला ॥ २८ ॥
जंघ जुगल इक सम जनु केला। पीत बसत्र शोभति तन मेला।
आयुत छाती बाहु बिसाला। शसत्र धरे उर पर बन माला ॥ २९ ॥
नूपर[3] छुद्र घंटका कुंडल। श्यामल बरन शुभति मुख मंडल।
मुकट उतंग सीस पर भ्राजे[4]। मेचक चिक्कन चिकर बिराजे ॥ ३० ॥
अस सरूप को धरि के ध्याना। निशचल बैठहि मुनी महाना।
उग्र तप्यो तप जबि धरि धीर। मुनि मन की लखि प्रभू गंभीर ॥ ३१ ॥
महां क्रिपालु क्रिपा करि आए। रिखि उतंक आश्रम जिस थाएं।
देखति दरशन भयो निहाल। करी डंडवति मुनि ततकाल ॥ ३२ ॥
हाथ जोरि दरशन को देखा। तप साधन फल पाइ अशेखा।
रिखि उतंग के उर को जानी। पुरशोतम प्रभु समित[5] बखानी ॥ ३३ ॥
'हुइ बिबेक सत्तासति केर। पावहिं ग्यान आतमा हेरि।
पदवी परम पाइ हैं मोरी। चरन पराइन बुधि बर तोरी ॥ ३४ ॥
तव तप महिं जो बिघन करंता। तिसको बनवि आप मैं हंता।
सूर वर लबधि दैंत जो अहै। इस बिधि करे म्रितु को लहै ॥ ३५ ॥
कुल इक्ष्वाक बिखै जो राजा। धरम आतमा अधिक समाजा।
इस मारनि हित प्रेरहु जाइ। दीजहि धीरज तिह बंधवाइ ॥ ३६ ॥
दैंत सरीर अकार महाना। प्राक्रम तेज बिखैं बलबाना।
भू पालक तिस के न समाना। ईखद[6] ओज ताहि अगवाना ॥ ३७ ॥
यांते मैं प्रविशौं तिस मांही। तेज ओज ते ह्वै उतसाही।
न्रिपति सरूप धारिकै आपी। रचौं जुद्ध हित तत्र रिपु खापी ॥ ३८ ॥

---

1. पांच धुंई। 2. ईर्ष्या रहित। 3. पायल। 4. सुशोभित हो रहा है। 5. मुस्कराकर। 6 तनिक सा।

सुर गन को कंटक बुरिआरी । नर तन धरि मैं लिउ अरि मारी ।
इस तन ते नहिं मारनि बने । अभै होनि के बर लिय घने' ।। ३९ ।।

इस प्रकार कहि करि गोसाईं । अंतर ध्यान भए तिस थाईं ।
रिखि उतंक ने सभि बिधि जानी । जिस प्रकार श्री बिशनु बखानी ।। ४० ।।

तप फल लबधि क्रितारथ[1] होवा । लोचन गोचर श्री प्रभु जोवा ।
हरखति करति भयो प्रसथाना । नगर अयुद्धया को समुहाना[2] ।। ४१ ।।

धरम आतमा मुनी प्रतापी । जिन रिखीक बहु तप ते तापी ।
हतनि लालसा दैंत बडेरी । तिह म्रितु प्रापति की बिधि हेरी' ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिराइ कथा' प्रसंग बरननं नाम दुइबिसती अंशु ।। २२ ।।

---

1. कृतज्ञ । 2. सामने ।

अंशु २३

श्री हरिराइ कथा प्रसंग

दोहरा

"गमन्यो मुनी उतंक मग पुरी अयुद्धया जाइ।
द्वारपाल सो तिह कह्यो 'न्रिप को देहु जनाइ ॥ १ ॥

चौपई

मुनी उतंक आइ थित द्वारे। मिलिबो चहिति तुमहि इक बारे'।
सुनति तुरत ही अंतर गयो। मुनि आगवनि जनावति भयो ॥ २ ॥

महिपालक सुनिरिखि की सुध को। उठ्यो झटति करकै सुधि बुधि को।
करि धरि पूजा सरब प्रकार। चलि आयो तूरन निज द्वार ॥ ३ ॥

करि बंदन पादारथ[1] दीनसि। आदर सभि बिधि को बहु कीनसि।
अपने संग सभा मैं आन्यो। प्रशन अनामै नंम्रि बखान्यो ॥ ४ ॥

'बडे भाग मोरे सभि भांती। दीनसि दरस बिघन गन घाती।
आवनि सफल आपनो करीए। निज आगवन सु हेतु उचरीए ॥ ५ ॥

सुनति मुनि ने निज भिप्राइ[2]। महिपालक को दीनि जनाइ[3]।
'धुंधु दैत बर पाइ महाना। मुनि सुर कंटक नित दुख दाना ॥ ६ ।

तिह हतिबे को करि उतसाहू। महां बीर तूं छत्रय्नि मांहू।
निज बल संसे को न बिचारहु। प्रभू शकति ले असुर संघारहु ॥ ७ ॥

जसु बिसाल लीजहि अबिनाशी। बिदतहिं जगत महद बल रासी।
अभै दान दीजहि सभि लोक। हतहु ओज करिकै रिपु रोक ॥ ८ ॥

जीवति थीवहु कीरतिवंति। पुन अपवरग[4] पाइ हो अंत।
छत्री कुल को धरम विचारि। लघु दीरघता रिदै न धारि ॥ ९ ॥

बहुत भांति के गुन गन पावें। अति उत्तमता तव कर आवे।
पारब्रह्म के रूप मझार। होइ एकता अनंद उदार ॥ १० ॥

---

1. चरणों को धोया। 2 अभिप्राय। 3. बता दिया। 4. मुक्ति।

तप ताप्यो मैं दीरघ जबै। लोचन गोचर भे प्रभु तबै।
तिन को प्रेर्यो मैं चलि आयो। चहति दैंत को नाश करायो ॥ ११ ॥
सुनि महिपाल बिसाल अनंदा। 'मैं जान्यो मुझ ह्वै गुन ब्रिंदा।
इक तौ धरम जंग को मेरा। दुतिय मुनीबर! कहिबो तेरा ॥ १२ ॥
त्रितीए जगत नाथ के साथा। हुइ इकता जिह बंदहिं माथा।
छुटहिं कलेश अशेश दुराधर[1]। मैं बडभाग लखौ हे मुनिवर ॥ १३ ॥
इम भूपति करिकै उतसाहू। भयो सनद्धबद्ध बड़ बाहू।
नंदनि हुते इकीस हज़ार। शसत्र पहिर सगरे भे त्यार ॥ १४ ॥
छूहनि[2] एक अनीकनि[3] चली। गज बाजनि रथ करि कलमलि[4]।
धुजा[5] पताका[6] बसत्रनि छोरे। बादति बाज उठे बड घोरे ॥ १५ ॥
करिकै मंगल अनिक प्रकारा। निकस्यो न्रिपति आपने द्वारा।
भए सहाइक सुर गन सारे। चहिति जुद्ध महिं धुंधू मारे ॥ १६ ॥
चांपनि अपनि टंकार करते। बाण निखंगनि महिं भरियंते।
चंद्रहास[7] निरमल चमकंते। कट[8] सों कसहिं सूर बलवंते ॥ १७ ॥
बिप्र जितेंद्री बेदन बेता। आशिखबाद कहैं 'बनि जेता[9]'।
गज बाजी स्यंदन दुति भारी। सभि सजाइ करि पाखर डारी ॥ १८ ॥
स्यंदन फेरहिं हयन कुदावहि। लरिबे को जोधा उतसावहिं।
भिंडपाल, तोमर, असि धारे। पांसी[10], मुदगर गहि कर भारे ॥ १९ ॥
अनिक प्रकार करहिं रण त्यारी। निकस्यो भूपति पुरि कै द्वारी।
बहु जांबूनद रतन मंगाए। भिछकन[11] दए दान मन भाए ॥ २० ॥
सभिनि प्रसंन कर्यो महिपाला। दैंत दिशा के मारग चाला।
तुररी दुंदभि गोमुख[12] बाजे। पटहि ढोल रव सुनि भट गाजे ॥ २१ ॥
बिन अतंक ते तपी उतंक। लिहो संग न्रिप गम्यो निशंक।
सगरे पुत्र साथ ही लीने। चौंप असुर सों लरिबे भीने ॥ २२ ॥
दिन प्रति करति निवेस[13] नृपाला। सभिनि संभारति मारग चाला।
बिमन[14] सुभट नहिं सैना मांही। न्रिप हित अपनि प्रान अरपाहीं ॥ २३ ॥
रिशट पुशट बाहन गन नाना। अलंकार पहिरे दुतिवाना।
उतसाहति जोधा गन चलैं। कहति 'दैंत को हम दलमलैं' ॥ २४ ॥

---

1. कठिन धारण किए हुए। 2. सेना। 3. सेना। 4. शोर। 5. बड़ा झण्डा। 6. छोटी झण्डी। 7. तलवार। 8. कमर। 9. विजयी। 10. फांसी। 11. भिखारी। 12. नरसिंघा। 13. निवास। 14. उदास।

सिकता सागर को बिसतारा। कित जोजन लौ पुलिन उदारा[1] ।
तिस महिं सुपत्यो दैत कराला। चिरंकाल को देह बिसाला ॥ २५ ॥
रिखि उतंक ने भेत जनावा। 'इह उतंग[2] थल जो द्रिशटावा।
तिस महिं दैत दब्यो परि रह्यो। चिरंकाल ते निद्रा लह्यो ॥ २६ ॥
तबि सैना के भट मिलि सारे। सगरी म्रितका दें जबि टारे।
करें प्रहार उठहि तबि एही। शसत्र पहारहु आपनि तेही' ॥ २७ ॥
इम सुनि भूप सित्र करिवायो। सभि सैना को तहां पठायो।
कसी कुदाले नाल बिसाले। खनहिं तहां मिलिकै भट जाले[3] ॥ २८ ॥
अनिक प्रकार मचावहिं रौरा। कूदहिं किलकहिं खोदहिं ठौरा।
सवाधान हुइ शसत्र संभारहिं। करे ओज को पैर प्रहारहिं ॥ २९ ॥
अनिक जतन ते म्रितका टारें। 'पिखहिं असुर को अबि हम मारें।
सपत् द्योस बीते इस भांती। करति जतन को शत्रुनि घाती ॥ ३० ।
पिख्यो सरीर दैत कहु कारा। लीनि स्वास बहु पौन निकारा।
नर अनेक उड गए गगन मैं। परें सु दूर जाइ कित बन मैं ॥ ३१ ॥
शबद कुलाहल अतिशै होवा। पर्यो असुर को तन जबि जोवा।
अंग हलावनि कीनि तदाई। उठ्यो दैत दारुनता छाई ॥ ३२ ॥
म्रितका तन पर ते सु उतारी। पुनहि बाहनी बडी निहारी।
मच्यो रौर सो सुनि करि कान। महा काय[4] होयहु सवधान ॥ ३३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिराइ कथा' प्रसंग बरननं नाम तीनबिसंती अंशु ॥ २३ ॥

---

1. बहुत योजन । 2. ऊँचा स्थान । 3. सारे । 4. शरीर ।

अंशु २४

श्री हरिराइ कथा प्रसंग

दोहरा

सुनति कुलाहल करन महिं[1] जाग्यो असुर सुचेत ।
सैल सभ्रिग[2] उतंग ज्यों सभि अवनी जनु केत[3] ॥ १ ॥

चौपई

इस प्रकार ठांढो बड दैत । उतसाही, प्राक्रमि, सुर जैत ।
इत ते न्रिपति सथिति भा स्यंदन । जग कंटक[4] को चहिति निकंदन ॥ २ ॥
सुत गन सहत बाहनी सारी । शसत्र असत्र धारे तन भारी ।
दैत बधनि की कांखावान । छोरनि करे महां खर बान ॥ ३ ॥
देखति धुंधु बदन मुसकान्यो । दारुन[5] महिदै बाक बखान्यो ।
'भो भो भूप ! कवन तूं अहैं । मम प्राक्रम को तूं नहिं लहैं ॥ ४ ॥
एक ग्रास भी होइं न मोरा । क्या तू ठांढो मूढ़ बडेरा ।
सुपति शेर क्यों आनि जगावा । मैं सगरो सुर कटक पलावा[6] ॥ ५ ॥
को नहिं अटक्यो मोहि अगारी । मम डर तीन लोक महिं भारी ।
तें कैसे करि जान्यो नांही । आनि पर्यो जम के मुख मांही' ॥ ६ ॥
सुनति न्रिपत नहिं धीरज छोरा । कह्यो बाक 'जे मैं बल थोरा ।
तऊ धरम छत्री को मोरा । करिहौं संघर घोर घनेरा ॥ ७ ॥
दैव अधीन हार अरु जीत' । अस कहि करि धरि क्रोध सु चीत ।
शसत्र प्रहारनि आइसु दीनि । छुटे तीर तीखन तन लीनि ॥ ८ ।
न्रिप के सुतनि अगारी घेरा । महां शसत्र छोरे इक बेरा ।
बान अनेक बडे बरखाए । परघ[7], भमुंडी[8], तोमर छाए[9] ॥ ९ ॥
अनिक प्रहार गदा के कीने । संग खड़ग ते कर खर लीने ।
बादित संख अनेक बजाए । मच्यो कुलाहल रण अधिकाए ॥ १० ॥

---

1. कानों में । 2. झण्डा । 3. पर्वत की चोटी । 4. जगत के लिए कांटा, अर्थात् दैत्य । 5. भयानक । 6. मैंने देवताओं की सारी सेना को खत्म किया है । 7. लोहे की गदा । 8. एक अस्त्र । 9. नेजा ।

कर्यो धुंधु ने क्रोध बडेरे। शसत्र लगे, तन धंसे धनेरे।
को पाइनि ते पकरि बगायो। को गहि कै अविनी पटकायो ॥ ११ ॥
को पाइनि सो दपट[1] गिराए। कितिक धकेलति प्रान नसाए।
केतिक को भक्खन[2] करि लीनसि। किसहू गहि गहि पीसन कीनसि ॥ १२ ॥
केतिक को पकर्यो पग चीर्यो। करदम आमिख[3] रुधिर बिथीर्यो।
गगन गरद सों छाद्यो सारा। पकरि पकरि भट चीरति डारा ॥ १३ ॥
इम परबिरत्यो जंग बिलंदा। 'मार मार' बोलहिं भट ब्रिंदा।
कुंभकरन जिम दूसर भयो। खरो दैत रिस जिसके छयो ॥ १४ ॥
इम प्राक्रम जबि कीनि महाना। राजपुत्र गहि आयुध नाना।
जिम गिर पर के बिहंग सिधारैं। पहुंचहिं निकटि शसत्र गन मारैं ॥ १५ ॥
मच्यो रौर कुछ सुन्यो न काना। छायो गगन महां गन बाना।
दैत सरीर बिखै परवेशे। जथा सरप गिर बरहिं[4] बिशेशे ॥ १६ ॥
चमकहिं चंद्रहास लगि अंगहि। जनु तड़िता[5] पड़ती गिर श्रिंगहि[6]।
परघ[7] शकति[8] तोमर बड भाले। हतहिं बार इक दैत कराले ॥ १७ ॥
धुंधु क्रोध कै अधिक उमाहा। सुभटनि मारति बहु रण मांहा।
थिर न अगारी होवनि देति। जित कित हति हति भट रण खेत ॥ १८ ॥
मारि मारि करि ढेर लगायो। महां त्रास रण महिं उपजायो।
रुधरि लिपति तन निकसहिं धारा। जन गिर गेरु केर प्रनारा[9] ॥ १९ ॥
गरजति गरुओ मेघ समाना। संघारति सुभटनि गहि पाना।
घाइल परे कितिक तरफावें। किते गगन महिं उडे भ्रमावें ॥ २० ॥
पैरनि सों दलमल बहु गेरे। प्राक्रम करति हतहि पिखि नेरे।
हाथनि सों हाथी गहि मारहि। स्यंदन को स्यंदन पर डारहि ॥ २१ ॥
गहै तुरंग उतंग बगावै। नहिं आगे को ठहरनि पावै।
बहुत गए मरि केतिक रहे। महांबीर ने सो भी दहे ॥ २२ ॥
न्रिप को पुत्र इकीस हजार। क्रोध धुंध ने दए संघार।
साठ संहस्र सगर[10] के सुत जिम। कपल महा मुनि दहे हरे तिम ॥ २३ ॥
न्रिप सुत तीन शेश रहि जबै। आप क्रोध को धरि करि तबै।
रण के सनमुख भा सवधाना। गह्यो हाथ महिं चांप महाना ॥ २४ ॥
कंचन कवच सजाइ सरीर। गयो दैत के अग्र सधीर।
कमलापति तिह छिन चलि आए। नहिं आपा किसहूं दरसाए ॥ २५ ॥

---

1. दलकर। 2. खा लिया। 3. मांस। 4. पहाड़ में घुस जाएँ। 5. बिजली। 6. पहाड़ की चोटी पर। 7. गंडासा। 8. बरछी। 9. परनाला। 10. एक राजा का नाम है।

भए प्रवेश भूप के बन मैं। [illegible] मन मैं।
अति प्राक्रम अधिपति[1] के होवा। दैत ओज को ईखद जोवा ॥ २६ ॥
तजे बाण अनगन रिपु हेता। बींध्यो दैत रुधिर बहु गेता[2]।
क्रोध धुंधु ने सैल उखारा। हित संघारनि न्रिप पर डारा ॥ २७ ॥
आवति गिर पिखि ओज संभारा। सर अध चंद्राकार निकारा।
तान धनुख ते समुख प्रहारा। अरध पंथ महिं गिर कटि डारा ॥ २८ ॥
अनिक तरोवर धुंधु बगावै। सभि को काटति न्रिपति गिरावै।
दंद जुद्ध होवनि जबि लागा। तजहिं नहीं दोनहु तबि आगा ॥ २९ ॥
लै इक सिला भूप पर आवा। ढिग हुइ मारनि हित ललचावा।
करि लाघवता[3] न्रिप ने डाटा। चंद्रहास ते तिह कर काटा ॥ ३० ॥
सहत सिला कर धरनी पर्यो। धुंधू अधिक क्रोध मैं भर्यो।
दुतिय हाथ के तल को मारा। हयनि सहत सारथि[4] संघारा ॥ ३१ ॥
पुन तूरन ही सैल बगावा। आवति निकटि न्रिपत द्रिशटावा।
मार कुलांच[5] तजी तब स्यंदन। खर्यो धरातल शत्रु निकंदन ॥ ३२ ॥
पर्यो सैल रथ चूरन कीनसि। धाइ भूप ललकारो दीनसि।
पुनहि खड़ग करि ज़ोर चलावा। दूसर कर को काटि गिरावा ॥ ३३ ॥
ह्वै धुंधू द्वै हाथ बिहीन। श्रवति[6] रुधर दारुणता[7] लीन।
न्रिप पर मुख पसार करि आयो। बज्रपात के सम गरजायो ॥ ३४ ॥
अधिपति धनुश धारिकै तूरन। सरनि साथ मुख कीनसि पूरन।
आयहु जबि हूं निकटि कराला। दिढ़ नरिंद ह्वै करि ततकाला ॥ ३५ ॥
खड़ग संग तिस को सिर छेदा। गिर्यो महीतल महिद सखेदा।
कितिक दबे तिस तनके तरे। लगे धकेला केतिक मरे ॥ ३६ ॥
इस प्रकार जबि धुंधू मारा। निरमल रज ते भा नभ सारा।
इत्यादि उतपात जु अहै। सरब नाश भे जग सुख लहै ॥ ३७ ॥
सुर सभि भूपत के ढिग आए। मधुर गिरा कहि आशिख गाए।
'महां दुशट कंटक तैं मारा। सकल जगत को कीनि सुखारा ॥ ३८ ॥
अबि ते तेरो नाम महाना। धुंधुमार प्रगटहि बलवाना।
अधिक सुजसु लोकनि महिं लए। रण ते बचि सुत त्रै तव रहे ॥ ३९ ॥
तिन ते चलि है बंस अगारी। जिस महिं रामचंद भुज भारी।
कमलापति ह्वैवै अवतारा। प्रविश्यो तव तन महिं जु उदारा ॥ ४० ॥

1. राजा। 2. गिरा (बहुत खून बहा)। 3 फुर्ती। 4. रथवान्। 5. छलांग। 6. बहता है। 7. डरावना।

जिसके प्राक्रम को अबि पाइ। मार्यो दैत हुतो बड काइ।
इम कहि देव सरब ही गवने। भूपति गयो आपने भवने॥ ४१॥

तबि ते 'धुंधुमार' इह नाम। जग महिं बिदत भयो अभिराम।
रामाइन आदिक इतिहास। लिख्यो नाम तिह कविनि प्रकाश"॥ ४२॥

इह सभि कथा गुरु हरिराइ। सभि संगति को दई सुनाइ।
"अपरनि[1] महिं प्रवेश हुइ मारा। भगत उतंकह[2] काज सुधारा॥ ४३॥

इत्यादिक लखि प्रभु वडिआई। जपहु नाम हुइ अंत सहाई।
जनम मरन ते छूटहु फेर। अवचल पदवी लेहु बडेर॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिराइ कथा' प्रसंग बरननं नाम चतुरबिंसती अंशु॥ २४॥

---

1. दूसरों में। 2. एक ऋषि का नाम है।

अंशु २५

कथा सुनावन श्री हरिराइ प्रसंग

दोहरा

अबहि कथा सतिसंग की अरु गुर माननि केर।
सुनहु प्रेम करि उर धरहु लिहु कल्यान वडेर ॥ १ ॥

चौपई

बिस्वामित्र महां मुनि राया। करि तप जिसने ब्रह्म पद पाया।
तिस को सिख गालव रिखि भयो। सभि बिधि को उपदेश सु लयो ॥ २ ॥
गुर संग कह्यो 'दक्षणा लीजै। चहहु जु आग्या मो कहु दीजहिं।
बिस्वामित्र बखान्यो बैन। 'दछना लैन चाहि मुझ है न ॥ ३ ॥
कह्यो दैन को तैं करि भाइ। यांते हम ने लीनसि पाईं।
गालव ने पुन बाक बखाना। 'बिद्या निफलहि बिन दिय दाना ॥ ४ ॥
यांते उचित उचारन अहो। अरपौं दछना ज्यों तुम लहो।
बिना दिए मुहि शांति न आवै। दिहु आइसु जैसे चित भावैं ॥ ५ ॥
बिस्वामित्त हटावनि कीनसि। बार बार बरज्यो हित भीनसि।
गालव नहि मानी सो बात। लिहु लिहु दछना कह बख्यात ॥ ६ ॥
सुनि कौसक ने क्रोध बधावा। तिह अशकति लखि बाक अलावा।
'श्याम करन तन ससी समाना। उज्जल बरन, महिद बलवाना ॥ ७ ॥
रुचिर अशट सत[1] बाजी ऐसे। देहु ल्याइ करि, बोलति जैसे'।
इव सुनि कै गालव दुचिताई। बिन उपाइ ते अधिक उपाई ॥ ८ ॥
बारि बारि सोचति अकुलावा। कित ते ल्यावहुं, गुरु अलावा।
बिन दीने मुझ मरिबो नीका। कैसे पुरौं मनोरथ जी का ॥ ९ ।
किस थल मैं अबि खोजनि जावौं। अस तुरंग की सुध नहि पावौं।
भयो बिहाल बिसाल मुनी जबि। बिनतासुत[2] ने जान रिदे तबि ॥ १० ॥
हुतो मित्र मुनि को तबि आयो। बिहबल को लखि बाक अलायो।
'भो गालव! क्यों ब्याकुल होवा। कौन मनोरथ सिद्ध न जोवा? ॥ ११ ॥

1. आठ सौ 2. गरुड़।

तोहि सखा मैं आवा पास। निज कारज को करहु प्रकाश।
जिती समरथ मोहि मैं होहि। पूरन करवि मनोरथ तोहि॥ १२॥
इह पूरब दिशि महां प्रकाशति। उतम ब्रिंद देवता बासति।
इत ही प्रिथवी को मुख अहै। पूरबोदै रवि पूरब कहैं॥ १३॥
इत दच्छण जम को इसथान। द्वार पतालनि को मग जानि[1]।
अनिक गुननि ते संजुति[2] एह। बहुत भांति की शोभा लेह॥ १४॥
पच्छम दिशा बरुण ते पालति। जहिं रवि असतहि गमहिं उतालति[3].
इत उत्तर दिशि बहु गुनवंती। जित कुबेर की पुरी बसंती॥ १५॥
जित चाहित तित करहु पयाना। पहुंचावौं चाहहु जित जाना'।
सुनि गालव ने कारज कह्यो। 'गुर ने असु समूह को चह्यो॥ १६॥
श्याम करन तन चंद्र प्रभाकर। अस तुरंग कहु हैं किसके घर?
होहि आठ सै गिनती मांहि। कित ते मैं ल्यावौं मग जाहि॥ १७॥
जे गुर दछना दई न जाइ। तौ मैं प्रान धरौं नहिं काइ।
मरन नीक, जीवन धिक मेरा। आन पर्यो अस कशट बडेरा'॥ १८॥
बिनता सुत ने धीरज दीनि। निज पर मुनि उठाइ कर लीनि।
उड करि बिचर्यो बहुत सथान। चहिति मित्र को संकट हानि॥ १९॥
फिरति फिरति जहिं भूप जुजाती[4]। तहां पहूच्यो पतिखग जाती[5]।
मुनि ने जाइ जाचना कीनि। हे महिपाल! बिसाल प्रवीन॥ २०॥
देहु तुरंग आठ सै मोहि। गुर दछना हित जाचौं तोहि।
सुनति जुजाती बाक बखाना। 'मैं बहु करति भयो मख दाना[6]॥ २१॥
सरब पदारथ कीने दान। अबि घर महिं कुछ द्रिशटि परा न।
जो तुझ को मैं देवनि करौं। पुरव मनोरथ चिंता हरौं॥ २२॥
अबि इक कंन्या है घर मेरे। लेहु, मनोरथ पुरवै तेरे।
जिस महिपालक को इह देहु। पलटे अस्व आठ सै लेहु॥ २३॥
बहु गुनवंति सरूप महाना। जग मैं जिस के नहिं न समाना।
सुनति जुजाती ते इह बात। लई, तपोधन[7] ने हरखाति॥ २४॥
गरुड़ आपने सदन सिधारा। मुनि कंन्या लै आन पधारा।
गयो 'अयुद्धया' नगर मझारी। पुन भूपति के पहुंच्यो द्वारी॥ २५॥
महिपालक कौ जाइ बखाना। 'भो नरिंद्र! मुझ ते सुनि काना।
इह कंन्या दारा हित लेवहु। श्याम करन असु अठ सै देवहु॥ २६॥

1. पाताल के द्वार को जाने वाला रास्ता। 2. ओत प्रोत। 3. जहां पर सूरज डूबकर जल्दी से चला जाता है। 4. राजा का नाम। 5. गरुड़। 6. यज्ञ। 7. तपस्वी।

बर सुमद्धयम[1] सुंदर रूपा। पुत्र उपावै बली अनूपा।
तोहि जोग लोचन बिसथारा। अंग मनोहर तन सुकुमारा ॥ २७ ॥
तबि नरिंद्रा बाक बखाना। 'सुनहु तपोधन तेज निधाना।
द्वै शति तुरंग निकटि मुझ तैसे। 'तुम को अति बांछत है जैसे ॥ २८ ॥
अपर नहीं मेरे ढिग कोई। आप बिलोकि लेहु थल जोई।
'भो महिपाल ! लेहु इह कंन्या। जांहि समान आन नहिं धंन्या ॥ २९ ॥
इस महिं एक पुत्र उपजाइ। हुइ महातमा गुन समुदाइ।
दो शत तुरंग सु कंन्या एहु। मो कहु फेरि आप तबि देहु' ॥ ३० ॥
इम संकेत करि कंन्या दै कै। मुनि गमन्यो बन तप हित कै कै।
न्रिपति भारजा करि घर राखी। मैथुन कीनि पुत्र अभिलाखी ॥ ३१ ॥
केतिक समा बिते इस भांती। गरभ धर्यो कंन्या बख्याती।
बहुरो पुत्र प्रसूता भई। बहु सुंदरता तन निरमई ॥ ३२ ॥
समो जान कै गालव आवा। 'दिहु कंन्या' न्रिप साथ अलावा।
दिपति तेज मुनिवर को जाना। 'लिहु अस्व कंन्या' भूप बखाना ॥ ३३ ॥
मुनी भन्यो 'यह तुरंग हमारे। सो मम धोहर[2] रहे तुमारे।
जबि सभि काज सिद्ध ह्वै जाइ। तोहि सदन ते लै हौं आइ' ॥ ३४ ॥
इम कहि कंन्यां को ले साथ। गमन्यो मुनि तक 'काशी' नाथ।
सने सने पहुंच्यो पुरि जाई। मिलि नरिंद्र सो गिरा अलाई ॥ ३५ ॥
'भो प्रभु दिवोदास[3] सुन बाती। इहु कंन्या बड गुन बख्याती।
हेतु भारजा इस को लेहु। खट शत तुरंग मोहि को देहु' ॥ ३६ ॥
दिवोदास ने सुनति बखाना। 'द्वैशत हय श्यामल द्वै काना[4]।
उज्जल रंग चंद्रमां जैसे। हे मुनिवर ! मुझ ते लिहु ऐसे' ॥ ३७ ॥
भन्यो तपोवन 'जे इम लेहु। इक सुत जनहि पुनहि मुझ देहु'।
इम संकेत करि मुनि बर गयो। तब बिसाल को साधति भयो ॥ ३८ ॥
दिवोदास दारा करि ताहि। मैथुन कीनसि आनंद मांहि।
जबि संमतसर[5] एक बितीता। भयो पुत्र बड बली अभीता ॥ ३९ ॥
नाम पुत्र दन जग बख्याती। बड उतसाही हते अराती[6]।
एक समैं इह गा सुरलोक। जुध सुरन सों कीन अरोक ॥ ४० ॥
इंद्र समेत अमर समुदाए। एक बान सों जिन मुरछाए।
इम श्रुति महिं इसको इतिहासा। दिवोदास अस पुत्र प्रकाशा ॥ ४१ ॥

---

1. बहु सुन्दर रूप वाली है। 2. अमानत। 3. राजा का नाम है। 4. दो सौ घोड़े काले कानों वाले। 5. वर्ष। 6. शत्रु।

लखि संकेत पुनहि मुनि आवा। 'दिहु कंन्या' न्रिप साथ अलावा।
द्वै शत हय तिस त्रियहि समेत। अरपे भूपति ने सच हेतु ॥ ४२ ॥
मुनि ने भन्यो 'तुरंग घर राखो। मैं लैहौं जबि ह्वै अभिलाखो'।
इम कह कंन्या लै कै संग। गालव गमन्यो तपी उतंग ॥ ४३ ॥
गयो 'उसीनर, भूपति पास। कंन्या की बिधि कीनि प्रगास।
न्रिप ने भन्यो 'दोइ शत हय हैं। इक सुत को उपाइ पुन दिय हैं ॥ ४४ ॥
पूरब सम संकेत मुनि करि। गमन्यो पुन बन को तप हित धरि।
गालव के गमने, नरनाथ। मिलति भयो तिस कंन्या साथ ॥ ४५ ॥
संमत एक बितीत्यो जबै। धरमातम सुत उपज्यो तबै।
नाम 'शिवी' जिसको जग भयो। हेतु कपोत[1] देह निज दयो ॥ ४६ ॥
पुन मुनिबर तिस ढिग चलि आयो। निज संकेत को बाक अलायो।
सुनि न्रिप नै निज धरम बिचारा। सहित तुरंगम दीनसि दारा ॥ ४७ ॥
तिह छिन बिनता सुत को देखा। गालव सों कहि बात अशेखा[2]।
'इह सभि खट सै हुते तुरंग। अपर न छित महिं इन सम अंग ॥ ४८ ॥
सभि हय लेहु खशट शत चारु। इह कंन्यां ले संग सिधारि।
द्वै शत असु हित गुर को देहु। पूर मनोरथ निज करि लेहु'' ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'कथा सुनावन श्री हरिराइ' प्रसंग बरननं नाम पंचबिसती अंशु ॥ २५ ॥

1. कबूतर। 2. अधिक।

अंशु २६

श्री हरिराइ कथा सुनावन प्रसंग

दोहरा

बिनतासुत मुनि के प्रती बोल्यो बहुर सु गाथ ।
'जिम खट शत इह तुरंग थे उचरौं सो तुझ साथ ।। १ ।।

चौपई

गांधी नाम भूप बलि महां । बिस्वामित्र पुत्र जिस अहा ।
तिसकी सुता महां गुनवंती । सुंदर रूप सुमति जसवंती ।। २ ।।
भ्रिगु सुत मुनि रिचीक[1] तहिं गयो । गांधी साथ कहति इम भयो ।
भो महिपाल ! बाक सुनि लेहु । अपनी कंन्यां मुझ को देहु ।। ३ ।।
हेतु भारजा जाचनि करी । सुत उपजावौं मनसा धरी ।
तजहु सिआनप करहु न कोई । मम प्रारथना पूरहु सोई ।। ४ ।।
धरमातम गांधी नर नाथ । सुनति कीनि मन चिंता साथ ।
मम पुत्री कंन्या बस थोरी । ब्रिद्ध मुनीशर किम इह जोरि ।। ५ ।।
नहिं जि देउं मुनि रिस ते डरौं । जे देवौं अस चिंता जरौं ।
कौन उपाइ बिचारनि करौं । जिस ते इह संकट बड तरौं ।। ६ ।।
उर बिचारि कै न्रिपत बखाना । 'भो तपुधन ! सुनियै दे काना ।
श्याम करन उज्जल तन रंग । ल्याव अशट शत एव तुरंग ।। ७ ।।
पुन इह कंन्या ग्रहण करीजै । प्रथमे असु ऐसे मुझ दीजैं ।
मुनि रिचीक सुनिकै न्रिप बैन । गमन्यो तुरत वरुण के ऐन[2] ।। ८ ।।
अपनि मनोरथ तहिं प्रगटावा । स्वेत अस्व लैबे हित आवा ।
बिना लिए मम सरै न काजा । दिए बिना न बनहिं, जलराजा ।। ९ ।।
अगनि समान तपोधन हेरा । दिनकर न्याइं तेज बडेरा ।
अशट सहस असु बरन बिचार । करि दीने मुनि के संगार ।। १० ।।
ले तुरंग न्रिप के ढिग[3] आयो । दिहु कंन्यां अस बाक सुनायो ।
पुन गांधी पुत्री निज दीनी । हय लेकर बहु बिनती कीनी ।। ११ ।।

1. एक व्यक्ति का नाम है । 2. वरुण के घर । 3. पास ।

सो इह तुरंग धरा बिसतीरे। लीने भूपति मोल गंभीरे।
द्वैशत मरे, नहीं कर आए। खशट सहस तैं लीनसि पाए॥ १२॥
द्वैशत जो आए नहिं पान। दिहुं कंन्यां तिन पलटे थान।
अपर सोच सभि त्यागन करीए। ले असु कंन्यां संग सिधरीए॥ १३॥
बिनतासुत ते सुनि मुनि कान। बिस्वामित्र हुतो जिस थान।
पहुंच्यो जाइ बंदना कीनसि। गुरदछना अस्व कंन्या दीनसि॥ १४॥
खशट सहस कौसक हय लीनि। कंन्या लई भारजा कीनि।
तिसनै एक पुत्र उपजावा। नाम 'अरिशट' जांहि को गावा॥ १५॥
तिस कंन्या ते भे सुत चार। महांबली अरु महां उदार।
चारहुं नईमखार[1] महिं आए। अनिक भांति के जग्य रचाए॥ १६॥
तिन जननी को पिता जजाती। बड धरमातमा भा बख्याती।
निज सुक्रित के बल करि महां। पहुंच्यो सुरग ब्रिंद सुर जहां॥ १७॥
उपज्यो रिदे हंकार महाना। कितहूं मोहि समान न आना।
बड सदच्छना मख[2] गन करे। एव न किस भूपति ते सरे॥ १८॥
इस प्रकार हंकार उदारा। करति भयो सुरलोक मझारा।
तहिं बासी सगरे अनुखाए। अधिक धिकारति क्रोध बधाए॥ १९॥
'होहु पतित तूं अधो[3] सथाना। इहां रहनि के उचित न जाना।
पुरश हंकारी सुरग न रहैं। काम क्रोध के नित बसि अहैं॥ २०॥
इतने महिं आयो इक दूत। पठ्यो उताइल करि पुरहूत[4]।
भन्यो आन 'भो भूप जजाती। सुरपति कही गिरा सुख काती[5]॥ २१॥
गिरहु उताइल करहु न देरीं। सुनि महिपालक चिंत बडेरी।
शुशक गई ह्वै फूलनि माला। बदन गयो मुरझाइ बिसाला॥ २२॥
डूब्यो शोक सिंधु महिं भारी। दीन मने हुइ गिरा उचारी।
'निशचै करौ जि मेरो परना। इम कीजै जिम करवि उचरना॥ २३॥
पुरश बडे पुंन्यातम जहां। सतिसंगी साधु मन महां।
अनसूयक[6] मद मान बिहीन। सम दम जुति सतिसंधि प्रबीन॥ २४॥
तिन मझार मुझ गेरनि करीअहि। मो पर इह उपकार सु धरीअहि'।
सुनि कै गेर दीनि तिस तहां। नईमखारं महिं दोहित[7] जहां॥ २५॥
चारहुं बिखै गिरनि लगि जबै। जननी पिता बिलोक्यो तबै।
महां दुखिति रख्यक जिस नांही। करति पुकार शोक बड मांही॥ २६॥

---

1. एक तीर्थ का नाम। 2. यज्ञ। 3. निम्न। 4. इन्द्र। 5. सुख को काटने वाली। 6. ईर्ष्या रहित। 7. दोहित्र।

चतुर दोहिते तिह छिन मिले। चित मैं चाहित हैं सो भले।
निज सुक्रित के बल करि सारे। कह्यो 'जाहु सुरलोक मझारें ॥ २७ ॥
चतुर दोहिते को ले पुन। भयो जजाती भूपति धंन।
सादर पुन पहुंच्यो सुरलोक। बास कर्यो सुख भोगि अशोक ॥ २८ ॥
इम गुर दछना गालव दीनि। गुर उपासि प्रसंन सु कीनि।
दुरलभ हय ज्यों क्यों ले आयो। अपनो आप महद सफलायो ॥ २९ ॥
इम सतिगुर की महिमा महां। जानहिं सिक्ख भेव जिन लहा।
सदा गुरनि को करहिं प्रसंन। करूना पाइ कहै 'गुर धंन' ॥ ३० ॥
गुर सम अपर हितू नहिं कोई। कोट जनम के दुख हति जोई।
सति संतोख आदि गुन धरि कै। गुर सेवहि हंकार निवरिकै ॥ ३१ ॥
गुर सेवै नर तन सफलावै। गुर सेवा पद ऊचो पावै।
गुरू बडो सभि बिद्या दाता। चार जुगनि महिं जिन किन जाता ॥ ३२ ॥
सभि गुर महि जो दे ब्रह्म ग्याता। सो बिसाल जानहु सुखदाता।
जिन सेवा करि गुरु रिझाए। सगले तप जप को फल पाए ॥ ३३ ॥
बरख हज़ारनि संकट नाना। सीत उशन[1] तप तपनि महाना।
ऊरध बाहू इक पग ठांढे। चंद्राइण नख शिख जे बाढे ॥ ३४ ॥
अपर कहां लगि तप को गिनीअहि। हेमदान मख करिबौ जनीअहि।
धरा दान तीरथ को नैहबो[2]। गज बाजी गन दान करैबो ॥ ३५ ॥
गुर सेवा के सम कुछ नाहीं। खोजनि करहु सकल छित मांही।
हंकारादिक करनि बिकार। दियो जुजाति स्वरग ते टारि ॥ ३६ ॥
सुख नाशक इन गन को जानहु। यांते भूल न मन महिं ठानहु।
करहु भगति सतिनाम जपीजै। गुर सेवा के ततपर थीजहि। ३७ ॥
प्रभु प्रसंन हुइ बनहि सहाइ। जनम मरन के कशट मिटाइ।
रिखि उतंक को काज सुधार्यो। कह्यो सुन्यो बड दैंत संघार्यो ॥ ३८ ॥
सभि जग को सुख तबि उपजायो। दैंत करति उतपात मिटायो।"
इत्यादिक गुर भने प्रसंग। महिमा हेतु महां सतिसंग ॥ ३९ ॥

इति श्री प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री हरिराइ कथा सुनावन' प्रसंग बननन नाम खशटबिसती अंश ॥ २६ ॥

---

1. गर्मी तथा सर्दी में। 2. नहाना।

अंशु २७

श्री हरिराइ बैकुंठ गमन प्रसंग

दोहरा

त्रिध के बंस सपुत्र जो झंडा नाम सग्यान।
निज सुत गुरदित्ता लिए सुनत कथा सुख मानि ।। १ ।।

चौपई

सकल देश के घनी मसंद। सभि इकठे बिच सभा बिलंद।
लिखे हुकम नावें जहिं कहां। सुनि सुनि आनि पहूचे तहां ।। २ ।।
ब्रिंद संगतां आनी संग। दरशन हित चित धरें उमंग।
सुनहिं गुरु के वाक सुहाए। धरहिं रिदे महिं, सुख उपजाए ।। ३ ।।
जिन के हैं पूरब बडभाग। सो रंगे गुर के अनुराग।
कीरतपुर महिं भीर बिसाला। दीरघ देग बनहि जुग काला ।। ४ ।।
अनिक प्रकार अहार बनंते। सकल अचहिं[1] मिल मन भावंते।
केतिक द्योस बास तहिं कीनि। गुर के प्रेम बिखै हुइ लीन ।। ५ ।।
अपर जहां कहिं सिख मसंद। सुनहि मेल चल आइं अनंद।
डेरे परे पुरहिं चौफेर। दरशन दिन महिं दें इक बेर ।। ६ ।।
जिसते हुइ सिख्यनि कल्यान। उपदेशहि गुर करति बखान।
जहिं कहिं होइ रह्यो जैकार। 'वाहु वाहु गुर' करहिं उचार ।। ७ ।।
करहिं बिचारनि-क्या गुर मरज़ी। किय संगति इकठी हुइ ग़रज़ी।
कहां करहिंगे, कहां सुनावैं। इम सभि मिल करि बाक अलावैं ।। ८ ।।

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ जी तखत देनि चितवंत।
बडो पुत्र त्यागनि कर्यो, लाइक नहीं लखंत ।। ९ ।।

---

1. खाते हैं।

चौपई

देह अंत को समां पहूचा। दियो चहति हैं निज पद ऊचा।
छमी, सधीर, अभीर, गहीर। सति संतोखी शांति सरीर ॥ १० ॥
अजर जरहि चाहहिं दिखरावैं। सदा अडोल अतोल अलावैं।
लघु सुत श्री हरिक्रिशन बिचारा। सरब सहारहि गुरता भारा ॥ ११ ॥
अविचल छमा मनहुं मन छौनी[1]। म्रिदुल रिदा बरबानी नोनी[2]।
कमल समान प्रफुल्लिति आनन। शुभ गुन पूरन जिन सम आन न ॥ १२ ॥
सिमरहिं नाम कि सुन हैं कानिन। दुख म्रिगनि को सिंघ जिम कानन[3]।
तखत बिठावनि करि अभिलाखा। बाक समीपी सिख सों भाखा ॥ १३ ॥
'बेदी तेहन भल्यनि[4] बंस। सकल हकारहु शुभ जन हंस।
कुल भाई बुड्ढे बुलवावहु। जे कीरतपुरि सभिनि सुनावहु ॥ १४ ॥
सिख संगति जे बड़े मसंद। दरसहिं सगरे अलप बिलंद।
सभि डेरन महिं सुध पहुचावहु। दरशन करनि गुरनि के आवहु' ॥ १५ ॥
इम आर्शै लखि सतिगुर केरा। शुभ नर सभि डेरन महिं फेरा।
बहु देशनि की संगति आई। सुनि सुनि दरस हेतु ललचाई ॥ १६ ॥
सुभट चमूं के आयुध धरि धरि। बागे[5] सूखम सुंदर करि करि।
देश बिदेशनि ब्रिंद मसंद। ले करि संगति संग बिलंद ॥ १७ ॥
अनिक उपाइन करि करि त्यारे। सभिनि आन सतिगुर परवारे।
दरशन करहिं नमों करि पाइनि। अरपहिं अनिक प्रकार उपाइन ॥ १८ ॥
खड़े मेवड़े करि अरदास। संगति बैठह सतिगुर पास।
मेल बिलंद मिल्यो जबि आइ। बैठे सुभट हुते समुदाइ ॥ १९ ॥
श्री फल तबि सतिगुरु मंगावा। लघ सुत सभि के बीच बिठावा।
चोरदार को किय फुरमावनि। इन पर कीजहि चमर झुलावनि ॥ २० ॥
सभिनि देखिते सतिगुर उठे। देनि हेतु गुरता उर तुट्ठे।
तीन प्रक्रमा करि तिह समें। नालियेर अरप्यो तबि नमें ॥ २१ ॥
पुन सभिहिनि कहु आइसु दई। 'जग गुरता अब इनहूं लई।
सरब उपाइन उठि अरपीजहि। हम सम जानि बंदना कीजहि ॥ २२ ॥
मालिक लोक प्रलोकहिं केरा। फल प्रापति जिह भाउ घनेरा।
सकल भांति करिबे समरत्थ। भंजन घड़न इनहुं के हत्थ' ॥ २३ ॥
इम सुनि उठे मसंद अनेक। करि करि बंदन जलधि बिबेक।
अरपनि लगे उपाइन सारे। जै जै कार सु बाक उचारे ॥ २४ ॥

1. शुद्ध। 2. सुन्दर। 3. जंगल। 4. जातियों के नाम (गुरुओं की)। 5. कपड़े।

होति भयो उतसाह बिसाला। नमो सकल कीनसि तिह काला।
चमरचारु ढोरति चहूं ओर। अनिक भए संखन के शोर॥ २५॥
दर पर बाजि उठे शदियाने। मंगत जन धन पाइ महाने।
गावहिं शबद रबाबी घने। सुनहि जु हित करि कलमल[1] हने॥ २६॥
मंगल वसतु अनेक प्रकारा। कीरतिपुरि महिं करत उदारा।
अधिक तिहावल[2] आइ हजूर। बांटति सभिनि निकट अरु दूर॥ २७॥
तखत गुरु हरिक्रिशन बिठाए। सुनि सुनि कीने अधिक बधाए।
झिलमिल झमकति झूलति झंडा। भई बंदूकनि शलख प्रचंडा॥ २८॥
धुजनी महिं धौंसे धुंकारे। बाज उठे जैकार उचारे।
इम लघु सुत को गुरता दै कै। प्रगट कर्यो उतसाह बधै कै॥ २९॥
त्यागनि कीनसि बडो जु तात। सभि संगति महिं भा बख्यात।
दिवस आगले सतिगुर धीर। तजिवे को भए त्यार सरीर॥ ३०॥
सुंदर मंदर अंदर बाहर। लिपवाइव तूरन करि आहर[3]।
सकल सुगंधें सीचनि करीं। गावहिं शबद अधिक धुनि भरी॥ ३१॥
सिख संगति सभि पहुंची पास। करति अनेक खरै अरदास।
श्री ग्रंथ साहिब के पाठ। होति बेद धुनि के बहु ठाठ॥ ३२॥
जहिं कहिं सतिगुर के गुन कहैं। जगत उधारनि के हित अहै।
निज इच्छा ते तन धरि अपने। करहिं कदाचित दरस सु सुपने॥ ३३॥
कलमल कशटनि ते हुइ मोचन। जे शरधा धरि पिखहिं बिलोचन।
तिन की महिंमा बरनै कौन। जाइ समावहि आनंद भौन॥ ३४॥
जिम घन अपनो तन बिदतावै। जल बरसाइ सियर[4] बरतावै।
सभि जग पर उपकार करंता। पोखति है बहु तपत मिटंता॥ ३५॥
तिम सतिगुर जग व्याकुल देखि। बिश्य तपत ते तपहि विशेख।
पचहिं पाप महिं पुन पुन लागे। परहिं नरक महिं महिद अभागे॥ ३६॥
तिन पर दया करनि के कारन। सतिगुर करहिं सरीरनि धारनि।
लाखहुं सिख्यनि कहु सुख दीने। हलके पलत द्वै ऊजल कीने॥ ३७॥
इनके सम दाता कित हेरे। देवन आदिक ब्रिंद घनेरे।
अलप सुखनि के हैं सभि दानी। दुख मिस्रत नस्वर[5] पहचानी॥ ३८॥
हरख न शोक न राग न द्वैशे। सदा अलेप कमल जल जैसे।
हंता, ममता लेश न मोहू। मान न, लोभ न, काम न क्रोहू॥ ३९॥

1. पाप। 2. कड़ाह प्रसाद। 3. प्रयत्न। 4. ठंडक। 5. नाशवान्।

रिदा एक रस परम पुनीत। सति चेतन आनंद सु चीत।
दरशन दुरलभ लेहु दरस करि। कर जोरहु बंदहु पद सिर धरि'॥ ४०॥
इत्यादिक उचरति गुर गुन को। कहति सुनति शबदनि की धुनि को।
श्री सतिगुर पूरन हरिराइ। इम दरशन दे गए समाइ॥ ४१॥
कुश बिसतर[1] बिसतारनि कीनसि। आसतरन डसवाइ सु दीनसि।
तिस पर पौढे सहज सुभाइ। बदन जोति दूनी दिपताइ॥ ४२॥
भरे आनंद बिलंद बिलोचन। सिक्ख पिखहिं करि सोच बिमोचनि।
महलां[2] सभिनि कर्यो दरसंन। बंदहिं चरन गई बच मंनि॥ ४३॥
सुंदर बसत्र देह पर ताना। ब्रिति संकोचि कीनि इक थाना।
अनंद आतमा माहि समाए। जिम जल महिं दीजै जल पाए॥ ४४॥
श्री हरिक्रिशन साथ मिल गए। पूरब को सरीर तजि दए।
तिस छिन 'धंन धंन गुर' होवा। 'लियो लाभ दरशन जिन जोवा'॥ ४५॥
सकल जथावत बिधि करिवाई। आदि शनान करनि समुदाई।
सिक्खनि बहुत उठाइ बिमान। मिले संबूह शबद करि गान॥ ४६॥
जाइ चिता पर, पुन पौढाए। जबि चंदन ते सभि दिश छाए।
अंतरध्यान देह हुइ गई। पीछे पावक[3] प्रज्वलतई[4]॥ ४७॥
काशट जरे भसम तिस थावा। बीनति फूल नहीं कुछ पावा।
'श्री हरिराइ देति सुखदासा। कहां आप करि गए तमासा'॥ ४८॥
सिख्य सुभट संगति बैरागे। सिमरि सिमरि गुर गुन अनुरागे[5]।
पुनहि परसपर धीरज धरिकैं। श्री हरिक्रिशन सरूप निहरिकै॥ ४९॥
होति प्रसंन रहति भे पास। तिसी रीति होवति अरदास।
बैठ सुहावति भे गुर गादी। नाना भांति प्रबिरतहि शादी[6]॥ ५०॥
श्री हरिक्रिशन जगत गुर भए। देश बिदेशनि महिं बिदतए।
सरबोतम के तखत बिराजे। जिन दरशन ते संकट भाजे॥ ५१॥
अपर जि सोढी संगति सिर[7] जे। करति प्रभाव सु निज निज दरजे।
जथा सुहावति हैं उड ब्रिंद। श्री हरिक्रिशन सपूरन चंद॥ ५२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री हरिराइ बैकुंठ गमन' प्रसंग बरनन नाम सपत बिसती अंशु॥ २७॥

---

1. घास का बिछौना। 2. पत्नी। 3. अग्नि। 4. जली। 5. प्रेमी। 6. कई प्रकार से प्रसन्नता करते हैं। 7. मुखिया।

अंशु २८

श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

अशटम तन धरि श्री गुरु तखत बिराजे दीह।
मूरति अलप शरीर है, रिदा गूढ, बच लीह[1] ॥ १ ॥

सवैया

सुंदर सूरत माधुरी मूरती, पूरति कामना सिक्ख्यन की।
शांति सरूप धरे प्रभु पूरब, आठम देह सु नौतन की।
ज्यों महिपालक पोशिश का तजि, पैं[2] पहरैं हित भांतन की।
श्री हरिक्रिशन तथा दुति पावति संगति प्रीत करे मन की ॥ २ ॥
गुर नानक आदि ते ज्यों निशचा मन, त्यों ब्रह्म ग्यान महारस होवा।
सिख संगत के अघ नाशनि को दरसंन दिखाइ, भले दुख खोवा।
पर पौत्र गुरु हरि गोविंद को, गुरता कहु भार सहारि खरोवा।
गन मेल मसंद बिलंद मिले जिम श्री हरिराइ, सभै तिम जोवा ॥ ३ ॥
निज पास करैं अरदास निसी बिधि, पाइनि पंकज सीस निवावैं।
गन आनि उपाइन को अरपैं, मन कामना आप अनेक उठावैं।
समुदाइ सदा मन बांछति पावति ज्यों धरि भावना को ढिग आवैं।
निज सिक्ख्यन की बहु श्रेय करैं उपदेशति ग्यान को भेव जनावैं ॥ ४ ॥

कबित्त

दुख हरि लेति, सिख बांछति को देति गुर, सत्यनाम हेतु लाइ चेतना चितावईं।
मन के बिकार नाश करैं एक वार गन धीरज धरम, दया गुन को बधावईं।
समता, संतोख सों संतोख सिंह रिदे बास सिखी को प्रकाश नीके सुगम बतावईं।
जानि सिख आपनो, हरति तीन तापनो[3], बिना ही तप तापनो सु फल महां पावईं ॥ ५ ॥

---

1. अमृत। 2. फिर। 3. तीन ताप, आधि, व्याधि और उपाधि।

आइ देश देश ते बिशेश भेट देय, निज दरस अशेश ले, कलेशनि बिनासते।
पसर्यो सुजस जहां कहां सभि लोक क ँ, बालक सरूप तेज अधिक प्रकाशते।
धरा सिंधु मेखला सकल थान मानैं मन, आनति मनौत को मनोरथ के वासते।
भीर आस पास ते न त्यागैं सुख आस ते, शबद के बिलास ते भगत मैं हुलासते॥ ६॥
गुरु हरिक्रिशन बिदत भए पुरि पुरि संगत अनेक इक आवहि इक जात हैं।
कीरति करति, दुख हरति दरस करि, परम प्रसंनता को उर उपजाति है।
ज़ेवर जराव जर्यो जाहर जगत जोति ज़ेब दे अजाइब जबर जानैं जाति हैं।
ग्यान अवदात[1] है, अनंद उमगात हैं, बिलंद सभि भांति है, मनावै सभि जाति हैं॥ ७॥

दोहरा

कितिक काल बीतति भयो गुरता लघु सुत दीनि।
रामराइ बड पुत्र सुनि पछतावति मन दीन॥ ८॥

सवैया

'देखो कहां इह बात भई, पहले मुझ को बहु दे बडिआई।
माथ पै हाथ धर्यो हित साथ कर्यो समरथ, लख्यो समुदाई।
कीनि क्रिपा शकती बड दीनि, जथा कह बाक तथा ह्वइ जाई।
आप प्रसंन ह्वै मोहि पठ्यो इत संगति सिखनि संग रलाई॥ ९॥
मैं पुरि आइकै शाहु के साथ मिल्यो सभि रीति के काज सवारे।
राख्यो भलो रस रंग इहां, धन लीनो समूह सदा सुख भारे।
आपनो दीह प्रताप दिखाइ कै, सिक्खी की रीत महां बिसतारे।
सेवक सिख्य हज़ारों करे गुर कीरति को बिथराइ अपारे॥ १०॥
बहिलो कुल कौ गुरदास हुतो करि जोरि कै बाक कह्यो समुझाई।
'पछुतावति क्यों तुम जेशट नंदन! आप गुरु ने दई बडिआई।
जग मैं समुदाइ भए सिख सेवक आवति भेट ते तोट न काई।
इस ते बहु क्या चित मैं अबि चाहत मानैं मनौत को सीस निवाई॥ ११॥
जो सगरे जग को अबि मालिक नौरंग शाह प्रतापि बिसाला।
तां संग रावर को बहु मेल सभा महिं जाति, लगै जिस काला।
सादर देति बडाइ बडी नित बूझनि बोलनि होति रसाला।
श्री हरि गोबिंद केर मनिंद बिठावति ऊच जहां नर जाला[2]॥ १२॥
देति अजाइब ही फुरमाइश जो दुशप्रापत हाथ न आवै।
सो अरपै तुम को धरि भाउ रहो बिच[3] डेरे ही आप पठावै।
कौन करै गिनती धन की जबि के पुरि आइ हो रोज चढावै।
आज कमी तुम को कुछ नांहिन शाहु सदा उर को हरखावै॥ १३॥

1. शुद्ध। 2. अधिक लोग। 3. डेरा में।

जे सिख संगति हैं जग मैं बिदत्यो सभि मैं गुरता पद पाए।
होवति आप ही गादी दई जबि दे शकती ढिग शाहु पठाए।
देखहु क्यों न बिचारि भले तुम आइसु पाइ जबै इत आए।
क्या तबि थे अबि कैसे भए, सभि रीति के दीह समाज बधाए ॥ १४ ॥
श्री हरिराइ को पुत्र बिसाल सुने बच धीरज के जु कहे।
होति प्रसंन भयो न तऊ मुरझाइ रह्यो चित चिंत लहे।
'भो गुरदास ! उचारति जोग तथापि सुनो उर मोर दहे।
आप गुरु पित ने इत ओर पठावनि कीनि अवश्य चहे ॥ १५ ॥
जे इत ओर न आवति मैं तबि शाहु रिसै रिपु दीह समाना।
ब्रिंद अनीक पठावति फेर बडो जिह ओज रिदे गरबाना।
पीर फकीरनि सों बिगरै इह ठानति द्वैशनि बादी महाना।
त्रास करै नहि तां गहि लेति, बडो पुन ताड़त ज्यों अनजाना ॥ १६ ॥
जे पुरि कीरति जाति चमूं तबि क्या करते नहिं होति उपाई।
श्री गुर ने प्रण धार्यो हुतो सु मलेछ कै पास न जाहिं कदाई।
ना दरसैं तिस आनन[1] को अपनो दरसंन नहीं दरसाई।
बैठनि बोलनि क्यों बनि है जबि यौं अभिलाख रिदै मैं उठाई ॥ १७ ॥
कोस हज़ार द्वै ऊपर सो पुन राज करै इह शाह चुगत्ता।
बाईस लाख चमू संग है बलवान बडो सो हंकार मैं मत्ता।
पंच दुगून हज़ार हैं तोप सकोप चढै करि लोचन रत्ता[2]।
तैसे पचास हज़ार जमूरे हैं छूटे ते छोनी महां धमकत्ता ॥ १८ ॥
कौन अरै इह संग लरै सभि देश डरै भर देति है हाला[3]।
भूपति जे रजपूत हुते करि त्रास गए दबि, देख कराल।।
दोही फिरै इसकी सभि देशनि, दोश बिलोकति देति निकाला।
बाद करै हठ धारि बडो गुर पीर ते त्रासति ना किस काला ॥ १९ ॥
शाहजहां जबि शाह हुतो तिह संग बिरोध भयो गुर को।
जंग भयो, बल धारि बडो हथिआर प्रहार करें अरि को।
आनि लर्यो दल तीर सुधासर[4], पाइ फते सु दयो डरको।
जंगल बीच प्रवेश भए पुन द्वै हय ले किय संघर को ॥ २० ॥
श्री करतारपुरे रण कीनसि पैंदे के संग अनेक संघारे।
शाहजहां करि टाल रहा, हठ नांहि कर्यो हटि गा जिम हारे।
श्री हरिगोविंद जोधे महां जिन को बड डील बडो बलधारे।
सैन बडी, उतसाह बडो, निज बैर पुजाइ महां रिपु मारे ॥ २१ ॥

---

1. मुँह। 2. लाल। 3. भूमि का लगान। 4. अमृतसर।

शाहजहां ते बडो इह शाह बिलंद बली धुजनी[1] सु बनाई।
पीर फकीरनि ते न डरै, करि बाद गहै तिस दे मरिवाई।
धारि रिदे जिद नाहक दरप[2] ते गैल परै न टरै हठ पाई।
यां ते पुगै नहिं बैर इसी संग, मैं नहिं आइ जि, क्यों बनिआई ॥ २२ ॥
और अनेक हुते बिघना सभि दूर करे ढिग शाह मैं आयो।
बास कर्यो सुख सों पुरि कीरत, सेवक के सम शाहु बनायो।
ब्रिंद लीओ धन आप पुजाइ कै श्री गुर को बहु भाउ बधायो।
लायकी यौं सभि रीति करी पित श्री गुर क्रोध ह्वै मोहि हटायो ॥ २३ ॥
लघु नंदन मैं गुन कौन लखे सभि संगति मैं जिस दे बडिआई।
हुइ आप खरे गुरता अरपी पुन सेवक ब्रिंदनि पाइं लगाई।
सभि पुंज मसंदनि को कह कै अरपाइ उपाइन को समुदाई।
रिपु के सम जानि नहीं सिमर्यो मुझ, ऐस बिचारति मैं दुख पाई ॥ २४ ॥
मैं अबि कान सुनी बहु पास ते संगति ब्रिंद ही आवति है।
काबल औ कशमीर ते आदिक देश बिसाल सुहावति हैं।
आगे मसंद ह्वै ल्यावति सिख्यन भेट समूह चढावति हैं।
भीर रहै पुरि कीरति मैं नित कीरति उज्जल गावति हैं ॥ २५ ॥
मोते[3] बिसाल प्रताप भयो तिस, यौं सुनि मोहि न चैन परै।
रैन दिना चित चिंत बधै, अस होइ न, मो सभि त्याग करैं।
लोकनि केर सुभाव अहै, अविलोकति आप मैं रीस धरैं।
पूजन तांहि नहीं लग जाहिं, जु हैं मम सेवक सो न टरैं ॥ २६ ॥

दोहरा

रामराइ उर ईरखा लघु भ्राता संग धारि।
चितवति अनिक उपाइ को नित चित चिंत मझार ॥ २७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री रामराइ' प्रसंग बरननं नाम अशट बिसती अंशु ॥ २८ ॥

1. सैना। 2. अहं। 3. मेरी अपेक्षा।

अंशु २६

रामराइ प्रसंग

दोहरा

श्री हरिराइ तनूज[1] ते सुनि भाई गुरदास।
अपर मसंद जि मुखि हुते करति भए अरदास॥ १ ॥

सवैया छंद

'क्यों तुम हौल[2] करति हहु उर महिं, चित अति चिंता महिं पछुताइ।
सावधान हुइ सभि सुख पावहु अपनो सुजसु प्रताप वधाइ।
सिख सेवक समुदाइ तुमारे शरधालू सद ही चलि आइं।
पाइंनि निमहिं, उपाइन अरपहिं, डरपहि गुर की वसतु, चढाइ॥ २ ॥
ब्रिंद मसंद संगतां मांही करहु पठावनि सगरे देश।
सिक्खी कउ नितप्रति बिसतारहिं तुमरी दिशि को दे उपदेश।
श्री सतिगुर को जेठो नंदन निमहि शाहु जिह चरन हमेश।
करामात के धनी संपूरन जिन महिं जागत जोति बिशेश॥ ३ ॥
बहुत बार अजभत दिखराई, दिल्ली पुरि अर दिल्ली नाथ।
देखि देखि बिसमत चित होए, सगल अजाइब कीनसि गाथ[3]।
को जानहि को नाहिन जानहि सभिनि सुनावहिं हित के साथ।
निशचा गिरनि देहिंगे काहू न, कहि कहि आनहिं टेकहिं माथ॥ ४ ॥
अपर उपाव करहु जिम हम कहिं, श्री हरिक्रिशन आप को भ्रात।
इसते आदिक अपर जि सोढी हैं अनेक जग मैं बख्यात।
निज संगति कहु बरजनि करियहि किह सों मिलहि नहीं किस भांति।
धीरमल्ल है चचा आपको तिस ते भी बरजहु कहि बात॥ ५ ॥
अपने सिख संगति हैं खेती करहिं कमाई दरब चढाइ।
सभि ते बरजन करहु बात इह जिसते नितप्रति बध्रती जाइ।

---

1. पुत्र। 2. चिंता। 3. अद्भुत बात की।

बडे बिरोधी हमरे सोढी—इम कहि सभि महिं दिहु बिदताइ[1]।
बहुर न करहिं मेल किह के संग इक तुमरे ही पूजहिं पाइ ॥ ६ ॥

पूरबले अनुसारी रहिं सिख अपर नवीन होइं समुदाइ।
संगति बधहि रीति इम करते धन अनगिनत चढावहिं ल्याइ।
अबि श्री रामराइ गुर टिक्यो, इम कहि बिसथारहिं सभि थाइं।
श्री हरिराइ बिकुंठ सिधारे तिन सथान भे तथा सुहाइ ॥ ७ ॥

जो लघु जाति अनेक बिधिनि की झीवर अरु कुम्हिआर चमार।
इत्यादिक सभि कहु दिहु सिक्खी सकल आइ तुम करहिं जुहार।
जहिं कहिं सुजसु सुनावहिं रावरि इसी रीति सभि जग बिसतार।
गुरता बिदतहि तुमरे तन को, आइ अपार सदा उपहार ॥ ८ ॥

बडो पुत्र बैठति है गादी लघु सुत रहि बड के अनुसारि।
इम जानहिं उच्चावच[2] सगरे, लखहिं तुमहिं सतिगुरु उदार।
रहि हैं अलप संगतां जेई हठ करि गमनहिं तिन के द्वार।
क्या अचरज है जानि देहु तिन, गुर सुत है अर भ्रात तुमार ॥ ९ ॥

श्री गुरु रामदास के त्रै सुत गुरता तखत एक ही लीनि।
श्री अरजन के पूजनि पाइनि अरपहिं भेटनि ह्वै सिख दीन।
प्रिथीआ महांदेव द्वै शेश जु पित ने तिनकी संगति कीनि।
सो सेवक तिनके हुइ चाले अरपति वसतु रहति अधीन ॥ १० ॥

पुन सतिगुर सुत श्री गुर दित्ता तिनके सुत उपजति भे दोइ।
इक तुम पित अर धीर मल्य है गुरता उचित बडो सुत जोइ।
लघु कउ संगति पूजति है, कुछ रहि करतारपुरे बिच सोइ।
चित महिं चहति रह्यो गुरता कहु, किम प्रापति भागन बिन होइ ॥ ११ ॥

तिम तुमरो इक अनुज मु जानहु केतिक संगति रह तिन पास।
पिखि क्यों तपहु[3] भ्रात है रावर, अरु सभि माता रहित अवास।
सो भी सदन आपने जानहु बनहि पठावनि धन को रास।
सभि विधि की सुध तुम ही लीजहि कीजहि मेल अनंद प्रकाश. ॥ १२ ॥

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ को जेठो सुत सुनि बात।
मानी नहिं मानी कछू कहति भयो बख्यात ॥ १३ ॥

---

1. प्रकट कर दो। 2. ऊँचे नीचे, बड़े-छोटे। 3. देखकर क्यों जलते हो।

सवैया छंद

'मिलनि हमारो होइ न किम ही, पर्यो अंतरो[1] अबहि बिसाल।
श्री सतिगुर पित ने जु कहे बच, सभिने सुते हुतु तिस काल।
यांते मिलहिं न संग मोहि सों जिन के मन महिं हटक अचाल।
तिनहु बतायो लघु सुत पूजनि, भए रिदे तित शरधा नाल ॥ १४ ॥
पठहु मसंदनि देशनि मांही जिस संगति पर जो चलि जाइ।
तहिं की तिह दसतार बंधावहु देहु दरब मन अधिक बधाइ।
सिख्यन सभ महिं रहिं उपदेशति इत को सुजसु बिसाल सुनाइ।
बंदुबसत करि कै बिधि नीके लै आवहिंगे हमरे थाइं ॥ १५ ॥
श्री हरि क्रिशन समीप न जावहिं, खारज सिक्खी ते डरपांइ[2]।
बरजन करहिं जांहि सभ देशनि लघु बिलंद को दें समझाइ।
तिन सभि सोढी गुरु कहावहिं, नहीं निकटि तिनके भी जाइं।
अपनी संगति रहै निराली, करहिं कड़ाही भाउ बधाइ' ॥ १६ ॥
इम कहि अनिक मसंद पठे हैं मान दान दे दरब अपार।
सिर दसतार बंधावनि करिकै लिखे हुकम नामे कर धारि।
जिह को जहिं भेज्यो तेह आख्य[3] लिख्यो हमारो इह मुखत्यार।
गुर मनौत हुइ सो इस दीजहि, कहै जु मानहु, होइ उधार ॥ १७ ॥
रहहु सदा अनुसारी इसके. आवहु दरशन को सग लेय।
जौन आइ धन अरपहि इस सभि, हम को पहुंचहिगो जो देय।
गुर की खुशी होहि तुम ऊपर करहु कामना पूरहिं सेय।
शब्द पठहु अरु जनम सुधारहु नहिं भरमहु निज धरम गहेय[4]' ॥ १८ ॥
गहे हुकमनावे सभि धाए, जाइ संगतिनि महिं धन लीनि।
अपर गुरु के निदंक बनि बनि अपने पर भरमाइं प्रवीन।
झूठ बोलनो कपट कमावनि ज्यों क्यों दरब लेहिं लब भीन[5]।
भोलि संगति करि बसि अपने अरपनि ढिग पहुंचनि नहिं दीनि ॥ १९ ॥
अधिक दरब संगति ते आवहि कुछ श्री रामराइ ढिग देहिं।
और सकल अपने ढिग राखहिं भए धनी सिख्यनि धन लेहि।
पाइ पदारथ भए हंकारी, बडे अशरधक लखहिं न केहि।
गुरु बनावनि हमरे बस है जिसको चाहहिं तिसहि पुजेंहि ॥ २० ॥
सगल संगतां संग हमारे, जिस ढिग चाहहिं तहिं ले जांहि।
निज असतीन हिलावनि करि कै गुरु निकासहिं देहिं बिठाइ।

---

1. फर्क। 2. सिक्ख धर्म से निकाले जाने के भय से। 3. कहकर। 4. धर्म को धारण करो। 5. लोभ के कारण भीग गए।

जो गुर रहै अधीन हमारे तिस ही के पुजवावहिं पाइ ।
नांहि त अपर थान ले गमनहिं, तिह घटि कर दें और बधाइ ।। २१ ।।

इत्यादिक लखि मूरख गरबे नित प्रति चलते भए कुचाल ।
पान बारनी बारबधू रति,[1] लगे पाप महिं दुशट बिसाल ।
निरधन सिख्यनि कहु दुखदायक झिरकहि कहि कहि बोल कराल ।
'गुर मार्यो तू दरब न देतो नित कुटंब करतो प्रतिपाल ।। २२ ।।

मैं गुर को सिख नहिं, तुम लिख दिहु' इम डरपाइ लेति धन छीनि ।
घर की वसतु बिकावहिं बल ते तंग अरु अधिक सु दीन ।
कबि श्री रामराइ ढिग पहुंचहिं करहिं पुकार 'हमहि दु:ख दीन ।'
डरपि मसंदनि ते न भनहिं कुछ कहि बाकन को खातर कीनि ।। २३ ।।

दोहरा

इस बिधि अपनी संगतां बांट मसंदनि दीनि ।
बंदुबसत सभि रीति करि राखी सकल अधीन ।। २४ ।।
देति बडाई अधिक नित जे मसंद बिचि देश ।
जिम अधीन मेरे रहैं करति उपाइ विशेश ।। २५ ।।
सिरेपाउ अरु दरब बहु देति दान सनमान ।
सिख्यनि के दुख दाहकनि[2] नहिं बरजति रिस ठानि ।। २६ ।।
बिगरे काच गुरूनि[3] ते धरति महां हंकार ।
पातशाह दसमें बिना कौन सुधारे मारि ।। २७ ।।

इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे दसमि रासे 'रामराइ' प्रसंग बरननं नाम उनत्रिसती अंशु ।। २९ ।।

1. मदिरा पीने वाले और वेश्या प्रेमी । 2. देने वाले । 3. कच्चे गुरुओं से ।

अंशु ३०

रामराइ प्रसंग

दोहरा

श्री हरि क्रिशन प्रताप बड सुजसु सुनहिं नित कान।
धीर महां गंभीर हैं करामात महीयान[1] ॥ १ ॥

चौपई

अनिक संगतां नितप्रति आवैं। अरपि उपाइन दरशन पावैं।
पूर कामना सिख्य अनेकू। केतिक पावति दात[2] बिबेकू ॥ २ ॥
कीरति पसरी पुरि पुरि घर घर। संकट परहरि दरशन करि करि।
आनि आनि गुन अधिक सुनावैं। सुनि सुनि रामराइ दुख पावै ॥ ३ ॥
जरी न जाइ अनुज बडिआई। चितवति चित महिं अति तपताई।
ज्यों ज्यों गुन गन सुनि है कान। त्यों त्यों छोभ[3] रिदे बहु ठानि ॥ ४ ॥
बसि न बसावहि चितवहि जतना। किम प्रापति ह्वै गुरता रतना।
सिख्य मसंद मेवड़े ब्रिंद। सभि महिं बैठै चिंत बिलंद ॥ ५ ॥
रिदे बिखे जिम गिनती गिनति। मुखयनि साथ बाक बहु भनति।
'करति प्रतीखनि मैं नित रह्यो। बिन अधिकार अनुज पद लह्यो ॥ ६ ॥
दिल्ली पुरि आवनि ढिग शाहू। नहिं किन कीनसि तवि उतसाहू।
सभि ते अग्र कीए मुझ भेजा। नाम सुने जिस धरक करेजा ॥ ७ ॥
मैं अपनी बुधि को बल करिकै। अज़मत अनिक प्रकार दिखरिकै।
कहिबे सुनिबे की चतुराई। करी बहुत मिलि तुरकनि राई ॥ ८ ॥
जहिं बादी समुदाइ सदीवा। सभहिनि कहु हंकार करि नीवा।
रस राख्यो बड नौरंग संग। तहिं बैठक शुभ लई[4] उतंग ॥ ९ ॥
निज अनुसार शाहु करि राखा। नहीं दियो बिगरनि, हित कांखा।
इत मुहि पठ्यो रह्यो ढिग शाहू। पित जुति भे नचिंत[5] सुख माहूं ॥ १० ॥

---

1. महान् करामात वाले। 2. देन। 3. क्रोध। 4. ली। 5. निश्चित।

आयहु समां लेनि बडिआई। मेरो त्याग कर्यो रिस पाई।
श्री हरि क्रिशन लियो सभि साज। हुतो पिता ढिग जितिक समाज ॥ ११ ॥
गुरता के संग सभि किछ लीनि। सरबोतम पद पावन कीनि।
अबि तौ अपर उपाइ न बने। एक जतन आवति मुझ मने ॥ १२ ॥
सो मैं करिहौं टरौं न कैसे। सुनि तुम भनहु आइ चित जैसे।
नौरंग को समुझावनि करिकै। अनिक भेद के बाक उचरिकै ॥ १३ ॥
करि अपने ते अधिक बडाई। तिस ढिग करामात अधिकाई।
करहु हकारनि लेहु निहारी। बहु प्रकार सों देहि दिखारी ॥ १४ ॥
कितिक काज अपने सुधरावउ। अजमत ते सु करहि तुम पावउ।
बसहि तुमारे देशनि मांही। परहु बुलावनि आवहि पाही ॥ १५ ॥
इत्यादिक कहि शाहु सिखाइ। पठहि दूत ते लिउं बुलवाइ।
जबि इस थल मों आवनि करिहै। तबहि शाहु को बहुत सिखरिहैं। १६ ॥
इस प्रकार को पावौं भेद। परहिं वैर जिस ते दे खेद।
सरब प्रकार करावहुं हौरा[1]। जबि फीको परि है इस ठौरा ॥ १७ ॥
लघुता जहिं कहिं ज़ाहर होइ। करहि अशरधा पुन सभि कोई।
नहीं उपाइन अरपन करैं। बहुर मोहि पर निशचै धरैं ॥ १८ ॥
रस नहिं रहनि देहुं संग शाहू। बदी करहिं सभि तुरक जि पाहू।
करामात केतिक दिखरावै। नित प्रति रीति नवीन सिखावैं ॥ १९ ॥
आइ जि मिलहि बिगर इम जाइ। जे निज पित पर करहि सुभाई।
करे हकारन जे नहिं आवहि। शाह दूत छूछे उलटावहि ॥ २० ॥
तौ भी हम को है बिधि नीकी। पुजहि भावना हमरे जी की।
शाहु करहि तबि ज़ोर बडेरा। रिस करि सैन पठावहि फेरा ॥ २१ ॥
लर्यो जाइ किम इस के साथ। अति ज़ोरावर दिल्ली नाथ।
अपर उपाइ बनहि तबि नांही। जंगल देश प्रवेशहि जाही ॥ २२ ॥
छोरि जाइगो कीरतिपुरि को। कर्यो बसावनि जो श्री गुर को।
जिम मैं निकसि रह्यो अन ठौरा। सो भी बसहि होहि तिम हौरा ॥ २३ ॥
इम भी होइ त मुझ कउ नीकी। महिमा परहि अनुज की फीकी।
मोहि प्रताप बिथाइ बधेरा। अज़मत ते रस नौरंग केरा ॥ २४ ॥
दोनहुं बिधिनि लाभ है मोही। हौरा अनुज, करे इम, द्रोही।
इम श्री रामराइ ने कह्यो। सकल मसंद मेवड़नि लह्यो ॥ २५ ॥

1. हल्का।

तिस के बाकनि कहु सनमानति। तबि गुरदासहि आदि बखानति।
'को तुम ते बुधिवान बिसाला ?। उर सरबग्य सरब ही काला ॥ २६ ॥
हान लाभ जसु अपजसु दीन। गौरा अरु हौरा जग हीन।
गुर घर की जेतिक बडिआई। हसतामल[1] जिम लखहु सदाई ॥ २७ ॥
जिम रावर को नीको होइ। तिम चित चाहति हम सभि कोइ।
चढे आपके बेरे[2] माहि। हान लाभ तुमरे संग पाहि ॥ २८ ॥
अबि तो दोनहु भ्रातनि केरा। नीकी रीति समाज घनेरा।
सुजसु दुहनि को जग मैं फैला। उज्जल कथा हिमालय सैला[3] ॥ २९ ॥
जे बिरोध बधि गयो घनेरा[4]। को जानहि किम होवहि फेरा।
ऐसी बात करनि बनि आवहि। तुम घर ते गुरता नहिं जावहि ॥ ३० ॥
नांहित सोढी बांछति सारे। गुरता हेतु करति उपचारे।
बधै क्रोध अस नहिं हुइ जाइ। अरपहिं गुरता अपर सु थाइं ॥ ३१ ॥
शाहु महां बादी बिगरै है। जे किछु बिघन तहां ह्वै जै है।
तुमहि कलंक चढहिं नहिं जैसे। करनो बनै आप को तैसे ॥ ३२ ॥
करहि बाद जबि नौरंग महां। लगहि बिगारन जो किछ तहां।
करहि अजोग[5] तुरक गन कहे। अस नहिं होइ वस न तुम रहे ॥ ३३ ॥
जथा मतंग[6] बली की सुंडा[7]। दे पकराइ प्रथम तिह डंडा।
पुनहि मुचावनि चाहे कोई। किम छूटहि गहि लीनसि जोई ॥ ३४ ॥
ऐसी बात नहीं कुछ कीजै। जिसते लघुता अपनि लखीजै।
रावर की चाहति भलिआई। इस कारन ते भाखि सुनाई ॥ ३५ ॥
तबि श्री रामराइ सुनि कह्यो। 'इम न होइ जिम तुम मन लह्यो।
श्री नानक जी नीकी करैं। अधिक बिरोध नहीं हम धरैं ॥ ३६ ॥
इम कहि करि नौरंग सिखरावें। एक बार जिम इहां बुलावै।
जथा सदन हम निकसे बैसे। श्री हरि क्रिशन अनावौं ऐसे ॥ ३७ ॥
सोपि आइ दिल्ली कहु दरसै। बोलनि तुरकनि साथ सपरशै।
मोहि समान करहि सभि आइ। कै कीरतिपुरि ते सु पलाइ ॥ ३८ ॥
दो मैं करि हौं एक जरूर। तौ मेरी भावन हुइ पूर।
तुम स्याने हहु करहु बिचारि। जे न करौं मैं इस बिधि कार ॥ ३९ ॥

1. प्रत्यक्ष। 2. जहाज। 3. हिमालय के पर्वत 4. अधिक। 5. अनुचित। 6. हाथी। 7. सुंड में डंडा पकड़ा दे।

तौ मेरो निशफल बल अहै। जे निर्शचित अनुज मम रहै।
गुरता गादी को अधिकारे। हुतो सु मेरो जानति सारे॥ ४० ॥
श्री हरि क्रिशन लीनि सो गादी। बहुरो भए परसपर बादी।
तौ तूशनि मैं कैसे रहौं। जे करि द्वैश रिदा नहि दहौं[1]॥ ४१ ॥

दोहरा

इस प्रकार करि कै मतौ द्रिढ़ निशचा उर कीनि।
अनुज हकारौं शाहि ढिग कवि संतोख सिंह चीन॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'रामराइ' प्रसंग बरननं नाम त्रिंसती अंश। ३० ॥

1. यदि मुझे द्वेष से हृदय को नहीं जलाना तो चुप कैसे रहूं ?

अंशु ३१

श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

अनुज हकारनि कारने चितवहि अनिक उपाइ।
पिखहि कहिनि अवकाश[1] को जबहि शाहु ढिग जाइ ॥ १ ॥

चौपई

इक दिन पुनहिं प्रसंग चलायो। 'श्री सतिगुर हरिराइ समायो'।
बूझनि लग्यो शाहु सभि बात। 'पिता तुमारे जग बख्यात ॥ २ ॥
किस प्रकार सो गए समाइ। तुम नहिं मिले तीर तिन जाइ।
किम न गए कि सुध नहि आई। को कारन भा कहहु बुझाई ॥ ३ ॥
सकल समाज तिनहुं ते पाछे। किनहुं संभार्यो राख्यो आछे।
किन लीनसि गुरता बर गादी ? तिन पाछे तिम कीनि अबादी' ॥ ४ ॥
सुनि श्री रामराइ तबि कह्यो। अबि अवकाश कहनि कहु लह्यो।
'सुनहुं शाहु ! मुझ इतै पठायो। पित आइसु ते मैं चलि आयो ॥ ५ ॥
अधिक समाज मोहि संगि भेजा। हुइ प्रसंन भाख्यो-सभि लेजा।
जबि के हम आए तुम पास। भए सिख्य बहु संगति रास ॥ ६ ॥
मिलनि आप के साथ घनेरा। अजमत पता पुनहिं बहु हेरा।
यांते भा समाज अधिकाई। सिख संगति नित बधहि सवाई ॥ ७ ॥
देशनि महिं सिक्खी बिसतारी। दरसहिं आइ पुंज नर नारी।
अनिक उपाइन आन चढावैं। गनी गरीब दरब अरपावैं ॥ ८ ॥
श्री गुर पिता सुनी सुध सारी। भयो सुचेत समाज संभारी।
मुझ को समरथ सभि बिधि जाना। लघु सुत जान्यो अहै अयाना ॥ ९ ॥
अपनि समाज तिसी कउ दीना। निकटि रहन ते अति प्रिय चीना।
तहिं ते सिख संगति समुदाई। सभिहिनि की तिह बांह गहाई[2] ॥ १० ॥

1. करने के लिए समय देखता है। 2. बांह पकड़ा दी, सुपुर्द किया।

कारन भयो अपर भी जोइ। रिस जिम करी सुनावौं सोइ।
साथ आपके मेल हमारा। भयो अधिक ही दिन प्रतिभारा ॥ ११ ॥
ज्यों ज्यों तुम फुरमाइश कीनसि। अज़मत बल ते त्यों करि दीनसि।
पिता समीप जाति सुध सारी। तिनहुं बात नहिं नीक बिचारी ॥ १२ ॥
सुनि सुनि क्रोध भए इम भाखा। शाहु साथ जे अस रस राखा।
बार बार अज़मत दिखरावति। जो बिधि अनबन दुलभ बनावति ॥ १३ ॥
दीन पदमनी असु दरिआई। इत्यादिक जो अपर बनाई।
इह आछी नहिं कीनसि तांहि। जिम भाखहि तिम करि दिखराहि ॥ १४ ॥
होयहु जिस के अस अनुसारी। आइसु मानि, सकहिं नहिं टारी।
तो तिस पास रहहु हित करि कैं। हमरे निकटि न आवहु फिरि कै ॥ १५ ॥
शाहु समीपी रहहु सदीवा। उत बसि, आइ न इत की सीवा[1]।
लागहिं नहीं सु बदन हमारे। करामात नित प्रति जु दिखारे ॥ १६ ॥
पठ्या हुकमनामा[2] मुझ पास। सुनि तबि ते मैं त्यागी आस।
करे त्रास उर गयो न तीर। रिस ते श्राप न देहिं अभीर[3] ॥ १७ ॥
लगे समावनि[4] को जिस काला। लघु सुत को गादी बैठाला।
सभि सिख संगति चरनी पाइ। सौंपि समाज सगल अधिकाइ ॥ १८ ॥
ब्रिंद मसंद जि अपर अशेश। से बिचरति गन देश बिदेश।
सभि को तिस के पाइं लगाइ। नीकी रीति सौंप समुदाइ ॥ १९ ॥
लघु सुत को समुझावनि कीनि। अपनी करामात सभि दीनि।
दिल्लीपति सों मिलो न जाइ। नहिं दरसहु, नहिं निज दरसाइ ॥ २० ॥
अजमत कतहुं लगवहुं नांही। करहु छपावनि अपने मांही।
कहैं कोइ कैसिहु बनि जाइ। धीरज थरहु धरा समताइ[5] ॥ २१ ॥
इस प्रकार दे करि बहु सीखा। क्रिपा द्रिशटि ते सुत को दीखा।
पित महान श्री गुर हरिराइ। सभि के देखति गए समाइ ॥ २२ ॥
रावरि निकटि आवनो कियो। तिस ते मुझ फल ऐसो भयो।
जो सभि बिध्रि ते मम अधिकारा। सो लघु भ्राता ने संभारा ॥ २३ ॥
सुनि श्री रामराइ के बैन। बोल्यो शाहु चपल करि नैन।
'तुम कहु, कहहु कहां परवारू ? सरब समाज अधिक है पारू ॥ २४ ॥
तुम इत दिश के गुर बनि रहो। सिख्यनि ते भेटैं गन लहो।
हमरे निकटि रहहु हो जावत। सरबोतम दिल्ली बसि तावत[6] ॥ २५ ॥

---

1. ओर। 2. गुरु जी का आज्ञा-पत्र। 3. निर्भय। 4. शरीर का त्याग। 5. समतल। 6. तब तक।

पुन जो देश तोहि लगि नीका। जहां हरख ब्रिरधावहि जीका[1]।
तहि सथान आछो बनवाइ। दै हैं ग्राम जगोर लगाइ ॥ २६ ॥
सभि सुख पाइ बाम तहिं फ़रीअहि। ह्वै जि मनोरथ मोहि उचरीअहि।
सभि मैं पूरन करवि तुमारे। बांछनि लीजहि निकटि हमारे ॥ २७ ॥
धारनि करामात कहु भारे। जे जे कारज कहे सुधारे।
तुझ पर मैं सु प्रसंन महा हौं। चहैं बास करवाइ तहां हौं ॥ २८ ॥
तिसि दिशि ते नहिं बनि दिलगीर। सो भी अहै तुमारो बीर[2]।
निज संगति ते सो पुजवावै। नहि तेगे कुछ काज गवावै ॥ २९ ॥
अलप आरबल महिं सो अहै। जाति नहीं कित, निज घर रहै।
कुनो[3] ईरखा तिह संग करनी। करनी नीक, लेहु उर धरनीं ॥ ३० ॥
सुने शाहु के बाक भलेरे। कहि श्री रामराइ तिस बेरे[4]।
'मोहि नहीं रंचक परवाहू। साति ब्रिद देश मम पाहू ॥ ३१ ॥
बहुर मेल है साथ तुमारे। सभि जहान को शाहु उदारे।
पठहु दरब अरु वसतू नाना। जे बहु दुरलभ जग कहु जाना ॥ ३२ ॥
आज कमी मुझ को नहि कोऊ। जिम चित चहति करति हौं सोऊ।
उभै बात असमंजस अहैं। जिन चितवति चित चिता दहै ॥ ३३ ॥
इक तौ मैं गादी अधिकारी। लघु भ्राता ने सो संभारी।
सकल समाज संग ही लीनसि। अजमति जुति पित संगति दीनसि ॥ ३४ ॥
कीनसि मुझ ते अधिक बडाई। सरब मसंद लगाइसि पाई।
इह जो करी अजोग जदापी। इस पर बस न बसाइ तदापी ॥ ३५ ॥
श्री गुर आप अच्छत जो दई। नहि समरथ को, तिस उलटई।
होनहार सो बीत गई है। परालबध शुभ ते सु लई है ॥ ३६ ॥
दुतिये सुनहुं जु तुम ढिग आवनि। इस महि दोश करहिं अर पावनि।
कहे आप के हम कुछ कीना। अज़मत बल ते जिस बिधि चीना ॥ ३७ ॥
ज्यों ज्यों शाहु कर्यो फुरमावनि। त्यों त्यों अज़मत किय दिखरावनि।
पठ्यो पिता ने इस ही काम। करौं न कैसे, है गुर नाम[5] ॥ ३८ ॥
श्री गुर पिता कहति कुछ थोरा। अबि बिसत्रिति सकल दिशि ओरा।
ब्रिंद मसंद संगतां मांही। नित कहि कहि दोशनि अरपाहीं ॥ ३९ ॥
मेल सु दोश उचारि तुमारो। अपजसु सभि महि बहु बिसतारो।
इह मेरे उर जरी न जाई। हम तुम दोनहु को लघुताई ॥ ४० ॥

---

1. मन की खुशी बढ़ाए। 2. भाई। 3. किस लिए? 4. उस समय।
5. बड़ाई (गुरु की)।

यांते अबि लिहु रिदे बिचारा। जिस प्रकार जानहि जग सारा।
पठहु दूत को तिन के पास। करहु हकारनि अपनि अवास ॥ ४१ ॥
मो ते सहस गुनी अजमत है। श्री सतिगुर गादी पर थित है।
जिम चित चहहु तथा बनिवावहु। एक बार दिल्ली मंगवावहु ॥ ४२ ॥
पुन कहिबे ते सभि हटि रहैं। हम सभ आयहु तिस कहु लहैं।
सो पि भनहि नहिं संगति मांहू। मुहि सम मिलहि आइ तुम पाहू ॥ ४३ ॥
इह मेरे उर करक बिसाल। निस दिन पीड़ति जिम नटसाल[1]।
हाथ आप के करिबो ऐसे'। कवि संतोख सिंह 'भाख्यो जैसे' ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री रामराइ' प्रसंग बरननं नाम एक त्रिसती अंशु ॥ ३१ ॥

---

1. तीर की नोक चुभ जाने की पीड़ा की भाँति।

अंशु ३२

श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

श्री गुर जेशठ पुत्र ने करि मतसर[1] मन मांहि।
निज सम करिबे अनुज कहु कही शाहु के पाहि ॥ १ ॥

चौपई

सुनि नौरंग ने रिदे बिचारा। इन मतसर कर बाक उचारा।
आरबला है अलप तिनहुं की। रहनि मात ढिग बैस जिनहुं की ॥ २ ॥
किम आवहि हम करहिं हकारनि। नहिं निकस्यो घर ते किस कारन।
भ्रातपने महिं अधिक शरीका। करहिं द्वैश, नहिं चाहहि नीका ॥ ३ ॥
जिम होयहु है सदन हमारे। राज कर्यो निज भ्रातनि मारे।
तिम सगरे जग मैं बरतारा। होति शरीके महिं दुख भारा ॥ ४ ॥
तैसी रीति इनहुं महिं भई। मम सम लघु ने गादी लई।
तिन पठि दूत हकारों जबै। रिस करि स्राप न कुछ कहिं तबै ॥ ५ ॥
प्रथम हकारे इह चलि आयहु। अज़मत जुति कर इतहि पठायहु।
जो हम चहति सकल करिवायहु। सरब रीति नीके पतिआयहु ॥ ६ ॥
अबि जेकर करि ज़ोर हकारहिं। 'शाहु द्वैश कउ ठटहिं' बिचारहिं।
'बडो भ्रात जे पहुंच्यो पास। मम अधीन पुन रह क्या आस ॥ ७ ॥
इम बिचारि उर नौरंग कहै। 'क्या कहि वात बुलावनि चहै।
अज़मत हेरनि केर हकारन[2]। सो तुम कीनसि प्रथम दिखारनि ॥ ८ ॥
अबि निशफल ही दूत पठनि है। लघु बय आवनि तिनहु कठन है[3]।
इक श्री गुर के सुत इहु दोऊ। अति अजमत महिं समसर होऊ ॥ ९ ॥
किधौं सु लघु गादी पर टीका। तुम ते ह्वै है अधिक बधीका[4]।
लघु बय ते जबि होइ बिसाला। करहिं हकारनि को तिस काला ॥ १० ॥

---

1. सलाह। 2. करामात देखने के लिए बुलाया है। 3. छोटी आयु के कारण उनका आना कठिन है। 4. ज्यादती।

अबि तो अनुचित बात बिचारौं। पठिकै दूत न निकटि हकारौं।
सुनि श्री रामराइ तबि कह्यो। 'इम बिचार तुम नीके लह्यो ॥ ११ ॥
होति हकारनि की जुग बाती। गरबति करि, कै बल बख्याती।
सो नहिं आछी बिघन परति है। देति स्राप को क्रोध करति है ॥ १२ ॥
बिनै बखानि बुलावनि करनो। इह नीको पुरशोतम बरनो।
इम करतै सभि बिघन बिनासहिं। नित प्रति मंगल महिद प्रकाशहिं ॥ १३ ॥
यांते करहु बिचारनि ऐसे। सो आवहिं अरु सुख हुइ जैसे।
करि सनमान हकारहु तांहू। दरसहु परसहु बैसहु पाहू' ॥ १४ ॥
तिस छिन न्रिप जै सिंह सवाई। सुनि ब्रितांत सभि कह्यो बुझाई।
'इह जु बात गुर सुत ने कही। सो हम ने मन आछी लही ॥ १५ ॥
पूरब भी प्रसंग अस भऊ। इनको बडो शाहि ढिग अऊ।
जहांगीर पतिशाह बिसाला। बडो आप को शुभ मग चाला ॥ १६ ॥
तिनहुं हकारे बिनै बखानी। श्री हरिगोबिंद सर धन पानी[1]।
मिले आनी बड रस को राखा। शाहु जोरि कर तिन सों भाखा ॥ १७ ॥
मोहि नाम की फेरहु माला। जिसते संकट कटहिं कराला।
कहे नजूमी[2] के इम कीनि। दुरग ग्वालियर पठिबे कीनि ॥ १८ ॥
जहां कैदखाना बहुतेरा। सभि वय कैदी तहां बसेरा।
सुनति शाहु की बिनै प्रसीजे। प्रविशे दुरग जाइ जपु कीजे ॥ १९ ॥
जे रजपूत कैद महिं तहां। असन बसन सभि को दिय तहां।
पुनहि बुलाए करि चालीसा। कह मुचवाए[3] सकल महीशा ॥ २० ॥
सभि रजपूतन मैं बिरतांत। अबि लौ कहैं सुनहिं बख्यात।
पुरशोतम जे हैं जग मांही। बिनै सुनति ही बसि ह्वै जांही ॥ २१ ॥
तिम श्री सतिगुर को इह बंस। क्यों न प्रसंनहि करे प्रसंस।
आवहिंगे, नहिं बिलम लगावहिं। कर सनमान जि आप बुलावहिं' ॥ २२ ॥
इम जै सिंह सवाई कह्यो। सुन्यो शाहु मन नीके लह्यो।
चितवति चित महिं इसके हाथ। करहिं हकारनि बिनती साथ ॥ २३ ॥
जे रिस होइ त इस पर होइ। जे प्रसंन, दरसहिं सभि कोइ।
इम बिचारि करि नौरंग भनियो। 'भो जै सिंह सवाई ! सुनियो ॥ २४ ॥
आछी बात कही इम करहु। तुमहि बुलावनि उद्दम धरहु।
अपनो पठीअहि नर परधान। जो ल्यावै बहु बिनै बखान ॥ २५ ॥

1. हाथ में तीर कमान धारण करने वाले गुरु हरिगोबिंद जी। 2. ज्योतिषी। 3. सारे राजा छुड़वाए।

जिस ते रिस न करहिं सुनि कैसे। दिल्ली पुरि लग आनहिं जैसे।
करहु पठावनि सभि असवारी। अपर सकल बिधि कीजहि त्यारी ॥ २६ ॥
अभिलाखति[1] पर हुइ आरूढ। बाल बैस जिन आशै गूढ।
देहु पठाइ उपाइन नाना। हमरी दिशि को लिहु परवाना ॥ २७ ॥
सहित प्रसंनता जिम चलि आवैं। तिम करीअहि पुन दरशन पावैं।
बहु सनमान साथ अनवावउ[2]। रुचिर[3] उपाइन प्रथम पठावउ २८ ॥
निज दिशि ते बहु बिनती लिखी अहि। आप आइ दिल्ली पुरि दिखिअहि।
सभि संगति को दरशन दै कै। हमहुं मोद उपजावनि कै कै ॥ २९ ॥
करहु सनाथ दास मुहि जानहुं। इत्यादिक लिखिबो तुम ठानहुं।
सुनति शाह ते जै पुर राजा। कहत भयो 'मैं करिहौं काजा ॥ ३० ॥
जितिक सेव मुझ ते बनि जैहै। तितिक भले सतिगुर करि दै हैं।
इक तौ कहनि आपकौ भइऊ। दुतिय सेव करि दरशन लइऊ ॥ ३१ ॥
क्रिपा करहिंगे बर को दै हैं। यां ते हम सभि रीति रिझै हैं।
आइं आप के निकटि ज़रूर। सुन्यो सु तिन देखे दुख दूर ॥ ३२ ॥
अधिक प्रताप तिनहुं को अहे। नर समुदाइ जहां कहिं कहैं।'
इम ब्रितांत भा सभा मझार। ठहिरी ठीक हकारनि कार ॥ ३३ ॥
उठ्यो शाहु अंतह पुरि गइऊ। अपर सरब दुरगहिं निकसिऊ।
आप आपने पहुंचे डेरे। चढि चढि सिवका शुभति बधेरे ॥ ३४ ॥
को श्री रामराइ कहि नीका। 'करामात साहिब शुभ टीका।'
को कह 'आछो नहिं इन कीना। अनुज संग द्वैश जु रचि लीना ॥ ३५ ॥
दई पिता ने जिस बडिआई। सौंप्यो सभि समाज समुदाई।
श्री हरिक्रिशन रूप जिन बालक। तिन दूती[4] कीनसि ततकालक ॥ ३६ ॥
शाहु सिखायहु-इहां हकारहु। करामात सभि भांति निहारहु।
अबि लौ बाळिक रूप सुहाई। इसके साथ न चहि खुटिआई ॥ ३७ ॥
दई पिता ने वसतु संभारी। हरी नहीं किह ते बलधारी।
श्री हरिराइ रिदे रिस आई। आइ न हम को मुख दिखलाई ॥ ३८ ॥
इस महिं दोश तिनहुं को कहां। जिन सों द्वैश रचित है महां।
टरति शाहु इन टरनि न दीना। ठीक हकारनि को मति कीना ॥ ३९ ॥
अज़मत महिं पूरन जुग भाई। मिले परसपर जबि इक थांई।
को जानहि तबि क्या हुइ जाए। किस विधि को मुख बच निकसाइं ॥ ४० ॥

---

1. मन चाही। 2. मंगाओ 3. बढ़िया। 4. चुगली।

कह्यो निफल होवहि नहिं कैसे। लछ हतसि[1] अभिआसी जैसे।
धन बिद्या जिन भले कमाई। चूकहि नहीं बान गन घाई॥ ४१॥

दोहरा

इत्यादिक सूबे कहैं भली बुरी बिधि जानि।
गुर सुत पहुंच्यो सिवर[2] निज उर अनंद कहु ठानि॥ ४२॥

इति गुर प्रताप सूरज ग्रथे दसमि रासे 'श्री रामराइ' प्रसंग बरननं नाम दूइ त्रिसती अंशु॥ ३२॥

---

1. निशाना बाधने बाला। 2. निवास स्थान।

अंशु ३३

न्रिप जै सिंह नर भेजन

दोहरा

सीख सिखाई शाहु को मतो ठीक ठहिराइ।
श्री गुर सुत पहुंच्यो सिवर बैठ्यो बिच समुदाइ॥ १॥

चौपई

बहिलो के गुरदास जि आदिक। कहिति भयो सभि मों अहिलादिक[1]।
श्री गुर नानक काज सुधारे। पूरन भए मनोरथ सारे॥ २॥
श्री हरिक्रिशन सु शाहु हकारे। न्रिप जै सिंह बीच को डारे।
अबि आवहिगो दिल्ली पुरि मैं। सुख सों बैस रहै जो घर मैं॥ ३॥
बिघन अनेक पाइ हौं इहां। बिगरहि शाहु जाइगो कहां।
शाह बुलाए जे चलि आयहु। कर्यो नेम प्रण सो बिनसायहु[2]॥ ४॥
नहिं मलेछ को दरशन पाऊं। अपनो दरशन तिस न दिखाऊं।
करी प्रत्तग्या इस बिधि जोइ। आवै इतै बिनसि है सोइ॥ ५॥
संगति सगल मसंदनि जानी। पैज[3] सभिनि महिं बैठि जु ठानी।
कह्यो कूर जानहिंगे सभै। इह कैसो गुर भाखहिं तबै॥ ६॥
बिगर जाइगी पुनि गुरिआई। त्यागहिं शरधा नर समुदाई।
इम इत के आवनि महिं दोशू। तिन वच को छुटि जाइ भरोसू॥ ७॥
जु कुछ किसी को कहै बनाई। नहिं मानहिं इह कूर कहाई[4]
जे इस पैज छुटनि ते डरहि। नहीं आइबो दिल्ली करहि॥ ८॥
तौ बसिबो कीरतिपुरि अपनो। होवहि नहीं बीच भी सुपनो।
अपर थान जैवे कहु होए न। न्रिप आदिक रखि सकि है कोए न॥ ९॥
शकति न होहि लरनि की जबै। छोरि देश कहु गमनहिं तबै।
जंगल को थल जो जलहीन। जाइ न सकै सैन इम चीन॥ १०॥

1. प्रसन्न होकर। 2. टूटेगा। 3. प्रतिज्ञा। 4. झूठ कहेंगे।

तहिं को जाइ प्रवेशनि करि है। कीरतिपुरि ते बसति निकरि है।
अधिक समाज बिराजहि जोइ। तिस थल पहुंचि बिनासी होइ ॥ ११ ॥
इक तौ डरहिं शाहु ते रोक। मिलहिं न, होहि सभिनि मैं रोक।
दुतीए जंगल देश मझार। नर रहिं दुखी न प्रापति बारि[1] ॥ १२ ॥
बसनहार जे जल नहिं पावहिं। कहिं ते पान करहिं जो जावहिं।
रोज हजारहुं आवहिं जैसे। जगल देश न पहुंचहिं तैसे ॥ १३ ॥
हटति हटति संगत रहि जाइ। कौन कशट युति दरशन पाइ।
पुनहि मोहि गुरता बिदतावैं। सिख संगति सगरे चलि आवैं ॥ १४ ॥
धनी मसंदनि को धन दै हैं। सिरेपाउ बखशीश करै हैं।
बहु सनमानहि आवन जानैं। तिम ते हटि इत ही को मानैं ॥ १५ ॥
सभि मानव सुख के बसि अहैं। पहुंचहि तहां जहां बहु लहैं।
इह उपाइ अबि मैं करि आवा। सतिगुर जानहि किम बनि जावा ॥ १६ ॥
मुझ मन मैं निशचै अस पावति। श्री हरिक्रिशन नहीं इत आवति।
नहीं प्रत्तग्या कहु परहरै। कह्यो बाक को पालनि करै ॥ १७ ॥
दोनों बिधिनि मोहि गुन होए। आवहि किधौं न आवहि सोए।
इम निज लोकनि महि कहि बाती। भयो हरख कुछ सीतल छाती ॥ १८ ॥
होनहार कहु जानहि नांही। लखहि कि गुरता हुइ मुझ पाही।
खान पान करि सुपते राती। सुख सों बिती सु भई प्रभाती ॥ १९ ॥
उठि जैं सिंह सवाई राजा। कह्यो शाहु चितवति सो काजा।
नित की क्रिआ कीनि शुभ रीति। बैठ्यो निज आसन मुदचीत[2] ॥ २० ॥
एक प्रधान हकारनि कर्यो। सनमानति बहु बाक उचर्यो।
ब्रिद्ध शुशील अधिक बुधिवाना। नीको सकल रीति ते जाना ॥ २१ ॥
'हुकमे शाहु को हम पर होवा। श्री हरिक्रिशन रूप लिहु जोवा।
सादर तिन कहु ले करि आवहु। जुति असुवारी अबै सिधावहु ॥ २२ ॥
सुंदर स्यंदन गन नग जरे। बली बाहु[3] जिस जोरनि करे।
जरीदोज जगमग चमकंता[4]। अस उछार ऊपर दुतिवंता[5] ॥ २३ ॥
रुचिर पालकी मुकट जराऊ[6]। लेहु कहार संग समुदाऊ।
हित मातनि के लीजहि डोरे। जेकरि साथ आइं इत ओरे ॥ २४ ॥
दासी दास जितिक हुइं साथ। उचित देहु असुवारी पाथ[7]।
संग तुरंगम कुछ ले जाहु। अपर उपाइन अरपहु पाहु ॥२५॥

---

1. जल। 2. प्रसन्न चित्त। 3. बलबान घोड़े। 4,5. जरी का अछादन जगमग चमकता हुआ सुन्दर लगता है। 6. शीशे से जड़ित। 7. मार्ग के लिए।

दरब पटंबर अरु पशमंबर। बरन बरन के बहु बर अंबर[1]।
प्रथम प्रसंन करहु सभि रीति। बिनति भनहु ठानि मन प्रीति ॥ २६ ॥
शाहु दिशा ते अरु दिश मेरी[2]। करहु बंदना बिनै बडेरी।
एक बेर चलि दरशन दीजहि। संगति पूर मनोरथ कीजहि ॥ २७ ॥
जिस बिधि क्रोध हीन उर ह्वै कै। आवहिं निज प्रसंनता कै कै।
अपनी बुधि ते सो बिधि करीए। गमनहु तिते बिलम परहरीए ॥ २८ ॥
इम राजा जै सिंह सवाई। नीकी बिधि त्यारी करिवाई।
दई उपाइन रुचिर महान। कर्यो पठावनि निज परधान ॥ २९ ॥
सने सने मारग चलि पर्यो। पशचम दिशि मुख सनमुख कर्यो।
जिम जिम जै सिंह करी तिआरी। पठि नर लेति रह्यो सुध सारी ॥ ३० ॥
चित श्री रामराइ चितवंता। आइ कि नहिं सो गटि गिनंता।
जै पुरि नाथ भउ बहु कर्यो। अधिक नंम्रता बाक उचर्यो ॥ ३१ ॥
बसत्र बिभूखन बित बहु भेजा। असवारी आदिक अरु सेजा।
सुमतिवंति नर धनी महाना। पठ्यो लेनि कीरतिपुरि थाना ॥ ३२ ॥
अधिक भाउ हेरहि न्रिप केरा। रुचिर भेट अरु दरब घनेरा।
श्री हरिक्रिशन समीपी जेई। देखि देखि हरखहिंगे सेई ॥ ३३ ॥
कहि कहि बहुत बारि गुन नीके। ले आवहिंगे दिशि दिल्ली के।
जै सिंह करहि पक्ख तिन केरा। शाहु पास कहि सुजसु घनेरा ॥ ३४ ॥
मुझ ते अधिक भाउ करिवावहि। मेरो काज न कुछ बिगरावहि।
इक दुइ अपर होंहि दिशि तांही। जे नर जाहिं शाहु के पाही ॥ ३५ ॥
इत को[3] बड मरातबा जोइ। आए नहीं संभारहि सोइ।
इह तौ रीति न नीकी बनहि। तिनहुं मिलै अरु जस को भनहिं ॥ ३६ ॥
करामात मुझ ते सु बिलंद। आइ करहि नहिं मम जिसु मंद।
नहिं आवहि दिल्ली पुरि मांही। अरु नहिं जाहि शाहु के पाही ॥ ३७ ॥
डर भागहि जंगल दिशि जाए। इही बात नीकी बनि आए।
इत आवन महिं संसै महां। को जानहिं ह्वै जै है कहां ॥ ३८ ॥

दोहरा

इस प्रकार नित चित बिखै गनती गिनहि अपार।
रहि सचित[4], किम होइ है अनुज साथ बिवहार ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'न्रिप जै सिंह नर भेजन' प्रसंग बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु ॥ ३३ ॥

---

1. कपड़े। 2. मेरी ओर से। 3. इस (मेरी) ओर से। 4. चिंतातुर।

अंशु ३४

श्री हरिक्रिशन हकारन प्रसंग

दोहरा

जैपुरि पति परधान निज पठ्यो पर्यो मग मांहि ।
सने सने पुरि ग्राम लंघि सतिगुर मिलनि उमाहि ।। १ ।।

चौपई

कीरति पुरि मैं पहुंच्यो जाई । कर्यो सिवर जे नर समुदाई ।
श्री सतिगुर ढिग जबि सुधि होई । भोजन पठ्यो देग को जोई ।। २ ।।
अपर लई सुधि सरब प्रकार । खान पान जेतिक बिवहार ।
करी बितावनि सुख सों राती । सुपति उठे जबि भई प्रभाती ।। ३ ।।
सकल सौज[1] जुति कीनि शनान । पोशिश[2] पहिरी रूचिर महान ।
पुनहि पठ्यो इक नर गुर पास । कर जोरे भाखति अरदास ।। ४ ।।
'बड राजा जै सिंह सवाई । जै पुरि को पति बिदति महांई ।
अवरंगशाहु निकटि नित रहिई । अनिक नरन कारज निरबहिई ।। ५ ।।
तिस न्रिप ने भेज्यो परधान । निस आयहु कीरति पुरि थान ।
सरब रीति की सुधि बहुतेरी । गुर घर ते होई सभि हेरी ।। ६ ।।
अबि रावर के दरशन हेतु । बूझनि भेज्यो होइ सुचेत ।
आइसु पाइ तुमारी जबै । करहि सफलता अपनी तबै ।। ७ ।।
सुनि श्री गुर हरिक्रिशन सुजाना । अंतरजामी कीनि बखाना ।
पाछल पहिर दिवस के आवहु । सति संगत कहु दरशन पावहु ।। ८ ।।
दूर पंथ ते चलि करि आए । बिसरामहिं सभि बिधि सुख पाए' ।
छरीदार सुनि सतिगुर बिसै[3] । सगरो जाइ सुनायहु तिसै ।। ९ ।।
भयो दिवस को पाछल जाम[4] । बोले सतिगुर मुख अभिराम[5] ।
'सभा लगावनि के हित त्यारी । करहु शीघ्र बड फरश सुधारी ।। १० ।।

1. सामग्री । 2. पोशाक । 3. तात्पर्य । 4. पिछले पहर 5. सुन्दर ।

अपर समाज बनावहु नीका। पिखति होइ हुलसावन जी का।
सुनि सेवक समुदाइ सिधाए। सभा सदन सुंदर सुधराए॥ ११॥
तन्यो चंदोवा झालर जरी। जरी नगों ते शोभति खरी।
खरी चोब चित्रति मैं चारु[1]। चार ओर चमकति गचकार[2]॥ १२॥
सुंदर फरश मखमली होवा। हरख उपावति जिन जिन जोवा[3]।
राज समाज सरब ही बन्यो। चहुंदिशि सदन सु दुति ते सन्यो॥ १३॥
सरब प्रकार त्यार जबि जोयो। श्री सतिगुर कहु आवनि होयो।
सुंदर बीच प्रयंक डसावा[4]। उज्जल आसतरन[5] सों छावा॥ १४॥
सेज बंद गुंफे जुति जरी। ऊपर आइ बिराजे हरी।
भाट नकीब[6] बढ़ावति जसु को। आए सुभट सिपर गहि असिको[7]॥ १५॥
ब्रिद ममंद भेवड़े ठाढे। जो अरदास करहिं सुख बाढे।
चवरदार ले चवर खरे हैं। पहिरे बसत्रनि बेस खरे हैं॥ १६॥
चारहुं ओर चलावहिं कर ते। ढोरति चवर हस जनु चरते।
श्री हरिक्रिशन बिराजति बैसे। ब्रहम ग्यान की मूरति जैसे॥ १७॥
बालिक रूप अंग सु-कुमारा। ब्रिद्ध बुधि के महिद[8] उदारा।
रुचिर रकत चरणांबुज सोहे। जिनहुं हेरि जोगी जन मोहे॥ १८॥
सूखम बसत्र गरे महि जामा। तुंग सिकंध दुकूल भिरामा।
जरे जरावनि कुंडल करन[9]। करनि[10] कटक हाटिक[11] शुभ बरन[12]॥ १९॥
सिर पर चीरा चित्रति रंग। तिस पर शोभति जिगा उतंग।
जर्यो जराऊ दमकति हीरे। कोरदार सुंदर बिधि चीरे॥ २०॥
शारद चंद सपूरन बदन। होति चांदनी मुसकति रदन[13]।
सिखनि केर बिलोचन जोरा। मनहुं निहारति चार चकोरा॥ २१॥
सरब सभा जबि पूरन भई। बसत्र बिभूखन ते दुति मई।
गावहिं शबद राग धुनि पाए। होति निहाल जिनहुं मन लाए॥ २२॥
न्रिप जै सिंह न भेज्यो जोइ। तिह छिन कर्यो हकारनि सोइ।
नौबत[14] बाजति द्वार अगारी। आए तहां बंदन कहु धारी॥ २३॥
सगल उपाइन आगे धरि कै। नंम्री होइ भाउ उर करिकै।
श्री सतिगुर के आइ हजूरा। कीनी बिलोकन दरशन रूरा॥ २४॥
बसत्र बिभूखन सुंदर पहिरे। सभिनि बीच बैठे चित ठहिरे।
आनि आनि संगति दरसंती। भांति भांति भेटनि अरपंती॥ २५॥

---

1. सुन्दर। 2. जड़तकारी 3. देखा। 4. पलंघ बिछाया। 5. बिछौना 6. दान्त 6. भाट। 7. घोड़ों की लगाम पकड़े हुए। 8. बजुर्ग। 9 कानों में। 10. हाथों में। 11. सोने के कड़े। 12. रंग। 13. हंस रहे मुंह के दांतों से। 14. नगारा।

मनो कामना पूरन होवति। हिते अरदासनि अग्र खरोवति।
नर नारी पिखि ह्वै बलिहारी। अनिक देश के करहिं जुहारी[1] ॥ २६ ॥
गुर समाज को पिखि परधाना। हरख भर्यो जोरति जुग पाना।
धर पर धरि सिर बंदन कीनि। बैठ्यो सनमुख शरधा भीन ॥ २७ ॥
पान बंदि पुन बिनै बखानी। 'जै पुरि महिं जिसकी रजधानी।
नाम न्रिपत जै सिंह सवाई। शाहि समीपी रहै सदाई ॥ २८ ॥
तिन अरज़ी कर जोरि गुज़ारी। नमसकार पद पदम उचारी।
रावरि दरशन तरनि मनिंद[2]। अंधकार गन कशट बिलंद ॥ २९ ॥
करति लालसा रिदे महानी। दीजहि आइ दरस इस थानी।
दिल्ली पुरि की संगति भारी। करहु निहाल आप इक बारी ॥ ३० ॥
कारन और एक इस मांहू। जै सिंह न्रिप अवलोवयो पाहू[3]।
कह्यो शाहु अवरंग ने ऐसे। गुरु हकारहु जैसे कैसे ॥ ३१ ॥
शाहु लिखाइ पठ्यो परवाना'। इम कहि नवीसिंद[4] दिय पाना।
लेकरि पठ्यो सुनायो गुर को। आशै लख्यो शाहु के उर को ॥ ३२ ॥
अरु भूपति की बिनै पछानी। दूती जेती भ्रात बखानी।
कारन सकल जानि मन मांही। श्री हरि क्रिशन जिनहु ग़म नाही ॥ ३३ ॥
संध्या लगि सभि सभा मझारे। दरशन देति थिरे सुख धारे।
गावति शबद भोग जबि पर्यो। किय अरदास मेवड़े खर्यो ॥ ३४ ॥
उठि सतिगुर गमने निज मंदिर। बैठे सेज मनोहर अंदर।
सने सने सगरे निज थान। पहुंचे नर समेत परधान ॥ ३५ ॥
'रामराइ मतसर को धरि कै। कीनसि दुती शाहु सिखरि कै।
सतिगुर श्री हरिक्रिशन हकारे। कीरतपुरि ब्रितांत बिसतारे ॥ ३६ ॥
'नहिं कीनि इह नीकी बात। अनुज साथ द्वैशी बख्यात।
लरकापन[5] महिं अहै सरीर। करै हकारनि नौरंग तीर ॥ ३७ ॥
दुशट महां बादी[6] दुखदाई। हठ बिलंद जो करति सदाई।
को जानहि क्या कहहि इनहुं को। द्वैखक भ्राता निकटि जिनहुं को ॥ ३८ ॥
संत फकीर गहिति जो घने। बहिस तिनहुं सो प्राननि हने।।
करति नही परमेस्वर त्रास। महां मूढ चहि शराह प्रकाश' ॥ ३९ ॥
इम कीरतपुरि मैं बहु कहैं। नहीं बात इह नीकी लहैं।
बनबन अहै सु किम बनि आवै। लघु बय सतिगुर, दुशट बुलावै ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिक्रिशन हकारन' प्रसंग बरननं नाम चतुर त्रिसति अंशु ॥ ३४ ॥

---

1. बन्दना, प्रणाम। 2. सूर्य की भांति 3. पास। 4. लेखक। 5. लड़कपन। 6. झगड़ालू।

अंशु ३५

दूत बाक कहनि प्रसंग

दोहरा

सुन्यो मसंदनि मेवरनि प्रचुर[1] भयो बिरतांत ।
श्री जननी ते आदि सभि करति चिंत बहु भांति ।। १ ।।

चौपई

जेतिक मुख्य हुते गुर घर के। सभि इकत्र होए धिृत धरि के[2]।
केतिक करे हकारनि आए। कितिक आप ही गे तिस थाएं ।। २ ।।
पहुंचे श्री माता के पास। नमों करहिं बहु बिनै प्रकाश।
बैठे ब्रिंद ब्रितांत बखाने। 'श्री हरि क्रिशन हकारनि ठाने ।। ३ ।।
दुशट बडो बादी हठ कूरो। नौरंग शाहु शरा को पूरो।
रोकि सभिनि को अजमत चाहे। नतु निज मत मैं ल्याइ उमाहे[3] ।। ४ ।।
पुन भ्राता तहिं मतसर भर्यो। जिन्हैं बुलावनि को मत कर्यो।
मिलि तिन[4], घात अनेक रचति है। अनुज बडाई देखि तचति[5] है ।। ५ ।।
श्री हरिक्रिशन बैस लघु तिनकी। तहिं सहाइता नांहिन जिनकी।
पिता धीर बैकुंठ सिधाए। सकल कला समरथ सुखदाए ।। ६ ।।
इह असमंजस[6] है सभि बात। हुइ तहिं कहां, न जानी जाति'।
इतने महिं चलि सतिगुर आए। बाल आरबल धीर ब्रिधाए ।। ७ ।।
हाथ बंदि सभि ह्वै करि ठाढे। निमहि प्रेम पद पंकज बाढे।
सतिकारति बिच सभि के बैसे। शोभति ग्यान मूरती जैसे ।। ८ ।।
श्री जननी बूझे सति भाइ। 'ह्रिदै आप के किम उपजाए ?
भ्राता ने बहु धारि शरीका[7]। सुजसु तुमारो लगहि न नीका[8] ।। ९ ।।
शाहि सिखाइ हकारनि करे। मम सम मिलहि द्वैश को धरे।
बनहि जाइबो तहां जरूर। नतु बधि बखेरो भूर ।। १० ।।

---

1. फैल गया। 2. साहस बटोर कर। 3. अपने मत में लेकर प्रसन्न होता है। 4. शासक से। 5 जलता है। 6. कठिन। 7. शत्रुता। 8. अच्छा।

नौरंग के नर छूछे जाहि। दुशट तबै रिस है मन मांहि।
रिदे हंकारहि ज़ोर करैगो। लशकर पठहि, बिरोध धरहिगो ॥ ११ ॥
बिगर जाइ पुन सुधरहि नांही। वुरा करति तिस बैसहिं पाही[1]।
कठन बनी, किम करहिं सुधारनि ? जिस ते हुइ अनंद को कारन' ॥ १२ ॥
सुनि कै श्री हरिक्रिशन सुजाना। सभिनि सुनावति बाक बखाना।
'नहिं मलेछ को दरशन दै हैं। हुइ समीप तिस को नहिं लै हैं ॥ १३ ॥
इही नेम पित कीनि हमारे। तिस प्रकार हम भी उर धारें।
निज बच पित जिम किय प्रति पारनि। तिम हम करहिं न हुइ है टारनि '॥ १४ ॥
अटल सुमेर टलहि नहिं जैसे। सतिगुर बाक अचल नित तैसे।
बिघन पौन ते किम चलि परै। सदा गंभीर धीर जे ढरै' ॥ १५ ॥
अचल बाक सुनि कै तिस काला। त्रसे मसंद रु मात बिसाला।
'पिता समान नेम जे धार्यो। तौ अबि सभि हूं काज बिगार्यो' ॥ १६ ॥
सभिनि जोरि कर बिनै बखानी। तुम सरबग्य सकल गुनखानी।
जथा होइ सभि हूं कहु नीकी। बात आपकी परहि न फीकी ॥ १७ ॥
करनी कार तथा तुम बनि है। मात आपकी गिनती गिनि है।
करीअहि सभि को सुख उपजावनि। इम इच्छा को ठटहु पुजावन ॥ १८ ॥
जे न करहुगे दिल्ली जाना। बादी नौरंग दुशट महाना।
बिगर परहिगे करहि कुचाली। इहां पठावहि सैन बिसाली ॥ १९ ॥
परहि बिरोध लगनि कहु भारी। नहिं ठहिर्यो किम जाइ अगारी।
सभि देशनि महिं राज तिसी को। रहिन देति आकी[2] न किसी को ॥ २० ॥
सुनिकै श्री हरिक्रिशन सभिनि ते। धीरज के समेत बच भनते[3]।
'श्री नानक जी नीकी करि हैं। सकल रीति के काज सुधरि हैं' ॥ २१ ॥
इम कहि उठि करि बाहरि आए। जहिं दरसहि संगति समुदाए।
जै सिंह न्रिप को दूत हकार्यो। सादर सभा मझार बिठार्यो ॥ २२ ॥
कह्यो तांहि सों 'हम प्रण एही। दरशन देहिं तुरक नहिं लेही।
कौन काज है साथ हमारे। जिस ते पठि करि दूत हकारे ॥ २३ ॥
पिता हमारे की जिम रीति। है सो सही न ह्वै बिप्रीत।
अंत प्रयंत निबाह्यो नेम। तैसे हम करि हैं सहि प्रेम ॥ २४ ॥
गुर घर ते अज़मत चहि शाहू। तिस हित गयो भ्रात पुरि मांहू।
जिम जिम नौरंग चाहति देखा। करामात तिम कीनि विशेखा ॥ २५ ॥
अबि लगि निकटि शाहु के रहै। कहि अवलोकहि जिम उर चहै।
बिना काज ते गमनि हमारो। किम होवहि निज रिदे बिचारो' ॥ २६ ॥

---

1. पास। 2. विद्रोही, बाग़ी। 3. बात करते।

बाक सुने श्री सतिगुर केरे। न्रिप मंत्री बोल्यो तिस बेरे।
'कर जोरति बहु करति निहोरनि[1]। 'सुनहु प्रभू ! तुम को कुछ लोर[2] न ॥ २७ ॥
सभि जग मंगत के तुम दाता। करामात को घर बख्याता।
तीन लोक तुमरे बसि अहैं। प्रेमी के बसि रावर रहैं॥ २८ ॥
यांते न्रिप जै सिंह सवाई। सहित प्रेम किय बिनै बडाई।
मो पर क्रिपा ठानि कै आवहु। करहु क्रितारथ दरस दिखावहु ॥ २९ ॥
मो कहु दास आपनो जानहु। अपर बारता रिदै न आनहु।
जबि दिल्ली पुर प्रविशहु जाइ। संगति सगरी दरशन पाइ ॥ ३० ॥
करहु आप फुरमावनि जैसे। हम अनुसारी बरतहिं तैसे।
मिलो शाहु सों जे रुचि होइ। जौ न रुचै तौ फिकर न कोइ ॥ ३१ ॥
मैं ढिग शाहु प्रत्तग्या करी। श्री हरिक्रिशन ल्याइ हौं पुरी।
सो रावर के बली पछानहु। मम डेरे महिं आवनि ठानहु ॥ ३२ ॥
मिलिबे कारन शाहु महान। हठ नहिं करहि शाहु लिय जानि[3]।
करति बारतालाप घनेरे। कहि श्री रामराइ जिस बेरे ॥ ३३ ॥
तबहि शाहु बोलति मैं लह्यो। कोमल हठ बिहीन ही रह्यो।
तऊ भ्रात तुमरे बहु कह्यो। तबहिं हकारनि को चित चह्यो ॥ ३४ ॥
हम नित जाति शाहु के पास। करहिं आपकी महिमा रास।
अलप आबल[4] बिखै शरीर। गुन महिं महिद आदि जे धीर ॥ ३५ ॥
जे हठ हेरहिं[5] नौरंग केरा। निकट मिल्यो चहि, फेर सुफेरा।
मैं हो बीच निवारनि करौं[6]। तुमरे हित महिं नित अनुसरों ॥ ३६ ॥
हिंदू जनम धरमग्य सदा हौं। बिप्रै करौं न आप कदा हौं।
जेकरि पिखति शाहु हठ करता। रहति निरालो बीच न परता ॥ ३७ ॥
रिदा शुद्ध मैं जान्यो जबै। दूत पठ्यो तुमरी दिशि तबै।
रावर के भ्राता बहु कह्यो। यांते तुमहु अनावन चह्यो ॥ ३८ ॥
दिल्ली महिं प्रविशहु इक बारी। हुइ हैं सभि तुमरे अनुसारी।
मिलनि शाहु को जे नहि चाहो। रहहु सदन मम, जाहु न पाहो ॥ ३९ ॥
मिलनि अमिलनि जथा तुम उर मैं। करहिं तथा, आवहु इस पुरि मैं।
इस प्रकार रहि है पति मेरी। दरग कामना पुरहु बडेरी ॥ ४० ॥
इम जै सिंह महीश महाना। बिनै कीनि मन प्रेम बंधाना।
अबि रावर के जिम चित आवैं। करहु कार तिम सभि हरखावें ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'दूत बाक कहनि' प्रसंग बरननं नाम पंचत्रिसती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. बिनती। 2. जरूरत। 3. शाह जब जान लेगा तो हठ नहीं करेगा। 4. छोटी आयु। 5. हटाता। 6. टाल दूंगा।

अंशु ३६

श्री हरिक्रिशन गमन प्रसंग

दोहरा

इम न्रिप जै सिंह दूत के बाक सुने सभि कान।
भगत वछल निज बिरद को सतिगुर सिमरनि ठानि ॥ १ ॥

चौपई

बिनै स प्रेम डोर के साथ। बंधमान होवति जग नाथ।
ऐंच्यो फिरति भगत के संग। त्यग न सकहिं सदा इक रंग ॥ २ ॥
कितिक काल जग गुर रहि मौन। कैस्यों दियो न उत्तर कौन[1]।
पुनहि भविख्यत सकल बिचारी। हुइ है जथा ईश गति भारी ॥ ३ ॥
सो बिचार करि चित महिं नीके। चलिबो चह्यो सु दिशि दिल्ली के।
तिस दिन पुन जे मुख्य मसंद। करे हकारनि सुमति बिलंद ॥ ४ ॥
सभिहिनि सों श्री मुख ते कह्यो। 'गमनि ब्रितांत कथं चित लह्यो।
परण अडोल हमारो एही। दरशन तुरक देहिं नहिं लेही ॥ ५ ॥
न्रिप जै सिंह की प्रीति घनेरी। बिनती कीनि बखानि बडेरी।
तिस को भाउ न फेर्यो जाइ। अनिक उपाइन प्रेम बढाइ ॥ ६ ॥
तिस को दूत न छूछो[2] फेरहिं। उचित, जाइ दिल्ली पुरि हेरहिं।
कैसिहुं बनहिं तहां सभि सहीऐ। सेवक को सु प्रेम निरबहीऐ ॥ ७ ॥
इम सुनि कै मसंद समुदाए। श्री मातादि भए हरखाए।
'मन वांछति सभिहिनि को भइऊ। रह्यो सूत, इमथिरता लइऊ[3] ॥ ८ ॥
जे नहिं जाति शाहु बड वादी। को जानहि क्या करति. प्रमादी।
कीरत पुरि बसिबे महिं तबै। संसै हुतो कहति ब्रिध सबै ॥ ९ ॥
अबि रस रह्यो, पुरी गमनै हैं। तहिं भी जै सिंह न्रिप सुरिझै[4] हैं।
इत्यादिक आपस महिं कहि कहि। चित थिर भए भली बिधि लहि लहि ॥ १० ॥

1. किसी को कोई उत्तर न दिया। 2. खाली। 3. टिकाव बना रहेगा। 3. प्रसन्न होगा।

ठहिरी ठीक गमन की एव। सरब सराहहिं श्री गुरदेव।
मसलत करति सु दिवस बितायो। त्यारी करनि हेतु हितलायो॥ ११॥
भई प्रभाति कीनि इशनाना। बसत्र बिभूखन पहिरे नाना।
सभा बैठि बुलवायहु दूत। बोले श्री हरिराइ सपूत॥ १२॥
'कह्यो प्रेम न्रिप को तैं नाना। यांते गमन करनि हम माना।
पुर महिं प्रविशे मिलि है जबै। बिनती सहित न कुछ कहि तबै॥ १३॥
मिलहिं न तुरक साथ तहिं कबिहूं। हम इह बात कहति ले अबि हूं।
इम पूरब लिखि पठि परवाना। सुमतिवंति भूपति परधाना॥ १४॥
तबि कर जोरे बाक उचारा। सुनहुं गुरु जी ! महद उदारा।
न्रिप की एक हकारनि कार। चाहति तुमरो कर्यो दिदार॥ १५॥
पुन रावर के रहि अनुसारी। नहिं कैसिहुं होवहि तकरारी[1]।
इह तो प्रथम मतो तिस केरा। भन करि लखहु आपनो चेरा॥ १६॥
लिखि पठिहों अबि कहे तुमारे। द्रिढ मत हुइ है जथा उचारे।
शरधालू भूपति कहु जानहु। हित करता नित बुधिमत[2] मानहु'॥ १७॥
इम सतिगुर की मरज़ी लखिकै। पठ्यो ब्रितांत सकल ही लिखिकै।
तुमरो प्रेम जानि भे त्यार। मिलहु इनहि जबि, रहु अनुसारि॥ १८॥
ज्यों मन होइ सु मुख ते कहिऐ। जो मुख कहहिं सु मन थिर रहीअहि।
सभि घट घट के जानणहारे। हेरहिं कपट त स्राप उचारें॥ १९॥
अपनो भलो जानीअहि जैसे। इन के साथ बरतअिहि तैसे।
शाहु निकटि जो तुम प्रन ठाना। ल्यावनि श्री गुर को इस थाना॥ २०॥
तोहि भाग ते पूरन भइऊ। को दिन महिं पुहुंचहिं संग लइऊ'।
इत्यादिक लिखि भेज्यो न्रिप पहि। पठि करि हरख भयो अति उर महिं॥ २१॥
जबि को पठ्यो हकारनि गुर को। मिट्यो न फिकर भूप के उर को।
निशचै जान्यो आवहिं इहां। जनु जल मिल्यो चहिति तरु महां[3]॥ २२॥
अधिक तिहावल[4] को बनवाइ। करि अरदास दीनि बंडवाइ।
बधी लालसा हेरनि केरी। मिले नीर जनु लता[5] बडेरी॥ २३॥
करति प्रतीखनि कबि पुरि आवहिं। बार बार लिख पत्र पठावहि।
बिनै लिखी पहुंचे गुर पास। अधिक बधावहि प्रेम प्रकाश॥ २४॥
न्रिप को दूत निकटि नित जाइ। चलिने हित अरदास कराइ।
अनिक प्रकारनि के कहि बैन। 'करहु क्रिपा सतिगुर सुखदैन'॥ २५॥

---

1. झगड़ा करने वाला। 2. बुद्धिमान। 3. जल के इच्छुक वृक्ष को जल मिल गया। 4. कड़ाह प्रसाद। 5. बेल।

सभी असवारी हाज़र करी। रुचिर पालकी नग गन जरी।
सीछति[1] हैं कहार जिस लागे। चलहिं उठाइ जांहि जनु भागे ॥ २६ ॥
सुंदर स्यंदन सकल सुहावनि। मखमल को उछार किय पावनि।
ज़रीदोज़ चमकाहिं सितारें। जनु असमान बिखै दुति तारे ॥ २७ ॥
चार चक्र[2] ते शबद गंभीर। जनु घन घोखति[3] सहत समीर[4]।
बली तुरंग संग जिस लागे। सहित बिभूखन जिन दुति जागे ॥ २८ ॥
दिन प्रति संगति देश बिदेश। होहि आगमनि भीर विशेश।
यांते त्यार भए रहि जाइं। इम बासुर कुछ दए बिताइ ॥ २९ ॥
नहिं अवकाश चलनि को पावैं। दौर दौर इक दुइ नर आवैं।
आइ आइ सो कहैं अगाऊ। 'गुर जी ! संगति है समुदाऊ ॥ ३० ॥
हम दस कोस छोरि करि आए। को कहिं बीस कोस पर छाए[5]।
को तिन ते पीछे बहु आवति। सिख्य हज़ारहुं भेटनि ल्यावति ॥ ३१ ॥
को दक्खण दिशि ते चलि आइ। को पशचम ते दरशन चाइ।
उत्तर पूरब देश घनेरे। चले आइं को गिनहि बडेरे' ॥ ३२ ॥
न्रिप को दूत कहति हित त्यारी। पठहि दूत, उत संगति भारी।
नित प्रति भीर सु होहि नवीन। दरसहिं दरशन गुरु प्रबीन ॥ ३३ ॥
इम केतिक दिन बीत गए हैं। दूत कहे पुन त्यार भए हैं।
श्री गुर नानक रिदे धिआए। कीरतिपुरि ते पुन निकसाए ॥ ३४ ॥
सिख सेवक चाले समुदाए। चहिय जि वसतू ब्रिंद उठाए।
तंबू गन कनात शमियाने। लादे उशटर[6] भार सु प्याने ॥ ३५ ॥
कुछक सैन गमनी गुर संग। शसत्र बसत्र महिं शुभति सुरंग।
भयो कूच धौंसा धुंकार्यो। बली तुरंगम दल शिंगार्यो ॥ ३६ ॥
फररा छुट्यो चारु नीसान[7]। चल्यो अगाऊ शुभति महान।
छूछा करि कीरति पुरि चाले। लीनसि संग समाज बिसाले ॥ ३७ ॥
नहीं आवनो पुन इस थाने। इक सतिगुरि ही उर महिं जाने।
आर कौन गति जानहि गुर की। जिस लखि चले तुरक दिशि पुरि[8] की ॥ ३८ ॥
न्रिप को दूत संग तबि चाला। कीनि सपूरन काज बिसाला।
उर मैं हरख भर्यो गुर ध्यावति। पूरब दिशि मुख करि मग जावति ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरि क्रिशन गमन' प्रसंग बरननं नाम खसट त्रिंसती अंशु ॥ ३६ ॥

---

1. सिखलाई प्राप्त। 2. पहिए। 3. गर्जता है। 4. वायु। 5. टिके हुए हैं। 6. ऊंठ। 7. सुन्दर झण्डा फहराने लगा। 8. तुर्कों की पुरी, दिल्ली।

अंशु ३७

संगत मिलनि प्रसंग

दोहरा

कीरतपुरि ते सतिगुरु प्रिथम सिवर को कीनि।
निसा बसे बिस्राम कै पुन प्रभाति को चीन ॥ १ ॥

चौपई

चलिबे कहु तयार जबि भए। लंमे देशनि के सिख अए।
मसतक टेकति अरज गुज़ारी। 'गुर जी ! संगति आवति भारी ॥ २ ॥
दरशन करि सिख जे घर जाते। तिनहुं सुनावनि कीनी बाते।
सतिगुर हैं तिआर उत जाने। सुनि करि मारग अधिक पयाने ॥ ३ ॥
श्रमति भए जहिं गमन्यों जाई। दरस लालसा रिदै बधाई।
इसत्री पुरख ब्रिद्ध गन बाल। आवति चाले श्रमति बिसाल ॥ ४ ॥
सभि मिलि हम को पठ्यो अगारी। दरस देहु गुर थिरता धारी।
निज संगति पर करुना कीजै। मग बिसाल आए लखि लीजै ॥ ५ ॥
चलत्यो मिल्या जाइ नहिं क्योहूं। उतलावति चालति मग ज्योंहूं।
संगनि थकति जानि थिर रहीअहि। बिरद सहाइक सेवक लहीअहि ॥ ६ ॥
श्री हरिक्रिशन गुरु गति दानी। सुनि संगति की बिनै महानी।
भए थकति थिरता कहु धारे। देति कामना संगति प्यारे ॥ ७ ॥
तिह ठां राख्यो सिवर मुकाम। बाल आरबल गुन गन धाम।
अगले दिवस संगतां आई। त्रिखति धेनु जनु जल हित धाई ॥ ८ ॥
बैठे सतिगुर लाइ दिवान। दरसहि संगत बंदन ठानि।
अनिक उपाइन को अरपावैं। हुई ठाढे अरदास करावैं ॥ ९ ॥
'अमकी मोहि कामना पूरी'। को कहि 'करे बिघन गन दूरी'।
को कहि 'सतिगुर मुझ सुत दीजे'। को कहि 'मम धन धाम भरीजे[1]' ॥ १० ॥
को कहि तन को कशट विदारहु'। को कहि 'शत्र गन निरवारहु[2]'।
अनिक कामना इम ते आदि। जाचति गुर ते उर अहिलादि ॥ ११ ॥

---

1. हमारे घर धन से भर दीजिए। 2. शत्रुओं का नाश करो।

धरि धरि रिदै कामना जैसी। दरसहि, सतिगुर पूरहि तैसी।
सत्यनाम कहु जाचति कोई। पदपंकज प्रेमी उर जोई॥ १२॥
श्री हरि क्रिशन क्रिपा जुति देखि। दासनि बांछत देहिं अशेख।
जथा जोग दीनो सिरु पाइ। पाइ प्रसादि[1] घरहिं उर भाइ॥ १३॥
संगति बिदा कीनि समुदाऊ। सादर सभि को रखि करि भाऊ।
आप गुरु पूरब मुख कीना। पहुंचनि हित पुरि मारग लीना॥ १४॥
तिस दिन गमने गए अगारि। कीनहुं सिवर निसा सुख भारी।
खान पान करि सुपते सभि हूं। भई प्रभाति त्यार भे तबिहूं॥ १५॥
मारग चले जाहिं समुदाई। जग गुर को बंदहिं जित जाई।
तिस दिन पुनहिं सिख्य कुछ आए। बंदति पाइनि बाक सुनाए॥ १६॥
'काबल अरु पशौर कशमीर। इत्यादिक देशनि नर भीर।
संगति आवति कई हजार। दरशन रावरि चाहिं उदार॥ १७॥
लाघव करति पंथ महिं आवति। सुनी तुमारी सुधि उत जावति।
यांते मारग चलहिं बिसाला। इक दिन टिके, मिलहिं तुम नाला'॥ १८॥
सुनि सतिगुर पुनि कीनि मुकामू। लखि संगति को प्रेम भिरामू।
करति प्रतीछन दरशन दैन। करुना भरे रसीले नैन॥ १९॥
दिवस आगले संगति आई। गावहिं शबद प्रेम अधिकाई।
बजहि म्रिदंग सतार दुतारे। पाइ राग धुनि ऊच उचारे॥ २०॥
सतिगुर बैठे लाइ दिवान। झूलति झंडा झमक महान।
चवर ढुरावति चारु चंदोवा। बाजति नौबत नादति होवा॥ २१॥
अरपनि लगे उपाइन ब्रिंद। दरब चढायहु भयो बिलंद।
हाथ जोरि अरदास करंते। निज निज कामन[2] सगल कहंते॥ २२॥
जथा जोग सतिगुर सभि कई। संगत कउ बिदाइगी दई।
अपर कहौं कहिं लगि बिवहार। सतिगुर अरु सिख्यनि की कार॥ २३॥
पुन सतिगुर मारग चलि परे। इक दुइ दिवस अगारी तुरे।
चलति चलति आए तिम थाएं। जहिं पंजोखरा ग्राम सुहाए॥ २४॥
डेरा कर्यो आइ करि जबै। सिख बिदेशी पहुंच्यो तबै।
खरे होइ अरदास उचारी। 'गुर जी! संगति आवति भारी॥ २५॥
इक दिन इहां मुकाम करीजै। प्रेमी सिख्यनि दरशन दीजै'।
सुनि श्री सतिगुर रिदे बिचारी। नितप्रति संगति पहुंचति भारी॥ २६॥

1. कृपा प्राप्त करके। 2. कामना।

हम को गमनति सुनि बहु धावहिं। मारग बिखै श्रमति अकुलावहिं[1]।
यांते कुछ उपाइ अस कीजै। सभि सिख्यनि कहि बाक थिरीजै ॥ २७ ॥

इतने महिं जै सिंह को दूत। आयो जहिं बैठे गुर पूत[2]।
नमसकार करि बैस्यो पास। हाथ बंदि बोल्यो अरदास ॥ २८ ॥

'कीरतपुरि ते जबि निकसाए। केतिक दिवस मुकाम बिताए।
इस प्रकार पहुंचहिं कब्रि जै कै। मग महिं दिह्र बहु काल बितै कै' ॥ २९ ॥

चहुंदिशि की गन संगति आवै। सभि दरशन चित चाहति धावैं।
करहु उपाऊ आप को ऐसे। मग महिं बहु दिन बितहिं न जैसे ॥ ३० ॥

सुनि सतिगुर ने धीरज दीन्यो। 'इम ही करहिं जथा तुम चीन्यों'।
उतर्यो हुतो जहां सभि डेरा। तहिं सिकता[3] थल सुंदर हेरा ॥ ३१ ॥

श्री सतिगुर चलि तिस थल बैसे। खेलनि लगे अपर सिस[4] जैसे।
सहित बिभूखन कोमल हाथ। शुभ कंचन के हीरनि साथ ॥ ३२ ॥

सिकता लगे सकेलनि रास। पसर्यो पर्यो प्रिथी चहुं पास।
इत उत हाथ चलाइ चलाइ। कर्यो ढेर उचो तिस थाइं ॥ ३३ ॥

चहुंदिशि ते निज कर सो प्रेरित। इक सम कर्यो दास गन हेरति।
जानहिं बालक लीला करिहीं। को बैठो को खरो निहिरही ॥ ३४ ॥

सिकता ढेर लाइ गुर कहैं। 'जो सिख हम को हेर्यो चहै।
सो इस थान लगो चलि आइ। करहि भावना सीस निवाइ ॥ ३५ ॥

ल्याइ उपाइन जो हम कारन। अरपहि इहां होहिं दुख टारनि।
खरो होइ अरदास करावै। सो नर हमरे पास पुचावै ॥ ३६ ॥

निशचा धर्हि इहां लगि आइ। आगे धरहि नहीं पुन पाइ[5]।
जो हम दरशन लाभ बिसाले। इस थल दरसे लहहि सुखाले ॥ ३७ ॥

हमरी आग्या कउ इम जानै। इस थल ते नहिं अग्र पयानै।
जिम हम सो मिलि प्रेम बढाइ। तिम इस थल ते फल को पाइ ॥ ३८ ॥

गन सिक्खनि सुख दैवे कारन। सभिनि सुनावति कीनि उचारनि।
इक निशान तहिं खरो कराइ। कुछक सिक्ख तिस थान टिकाइ ॥ ३९ ॥

इम सतिगुर जबि कीनि बखानी। 'धंन धंन' कहि सभि नर बानी।
तिस दिन करि मुकाम तहिं रहे। करहिं क्रिपा सिख्यनि दुख दहे[6] ॥ ४० ॥

---

1. रास्ते में चलते हुए थक जाने के कारण व्याकुल होते हैं। 2. पवित्र। 3. रेता। 4 दूसरे बालकों जैसे। 5. पैर, कदम। 6. दुःख जला दिए, दूर किए।

तबि संगति गन पहुंची आइ। देखति सिवर रिदे हरखाइ।
श्री सतिगुर सभि अंतरजामी। करे निहाल दरस दे स्वामी ॥ ४१ ॥
भाउ जानि करि संगति केरा। राख्यो गुर मुकाम निज डेरा।
पाछल पहिर लगाइ दिवान। बैठे सतिगुर सुंदर थान ॥ ४२ ॥
सभि संगति को दरशन दीनसि। पूरि कामना सिख्यनि कीनस।
जथा जोग पूरबली रीति। सकल करी हरखाइ सु चीत ॥ ४३ ॥

दोहरा

दरशन दे गन भेट ले बांछति सिख्यनि पाइ।
भई बिदा संगति तहां चित महिं मोद बढाइ ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'संगत मिलनि' प्रसंग बरननं नाम सपत त्रिंसती अंशु ॥ ३७ ॥

अंशु ३८

दिजबर प्रसंग

दोहरा

सकल बिताई जामनी भई पुनहि परभात।
करि शनान श्री सतिगुरु चाहति पंथ प्रयात[1] ॥ १ ॥

चौपई

तजि पंजोखरे ग्राम मसंद। 'अटकहि संगति इहां बिलंद।
गुर को बाक सुनावहिं श्रौन। आगे गमन करहि नहिं कौन ॥ २ ॥
इस थल दरशन करि हटि जाइ। इम सतिगुर की अहै रजाइ'।
इम सिक्खनि सों कहि गुर चाले। स्यंदन पर आरूढि सुखाले ॥ ३ ॥
बली तुरंग संग जिस लागे। गति चंचल जनु चलि हैं भागे!
अपर सुभट अरु महां मसंद। शसत्र बसत्र ते शुभति उतंग ॥ ४ ॥
सतिगुर के पाछे लगि चाले। दिन महिं गमनहिं पंथ बिसाले।
सिवर करहिं जामनि को पाइ। खान पान करि कै समुदाइ ॥ ५ ॥
सुख सों सुपतहिं निसा गुज़ारहिं। भई प्राति पुन पंथ समारहिं[2]।
गमनहिं मारग इसी प्रकारे। एक नगर तबि आइ अगारे ॥ ६ ॥
कर्यो सिवर तहिं उतरि परे हैं। वाहन पाए ज़ीन खरे हैं।
तहिं इक पंडित बिद्या घनी। बुद्धी बड हंकार सो सनी[3] ॥ ७ ॥
इक ते विद्या कहु मद भारी। बिप्र जाति मद रिदे मझारी।
अपने सम नहिं जानहि काहू। जो सविद्य बादहि[4] संग ताहू ॥ ८ ॥
बिजै करहि बहु मान घटावहि। विद्या बल ते मद उपजावहि।
सहज सुभाइक सो तहिं जाइ। जहिं सतिगुर डेरो उतराइ ॥ ९ ॥
इक सिख सों तबि बूझनि लागा। 'उतर्यो आनि कौन इस जागा[5] ?
किस थल ते आयो कित जाति ? कौन नाम है कहु सभि बात' ॥ १० ॥

---

1. मार्ग पर चलना। 2. संभालते हैं। 3. सहित। 4. झगड़ा करता है। 5. इस जगह पर कौन आकर ठहरा है ?

कह्यो सिक्ख ने 'सतिगुर अहैं। श्री हरिक्रिशन नाम जग कहैं।
श्री नानक गादी पर थित हैं। हरि अवतरे शुभति सम चित हैं' ॥ ११ ॥
सुनि सहि सक्यो न खुनस्यो मानी। मद सो अंधा बुद्धि हिरानी[1]।
कहि दिज 'भे श्री क्रिशन महाने। धर अवतरे सरब जग जाने ॥ १२ ॥
तिन ते भी निज नाम बडेरा। श्री हरिक्रिशन रखाइ बिखेरा[2]।
तिनहुं करी गीता सुभ ग्रंथ। जिह पठि सुनि नर चलहिं सु पंथ ॥ १३ ॥
तिह शलोक कै अरथ महाने। इन ते सो पि न जाहिं बखाने।
नाम धरावनि अहै सुखैन। तिनके गुन शुभ किस महिं है न ॥ १४ ॥
जे सारथ इह नाम धरावहु। करि गीता के अरथ सुनावहु।
नांहि ते कूर कहनि इन कोरो। हम नहिं मानहिं कहिबो तेरो' ॥ १५ ॥
सुनति सिक्ख कहि 'रहु तूं खरो। मैं अबि जाइ बूझिबो करों।
गुर समरथ हैं सभि ही भांति। दे उत्तर जो बूझहिं बात' ॥ १६ ॥
इम कहि सिक्ख गयो गुर पास। सिर निवाइ कीनसि अरदास।
दिज की कहिवत सकल सुनाई। 'खरो अहै, किम कहौं बुझाई[3]' ॥ १७ ॥
मुसक्यावति श्री मुख ते कह्यो। 'बिप्र अशरधक सो हम लह्यो।
चहित जि उत्तर दैबो तांही। करहु हकारनि हमारे पाही ॥ १८ ॥
जिम चित चहि तिम देहु बुझाई। तरकति महां मूढ की न्याईं।
बुद्धि बिलोचन निरमल चारु। होति भोतिआ[4] दुख हंकार ॥ १९ ॥
अपनि आप को लखनि बिसाल। इही अंध होवनि सभि काल।
द्रिशटि न आवहिं शुभ गुन ब्रिंद। मग प्रभु मिलनि सु दूर बिलंद ॥ २० ॥
इह दुख हतनि, बैद सतिगुर हैं। औखधि बाक बसाइ जि उर है।
बिप्र जाति उर बिद्या मद है। यांते अधिक अंध दुइ गद[5] है ॥ २१ ॥
सो इस को दुख हतहिं बुलावहु। सिख उपकार करति बिदतावहु।
सुनि करि गयो बिप्र सों भाखा। 'गुर ढिग चलहु बूझि अभिलाखा ॥ २२ ॥
सभि तुझ कहिबो जाइ सुनायो। सुनि श्री प्रभु ने निकट बुलायो'।
इम सुनि बिप्र चौंप करि चाला। संसै प्रशन बिचार बिसाला ॥ २३ ॥
गरबति बैठ्यो जाइ नजीका। पिखि बोले सोढी कुल टीका[6]।
'कहु दिजबर! क्या बूझ्यो चहैं। बिदत बतावहु जिम चित अहै' ॥ २४ ॥
दिज तबि कह्यो 'क्रिशन अवतार। रिदे जिनहुं के ग्यान उदार।
ब्रहम ग्यान मय गीता कीनसि। जिह पठि सुनिकै ले सभि चीनसि ॥ २५ ॥

---

1. बुद्धि भ्रष्ट हो गई। 2. फैला कर रखा है। 3. क्या कहकर समझाऊं। 4. मोतिया बिंद। 5. रोग। 6. सोढी वंश के शिरोमणि अर्थात् गुरु हरिकृशन जी।

तिन नामनि ते तुम अधिकायो। श्री हरिक्रिशन नाम रखवायो।
पुन गुर गादी पर थित अहो। गुरु नाम अपनो जग लहो ॥ २६ ॥
गीता बिखै प्रशन बड मेरे। उत्तर दिहु तुम सुने बडेरे[1]।
जो श्री क्रिशन बनावनि कीनि। अरथ करहु जे लेवौं चीन ॥ २७ ॥
सारथ जानो नाम तुमारो। नांहि त नीके नहीं निहारो।
श्री हरिक्रिशन सुनति बच कह्यो। 'बादी बिप्र जाति को लह्यो ॥ २८ ॥
जे करि हम तुझि अरथ सुनावहिं। तऊ कलपना अनिक उठावहिं।
धनी पुरखइह, भाग बली है। किनहुं पढाए भांति भली है ॥ २९ ॥
प्रथम पठी हुइ गी किस पास। इम जानहिं, नहिं हुइ बिस्वास।
यांते प्रथम कार इम कीजै। आप नगर महिं जाइ पिखीजै ॥ ३० ॥
जो अपठति हुइ मूढ बिसाला। तिह बुलाइ आनहु इस काला।
सो उत्तर दै है तुझ चाहति। जिन बूझनि हित नीत उमाहति' ॥ ३१ ॥
सुनि सतिगुर को बाक रसीला। बिप्र भयो मद ते कुछ ढीला।
गयो नगर महिं धीवर[2] हेरा। घर घर नित जल ढोइ घनेरा ॥ ३२ ॥
महां मूढ बोलिब नहिं जानै। पेट भरनि लौ कारज ठानै।
कारो बरन बसत्र तन फारे[3]। जिन पढते नर नहीं निहारे ॥ ३३ ॥
आप पढनि तौ जानहि कहां। बहु कुरूप मति मूरख महां।
तिह गहि बांह गयो समुझाई। 'इक कारज मेरो करि आई ॥ ३४ ॥
घटिका चारिक[4] महिं पुन आवहु। अपनो काज करनि लगि जावहु'।
इम कहि सग लिये चलि आयो। जहिं श्री सतिगुर बैठि सुहायो ॥ ३५ ॥
तिह बिठाइ बैस्यो करि चाऊ। बिसमति चाहति पिखनि प्रभाऊ।
चितवति प्रशन रिदे बडगाढे। इह धीवर की बुधि किम बाढे ॥ ३६ ॥
श्री हरिक्रिशन जानि मन केरी। क्रिपा द्रिशटि धीवर दिशि हेरी।
मुख मुसकावति बाक बखाना। बिप्र मनोरथ जिम उर ठाना ॥ ३७ ॥
सों तैं बूझनि करि कै अबि हूं। शंकति को उतर दिहु सभि हूं'।
समाधान करि नीके यांको। सूधो होइ सुनति मन बांको[5]' ॥ ३८ ॥

दोहरा

शासत्रग्य धीवर बन्यो सुरबानी[6] कहि तांहि।
'कसमिन शासत्र प्रब्रिति[7] दिज ! कहु पूरब मुझ पाहि' ॥ ३९ ॥

---

1. आप बड़े सुने जाते हैं। 2. झीवर। 3. फटे हुए। 4. चार घड़ी में। 5. टेढ़ा। 6. संस्कृत। 7. प्रवृत्ति।

चौपई

इत्यादिक सुर गिरा बखानी। ज्यों सविद्य[1] ह्वै बुद्धि महानी।
शंका प्रशन बिप्र मन जेई। करहि आप पुन उतर देई ॥ ४० ॥
शंका दसक हुती दिज मन मैं। तिन बीसक भाखी तिह छिन मैं।
ब्रिंद मसंद सुभट सभि जोवति। हेरि हेरि बिसमति चित होवति ॥ ४१ ॥
इह बड पठति बेद की बात। तन मलीन को जाति सनात[2]।
नहिं दिजबर को बोलनि दियो। सुनति बिलोकति तूशनि भयो ॥ ४२ ॥
नहीं प्रशन भी कछू उचारा। बिद्या मद जिस बडो अफारा।
जागे पूरब भाग बिसाला। भयो नंम्रि मन ते तिस काला ॥ ४३ ॥
हाथ जोरि कर पर्यो अगारी। करी डंडौत प्रेम करि भारी।
बोल्यो 'महिमा लखि अनूप। श्री हरिक्रिशन सु क्रिशन सरूप ॥ ४४ ॥
भेद न फुरति मोहि मन मांही। वही जोति तुम हो अन नांही।
भव सागर ते मोहि उधारहु। धारहु करुना बिरद संभारहु' ॥ ४५ ॥
सुनि बोले सतिगुरु अनूप। 'उत्तम जाती तुम दिज रूप।
पुन सबिद्य क्यों अनुचित ठानहु। सिमरन सतिनाम मन मानहु ॥ ४६ ॥
सुनि दिज ने गर सूत उतारा[3]। मैं भा सिख्य रावरे द्वारा।
नहीं जाति की मद मुझ रह्यो। एक आसरो तुमरो गह्यो' ॥ ४७ ॥
पुन गुर ने बरज्यो 'तिम रहीअहि। सिमरहु सत्यनाम गति चहीअहि'।
नहिं दिज मानै बारंबारी। कहै 'गही मैं शरन तुमारी' ॥ ४८ ॥
तबि सतिगुर के चरन पखारे। पाहुल[4] लई भयो अनुसारे[5]।
परमारथ भग नदरी[6] आयो। गुरु महातम को लखि पायो ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'दिजबर' प्रसंग बरननं नाम आठ त्रिंसती अंशु ॥ ३८ ॥

---

1. विद्वान्। 2. नीच जाति। 3. जनेऊ उतार दिया। 4. चरणामृत। 5. अनुयायी बन गया। 6. नजर आया।

अंशु ३६
श्री हरिक्रिशन पुरि प्रवेशन

दोहरा

जबि डेरे ते बहिर भा धीवर तिस छिन मांहि ।
पूरब सम मति महिं बन्यो ग्याता कछू न तांहि ।। १ ।।

चौपई

सतिगुर सुजसु जानि दिज सोऊ । जिसके रिदे ग्यान द्रिढ़ होऊ ।
सिख्य बन्यो निज जनम सुधारा । ह्वै सुतंत्र जग फिर्यों सुखारा ।। २ ।।
श्री हरिक्रिशन निसा तहिं बसि कै । प्राती भए त्यार कट कसि कै ।
दिल्ली के मग महिं प्रसथाने । पाछे सैना सकल पयाने ।। ३ ।।
धौंसा धुंकारति अगवाए । बोलति जाति नकीब सुहाए ।
सिवका[1] पर अरूढ़ि गुर चाले । दुहिदिशि ढोरति चमर[2] बिसाले ।। ४ ।।
बसत्र बिभूखन पहिरे सोहति । हाथ छरी फैरति मन मोहति ।
मारग महिं हेरति नर नारी । बालिक रूप होति बलिहारी ।। ५ ।।
एक दिवस मगि चलिबो रह्यो । जैंसिह दूत आनि तब्रि कह्यो ।
'लिख सुधि मैं अबि पठौं अगारी । सुनहि न्रिमित ह्वै हरखति भारी ।। ६ ।।
रावर के आवहि अगुवाई । सादर राखहि अधिक बडाई ।
बड समाज सों पुरी प्रवेशहिं । दरसहिं तुम को सिख्य अशेशहिं ।। ७ ।।
सुनि सतिगुर ने बच फुरमायो । 'मत हमरो जिम तुम लखि पायो ।
तैंसे तहां जाइ तुम भाखो । प्रण पूरन को अभिलाखों ।। ८ ।।
तुरकेशुर[3] सों मिलहिं न जैसे । उचित करनि को तुम हो तैंसे ।
आप जाइ समुझावहु राजा । हम आवति लै मिलहु समाजा ।। ९ ।।
गुर संगति को देह सुनाई । मुख्य मसंद मिलहिं सभि आई' ।
इम सतिगुर आइसु जबि दीनसि । दूत त्यार ह्वै चलिबे कीनसि ।। १० ।।
पंथ बिसाल उलंधि उताल । पुरि महिं पहुंच्यो आनंद नाल[4] ।
जाइ मिल्यो जै सिंह सवाई । सकल हकीकत[5] कथति सुनाई ।। ११ ।।

1. पालकी 2. चंवर 3. तुर्क शासक औरंगज़ेब 4. आनन्द सहित । 5. समाचार

'महाराज ! सुनि मेरी बात। रावरि भाग महद[1] बख्यात।
बहुत बार पूरब पतीआयो। अनबन कारज भी बनि जायो ॥ १२ ॥
इत आवनि को जिनहुं न आशै। किमहुं न मानहिं, कथं प्रकाशै।
सो तुम नाम सुनति चलिआए। दीन दुनी जो होति सुहाए ॥ १३ ॥
नहिं आवनि कहु कारन भारी। सुनहु आप मैं करहुं उचारी।
नहिं मलेछ को दरशन लेना। निकटि जाइ अपनो नहिं देना ॥ १४ ॥
प्रथम कीओ प्रन श्री हरिराइ। देहि अंत लौ सो निबहाइ।
गादी बैठी इनहुं प्रन कीना। पित सम चहैं न्रिबाह प्रबीना ॥ १५ ॥
किमहुं करति इत आवति नांही। जाइ प्रवेशति जंगल मांही।
मैं तुमरी दिशि ते कहि प्रेम। कर दरशन चाहति निज छेम ॥ १६ ॥
बारि बारि न्रिप बंदन ठानी। पुरहु पैंज मैं जथा बखानी।
शाहु निकटि सभि मैं करि आयहुं[2]। दीनबंधु तुम बिरद सदायहु ॥ १७ ॥
एक बार पुरि दरस दिखावहु। पुन चित चाह तथा सुख पावहु।
मिलनि शाहु सों रावरि मरज़ी। हम नहिं करैं बहुर कुछ अरज़ी ॥ १८ ॥
इत्यादिक बहु कीनसि बिनती। सुनति प्रेम तजि दीनसि गिनती।
दास समान जानि करि आए। जिन ढिग नित पहुंचहि समुदाए ॥ १९ ॥
संगति देश विदेश हज़ारनि। करहि प्रेम आनहि उपहारनि।
दरब पदारथ केर अंबार[3]। अरपहिं पद पंकज सिर धारि ॥ २० ॥
चतुर कुंट के सगरे देश। मानहिं जिन को लखहिं विशेश।
सभि की करहिं कामना पुरी। बालिक मूरति माधुर रूरी ॥ २१ ॥
कहो कहां लगि गुन तिन केरे। शबद सिंधु लघु गुनी बडेरे।
बड़े भाग रावर के भए। आइ जिसी ते दरशन दए ॥ २२ ॥
रहहु सदा आइसु अनुसारी। बिप्र होहु न. बनि हितकारी।
भ्राता रामराइ सम ताल[4]। सो अजमत के सिंधु बिसाल ॥ २३ ॥
लखि परंति धीरज सम भ्ररनी। महां गंभीर जिनहुं की करनी।
भोर होति अगवाऊ चलीए। सादर दे उपहारनि मिलीए ॥ २४ ॥
रहहु नंम्रि बाछति चित लीजहि। सहित प्रेम बहु सेवा कीजहि।
इत्यादिक सभि कथा सुनाई। संगति मिली जथा मग आई ॥ २५ ॥
सुनि सुनि राजा हरखति भइऊ। बंदहि मन करि शरधा लइऊ।
खिर्यो कमल सम बदन बिसाला[5]। कर्यो समाज त्यार ततकाला ॥ २६ ॥

---

1. महान। 2. मैं सारी बात कर आया हूं। 3. ढेर। 4. तालाब। 5. राजा का मुंह कमल की भांति खिल गया।

भई प्राति चढि चल्यो अगाऊ। गुरु सङ्ग पिखनि कउ चाऊ[1]।
अधिक सैन चढि चली पिछारी। मिल्यो जाइ द्वै कोस अगारी॥ २७॥
नगन चरन करि तजि असवारी। नम्रि होइ करि बंदन धारी।
श्री गुर शिवका तबहि थंभाई[2]। बूझी सकल कुशल न्रिपताई॥ २८॥
हाथ जोरि न्रिप सकल उचारी। गुर आइसु ते चढि असवारी।
सने सने गमनति पुरि ओरा। पिखति परसपर प्रेम न थोरा॥ २९॥
पुन मसंद ले संगति सारी। मिले आइ दे दे उपहारी।
सभिहिनि कहु समोध[3] करि नीके। बीच प्रवेशे पुरि दिल्ली के॥ ३०॥
जै सिंह पुरा हुतो जिस थान। जै सिंह लै तहिं कीनि पयान।
जिस जिस बीथी[4] जाति चले हैं। तिस तिस महिं नर होति खले हैं॥ ३१॥
कर जोरहिं अरू बंदन ठानहिं। देखि परसपर सुजसु बखानहिं।
'जो श्री रामराइ प्रथमाए[5]। तिन के भ्राता ए अबि आए॥ ३२॥
गुर गादी पर इसथित एही। अजमत धरि श्री नानक जेही।
बाल आरबल बुद्धि गंभीर। धीरन धीर सु पीरनि पीर[6]'॥ ३३॥
गरी बज़ारनि महिं चलि जाते। अनिक भांति नर बोलत जाते।
बडी भीर जुति चमर ढुरावति। मंद मंद सिवका गमनावति॥ ३४॥
गमनति जबि डेरा निकटायहु। जै सिंह भूप उतरि करि आयहु।
हाथ जोरि करि गुरु उतारे। चल्यो संग ले सदन मझारे॥ ३५॥
मंदर सुखद खशट रितु महीआ। चार प्रयंक डसायो तहीआ[7]।
आसतरन[8] बड बिसद बिछावा। रुचिर चंदोवा बंधि तनावा॥ ३६॥
सादर तहां जाइ बैठारे। निकटि सथित भा बंदन धारे।
हरख करनि कहु आपस मांहि। रूचिर बारतालाप कराहिं॥ ३७॥
सभि संगति को कह्यो मसंद। जो दरशन हित इकठी ब्रिंद।
'सफल बिलोचन करि हहु काली[9]। इम मरज़ी सतिगुरु बिसाली॥ ३८॥
सुनि आइसु पुरि के सिख जेई। करिकै बंदन तहिं ते तेई।
आप आपने सदन सिधारे। 'दरशन करि है फेर सकारे'॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दशमि रासे 'श्री हरि क्रिशन पुरि प्रवेशन प्रसंग बरननं नाम नव त्रिंसती अंशु॥ ३९॥

---

1. चाव। 2. श्री गुरु जी की पत्रिका तब पकड़ा दी। 3. उपदेश। 4. गली, रास्ता। 5. पहले आए थे। 6. धैर्यदान और गुरुओं के गुरु हैं। 7. वहाँ एक सुन्दर पलंघ बि छवाया। 8. बिछौना। 9. कल को।

अंशु ४०

श्री हरिक्रिशन प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरु पुरी प्रवेशे जाइ ।
सरब भांति की सेव करि हरख्यो जै सिंह राइ ॥ १ ॥

चौपई

खान पान कर बिबिध प्रकारे । करी जामनी सैन सुखारे ।
उठति भए पुन बडी सकारे[1] । सकल सौच जुति मज्जत बारे ॥ २ ॥
जैपुर नाथ सु पोशिश पाए । चहिति शाहु ढिग खबर बताए ।
प्रथम आइ श्री गुरु समीप । पद पर बंदन कीनि महीप ॥ ३ ॥
'शाहु निकटि मैं चाहति जायो । नमो हेतु रावर के आयो ।
सहित प्रसंसा सुधि कहि दैहौं । नंम्री भूत भले तिस कैहौं' ॥ ४ ॥
सुनि सतिगुर तिस कह्यो बुझाई । 'हमरो मेल न बनहि कदाई[2] ।
इम कहिबो सुनिबो तुम करना । तुरकेशुर संग बनहि न अरना[3] ॥ ५ ॥
तोरि प्रीति करि हम चलि आए । करनो प्रन को दूत सुनाए ।
शाहु समीप राखियो पति को । चलि इक बार कीजीए हित को ॥ ६ ॥
इत्यादिक सुनि कै तव आशै । मिले आइ इक प्रेम प्रियासै[4] ।
नाहिं त किमहुं न आवन होइ । करिओ प्रन[5] हम पूरहिं सोइ ॥ ७ ॥
तुरक दरस लेनो नहिं देना । इह द्रिढ़ जानहु कबहूं चले ना ।
निज निशचो हमने कहि दीनसि । तूं बुधिवान लेहु मनि चीनसि' ॥ ८ ॥
इम द्रिढ़ मति सुनि कै गुर केरा । सोचति जै सिंह राव घनेरा ।
मसतक टेकि शाहु ढिग गयो । सभा मझार प्रवेशति भयो ॥ ९ ॥
कर जोरति कहि बाक सुनायो । 'मो संग रावर ने फुरमायो ।
श्री हरिक्रिशन पुरि महिं ल्यावहु । सभि संगति कउ दरस करावहु ॥ १० ॥
करामात के धनी बडेरे । उतरे आइ सदन महिं मेरे ।
आगे मरजी दुह दिशि जैसी[6] । करिबे बिखे आइ है तैसी ॥ ११ ॥

---

1. बड़ी सवेर । 2. कभी भी । 3. टक्कर लेना । 4. प्रेम की आशा करके । 5. प्रण । 6. दोनों ओर की परस्पर इच्छा ।

सभा बिखे मैं जिस बिधि कह्यो। तिम पूरन भा आनंद लह्यो।
सुनति शाहु ने इक उमराव[1]। दे कुछ दरब पठ्यो तिस थांव ॥ १२ ॥
'जाफत[2] देहु बदगी करिकै। बहुरो बूझ्यो बिनै उचरिकै।
दरशन परसनि करिबो कबै। मिलनि होहि तुम भाखहु जबै' ॥ १३ ॥
इम सुनि सतिगुर के ढिग गयो। अंतर सुधि पहुंचावति भयो[3]।
'पठ्यो शाहु ने अपनि मुसाहब। आयो चहति निकटि गुर साहिब' ॥ १४ ॥
श्री हरिक्रिशन सुन्यो जबि आवा। आगै अपनि कनात तनावा।
सुभटनि गन दीवान लगायो। वहिर कनात सु दिये बिठायो ॥ १५ ॥
महां मसंद मेवरे खरे। संगति की अरदासनि करे।
दिल्ली पुरि के सिख सभि आवें। भांति भांति भेटनि अरपावें ॥ १६ ॥
पढ़हिं रबाबी[4] शबद स राग। सुनहिं प्रेम ते जिन बडभाग।
चवरदार ले चवर ढुरावति। सिख दरसहिं मन मोद उपावति ॥ १७ ॥
तिह छिन अंतर आनि प्रवेशा। पठ्यो मुसाहिब जो तुरकेशा।
शुभत सभा महिं कहि बैठारा। मसतक टेकनि मुखहुं उचारा ॥ १८ ॥
अपनि शाहु की अरज गुज़ारी। दरब पुचायहु धर्यो अगारी।
'इह जाफत हित तुम कउ दीना। अर चाहत है दरशन लीना ॥ १९ ॥
जिम रावर की होइ रजाइ[5]। त्यों मैं कहौं शाहु संग जाइ।'
थित कनात के अंतर अहे। श्री हरिक्रिशन बाक सुनि कहे ॥ २० ॥
'बडो भ्रात हमरो सभि लाइक। जिम चाहति तिम अजमत दाइक।
सो नित पहुंचति है ढिग शाहू। जिम बूझति उत्तर दे पाहू ॥ २१ ॥
सतिगुर पूरन पिता हमारे। तिन को बरतहिं हुकम बिचारे।
श्री मुख ते इम कीनि उचारन। भलो होनि हित सीख सिखारन[6] ॥ २२ ॥
बडो भ्रात मतिवंत तुमारा। गयो पुरी महिं शाहु हकारा।
लायक को लखि तिसहि पठायो। करामात महिं अधिक बनायो ॥ २३ ॥
जथा शाहु चाहै गो हेरा। सो दिखाइ है सुघर[7] बडेरा।
तुम ने तहिं पहुंचनि की चाहू। नहिं करनी अपने मन मांहू ॥ २४ ॥
किसी हेतु करि दिल्ली जावहु। सिख संगति को दरस दिखावहु।
तऊ शाहु संग मेल जु करना। इह न मनोरथ करहु अचरना ॥ २५ ॥

---

1. मंत्री। 2. भोज। 3. अंदर जा कर खबर की। 4. कीर्तन करने वाले (डोम)। 5. जैसे आपकी इच्छा हो। 6. हमें भला बनाने की शिक्षा देने के लिए। 7. समझदार।

एक सथल होवनि जुग भ्रात। मतसर उपजहि उर बख्यात।
अपर सखा नहिं भ्रात समान। जे करि हिरदै प्रेम महान ॥ २६ ॥
भाइ पनो महिं मुखता अहै। राम लखन आदिक जबि कहै।
सहति प्रेम के जहिं जुग भाई। दुलभ बात सो भी बनि जाई ॥ २७ ॥
दुतीए सुनहु भ्रात सम बैरी। अपर नहीं खोटो सिर पैरी।
दसमुख[1] भ्रात बभीखन भयो। बाली अर सुग्रीव जु थियो ॥ २८ ॥
दारशकोह शाहु को भ्राता[2]। बुरिआई इन कीनि बख्याता।
इत्यादिक जग भए अनेक। गिनहि सभिनि, को करहि बिबेक ॥ २९ ॥
जो नहिं मरति किसू के मारे। सो भ्रातनि छन करि संघारे।
इम लखि करि उर पिता हमारे। भिलनि शाहु सों कहि हटकारे ॥ ३० ॥
इती शकति इम धरहिं न कैसे। पिता बाक तजि बरतहिं जैसे।
कह्यो गुरनि को द्रिढ़ बड माना। जिम सुमेर नहिं कबहुं पयाना[3] ॥ ३१ ॥
प्रान जानि लौ बच महिं रहि हौं। नहीं चलाइ मानता लहि हौं।
इह आशै हमरे उर केरा। कहहु शाहु सों इमहु बडेरा ॥ ३२ ॥
इह सभि बात देहु समुझाई। पित आइसु नहिं चलहिं सदाई।'
सुनि उमराउ बाक गंभीर। 'बैस अलप महिं बुधि बरबीर[4] ॥ ३३ ॥
दीरघ दरशी महद महाने। करामात साहिब पहिचाने।
नांहि त पातिशाह को संग। को नहिं चाहति सहित उमंग ॥ ३४ ॥
जिसु ढिग जैबे महद बडाई। तिस करिबे कउ नहि ललचाई।
आज जगत महिं कोइ न ऐसे। हित करि शाहु हकारहि कैसे ॥ ३५ ॥
नहिं मानै धीरज धरि रहै। इनके सम एही इक अहैं।
हिंदू तुरक पीर गुर होई। कहै शाहु, नहिं अटकहिं कोई' ॥ ३६ ॥
करि तरीफ[5] उमराउ बडेरी। हाथ जोरि बंदे तिस बेरी।
बिसमय होइ गमनि को ठाना। रिदे बडाई गुनति महाना ॥ ३७ ॥
जाइ शाहु संग कीनि सलाम। कही हकीकत गा जिस काम।
'करी आप पर खुशी घनेरी। भनी प्रत्तग्या अपनि बडेरी ॥ ३८ ॥
पित आइसु हमरे गिर[6] जैसी। चले न बिघन बायू बहि कैसी'।
इत्यादिक सभि बात सुनाई। जिम भ्रातनि की होति सदाई ॥ ३९ ॥

1. रावण। 2. दाराशिकोह, औरंगजेब का भाई। 3. जैसे हिमालय दृढ़ है।
4. बलवान। 5. प्रशंसा। 6. पहाड़।

सुनि नौरंग समुझ्यो मन मांही। इह गंभीरता अति लखि पाही।
बडे भ्रात को आशै कहां। कहि बुलवाइ मतसरी महां ॥ ४० ॥

तऊ छिमां जुति इनकी बानी। नहीं द्वैश की बिधि किमि ठानी।
अर गादी पर बैठ्यो जोई। अज़मत बिखे अधिकता होई ॥ ४१ ॥

तिन की रुचि के बिना बुलावनि। मुझे को नीक न करवि अवाहन।
इम समुझ्यो नौरंग मति करिकै। होयो तूशनि रिदै बिचरि कै ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिक्रिशन' प्रसंग बरननं नाम चतवारिंशति अंशु ॥ ४० ॥

अंशु ४१

रामराइ प्रसंग

दोहरा

दिल्ली पुरि की संगतां आइ उपाइन ल्याइ।
दरशन परसैं गुरू को चहैं कामना पाइ ॥ १ ॥

चौपई

तन के रोगी तप, द्रिग, खांसी। महिमा सुनति जाहिं गुर पासी।
धरहिं रिदै शरधा सुखरासी। दरसति रुजगन तुरत बिनासी[1] ॥ २ ॥
गुर सिख्यनि के जबि दुख गए। अपर समीप तिनहुं सुनि लए।
रुज[2] पीड़ति तन संकट पाए। सुनति सुजस गुर शरन सिधाए ॥ ३ ॥
द्रिग[3] ते दिखहिं न दरशन जावद। अनिक रीति रुज पीड़हिं तावद।
चारु मुखारबिंद जबि दरसैं। तातकाल हुइ आवति हरशैं ॥ ४ ॥
पुरि महिं घर घर कीरत फूली। मनहुं मालती बिगसति झूली।
सुनि सुनि पहुंचति हैं रुजवारे। भरी भीर रहि सतिगुर द्वारे ॥ ५ ॥
होहि रोग को, दोख बिनाशे। जिम तम तोम तरनि के पासे।
दरशन सफल होति गुर केरा। पसर्यो पुरी ब्रितांत बडेरा ॥ ६ ॥
इक दिन सभा सुभट गन केरी। शसत्र बसत्र युति सजति घनेरी।
महां मसंद धनी दिशि एक। बैठहिं सतिगुर निकट अनेक ॥ ७ ॥
खरे मेवरे हुइ अरदास। कर जोरहिं सिख ठाढे पास।
को मांगहि 'सिमरनि सतिनामु'। को जाचति 'सुखु, सुत, धन, धाम' ॥ ८ ॥
को मन ते ही मांगन करे। को मुख ते करि बिनै उचरे।
सतिगुर व्याप रहे सभि मांहि। जानहिं सभि की दे पुन तांहि ॥ ९ ॥
अनिक भांति रुजगन को डेरा। पुरि ते उठि गमन्यो तिस बेरा।
ज्वर अदिक रूज कहि लौ कहैं। नहीं सथिरता तिस थल लहैं ॥ १० ॥

---

1. दर्शन करने से अनेक व्यक्तियों के रोग दूर होते हैं। 2. रोग। 3. आंखों से।

जहिं कहिं मिलि नर नारि कहंते । 'परम पुरख इन पुरि दुख हंते ।
बडो भ्रात सभि अजमत लाइक । तऊ दिखाइ तुरक गन नाइक ॥ ११ ॥
इह तो सभि दीननि के दानी[1] । दरशन दिखे दोख दुख हानी ।
इत्यादिक जसु भनति सुनति हैं । महिमां सभिते अधिक गुनति हैं ॥ १२ ॥
गुर सिमरे पुन इक दिन शाहू । करति बारतालाप जि पाहू ।
सुजसु बखान्यो सतिगुर केरा । 'पुरि ते नाश कीनि रुज डेरा ॥ १३ ॥
महां गंभीर धीर सुख सागर । बय लघु बुद्धी ब्रिध, बड नागर ।
सरब लोक जसु पावन कहैं । धनी रंक जिन को सम अहैं' ॥ १४ ॥
इतने महिं जेठो गुर तात[2] । नाम सु रामराइ बख्यात ।
सुनि सुनि अनुज सुजसु सुख नांही । जथा बिलोकि चंद्र ब्रिहुमाही[3] ॥ १५ ॥
सभा मझार आइ सो गयो । जथा जोग तहिं बैठति भयो ।
अनुज प्रसंग सुन्यो जसु केरा । मतसर पावक ज्वलति बडेरा ॥ १६ ॥
मम कीरति ते हुए अधिकाई । सुनहि शाहु मुझ ते फिरि जाई ।
हट्यो न आवनि ते, चलि आयो । गुरगादी पाइ न त्रिपतायो ॥ १७ ॥
शाहु समीप रहनि को चाहति । लेनि बडाई दरब उमाहति ।
मुझ सम होइ कि हुइ अधिकाई । करामात कुछ देहि दिखाई ॥ १८ ॥
अबि लौ पुरि महिं मम बडिआई । हुती बिसाल बधति अधिकाई ।
तिह रोकनि कहु इह चलि आए । अपनि प्रभाव बिलंद दिखाए ॥ १९ ॥
इह तो मो ते जरी न जाइ । दै हौं स्राप देहुं बिनसाइ ।
अपर उपाइ चल्यो नहिं कोई । बुरी करति भल होवति सोई ॥ २० ॥
इहां बुलायहु काज बिगारनि । सो न भयो सभि कीनि सुधारनि ।
शाहु समीपी तिह जसु कहैं । अपरनि की क्या गिनती अहै ॥ २१ ॥
मुझ ते करहि बडो अधिकारा । मम जसु हुइ है अलप अकारा[4] ।
सिख संगति फिर जावहिं सारे । देखा देखी अपनि मझारे ॥ २२ ॥
याते इन को रहनि न नीको । इस ते बधहि मोहि दुख जीको ।
इत्यादिक नित गटी गिनंता । जबि के पुरि प्रविशे दुख हंता[5] ॥ २३ ॥
शाहु समीप सुनति जसु सुंदर । जर बर गयो रिदे के अंदर ।
कहनि लग्यो सभि सभा मझारी । 'जिह तुम कीरति करति उचारी ॥ २४ ॥
बालक बय महिं बिघन बिसाले । आदि सीतला करती काले[6] ।
इन ते उबरनि दुशतर अहै । बडे होनि पुन पाछे लहै ॥ २५ ॥

---

1. गरीबों के दाता । 2. गुरु जी का बड़ा भाई । 3. वियोगिनी । 4. आकार (मेरे यश का आकार छोटा है) । 5. दुख दूर करने वाले (गुरु जी) । 6. मौत लाती है ।

दोहरा

खाज[1] सीतला को अहै कहां भयो जे आइ।
किम उबरै जबि निकसि है समा भयो निकटाइ ॥ २६ ॥

चौपई

नहीं सीतला निकसी आगे। अबि निकसै तौ प्राननि त्यागें।
जबि उबरहि तबि जीवन आसा। तौ लगि नहिं तिन को भरवासा ॥ २७ ॥
नौरंग सहित सुनति बिसमाए। द्वैश अनुज सों स्राप अलाए।
हम सों नहिं मिलि बे तिस चाहू[2]। तऊ दुखहि छोभति मन मांहू ॥ २८ ॥
अलप आरबल छिमा करति है। इह जेठो हौरवति धरति है[3]।
लखी जाइ इन महिं बिप्रीत। हौरत्र अरु गंभीर जु चीत ॥ २९ ॥
इत्यादिक सभि रिदे बिचारति। सुनि कै नौरंग शाहु उचारति।
'क्यों तुम रिसहु भ्रात ढिग[4] जाने। हम संग मेल नहीं सो माने ॥ ३० ॥
पूरब कहति अबाहनि तांही। अबि क्यों दुखहु आवत्यों पाही।
होहु सुशील करहु निज मेला। आपस महिं नहिं कहो दुहेला[5] ॥ ३१ ॥
तुम दोनहु के निफल न बैन। कहो सु होइ दुख कै सुख चैन।
अबि रिस करि बोलहु जिम आप। उचरहिं सोपि, परहि संताप ॥ ३२ ॥
छिमा करे सुख प्रापति दोऊ। सिख सेवक मानहिं सभि कोऊ।
हिंदुनि महिं तुम सुजसु बिसाल। अरपहिं धन को शरधा नाल' ॥ ३३ ॥
सुनि श्री रामराइ पुन कह्यो। पित को सभि समाज तिन लह्यो।
द्वै बिसत शत[6] बली तुरंग। बहुत समाज अपर तिन संग ॥ ३४ ॥
स्यंदन शिवका बाहन घने। सदन समग्री को सभि गिने।
अनिक पदारथ पित के लीने। मुझ को सभि ते खारज[7] कीने ॥ ३५ ॥
अबि दिल्ली पुरि संगति सेवा। सभि को आनि वन्यो गुरु देवा।
अपर कहां लग कहौं घनेरे। नहिं ऐश्वरज चाहतो मेरे ॥ ३६ ॥
सभि बिध सों मेरो अधिकारा। अबि लौ जहिं कहि करति संभारा।
सुनि कै शाहु सभा सभि कहिई। 'तुम जेठे को छिमा सु चहिई' ॥ ३७ ॥
सभि ने कहि नीके समुझायो। मतसर[8] करति न किस को भायो।
सभा बिखै इम भा बिरतांत। कहति सुनति सभि निज घर जाति ॥ ३८ ॥

---

1. चेचक का खाना अर्थात् चेचक द्वारा मौत। 2. इच्छा। 3. हलकापन धारण करता है। 4. पास। 5. दुखदाई (वाक्य)। 6. बाईस सौ। 7. खाली कर दिया, निकाल दिया। 8. ईर्ष्या।

पसर्यो पुरि महिं जहिं कहिं भाखति। दोनहुं पक्खनि कहु सिख राखति।
को कहि 'श्री हरिक्रिशन बडेरे। थित गादी पर गुन बहुतेरे॥ ३९॥
छिमा आदि तिनहूं महिं पईअति। करामात महिं अधिक लखईअति।
'को कहि रामराइ बड नंद। करामात दिखराइ बिलंद॥ ४०॥
इत्यादिक सिख झगरा पाई। भाखहिं लघुता अरु बडिआई।
तऊ गुरू हरिक्रिशन महाना। उदै होति नित भानु समाना[1]॥ ४१॥
निंदक सम उलूक[2] दुख पावति। सिक्ख तामरस[3] बिकसि सुहावति।
जहिं कहिं होति बडी बडिआई। इत्यादिक गुन लखि समुदाई॥ ४२॥
भरी भीर रहि सतिगुर द्वारे। होहिं अरुज[4] आनहिं उपहारे।
बंदहिं बोलहिं बडि बडिआई। जपहिं नाम दरसहिं सुख पाई॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'रामराइ' प्रसंग बरननं नाम एक चतवारिसती अंशु॥ ४१॥

---

1. हर रोज़ सूरज की भांति प्रकाश देते हैं। 2. उल्लू की भांति। 3. कंवल।
4. नीरोगता।

अंशु ४२

श्री हरिक्रिशन प्रसंग

दोहरा

अगली भई प्रभाति जबि सौच समेत शनान।
करि बैठे श्री सतिगुरू जिन दरशन सुख खान ॥ १ ॥

चौपई

आदि गुरबखश मसंद बिलंद। अरु पुरि के सिख सेवक ब्रिंद।
सभि मिलि करि दरशन कउ आए। करि जोरहिं पग सीस निवाए ॥ २ ॥
दरशन पर होवति बलिहारी। उर शरधा धरि करि नर नारि।
बाल आरबल माधुर मूरति। दिपति बिभूखन सुंदर सूरति ॥ ३ ॥
चपल बिलोचन बोलति बाती। दंत पंकती हीरन क्रांती।
जिस दिशि देखति द्रिगनि चलाए. रुज हरि, जनु अंम्रित बरखाए[1] ॥ ४ ॥
'धंन गुरु गुर धंन' उचारें। 'सुखद सुशील सिख्य हितकारें।'
तिस छिन महिं गुरबखश मसंद। बोल्यो बाक हाथ जुग बंदि ॥ ५ ॥
'पुरि महिं बिदति बिलद ब्रितांत। मिलि मिलि करति परसपर बात।
नौरंग शाहु सभा महिं काली[2]। जिकर आपको भयो बिसाली ॥ ६ ॥
बडो भ्रात तुमरो तहिं गयो। तिन भी कहनि सुननि बहु कियो।
हुतो बीच तहिं जैपुरि नाथ। सुनी होइगी सगली गाथ ॥ ७ ॥
जथा जोग सो कहे सुनाइ। सुनी सुनाई कहीअहि काइ।'
एक बारतालाप करंते। बोले सतिगुर धीरज वंते ॥ ८ ॥
'जिम भाणा[3] परमेशर केरा। होइ अवश्य, फिरै नहिं फेरा।
किसकी स्यानप चलि है नांही। पचहिं सिआने बुधि बल मांही ॥ ९ ॥
अंगीकार[4] सभिनि कहु सोई। जिम रज़ाइ ईश्वर की होई।
सहिज सुभाइक होइ सु होइ। हरखहिं हेरि भगत जन जोइ ॥ १० ॥

---

1. रोग को दूर करने वाले गुरु जी अमृतवर्षा करते हैं। 2. कल। 3. प्रभु की आज्ञा। 4. अंग रक्षक।

बेमुख दोश अरोपहिं हरि मैं। लखहिं आप को आछो उर मैं।
जो परलोक सुधार्यो चाहति। भाणो मानि प्रसंन उमाहति॥ ११॥
सतिनाम को सिमरहिं सदा। तन हंता कउ त्यागहिं तदा।
केतिक दिन इस लोक मझारा। पुन पहुंचति हरि प्रभु के द्वारा॥ १२॥
परमारथ कहु सदा संभारति। इस जग लागि जनम नहिं हारति।
सतिगुर अंग संग तिस रहैं। इम सो भवसागर तट लहैं॥ १३॥
चतुर घटी[1] बीती इस भांति। गुरउपदेशनि की कहि बात।
इतने महिं जै सिंह सवाई। आइ निकटि निज ग्रीव निवाई॥ १४॥
बैठ्यो सतिगुर केर समीप। सभिनि बिलोक्यो महां महीप।
तबि गुरबखश हाथ को जोरि। बोल्यो अवलोकति न्रिप ओर॥ १५॥
'प्रिथीनाथ जी! शाहु सभा की। कहहु बारता सुनी तहाँ की।
किम प्रसंग होयहु गुर केरा?। जबि बैठ्यो गुर नंद बडेरा॥ १६॥
सकल पुरि महिं घर घर लह्यो। किनहूं किम किनहूं किम कह्यो।
जथा जोग सुनि बाक तिहारे। तबि हम निशचो करि उरधारें॥ १७॥
सुन्यो सभा महिं रावर सभै। सतिगुर निकटि कहो तिम अबै।'
सुनति राउ ले दीरघ स्वास। सिर धुनि कीनसि बाक प्रकाश॥ १८॥
'कहौं कहाँ कुछ कही न जाइ। नाहक[2] द्वैश बिशेश उपाइ।
मैं ढिग शाहु अपर उमराव। करति सहारनि इनहुं सुभाव॥ १९॥
रामराइ इतने महिं आए। सुनति सुजसु गुर उर बिसमाए।
पूरब चहति हीनता करी। भरी बड़ाई जाइ न जरी॥ २०॥
चहति न शाहु इनहिं बुलवाए। बार बार कहि तांहि अनाए।
आवति पुनहिं द्वैश को ठाना। बैठि सभा महिं बाक[3] बखाना॥ २१॥
खाज सीतला को सिस[4] अहै। गुरता कहां करहि, म्रितु लहै।
इत्यादिक बोल्यो दुख पाइ। इन की महिमा जरी न जाइ[5]'॥ २२॥
श्री हरिक्रिशन अछोभ बखानैं। ''जे नहि कहैं त कुछ नहिं जानें।
यां ते हम भी तिस को कहैं। अपनि कहिनि को जिम फल लहै॥ २३॥
तुरकेशुर सों हम नहिं मिलि हैं। क्यों मतसर ज्वाला सो जल है।
यांते जबि लगि जीवति रहै। तन मन ते जलनो बहु लहै॥ २४॥
चित चाहति संतति[6] बहु मेरी। पुजहि[7] जगत महिं फलहि बडेरी।
हारहि करतो व्याह उपाइ। तऊ पुत्र कहु किमहुं न पाइ॥ २५॥

---

1. चार घड़ी। 2. व्यर्थ। 3. अभिशाप। 4. शिष्य, सिक्ख। 5. सहन नहीं की जाती। 6. सन्तान। 7. पूजी जाएगी।

रहै अपुत्र बिसूरति जीवहि। सुख संतति को कबहुं न थीवहि।
अवगति म्रितु होइ है ऐसे। जिस ते जानि सकहि नहिं कैसे ॥ २६ ॥
अवरनि की इह म्रितू बतावै। निज म्रितु बिरवै ग्यान बिसरावै।
तीनहुं स्राप हमारे सहै। मिटहि न किमहु जतन[1] करि रहै ॥ २७ ॥
हमरे जीवन मरन समान। तन इह नाशवंत पहिचान।
जो जनमैं सो निशचै मरि है। मूरख जियनि आस कहु करि है ॥ २८ ॥
हम सुनि स्राप छिमा कहु करते। लखि करि सिख्य न शरधा धरते।
इन महिं समरथ जे नहिं ऐसे। भलो करहिं परलोक सु कैसे ॥ २९ ॥
इम बिचारि हम अपनि प्रभाव। कहि करि कीनमि कुछक दिखाव।
दुह सुभाव[2] निज भ्रातहि केरा। अरु तिस को फल दियसि बडेरा ॥ ३० ॥
अपने कारन हम नहिं कह्यो। दियो स्राप इह द्वै बिधि लह्यो।
सुनि करि न्रिप जै सिंह सवाई। अर गुरबखश आदि समुदाई ॥ ३१ ॥
करहिं सतुति बहु 'तुम गंभीर। धीरजवंतनि महिं प्रभु धीर।
लखियति जाहर कला तुमारी। गुर नानक गादी अधिकारी ॥ ३२ ॥
तुम श्री गुर हरिराइ सपूत। जानति हैं जिन कीमति पूत[3]।
को रावर की समता करि है। उडगन ससि किम रवि समसर है ॥ ३३ ॥
इत्यादिक आदर करि सारे। महिमा भाखति अपर अपारे।
लै आग्या सतिगुर की फेर। जै सिंह उठ्यो सु दरशन हेरि ॥ ३४ ॥
गयो शाहु की सभा मझारे। पहुंच्यो निकटि बिना हटकारे।
सिर निवाइ तहिं जाइ प्रवेशा। हुते जहां उमराव अशेशा ॥ ३५ ॥
क्योंहूं गुरु प्रसंग चलाए। महद सुजसु कहि करि बिदताए।
अनिक प्रकार सुनावति गाथा। सुनति श्रोन दिल्ली पुरि नाथा ॥ ३६ ॥
तिस पाछे गुरबखश जि आदि। दुहिंदिशि स्राप सुने बिसमाद।
हहिरति[4] रिदै न आछी माने। सफल बचन दुह भ्रातनि जाने ॥ ३७ ॥
बरबाद न हुइ गुरता गादी। सिख्य मसंदनि गन अहिलादी।
पसरी बात सभिनि महिं होई। नमो करहिं गमने सभि कोई ॥ ३८ ॥
को जानहिं कैसे हुइ जाइ। भ्रात परसपर बाद उठाइं।
श्री हरिक्रिशन सतिगुर पूरे। जिन के चलित अनिक गुन रुरे ॥ ३९ ॥

दोहरा

सभि ते भए इकांत पुन सहिज समाधि सुहाइ।
कवि संतोख सिंह बंदना सतिगुर के जुग पाइ[5] ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'श्री हरिक्रिशन' प्रसंग बरननं नाम बैतालसमो अंशु ॥ ४२ ॥

1. यत्न 2. कठोर स्वभाव 3. पवित्र बुद्धि 4. कांप गए। 5. दोनों चरणों पर।

अंशु ४३
श्री हरिक्रिशन प्रसंग

दोहरा

शाहु सभा महिं सुजसु सुनि 'श्री हरि क्रिशन बिसाल।
करामात साहिब धनी दरशन ते दुखटाल ॥ १ ॥

चौपई

कहति शाहु मन प्रेम बढाई। सुनीए भो जै सिंह सवाई।
हमरे संग मेल किम होइ। हरखति हुइ चहिं कै नहिं सोइ ॥ २ ॥
सौम[1] सरूप आरबल बाल। उर गंभीर सधीर बिसाल।
एक बार मिलिबो कहिं लीजहि। तिन प्रसंनता यति ठहिरीजहि ॥ ३ ॥
जैपुरि नाथ कहति कर जोरे। 'किसहूं पठहु सतिगुर ओरे।
मैं गमनौं संग बूझहिं जाई। जिम हुइ मरजी, देहिं बताई ॥ ४ ॥
मिलिबो ठहिरहिं तौ चलि आवहि। नांहित रावर तहां सिधावहिं।
बरतहिं निज इच्छा अनुसारी। बोलिब महिं चातुर मति[2] भारी ॥ ५ ॥
लाखहु संगति दरशन पावै। कोस हजारनि ते चलि आवैं।
कहैं आनि हम संकट पर्यो। तिस थल मन महिं सिमरनि कर्यो ॥ ६ ॥
भए सहाइक तहिं ततकाला। काटि कशट को कियो सुखाला।
को कहि मेरे पुत्र उपंना। भए मोहि पर गुरु प्रसंना ॥ ७ ॥
इत्यादिक भाखति अरदास। अंतरजामी पूरहिं आस।
देश ब्रिदेशनि महिमा भारी। होति सुनी अरु नैन निहारी[3] ॥ ८ ॥
कहे आप के कारज कीना। प्रेम धारि मैं नर पठि दीना।
अनिक उपाइन बिनै समेत। हेत अवाहन पठी निकेत ॥ ९ ॥
मोहि दूत करि अनिक उपाइ। आने पुरि महिं हित अधिकाइ'।
कहिति शाहु 'कहु, किसै पठावें। हम भी बहु उपहार चढावें' ॥ १० ॥
इतने बिखै शजादा[4] आयो। पुत्र पेखि करि उर हरखायो।
अंक लेय करि कह्यो लडाइ[5]। 'तुम ही गमनहु गुर निकटाइ ॥ ११ ॥

---

1. सुन्दर। 2. बुद्धिमान। 3. आंखों से देख ली। 4. राजकुमार। 5. गोदी में उठाकर और लाड लडाकर कहा।

जिम बालिक बय अहै तिहारी। तिम गुर हिंदुनि की इक सारी।
एक रकेबी[1] भरहु जवाहर। इक महि धरि दीनार[2] सु ज़ाहर ॥ १२ ॥
अरपहु जाइ भला निज जाचहु। हित के बाक कहिन महिं राचहु।
हमरी मुलाकात ठहिरावहु। जे नहिं मानहिं, एव अलावहु ॥ १३ ॥
अपनो शबद देहु लिखवाइ। सो आनहु लिखि हमहु दिखाइ।
सुनति शज़ादा होयहु त्यार। बहुत मोल के ले उपहार ॥ १४ ॥
गमने साथ कितिक उमराव। बसत्र विभूखन रुचिर बनाव।
चल्यो संग जै सिंह सवाई। बुलति नकीब सु बाज[3] बजाई ॥ १५ ॥
नर धनाढ अरु बुद्धि बिसाले। इलम बिखै कामल संग चाले।
सने सने पुरि बिखै शज़ादा। गमनति देति सभिनि अहिलादा ॥ १६ ॥
श्री हरि क्रिशन निकटि सुधि गई। आइ शज़ादा भेटनि लई।
ततछिन कहि कनात तनवाई। अनिक बरन के फरश डसाई ॥ १७ ॥
शसत्र बसत्र सजि कै बिधि नाना। बैठे आनि सुभट बलवाना।
ब्रिंद मसंद मेवड़े आए। चवरदार ले चवर ढुराए ॥ १८ ॥
करी कनक रूपे सुठ छरी[4]। छरीदार कर पंकति खरी।
खरी सभा आलस परहरी। हरी मनहुं लखि शत्रुनि करी[5] ॥ १९ ॥
शबद रबाबी गावहिं राग। राग[6] प्रभू को जिसते जाग।
तिस छिन आइ शज़ादा गइऊ। बहिर कनात सु नंम्री भइऊ ॥ २० ॥
कनक[7] रकेबी दोनहुं आगे। मुहर जवाहर जोति सु जागे।
गही मेवड़े हाथ पसारि। करि ऊची अरदास उचारि ॥ २१ ॥
सादर सभि उमराव समेत। सथित शज़ादा बीच निकेत[8]।
सिर निवाइ सभि बैठति भए। जै पुरि नाथ अगाऊ किए ॥ २२ ॥
करी बंदगी शाहु दिशा ते। बहुरो कही मिलिनि की बातें।
'हज़रत रिदै लालसा अहै। जिसते रावरि दरशन लहै ॥ २३ ॥
इसी हेतु करि पठ्यो शज़ादा। जो नित दे पित रिद अहिलादा।
जै पुरि नाथ साथ बहु कहे। बीच पाइ आवाहनि चहे[9] ॥ २४ ॥
करति प्रतीखनि मिलिबे केर। मग खुदाइ के चलति बडेर[10]।
तुम सम के दरशन को चाहति। शराह बीच दिन रैन उमाहति ॥ २५ ॥

---

1. तश्तरी 2. रुपये, सोने के सिक्के। 3. बाजा बजाया। 4. सोने, चांदी की सुन्दर छड़ी। 5. हाथी रूपी शत्रुओं को मारने के लिए मानो (यह) शेर है। 6. प्रेम। 7. सोने की तश्तरी। 8. राजकुमार घर में बैठा। 9. बुलाना चाहता है। 10. खुदा के रास्ते पर चलता है।

कहैं कहां लगि शाहु बडाई। राखति साच पाज उघराई।
नहीं दंभ को मानहि निमैं। तुम को बड लखि भेज्यो हमैं ।। २६ ।।

सुनि जै सिंह बोल्यो कर जोरि। 'शाहु प्रेम करता तुम ओर।
प्रथम लालसा मेल करनि की। बैठि निकटि मुख शबद श्रवन की ।। २७ ।।

हुइ प्रसंन जे तुम उर चाहो। तौ हज़रत करि मिलिनि उमाहो।
जे रावर कहु नीकी गाहिन। कारन अपने नेम निबाहिनि ।। २८ ।।

तौ निज मुख ते शबद सुनावहु। बीच पारसी के लिखवावहु[1]।
सुनति प्रसंन होइ है शाहू। मिलिबे सम जानहि मन माहू ।। २९ ।।

मुझ पर हुकम शाह को ऐसे। सहित प्रसंनता मिलि हैं जैसे।
तुमरी मरजी बरती जाइ। जिम उर मैं तिम कहो सुनाइ ।। ३० ।।

सुनि जै सिंह ते सभिनि बखान्यो। जथा जोग इम मतो सु मान्यो।
सहत शजादे सभि कहि लीनसि। तबि श्री सतिगुर उत्तर दीनसि ।। ३१ ।।

'नहिं मिलिबे के कारन जेई। कहि करि पठे शाहु ढिग तेई।
प्रथम लियो सुनि सकल ब्रितांत। पुन तिस को कहिबे क्या बात ।। ३२ ।।

बिना मिलिनि भा कितिक बिकार। मिले होति क्या करहि उचार।
इत्यादिक लखि पिता हमारे। शाहु न मिलहु कीनि हटकारे ।। ३३ ।।

सो कहिबो हमरे मन नाल[2]। उलंघ न सकहि किमहु[3] किस काल।
शाहु महां मतिवान सुजाना। अस ब्रितंत सभि लखहि महाना ।। ३४ ।।

सतिगुर घर को शबद लिखीजै। पठहु बिचारहु रिदै धरीजै।
चलहु पंथ तिस सभि सुख पावहु। जनम मरन को कशट मिटावहु ।। ३५ ।।

इम कहि सतिगुर सबद उचारा। नवीसिंद[4] सुनि लिखिबे त्यारा।
श्री गुर नानक केर बनायो। बीच पारसी के लिखवायो ।। ३६ ।।

श्री मुखवाक

किआ खाधै किआ पैधे होइ। जा मनि नाही सचा सोइ ।।
किआ मेवा किआ घिउ गुड़ मिठा। किआ मैदा किआ मासु ।।
किआ कपड़ किआ सेज सुखाली। कीजहि भोग बिलास ।।
किआ लसकर किआ नेब[5] खवासी[6]। आवै महली वासु ।।
नानक सचे नाम विणु। सभे टोल विणासु[7] ।। २ ।।

---

1. फारसी भाषा में लिखवाइए। 2. साथ (मन से)। 3. किसी तरह।
4. लेखक। 5. चोबदार। 6. चँवर झुलाने वाले। 7. सारे पदार्थ नाशमान हैं।

चौपई

श्री मुख ते कहि शबद लिखायो। बिन सतिनाम विराग जनायो।
सभि तूशनि हुइ बाक सुनंते। गिरा मधुर ते धन भनंते।। ३७।।
दयो शज़ादे को सिरुपाइ। मधुर प्रसाद दीनि मंगवाइ।
सादर तबि रुखसद[1] को करे। निकसे उर प्रसंनता धरे।। ३८।।
गए शाहु ढिग बैठे जाइ। सभि प्रसंग तहिं कह्यो सुनाइ।
शबद लिख्यो ले कर महिं शाहू। पठनि लग्यो चित धारि उमाहू।। ३९।।
सत्तिनाम की महिमा महां। बिन सिमरै बिशयै सुख कहां।
मिथ्या सभि जग की बडिआई। बिना नाम नहिं थिरता पाई।। ४०।।
हरख्यो उर अवरंग लखि साची। शबद प्रभाव बिखै बुधि राची।
नहिं आवन को हेतु सुनायो। रिस्यो भ्रात मतसर तपतायो।। ४१।।
सभि गुन महिं गौरव पहचाने। बाल बैस बुधि बली महाने।
इन सों मेल करनि हठ धरि कै। नहिं नीकी मुझ लगी बिचरिकै[2]।। ४२।।

दोहरा

पुन मिलिबे कहु शाहि ने हठ करि भाख्यो नांहि।
मन मैं अस निशचै कर्यो, कह्यो न अपरै पाहि[3]।। ४३।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'श्री हरिक्रिशन' प्रसंग बरननं नाम त्रितालीसमो अंशु।। ४३।।

---

1. बिदा। 2. विचार करके। 3. दूसरों से न कहा।

अंशु ४४

जै सिंह प्रसंग

दोहरा

एक दिवस तुरकेश कहि जै पुरि नाथ कि साथ ।
'बाल बैस श्री हरि क्रिशन निमहि हिंदु पद माथ ॥ १ ॥

चौपई

अपर लोक जुति तुम भी कह्यो । करामात साहिब बड लह्यो ।
सुजसु सुनावति है सभि कोई । इक ते सुनि दूसर सुधि होई ॥ २ ॥
कहां कही है सभिहिनि बीच । देखा देखी ऊच रु नीच ।
तुम भी कबि परख्यो कै नांहि ? । पता लीनि को इक बिधि काहि ? ॥ ३ ॥
जे पूरब परख्यो नहि कबै । उचित पता लैवे कहु अबै ।
जिम अज़मत कामल पहिचानहु । सहित नंम्रिता तैसे ठानहु ॥ ४ ॥
सुनि जै सिंह बोल्यो कर जोरि । 'कुछ दुरबाक[1] न कहि मुझ ओर ।
अस पुरखनि को परखनि करनो । लघु सरपनि सों खेलनि बरनों ॥ ५ ॥
जिन के डसे न बनै उपाइ । मति बिसाल को उबरि न पाइ[2] ।
तऊ आपके कहिवे करि कै । शरधा दासनि सन्मुख धरिकै[3] ॥ ६ ॥
रचौं बिधी को पूजनि करि हौं । पुन मैं तुमरे निकटि उचरिहौं ।
कहति शाहु 'मिलिवे फल जोई । परखनि ते मैं पैहहुं सोई' ॥ ७ ॥
इम कहि सुनि कै जैपुरि नाथ । आयहु सदन संदेहनि साथ[4] ।
मोर गरे नहि परहि कुफेरी । सुख चाहति दुख आइ न घेरी ॥ ८ ॥

दोहरा

भई जामनी जानि कै मिली कामनी आइ ।
सुंदर मंदिर महिद के अंदर सेज डसाइ ॥ ९ ॥

चौपई

निज रमनी[5] संग सगल जनाई । कथा गुरनि की जथा सुनाई ।
तिन के परखनि की बिधि करनी । बाल आरबल तन दुति धरनी ॥ १० ॥

---

1. कुबोल । 2. बचा नहीं सकता । 3. सामने रख कर 4. संशय सहित । 5. स्त्री ।

'गुर अंतहिपुर आनहि काली। पूजहिं पद दिख लेहु सुखाली।
मिलहि समूह सगल रणवास। सभि की पूरहिं सतिगुर आस॥ ११ ॥
जेवर जबर जवाहर जरे। जगमग जेब जिनहुं की करे।
मुकता लरी लरकती लार[1]। अलंकार सभि पहिरहिं नारि॥ १२ ॥
बरन बरन के बर बड अंबर। अनिक रंग बारद जिम अंबर।
सद्रिश दामनी दमकहिं बीच। रंग महिल महिं गंधनि सीचि[2]॥ १३ ॥
सभि बैठहिं शिगार बनाइ। बसत्र बिभूखन बपुख सुहाइ।
सभि रानी महिं मुख्य महानी। मम मन की प्यारी पटरानी॥ १४ ॥
लेहु मोट पट मलिन पुराना। नहिं शिगार सजहु बिधि नाना।
सभि के पाछे कोन मझार। बैठि रहहु तर द्रिशटि धारि॥ ॥ १५ ॥
करहु मनोरथ मन महिं ऐसे। जिम उर गुर जौ जानति तैसे।
तौ मम अंक[3] बैठिहैं आइ। देउं उपाइन को परि पाइ॥ १६ ॥
भई भोर ते इम क्रित कीजहि। धरि शरधा सतिगुर दरसीजहि।
बडे भाग अबि भए तिहारे। सफल जनम हुइ गुरु निहारे॥ १७ ॥
मति इम करि कै दंपति सोए। सुख सों उठे प्राति जब होए।
रंग महल नीके सुधरायो। मुकर मूरतनि ब्रिंद सुहायो॥ १८ ॥
रंगदार बर तुंग अटारी। भीतनि चामीकर लिपकारी।
तरुवरु फूल फलनि सों लिखे। ब्रिंद बिहंगम करि तिन बिखे॥ १९ ॥
रुचिर बचित्र पवित्र कराए। सद्रिश अरश[4] फरश डसवाए।
जहिं नाना बिधि तने बिताना[5]। जरीदार झालर झलकाना॥ २० ॥
बिच चंदन चौकी रचि चारु। रचना चित्र रची दिशि चारु।
फरश मखमली मोतिनि लरी। लरकति रुचिर बिराजति खरी॥ २१ ॥
झब्बे[6] झूलति दुहिदिश जरी। बड उपधान[7] धर्यो म्रिदु भारी।
इत्यादिक सुठि[8] रचन रचाई। जिस देखति मन रहि बिरमाई॥ २२ ॥
बहुत मोल के दिपति जवाहर। निकसाए सु कोश ते बाहर।
बसत्र बिभूखन बरन बरन के[9]। आगै सतिगुर हेतु धरनि के॥ २३ ॥
सरब त्यार बसतु करिवाइ। घर ल्यावनि हित चौंप बढाइ[10]।
सुंदरता सभि बिधि सुधराई। जैपुरि पति जै सिंह सवाई॥ २४ ॥

1. साथ। 2. छिड़ककर। 3. गोदी। 4. आकाश। 5. चंदवा। 6. झब्बा।
7. तकिया। 8. सुन्दर। 9. रंगा रंग के। 10. चाव बढ़ाया।

इति श्री सतिगुर सभि बिधि जानी। हेतु परखिबे जस क्रित ठानी[1]।
अति चितातुर चित महिं होए। लेति अंत मन कुमति परोए[2] ॥ २५ ॥
हम जो चाहति बसतु छपाई। सो चित बांछति इहु बिदताई[3]।
प्रभु के संत जु लखहिं भली न। तिम करिबे महिं इन मति भीन ॥ २६ ॥
कुछ ते कुछ करता[4] धरि चाउ। सो जग महिं दिखराइं प्रभाउ।
लोकनि के बस करिबे हेतु। अनिक घात रचि धन हरि लेति ॥ २७ ॥
अस अजमतवाननि बिरमाए[5]। नहिं परलोक गती लखि पाए।
दोनहुं भूलति हैं प्रभु पंथा। जो उपदेशक अस ले संथा[6] ॥ २८ ॥
सतिगुर के घरि नहिं इह नीकी[7]। जिसते हुई कल्यान न जीकी।
नाटक चेटक करि दिखलावनि। अनिक बिधिनि कर नर बिरमावन ॥ २९ ॥
सो हमने करनी बिधि नाहिं न। करामात दिखरावहिं काहि न।
इक अविलोकति दूसर चाहै। पुन करि हहिं किस किस के पाहै ॥ ३० ॥
प्रथम इसी कारन को जाने। नहिं आवनि दिल्ली कहु माने।
इसको प्रेम जानि चलि आए। अब्रि किम ठटहिं कुमति बिचलाए[8] ॥ ३१ ॥
नहिं दीरघ दरसी मतिमंद। नहिं चाहति परलोक अनंद।
सतिनाम सिमरनि बिसराए। प्रभु माया अति प्रबल भुलाए ॥ ३२ ॥
सेवा संतनि की शुभ करि कै। प्रभु भाणो मीठो चित धरि कै।
हउमै तजि सिमरनि हरिनाभु। इम करि मिलहि नहीं दुख धामु ॥ ३३ ॥
अंम्रित तजि बिख गहिबे[9] दौरहिं। रोपि बंबूर[10], कलपतरु तोरहिं।
अति अमोल कर डारहिं[11] हीरा। फटक बिहाझहिं शुभ मत कीरा[12] ॥ ३४ ॥
इत्यादिक सोचति गन सोचनि। जनम मरन की सोच बिमोचन[13]।
न्रिप को आवनि समै पछानि। इक घर प्रविशे क्रिपा निधान ॥ ३५ ॥
सरब नरनि को त्याग्यो संगि। भए इकाकी गुर इक रंग।
सिहजा सुंदर अंदर कर के। म्रिदु डसवाइ पौढिबो करि के ॥ ३६ ॥
सूखम बिसद बसत्र तन लैके। श्री सतिगुर थिरता निज कै कै।
गति लोकन की करति बिचारनि। बिन सुध अंधे पावहिं पार न ॥ ३७ ॥

---

1. मानों परख करने के लिए यह किया। 2. मन में कुमति धार कर परीक्षा लेता है। 3 प्रकट कर दी। 4. चेटकी लोग। 5. ऐसे करामाती जो लोगों को बहका लेते हैं। 6. उपदेश। 7. उचित। 8. अब कैसे रुकें, क्योंकि कुमति के कारण विचलित हो गए हैं। 9. लेने को दौड़ते हैं। 10. बबूल लगाकर। 11. हाथों में से फेंक देते हैं। 12. कंगाल लोग कांच का व्यापार करते हैं और हीरा फेंक देते हैं। 13. दूर करना।

बिशै बिहारनि[1] फसे बिसाला। जाइ नरक पकरे जम जाला।
अनिक जोनि जनमनि अरु मरनो। मति मूरख नहिं करिबे हरनो॥ ३८॥
चाहति हैं अज़मत कहु देखा। अपनो लखहिं न काज बिशेखा।
सदन कपाट असंजति करे[2]। अंतर श्री हरि क्रिशन सु थिरे॥ ३९॥
लोक निकटि ते सकल हटाए। बैठे दूर जाइ समुदाए।
तिन कपाट की सिंखल भेरि[3]। अंतर टिके रहे तिस बेर॥ ४०॥

दोहरा

जैपुरि पति हरखति सु चित करि इकठो रणवास[4]।
चहति ल्याइबो सतिगुरु नंम्रि होइ करि दास॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'जै सिंह' प्रसंग बरननं नाम चौताली-समो अंशु॥ ४४॥

---

1. विषयों का व्यवहार। 2. बंद कर लिए। 3. कुंडा बंद करके। 4. महल में निवास।

अंशु ४५

जै सिंह प्रसंग

दोहरा

दिवस दुपहिरो ढर्यो जबि सकल त्यार करिवाइ।
जै सिंह छित पति तजि सदन निकस्यो बहिर सु आइ ॥ १ ॥

चौपई

सिंह पौर महिं आइ थिर्यो है। मुजरो[1] नर परधान कर्यो है।
तिस तिस थल पर सकल हटाए। सादर सो कहि कहि बैठाए ॥ २ ॥
एकाकी आगे चलि आयो। जहिं सतिगुर को सिवर करायो।
आनि प्रवेश्यो पौर मझारे। सभि आगे उठि खरे निहारे ॥ ३ ॥
जै पुरि नाथ अचानक आवनि। लोक बिलोकति भे बिसमावन।
जिस के साथ न मानव भीर। सभा प्रवेशनि के नहिं चीर ॥ ४ ॥
क्यों आयों अबि गटी गिनंते। किधौं शाहु इह पठ्यो तुरंते।
इत उत देखति द्रिगनि चलाइ। किस थल बिखे न गुर सुखदाइ ॥ ५ ॥
सिख्यनि साथ नाथ जैपुरि के। बूझनि करे उताइल करिके।
'कहां बिराजे सुखद हजूर। डेरे बिखै कि गमने दूर ॥ ६ ॥
निज थल नहीं द्रिशटि मुझ आइ। तुम न्यारे किम भे समुदाइ[2]।
सुनि सिखयन सभि कह्यो बुझाई। 'इस घर अंतर प्रविशे जाई ॥ ७ ॥
एकाकी हुइ सकल हटाए। कुछ सतिगुर गति लखी न जाए'।
करि निरनै गमन्यो तिस घर को। जाति बिचारति संसै उर को ॥ ८ ॥
किस कारन ते इम गुर होए। मुख प्रसंन जिन लखि सभि कोए।
मैं अबि करि कै सरब प्रकार। करौं खुशी तिन रिदै उदार ॥ ९ ॥
मम घर आइ अनंदति रहैं। तौ कल्यान हमारी अहै।
निकटि कपाटनि[3] के जबि गयो। हाथनि साथ हलावति भयो ॥ १० ॥

---

1. नमस्कार। 2. तुम सारे कैसे अलग हो गए 3. द्वार।

सिखल भिरी जानि थिर रह्यो। हेतु हकारनि के तबि कह्यो।
'प्रभु जी करहु कपाट हटावनि। दास जानि देहु दरशन पावन' ॥ ११ ॥
दुइ त्रै बार हकारनि[1] करे। बोले गुर न, मौनता धरे।
ऊची चौथे हांक हकारी[2]। 'गुर जी करहु कपाट उघारी ॥ १२ ॥
जैं पुरि पति मैं दास तुमारा। शरन आपकी मम आधारा।
मैं अलपग्य भूल कछ होई। तुम सरबग्य छिमहु अबि सोई ॥ १३ ॥
आप करहु समुझावनि ऐसे। सुत सों कहति पिता हित जैसे।
जो हम ते कुछ बिरगति कामी[3]। दास जानि करि रोकहु, स्वामी ॥ १४ ॥
इत्यादिक जबि भाखी बिनती। सुनि सतिगुर तजि करि सभि गिनती।
सिखल छोरि कपाट उघारे। पुन बैठे तिस थल दुतिवारे[4] ॥ १५ ॥
जैं पुरि पति प्रवेशतबि भयो। अंतर होइ दरस गुर लयो।
नीचे करे बिलोचन बैसे। ऊपर द्रिशटि कीनि नहिं कैसे ॥ १६ ॥
न्रिप बंदन करि थित भा पास। जोरति हाथ भनति अरदास।
तरे डावनि कुछ नहिं कर्यो। बैनि दीन हुइ बचन उचर्यो ॥ १७ ॥
श्री सतिगुर ! किम चित मझारे ? को कारन मा करहु उचारे ?।
मेरो सदन आपनो जानहु। सभि पर मुख ते हुकम बखानहु ॥ १८ ॥
अंतहपुर मैं दासी गन हैं। करहिं सरब सेवा चहिं मन हैं।
सैना, कोश, देश समुदाइ। सकल आपके लखहुं सदाइ ॥ १९ ॥
सभि समाज जुति मैं हौं दास। चहहु, कहीजहि सो मम पास[5]।
को कुकाज दिहु तनक जनाइ। सभि तजि तिस को करौ उपाइ ॥ २० ॥
शाहु संग राख्यो रस रंग। उत की चित न करहु निशंग[6]।
सभि के कारज आप पुजावहु। अपनो नीको क्यों न बनावहु ॥ २१ ॥
हमरे महिं क्या शकति गुसाईं। जो रावर के होइं सहाईं।
केवल दास देनि बडिआई। श्री मुख ते कुछ दिहु फुरमाई ॥ २२ ॥
अबि मिलिबे कहु शाहु न चाहति। तुमरी मरज़ी बिखै उमाहति।
जेकरि[7] मुझ ते भयो बिगारे। छिमहु आप दिहु बुद्धि उदारे ॥ २३ ॥
लेनि न देनि न दरशन तुरका। पुज्यो नेम इह कीनि जु धुर का।
इत्यादिक सुनि कै न्रिप बैन। श्री सतिगुरु उठाए नैन ॥ २४ ॥

1. दो तीन बार बुलाया। 2. आवाज़ लगाई। 3. काम। 4. शान वाले 5. जो आपकी इच्छा है, मुझे बताइए 6. निशंक। 7. अगर।

भूपति दिशा देखि करि कह्यो। गुर संतनि जु छपावनि चह्यो।
सो जग के नर चहि बिदतावनि। पर पूंजी कहु करि दरसावनि ॥ २५ ॥
को अपनो धन देहि दिखाई[1]। करि उपाइ सभि लेहिं दुराई[2]।
पर धन को देखनि के कारन। करहिं अनिक बिधि जो उपचारनि[3] ॥ २६ ॥
धनी न आछो मानहि ताही। अनुसारी हुइ दुख तिस नाही।
कह्यो गुरु को समुझयो राइ। तऊ ठटी बिधि को चित चाइ ॥ २७ ॥
हाथ जोरि करि अरज़ गुज़ारी। सभि अंतहिपुर जो मम नारी।
रावर के दरशन को बांछहि। सुनि सुनि सुजसु सभिनि ते आछहि ॥ २८ ॥
बहु त्यारी करि कै रणवास। मैं बिलोक आयो तुम पास।
होहि अवग्या छमा करीजै। दास जानि निज बिरद रखीजै ॥ २९ ॥
दरस देखिबे चाह बिशेखनि। सभि ही करहिं पंथ कउ देखनि[4]।
पूरन पुरख प्रेम के बसि हो। अपरनि केर शिरोमणि लस हो ॥ ३० ॥
चरणां बुज[5] को पाइ निकेत। मुझ को सभि परिवार समेत।
करहु क्रितारथ दीनानाथ। सिर पर धरहु स करूना हाथ ॥ ३१ ॥
अपनो जानि संभारनि करीअहि। बिचन अनेकनि को परिहरीअहि।
जथा पुत्र निज पिता अगारी। करहि अवग्या सुमति बिसारी ॥ ३२ ॥
तऊ पिता सु प्रसंनता ठानहि। अवगुनि जानि रिदै नहिं आनहिं।
इस प्रकार जे जानहु मोही। तौ हमरो सभि बिधि भल होही ॥ ३३ ॥
अवगुन मन महिं को न चितारहु। पिता समान सदा प्रतिपारहु[6]।
अबि रणवासहि पूरहु आसा। मैं देकरि आयो भरवासा ॥ ३४ ॥
श्री हरि क्रिशन सुने बच दीन[7]। फेर्यो जाइ न बाक प्रबीन।
जैपुरि नाथ कीनि सुनि बिनती। सरब प्रकार तजी गुर गिनती ॥ ३५ ॥
होए त्यार चलनि कहु साथ। भर्यो हरख हेरति नर नाथ।
बहिर आइ बैठे गुन खानी। दासनि ते मंगवाइब पानी ॥ ३६ ॥
कर अरु चरन पखारनि करे। बदन पखार्यो अंजुल भरे।
साथ रूमाल पौंछिबो कीनि। सिर चीरा[8] बंध्यो दुति भीन ॥ ३७ ॥
ऊपर सुंदर जिगा सुधारी। कंचन मय हीरनि मुल भारी।
श्री गुर के सिर पर शुभ साजे। बर सरुप ते रतन बिराजे ॥ ३८ ॥

---

1. अपना धन कौन दिखाता है ? 2. उपाय करके सभी छिपा लेते हैं। 3. यत्न। 4. सभी रास्ता देख रही हैं। 5. चरण रूपी कमल। 6. पालन करो। 7. नम्रता भरे वचन। 8. पगड़ी।

अति सूखम अंबर को जामा[1]। गोटा लग्यो दुकूल भिरामा[2]।
पनही[3] पाइनि[4] पाइ भलेरी। सुंदर सजति स जरी घनेरी[5]॥ ३९ ॥
हाथ गही फूलनि को छरी। बहुत मोल की शोभति खरी।
भए त्यार चलिबे कहु साथ। देखति हरख्यो जैपुरिनाथ ॥ ४० ॥
सभि सेवक तहिं बरजनि करे। 'साथ न चलहु रहहु इत थिरे।'
आप ग़रीब निवाज सिधारे। तिस मूरति पर कवि बलिहारे ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'जै सिंह' प्रसंग बरनंनं नाम पंतालीसमो अंशु ॥ ४५ ॥

---

1. बहुत बारीक कपड़े की पोशाक 2. उस पर दोनों ओर सुन्दर गोटा लगा हुआ था। 3. जूता। 4. पाँव में। 5. बहुत जरी लगी थी।

अंशु ४६

जै सिंह प्रसंग

दोहरा

हाइ त्यार श्री सतिगुर निकसे डेरा छोरि।
संग नरिंद अनंद युति चलि अंतहि पुरि ओर ॥ १ ॥

चौपई

सादर बोलति सतिगुर साथ। नगन पैर गमनति नर नाथ।
सिंह पौर जबिहूं चलि आए। हेरति उठे लोक समुहाए ॥ २ ॥
राजे को सभि मुजरो करें। गुर के चरन कमल सिर धरें।
बंदति चहुं दिशि ते प्रविशाए। अंतर गए सदन सुधराए ॥ ३ ॥
पिख्यो चौंक चौकोन सु चारु। चारहुं दिशिघर बने उदारु।
पुन सौपाननि[1] पर आरुढे। मंद मंद श्री गुर गुन गूढे ॥ ४ ॥
फूल छरी को चपल करंते। कबहिं भ्रमाइ उतंग उठंते।
मंदिर सुंदर अंदर गए। चित्र बचित्र जहां बहु किए ॥ ५ ॥
उपबन लिख्यो फूल फल नाना। केहरि[2], करी[2], कुरंग महाना।
कीर[3], कबूतर, कोकिल[4], केकी[5]। म्रिग, खग, सुंदर बरन अनेकी[6] ॥ ६ ॥
अधिक उतंग शिखर जिन केरे। चामीकर के कलस बडेरे।
मनहुं सरद रितु के घन[7] सोहैं। बिसद बरन हेरति मन मोहैं ॥ ७ ॥
अधिक बिलंद सदन इक मांही। तन्यो चंदोवा बहु दुति जांही।
ज़रीदार झालर लरकंती। रेशम की डोरें जिस अंती[8] ॥ ८ ॥
चौकी चंदन की तिह तरे[9]। तिस सनमुख न्रिप ने गुर करे।
रिदे ठटी बिधि अज़मत हेरनि। मुख ते बैठनि हित करि प्रेरनि ॥ ९ ॥
तन सुमधमा[10]. पंकज नैनी। कीर नासका, कोकिल बैनी।
दुति कमनीय[11] सँकरे कामनि[12]। बैठी देह धरे जनु दामनि[13] ॥ १० ॥

---

1. सीढ़ियां। 2. शेर और हाथी। 3. तोते। 4. कोयल। 5. मोर। 6. अनेक रंग के। 7. बादल 8. उसके सिर पर। 9. नीचे। 10. युवक (शरीर)। 11. सुन्दर। 12 स्त्रियां। 13. मानो बिजली देह धारण किए बैठी हो।

बरन बरन के अंबर बर हैं। तरुन छबीली गन तन धरि हैं।
बसत्र बिभूखन मोल बडेरे। पहिरे बैठी नारि चुफेरे ॥ ११ ॥
मुकता[1] लरी सु हीरनि जरे। चामीकर[2] सुंदर बहु करे।
बिना पटंबर तीय[3] न कोई। बिना जराउ न भूखन होई ॥ १२ ॥

बसत्र बिभूखन बिखैं समान। बनि बैठ्यो रणवास महान।
सरब शिरोमनि सुठ पटरानी। मलिन बेस कर इच्छा ठानी ॥ १३ ॥
सरब ग्यात उर जे गुर स्वामी। सभि घट घट के अंतर जामी।
तौ उछंग[4] मम बैठहिं आई। पिखि अज़मत मैं परिहौं पाई[5] ॥ १४ ॥
करे मनोरथ अस मन लोने। बिन आसन बैठी बिच कोने।
श्री गुर खेलनि हेतु खिलौने। असु घरिवाइ रखे ढिग तौने[6] ॥ १५ ॥
चामीकर[7] के पंच बनाए। हीरनि मुकता ब्रिंद जराए।
पंच रजत[8] के सुंदर घरे। जनु कूदति असवारनि तरे ॥ १६ ॥
पंच म्रितका[9] के करिवाए। अनिक भांति के रंग लगाए।
बसत्रनि साथ अछादनि करे। मिले देय हौं ढिग निज धरे ॥ १७ ॥
श्री सतिगुर जबि कीनि प्रवेशू। समुख बिलोचन करे अशेशू[10]।
इंदीबर[11] जनु सुंदर बनी। अरक[12] बिलोके बिकसी घनी ॥ १८ ॥
एक बार सभिहिनि कर जोरे। करी बंदना सभि गुर ओरे।
न्रिप आइसु ते बाल कुलीन। निज निज थल थित रही उठीन ॥ १९ ॥
निम्रि होइ हेरति गुर सूरति। सुंदर म्रिदुल मनोहर मूरति।
बैठी अबला सभि धरि मौन। पूरन भयों मौन चहुंकौन ॥ २० ॥
इसत्रिनि महिं गुर प्रविशे जाई। फूलछरी निज हाथ उठाई।
निकट त्रिया के सिर पर हनी[13]। 'नहिं पटरानी' मुख इम भनी ॥ २१ ॥
पुन दूसर के सीस लगाई। 'नहिं इह' पुन तीसर, सिर लाई।
इसी रीति सभि के सिर मारैं। 'नहिं पटरानी' मुखहु उचारैं ॥ २२ ॥
सभिनि उलंघति जाति अगारी। मुख ते कहैं सीस पर मारी।
अबला घनी संघनी[14] बैसी। गमनति अग्र करति बिधि तैसी ॥ २३ ॥

---

1. मोतियों की लड़ी। 2. सोने के आभूषण। 3 स्त्री। 4. गोदी। 5. चरणों में झुकूंगी। 6. उसने (पटरानी ने)। 7. सोने (के घोड़े)। 8. चांदी के। 9. मिट्टी के। 10. सबने। 11. बगिया। 12. सूरज (गुरु जी)। 13. मारी (सिर पर)। 14. एक दूसरे के साथ-साथ।

फूल छरी दाहन[1] कर मांही। त्रिय पर बाम[2] टिकावति जाहीं।
उलंघि उलंघि सगरो रणवासे। 'नहिं पटरानी' मुखहुं प्रकाशे ॥ २४ ॥
'बसत्र बिभूखन आसन आछे'। कहि इग त्याग चले त्रिय पाछे।
बिसमहि जै पुरि नाथ बडेरे। पाछे चल्यो जाति गुर हेरे ॥ २५ ॥

सभि अबला मन मानि अचंभा। प्रगट करति गुर, कीनि जु दंभा[3]।
पटरानी सभि के पशचाती। बैठी मलिन बेस हरखाती ॥ २६ ॥
भौन कोन महि मौन महानी[4]। आसन हीन, आस गुर ठानी।
चलति चलति तिस निकट पहूचे। तऊ न पिखति नैन करि ऊचे ॥ २७ ॥

उतलावति गुर तहि चलि गए। दार महीप समीपी भए।
खरे होइ कहि श्री मुखबानी। 'सभिनि शिरोमणि तूं पटरानी' ॥ २८ ॥
सुनति श्रोन उर भई प्रमोद। गहि पद प्रेम बिठारे गोद।
बिसमत हुइ अज़मत बड जानी। 'सतिगुर धंन' बखानी बानी ॥ २९ ॥

श्री मुख कहि 'तूं उतम तीय। इहां बैठिबे उचित न थीय[5]।
शुभ आसन शुभ बसत्र बिभूखन। धरिबे जोग सदीव अदूखन ॥ ३० ॥
महांराज की तूं पटरानी। कहां कपट करिबे बिधि ठानी।
उठि करि शुभ आसन थित हूजे। गुर संतनि सों नहि छल पूजे ॥ ३१ ॥

इस को फल तुम को हुइ बुरो। सुखद संतति सो नहिं फरो[6]।
अस कहित्यो महिखी[7] करि जोरे। धरी भेट खेलनि गन घोरे ॥ ३२ ॥
'तुम नित रुचि कर इनसों खेलति। चारु बिभूखन हित करि मेलति[8]।
पंकति करहु खरी इकसार। परचति रहु हेरति बहु बार ॥ ३३ ॥

मैं सुनि कै इस रीति सुभाव। हेतु आपके इह करिवाव।
सुप्रसंन हुइ करुना करीअहि। सुखदाई मुख बाक उचरीअहि' ॥ ३४ ॥
सुनि महिखी ते गुरु न बोले। जै पुरि नाथ तबै उर हौले[9]।
सहज सुभाइक जिम इह कहैं। सो सभि होइ निफल नहिं रहैं ॥ ३५ ॥

'संतति सुखद न होइ तिहारे'। कुछक कोप ते कीनि उचारे।
बिनै भनौं अबि बखशहि मोही। जिस ते डरति, भई गति ओही ॥ ३६ ॥
हाथ जोरि भूपति कहि तबै। 'गुर जी बैठहु चौंकी अबै।
हम मतिमंद सकहि नहि जानि। रावरि महिमां महां महान ॥ ३७ ॥

---

1. दाएं हाथ में। 2. बाएं हाथ से। 3. पखंड। 4. भवन के कोने में चुप बैठी थी। 5. उचित नहीं है। 6. सुखदाई सन्तान से फलो फूलोगी नहीं। 7. पटरानी। 8. पहनती हो। 9. मन में भय हुआ।

भूल परी कहु बखशनि हारे। हम से पतितनि करहु उधारे।
अस कहि न्रिपत उछंग उचाए। चंदन चौंकी पर बैठाए।। ३८।।
सभि रणवास आइ तहिं खर्यो। भी उदबिगन हेरि[1] न्रिप डर्यो।
सभि कर जोरि अगारी खरी। भांति भांति बिनती मुखररी।। ३९।।
'हम सेवक सभि के तुम सुवामी। क्रिपा सिंधु सभि अंतरजामी।
महिमा लखी न जाइ तुमारी। धर्यो देहि गुर परउपकारी।। ४०।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'जै सिंह' प्रसंग बरननं नाम छितालीसमो अंशु ।। ४६ ।।

1. उदास देखकर।

अंशु ४७

जैसिंह को प्रसंग

दोहरा

सभि अबला के सहित न्रिप डर्यो बाक सुनि स्राप ।
चहति पुनहि करि अनंद को, भयो बुरो फल पाप[1] ॥ १ ॥

चौपई

त्रसति भूप ने पाग उतारी । पद पंकज पर धरी अगारी[2] ।
हाथ जोरि हुइ दीन महाना । गुर प्रसंन हित बाक बखाना ॥ २ ॥
'बडिअनि की इह बड बडिआई । बखशहिं दास भूल जे जाई ।
एक बार जे अपनो करिहीं । नहि अवगुन तिन केर निहरिहीं ॥ ३ ॥
सागर ने बड़वानल धारी । जल नासहि तजि नहीं निकारी[3] ।
चंद्र मौल[4] ने चंद्र धर्यो सिर । सहित कलंक न कीनसि परहरि ॥ ४ ॥
तैसे क्रिपा द्रिशटि अविलोकहु । अवगुन देखि कोप कहु रोकहु ।
हित की सिख्या देहु अगारी । चरणांम्रित लैबे इछ धारी ॥ ५ ॥
सिख्य आपनो करहु गुसांई । सफल होइ कायां नर पाई[5] ।
सुनि सतिगुर बोले मति धीर । 'भो जै सिंह सवाई बीर ! ॥ ६ ॥
निशचल निशचै नित चित जिन के । श्री नानक सुखदाइक तिनके ।
अंग संग रहिं सदा सहाई । हलत पलत महिं प्रभु हित दाई ॥ ७ ॥
संसै ग्रसत जिनहु के मन हैं । कबहि अशरधा शरधा जन है[6] ।
निज ऊचो लखि करहि हंकार । जिम अवनि थल तुंग उदार ॥ ८ ॥
प्रेम नीर जहिं ठहिरहि नांही । सेवा क्रिखि[7] किम तहि उपजाही ।
श्रेय[8] फलनि तो पइअहि कहां । त्रिपति अनंद न सुपने तहां ॥ ९ ॥

---

1. पाप का फल बुरा हुआ । 2. डरकर राजा ने अपनी पगड़ी उतार कर गुरु जी के चरणों पर रख दी । 3. समुद्र की बड़वाग्नि द्वारा जल जलना सहन कर लेता है, पर उसे निकाल नहीं देता । 4. शिवजी । 5. मनुष्य का शरीर प्राप्त किया है । 6. पैदा होती है । 7. खेती (सेवा रूपी) । 8. मुक्ति रूपी फल ।

अपर कहां कहीऐ तुझ साथ। समुझि देखि चित महिं, नर नाथ।
सुनि न्रिप कुछ लजाइ द्रिग नीचे। जल सों भरे धरा कहु सीचे ॥ १० ॥
श्री सतिगुर प्रेरक सभि जन के। अंतर बसहु संग हुइ मन के।
चहहु निहाल करनि जिस जी को। तिसहि पंथ दिखरावहु नीको ॥ ११ ॥
ज्यों क्यों करि कै दिहु कल्यान। दोश न चितहु आपनो जानि।
जथा पिता निज पुत्र पछान। सभि बिधि करि चाहति कलिआन ॥ १२ ॥
पाछल दोश छिमहु प्रभु मेरे[1]। नीको बचन करहु तिह फेरे।
आगे को शुभ मारग पावहु। चरणांम्रित दे चरनी लावहु ॥ १३ ॥
बिनै सुनति श्री गुर उचारी। 'संतति हुइ कुल चलहि तुमारी।
तऊ बंस तव महिं अस होइ। कितिक पुशत महिं लखीअहि सोइ ॥ १४ ॥
राज करहि तुव कुल महिं रानी। मुख्य होइ बरतै रजधानी।
निज महिखी[2] मुखि करि सभि दिशिते। हमरी अजमत परखति जिसते ॥ १५ ॥
होइ तनक फल यांते तोही। अपर सरब बिधि को सुख होही।
हमरी सेव करी सभि भांति। यांते सुख लहि सीतल छाती ॥ १६ ॥
बधहि तेज हुइ नाम बडेरो। भोगहु राज सुजसु बहुतेरो।
जहिं कहिं सतिगुर करैं सहाइ। औखी[3] घरी न देखनि पाइं ॥ १७ ॥
क्रिपा सने सुनि बैन अमोले। हरख भर्यो न्रिप भयो अडोले।
ततछिन पावन जल मगवाइ। श्री सतिगुर की आग्या पाइ ॥ १८ ॥
पावन पंकज पाद पखारे[4]। रकत म्रिदुल मंजुल[5] दुतिवारे।
अधिक भाव ते पीवनि कीनसि। जुगल बिलोचन को करि भीनस[6] ॥ १९ ॥
तिस पाछे सगरो रणवास। चरणांम्रित ले हरख प्रकाश।
पुन पाछे दीनसि पटरानी। कर्यो पान बहु उर हरखानी ॥ २० ॥
बहुरो कर्यो चढ़ावनि सीस। भयो सिख्य जै पुरी अधीस[7]।
पुन राजे धरि भेट जवाहर। जोति जगहि जगमग जिन ज़ाहर ॥ २१ ॥
बंदि पदारबिंद कर बंदे। क्रित क्रित मान्यो रिदै अनंदे।
पुन पटरानी भेट चढ़ाई। चरन कमल पर सिर को छ्वाई ॥ २२ ॥
बहुर भारजा[8] सभि न्रिप केरी। धरी आनि दीनार घनेरी।
रिदे प्रेम करि हुई बलिहारी। 'धंन धंन गुर धन' उचारी ॥ २३ ॥
दुइ घटिका बासुर जबि रह्यो। हित भोजन के भूपति कह्यो।
लेहज[9] आदिक चार प्रकारा। कंचन थाल परोसि अहारा ॥ २४ ॥

---

1. मेरे पिछले दोषों के लिए क्षमा कर दीजिए। 2. पटरानी। 3. कठिन (समय) 4. धोए। 5. उज्ज्वल। 6. भिगो दिया। 7. राजा। 8. स्त्रियां। 9. चार प्रकार के भोजन।

खट रस के बिंजन अनवाइ। निज हाथनि करि धरे बनाइ।
करहि भाउ सों बहु बिधि सेवा। ज्यों सु प्रसंन होइं गुरदेवा ॥ २५ ॥
कहि कहि स्वाद अनेक प्रकारा। करहि परोसनि बिबिध अहारा।
सीतल नीर सुगंध झकोरा। निज कर भरि करि देति कटोरा ॥ २६ ॥
भूप भावना भूर भलेरी। श्री हरिक्रिशन शुद्ध उर हेरी।
कर्यो अहार स्वाद जिस घनो। मधुर सनिगध सुगंधहि सनो ॥ २७ ॥
त्रिपति होइ गुर हाथ पखारे। नाग्रबेल[1] न्रिप कीनि अगारे।
इला[2] आदि जिह साथ मिलाई। ले करि मुख मों पाइ चबाई ॥ २८ ॥
पुन सतिगुरन न्रिप दसतार। इक दिशि ते निज कै मैं धारि।
कीनि बंधावनि करुना ठानि। कहि बच मधुर कर्यो सवधान ॥ २९ ॥
अपनी सिक्खी बखशनि करी। पूर भावना न्रिप की करी।
दीनहु सकल प्रकार दिलासा। हलत पलत रखि गुर भरवासा ॥ ३० ॥
बिदा होइ निकसे तजि मौन। देखति सभि नर बंदति औन[3]।
फूल छरी कहु हाथ मझार। चंचल करति चलति सुख सार ॥ ३१ ॥
आइ आपने सिवर प्रवेशे। इम पूरे न्रिप काज अशेशे।
अपनि भारजा सों मिलि पाछे। अज़मत की बातनि कहि आछे ॥ ३२ ॥
'सभि महिं व्याप रहे सतिगुर हैं। जान जाति जो ठानति उर हैं[4]।
छपी सभिनि ते कौन मझारी। बैठी मलिन बेस को धारी ॥ ३३ ॥
मन की ठटी जानि कर सोई। गए उलंघति त्रिय सभि कोई।
तुव उछंग महिं बैठे जाई। महिखी तूं कहि सकल सुनाई ॥ ३४ ॥
धंन गुर साहिब अज़मत के। सभि थल राखे दासनि पति[5] के'।
इम गुर पाछे सतुति बखानी। भूपति महिखी अरु सभि रानी ॥ ३५ ॥
अपने सेवक न्रिपति बुलाए। सकल उपाइन करि इकठाए।
रुचिर जवाहर अरु दीनार। पशमंबर पाटंबर चारु ॥ ३६ ॥
गुर डेरे महिं सकल पठाए। ले कोशप[6] ने निकटि रखाए।
श्री गुर डेरे बिखै बिराजे। जिन के दरशन सभि अघ भाजे[7] ॥ ३७ ॥
आवहि दिल्ली पुरि की संगति। बंदति नाना सुख को मंगत[8]।
दिन प्रति बहुत उपाइन आनहि। पावन पकज पाइनि मानहि ॥ ३८ ॥

---

1. पान। 2. इलाइची। 3. धरती पर। 4. जो कुछ मन में होता है, उसे जान जाते हैं। 5. दासों की लज्जा रखने वाले। 6. कोषाध्यक्ष। 7. जिनके दर्शन करने से सभी पाप दूर होते हैं। 8. बंदना करके कई प्रकार के सुख मांगते हैं।

इक सतिगुर सभिहिनि कहु दाता। मोख लेति जिन मन पद राता।
सत्य नाम दे पंथ बतावहिं। त्याग बिकार साचु सुख पावहिं ॥ ३९ ॥
पुन श्री सतिगुर रिदै बिचारी। कीनसि कांयां त्यागनि त्यारी।
होनहार को समो पछानि। चाहिति होयहु अंतर ध्यान ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'जैं सिंह को' प्रसंग बरननं नाम सैंतालीसमो अंशु ॥ ४७ ॥

अंशु ४८

पुरि बहिर डेरा करनि प्रसंग

दोहरा

रिदे बिचार्यो सतिगुरु न्रिप अज़मत लखि लीनि ।
करहिं बिदति सभिहिनि बिखै शाहु आदि लें चीन ॥ १ ॥

चौपई

तुरकेशुर संग मिलहिं न कैसे । नेम निबाहनि करि हैं ऐसे ।
सुनहिं भूप ते गहु[1] बहु करै । मिलिबे हेतु जतन को धरै ॥ २ ॥
दुतीए भ्राता स्राप प्रकाशा । जिसके मुख महिं गुर को बासा ।
कहिबो साच बनहि तिस केरा । रिदै नहीं सतिगुर को डेरा ॥ ३ ॥
जिसते मतसर रिस ते आदि । उपजहि उर महिं ठानहिं बाद ।
पुन श्री तेग बहादर भारे । गुरिआई सो पाइ उदारे ॥ ४ ॥
श्री हरि गोबिंद बडे हमारे । होहिं गुरू इह बाक उचारे ।
इत्यादिक कारन बहु जानि । चाहति चित प्रलोक को जानि ॥ ५ ॥
सो रजनी करि बास बिताई । जाम रही तो उठे गुसाईं ।
सौच शनाने भई प्रभाती । कीरतन सुनति दास ढिग पांती ॥ ६ ॥
तन महिं तप तबि ही हुइ आवा । परे प्रयंक बदन अलसावा ।
मातहि जाइ बिलोकनि कीने । अतिशै चित चिंता महिं भीने ॥ ७ ॥
कहति भई तुम दरशन करे । रोग अनेकनि के परहरे ।
श्री नानक गादी पर आप । जग के नासहु पाप संताप ॥ ८ ॥
संगति कोटि भरोसा धरै । कशट दुहूं लोकनि के हरैं ।
कहां खेल इह आप उपायो । जिसको देखे भरम उपायो ॥ ९ ॥
इत्यादिक भाखहि करि प्रेम । भई सचित चहित सुत छेम[2] ।
श्री हरि क्रिशन कह्यो तिह समैं । 'त्यारी करहु वहिर हम गमैं ॥ १० ॥
डेरा अपर थान ही करें । इहां न चित अनंद को धरै' ।
सुनति दास वाहिन करि त्यारी । स्यंदन सिबका सुख असवारी ॥ ११ ॥

---

1. ध्यान । 2. कल्याण ।

आनि दई सुध भे सभि त्यारे। खरे पौर पर साज सुधारे।
ततछिन सुनि कै सतिगुर पूरे। गमने चरन कमल जिन रूरे॥ १२॥
छादि बसत्र ते सरब शरीरा। निकसे पौर, संग जिन भीरा।
सिवका[1] पर ह्वै करि असवार। ले आइसु धरि कंध कहार॥ १३॥
जहां जोग माया को मंदर। पूजहिं लोक कालका अंदर।
दे आग्या तित ओर चलाए। पीछे आइ दास समुदाए॥ १४॥
सने सने चलिवाइ कहार। पहुंचे देवी के दरबार।
त्यागि पालकी अंतर बरे। पौर किवार असंजति[2] करे॥ १५॥
मानव रह्यो नहीं तहि कोइ। बैठे गुरु इकाकी होइ।
डेढ जाम लौ अंतर थिरे। बाक बिलास कछू तहिं करे॥ १६॥
इति जै सिंह सुनी सभि बाती। 'गुर चढि गए वहिर किस भांती'।
निज परधान[3] पठ्यो सहिसाही। आयहु भीर संग नर तांही॥ १७॥
खरो रह्यो मंदिर ते बाहर। धरि प्रतीखना निकसहिं जाहर।
आए अपर लोक सिख जेई। दरशन हेतु भीर करि तेई॥ १८॥
सकल उडीकति दरशन पावैं। सने सने चलि चलि नर बहु आवैं।
ढरे दुपहिरे निकसे जबै। निकटि होइ दरसे गुर सबै॥ १९॥
कर बंदहि अभिबंदन ठानहिं। कीरति अनिक प्रकार बखानहिं।
निकटि होइ न्रिप को परधान। करी बंदना जोरति पान॥ २०॥
पुन राजे की नमो बखानी। 'रावरि गमन सुन्यों जबि कानी।
हुइ सचित मुहि तुरत पठायो। उतलावति ही मैं चलि आयो॥ २१॥
निज तशरीफ कहां ले चाले। इम संसै कीनसि महिपाले'।
सुनि कै श्री हरि क्रिशन बखाना। 'डेरा करहिं वहिर किस थाना॥ २२॥
नर समुदाइनि की तहिं भीर। आवन जानो रहै वहीर।
कुछक फरक पुरि ते करि जाइं। थिरहिं तहां, पिखि सुंदर थाइं॥ २३॥
बास कदीमी[4] हमरो होइ। ऐसो थान खोज हैं कोइ'।
भेव न जानि सके सुनि बानी। हाथ जोरि परधान बखानी॥ २४॥
मुझ को न्रिप की आइसु अहै। चलौं संग जहिं तुम चित चहै।
करहुं बिलोकन जिस दिश मांही। थिरहु अनंद रिदा हुइ जाहीं॥ २५॥
तहां करहु बिसराम सुखारे। पहुंचहिं पुन समाज जे सारे'।
इम कहि सुनि करि भे असवार। शिवका लई उठाइ कहार॥ २६॥

---

1. पालकी। 2. बंद किए। 3. मुखिया। 4. पुराना।

पाइनि[1] संग, संग परधान। सतिगुर ढिग ही करहि पयान।
हाथ जोरि बातनि बतरावति। सुंदर थल जहिं, जाति बितावति[2] ॥ २७ ॥
सने सने शिवका मग चाले। 'सुनहु गुरु जी थान बिसाले।
जोग आपके मैं मन जाना। रहे बिराज आप तिस थाना ॥ २८ ॥
तट जमनां के सुंदर धरा। न्रिप जै सिंह सु डेरा करा।
सकल तोपखाना तहिं रहै। कितिक चमूं भी थिरता गहै ॥ २९ ॥
जे रावर के आइ पसिंद। करहु बिलोकनि लहहु अनंद।
पुरि की दिशि दच्छण महिं जानो। करहु प्रथम ही तहां पयानो' ॥ ३० ॥
सतिगुर सुनि करि तिस ते मानी। 'गमनहु तहां' कही मुख बानी।
इस बिधि कहति सुनति मग चाले। हेतु बिलोकनि को थल भाले ॥ ३१ ॥
बहु मानव सभि चलति पिछारी। आइ तहां तबि धरा निहारी।
तोपां ब्रिंद खरी न्रिप केरी। निकटि तिनहुं के चमूं बडेरी ॥ ३२ ॥
तिन ते परे थान शुभ हेरे। कर्यो बिलोकनि लाइक डेरे।
हरखति हुइ गुर बाक उचारा। 'इस थल उतरहि सिबर हमारा' ॥ ३३ ॥
कहि शिवका तिह ठां उतराई। खरे होइ हेरी सभि जाई[3]।
श्यामल जल प्रवाह जहिं जमना। पावन करनि, कलूखनि दमना[4] ॥ ३४ ॥
जिस के तीर तीर[5] सभि जाई। खरी दूरबा[6] अवनी छाई।
तहां प्रयंक डसावनि कीनि। आसतरन ते छादि[7] सु दीन ॥ ३५ ॥
दासनि साथ कह्यो ततकाला। 'अपनो जो समाज है जाला[8]।
ले आवहु तुम सभि ही जाइ। शमियाना अबि देहु लगाइ' ॥ ३६ ॥
सुनि आग्या दासनि तिम कर्यो। ढिग परधान हुतो जो खर्यो।
श्री मुख ते फुरमावनि कीना। 'महिपालक संग कहो प्रबीना ॥ ३७ ॥
थल पसिंद हमरे इहु आवा[9]। सरब सिबर को चहैं लगावा।
अंतर हुतो थान तुम जैसा। इही भी लखहु आपनो तैसा ॥ ३८ ॥
हम दिशि ते नहिं करहु अंदेशा। जमना तट रमणीक बिशेशा।
सुनि परधान जानि किय डेरा। बंदन करि गमन्यो तिस बेरा ॥ ३९ ॥
अपर दास बसतु हित लैबे। गए तुरत माता सुधि दैबे[10]।
कह्यो जाइ 'बाहर किय डेरा। आए लैनि समाज बडेरा ॥ ४० ॥

---

1. पैदल। 2. बताना। 3. जगह। 4. पाप नाशक। 5. किनारा। 6. एक प्रकार की घास। 7. ढक (दिया)। 8. सारा। 9. यह स्थान हमारे पसंद है। 10. माता को खबर देने के लिए तुरंत गए।

मरज़ी जानि पुत्र की तबै। बसतु संभारनि करि करि सबै।
सरब सिवर को संग लवाइ[1]। माता गई गुरु जिस थाइं॥ ४१॥
तप समेत तन जाइ बिलोका। तूशनि बैठी होइ सशोका[2]।
जितक संग नर सभि चलि आए। हेरि हेरि तिज डेर लगाए॥ ४२॥
तंबू शमियाने गन ताने। खरी कनात बनात महाने।
रेशम की डोरैं गन सुंदर। लग्यो पटंबर चित्रति अंदर॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'पुरि बहिर डेरा करनि' प्रसंग बरननं नाम अठतालीसमों अंशु॥ ४८॥

---

1. साथ लाकर। 2. शोकातुर होकर।

अंशु ४९

सीतला निकसन प्रसंग

दोहरा

न्रिप जै सिंह उठि भोर[1] को शाहु समीप सिधाइ।
साथ अदाइब देखि कै पहुंच्यो सीस निवाइ॥ १॥

चौपई

नौरंग द्रिग अवलोक नरेशा। बूझी गुर की गाथ विशेशा।
'किम सेवा करि कै पहिचाने। वैस इआने परम सुजाने॥ २॥
करामात कुछ परखनि करी। अहै कि नहिं बड शकती धरी।
रहै समीप पिखति अरु बोलनि। केतिक भार कर्यो तैं तोलनि[2]॥ ३॥
सुनि महिपालक हाथनि बंद। कह्यो कि 'अहैं अतोल बिलंद।
को समरथ जो परखहि भार। महां गंभीर सधीर उदार॥ ४॥
पटरानी मैं कोन बिठाई। अपर भले थल मैं समुदाई।
जे अंतरजामी गुर अहैं। महिखी अंक जाइ करि वहैं॥ ५॥
इम चितवति करि कै सभि त्यारी। आइ कीनि मैं बिनै अगारी।
हम ते पता चहै मन जानि। यांते रुख फेरनि को ठानि॥ ६॥
तऊ होइ नंम्री बहु भांती। कहि कहि कीरति की गनि बाती।
ले गमन्यो मंदिर रनवास। जबि पहुंचे सभि त्रीयनि पास॥ ७॥
फूल छरी सिर धरि कहि बानी। नहिं भूपति की इह पटरानी।
सगरी नारि उलंघति गए। बैठी जहां मलिन पट लिए॥ ८॥
धरे मनोरथ इम उर मांही। मो बिन अंक न बैठहिं कांही।
सो मन जानि गए तिस पास। इह पटरानी बाक प्रकाश॥ ९॥
बैठे जाइ अंक ततकाला। भई बिसम अविलोकति बाला।
परखनि की बिधि सगरी जानी। कुछक कोप ते गिरा बखानी॥ १०॥
सुनि हम हाथ जोरि बखशाई। इम अज़मत कामल पतिआई'।
सुनि नौरंग मन साची जानि। 'भो जै सिंह! मेल मम ठानि॥ ११॥

---

1. सवेरे। 2. कितना भार तोला है, अर्थात् परख की है।

ज्यों क्यों करि दरशन करिवावहु । अज़मत तिनकी तबहि दिखावहु ।
निज दिशि ते कहि कै बहु रीति । कीजहि बिरमावन शुभ चीत ॥ १२ ॥
तबि जै सिंह कह्यो कर जोरि । 'क्यों न करौं मैं रावरि लोर ।
पूरब बहुत बार मैं भाखा । मिलिनि तुमारी जस[1] अभिलाखा[2] ॥ १३ ॥
अबि भी जतन करौं कहि बिनै । जथा मिलनि रावर को बनै' ।
इम कहि सुनि के भूपति आयो । बैठि सदन परधान बुलायो ॥ १४ ॥
'कहु सतिगुर की बात बुझाइ । जाइ बहिर किम सिवर लगाइ ।
मो पर कोप नहीं हुइ गए । ढिग ते दूर सिधारति भए' ॥ १५ ॥
हाथ जोरि परधान बखाने । 'सदा प्रसंन परहिं से जाने ।
नहिं रिस की कुछ बात सुनाई । मैं तिन संग रह्यो अगवाई ॥ १६ ॥
प्रथम गए देवी के मंदिर । केतिक काल रहे थित अंदर ।
निकसे तुमरी बिनै सुनाई । सेवक संग हुते समुदाई ॥ १७ ॥
तुमरी तोपनि के असथान । पिखि जमना जल हरख महान ।
मुझ सों कह्यो भीर बहु अंतर[3] । आईं जाईं नर अनिक निरन्तर ॥ १८ ॥
इहां रहनि महिं हरख हमारे । महिपालक सों देहु उचारे ।
नहीं अंदेशा कीजहि कैसे । जैसे तहां इहां हम तैसे ॥ १९ ॥
सुनहु परंतु लख्यो नहि जाई । जिनहुं सभिनि को रूजहि[4] नसाई ।
तन महिं जुर[5] तिन के हुइ आवा । अशट जाम इक सम दरसावा' ॥ २० ॥
सुनि सतिगुर को सरब ब्रितांत । राजे करी बितावनि राति ।
भई प्राति ते सौच शनाना । श्री हरिक्रिशन समीप पयाना ॥ २१ ॥
ब्रिंद नरनि की भीर घनेरी । सुभटनि पंकति चलहि अगेरी ।
गुर को सिवर जबहि द्रिशटायो । वाहन त्यागि चरन ते आयो[6] ॥ २२ ॥
प्रथम खबर अपनी पहुंचाई । फरशादिक त्यारी करिवाई ।
हाथ जोर करि पौर अगारी । नंम्रि होइ अभिबंदन धारी ॥ २३ ॥
अंतर तबि प्रवेश हुइ गयो । गुर प्रयंक पर हेरति भयो ।
बसत्र अछादति तन पर सारे । न्रिप पहुंचे ते बदन उघारे ॥ २४ ॥
नंम्रि होइ करि नमो अगारी । बैठ्यो राव नरनि हटकारी ।
और पौर पर रोके रहे । दरशन देखति न्रिप बच कहे ॥ २५ ॥
'श्री सतिगुर जी कैसे परे ? । सभा लगाइ न बैठनि करें' ।
इक दुइ निकटि दास जे अहे । प्रभु तूशनि ते तिन पुन कहे ॥ २६ ॥

---

1. जैसी । 2. इच्छा । 3. अंदर । 4. रोग । 5. ज्वर, बुखार । 6. पैदल चलने लगे ।

'प्रथम ताप तन महिं अधिकाई। आज सीतला दई दिखाई।
थोरा बोलति हैं मुख आप। चढ्यो अधिक अबि भी तन ताप[1] ॥ २७ ॥
हाथ बंदि महिपाल बखाने। 'महांराज कैसी क्रित ठाने।
दरस आपके नासहिं रोग। भए नगर गन लोग अरोग ॥ २८ ॥
क्या लीला दिखरावनि लागे। तुमरे नाम लेति दुख भागे।
सरब शकति पूरन समरथ। भंजन गड़न आप के हत्थ ॥ २९ ॥
दरशन चहैं ब्रिंद नर नारी। हज़रत बिनती कीनि अगारी।
सावधान बनि बैठहु आप। हरहु शकति ते ताप संताप ॥ ३० ॥
श्री नानक परमेश्वर रूप। जिनके गुन गन अधिक अनूप।
तिस गादी के मालिक आप। सभि ब्रिधि के दाता वर स्राप ॥ ३१ ॥
न्रिप ते सुनि श्री सतिगुर कह्यो। जिस किस जग सरीर को लह्यो।
सुख दुख संग सदा ही रहैं। वेद पुरान संत सभि कहैं ॥ ३२ ॥
होनहार नहिं मिटहि कदाई। जो सभि के सिर बीतति आई।
राम चंद्र कीनसि बनबासा। क्रिशन चंद्र को बंस बिनाशा ॥ ३३ ॥
चंद कलंकति, सागर खारा। रुद्र[2] हलाहल[3] को गल धारा।
कौन कौन गिनीअहि समरथ। सकल चले भावी के हत्थ ॥ ३४ ॥
जिम परमेशुर क्रित को ठानै। रिदे अनंद धारि सो मानै।
इह संतनि को मत है साचा। श्री नानक बिच सबद उबाचा[4] ॥ ३५ ॥
जथा जोग ईशुर सभि करता। मूढ अजान तरक तिस धरता।
भोगहि बहुर गुनाही होइ। भाणे को न मानि है जोइ ॥ ३६ ॥
यांते सुनहुं नरेशुर! धरीए। प्रभु भाणे को तरक न करीए।
ईशुर की मरजी महिं चाले। हरख सहित मति संत बिसाले' ॥ ३७ ॥
सुनि भूपति गुरबाणी सार। रिदै बिचारति तूशनि धारि।
कहां कहनि सरबगनि संग। जो कुछ करहिं सु अपनि उमंग ॥ ३८ ॥
बैठ्यो रह्यो सु केतिक काल। देखि गुरु तन चित बिसाल।
हज़रत मेल नहीं बनि आवै। जबि लौ बैठि न सभा लगावैं ॥ ३९ ॥
करनि उपाइ अनेकै भांति। दासनि साथ कही बहु बात।
अंतर माता परदे मांहि। मसतक टेकि पठ्यो नर नाहि[5] ॥ ४० ॥
गुर आइसु ले बंदन ठानि। उठ्यो नरेशुर करनि पयान।
बहिर पौर पर बंदन करि कै। गमन्यो निज वाहन पर चरिकै ॥ ४१ ॥

1. ज्वर। 2. शिव। 3. विष। 4. कथन किया है। 5. राजा।

सदन आपने पहुंच्यो आइ। नाना रस के भोजन खाइ।
अवरंग निकटि जाइ सभि गाई। 'प्रथम देहि ज्वर सों हुइ आई ॥ ४२ ॥
अबहि सीतला दई दिखाई। पौढि रहे गुर पिखे सु जाई'।
सुनति शाहु चित महि लखि आप। बिदत्यो राम राइ को स्राप ॥ ४३ ॥
जै सिंह संग कह्यो तिह समै। 'सुधि लिहु नित, दिहु सभि पुन हमैं'।
बहुर अपर परसंग चलाए। शाहु सभा सभि हीं बिसमाए ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे 'सीतला निकसन' प्रसंग बरननं नाम नवचतवारिंसति अंशु ॥ ४९ ॥

अंशु ५०

श्री गुर हरि क्रिशन प्रसंग

दोहरा

तिस दिन ते श्री हरि क्रिशन आइसु कीनसि दास ।
सिख संगति ढिग दूर के आइ नहीं को पास ॥ १ ॥

चौपई

जो ज़रूर ही चहीअहि आइ । सो बूझहि पुनरपि प्रविशाइ[1] ।
बंदुबसत[2] सभि ही कर दीनि । निकटि नहीं को पहुंचहि चीन ॥ २ ॥
तन पर निकसे गन बिसफोट[3] । सघन अधिक को दीरघ, छोट[4] ।
अरुन बरन सगरो हुइ आयो[5] । सोजा कुछुक देहि द्रिशटायो ॥ ३ ॥
दिन प्रति अधिक अधिक ही भयो । भरिबो बिसफोटनि हुइ गयो ।
जो सुधि लैवे आइ मसंद । कै संगति नर किधौं बिलंद ॥ ४ ॥
सभि को खबर बहिर ही देति । सतिगुर पौढे बीच निकेत ।
शाहु हमेश पठहि उमराव । अरु आवति नित जै सिंह राव ॥ ५ ॥
सभि तें उदासीन ब्रिति करिकै । पौढे रहैं तूशनी धरि कै ।
जान्यो सभिनि प्रथम जिम भयो । रामराइ जैसे बच कियो ॥ ६ ॥
सो अबि साच होइ, नहिं टरै । नांहि त किम सतिगुर इम परै ।
जिन के दरशन ते मिटि जाइ । आदि सीतला रुज समुदाइ ॥ ७ ॥
सिख आदिक पुरि महिं नर घने । करि करि दरस रोग सभि हने ।
रिदे भावना जो धरि आए । सभिहिन के रुज गुरू गवाए ॥ ८ ॥
तिन के तन को क्या दुख ग्रासे । किम तम[6] तोम[7] तरनि[8] के पासे ? ।
मिलहि गुरु के पौर जि आवहिं । इस विधि ग्रापस बिखै सुनावहिं ॥ ९ ॥
'बैस अलप गुरता अबि पाई । नहिं आगै संतति उपजाई ।
दास नहीं अस लाइक कोई । पुन गादी पर को गुर होई ? ॥ १० ॥

---

1. पूछ कर भीतर आए । 2. प्रबंध । 3. फफोले । 4. छोटा । 5. सारा लाल रंग हो गया । 6. अंधेरा । 7. गहरा । 8. सूरज ।

जेशट पुत्र न पद इह पाइ। खारज कर्यो गुरु हरिराइ।
भूत बारता जानी परै। जे सिख संगत पूजा करै ॥ ११ ॥
सभि महिं पर जै है अस रौरा। को अबि गुरु, बास किस ठौरा।
अदभुत गति श्री सतिगुर केरी। को लखि सकहि अगंम घनेरी' ॥१२॥
दिल्ली पुरि की संगत सारी। मिलि आपस महिं करति उचारी।
'रामराइ बिन संतति रहै। इह गुर स्राप साच ही लहैं ॥ १३ ॥
जाइ पौर पर नमो करंते। ले ले सुधि निज धाम सिधंते।
चेत मास पाछलि पख मांही। गए पंचमी को गुर तांही ॥ १४ ॥
बिदत सीतला दिन खशटी को। छोट बडी बिसफोट भरी को।
दिवस त्रौदसी लौ भरि आई। सेवहिं दास निकटि जे जाई ॥ १५ ॥
होति अचंभे गति पिखि मन की। 'हे गुर! कहां दिशा किय तन की।
दुख सुख सभिहिन को तुम साथ। सभि प्रकार समरथ जगनाथ' ॥ १६ ॥
मात जाइ अवलोकनि करै। लखहि गुरु गति चिंता धरै।
इक पुत्रा पुन बालिक सोइ। आगे संतति भई न कोइ ॥ १७ ॥
देखि देखि दुख पाइ बिचारी। अधिक बिसूरति[1] संसै धारी।
'हे सुत! क्यों न बनहु अहिलादी। तुम बैठे श्री नानक गादी ॥ १८ ॥
क्या इह दशा अरंभनि कीनि। सतिगुर को घर अनंद बिहीन।
आप अलंब[2] संगता केरी। चहुंदिसि की चलि आइ घनेरी ॥ १९ ॥
सभि बिधि की जाचति हैं छेम[3]। देति आप जिह शरधा नेम।
निज तन दिशि क्यों देखति नांही। अजहूं बाल आरबल मांही ॥ २० ॥
पूरब ते बैंठति चलि आई। लाइक बने पाइ गुरिआई।
अस नहिं करहु मिटहि गुर गादी। सोढी सभि शरीक सो बादी[4] ॥ २१ ॥
तिन को तजि तुमरे घर आई। करहु जोगता जीवन पाईं।
देखि शरीर मात इम कहै। भई दीन उर झूरति अहै ॥ २२ ॥
सुनि करि श्री हरिक्रिशन क्रिपाला। दे जननी को धीर बिसाला।
'रची बिधाते होनी सोइ। मिटै न करे उपाइ जि कोइ ॥ २३ ॥
जे नहिं होनी, बनहि सु नांही। करहि सु जतन सकल बल माही।
साची श्री नानक की गादी। संगति बिखै सदीव अबादी ॥ २४ ॥
अबचल नीव अहै गुर केरी। रहै सदा दिढ़ सुखद बडेरी।
तूं मम मात न इम बनि आवै। सम अपरनि के मोह उपावैं ॥ २५ ॥

---

1. उदास। 2. आश्रय। 3. मुक्ति। 4. झगड़ालू।

प्रभु मरजी महिं रहु नित राजी। जग रचना जानहुं अस पाजी[1]।
थिर न रहै नित बिनसनहारी। इस महिं प्रीति सुमति नहिं धारी॥ २६॥

हरि चंदौरी[2], जिम घन छाया। सुपना, जिम बाज़ीगर माया।
इनहिं साच लखि करि द्रिढ गहै। कहां सु प्रानी निजकर लहै॥ २७॥
बिनसहि को आगै को पाछे। इस महिं मूरख थिरता बांछे।
चल्यो जाति जिम नदी प्रवाहू। भर्यो रहहि दिखियति बिध ताहू॥ २८॥
उपजनि बिनसनि कार हमेश। सभि के सीस ठटी जगतेश।
इम बिचार करि धीरज धारहु। प्रभु क्रित समुझि शोक निरवारहु॥ २९॥

सुनति पुत्र के बाकनि माता। चखि जल जातन ते जल जाता[3]।
तूशनि भई न बोली फेर। हेरति सुत तन सोच बडेर॥ ३०॥
औरंग को नर सुधि को आवै। बहुर जाइ अहिवाल सुनावै।
अधिक सीतला के बिसफोट। पिलपिल करति बडे को छूट॥ ३१॥
सुनति शाहु निसचै मन जाना। बिनसहि तन जिम स्राप बखाना।
कह्यो न बिरथा इन को जाति। परख्यो कई बार सभि भांति॥ ३२॥
अपनि सभा महिं केतिक बारा। गुर प्रसंग को बचन उचारा।
जै पुरि नाथ साथ बहु बारी। बूझि बारता करति उचारी॥ ३३॥
ब्रिंद मसंद बिलंद सचित। मिलि मिलि बहु बिचार बिरतंत।
गुरता गादी नहिं मिटि जाइ। हम अलंब जिसके समुदाइ॥ ३४॥
संगति मिलहि सुनति पछुतावहि। हम किसके पुन दरशन पावहिं।
सकल कामना सिख्यनि दानी। जो जाचहि सभि पूरनि ठानी॥ ३५॥
मंद भाग बहु भए हमारे। जिसते गुर नहिं परहिं निहारे।
जिनको दरशन पावन करैं। जनम अनेक पाप परहरैं॥ ३६॥

इत्यादिक सभिहिनि महिं रौरा। पुरि महिं भयो अनिक ही ठौरा।
रामराइ सुनि कै सुधि सारी। बुरा भला नहिं करति उचारी॥ ३७॥
भ्रात परसपर जे बच कहै। को समरथ हटावनि चहै।
श्री नानक की जोति अपारा। को नहिं पाइ सकहि तिह पारा[4]॥ ३८॥

श्री हरि क्रिशन महां समरथ। सकल बारता जिनके हत्थ।
अंगीकार तऊ बच कर्यो। जो भ्राता करि बैर उचर्यो॥ ३९॥

---

1. झूठ। 2. गंधर्व नगरी (आकाश की एक कल्पित नगरी)। 3. नेत्र रूपी कंमलों में से जल बह रहा है। 4. अनुमान नहीं लगा सकता।

बहु कारन तिस महिं मन जाने। गुर श्री तेग बहादर ठाने।
तिन के सुत है पंथ चलावनि। गन तुरकनि की जरा नसावनि॥ ४० ॥
बाक पितामे पित सफलावैं। हम तन तजहिं सकल बनि आवैं।
गुर सरबग्य बिसाल उदारा। इत्यादिक सभि रिदै बिचारा॥ ४१ ॥
चाहति भे सरीर को त्यागनि। दे करि दरस सिक्ख अनुरागनि।
कारन करन आप सभि जानैं। नर अजान क्या तिनहुं बखानैं॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे **'श्री गुर हरि क्रिशन'** प्रसंग बरननं नाम पंचासती अंशु ॥ ५० ॥

अंशु ५१

श्री हरि क्रिशन प्रसंग

दोहरा

चेत चतरदसमीं[1] भई चाहति भे परलोक।
ब्याकुल तन की दशा बहु देखति दास सशोक ॥ १ ॥

चौपई

सेवा हेतु दास जो नेरे। नेत्र उघारि तिनहुं दिशि हेरे।
कर्यो हुकम 'हम चलहिं प्रलोक। जे दरशन कांखी सभि लोक ॥ २ ॥
है मसंद गुरबखश सि माला[2]। दिल्ली नगर बिखै सभि काला।
तिस ते आदिक अपर जि अहैं। अरु सिख संगति दरस जि चहैं ॥ ३ ॥
तिन सभिहिनि को आनि हकारि। पावहिं दरस आनि दरबार'।
सुनति बिलोचन दासनि भरे[3]। ततछिन अश्रु बूंद गिर परे ॥ ४ ॥
माता आदिक सभिनि सुनाइ। समुदाइनि को शोक उपाइ।
पुन गुरबखश हकारन कर्यो। सुनि करि नेत्रनि महिं जल भर्यो ॥ ५ ॥
अपर सिक्ख संगति बुलिवाए। दरशन के कारन चलि आएं।
रिदे बिसूरति मुख मुरझाए। तूरननि ठानि पहुंचि तिस थाए ॥ ६ ॥
जैं सिंह आदि अपर नर घने। उतलावति चित चिंता सने[4]।
सकल आनि पहुंचे जबि पौर। भई भीर थिर भे तिस ठौर ॥ ७ ॥
अंतर सतिगुर निकटि जनायहु। 'सुनि सुधि जैंपुरि को पति आयहु।
ब्रिद मसंद संगतां सारी। आन थिरी सभि पौर अगारी' ॥ ८ ॥
सुनि करि श्री हरि क्रिशन उचारा। 'फरश डसावहु बिबिध प्रकारा।
आनि सभिनि को देहु बिठाइ। दरशन करहिं कामना पाइ' ॥ ९ ॥
गयो मेवड़ा आइसु लैके। अंतर सकल हकारनि कै कै।
श्री सतिगुर तबि ह्वै सवधाना। बैठे दरशन देनि सुजाना ॥ १० ॥

---

1. चेत चौदस। 2. गुरबखश मल्ल। 3. दासों की आंखों में आंसू भर आए।
4. चित्त में चिंता भर कर।

पिखि गुरबखशहि जैंपुरि नाथ। प्रविश्यो अंतर गहि तिस हाथ[1]।
इन दोइन ते पीछै सारे। आनि बरे[2] चिंता चित धारे।। ११ ।।
गुर तन पिख्यो ब्रिंद बिसफोट। भरे सरब दीरघ को छोट[3]।
कर बंदहिं बंदन को धारहिं। केचित हेरि होति बलिहारे[4]।। १२ ।।
जथा उचित बैठे धरि मौन। करति बिलोकन, बोलहि कौन।
जै पुरि पति को रुख लखि करिकै। कहि गुरबखश नंम्रिता धरिकै।। १३ ।।
'श्री सतिगुरु आप सरबग्य। क्या कहि सकहिं जि नर अलपग्य।
तऊ आपनो हित चित चहैं। समरथनि ढिग बिनती कहैं।। १४ ।।
आगै भए सपत गुर जोइ[5]। दास किधौं लाइक सुत कोइ[6]।
सभि बिधि ते समरथ तिस करिकै। गुरता गादी पर बैठरि कै।। १५ ।।
सकल संगतां आदि मसंद। कर गहिवाइ दास जे ब्रिंद।
बहुर चहैं परलोक पयाना। करति रहे जन गन दुखहाना।। १६ ।।
जै पुरि नाथ सहित इस बेरी। बिनती सुनहुं संगतां केरी।
सभि दासनि पर करुना करीए। भोगहु बपु को दरस दिखरीए।। १७ ।।
तरुन होइ संतति उपजावहु। बनहु उचित जबिहूं लखि पावहु।
अपने थान बिठावनि कीजै। पुन प्रलोक जाने मन दीजै।। १८ ।।
म्रितु सुछंद तुम हो समरथ[7]। तन धारनि त्यागनि निज हत्थ।
यांते सभि को कहिबो बनै। रचहु तथा जिम बांछहु मनै।। १९ ।।
अपरनि की म्रितु किम हुइ जाइ। जे अभिलाखहु सकहु जिवाइ[8]।
इह कुछ नई नहीं हम कही। गुर घर महिं नित होवति रही।। २० ।।
कौन कौन हम करैं बतावनि। जेतिक म्रितक कीनि जीवावन।
बिदत जगत मैं छपी न कोइ। सरब कला समरथ गुर होइ।। २१ ।।
अनिक म्रितक जे दए जिवाइ। निज जीवन मैं संसै काइ।
बाल अवसथा महि तुम अहैं। असमंजस लखि सभि हम कहैं'।। २२ ।।
सुनी बारता सतिगुर सारी। अपर सभा सभि तूशनि धारी।
हाथ जोरि देखति मुख पदम[9]। अजमत[10] लै बखशनि को सदम[11]।। २३ ।।
संगति बिनती ते क्या भनहि। सगरे मन महिं इस बिधि गुनहिं।
क्रिपा निधान बचन पुन भन्यो। मौन ठानि सभिहिनि तबि सुन्यो।। २४ ।।

---

1. उसका हाथ पकड़ कर। 2. आ गए। 3. कोई बड़ा और कोई छोटा। 4. न्योछावर होते हैं। 5. पहले जो सात गुरु हुए हैं। 6. किसी के दास योग्य थे और किसी के पुत्र। 7. आप समर्थ हैं और जन्म मरण रहित हैं। 8. जिसे चाहें आप जीवित कर सकते हैं। 9. कंवल (मुख)। 10. करामात। 11. घर (करामात का घर)।

'जथा जोग संगति किय अरज़ी । तऊ सुनहु परमेश्वर मरज़ी ।
हमरे तन त्यागनि बहु कारन । आछो नहीं जि करहिं उचारनि ॥ २५ ॥
गुर गादी अवचल जग मांही । वधहि प्रताप मिटहि किम नांही ।
मनो कामना संगति पावहि । ले गुर ते उपदेश कमावहि ॥ २६ ॥
गुरु ग्रंथ साहिब सभि केरा । जो हमरो चहि दरशन हेरा ।
सो शरधा धरि हेरनि करै । पापनि गन को ततछिन हरै ॥ २७ ॥
हम सों बात करनि को चाहहि । पठहि सुनहिं गुर ग्रंथ उमाहहिं ।
तिस महिं कह्यो जु करहि कमावनि । चार पदारथ ले मन पावन ॥ २८ ॥
होहि कामना सिख कै कोई । बिघन परहिं के संकट होई ।
शरन ग्रंथ साहिब की जाइ । ततछिन सतिगुर बनहिं सहाइ ॥ २९ ॥
शरधालू को सभि किछ अहै । होहि अशरधक किमहु न लहै ।
तन सदीव थिर होइ न कोइ । रिदा ग्रंथ गुर को लिहु जोइ ॥ ३० ॥
नित दरशन करि मसतक टेकहु । हनहु बिकारनि पाइ बिबेकहु ।
इम सुनि करि सतिगुर की बानी । सभिनि बिलोचन ते बहि पानी ॥ ३१ ॥
गुर जीवन की आस चुकाई । दुरलभ दरश नहीं पुन पाई ।
पुन जै सिंह कह्यो कर जोरे । शाह चहहि तुम चरन निहोरे ॥ ३२ ॥
मिलिबे की लालस ही रही । ताहि कामना पूरी नहीं ।
मुझ सों कहति रह्यो बहु वारी । मैं रावर की मरज़ी धारी ॥ ३३ ॥
अबि क्या हुकम कहौं ढिग शाहू । बूझहि जबहि जाइ हौं पाहू ।
श्री हरि क्रिशन राव सों कह्यो । 'तिस ढिग भ्रात हमारो रह्यो ॥ ३४ ॥
मन भावति अज़मत दिखलाई । जिम भाख्यो तिम ही करिवाई ।
साढे त्रै सै वार विलंद । करामात हेरी बिधि ब्रिंद ॥ ३५ ॥
अपर कहां गुर घर ते चाहति । मिलिबे हित जो बहुत उमाहति ।
दुती बात परलोक सिधावनि । बिन संकट रहि आनंद पावन ॥ ३६ ॥
तिस हित शब्द पठावनि कर्यो । श्री गुर नानक यथा उचर्यो ।
करहि कमावनि शुभ गति पावै । बिना कमाए हाथ न आवै ॥ ३७ ॥
हम सों मिलनि काज हैं दोइ । पूरब ही प्रापति तिह सोइ ।
अपर तीसरो काज न कोई । जिसते मेल हमारो होई ॥ ३८ ॥
इही बारता कहीअहि जाइ । सिमरहु सत्तिनामु सुख पाइ ।
सतनि संग नहीं करि अरना । तिन को कह्यो आप सिर जरना[1] ॥ ३९ ॥

---

1. सहन करना ।

इम कहि मौन धरी गुन खानी। उठ्यो भूप तबि बंदन ठानी।
गमन्यो नौरंग के ढिग गयो। सरब ब्रितांत सुनावति भयो॥ ४० ॥
तबहि शाहु बोल्यो न्रिप साथ। 'राखहु सुधि तुम जैपुर नाथ।
तन को तजहिं आन सुधि दीजै। मो बिन कहे दाहु नहि कीजै॥ ४१ ॥
निस कै दिन होवै तिस काल। तन त्यागै सुधि देहु उताल'।
इतो प्रसंग शाहु ढिग भयो। जै सिंह निज घर को चलि गयो॥ ४२ ॥
सुधि हित अपने मनुज पठाए। कह्यो कि 'सुनि आवहु उतलाए'।
इस प्रकार दिन भयो ब्रितंत। संध्या समैं गुरु भगवंत॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे '**श्री हरि क्रिशन**' प्रसंग बरननं नाम एक पंचासमो अंशु ॥ ५१ ॥

अंशु ५२

श्री गुरु हरिक्रशन जी गुरता अरपन प्रसंग

दोहरा

सूरज असत्यो प्रांच[1] दिशि भा संध्या को काल।
आइं जाइं सिख पुरी ते दरसति गुरु क्रिपाल ॥ १ ॥

चौपई

ब्रिद मसंद थिरे सभि आइ। जे गुरबखश आदि मुख गाइ।
अंतर वहिर भीर बहु होई। धरे शोक बोलति नहिं कोई ॥ २ ॥
दरशन करहिं वहिर थिर होइ। वाहिगुरु सिमरति सभि कोइ।
पुरि की संगति के सिख स्याने। गुर चरित्र ते उर बिसमाने ॥ ३ ॥
सभि गुरबखश संग मिलि कह्यो। 'अबि मिलि गुर दरशन को लह्यो।
समा कहनि को लखि मन मांही। बूझहु सकल होइ कर पाही ॥ ४ ॥
जबि हुइ जैं हैं अंतर ध्यान। रिदे बिसूरति रहहु महान।
नहीं संदेह होइ जिस भांति। सुनियहि गुरु बाक बख्यात ॥ ५ ॥
जथा करनि अरदास अगारी। मिलि सभिहूं तिम भले बिचारी।
तबि गुरबखश भले समुझायो। जिम इस समे कहनि बनि आयो ॥ ६ ॥
ठहिर्यो मत जिम सभिहिनि केरा। कहिबे हित अगेर सो प्रेरा।
भए संग तिस के सिख स्याने। गुर म्रिजाद जे चहति महाने ॥ ७ ॥
आगे सतिगुर कीनसि त्यारे। कुश को आसतरन छित डारे।
दासनि सों कहि कहि करिवावैं। सुनति बिलोचन जल द्रिग छावै ॥ ८ ॥
घटिका चार बितीतनि करे। तबि गुरबखश अग्र हुइ खरे।
सभि के हित की शुभ अरदास। करी गुरु के पास प्रकाश ॥ ९ ॥
प्रथम लीए सभि गुर के नाम। जिन को सुजसु जगत अभिराम।
'सभि संगति की बिनै सुनीजै। बिरद क्रिपालु क्रिपा निज कीजै ॥ १० ॥

---

1. पूर्व की दिशा, परन्तु यहां पर 'पश्चिम' होना चाहिए।

सपतम सतिगुर श्री हरिराइ। सुत तजि बडो न उचित लखाइ।
अपने बदन[1] लगायव नहीं। गुरता देनी तौ कित रही ॥ ११ ॥
तुम कौ निज असथान बिठाए। सभि बिधि उचित जानि हरखाए।
कितिक मास जुग-संमत[2] बीते। जबि के जगत गुरु तुम कीते[3] ॥ १२ ॥
तबि की संगत सरब सभाली। सिक्खी रीति भले प्रतिपाली।
चहति भए अबि अंतरध्यान। नहीं बिठायो को निज थान ॥ १३ ॥
अबि सभि संगति मिली बिसूरति। नहिं न बिलोकहिंगे तुम मूरति।
रावर ने किस के लड़ लाई। रीति प्रथम गुरअनि[4] चलि आई ॥ १४ ॥
करहु आप भी तिनहुं समान। जिसते सिक्खी रहै जहान।
जे ना करहुगे पूरब रीति। जानी परहि सु हुइ बिपरीत ॥ १५ ॥
बिचल[5] जाइगी संगति सारी। केचित हुइं मीणनि अनुसारी[6]।
धीरमल्ल कौ मानहि कोई। को सिख रामराइ को होई ॥ १६ ॥
इत्यादिक सोढी जे और। ले बिरमाइ[7] आपनी ठौर।
बिन गुर संगत ह्वै थिर कोइ न। जथा न्रिपति बिन सैना होइ न ॥ १७ ॥
रहै न जबि गादी को मालिक। धन हित अपर बनहिं ततकालिक।
शकति हीन जे हुइ गुर औरा। आपस बिखै पाइं बड रौरा ॥ १८ ॥
स्याने समझहि तबि हटि जाइं। इम गुर सिक्खी जगहि बिलाइ।
श्री नानक ते आदिक भए। जग महिं सिक्खी को दिढ किए ॥ १९ ॥
सो नहिं बिनसहि जिम जग मांही। उचित करनि के हो बिधि ताँही[8]।
नांहि त डोल जाइगी संगति। बैठनि लगहिं अपर की पंगति ॥ २० ॥
जो गुर ग्रंथ आपने भन्यों। सो सगरे सिक्खनि हूं सुन्यों।
लिखि लै हैं अबि सोढी सारे। बैठहि मानी गुर हुइ भारे ॥ २१ ॥
यांते संगति किस लड़ लावहु। गुरता उचित जांहि लखि पावहु।
पुरि की संगति मिलि समुदाई। इम अरदास करति अगुवाई ? ॥ २२ ॥
सुनि करि श्री हरिक्रिशन क्रिपाला। जथा जोग जानी तिस काला।
गुर होइ सो छपै न कैसे। बिदतहि गगन चढे रवि जैसे ॥ २३ ॥
तऊ रीति पूरब गुर केरी। हम को करि चहिय इस बेरी।
इम बिचार करि निरनै लह्यो। बोले 'जथा जोग तुम कह्यो ॥ २४ ॥

---

1. मुंह। 2. दो वर्ष। 3. आपको जगत का गुरु बनाया गया। 4. गुरुओं से 5. बिखर जाएगी (राम राय के अनुयायी)। 6. 'मीणों' के अधीन। 7. बहकाना। 8. वहाँ।

पैंसे पंच नलेर मंगावहु। सभि संगति को निकटि बिठावहु।
भारी गुर बिदतहि जग मांही। जिस ते दंभी गुर दुर[1] जांही॥ २५॥
सिक्ख हज़ारहं. लाखहुं. कोट। उधरहिंगे जिस की ले ओट।
धरहिं धरा सम धीरज भारी। ससि सूरज सम परउपकारी॥ २६॥
सिक्खी दिढ ऐसी जग करैं। जे बेमुख सभि पैंरी परैं।
महां प्रताप सभिनि पर छावैं। कुछ ते कुछ करि कैं दिखरावैं॥ २७॥
सुनि श्री मुख ते बचन सुहाए। सुनति जि सगरे सीस निवाए।
धाइ गयो आन्यो ततकाला। पैंसे पंच नरेल बिसाला॥ २८॥
कंचन थार[2] बिखे धरि दीनि। चंदन पुशप धूप शुभ कीनि।
संगति सगरी निकटि बुलाई। जिस महिं स्याने सिख समुदाई॥ २९॥
हाथनि जोरि नाथ गुर आगे। नमो करहि को चरनी लागे।
घ्रित की जरहि मसाल अगारी। अपर सुगंधनि बहु महिकारी॥ ३०॥
सभा लगाइ जथोचित सारे। बैठे चहुंदिशि गुर परवारे।
धरे मौन सभि हेरनि करैं। सनै सनै गुर सिमरनि धरैं॥ ३१॥
श्री हरि क्रिशन दरस कहु दान। दीनहु. कीनि जनन[3] कल्यान।
तज्यो प्रयंक तरे गुर भए। कुश को आसतरन थिर थिए॥ ३२॥
कंचन थार निकटि करिवायो। देखि दाहिनो हाथ उठायो।
म्रिदुल मनिंद कमल के जोइ। प्रेरन कर्यो पिखहिं गन सोइ॥ ३३॥
पैंसे पंच उठावनि करे। श्री फल साथ हाथ मुंह धरे।
कीनि मंडलाक्रित[4] त्रै बारी। धर्यो सुध्यान प्रक्रमा धारी॥ ३४॥
लेपन करी भूम जहिं पावन। निजकर ते तहिं करे टिकावनि।
हाथ जोरि पुन बंदन ठानी। नेत्र उधारि कहि मुख बानी॥ ३५॥
'बाबा बसहि जि ग्राम बकाले। बनि गुरु, संगति सकल समाले'।
इम सुनाइ सभिहिनि सों कह्यो। सिक्खनि उर निशचै तबि लह्यो॥ ३६॥
नहिं नाम लीनसि तिस बेरा। तऊ लख्यो सभि गुरु बडेरा।
बिदतहि आप छप्यो नहिं रहै। इम बिचार करि कोइ न कहै॥ ३७॥
सभि की इच्छा पूरन करि। ग्रीव[5] निवाइ नंम्रता धरी।
नमों करहि सभि आदि मसंद। धरे शोक उर अधिक अनंद॥ ३८॥
कर्यो हुकम सतिगुर ढिग दास। 'अबि संगति की पूरन आस।
कहो सभिनि सों पौर अगारी। थिरहु करहु सतिनाम उचारी॥ ३९॥

1. छिप। 2. सोने के थाल में। 3. दासों का। 4. गोलाकार। 5. गर्दन।

पठहिं सुनहिं इक चित गुर बानी । जाग्रनि करहिं होइ सवधानी ।
लेहु बुलाइ रबाबी जोइ । करहि सप्रेम कीरतन सोइ ॥ ४० ॥
बिना भजन करिबे सतिनाम । नहिं को बोलहि थिरहि जु धाम ।
अबि हम करहिं प्रलोक पयाना । बनहिं इकांकी निज असथाना' ॥ ४१ ॥
सुनि गुर हुकम सभा सभि जोइ । उठि उठि हाथ जोरि करि दोइ ।
नमो करहि दरशन को देखि । जिनके मसतक भाग विशेख ॥ ४२ ॥
अपर कामना जो जो धरी । पूरन कीनि गुरु तिस घरी ।
अधिक प्रेम जुति बिछुरे गुर ते । शोक विसाल दीन बड उर ते ॥ ४३ ॥
सिख समुदाइ पौर पर थिरें । सत्तिनाम को सिमरनि करें ।
लगे रबाबी किरतन करिबे । जिह सुनिबे सभि कल मल हरिबे ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज गंथे दसमि रासे 'श्री गुर हरिक्रिशन जी गुरता अरपन' प्रसंग वरनन नाम दोइ पंचासती अंशु ॥ ५२ ॥

अंशु ५३

श्री हरिक्रिशन प्रलोक गमन प्रसंग

दोहरा

इसक्रित को करते गुरु कहनि सुननि बिसतार।
बीत गई अध जामनी चहैं प्रलोक पधारि ॥ १ ॥

चौपई

अंत समा लखि जननी आई। देखति पुत्र गात[1] मुरझाई।
अश्रु बिलोचनि ते बहु डारहि। संकट शोक रिदै बहु धारहि ॥ २ ॥
सरब प्रकार गुरु समरत्थ। लघु दीरध टेकहि पद मत्थ[2]।
अंतरजामी सभि मन केरे। बड ते लघु लघु करहिं बडेरे ॥ ३ ॥
त्यागनि धरबो करनि सरीर। जिनके है अधीन उर धीर।
महिंमा सुत की जानति सारी। ग्याता देश काल की भारी ॥ ४ ॥
भूत भविक्ख्यत महिं गति होइ। सगरी जानति है मन सोइ।
नित सरबग शकति महिं भारी। जिन कीरति जग बहु बिसतारी ॥ ५ ॥
निकटि बैठि मुख कमल बिलोका। सदा प्रफुल्यति कबहुं न शोका।
भई दीन मुख बोली बानी। सुनहु पुत्र! तुम गुन गन खानी ॥ ६ ॥
कहौं कहां मैं बात बनाई। आगे कही सु आप हटाई।
गुरता आदिक दैबे कार। करी सरब ही भले सुधारि ॥ ७ ॥
मैं निशपुत्र।[3] ह्वै किम जीवौं। तुमहिं बिलोके आनंद थीवौं।
पति पाछे कुछ शोक न कीन। हरखी पिखि गुरता तुम लीनि ॥ ८ ॥
आप करहु परलोक पयाना। मैं झूरति करि शोक महाना।
बडे भाग सतिगुर घर आई। तुम जनमे अति भई बधाई ॥ ९ ॥
अबि डूबौं दुख सिंधु मझारे। को केवट हुइ पार उतारे।
तुम बिन देखे जियौं न कैसे। जल ते बिछुरी मछरी जैसे' ॥ १० ॥

---

1. शरीर। 2. माथा। 3. पुत्रहीन।

इत्यादिक माता बच कहे। जिस के सुनति दास दुख लहे।
श्री हरि क्रिशन बिलोक दुखारी। बहु प्रकार करि धीर उचारी ॥ ११ ॥
'तन जानहुं सभि बिनसन हारे। इस ते क्यों अतिशै दुख धारे।
रही कितिक बाकी बय[1] तेरी ?। तन तजि पहुंचहिं सुख बहु हेरी ॥ १२ ॥
जनम मरन दुख लेश न जहां। मम पित निकटि पहूचहिं तहां।
इम कहि माया मोह मिटायहु। जननी मन महिं ग्यान उपायहु ॥ १३ ॥
भई मगन कुछ आइ न बानी। लखि सुत महिमा महां महानी।
अरध राति ऊपर इक घरी। चढ़नि हेतु[2] गुर त्यारी करी ॥ १४ ॥
कितिक दास ढिग मात निहारहिं। तूशनि होइ सथिरता धारहिं।
बोलति कोमल बाक सुहाए। श्री मुख पर कर सों पट[3] पाए ॥ १५ ॥
लियो अछाद, छिनक महिं पयाने। श्री हरि क्रिशन सु क्रिशन समाने।
ब्रह्मादिक नारद मुनि साथ। सकल देव युति देवन नाथ[4] ॥ १६ ॥
गुर आगवन जानि सभि आए। बादति दुंदभि आदि बजाए।
पुशपनि माल बिसाल अनंदति। धूप धुखावति[5] गुर को बंदति ॥ १७ ॥
अनिक प्रकारन के उतसाहू। रचहिं देव मिलि आपस मांहू।
चढि बिबान पर गुर पयाने। मणीअनि मुकता[6] गन लरकाने ॥ १८ ॥
देवबधू[7] नाचति अगवाई। चले जाति ह्वै अनिक बधाई।
किंनर[8] गंध्रब मिलि समुदाया। सभिहिनि अहिं अनंद बड छाया ॥ १९ ॥
पहुंचे प्रभु बैकुंठ सथान। अति अनंद महिं गुर भगवान।
सुर सभि निज निज थान सिधाए। कीरति कीरति गुरनि की जाए ॥ २० ॥
जबि तन त्याग्यो जननी जाना। दासनि सों तबि बाक बखाना।
'देखहु सतिगुर की अबि देहि। प्रान नहीं जाने मन एह' ॥ २१ ॥
तबि उघारि मुख दास निहारा। जथा प्रफुल्लित कमल उदारा।
म्रितक चिन्ह इक प्राण न आवति। अपर प्रभा तिम ही द्रिशटावति ॥ २२ ॥
बहुरो बदन अछादनि कर्यो। सभि के द्रिग पूरन जल ढर्यो।
रुदिति भए जबि अंतर सारे। बहिर पौर पर सुनि पुकारे ॥ २३ ॥
जान्यो सभिनि समावति भए। अपनि पुरी को प्रापत थिए।
सिमरति सतिनाम सहि शोका। हुते पौर पर जेतिक लोका ॥ २४ ॥

---

1. आयु। 2. शरीर का त्याग करने के लिए। 3. वस्त्र। 4. इन्द्र देवता सभी देवताओं सहित। 5. धूप जलाते हैं। 6. मोती। 7. अप्सरा। 8. एक प्रकार के देवता।

सुनि जै सिंह को दून सिधार्यो। जाइ पास तिस भेव उचार्यो।
न्रिप सुनि शोक बिसाल उपायो। सिमरि सिमरि गुर गुन पछुतायो ॥ २५ ॥

शाहु निवटि सुधि तब पहुंचाई। 'जाम जामनी तीन बिताई'।
सुनि कै सुधि तगीद[1] पुन करी। 'मैं आवौं चलि करि जिस घरी ॥ २६ ॥

तबि करनो ससकार सरीर। बाल गुरु हरिक्रिशन सधीर।'
न्रिप को आनि सकल समुझाई। शाहु आपसों इम फुरमाई ॥ २७ ॥

सुनि जै सिंह गयो ततकाल। अंध्रत वेला हुतो बिसाल।
जाइ पौर पर बैठ्यो सोइ। आइ अपर बैठहिं सभि कोई ॥ २८ ॥

भई प्रभाति सुन्यो पुरि सारे। सिख संगति भा मेल उदारे।
चंदन ले ले पहुचे कोई। तिल अरु घ्रित घनो ले सोइ ॥ २९ ॥

अनिक सुगंधनि ल्यावनि करैं। शोक बिसाल सिख्य बहु धरैं।
भई भीर नर मिले हजारों। सुनि सुधि चले आइ दुख धारो ॥ ३० ॥

बैठहिं सिमरहिं गुर गुन घने। कशट अनिक दरशन ते हने।
जबि के पुरि महिं भए प्रवेश। तबि ते नाशे रोग अशेश। ३१ ॥

जैपुरि नाथ आदि सभि कहैं। 'सरब कला समरथ प्रभु लहैं'।
केचित रामराइ को निंदहिं। 'मतसर धरता बहु उर बिंदहि[2] ॥ ३२ ॥

'शाहु निकटि कहि प्रथम हकारे। पुरि प्रविशे पिखि स्राप उचारे।
इनहु न चह्यो शाहु सों मेला। दरशन दीनि न लीनि सुहेला[3] ॥ ३३ ॥

कहे पिता के महिं इह रहे। देनी करामात नहिं चहे।
धंन गुरु हरिक्रिशन महाने। धीर गंभीर अभीर सुजाने ॥ ३४ ॥

निज प्रण ते नहिं चले गुसाईं। नहिं मिलिवे की लखी बडाई।
धन पूजा की चाह न कोई। सदा सहाइक दासनि होई' ॥ ३५ ॥

इत्यादिक गुन बरनन करैं। शील सरूप म्रिदुल शुभ धरैं।
भई पौर आगे बहु भीर। तजहिं बिलोचन ते सिख नीर ॥ ३६ ॥

अंतर दासी दास घनेरे। रोदति उपज्यो शोक वडेरे।
सुत के सिमरि सिमरि गुन भारी। दुखी होति अतिशै महितारी ॥ ३७ ॥

त्यारी करनि लगे ससकारनि। निकटि सथल शुभ कर्यो निहारन।
सकल समिग्री ले पहुंचाई। शाहु प्रतीखति जैपुरि राई[4] ॥ ३८ ॥

इतने महिं इक नर तहिं आयो। न्रिप सों सकल ब्रितंत सुनायो।
आवति शाहु देग नहिं कोई। असवारी ढिग पहुंचनि होई ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे **'श्री हरिक्रिशन प्रलोक गमन'** प्रसंग बरननं नाम तीन पंचासती अंशु ॥ ५३ ॥

---

1. अनुरोध 2. समझते हैं। 3. सुन्दर। 4. जैपुर का राजा।

अंशु ५४

श्री हरि क्रिशन संसकार प्रसंग

दोहरा

शाहु शनान प्रभाति करि पोशिश पहिरि नवीन।
पिखनि चल्यो चितवंत चित दरसौं गुरु प्रबीन ॥ १ ॥

चौपई

जियति मेल नहिं मो संग कर्यो। कहि बहु रह्यो अधिक हठ धर्यो।
अबि सरूप मैं देखौं जाई। अज़मत है कि नहीं बिधि काई ॥ २ ॥
एव बिचारति तूरन[1] आयो। भीर सँकरे नर की ल्यायो।
हेरनि हेतु हज़ारहुं आवें। शाहु पिछारी चलि उत लावें ॥ ३ ॥
आइ पौर पर उतर्यो तबिहूं। देखति उठे आदि न्रिप सभिहूं।
नंम्रि होइ सनमान करंते। भई भीर बहु को हटकंते ॥ ४ ॥
जै सिंह संग बूझि ब्रितंता। अंतर बर्यो पिखनि उमकंता[2]।
रिदे मनोरथ को इम कर्यो। नहिं मिलिबे को हठ बहु धर्यो ॥ ५ ॥
सिख्या दीनसि बडे हमारे। सो हम नेम[3] निवाह्यो सारे।
जीवति जावत तावत रह्यो। अब्रि सो मिटै दरस को लह्यो ॥ ६ ॥
किस उपाइ ते नेम न रहै। पिता सीख को जिस बिधि कहै।
क्या अज़मत को करहिं दिखावनि। देखि लेउं मैं दरशन पात्रन[4] ॥ ७ ॥
इम चितवति सभि लोक हटाए। एकल प्रविश्यो अंतर जाए।
मात आदि दासी गन दास। ततछिन प्रविशे अपर अवास[5] ॥ ८ ॥
खरो रह्यो इक सेवक तीर। तूशनि तजति बिलोचन नीर।
नहीं हटाइ सकहि तबि कोइ। तुरकेशुर दिल्लीपति जोइ ॥ ९ ॥
जननी मन महिं कुछक बिचारैं। नहिं समरथ भई हटकारैं।
ततछिन आइ बिलोकनि करे। बसत्र अछादति तन पर परे ॥ १० ॥

---

1. शीघ्र । 2. इच्छुक (देखने का) । 3. नियम, प्रण । 4. पवित्र । 5. घर ।

ठांढो भयो जाइ ढिग शाहू। पिखों बदन इम ठटि मन मांहू।
कह्यो दास सों निकटि जि ठांढो। 'बसत्र टारि इन को मुख काढो ॥ ११ ॥
मुझ को दरशन देह कराई। आयहु इस कारन उतलाई'।
सुनि सेवक अवरंग ढिग ह्वै कै। बसत्र गह्यो कर, बंदन कै कै ॥ १२ ॥
जबि ऊचो करि लग्यो दिखावनि। किस ते कर्यो न जाइ हटावनि।
जबि नौरंग तित द्रिशटि लगाई। धरा दरज[1] दीरघ लखि पाई ॥ १३ ॥
सतिगुर देह नहीं द्रिशटावैं। दीह दरज महिं द्रिशटि चलावैं।
तहां भयानक अति कुछ देखा। देखति उपज्यो कंप विशेखा ॥ १४ ॥
दंत गए मिलि कह्यो न जाई। भयो सथंभ अचल[2] की न्याई।
जड़ी[3] भूत ऐसे हुइ गयो। इंद्रै गन सरीर थिर भयो ॥ १५ ॥
आइ घुमेरी गिरिबे चाही[4]। बिहबल होति जाति सुधि नांही।
बिखरे जाहिं अंग बरिआई[5]। अधिक त्रास ते थिर्यो न जाई ॥ १६ ॥
बांहु एक ही बार पसारी। निकटि दास गुर, तिस पर डारी।
पर्यो भार छूट्यो पट कर ते। होइ शाहु दिश गिरति संभरते[6] ॥ १७ ॥
छाद्यो सतिगुर को तन जबै। भै बिन होति भयो कुछ तबै।
सुधि प्रापति तूरन तबि चाला। निकस्यो बहिर जहां नर जाला ॥ १८ ॥
जै सिंह मिल्यो अगाऊ होइ। देखति मुख को बिसम्यो सोइ।
अधिक अधीरज द्रिग जल चाला। बोल्यो जाइ नहीं तिस काला ॥ १९ ॥
पिख्यो कहां नहिं जाइ बतायहु। डरति रिदा बिहबल द्रिशटायहु।
पुन उमराव अपर चलि आए। तिन कंधे पर हाथ टिकाए ॥ २० ॥
करी हकारनि सुख असवारी। गमन्यो दुरग दिशा डर धारी।
नहिं किसहूं सो कछू जनाई। आवति लाज न जाइ बताई ॥ २१ ॥
जिम संघरि महिं खड़ग चलंते। श्रोणत निकसति अंग कटंते।
कातुर[7] त्रास पाइ करि भाजै। नहिं निज दशा कहति जिम लाजै ॥ २२ ॥
जिस प्रकार कहकह दीवार[8]। दिखहि जु करी न जाइ उचारि।
तिम तूशनि हुइ बहु पछुतावा। भै ते अति संकट को पावा ॥ २३ ॥
नहिं किस आगे कबहुं उचारी। कहै कहां, नहि बुधि मझारी।
तिस पीछे जै सिंह ते आदि। करनि लगे सभि जिम मिरजाद ॥ २४ ॥

---

1. धरती में दरार। 2. पर्वत। 3. जड़। 4. चक्कर खाकर गिरने लगा। 5. ज़बर्दस्ती। 6. संभाला। 7. कायर। 8. मुसलमानी विचारानुसार काफ पर्वत पर की दीवार।

रोदति माता सकल बतावै। दौरति दास सकल सो ल्यावैं।
मिलि सभिहूं करिवाइ शनान। सीचिं सुगंधं ब्रिंद महान ।। २५ ।।
बसत्र नवीन रुचिर पहिराए। कहि करि भलो बिवान बनाए।
'तिस पर सतिगुर को पौढायहु। चहुं दिशि फूल माल लरकायहु ।। २६ ।।
धूप धुखावति अनिक प्रकारे। कंध उठाइ मसंद सिधारे।
शबद रबाबी गावति जाति। सिमरति सतिनाम सुखदात ।। २७ ।।
क्रिशन कुइर जननी मन ग्यान। तऊ शोक उपजंति महान।
गुन सपूत के सिमर बिसाले। अति सनेह ते द्रिग जल चाले ।। २८ ।।
दासी दास प्रकाशहिं शोक। रुदति बिलोकति संगति लोक।
जिस थल को तिलोखरी नाम। निकटि वहै जमना अभिराम ।। २९ ।।
तहिं चंदन के भार गिराए। तिल घ्रित आदि ल्याइ समुदाए।
शोक बिसाल समेत बिवान। कर्यो उतारनि सो तिस थान ।। ३० ।।
आदि मसंद चिखा रचि करि कै। संदल ब्रिंद भली बिधि धरि कै।
पुन ऊपर सतिगुर पौढाए। जौं तिल घ्रित पाइ समुदाए ।। ३१ ।।
लांबू तबि लगाइ ततकाला। पुनरपि[1] कीनसि क्रिआ कपाला[2]।
मसतक टेकि सकल तिस थान। गमने जमना करनि शनान ।। ३२ ।।
गुर कीरति को करति उचारि। बारि बारि सिमरति सुखकार।
सभि मज्जन[3] करि कै चलि आए। जहां बसनि को थान सुहाए ।। ३३ ।।
पुरि ते नर हज़ार ही आवैं। बैठहिं गुरु प्रसंग चलावैं।
'बालिक बय ते बडे न होए'। अधिक अचंभा सभिहिनि जोए ।। ३४ ।।
क्रिशन कुइर गुर जननी पास। करहिं प्रेम के बाक प्रकाश।
'मंद भाग संगति के जाने। जिन समीप ते गुरु सिधाने' ।। ३५ ।।
बूझति गुरनि बारता सारी। क्रिशन कुइर तिन पास उचारी।
'इन के पित कीरत पुरि बासे। मैं सेवा ठानी करि आसे ।। ३६ ।।
भए प्रसंन मोहि बर दीनि। तबि ते मैं ग्रभ धारनि कीन।
स्रावण वदी द्योस दसमी को। हुतो नछत्र पुनरबस[4] नीको ।। ३७ ।।
संमत सत्रां सै अरु तेरां। ससि सुतवार[5] हुतो तिस बेरा।
साढे सपत घरी दिन चर्ह्यो। तबि मुझ ते इन जनम सु धर्यो ।। ३८ ।।
प्रतिपाला पुन करिबे लागी। सभि ते जानि आप बडभागी।
जिम जिम देह ब्रिधति मुख सुंदर। धीरज खिमा आदि गुन मंदर ।। ३९ ।।

1. फिर। 2. कपाल क्रिया। 3. स्नान। 4. सातवें नक्षत्र का नाम।
5. बुधवार।

तिम तिम पित सतिगुर इन केरे। क्रिपा ठानि ते रहे बडेरे।
जबि ते रामराइ चलि आयहु। निज करतूत इहां बिदतायहु ॥ ४० ॥
खिमा न धीरज, अजर न जरन। बडे गुरनि बच बिप्रै करनि।
सकल बात सुनि रिदै बिचारी। बड सुत नहि गादी अधिकारी ॥ ४१ ॥
पुन मम सुत पर क्रिपा विशेश। जान्यो धारहि भार अशेश।
अंत समा जबि अपनि निहारा। इनको अपने थान बिठारा ॥ ४२ ॥
पंच बरख दुइ मास बिताए। दिन उनतीस बैस के भए।
समा बिचारनि करिकै नीका। मम सुत कहु दीनहु शुभ टीका ॥ ४३ ॥
आप गुरु बैकुंठ सिधाए। श्री हरि क्रिशन जोति सभि पाए।
जगत बिखै कछु नांहि न छानी। जे सिख ग्यानी सभिहिनि जानी ॥ ४४ ॥
रामराइ मतसर को धारि। दूती शाहु समीप उचारि।
ज्यों क्यों कहि इहठां बुलिवाए। सगरी संगति मिली मनाए ॥ ४५ ॥
देखि प्रभाउ स्राप तबि कह्यो। सम चित मम सुत सो सभि सह्यो।
दोइ बरख अरु पंच महीने। दिन उनीस गुरता पद लीने ॥ ४६ ॥
अबि मोकहु दुख दै करि गए। निसबासुर[1] सिमरों सुख छए।
इम कहि क्रिशन कुइर गुर माता। रूदिति बिलोचन ते जल जाता ॥ ४७ ॥
सुनि संगति बहु ब्याकुल होई। धीर बंधाइ बंधि कर दोई[2]।
'हे माता! सभि बिधि समरथ। तन त्यागनि राखनि जिन हत्थ ॥ ४८ ॥
कछू न कहिबो तिन को बनै। गुर सरबग सु अज़मत सनै[3]।
कहां शोक तिनको अबि करीअहि। परम धाम निज गए बिचरीअहि ॥ ४९ ॥
राम राइ के सीस कलंक। दे करि त्याग्यो देहि निशंक।
मसतक टेकनि हमरो बनै। बैठि बैठि गुर के गुन भनैं ॥ ५० ॥
सदा सहाइक जहिं कहिं होइं। सिमरे हाज़र सभि दिन सोइं।
इम कहि धीरज दे सभि गए। पुरि की संगति जे सिख अए ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे **'श्री हरि क्रिशन ससकार'** प्रसंग बरननं नाम चतर पंचासती अंशु ॥ ५४ ॥

---

1. रात दिन। 2. दोनों हाथ जोड़कर। 3. करामात सहित।

अंशु ५५

न्रिप जै सिह मिलनि प्रसंग

दोहरा

संमत सत्रां सै बिते पुन ऊपर इक बीस[1]।
चेत सुदी चौदस हुती बार नंद रजनीश[2] ॥ १ ॥

चौपई

श्री हरिक्रिशन बाल बय धारे। बहु कारन को रिदे बिचारे।
परम धाम बैकुंठ पधारे। जो सतिसंगति को बहु प्यारे ॥ २ ॥
तीन दिवस पुन बीते जबिहूं। मिले मसंद आदि सिख सभिहू।
पुणप बीनिबे कारन गए। शोकाकुल[3] गुर सिमरति भए ॥ ३ ॥
देखि रहे कुछ हाथ न आए। भसम सकेलति सभि बिसमाए।
तरनि तनूजा[4] नीर मझारी। सकल मेल करि बंदन धारी ॥ ४ ॥
सभि संगति पुन माता पास। बैठति बोलति शोक प्रकाश।
इक दुइ बारी जै पुरि नाथ। बैठ्यो आइ बंदि करि हाथ ॥ ५ ॥
क्रिशन कुइर कहु बंदनि कीनि। कहि बहु रीति धीर उर दीनि।
'गुर सभिहिनि के अतिशै प्यारे। दरशन देति अनिक दुख टारे ॥ ६ ॥
पुरि महि घर घर कीरति होई। हिंदू यमन[5] निवें जिन दोई।
मेटनि स्राप भ्रात को कह्यो। हुते समरथ तऊ तन सह्यो ॥ ७ ॥
मिलिनि शाह सों भन्यों घनेरे। राखी धीर अधीर बडेरे।
धंन गुरु हरिक्रिशन सुजान। अजर जरन महि को न समान ॥ ८ ॥
गुर सिक्खी हित अजमत कीनि। अपर हेतु करि क्योंहुं न दीन।
बल इतनो जिम चहैं सु करैं। तउ न आइसु प्रभ पर हरैं ॥ ९ ॥
तिन हित कहां शोक बनि आवै। सुते[6] धरनि तन, आइ सु जावैं।
कारन करिबे बिखै सुछंद[7]। सदा ग्यान मैं सचिदानंद ॥ १० ॥

---

1. संवत 1721। 2. चन्द्रमा। 3. शोक से व्याकुल। 4. यमुना नदी के किनारे पर। 5. मुसलमान। 6. स्वाभाविक ही शरीर धारण करते हैं और चले जाते हैं। 7. स्वतन्त्र।

होहिं प्रसंन देहिं कल्यान। जनम मरन के बंधन हानि।
पति सुत के गुन सिमरति रहीअहि। तन के अंत मिलनि को चहीअहि ॥ ११ ॥
सकल संगतां अहैं तुमारी। सेवा करहिं अनेक प्रकारी।
जहिं सुख देखहु तिहठां रहीअहि। कुछ कारज हुइ मोकहु कहीअहि ॥ १२ ॥
तुमरे नंदन को मैं दास। तिम अपनो जानहु निरजास[1]।
कर जोरे सेवा महिं खरो। निज लखि आग्या मो पर करो ॥ १३ ॥
क्रिशन कुइर गुर माता तबै। महिपालक ते सुनि करि सबै।
कुछ धीरज धरि गिरा उचारी। 'उर शरधक गुर सेवक भारी ॥ १४ ॥
तोहि प्रेम करि इत गुर आए। पुरि महिं सिख संगति समुदाए।
सभिहिनि भाउ कर्यो बहुतेरा। बडे गुरनि समसर सभि हेरा ॥ १५ ॥
अबि मम रहिनि बनहि नहिं ईहां। कीरतपुरि पहुंचनि की प्रीहा[2]।
केतिक दिवस बास इस थान। पुन अभिलाखौं करनि पयान' ॥ १६ ॥
सुनि करि कहति भयो नर राई। 'सरब गुरनि ते जिम चलि आई।
निज गादी पर प्रथम बिठाए। बहुर ब्रिकुंठ बसनि पधराए ॥ १७ ॥
सो गति इन ते किम बनिआई। किस को दीनि जगति गुरिआई'।
अबि जिसको दीजहि उपहार[3]। सरब समाज आदि दसतार[4] ॥ १८ ॥
थिर गुरबखश मसंद अगाऊ। तिहसों इम बूझ्यो जबि राऊ।
तबि सगरो बिरतांत बखाना। 'सभि संगति ढिग क्रिपा निधाना ॥ १९ ॥
पौढे चहित प्रलोक पधारे। तबि सिखनि मिलि बाक उचारे।
आप समावनि लगे सुछंद। को बैठहि अबि गुर मसनंद[5] ॥ २० ॥
किस आगै हम मसतक टेकहिं। को उपदेशहि दास बिबेकहि।
पूरब रीति गुरनि की जोई। किम कीनसि ? कै मिटि है सोई ? ॥ २१ ॥
इत्यादिक सुनि उठि करि बैठे। चहुंदिशि देखें सिक्ख इकैठे।
गुरु ग्रिंथ है प्रथम बखाना। सतिनाम महिमा महियाना ॥ २२ ॥
पैसे पंच नलेर मंगाए। गहि कर धरि करि सीस निवाए।
बोले सभिनि सुनाइ बिसाले। बासहिं बाबा बीच बकाले ॥ २३ ॥
नाम उचारनि कर्यो न किस को। सुनति रहे देखति मुख दिश को।
पुन पौढे श्री गुरु क्रिपाला। त्रिन सम तन त्याग्यो ततकाला ॥ २४ ॥
ग्राम बकाला निरनै होवा। को गुर थप्यो, न संसै खोवा।
नहिं किस हूं ते जान्यो गयो। पुन गुर बूझिन उत्तर लयो ॥ २५ ॥

---

1. निर्णय (पक्की बात)। 2. इच्छा। 3. भेंट। 4. सारा सामान, पगड़ी आदि।
5. गद्दी पर।

तऊ सुनहु हे प्रिथवी नाथ ! । बन्यो जु गुर हुइ अज़मत साथ ।
सूरज सम नहिं छपहि कदाई । सिख संगत ले खोजि गुसाई ॥ २६ ॥
बहु निकेत हैं तहिं सोढीन । बासैं सतिगुर बंस प्रबीन ।
गुरता कहु कारज जबि परै । आपा बिदति आप ही करें ॥ २७ ॥
रामराइ उर मतसर[1] धारी । इह न रह्यो गुरता अधिकारी ।
सतिगुर पित ने कारज कर्यो । सभि संगति महिं बिदत उचर्यो ॥ २८ ॥
बैर भाव को इह फल होवा । गुरता पद निज घर ते खोवा ।
श्री गुरदित्ते सुत हरिराइ । सभि सुत तजि गुर तखत बिठाइ ॥ २९ ॥
तिनहूं अपने सदन टिकाई । राम राइ करि बाद गवाई[2] ।
सोढी अबि शरीक गुर होइ । तिस मानहिं सिख जे सभि कोइ ॥ ३० ॥
क्या अबि हाथ आइ है तांके । देखि अनुज को मतसर जांके ।
नहिं स्यानिनि की है रीति । जिन जिन सुनी सु भनी अनीत ।। ३१ ॥
प्रथम पिता के साथ बिगारी । पुन सुत हति मातहि दुखकारी ।
सुनि मसंद ते जै सिंह राऊ । कह्यो 'बिमातनि[3] भ्रात सुभाऊ ॥ ३२ ॥
अज़मत महिं समरथ बलवंते । पित गादी पर थिरनि चहंते ।
होनहार गति मिटहि न कैसें । कर्यो परसपर बोलनि ऐसे ॥ ३३ ॥
न्रिप कर जोरि मात सों भाखा । 'खुशी करहु मुझ चलनि भिलाखा' ।
अभिबंदन करि उठ्यो प्रबीनां । पिखि माता तबि आशिख दीना ॥ ३४ ॥
'श्री सतिगुर आवहि तुम चीत । श्री हरिक्रिशन सहाइक नीत[4] ।
शाहु सभा महिं पति रहि आवै । मनो कामना गुर ते पावैं ॥ ३५ ॥
बिदा होइ गमन्यो महिपाला । ले जननी तबि स्वास बिसाला ।
सुत को सिमरनि करि कुछ रोई । ग्यान पाइ पुन धीरज होई ॥ ३६ ॥
केतिक बासुर बासा कीनि । सभि संगति पिखि भाउ प्रबीन ।
सेवा ठानहिं सरब प्रकार । आइ करहिं तिम ही दरबार ॥ ३७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसम रासे 'न्रिप जै सिंह मिलनि' प्रसंग बरननं नाम पंच पंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

---

1. अहंकार 2. राम राय ने झगड़ा करके गुरु गद्दी खो दी । 3. सौतेला भाई । 4. नित्य सहायक ।

अंशु ५६

श्री हरि क्रिशन कथा प्रसंग

दोहरा

केतिक दिन बीते जबै देश बिदेश अशेश।
आइ संगतां चहुंदिशनि ले उपहार विशेश ॥ १ ॥

चौपई

सतिगुर को दिल्ली महि जानहिं। श्रम बड धारि आइबो ठानहिं।
अधिक थकति हुइ पहुंचें जबै। 'गुर बिकुंठ गे' सुनि सुनि सबै ॥ २ ॥
दीरघ स्वास लेति रुदनंते। 'भाग बिहीन न गुर दरसंते।
अधिक मोल हम खरचन कीनि। वमतु अजाइब तहि ते लीनि ॥ ३ ॥
अरपहिं गुर प्रसंनता लैहैं। भई निफल अबि किस को दैहैं'।
रिदे बिसूरति दुखि सिख सारे। आइ दूर नहिं गुरु निहारे ॥ ४ ॥
किस ते मनो कामना पावें। किस आगै हम सीस निवावें ?
सकल शरीक जि सोढी अहैं। गुर घर के द्रोही नित रहैं ॥ ५ ॥
प्रथमे प्रिथीए बैर कमायो। चितवति बुरा प्रलोक सिधायो।
धीर मल्ल ते आदिक और। गुर बनि रहे आपनी ठौर ॥ ६ ॥
गुरु बंस महिं इक इह जनमे। सहस गुने घट, नहिं गुन मन मैं।
गुर सम अज़मत तौ कित पईयति। चहैं मनौत इही इक लईयत[1] ॥ ७ ॥
रामराइ गुर को सुत जेठा। नहिं गुरता गादी पर बैठा।
श्री हरिराइ आप फुरमाए। हमरो सिख तिस निकटि न जाए ॥ ८ ॥
करी जु बात, अहै बख्याती। तिस ढिग नहिं पहुंचहिं किस भांती।
गुर सिक्खी ते होइ जि खारज। मिलहि जाइ सो बनै अनारज[2] ॥ ९ ॥

---

1. लेने (के इच्छुक)। 2. अनार्य (बुरा)।

गुर को वाक उलंघहि जोइ। किम सिक्खी तिस के थिर होइ'।
इत्यादिक बोलहिं सिख स्याने। सूखम करहिं बिचार महाने ॥ १० ॥
लए अकोरनि को फिर जाए। दिल्ली महिं किस नहिं अरपाए।
केतिक अपने सदन सिधारे। सतिगुर कौन, न निरनै धारे ॥ ११ ॥
केचित सुनहिं बकाले मांहि। खोजनि हेतु तहां चलि जाहिं।
सभि सोढीनि बिखै बिदनाई। श्री हरिक्रिशन गिरा इम गाई ॥ १२ ॥
गुरु बकाले महिं बिदतावैं। संगति चली हज़ारों आवैं।
लघु दीरघ सोढी जहिं कहां। कीनसि बास जाइ करि तहां ॥ १३ ॥
दरब लोभ ते उर बिरमाए। गुर बनि जाइं बकाले आए।
हरख करति बहु बात बनावैं। ब्रिंद मसंदनि को अपनावैं ॥ १४ ॥
अधिक मोल की पोशिश देति। ज्यों क्यों करि बुलवाइ निकेत।
दरब देनि को कहैं बिसाला। बनहिं दीन तिन अग्र कुढाला ॥ १५ ॥
'मम महिमा कहु संगति मांही। इह गुर अहै अपर को नांहि।
ज्यों क्यों करि इत को ले आवहु। चढहि जु धन आधो तुम पावहु ॥ १६ ॥
जे इतने महिं राज़ी नांहिन। सभि तुम लेहु हमैं कुछ चाह न।
जो निज कर ते देवनि करो। सो हम बरतहिंगे निज घरों' ॥ १७ ॥
बनहिं मसंदनि केर अधीन। कहि इत्यादि बाक हुइ दीन।
करहिं जतन गन को इस रीति। बननि गुरू हरखति चहिं चीत ॥ १८ ॥
खरचहिं दरब जु पूरब घर को। देति आदि पट वसतु बरको[1]।
दीन भए सोढी इम जबै। गरबे बहु मसंद गन तबै ॥ १९ ॥
निशचै करि जानी इम गाथा। 'गुरू बनावनि हमरे हाथा।
गुर के सुत पोते बहु नाती[2]। जो अनुसार रहहिं सभि भांती ॥ २० ॥
तिस ढिग संगति को ले जै हैं। दरब अकोरनि को अरपै हैं।
जिस को नहि देखहिं अनुसारी। तिस ते करहि हटावनि सारी ॥ २१ ॥
बैठ्यो रहै कछू नहिं सरै। सभि सोढी हम ते तबि डरैं।
जिस हम चाहैं गुरु बनावैं। बने गुरु को तुरत हटावैं ॥ २२ ॥
मिलहि मसंद परसपर कहैं। 'तौ इस बिधि हम आछी अहै।
करहिं नमूना सोढी कोइ। बैठ्यो रहै अपनि घर सोइ ॥ २३ ॥
लेनि देनि सभि हमरे हाथ। संचहु धन, भुगतहु सुख साथ'
इम निरभै हुइ बिचरनि लागे। जिसको पिखहिं दीन निज आगे ॥ २४ ॥

1. श्रेष्ठ वस्त्र। 2. दोहते।

तिस के निकटि जाहि ले संगति। महिमा कहैं बैठि विच पंगति।
'अबि इसके ढिग है गुरिआई। पुरहु कामना लागे करि पाई'॥ २५॥
अनिक रीति के करि उपदेश। ले सिक्खनि ते दरब विशेश।
इस प्रकार रौरा परि गइऊ। सभि बिवहार बिपरजै[1] भइऊ॥ २६॥
किस कारन ते जिम भूपाला। छपि करि बैठहि बनै निराला।
प्रजा बिखै सभि देशनि ठौरा। उचित अनुचित परहि बड रौरा॥ २७॥
जथा पुरंदर[2] अंदर तोइ[3]। कमल नालका महि थिर होइ।
छप करि रह्यो न जान्यों कांहु। पर्यो रौर सभि देवन मांहू॥ २८॥
तिम सतिगुर के घर मैं होवा। नहिं क्योंहूं निरने करि जोवा।
सिख संगति सभि भूली फिरैं। गुरु न जानहिं, संनै धरैं॥ २९॥
बीच बकाले मंजी लाइ। गुर बाईस भए मुद पाइ[4]।
आप आप को बडे कहावैं। संग शरीकनि द्रोह कमावैं॥ ३०॥
निंदा करहिं 'कहां सो जानै'। 'कहां शकति अपरनि महिं ठानै।
'मैं गुर बन्यो पाइ गुरिआई। अपर लोभहित कहि पुजवाई'॥ ३१॥
धीर मल्ल ते आदिक ब्रिंद। निज घर त्यागे रिदे अनंद।
बसे आइ करि बीच बकाले। बिसतारहिं पाखंड बिसाले॥ ३२॥
धन की बिभौ[5] जितिक जिस पाही। संगति को निकासि दिखराहीं।
भोरे[6] सिक्ख देखि बिरमावैं। आनि दरब को भेंट चढावैं॥ ३३॥
तिन को बहु बिधि देति दिलासा। 'पूरन करहिं सकल तुम आसा।
मो बिन गुर सोढी नहिं कोऊ। कबहि न मिलहु कहहि किम सोऊ'॥ ३४॥
इम धन लोभ देखि सिख स्याने। करामात छूछे पहचाने।
हटक रहे, नहिं मिलिबो ठानहिं। गुर को गुन जानै तउ मानहिं॥ ३५॥
कहौं प्रसंग कहां लगि औरा। सिख संगति महिं जेतिक रौरा।
श्री गुर तेग बहादर चंद। सदा लेति रस ग्यानानंद॥ ३६॥
नहीं अपनपो करहि लखाई। घर अंतर थिर रहहिं गुसाईं।
मात नानकी सभि मन जानी। सिमरति भरता की बरबानी॥ ३७॥
सो अबि समा पहूच्यो आई। मम सुत को हुइ है गुरिआई।
घर अंतर बैठहि नित हेरहि। बिदतनि हेतु पुत्र को प्रेरहि॥ ३८॥

---

1. उलट। 2. इन्द्र। 3. जल। 4. बकाले में गद्दी लगाकर बाईस गुरु बनकर आनन्द ले रहे थे। 5. विभूति। 6. भोले, सरल।

अपर सोढीअनि की पिखि गाथा। कहि बहु बार आतमज[1] साथा।
'गादी के मालिक तुम बनहु। रौरा पर्यो सरब को हनहुं' ॥ ३९ ॥
सुनि श्री तेगबहादर श्रौन। इक रस थिरे घरे मुख मौन।
आगे कथा कहौं इन केरी। जिम बिदहिं पिखि प्रीत घनेरी ॥ ४० ॥
दसम रासि अबि पूरन कीनि। सतिगुर चरन कमल चित दीनि।
कवि संतोख सिंह द्वै कर जोरि। बारंबार निहोरि निहोरि[2] ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे दसमि रासे कवी संतोख सिंह बिरचतायां भाखायां 'श्री हरिक्रिशन कथा प्रसंग' बरननं नाम छठपंचासती अंशु ॥ ५६ ॥ दसमी रास संमापतं मसतु शुभ मसत ॥

दसमीं राशि समापति

---

1. पुत्र। 2. बार बार नमस्कार करके।

राशि ग्यारवीं

१ओं सतिगुर प्रसादि ।

१ओं श्री वाहिगुरू जी की फतह ।।

अथ इकादशमी रासि लिख्यते ।

अंशु १

मात नानकी प्रसंग

१. इष्ट देव—श्री अकाल पुरख—मंगल ।

दोहरा

सति चित अनंद समान इक निरगुन सरगुन माँहि ।
ग्यानादिक गुन ईश के जीव बिखै इह नाहि ।। १ ।।

२. कवि संकेत—गिर्यादा का मंगल ।

सवैया

गुन मंदिर[1] सुँदर, देह प्रभा[2] समपारद[3], चंद्रिकचंद[4], सुचंदन ।
बर बंदन[5] बिंदु[6] सु भाल पै तंदुल[7] चंद कला बिच ज्यों महिनंदन ।
कर बंदि करौं पद बंदन को अरविंद मनिंद अनंद मलिंदनि[8] ।
कर बेणुवती[9] ! मुझ देहुमती[10], शुभ सारसती दुख दुंद निकंदन[11] ।। २ ।।

३. इष्ट गुरु—श्री गुरु नानक देव जी—मंगल ।

दोहरा

पसर्यो जस दस दिशनि मैं सद्रश सुमनस[12] सेत[13] ।
अजमत जुति जीत्यो जगत, श्री नानक सुख देति ।। ३ ।।

४. इष्ट गुरु—श्री गुरु अंगद देव जी का—मंगल ।

अजर जरन, धीरज धरनि, धरनि मनिंद, अमंद[14] ।
श्री अंगद पद पदम को नमहिं मुकंद अनंद ।। ४ ।।

५. इष्ट गुरु—श्री गुरु अमरदास जी का—मंगल ।

भानु समान सु ग्यान दिढि, हानि तिमर अग्यान[15] ।
अजमति दानी अनिक के श्री गुर अमर सुजान ।। ५ ।।

---

1. आप गुनों के मंदिर हैं । 2. देही की शोभा । 3. पारे की भांति उज्ज्वल । 4. चाँद की चाँदनी । 5. सिंदूर का (माथे पर) । 6. तिलक । 7. तिलक में चावल ऐसे शोभा दे रहे हैं, जैसे मंगल में चन्द्रमा की कलाएं । 8. कमलों की भाँति भंवरों को आनद देने वाले (चरण) । 9. बीना (हाथ में) । 10. मुझे शुभ मति प्रदान करो । 11. दु.खों को काटने वाली । 12. फूल । 13. सफेद । 14. श्रेष्ठ । 15. अज्ञान रूपी अंधेरा ।

६. इष्ट गुरु—श्री गुरु रामदास जी का—मंगल ।
सोढी कुल सम गगन मैं बिदते भानु मनिंद ।
रामदास श्री सतिगुरू बंदों पद अरविंद ॥ ६ ॥
७. इष्ट गुरु—श्री गुरु अरजन देव जी का—मंगल ।
दासनि की फासनि[1] कटैं उपदेशति सतिनामु ।
श्री अरजन बरजनि कुमति तिन पद पदम प्रणाम ॥ ७ ॥
८. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि गोबिंद जी का—मंगल ।
जोधा क्रुद्धति जुद्ध महिं, रिदा सथित ब्रह्म ग्यान ।
श्री हरि गोबिंद चंद पद बंदन सिर ते ठानि[2] ॥ ८ ॥
९. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरिराइ जी का—मंगल ।
करे रंक राजा अधिक अबि लौ बिदति प्रताप ।
श्री सतिगुर हरिराइ जी हरता पाप कलाप[3] ॥ ९ ॥
१०. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि क्रिशन जी का—मंगल ।
बाल बैस ब्रिद्ध ग्यान महिं समरथ श्री गुरदेव ।
पद अरविंदन बंदना मुकति पाइ जिन सेव ॥ १० ॥
११. इष्ट गुरु—श्री गुरु तेग बहादर जी का—मंगल ।
हिंदु धरम तरु मूल को राख्यो धरनि मझार[4] ।
तेग बहादुर सतिगुरू त्रिण समान तन डारि ॥ ११ ॥
१२. इष्ट गुरु—श्री गुरु गोविंद सिंह जी का—मंगल ।
सदा सुछंद अनंदमय दासनि ब्रिंद मुकंद ।
श्री गुर गोविंद सिंह जी बंदौं जुग कर बंदि ॥ १२ ॥

—०—

अबि बरनौं सतिगुरु कथा, राशि इकादश मांहि ।
तेग बहादुर जी जथा शुभ चरित्र किय आहि ॥ १३ ॥

चौपई

संगति डोलहि कहे मसंद । नहिं प्रापति सतिगुर सुखकंद ।
किस ढिग अपनी बिनै सुनावें । स्याने सिक्ख अधिक दुख पावें ॥ १४ ॥
बीच बकाले रौर बिसाला । उतरहिं आनि संगतां जाला[5] ।
संग मसंद लए जित जावें । बिन अनंद सोढी पुजवावें[6] ॥ १५ ॥
जिस को मेल अहै जिह साथ । तहिं ले जाइ सुनावहि गाथ ।
'इह गुर पूरन अज़मतवंता । पुरहि कामना जो चितवंता । १६ ॥

1. फांसी-कष्ट । 2. सिर पर रखकर बंदना करता हूँ । 3. पापों का नाश । 4. हिन्दू धर्म रूपी वृक्ष की जड़ें कायम रखीं । 5. अधिक प्रेमी जन (संगत) । 6. पूजा करवाते हैं ।

अबि गादी पर इस को जानहु । हाथ जोरि धन दिहु सनमानहु ।
करहु प्रसंन सु बांछति पावहु । निस दिन मन महिं चरन मनावहु' ।। १७ ।।
कहे मसंदनि के लगि करिकैं । अरपहिं बसतू धन गन धरि कैं[1] ।
तऊ अनंद न प्रापति होई । पुरहि न मन की कामन कोई ।। १८ ।।
देकरि, रिदे बिसूरति फेरि । दूसर को पूजति नर हेरि ।
आपस महिं सिख मिलि मिलि कहैं । 'अरपि अकोर, न निरनै लहैं[2] ।। १९ ।।

कहे मसंदनि के हम देति । गुर कौडी[3] नहिं रखहिं निकेत ।
अजमत जुति हम लखहिं न कोई । कबहुं न कीनसि कामन होई ।। २० ।।
इम सोढी सभि आइ बकाले । बैठें मंजी पाइ[4] बिसाले ।
सिखनि कहु बिरमावनि करैं । दरब लेनि की आशा धरैं ।। २१ ।।
दासनि की सहाइता काल । कौन करहि, बनि हैं तबि स्याल[5] ।
गुर केहरि[6] बिन किम बनि आवै । पाज सांग कौ लगि निबहावै ।। २२ ।।
जिम नट चक्रवरति बनि जाइ । को आइसु मानहिं हित लाइ ।
सतिगुरु बिन, सुर आदिक सारे । को आग्या मानहिं अनुसारे ।। २३ ।।

दोहरा

तेग बहादुर धरम धुज[7] धीरज धरनि मनिंद ।
गोप रहैं कुछ कहैं नहिं मुख प्रसंन अरबिंद ।। २४ ।।

चौपई

अंतर ब्रिती अनंद सो माते । किसहूँ नहिं किस ही बिधि जाते ।
कबि कबि तुरंग अरुढ़ि सिधावें । तबि कोई सिख दरशन पावै ।। २५ ।।
नहिं महिमा जानै मन मांही । सभि सोढीनि समान लखांही ।
सदा इकंत गुरु भगवंत । नहीं लखावहिं अपनि मतंत ।। २६ ।।
धीरमल्ल के बड बिसतारा । गोप गुरु इत धीर मझारा ।
कितिक काल इम जबहुं बितायहु । सिक्खनि गन जहिं कहिं डहिकायहु[8] ।। २७ ।।
मात नानकी गुर की हुती । सभि बिधि महिं सो नीकी मती ।
बहुत ब्रितांत गुरनि को हेरा । दीरघ दरसा सुजसु बडेरा ।। २८ ।।
श्री गुरू हरिगोबिंद की दारा । जानति आशै जथा उदारा ।
खिमा आदि गुन गन के भवनू । नित प्रसंन अंतर ब्रिति रवनू ।। २९ ।।

1. धन भेंट रखकर । 2. भेंट अर्पण करने के लिए यह निर्णय नहीं कर पाते कि गुरू कौन है ? 3. गुरु की कौड़ी, धन । 4. गद्दी लगाकर । 5. गीदड़ । 6. शेर । 7. झण्डा । 8. जहां कहां सिक्खों को ठगा ।

लच्छन होति गुरुनि के जैसे। सरब प्रकार जानती तैसे।
पति[1] पौत्रा[2] परपात्रा[3] होइ। जिम गुरता गादी पर जोइ ॥ ३० ॥
सो निज सुत महि देवति सारे। बिदतहि नहिं इम बहुत बिचारे।
श्री गुर हरिगुविंद पति केरा। प्रथम सुन्यों बच कह्यो बडेरा ॥ ३१ ॥
'तुव सुत होहि गुरु जग भारी। जिसके सुत जनमहि जसु कारीं।
सिमरि सिमरि इम माता मन मैं। चिंता बसी होति निस दिन मैं ॥ ३२ ॥
सिख संगति संसे महिं डोलति। थिरता लहै न को कुछ बोलति।
बहु बिचार करि इक दिन माता। गई सपुत्र निकटि सुख दाता ॥ ३३ ॥
बैठि समीप माधुरी बानी[4]। कहि समुझावहि सुमति महानी।
'हे सुत! तुम जग गुरु अवतारा। मैं जानति नीके निरधारा ॥ ३४ ॥
सम सूरज तुम दरशन बिना। सभि महिं संसै तम भा घना।
नहिं प्रकाश निशचै को पावै। उड शरीक तुमरे दिपतावें ॥ ३५ ॥
धीरमल्ल अब्रि चंद मनिंद। अपनो करति प्रकाश बिलंद।
नहिं बिकसति हैं सिख अरबिंद। जिन मैं शांती सुख मरकंद ॥ ३६ ॥
संग संगतां तिन के ब्रिंद। किम सुख पाइं मनिंद मलिंद।
चकवे संत बिरह ते दुखी। बिन तुम देखे होहिं न सुखी ॥ ३७ ।
रजनी परी दुरनता[5] तोहि। सिक्खी मग किम चलिबो होहि।
गुरुता गादी सयंदन महां। सूरज आप अरुढहु तहां ॥ ३८ ॥
पाइ प्रकाश आप को भले। सगति सभि सिक्खी मग चले।
किम तुम कहु ऐसे बनि आइ। लाखों नरनि अलंब सदाइ[6] ॥ ३९ ॥
सुनि जननी के बैन सुहाए। बंदन कीनसि ग्रीव निवाए।
नहिं को उत्तर कैसे दीनसि। अंतर ब्रिती एकरस लीनसि ॥ ४० ॥
जानि नानकी सुत के मन की। नहीं कामना जिन प्रगटनि की।
रिदे अनेक बिचार बिचारति। गुर ब्रनि बैठहिं तिन उर धारति ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादश रासे 'मात नानकी' प्रसंग बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥ १ ॥

---

1. श्री गुरु हरिगोविंद जी। 2. श्री गुरु हरिराइ जी। 3. श्री गुरु हरिक्रिशन जी। 4. मीठे वचन। 5. न दिखता है। 6. हमेशा लाखों पुरुषों का सहारा।

अंशु २

श्री तेग बहादर ढिग द्वारका दास आगवनि प्रसंग

दोहरा

निज नंदन को गुरु हित करति अनेक उपाइ।
चित महिं मति ठहिराइ करि उदम ते सुख पाइ ॥ १ ॥

चौपई

पूरब को बिवहार चितारा[1]। इक सिख को निज निकटि हकारा।
कहि तिस ते पत्री[2] लिखवाई। श्री गुर अमर अंस बुलवाई ॥ २ ॥
गड़ीआ सिक्ख रहै तिस थान। तिस ढिग पठी पत्रिका जानि।
सो जे आइ कहै मम नंद। समझावहि हित बाक बिलंद ॥ ३ ॥
मानहि कह्यो, प्रगट जग होइ। दरशन करहि आनि सभि कोइ।
गमन्यो सिख लै गोइंदवाल। उलंघ्यो मारग सगरो चालि ॥ ४ ॥
श्री गुर अमरदास को अंश। जाइ बिलोके जन सभ हंस।
मसतक टेकि पत्रिका दई। भनी बारता जैसे भई ॥ ५ ॥
सभि महिं मुख्य द्वारका दास। लीनि पत्रिका 'हमरे पास।
लिख्यो सु तेग बहादर माता। तुम उपकारी सभि सुखदाता ॥ ६ ॥
माननीय जग के गुनखानी। उज्जल मसतक शुभ बर दानी।
ठटहु म्रिजाद गुरु घर केरी। कर्यो तुमारो कोइ न फेरी ॥ ७ ॥
सभिहिनि के महान इस थान। बडे गुरु के अंशु सुजानि।
अबि सोढी कुल महिं बड रौरा। तुमहिं बनहिं आवनि इस ठौरा ॥ ८ ॥
उचित बारता इन महुं कीजहि। गुरदा गादी शूंन पिखीजहि।
मन संगति के संसै महां। भ्रमति इतहि उति लाखहुं इहां ॥ ९ ॥
बिन मलाहु जिम तरी भ्रमंती। न्रिपत दुरे, नहिं चमूं थिरंती।
तथा संगतां बहु अकुलाई। करि डेरे उतरी समुदाई ॥ १० ॥

---

1. पहले व्यवहार को याद किया। 2. चिट्ठी।

'निरनै गुरू होहि' इम चाहैं। हित दरशन के रिदै उमाहैं।
मम सुत नहिं निकसहि, रहि घरे। नहिन जनाइ अपनिपौ करे[1] ॥ ११ ॥
आप आइ करि सकल निहारहु[2]। रिदै अनुचितै उचित बिचारहु।
करहु सथापनि मिटि है रौरा। परखहु निज हौरा[3] अरु गौरा[4]' ॥ १२ ॥
पठति द्वारकादास हुलासे। हित चलिबे कहु बाक बिलासे।
भाई गड़ीआ सिक्ख पुरातन। जानति गुर घर की सभि बातनि ॥ १३ ॥
तिस को लेकरि संग सिधाए। अपर भ्रात भ्रित[5] लै समुदाए।
जाइ पहूचे निकटि बकाले। ग्राम प्रवेशनि पग नहिं चाले ॥ १४ ॥
खरे बिचारति चित उपजावैं। जे घर तेग बहादर जावैं।
धीर मल्ल मानी अनखै[6] है। अपनि आप जो बडा कहै है ॥ १५ ॥
जे करि धीर मल्ल के जाइं। बिना जोगता इह लखि पाइ।
हम को दोनहु सदन समान। बैठि रहे इम गिनती ठानि ॥ १६ ॥
केतिक काल बिताइ तहां सु। बोल्यो तबहि द्वारका दासु।
'भो गड़ीआ! तूं सिक्ख पुरानो। अधिक चरित्र गुरुनि को जानो ॥ १७ ॥
किसू वसतु की गिनति न करीअहि। जपु महुं लिख्यो सु रिदै बिचरीअहि।
'थापिआ न जाइ कीता न होइ। आपे आपि निरंजनु सोइ' ॥ १८ ॥
तेग बहादर गुरु है साचो। कौन हटाइ सकहि तिह काचो।
किस ते थाप्यो जाइ न सोइ। आपे आप करै सो होइ ॥ १९ ॥
तजि गिनती तिन के घर चलीअहि। पूरब पहुंचि नानकी मिलीअहि'।
एव परसपर मत को करि कै। ग्राम प्रवेशे हरख सु धरि कै ॥ २० ॥
श्री गुरु तेग बहादर घरे[7]। जाइ नानकी दरशन करे।
श्री गुर अमर अंस को जानै। देखति उठी बंदना ठानै ॥ २१ ॥
भाई गड़ीए बंदन कीनि। गुर सिख को आशिख[8] बहु दीनि।
सादर बैठि गए हरखाइ। कुछल[9] प्रशन करि करि बहु भाइ ॥ २२ ॥
गढ़ीए कीनसि बाक बिलासु। 'जे गुर प्रगटहिं तुमहु अवास।
सति संगति धन केतिक दिहो[10]?। करहु अचावनि माता! कहो' ॥ २३ ॥
जननी को सुनि मन हरखाना। दस हज़ार देवनि को माना।
गढ़ीए धारि अनंद बिलंद। करि अरदास हाथ द्वै बंदि ॥ २४ ॥
तबि गुरू अंशु द्वारकादास। कुंकम नालीएर लै पासि।
गुरुमुख गढ़ीआ निज संग लीनि। गमने श्री गुर जहां असीन ॥ २५ ॥

---

1. अपना आप नहीं जतलाता । 2 आप आकर सब कुछ देख लो । 3. हलका (गुणहीन) । 4. भारी (गुणवान्) । 5. दास 6. ईर्ष्या करेगा । 7. घर में । 8. आर्शी-र्वाद । 9. [illegible] 10. [illegible] ।

पिखि गुर अमर अंश हरखाए। खरे होइ मिलि कंठ लगाए।
सभिग्रिह कुशल बूझि बैठाए। आदर करि बच मधुर सुहाए॥ २६॥
पिखति द्वारकादास अनंदे। उसतति कीनसि गुरु बिलंदे।
'तुम जग तारन कारन आए। छप के बैठनि किम इह भाए॥ २७॥
अबहि सिंघासनि सजहु बिसाल। देहु दरस जग करहु निहाल।
इत्यादिक कहि बिनै बडेरी। कुंकम तिलक कर्यो तिस बेरी॥ २८॥
पूजा भेट नालीअर धर्यो। पुन सतिगुर कुछ नहीं उचर्यो।
कितिक सिक्ख ऐसी बिधि हेरी। परे चरन धरि भेट घनेरी॥ २९॥
मात नानकी भई अनंद। जाचक[1] दै करि दरब बिलंद।
बारि बारि जावति बलिहारे। सुत शोभा को अधिक निहारे॥ ३०॥
प्रेमी सिख शरधा जिन आई। केतिक आवति गुर शरनाई।
धनी मसंद महां अभिमानी। नहिं मानी महिमां अग्यानी॥ ३१॥
यांते देश बिदेशनि संगति। लही न गुरु प्रेम की रंगत।
सकल मसंदनि दिशा निहारैं। जिस दिशि हुइ इह सुजसु उचारैं॥ ३२॥
सो गुरु होवहि हम तिह मानैं। अरपनि सरब उपाइन ठानैं।
ग्राम बकाले के चहु फेरे। जहिं कहिं परे संगतां डेरे॥ ३३॥
जो जो जिस जिस देश मसंद। संगति तहिं तहिं तिसहि मिलंद।
परखहि गुरु नमित सभि मांही। भरमति भूले भटकां खांही॥ ३४॥
केतिक दिवस द्वारकादास। बसति भयो श्री सतिगुर पास।
बोलहिं कबि कबि तिसके साथ। सार असार सुनावहिं नाथ॥ ३५॥
नांहि त मोन रहहिं गुरु सदा। प्रेम बिराग कथहिं जद कदा।
ब्रह्मग्यान के तरनि[2] सुहाइ। भगति किरन जिस पर परि[3] जाइ॥ ३६॥
भरम तिमर को तुरत बिनासहि। प्रभु को प्रेम सु रिदै प्रकाशहि।
श्री गुरु दरब ब्रिंद को लै कै। सरब द्वारका दासहिं दै कै॥ ३७॥
सादर बिदा कर्यो, घर गयो। गड़ीआ गुरु ढिग रहितो भयो।
पुन श्री तेग बहादर दयाल। इस बिधि कितिक बितायहु काल॥ ३८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशमी रासे 'श्री तेग बहादर ढिग द्वारका दास आगवनि' प्रसग बरननं नाम दुतीओ अंशु॥ २॥

---

1. भिखारी। 2. सूर्य। 3. पड जाए।

अंशु ३

मक्खण शाह प्रसंग

दोहरा

गुरता महिं रौरा पर्यो ठीक नहीं ठहिराइ ।
सकल सिख्य संगति रिदै चहिति गुरु बिदताइ ॥ १ ॥

चौपई

मक्खण शाहु एक सिख भारा । गुर सिक्खी को महद अधारा ।
करि सौदा बहु चढ्यो जहाज । अनिक बसतु ले बणजनि काज ॥ २ ॥
देशांतर महिं बेच्यो जाइ । तहिं की बसतु खरीद कराइ ।
धरि जहाज पर हट्यो बहोर । बीच समुद्र जहां जल घोर ॥ ३ ॥
तुंग तरंग बिलंद उछालैं[1] । जीव करोरनि जुति बरणालै[2] ।
बेग प्रभंजन[3] को बहु पाइ । चल्यो जहाज उड्यो जनु जाइ ॥ ४ ॥
गमन्यो मारग केतिक सोइ । प्रेरक पोति प्रेरते जोइ ।
इतने महिं चलि पौन कुफेरी[4] । बिप्रै गति जहाज़ की प्रेरी ॥ ५ ॥
टापू निकटि हुतो बड बारु[5] । नहिं मनुख जहिं, पिखिय उजारु[6] ।
बिवस जहाज प्रेरकनि भइऊ । बल करि रहे सथंभ न गइऊ ॥ ६ ॥
अधिक बेग बायु को पाइ । सिकता थल पर गा अटकाइ ।
पुन सागर की लगैं तरंग । कुछक गयो चढि जहिं थल तुंग ॥ ७ ॥
मक्खण आसचरज मन माना । चिंत पराइण भए महाना ।
नरनि उपाड कीनि बहुतेरा । बुधि करि कै अरु ओज घनेरा ॥ ८ ॥
सिकता[7] टारहिं काशट तल ते । तऊ न हालति[8] भा तिस थल ते ।
भयो निरास जतन के करिबे । उपजी एक आस तजि सरबे[9] ॥ ९ ॥
अबि सतिगुर ही बनहिं सहाई । नहि अपरनि[10] की गति जिह थाईं ।
जिम जमलोक महां भयदायक । तहिं एकल के होहिं सहायक ॥ १० ॥

---

1. ऊँची लहरें । 2. वरुणालय—समुद्र वरुण देवता का घर । 3. वायु । 4. उलटी वायु । 5. रेत । 6. निर्जन । 7. रेता । 8. हिलती थी । 9. सभी । 10. पहुँचने (का ढंग) ।

इस प्रकार सिख निशचै धरिकै। कर पग नीर पखारनि करिकै।
जोती रूप गुरू को ध्यान। अचल ठांढि भा अंजुल ठानि[1] ॥ ११ ॥
'हे प्रभु तुम निरास की आस। अंतरजामी सरब प्रकाश।
द्रुपदसुता तजि करि सरबाशे[2]। गह्यो तुमारो जबि इक आशै ॥ १२ ॥
तबि तुम तुरत गोरता[3] कीनसि। सभा बीच ब्रीड़ा[4] रखि दीनसि।
खेलति दयूति[5] जुधिशटर राऊ। सिमर्यो तुमरो नाम न काऊ ॥ १३ ॥
नहिं सहाइता तिस की करी। बिपन जानि लगि बिपता परी।
सिमरनि ते नित होति सहाई। रावरि बिरद सनातन गाई ॥ १४ ॥
मैं सदीव को दास तुमारो। अबि जहाज को पार उतारो'।
सतिगुर तेग बहादर धीर। अंतरजामी सरब सधीर ॥ १५ ॥
नहीं जनावनि आपा करि हीं। सहज सुभाइक समता धरि हीं।
को इक नाम रूप को जानै। कहनि मिलिनि की करहिं न स्यानै ॥ १६ ॥
निज बडिआई कुछ न जनावैं। करहिं तथा जिम नहिं बिदतावैं।
सिख मन की लखि अंतरजामी। तिह सहाइता चहि करि स्वामी ॥ १७ ॥
रिदे बिचारति जे न करैं अबि। गुरु घर की महिमा सु घटै तबि।
होनि सहाइक ही बनि आवैं। जिस ते सिख शरधा अधिकावै ॥ १८ ॥
पहुंचे निमख बिखै गुरु पूरे। करनि सिख को कारज रूरे।
मक्खण शाह कीनि अरदास। चितवति दरब देउंगो रास ॥ १९ ॥
इम बिनती भनि कीनि उपाइ। श्रमति जि मानव बल को लाइ।
आपस महिं दै करि ललकारा। दियो जहाज धकाइ उदारा ॥ २० ॥
नरनि बहाने श्री गुर जाइ। सिख जहाज को दियो चलाइ।
कहैं लोक 'हम अस बल लायो। अटक्यो तोर जहाज चलायो' ॥ २१ ॥
सुनि कै मक्खण रिदै बिचारा। प्रथम रहे पचि सरी न कारा।
कितिक द्योस करि रहे उपाइ। अपनो सभि बिधि बल को लाइ ॥ २२ ॥
जबि मैं श्री सतिगुरु अगारी। हुै निरास बेनती उचारी।
तबि जहाज चलि पर्यो तुरंता। इह मैं ही जानवि बिरतंता ॥ २३ ॥
जानहिं क्या इह लोक गवारा। जो सतिगुर कीनसि उपकारा।
गुरु क्रित ते जु क्रितघनी होइ। महां कशट लहि लोकनि दोइ ॥ २४ ॥
जितने जगत बिखै अपराधू। सभिनि प्रासचित भाखति साधू।
क्रितघन को न कहै क्रित कोइ। कशट कलप भर पावहि सोइ ॥ २५ ॥

1. हाथ जोड़कर। 2. द्रोपदी ने सभी आशाओं को छोड़कर। 3. रक्षा। 4. लज्जा। 5. जूआ।

इह तौ नर साभाननि बाती। अरु सतिगुर जे बड दुख हाती।
इन ते बनहि क्रितघनी जोइ। को जानहि तिन को क्या होइ ॥ २६ ॥
जे सतिगुर के हैं अपकारी[1]। छुटहिं न, संकट पावहिं भारी।
इह मानव अजान क्या जानैं। मैं तो सभि बिधि लहौं महानैं ॥ २७ ॥
एव बिचारति चल्यो जहाजू। गुर पूरहिं नित सिक्खनि काजू।
पहुंच्यो आनि आपने थानू। लीनसि वसतु उतारि महानू ॥ २८ ॥
सौदा सकल बेचिबो कर्यो। बहुत लाभ तिस पालै पर्यो।
आइ जाइबे खेप[2] जि दोइ। कर्यो बनज अधिकै धन होइ ॥ २९ ॥
भयो धनाढ सिख्य तबि भारा। राखे नौकर अपने द्वारा।
गुर सिक्खी पर अधिक लुभायो। सिमरहि बारि बारि सुख पा्यो ॥ ३० ॥
रहि न सक्यो चहि दरशन देखा। चल्यो पंथ लै सौज बिशेखा।
सेवक नौकर रखि समुदाइ। मद्र देश[3] के सनमुख आइ ॥ ३१ ॥
दरसौं गुरु-प्रतीखनि करे। सिमरहि नामु सदा उरधरे[4]।
पूरब देश पंथ बड जाना। बसहि निसा दिन करहि पयाना ॥ ३२ ॥
कानन देश नगर मग मांही। देखति आइ, थिरहि कित नांही।
गंगा जमुना आदि जि सलिता[5]। बडो गंभीर नीर जिन चलता ॥ ३३ ॥
क्रम क्रम सफल उलंघति आवा। गुर दरशन को उर ललचावा।
लीनि सरब परवार संगारे[6]। सुत इसत्री जुति शरधा धारे ॥ ३४ ॥
संग पंच सै नौकर और। पावति डेरे ठौर सु ठौर।
आयुध धरे साथ भट भीरु। आवति मारग चले बहीर ॥ ३५ ॥
दरब कोश जिह संग बिसाला। द्योस निरंतर आवति चाला।
पहुंच्यो निकटि तबहि गुर देश। प्यारी सिक्खी जांहि बिशेश ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खणशाह' प्रसंग बरननं नाम त्रितीओ अंशु ॥ ३ ॥

---

1. द्वेष रखने वाले। 2. व्यापार का सामान जो एक बार लादा जा सके। 3. पंजाब। 4. हृदय में धारण करता है। 5. नदियां। 6. साथ।

अंशु ४

मक्खण शाह प्रसंग

दोहरा

मारग आइ उलंघि कै मक्खणशाह बिसाल।
देश बिखै सुनिबो कर्यो जिस प्रकार गुरु चाल[1] ॥ १ ॥

चौपई

श्री हरि क्रिशन बाक जिम कह्यो। 'किनहूं गुरु रूप नहिं लह्यो।
बीच बकाले गुरु कहावें। द्वै बिसंत[2] गादीनि पुजावै ॥ २ ॥
नभ महि सूर न प्रगटहि जावद। उडगन अधिक प्रकाशहिं तावद।
यांते लखीयति है इस भाइ। अबि लौ गुर न भा बिदताइ' ॥ ३ ॥
मक्खणशाह सुनति संदेह। मानस संसै मान अछेह[3]।
बहुधन लाभ बनज ते आवा। तिह दस्वंध को मैं निकसावा ॥ ४ ॥
उदधि जहाज अटक जबि गइऊ। तहां सहाइक सतिगुर भइऊ।
तबि मन ते मैं दरब घनेरा। अरपनि चह्यो गुरनि के पैरा ॥ ५ ॥
बहुत बित्त अबि ल्यावनि कीना। सतिगुर भेट चहौं मैं दीना।
किस प्रकार करि सकवि पछान। भे हरिक्रिशन सु अंतर ध्यान ॥ ६ ॥
केहरि वसतु करी[4] कहु देनि। किम पुन चहि तिन ते फल लेनि।
होवहिं निशचै गुरु न जावत। असमंजस धन अरपनि तावत ॥ ७ ॥
कौन सथल महिं खोजैं गुर को। होइ मनोरथ पूरन उर को।
गुर हरिक्रिशन बाक अनुसारा। चहिय बकाले ग्राम मझारा ॥ ८ ॥
गुरु बचन पर शरधा धरनी। ब्रिद्धनि इह उत्तम गति बरनी।
होइ जि सिख्य अशरधावान। नहिं सिक्खी फल लहि सु निदान[5] ॥ ९ ॥
शरधा सिक्खी मूल महानी। बिन शरधा सिक्खी हुइ हानी।
बिना मूल ते मुकति जि फल है। नहिं प्रापति होवति किस थल है ॥ १० ॥
शरधा ते उर धरि उपदेश। पाइ अचल सुख तजहि कलेश।
गुर बच पर शरधा धरि यांते। मैं खोजौं प्रापति हुइं जांते ॥ ११ ॥

1. शरीर का त्याग किया, गुरु हरिकृष्ण जी। 2. बाईस गद्दियां। 3. मन में पक्का संशय हो गया। 4. हाथी। 5. अंत को।

बिन गुर मिले जि हटि कै गवनूं[1]। होइ बिअरथ देश आगवनूं।
करमहीन रहि संकट भवनूं। सतिगुर दिखवि जनावहि कवनूं[2] ॥ १२ ॥
इम बिचार करि मानस दीन। रिदै अराधहि पग मन लीन।
तरक अनिक को रिदै उठाइ। पंथ बकाले गमनति जाइ ॥ १३ ॥
किस प्रकार मुहि मिलहिं गुसाईं। जे अबि लौ नहिं निज बिदताईं।
अपर सिख मिलि मिलि जिम जाइं। इह बिधि मो तैं नहिं बनि आइ ॥ १४ ॥
निशचै प्रथम गुरु कहु करिकै। पाइन पास उपाइन धरिकै।
श्री मुख ते सुनि बाक उदारा। करौं जनम को सफल बिचारा ॥ १५ ॥
सत्तद्रव सलिता उलंघ[3] बिपासा। पहुंच्यो जाइ बकाले पासा।
बहिर ग्राम ते कीनसि डेरा। सौज संभारि धरी तिस बेरा ॥ १६ ॥
सुनि कै सुधि भी सभि सोढीनि[4]। निज निज मनुख पठावनि कीनि।
भोजन अनिक प्रकार पुचाए। सनमानहिं सभि बिधि हरखाए ॥ १७ ॥
निज निज दिशा मसंद महाना। उपदेशहिं कहि कहि पख्याना[5]।
'अजमत महिं पूरन गुर एही। सोढी ब्यरथ नाम निज लेहीं' ॥ १८ ॥
अपर आइ तिस घाट[6] बनावै। 'हम जिस ढिग सो गुरु अधिकावै'।
पठे मसंद अपर सोढीनि। निज निज दिशा भ्रमाइं प्रवीन ॥ १९ ॥
इक को कमी बतावहि दूजा[7]। चित चाहति सभि निज निज पूजा।
धन को लोभ धरहिं उपदेशहिं। ह्वै हम मनता देश अशेशहिं ॥ २० ॥
धीरमल्ल को हुतो मसंद। पुशट[8] धनाढि प्रबीन बिलंद।
सोपि आइ सनमान करंता। अधिक सतुति अपनी उचरंता ॥ २१ ॥
'धीरमल्ल के घर गुरिआई। हुती इनहुं की, इन के आई।
श्री गुर हरिगोविंद अनंद। गुरदित्ता सुत तिनहिं बिलंद ॥ २२ ॥
महां प्रतापी अजमत भारी। चित जो चहति करति सो कारी।
पित प्रिय सरब गुननि कहु खानी सोढी अपर न जांहि समानी ॥ २३ ॥
एक बार इक म्रितक बिलोकि। दियो जिवाइ सु कीनि अशोक।
सुनि करि पित गुर बरजनि कीनसि। इम नहिं करहु प्रभू गति चीनस ॥ २४ ॥
किितक काल पुन बीत गयो है। म्रित अखेरहिं चीत दयो है।
अनिक कामना पूरन करैं। दरशन दे दे सिक्ख उधरैं ॥ २५ ॥
गुरता उचित जि गुन हैं सारे। सभि पईअति जिन केर मझारे।
सिख्य समूह दरसिबे आवैं। करहिं कामना बांछति पावैं ॥ २६ ॥

---

1. वापिस लौट जाऊं। 2. कौन। 3. पार करके। 4. सोढियों की। 5. अपने अपने पक्ष की बात। 6. कमी वाला। 7. दूसरा। 8. मोटा ताज़ा।

सभिहिनि बिखै भए सभि लायक। मसतक दीपति जोति सुभायक।
इक दिन बिचरति करति अखेरा[1]। धेनू मरी परी कहु हेरा ॥ २७ ॥
हुती सबतशा[2], सुंदरघनी। देखति द्रिशटि क्रिपा सो सनी।
निज अनुचर[3] सों गिरा उचारी। वाहिगुरु कहि छिरकहु बारी[4] ॥ २८ ॥
अलप सबतशा, देहु जिवाइ। सुनि सेवक कीनसि तिस भाइ।
बोलति उठि धेनु ततकाला। धंन्य धंन्य सभि कहि तिस काला ॥ २९ ॥
हरिगोबिंद गुरु सुनि बात। कीनसि निकटि हकारनि तात[5]।
कह्यो तुमहिं इह रीति न आछी। बरज्यो हुतो सिमरि गति पाछी ॥ ३० ॥
इह रहिबे की रीति न तोही। जनम मरन जग को नित होही।
तुम ने सकल थान इम करनी। परमेशुर दिशि शुभ नहिं बरनी ॥ ३१ ॥
गुरु पिता ते सुनि करि चाले। मिले न बोलनि किय किस नाले[6]।
तज्यो शरीर होइ एकांत। सतिगुर पित की मानी बात ॥ ३२ ॥
अबि लौ तिन को जो इसथान। करहि अराधनि बाछां ठानि।
करिही पूरन सो ततकाला। इम गुरदित्ता भयो बिसाला ॥ ३३ ॥
तिन ते सुत उपजे शुभ दोइ। गुरु हरिराइ धीरमल सोइ।
श्री गुरु हरिगोबिंद बिचारी। गुरुता दई न पुत्रनि चारी[7] ॥ ३४ ॥
लायक, सुत के पुत्र बिचारे। हरिराइ निज थल बैठारे।
पौत्र प्रबीन सकल गुन भारी। लखि निज आइसु के अनुसारी ॥ ३५ ॥
श्री गुरु हरिगोबिंद दिन एक। गए बाग महिं सहित बिवेक।
करति सैल फूलनि की जाते। खिरे अनेक रंग दरसाते ॥ ३६ ॥
उपबन बिखै बिराजे जाइ। संत पितामे श्री हरिराइ।
गए तहां को कुछक पिछारी। सेवक कितिक सिख्य संगारी ॥ ३७ ॥
गर महिं जामा जिह सो पाले। सूखम बसत्र शुभति जबि चाले।
मग के निकटि कुसम इक खरो। सुंदर रंग भोर[8] को खिरो ॥ ३८ ॥
जामे संग अटकि सो टूटा। बिना कुसम ते रह्यो सु बूटा।
मिले पितामे सों पुन आइ। टूट गयो सुमनस[9] जिस थाइं ॥ ३९ ॥
श्री गुरु हरिगोबिंद निहारा। सभिहिनि सों इम बाक उचारा।
इहां हुतो इक फूल बिसाला। किसने तोर लीनि इस काला ॥ ४० ॥
दासनि भन्यों बंदि जुग हाथा। श्री हरिराइ बसत्र के साथा।
उड्यो बायु ते, लागि सु टूटा। नहीं अपर ते जान्यों तूटा[10] ॥ ४१ ॥

1. शिकार। 2. बछड़े वाली। 3. दास। 4. जल। 5. पुत्र (श्री गुरदित्ता जी)। 6. किस किसके साथ। 7. चारों को। 8. सवेर। 9. फूल। 10. टूटा।

सुनि गुरु श्री मुख ते फुरमायो। जिनहुं बसत्र ऐतो गर पायो।
सो संभारि कै क्यों नहिं चलि है। इत उत बायु ते जो हलि हैं॥ ४२॥
तबि ते श्री हरिराइ सु मानि। जामा पहिरति हुते महान।
हाथनि सो संकोचि चलंते। बाक पितामे को बरतते॥ ४३॥
जबि लौ देह धर्यो जग मांहि। चलति बसत्र कर छोर्यो नांहि।
इस प्रकार नित रहि अनुसारा। निरबाह्यो गुरता कहु भारा॥ ४४॥
श्री हरि क्रिशन टिके पशचाती। तिन की भई लखहु सो बाती।
श्री गुरु हरिगोबिंद ते पाछे। पहुंची गुरता इन घर आछे॥ ४५॥
रामराइ को छेक सु दीना[1]। नहिं गुरता के लाइक चीना।
गुर हरिराइ सहित हरि क्रिशन। पहुंचति भे परलोक अनंद घन॥ ४६॥
धीर मल्ल बिन अपर न कोई। गुरता की लायक हुइ जोई।
याते सुणि हो मक्खण शाह। गुर ग्रंथ है इनके पाह[2]॥ ४७॥
जोग मानिबे जानहुं सोइ। सकल कामना पूरन होइ।
सरब प्रकार सभिनि ते जानि। धीर मल्ल है गुर महान॥ ४८॥
पिता पितामे गुरु जिस केरे। भ्रात भतीजा गुए बडेरे।
तिन सभिहिनि ते इह पशचाती। भयो गुरु जग महि बख्याती॥ ४९॥
इस पीढी ते पूरब जेई। तिने न पहुंचति गुरता केई।
याते करि बिचार उर माहि। गुर लखि पूजहु इनहि उमाहि॥ ५०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खण शाह' प्रसंग बरननं नाम चतरथो अंशु॥ ४॥

1. रामराय को निकाल दिया। 2. पास।

अंशु ५

मक्खण शाह उपाइन देनि प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार पहिले दिवस पठे सु नर सोढीनि ।
निज निज कहति महातमनि लोभ लहिर महि लीन ।। १ ।।

चौपई

भई निसा[1] तबि मक्खण शाह । गिनहि गटी अनगन मन मांहि ।
क्या करतब्य मोहि कहु अहै । इह सभि निज निज दिशि को चहैं ।। २ ।।
गुर पूरन की अस नहिं बाती । जो सभि जग दाता बख्याती ।
सभि के जाचै देवति जोइ । निस की दशा सु अस कस होइ ।। ३ ।।
धन हित मो पहि मनुज[2] पठाए । अनिक भांति की बात बनाए ।
निज निज उसतति कहि हित पाइ । हुंडी निधन शाहु के भाइ ।। ४ ।।
मम धन जो गुरु ढिग नहिं जाइ । असमंजस[3] मुझ को बनिआइ ।
भए सहाइक सागर मांहि । भयो धनी तिन क्रिपा सु पाहि ।। ५ ।।
पहुंचै भेट न तिनके पाही । इस ते बडो दोश को आही ।
मुझ ते जान्यो परै न कोई । दरशन करौं दरब दिउं सोई ।। ६ ।।
कौण जुगत ते गुर को पावौं । कहि निज मन की आस पुरावौं ।
आवनि सफल होहि तबि मेरा । दरशन करि परसौं गुर पैरा ।। ७ ।।
रिदे बिचारति इम फुरि आई[4] । दुइ दुइ मुहर देउं सभि तांई[5] ।
अपन उपाइन आप जि जाचैं । तिस को मैं जानौ गुर साचै ।। ८ ।।
तिन को ही पूजनि बनि आवै । गत जहाज की कह जु जनावै ।
इसते परे उपाइ न दूजा । पावौं गुरु करौं पग पूजा ।। ९ ।।

---

1. रात । 2. मनुष्य । 3. अयोग्य । 4. मन में संकल्प उठा । 5. सब को ।

इम निशचै करि कै उर महीआ[1]। पर्यो सेज पर निंद्रा लहीआ।
जबि प्रभाति होई उठि करिकै। भज्यो सतिगुरु रिदे सिमरिकै ॥ १० ॥
पहिरे बसत्र नवीन सरीर। कुछ धन लै संग करि भट भीर।
बर्यो बकाले महिं तबि जाइ। प्रथम ग्रिंथ साहिब ढिग आइ ॥ ११ ॥
धीरमल्ल के हुते जु पास। खरो कराइ तहां अरदास।
पंच अशरफी दे निज हाथ। रिदे अराधहि सतिगुर नाथ ॥ १२ ॥
पुनहि धीरमल्ल के ढिग आइ। दोइ अशरफी धरी बनाइ।
बैठि गयो दोनहुं कर जोरे। हिरदे अंतर गुरु निहोरे[2] ॥ १३ ॥
सरब शिरोमणि जे तुम थीजै। अपनी वसतु मोहि ते लीजै।
भए सहाइक जे तुम जाइ। मैं ढिग बैठ्यो देहु बताइ ॥ १४ ॥
सरब शरीरनि अंतरजामी। जहिं सिमरैं तहिं हाजर स्वामी।
रिदे बिखे कहि रह्यो घनेरा। दे कुछ पता मोहि इक बेरा ॥ १५ ॥
बड मसनंद बिछावनि कीनसि। भुज उपधानु[3] आसरो लीनसि।
कंचन दंड जराऊ जरे। गहे समुख जिसके नर खरे ॥ १६ ॥
रवि सम बिजना[4] चमक बिसाला। ढुरति चमर चारहुं दिशि चाला।
नर अनेक कर जोरि खरे हैं। अनिक कामना बिनै करे हैं ॥ १७ ॥
सुंदर बसत्र बिभूखन पहिरे। बैठ्यो हरख मान मन ठहिरे।
मक्खणशाहु दिशा मुख करिकै। कुछ उदवेग[5] रिदे कहु धरिकै ॥ १८ ॥
बोल्यो धीरमल्ल तिस बेरे। 'गुरु घर के तुम सिक्ख बडेरे।
पाइन पास उपाइन देते। सरब प्रकार खुशी शुभ लेतें ॥ १९ ॥
तबि ही सिरोपाउ बहु मोले। दीनसि आनि मेवड़े बोले।
इम जानी तिन सभि मन मांहि। बहुत भेट पुन आनहि पाहि ॥ २० ॥
अबि तौ मसतक टेकनि आयो। पुन दै है धन जेतिक ल्यायो।
है इहु बडो, दीन कुछ थोरा। रहि दिन कितिक अरपि है औरा ॥ २१ ॥
यांते सभि बिधि मधुर गिरा कहि। उपदेशहि धन हित जिम दे इह।
मक्खण शाहु चहति बहु सोई। पता जहाज केर दे कोई ॥ २२ ॥
रिदै बिचारति भा इस भाइ। इहु तो सभि ते बडा कहाइ।
देश अनेकनि के नर आवैं। इसके चरननि सीस झुकावैं ॥ २३ ॥
गादी दिय जबि गुर हरिराइ। इसके मान राखने भाइ।
कितिक देश सिख्खनि के दीनि। सो मानहिं करि गुरु प्रबीन ॥ २४ ॥

---

1. मन में। 2. अरदास की। 3. बड़ा तकिया। 4. पंखा। 5. घबड़ाहट।

गुरु हुते जबि बिदत शरीर। तबि भी बहुत जु मानुख भीर।
दे दे भेट उपासनि करिहों। ऐश्वरज बिखै बडो भरपुर ही ॥ २५ ॥
मोहि न दीनसि पता जहाज। सरितापति[1] महिं राखसि लाज।
क्यों न अमानत अपनी लीनि। कर्यो काज मुझ को लखि दीन ॥ २६ ॥
'गुरु इही, लीनसि गुरिआई'। इह निशचा किम मम ठहिराई।
या उसतति को करति घनेरे। नांहि परत परतीत सु मेरे ॥ २७ ॥
मम अंतर की गति नहिं जानी। तहिं सहाइ की, किम लिउं मानी।
गुरता महि संसै इसु मांही। जोति प्रकाशति मुख पर नांही ॥ २८ ॥
भयो दीन मन मक्खणशाह। पूर मनोरथ होयहु नांह।
मधुर गिरा बोल्यो कर जोरी। 'आइसु दिहु दरसाउं बहोरी' ॥ २९ ॥
मसतक टेकि उठनि भा त्यार। धीरमल्लय निज हाथ पसारि।
मधुर प्रशाद दयो कहि बैन। 'गुरु सहाइ तुमहिं दिन रैन' ॥ ३० ॥
बंदन करि निकस्यो तिस डेरे। अपर जाइ सोढी सभि हेरे।
जुग जुग मुहर अगारी धरि कै। सभि के पाइन बंदन करिकै ॥ ३१ ॥
बांछा करति रिदे महिं धीर। देहि पता को जलधि[2] गंभीर।
मो ते लेहि अमानत आप। जो गुरता को धरै प्रताप ॥ ३२ ॥
नहिं किनहूं इह बात जनाई। हम जहाज तव दीनि लंघाई।
सादर सोढी सभि बैठावैं। सहित बयंग[3] निज सतुति सुनावैं ॥ ३३ ॥
बाक खुशी के कहैं घनेरे। सिरोपाउ दे मोल बडेरे।
'हमरो सिख सेवक तू भारा। गुरु दीनसि तुझ दरब उदारा ॥ ३४ ॥
सिक्खी को निरबाह करंता। साध साध तुझ बड बुधिवंता।
दरशन करनि दूर ते आयो। सभि परिवार संग ही ल्यायो' ॥ ३५ ॥
इत्यादिक मुख मधुर बचंना[4]। कहि करि सिख को करहिं प्रसंना।
अपर रीति सतिगुर की जेई। सरब प्रकार करति हैं तेई ॥ ३६ ॥
जिम बन महि म्रिगपति[5] दुर[6] रहै। सभि म्रिग बनपति बन बन कहैं।
तथा रीति सभि करति गुरु की। नहिं परंतु सिख आस पुरु की ॥ ३७ ॥
केहरि करम केहरी करै। अपर म्रिगनि ते किम नहिं सरै।
इम मनाइ करि सभि सोढीनि। दुइ दुइ मुहर अरपना कीनि ॥ ३८ ॥
अंतरजामता किसहूं नांही। मक्खण निशचै किय मन मांही।
तबि चलि गयो आपने डेरे। दीन मना हुइ रह्यो बडेरे ॥ ३९ ॥

1. समुद्र। 2. समुद्र। 3. बहाने से। 4. मीठे बचन। 5. शेर। 6. छिपा रहता है।

अबि करतब किम है मुझ नीका। कहां करवि मैं ? गुरु न ठीका[1]।
मंद भाग मैं अपनि निहारा। गमन पंथ बड निफल्यो सारा॥ ४० ॥
जथा केहरी कंदर मांहि। जथा घटा महिं रवि दुर जाहिं[2]।
महांराज जिम रहि रणवासे। छपे गुरु तिम नहिं प्रकाशें॥ ४१ ॥
सतिगुरु दरशन सार सरब को। नहिं पायहु नहिं दियो दरब को।
इस प्रकार चितवति दुचिताई। दुतिय सरबरी[3] सरब बिताई॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खणशाह उपाइन देनि' प्रसंग बरननं नाम पंचमो अंशु॥ ५ ॥

---

1. ठीक (निश्चित)। 2. जिस तरह बादलों में सूरज छिप जाता है। 3. रात।

अंशु ६

श्री गुर माता प्रसंग

दोहरा

सकल ग्राम महिं बिदत भी मक्खण सिख इक आइ।
दई उपाइन सभिनि को जो सोढी गुरु थाइं ॥ १ ॥

चौपई

श्री गुरु तेग बहादर माता। नाम नानकी जग बख्याता।
पतिबरता धरमातम रूपा। रुचिर सुशीला गुणनि अनूपा ॥ २ ॥
मधुर भाशणी[1], दीरघ दरसा। सतिगुरु ध्यान पराइन हरसा[2]।
प्रिय पुत्रा, मन म्रिदुल कुलीना। सदा क्रिपालू, परम अदीना[3] ॥ ३ ॥
तिस ढिग गए दास तबि दौरे। बैठे चित शांती घर ठौरे।
कह्यो जाइ 'हे दीरघ माता। इक सिख आयो गुरु जस ग्याता ॥ ४ ॥
धनी महत बुधिवंत घनेरा[4]। कल संध्या किय बाहर डेरा।
साथ मनुखनि को समुदाया। आज ग्राम अंतर चलि आया ॥ ५ ॥
पूरब गयो धीरमल डेरे। सुजसु मसंद कहैं तिह प्रेरे।
सपत अशरफी[5] तहां चढाइ। द्वै द्वै सभिनि सोढीयनि थाइं ॥ ६ ॥
बूझे संग मसंद जि होते। पहुंची भेट सभिनि ढिग मो ते।
नहीं जनायो थान तुमारो। तबि सिख गयो वहिर धनवारो ॥ ७ ॥
पुत्र आप के वहिर न बैसे। क्रित न करहिं सभि सोढी जैसे।
किम आवहि धन, सिख नहिं जानहिं। मिलहि जि बोलहिं तिन हूं मानहिं' ॥ ८ ॥
इम सुनि मात गई सुत पास। पउढे हुते[6] उठे सुखरास।
इक दुइ सिख्य दास थित तीर। पिख्यो पुत्र को रिदा गंभीर ॥ ९ ॥
तऊ शरीक क्रित को देखि। कह्यो 'पुत्र! हे बुधि बिशेख।
बैठहु वहिर दिखावहु आप। करहु मसंदनि संग मिलाप ॥ १० ॥

1. मीठा बोलने वाली। 2. प्रसन्न रूप। 3. उच्चात्मा। 4. बहुत धनाढ्य और बुद्धिमान है। 5. सोने की मुहरें। 6. लेटे हुए।

पिता तुमारे की इह गादी। करहु रीति जिम है गुर आदी।
दरशनि देहु उपाइन लेहु। बैठहु बोलहु सहत सनेहु॥ ११॥
दूर देश ते सिख चलि आयो। सभि गुरु बंसहि दरब चढायो।
तुम भी वहिर होति ढिग आवति। सभि के सम पिखि धन अरपावति॥ १२॥
हे सुत! जो परिवार गुज़ारा। आइ वहिर ते होति अहारा।
करहिं शरीक ईरखा सारे। 'हम गुर' 'हम गुर' करति उचारे॥ १३॥
दे रिशवत बहु करहिं उपाइ। ज्यों ज्यों लेहिं मसंद मिलाइ।
जो मसंद मिलि निज पख धारैं। देशनि संगति ल्याइ संगारैं॥ १४॥
अरपावहिं धन तिन के पास। बहु बडिआई करहिं अरदास।
धनी शरीक हमारे भए[1]। ऐश्वरज अधिक सभिनि ढिग थिए॥ १५॥
पाछलि रीति त्याग दिहु तात। सभिनि बिखै बरतहु बख्यात।
अंतर बैठ्यो लखहि न कोई। किम पूजहिं तुम को सिख जोई॥ १६॥
तुमरे पिता पितामे जैसे। करहु अचरन, नीकि बिधि, तैसे।
नरनि बिखै करहि न बिवहारा। तिह को कहहिं एह मतवारा[2]॥ १७॥
हे सुत! यांते बैठहु बाहर। बोलहु मिलहु होहि जग ज़ाहर।
पिखहु शरीक करति कित जैसे। दरब उपावहिं जैसे कैसे॥ १८॥
अपनि आप को बडे कहाहिं। हम हैं गुरु कहहिं सभि मांहि।
पिता पितामा महत तुमारा। तिनहुं थान निज लखहु उदारा'॥ १९॥
जननी गिरा सुनी करि मौन। नहिं उतर दीनसि विधि कौन।
हुते समीपि सिख्य अरु दास। जोरे हाथ करी अरदास॥ २०॥
'श्री गुरु जी! सभि लायक आप। तुमरो सभि ते अधिक प्रताप।
सिख्यनि देहु दरस, निसतारहु। उपदेशनि हित बाक उचारहु॥ २१॥
रौरा पर्यो बीच गुरिआई। तुम छिप रहे न जाने जाई।
करहु कामना सिखनि पूरी। आवहि दरब अरपि हैं भूरी॥ २२॥
जबहि बिदेशी सिख्य सु आवा। भेटैं सभि सोढीनि चढ़ावा।
तबि मैं चह्यो जाउं तिस पास। करौं आप की बात प्रकाश॥ २३॥
भीर नरनि की चहुंदिशि मांही। ब्रिंद मसंद अनंदति तांहि।
पहुंच्यो गयो न ढिग तबि मोही। निकसनि वहिर ग्राम तिस होही॥ २४॥
देखि सु मैं हटि रह्यो पिछारी[3]। अपर न सुधि किन तिसैं उचारी।
श्री गुरु हरिगोविंद के नंद। आखय[3] तेग बहादर चंद॥ २५॥

---

1. हमारे रिश्तेदार अमीर बन गए हैं। 2. बावला। 3. जिसका नाम तेग बहादुर है।

सो आवति, जबि इम सुनि लेतो। रावरि पास उपाइन देतो।
केतिक दिवस रह्यो जे इहां। तौ हम जाइ जनावहिं तहां ॥ २६ ॥
सो सिख है शरधालु बिसाला। आइ बिलोकहिगो ततकाला।
श्री गुर तेग बहादर सुनि कै। बरजनि कीनसि वाकनि भनि कै ॥ २७ ॥
हम को ज़ाहर बाहर करो। पुर न मनोरथ इह उर धरो।
जो मानुख इम करि है कारा। तिह मुख हुइ दरगहि महिं कारा ॥ २८ ॥
यांते तूशनि पिखहु तमाशा। जिम हुइ करता पुरख बिलासा।
सुनति सिख्य उपज्यो उर त्रासा। भयो मोन कुछ मुख न प्रकाशा ॥ २९ ॥
जननी चित मान उठि आई। सुत के बाक सुनति अरगाई[1]।
बड बैरागवान सुत जाने। रिदा परम ब्याकुलता ठाने ॥ ३० ॥

दोहरा

इम श्री मुख ते बाक भा लियो कितिक सुन कान।
अबि मक्खण की बारता मिलिबो करवि बखान ॥ ३१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर माता' प्रसंग बरननं नाम खशटमो अंशु ॥ ६ ॥

1. चुप हो गई।

अंशु ७

मक्खण शाह को अंतर जामता देनि प्रसंग

दोहरा

चिंतमान चित महिं अधिक मन को कशट बिसाल ।
जाम जामनी जागि कै करि शनान बिधि नाल ॥ १ ॥

चौपई

जपुजी आदिक सतिगुर बानी । पठि पठि दरस कामनी ठानी ।
श्री हरिक्रिशन बाक नहिं झूठे । मिटहिं नहीं हुइ अपर अपूठे[1] ॥ २ ॥

रवि सीतल, निसपति[2] तपतावै । पवन टिकहि, निज मेरु हिलावै ।
अचला चलहि, सिंधु सुक जाई । हिम सम पावक[3] तेज बनाई ॥ ३ ॥

उडगन[4] ग्रह उलटे फिर धावैं । निज मिरजादा जगत नसावै ।
तउ न सतिगुर हुइ बच कूरा । कारन करन देनि बर सूरा ॥ ४ ॥

कह्यो 'बकाले महिं गुरु रहै । बाबा नाम' बाक तिन अहै ।
यांते मैं जानवि गति ऐसे । है अपराध मोहि महिं कैसे ॥ ५ ॥

जिसते मुझ नहिं दरशन दीनसि । अपनो आप छपावनि कीनसि ।
बिन देखे मैं हटि कै जावौं । मनमुखता पदवी को पावौं ॥ ६ ॥

सिख्यनि बिखै बिदत ह्वै ऐसे । 'मक्खण गुरु न दरस्यो कैसे' ।
मुझ पाछै कबहूं गुर सूर । प्रगट होहिंगे जगत जरूर ॥ ७ ॥

श्री हरि क्रिशन बाक हुइ साचा । मैं परंतु सिखी महिं काचा ।
यांते खान पान तजि करि कै । मैं बैठौं सतिगुरु सिमरि कै ॥ ८ ॥

निज स्वामी को दरशन पावौं । नांहि त अपने प्रान नसावौं ।
आपनि साथ सु नहीं बखाना । नेम्र बिखादमानि[5] मन ठाना ॥ ९ ॥

भई भोर बैठ्यो निज डेरे । मन महिं गिनती करति घनेरे ।
दिवस चढ्यो केतिक जब्रि हेरि । नर सोढिनि के पहुंचे फेर ॥ १० ॥

---

1. उलट । 2. चन्द्रमा । 3. आग । 4. तारे । 5. दुख भरा ।

चहुंदिशि महिं बैठे तबि आइ। अनिक भांति की बात बनाइ।
मक्खण के उर लगहि न कोई। महां बिखादमान मन होई ॥ ११ ॥
कहति परसपर बाक घनेरे। बैठ्यो बिती कितिक जबि देरे।
मक्खण शाह दीन मन कह्यो। 'अपर भि सोढी को इक रह्यो ॥ १२ ॥
जिस ढिग मो ते भेट न गई। अपनि आप की सुधि नहिं दई।
होइ जि कोइ बतावहु मोही। मम आगमन सफलता होही' ॥ १३ ॥
सुनति मसंद मेवड़नि सारे। करि बिचारि को बाक उचारे।
'कितिक रहति थे बीच बकाले। आइ बहिर ते कितिक बहाले[1] ॥ १४ ॥
सूरजमल्ल की संतति आदि। सभिनि भेट दे सहि मिरजाद।
इक गुरु हरिगोबिंद को नंद। आख्य तेग बहादर चंद ॥ १५ ॥
जिस को सुधि नहिं जग बिवहारे। सुनहिं न किसते नहिन उचारे।
जहां इकांत थाइं तहिं रहै। मसत सुभाइ सदा जिम अहै ॥ १६ ॥
बदन अछाद्यो पर्यो रहति है। लेनि देन की सुधि न लहति है।
नहिन कदाचित को तिह मानहि। अहै नलाइक[2] सभि ही जानहिं ॥ १७ ॥
खान पान की भी सुधि नांही। कहां अपर की ह्वै तिस मांही।
रहि न सकहु देखे बिन तांही। तौ तुम पिखहु जथा गति आही' ॥ १८ ॥
तिन ते श्रुतवा[3] मक्खण शाह। कुछक भयो मन महिं उतसाह।
दहन बिलोचन फरकनि लागा[4]। मनहुं अंकूर उपावनि लागा ॥ १९ ॥
सभि महिं कह्यो 'चलवि तिन पाही। देहिं उपाइन चख दरसाहीं'।
त्यारी करी गमन के कारनि। धीर मल्य नर किय हटकारनि ॥ २० ॥
'तुम को उचित न तिन पहि जानो। जिह सुभाव परमत्ति महानो।
मिलहि तुमहिं कै मिलि है नांही। लघु कोशठ महिं पर्यो रहाही ॥ २१ ॥
मान अमान समान जिसू के। राग न द्वैश न मोह तिसू के।
गुरता रीति नहीं कुछ जानै। गुरु होनि तौ कहां पछानै' ॥ २२ ॥
इम सुनि कै सभि नर सोढीनि। इसी बाक को पूजनि[5] कीनि।
'जो तुम कही जथारथ एहू। ऊचित न गुरता के बिधि केहू' ॥ २३ ॥
सुनि मक्खण कुछ मन नहिं आनी। चहति देखिबे संसै हानी।
ले करि संग नरनि की भीर। चल्यो परसिबे गुरु गंभीर ॥ २४ ॥
सभि सोढिनि के मानव साथ। गमन्यो मंद मंद पग पाथ[6]।
तरकहि[7] रिदै होहिं गुर एही। मोहि जिआवहिं जानि सनेही ॥ २५ ॥

1. कितने ही बाहर से आकर ठहरे। 2. अयोग्य। 3. सुनकर 4. उसकी दाईं, आँख फरकने लगी—कार्यसिद्धि का संकेत है। 5. प्रौढता की। 6. रास्ता। 7. तर्क करता है (मन में)।

नांहि त मोहि मरनि अबि आयो। पूरब परण न मिथ्या गायो।
जबहि भीर सों पहुंच्यो आई। श्री गुर श्रवण परी धुनि जाई॥ २६॥
पठ्यो दास रोकनि तिन केर। कह्यो सभिनि सों आगो घेर।
'मक्खणशाहु! सुनो गुरु बैन। थान कुशादो[1] अंतर है न॥ २७॥
मिलनि लालसा जे तुझ उर मैं। होहिं इकाकी प्रविशहु घर मैं।
अदब साथ तूशनि मुख धारो। तिन रजाइ ते जाइ निहारो'॥ २८॥
सुनि कै सभि को ठांढे करिके। आप प्रवेश्यो अंतर घर के।
जहिं श्री गुरु इकाकी अहैं। अंतर ब्रिति सदा ही रहैं॥ २९॥
रिदै विचारति नीके जोवा। आइ समो बिदतनि को होवा।
भारी महां पोट है जोइ। बनि आई सिर धरनी सोई॥ ३०॥
अबि जे इस को पता न दै हैं। गुर घर की महिमा तबि जै है।
शरधा सिक्खनि की नहिं रहै। नहिं गुर पूरन यों सभि कहैं॥ ३१॥
मनि करि कै इन सभि पतियाए। किस हूं ते न मनोरथ पाए।
जिस गति को लखि कीन सहाइ। अटक्यो पोत[2] सु पार लंघाइ॥ ३२॥
सो गति अबहि आनि करि होई। बिना किये ते सरै न जोई।
शरधा श्री हरि क्रिशन बाक परि। प्रान तजनि लौ साहस इन करि॥ ३३॥
जे न बतावहिंगे इस तांई। हुइ निरास को संकट पाई।
इक तो दरब ल्याइ बहुतेरा। दुतीए आयहु दूर बडेरा॥ ३४॥
त्रितिये सतिगुर को सिख भारी। चतुरथ प्रण को ठट्यो बिचारी।
बिना कहे असमंजस होइ। यांते पता कहैं इस सोइ॥ ३५॥
इतने महिं गा मक्खण शाह। बंदन करी बंदि कर तांहि।
दुइ दीनार अगारी धरी। सोऊ रिदै कामना करी॥ ३६॥
श्री गुर तेग बहादुर चंद। कह्यो तिसै 'हे सिख बिलंद!
गुर घर की जो अहै उपाइन। सो दीजहि, नहिं राखहु आइन[3]॥ ३७॥
सागर समै जहाज लंघावनि। तहिं जो कीनि संकल्प उठावनि।
अरु दसौंध[4] गुर को है जेता। अरपनि दरब करहु अबि तेता॥ ३८॥
सिखी महिं शरधा नित राखहु। गुर हाज़र सद जहां भिलाखहु'।
श्री गुर बाक सुनति सिख सोइ। भयो प्रसंन संदेहनि खोइ॥ ३९॥
गर जामे की तनी तराकी। भए रुमंच रिखीकनि थाकी।
देखे सतिगुर दिनकर[5] तूला[6]। बर अरबिंद मनिंदै फूला॥ ४०॥

---

1. अंदर खुली जगह नहीं है। 2. जहाज़। 3. अपने पास—अपने घर में।
4. आय का दसवां भाग। 5. सूरज। 6. तुल्य।

गदगद गिरा न बोल्यो गइऊ। रुके कंठ परिपूरन भइऊ।
नेत्रनि बिखै अश्रु भरि आए। दशा देखि मन रहि बिसमाए॥ ४१॥
जनम रंक जिम नवनिधि पाई। बंदन उमंग अरुनता[1] छाई।
कितिक बेरि टिक गयो अडोला। च्रखनि पलक मुख बाक न बोला॥ ४२॥
सतिगुरु महिमा गरूवी जानी। महां प्रेम महिं अति मसतानी।
पूरब रिदा शुद्ध जिस केरा। पुनहि दरस पिखि राग बडेरा॥ ४३॥
ज्यों अति स्वेत बसत्र हुइ कोई। रंगरेज[2] ले रंगहि सोई।
गूड़ा रंग बिमल अति आवै। जिस की समता अपर न पावै॥ ४४॥
त्यों मक्खण मन रंग्यो राग[3]। हलत पलत महिं भा बडिभाग।
पूरन चंद मनिंद निहारे। चख[4] चकोर तबि भए बिचारे॥ ४५॥
सतिगुर सूरज दरसन जोवा। रिद अरबिंद प्रफुल्यति होवा।
साधनि साधति सिधि लै जैसे[5]। धरि अनंद को बैठ्यो तैसे॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खण शाह को अंतरजामता देनि' प्रसंग बरननं नाम सपतमो अंशु॥ ७॥

---

1. लाली। 2. कपड़े रंगने वाला। 3. प्रेम। 4. नेत्र। 5. साधना करते हुए जैसे सिद्धि प्राप्त हो जाए।

अंशु ८

श्री गुर तेग बहादर बिदत होवनि प्रसंग

दोहरा

मक्खण धीरज धरि रिदै हाथ बंदि करि दोइ[1]।
नमसकार करि पुनहु पुन पिखि पिखि हरखति सोइ ॥ १ ॥

चौपई

'हे सतिगुरु पूरन ! करि दया। सागर पता जु रावर दया।
नयो जनम होवति भा मोरा। कर्यो निवारनि संकट घोरा[2] ॥ २ ॥
सकल जगत पूरन धन धान। सभि के भरता आप महान।
दे अहार सभि को प्रतिपारहु। कोट अनंत सु जीव संभारहु ॥ ३ ॥
मुझ ते धन न चह्यो हे नाथ। कर्यो जिआवनि इस मिस[3] साथ।
सभि ते बडे भाग हैं मेरे। पूर मनोरथ दरशन हेरे ॥ ४ ॥
दुशकर[4] साधन साधति जैसे। फल प्रापति, मेरी गति तैसे।
बड़े प्रवाहं बिखै बहु बह्यो। चहुंदिगि ते अलंब नहि लह्यो ॥ ५ ॥
तिस को नौका प्रापति होइ। मैं अपनी गति जानौं सोइ।
जिम शत्रू के बसि को पर्यो। छुटहि राज ले, तिम दुख हर्यो ॥ ६ ॥
जथा जीव को गहि ले जाही। जम किंकर ताड़हि दुख मांही।
पायो चहै नरक महिं सोइ। तिस को सुरग देहि जिम कोइ ॥ ७ ॥
जथा गयो नर को परदेश। पर्यो उजार भ्रमति स-कलेश।
खान पान बिन म्रितक समाना। घर पुचाइ तिह, मैं तिम जाना ॥ ८ ॥
दीन जानि दीनसि तुम दाना। भयो म्रितक मैं पायहु प्राना।
हुते गुपत मम कारन करिकै। भए प्रगट तुम आप उचरिकै ॥ ९ ॥
इह जसु मो कहु दीनि बिसाला। हैं मम भाग बडे इस काला।
अंतर ब्रिती आप नित रहो। ब्रह्मानंद सदा उर लहो ॥ १० ॥
चौदहि लोक पती गुन खानी। मुझ निशचा दीनसि कहि बानी।
सभि ते छपे रहे नहिं जाने। क्रिया सुभाइ दिखाइ न आने[5] ॥ ११ ॥

---

1. दोनों हाथ। 2. मेरा महान् संकट दूर किया। 3. बहाना। 4. कठिन। 5. दूसरे को।

इक मोकहु निज पता बतावा। अपर सु नहीं भेव तुम पावा।
यांते अति प्रसंनता मोही। सतिगुरु करुना निज पर जोही ॥ १२ ॥
धंन सरूप आप को अहै। सिख सरबत्र आसरो लहैं।
एक शरन सिख्यनि की रावर। तुम तजि भ्रमहिं सि नर जग बावर' ॥ १३ ॥
इत्यादिक कहि बाक घनेरे। त्रिपति न होति दरस गुरु हेरे।
अतुलत हरख रिदै भरि आवा। उठति बेरि पुन सीस निवावा ॥ १४ ॥
चरन सपरशे द्वै कर साथि। भयो क्रितारथ दरसे नाथ।
'पुन मैं दरसौं' बाक बखानो। अबहि न डोलौं धीरज ठानौं ॥ १५ ॥
निकस्यो चलि आयो निज डेरे। किसहूं सो न कह्यो तिस बेरे।
निज निज डेरनि सकल पठाए। एकाकी हरखति सुख पाए ॥ १६ ॥
निज करतबय चितवि करि आछे। अपनि नरनि ग्यों बोल्यो पाछे।
'सीवनिहार[1] चतुर ले आवो। द्वै दुइ तीन सु छिप्र[2] बुलावो ॥ १७ ॥
सूखम बसत्र सु तोशे खाने। करहु सिवावनि तूरन ठाने।
बहु पाले को जामा होइ। करहु सु तूरनता संग सोइ ॥ १८ ॥
सरब बसत्र करि लेवहु त्यारु। बहुत मोल को होइ जु चारु[3]।
पोशिश सगरी निसा मझारी। बहुत मोल की कीजहि त्यारी' ॥ १९ ॥
सुनि सेवक तूरन ही धायो। चहियै वसतु सु सगरी ल्यायो।
बहुत मोल के बसत्र निकासे। सीवनि लगे बैठि नर पासे ॥ २० ॥
सरब सरवरी[4] केर बिताई। करि पोशिश रचि सुंदरताई।
ब्रह्म महूरत[5] महिं उठि करिकै। मक्खनशाह हरख उर भरिकै ॥ २१ ॥
मज्जन आदि क्रिया करि सारी। गुर बानी करि प्रेम उचारी।
जितो नेम सो पठि करि आछे। जपजी[6] प्रथम सुखमनी[7] पाछे ॥ २२ ॥
उज्जल पोशिश पहिरी फेर। पुनहिं तिहावल कीनि घनेर।
सुच संजम पठत्यो गुर गिरा। पंचांम्रित त्यार बहु करा ॥ २३ ॥
मेवे अनिक प्रकार पवाए। निज दासनि ते लिय उठिवाए।
मुहर पंच सै गिनि कै लीनि। जो गुर के हित संचनि कीनि ॥ २४ ॥
पुन उठिवाइ पुशाक नवीन। मक्खणशाह महान प्रबीन।
सुभटनि भीर संग लै चल्यो। सतिगुर चरन प्रेम महिं ढल्यो ॥ २५ ॥
चहित रिदै बिदतावनि गुर को। जिनहु मनोरथ भाख्यो उर को।
जो संगति भूली सभि थाइं। को किस को किस लागहि पाइ ॥ २६ ॥
जानि जानि श्री नानक गादी। पूजहिं देहिं दरब ते आदी।
गुरु न निशचै कीनसि कोइ। चाहति सभि, इक पूरन होइ ॥ २७ ॥

1. दर्जी। 2. जल्दी बुलाओ। 3. सुन्दर। 4. रात। 5. सूर्योदय से चार घड़ी पहले का समय। 6. जपुजी नामक वाणी। 7. सुखमनी वाणी अमृत वेला में।

केतिक सिख्य उपाइन भारी। अरपनि कारन गुरु अगारी।
राखी पास, न दीनसि कांहि। प्रगटहिं तबि दै हैं गुर पाहि ॥ २८ ॥
इस प्रकार करि संगति घनी। उतरी हुती जु संसै सनी।
गुरु बकाले महिं प्रगटावैं। इसी बाक पर मती टिकावैं ॥ २९ ॥
सिक्ख सैंकरे बीच बकाले। उतरे जहिं कहिं प्रेम बिसाले।
करति प्रतीछनि गुरु बिदतावैं। देहिं उपाइनि दरशन पावैं ॥ ३० ॥
सिक्खनि पर होवनि उपकारी। चितवति मक्खण रिदै मझारी।
गुर घर सनमुख गमन्यो जाइ। सकल उपाइन[1] संग लवाइ[2] ॥ ३१ ॥
सिख्य बहुत अरु अए मसंद। गमनति भयो नरनि कहु ब्रिंद।
आपस महिं बोलति बहु रीती। 'किस ढिग जाइ अबहि जुति प्रीती ॥ ३२ ॥
एक बार तो सभि के पास। जाइ जाइ कीनसि अरदास।
अबि इन लीनि उपाइन भारी। किस को अरपहि पूजि अगारी' ॥ ३३ ॥
निज निज दिशि सुधि तुरति पठाई। 'त्यारी करि बैठहु अगुवाई'।
सभि के उर प्रतीछना जागी। हम ढिग आवहिगो अनुरागी[3] ॥ ३४ ॥
धीरमल्य मसनंद डसाइ। बड उपाधनु[4] धरे मंगवाइ।
दास चमर लै के भा ठांढो। सरब भांति जिस ऐश्वरज बाढो ॥ ३५ ॥
निज निज शकति अपर सोढीन। बनि बनि बैठहि सौज नवीन।
करहिं बिछावनि केर डसावनि। निज पाछै उपधान[5] धरावनि ॥ ३६ ॥
अग्र मेवड़े हुइ सवधाने। द्वार दिशा द्रिशटी बंधाने।
सभि गादी के ढिग नर जेई। करैं प्रतीखन बैठे तेई ॥ ३७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर तेग बहादर बिदत होवनि' प्रसंग बरननं नाम अशटमो अंसु ॥ ८ ॥

---

1. भेंट। 2. लेकर। 3. सबके मन में यही आशा थी, कि मक्खणशाह हमारे पास प्रेम सहित आएगा। 4. बड़े तकीए। 5. तकिया।

अंशु ९

श्री गुर तेग बहादर प्रसंग

दोहरा

सागर प्रेम निमगन ह्वै मक्खण रिदे अनंद।
भेव न किमू जनावई संग नरनि के ब्रिंद ॥ १ ॥

चौपई

जबि गुर घर के सनमुख आवा। दास हुतो माता प्रति गावा[1]।
'सिख इह पूरन शरधावान। आयो चलि कै दूर महान ॥ २ ॥
सिदक आपके सुत पर होवा। पूरब आइ पता कुछ जोवा।
अबि बिदतावनि चाहति गुर को। संसै दूर कियो इन उर को ॥ ३ ॥
परसों हम बैठे गुर पास। इस सिख की गति करी प्रकाश।
श्री गुर ने तबि बाक बखाना। हम को जो बिदताइ महाना ॥ ४ ॥
तिह द्रगाहि मैं हुइ मुख कारो। उग्र स्राप इस भांति उचारो।
इस बच की सुधि सिख को नांही। यांते कहौं जाइ मैं पाही[2] ॥ ५ ॥
बिगरहि काज प्रथम सुधि पाइ। तौ सुजान करि लेति उपाइ।
अपनि भले को आवति धाई। अस नहिं बनहि बुरो हुइ जाई ॥ ६ ॥
इस पर करौं सु इह उपकार। सुनहि जि सुधि, करि लेहि बिचार।
अस मन ठानि समुख तिस गइउ। कर्यो इकांत कहति सभि भइउ ॥ ७ ॥
'जे तूं दरश करन ही जाइं। नमो करहु तूशनि करि आइ।
जे चाहति हैं गुरू बिदतावौं। सगरी संगति इते बुलावौं ॥ ८ ॥
जसु पावन पावनि की कांखा। गुर बिदतावहिं सभि महिं भाखा।
इम गुर बच बिदतावहि जोइ। मुख दरगाहि सु कारो होइ[3] ॥ ९ ॥
निज मुख ते परसों अस भाख्यो। अबि तूं प्रगट करनि अभिलाख्यो।
इस बच को करि लेहु उपाइ। नतु करि बिनै लेहु बखशाइ ॥ १० ॥

1. माता को बताया। 2. पास। 3. परलोक में मुंह काला होगा।

सुनि कै मक्खन रिदै बिचारा। होइ सफल जो गुरु उचारा।
प्रगट कर्यो चाहति मैं इन को। दरसे भला होइ जिनि किनि को ॥ ११ ॥
इह बहुतनि को अत कल्याना। इक अनिशट[1] मुझ को इम जाना।
यांते मैं होवौं उपकारी। सफल भि करौं जु गुरु उचारी ॥ १२ ॥
पूरब गयो नानकी तीर। बरजि संग ते सगरी भीर।
कुछ धनु धरि कै मसतक टेका। बैठी माता सहित बिबेका ॥ १३ ॥
सादर सिख को बाक सुनाए। बहुर उठ्यो मक्खण तिस थाएं।
सतिगुर को लंगर जिस घर मैं। तहि ते लै कारस[2] निज कर मैं ॥ १४ ॥
अपने मुख पर सरब लगाई। गयो गुरु ढिग शरध बधाई।
द्वारे अंदर जबि प्रविशायो। पातशाह नवमे दरसायो[3] ॥ १५ ॥
पंचाम्रित जिह कर्यो अगारे। अपर उपाइन लीनि संगारे।
जाइ नमहि कीनसि गुर तांई। धर्यो तिहावल करि अगवाई ॥ १६ ॥
पुन दीनार[4] भेट धरि दीनसि। पोशिश रुचिर दिखावनि कीनसि।
बिनै सहित गुर सो कहि बानी। 'हे धीरन महिं धीर महानी ! ॥ १७ ॥
अबि करना करि पोशिश पाइ। बैठो सभा होहु प्रगटाइ।
सिखयनि को कल्यान बिचारहु। सागर संसै पार उतारहु ॥ १८ ॥
सगरी संगति भूली फिरै। नहीं किसु पर निशचा करै।
महिमा तुम नहिं सकहिं पछानि। छपे आप हो हे गुनखानि ॥ १९ ॥
सभि संगति को दरशन दीजहि। अपनो आप जनावनि कीजहि'।
मक्खण दिखि मुख गुरु उचर्यो। 'प्रगट करनि ते नहिं तू टर्यो ॥ २० ॥
कर्यो अकरन अपनि मुख कारा। लोकनि लजा सकल निवारा।
गुरु बाक को भारी भार। मुख कारो करि लीनि उतार ॥ २१ ॥
गुरुता पोट उठावनि पीन। सो हमरे महि अरपनि कीनि।
श्री नानक की गादी इहै। चारहुं दिशा नमति[5] जिस अहै ॥ २२ ॥
सिंध मेखला अविनी जिती। सतिगुर महिमा जानहि तिती।
मेरु आदिक जीतिक पहारा। जहां कहां सिक्खी बिसथारा ॥ २३ ॥
सागर रिखै दीप हैं जेई। सतिगुरु घर के पूजक तेई।
जितिक जीव नवखंडनि मांही। अरपहिं भेट गुरु पग पाही ॥ २४ ॥
होनि सहाइक सभिहिनि केर। यांते पोट पीन[6] तूं हेरि।
करहिं असूया[7] सोढी सारे। पिखहिं परसपर ह्वै रिसवारे ॥ २५ ॥

---

1. दु:ख। 2. कालिमा। 3. नवें गुरु का दर्शन किया। 4. रुपये। 5. झुकते है। 6. भारी। 7. ईर्ष्या।

निज निज पूजा चहि करिवाई। करहिं आपनी अधिक बडाई।
ठानहिं द्वैश अनेक प्रकारा। शसत्रादिक लौ करहि प्रहारा ॥ २६ ॥
गुर के बंस बिखै जनमाए। आपस महि मतसर तपताए।
कर्यो खुवावनि सबिख – अहारा[1]। यांते गुरता पोट उदारा ॥ २७ ॥
तुरक बिरोधी गुरु घर– केरे। अपनो जोर जनाइं बडेरे।
करामात चाहति हैं देखा। को दिखरावहि बुधि बिशेखा ॥ २८ ॥
नट की भांति आप दिखरावहिं। हरि दरगहि क्या मुख दिखरावहिं।
नहिं संतन मैं ऐसी बाति। जिन के सदा बसति चित शांति ॥ २९ ॥
गुरता पोट इसी ते भारी। बड समरथ जुति सकिय सहारी।
प्रगटहि तौ तुझ को क्या होइ। पूर मनोरथ भयो सु जोइ ॥ ३० ॥
दरशन करे उपाइन दीनि। सिखी कौ निरबाहिन कीनि।
उर अपनो कल्यान बिचार। गमनहुं अपने देश मझार ॥ ३१ ॥
सुणि मक्खण है हाथनि बंदि। सहित नंम्रिता बिनै बिलंद।
संगति सगरी हित उपकारी। मधुर सलच्छन गिरा उचारी ॥ ३२ ॥
'श्री हरि क्रिशन बाक को धरिकै। इस थल ही पर निशचा करि कै।
आवहिं सिक्ख उपाइन देहिं। रहति रिदै महिं महद संदेहि ॥ ३३ ॥
करहिं कामना तिन ते कोई। रिदा शुद्ध जे लहै न सोई।
तरक करहिं अपने मन मांही। शरधा सुखद धरहि तबि नांही ॥ ३४ ॥
महिमा सिक्खी की हुइ हौरी। सभि सिरमौर बडी बड गौरी[2]।
इस को आप बधावनि करीए। यांते ब्रिदतनि के अनुसरीए[3] ॥ ३५ ॥
जे करि कहहु रहैं इस रीति। करहिं कामना पूरन चीत।
तहिं भी सिखी हित निरबाह। बांछा पूरन करहु उमाह ॥ ३६ ॥
इह भी सिख्यनि की अभिलाखा। सभिनि मनोरथ यामैं राखा।
अपर कामना पूरहु जैसे। हरखति करहु सिख्य गन तैसे ॥ ३७ ॥
श्री हरि क्रिशन बाक सति करीअहि। बैठि सभा महि दरस दिखरीअहि।
बिदतहु जगत बिखै इस भांति। जथा चंद्रमा पूरन राती[4] ॥ ३८ ॥
सिक्खयनि को करिबे कल्यान। चहुंदिशि महिं जित कित ब्रित जान।
अजरजरन गन दुशटनि मांही। नहीं जनावनि शकति तहांही ॥ ३९ ॥
हरख शोक मान र[5] अपमान। सुख दुख महिं थित ब्रिती समान।
इत्यादिक जो गरवौ भार। तुम उर पर जिम फूल कि हार ॥ ४० ॥

1. विष मिला भोजन। 2. भारी। 3. अनुकूल। 4. पूर्णमाशी की रात को। 5. और।

इसी भार को संकट पाइ। शत्रु तुमारनि सिर दबि जाइ।
पोशिश पहिरहु आप नवीन। बैठहु देहु दरश दुख हीन ॥ ४१ ॥
इस प्रकार बहु बिनै भनंता। चहि सभि सिख्यनि गुरु दिखंता।
श्री गुरु तेग बहादर चंद। सदा मगन जो ब्रह्मानंद ॥ ४२ ॥
संगति सकल सहति बड चाह। जिस महिं मुख्य सु मक्खणशाह।
पूरन करनी ही बनि आइ। इम तिस छिन अपने उर ल्याइ ॥ ४३ ॥
मुसकावति बोले गुन खानी। 'हे मक्खण! मानी तुम बानी।
दूर देश ते शरधा धरिकै। आयो मारग श्रमता[1] करि कै ॥ ४४ ॥
बिनै नंम्रिता सहत उपाइन। आनति भा सतिगुर के आइन[2]।
कह्यो जि तेरो अबि नहिं करैं। अपने बिखै खोटता[3] धरैं ॥ ४५ ॥
मैं सिक्ख मंद चाह जो मंद। नहिं पूरी सतिगुर सुखकंद।
अस मन जानि बहुर पछुतावैं। चिंता बसि कलेश को पावैं ॥ ४६ ॥
निज भगतनि सुख देवनि कारनि। संसै अपदा महद बिदारनि।
श्री प्रभु आप धरहि अवतारा। निज दासनि के मन अनुसारा ॥ ४७ ॥
महद करम को करहि बनाइ। हरि ते हरि जन बांछा पाइ।
तिम सतिगुर के घर महिं अहै। पूरन करहिं सिक्ख जो चहै ॥ ४८ ॥
प्रेम डोर ते बंधनि होइ। किरत करहिं जिम बांछहि सोइ'।
इम गुरु तेग बहादर मानी। अति अनंदता मक्खण ठानी ॥ ४९ ॥
गुन आग्या लै मक्खण शाहु। मुख धोयो ले जल कर मांहु।
गुरु गिरा अरु इच्छा जी की। पूरनि कीनि. मानि मन नीकी ॥ ५० ॥
निज हाथनि महि बसत्र जु धारे। पहिरावनि हित उठ्यो सुधारे।
जामा सूखम चीर जु चारु। गर महिं पायो गुरु उदार ॥ ५१ ॥
सुंदर दीरघ बर दसतार। सिर पर बंधनि कीनि सुधारि।
ऊपर महद चादरा लीनि। सिक्ख कामना पूरन कीनि ॥ ५२ ॥
वहिर सथंडल[4] हुतो बिलंद। तहां आइ बैठे सुखकंद।
तिह छिन मक्खण चढ्यो अटारी। सभि संगति सों ऊच उचारी ॥ ५३ ॥
'भुलीए संगति! सुनहु सु कान। सतिगुर लद्धा[5] महद महान[6]।
संसै भरम रिदै को तजि कै। जनम सुधारहु श्री गुर भजि कै ॥ ५४ ॥
मन उतसाहु बध्यो जिस केरे। रह्यो न गयो गह्यो तिस बेरे।
उमगि उमगि कै अधिक पुकारे। हुइ अनंद अति, सिक्ख हकारे ॥ ५५ ॥

1. थक कर। 2. घर। 3. कमी। 4. बड़ा। 5. मिल गया है। 6. महान्।

चहुं दिशि महिं मुख करि करि कहैं। 'भूली संगति गुरु! इह अहै'।
जहि लौ सुन्यो बाक तिस केरा। आवहिं धावहिं बिसम[1] घनेरा ॥ ५६ ॥
पसरी बात[2] सरब ही ग्रामू। सुनि सुनि सिख्य आइ तजि कामू।
उतरि आप पुन सतिगुरु पास। खरो विहावल किय अरदास ॥ ५७ ॥
आइ सभा जबि पूरन होई। दरसहि जित कित महिं सभि कोई।
सभि महि मक्खणशाह सुनाइ। 'श्री हरि क्रिशन बाक जो गाइ ॥ ५८ ॥
बाबा अहै बकाले मांहि। भयो साच सो है गुर याहि।
पता जहाज बतावनि कीनि। अंतर की गति सभि लखि लीनि ॥ ५९ ॥
श्री हरिक्रिशन पितामहि एहु। बाबा कहनि पता इन देहु।
इत उत भरमहु नहिं तजि गुर को। पूरहु दरस मनोरथ उर को ॥ ६० ॥
आवनि सफलो भयो तुमारा। पूजहु सतिगुर पैर उदारा'।
जिस प्रकार परखे सभि थांई। मक्खण सभि के सुनति सुनाई ॥ ६१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर तेग बहादर' प्रसंग बरननं नाम नवमो अंशु ॥ ९ ॥

1. बहुत हैरानी। 2. बात फैल गई।

अंशु १०

सभि सोढी ईरखा करन

दोहरा

संगति सभि इक बार ही दौरि दौरि नर आइ ।
दीरघ दरशन सतिगुरु दै हैं दरस दिखाइ ॥ १ ॥

चौपई

बसत्र बहुत जिन मोल उदारे । धरी अशरफी[1] गुरु अगारे ।
देखि देखि सिख चौंप करंते । आनि उपाइन निज अरपंते ॥ २ ॥
पंचाम्रित को ल्याइ कराइ । को अरपति है बसत्र सुहाइ ।
कितिक रजतपण[2] ल्याइ चढावहिं । पशमंबर[3] को ले अरपावहिं ॥ ३ ॥
भई भीर बहु नर की आइ । बंदन करहिं बदन दरसाइ ।
'जै सतिगुरु जै सतिगुर केरी । सभि ते महिमा अधिक बडेरी ॥ ४ ॥
श्री नानक की जोति उदारा । अबि तिस के तुम अहो अधारा ।
सिख्यनि सकल कामना जोई । तिन के निरबाहक तुम होई ॥ ५ ॥
दुरे रहे नहिं दरस दिखावा । किम छपि सकहि भानु उदतावा ।
करहु उधारनि सिख्यनि केरनि । लहैं अनंद दरस तुम हेरनि' ॥ ६ ॥
इम कहि कहि बहु भेट चढ़ावहिं । बिनै कामना सहित सुनावहिं ।
कोइक सिक्ख कहै तिन मांही । जिन के रिदै अशरधा नांही ॥ ७ ॥
'करम अनिंदत सभि इन केरे । महां भाग संतोख घनेरे ।
सम दम शांती मधुर बचना । निज सरूप महिं सदा प्रसंना ॥ ८ ॥
सहिनशील, मन राग न द्वैश । सदा जितिंद्रै[4], छुह न कलेश ।
गुरता उचित जितिक वडिआई । इन महिं सभि पईअति भलिआई ॥ ९ ॥
इक सुभाव इन धारनि मौन । यांते गयो समीप न कौन ।
भेद न पाइ सक्यो इन कोइ । उदासीन सभि ते नित जोइ ॥ १० ॥
इन को पिता बली भुज भारी । जिन समान नहिं अपर अकारी ।
सुंदर शुभ सरबंग बिलंद । महिद जुद्ध जैता रिपु ब्रिंद ॥ ११ ॥

---

1. मुहर (सोने का एक सिक्का) । 2. चाँदी के रुपये । 3. रेशम के कपड़े । 4. 4. इन्द्रियों पर विजयी ।

श्री गुर हरिगुविंद सुख कंद । तिन के सुत गुन धरहिं मनिंद ।
दीरघ दरशन बदन सुहावा । दीह समश्रू[1] सरल बनावा ॥ १२ ॥
छपे रहे नहिं आप जनायो । भेद नहीं किनहूं सिख पायो ।
सिख शरधा हित पता बतावा । सागर बिखै जहाज लंघावा[2] ॥ १३ ॥
यांते जाहर भए जहान[3] । करहिं अनिक सिक्खनि कल्यान ।
इस प्रकार संगति दरसंती । अनिक भांति बसत्रनि अरपंती ॥ १४ ॥
चहुंदिशि भीर भई बहु आइ । बंदहिं पाइनि सीस टिकाइ ।
मक्खण दोइ चमर जो ल्यावा । दुहिदिशि महिं शुभ रीति झुलावा ॥ १५ ॥
सिक्खयनि साथ बारतालाप । सतिगुरु करति दिपति परताप ।
सभि सोढी के नर तहिं आए । देखि देखि मन अनख[4] बढाए ॥ १६ ॥
ज्यों ज्यों बहुत उपाइन आवैं । संगति सगरी सतुति सुनावैं ।
दरब अगारी ब्रिंद दिसावैं । त्यों त्यों मतसर अधिक उपावैं ॥ १७ ॥
इस को मानति हुतो न कोइ । गुरुता उचित न कैसे सोइ ।
मिलहि न बोलंहि काहूं संग । सम उनमत, नहीं सुधि अंग ॥ १८ ॥
सभिनि छोरि इह गुरु बनावा । जिस को लख्यो न जाइ सुभावा ।
इह मक्खण ने दंभ बनायो । सभि सिख्यनि को ल्याइ बुलायो ॥ १९ ॥
इस को कहति हुते मतिवाना[5] । देख्यो यांते महत अजाना ।
अपर सभिनि को कीनि अनादर । हुते सदीव जु उचितैं आदर ॥ २० ॥
धीर मल्ल ते आदि महाना । जिस को मानहि सकल जहाना ।
तिनके होवति इस ढिग आइ । धरहि उपाइन पूजहि पाइ ॥ २१ ॥
कथं[6] अनीत सहारहि सोइ । इम तौ, चहै जु गुर से होइ ।
अस कहि निंदक बहुत रिसाए । जाइ सभिनि सोढीनि जनाए ॥ २२ ॥
'बने बनाइ सभि तुम रहो । अबि ते आगे भेट न चहो ।
नहिं को आवै पास तुमारे । दरब न अरपहि कबहि अगारे ॥ २३ ॥
श्री गुर हरि गोविंद को नंद । सभि ने लघु, पद चहै बिलंद ।
तिसते बडे चार सुत आन । तिन को बंस जु गुनी महान ॥ २४ ॥
सभिनि उलंघति बैठ्यो सोइ । तेग बहादर मसत जु होइ ।
अंतर गति मक्खण मिलि गयो । महां पखंड उठावनि कियो ॥ २५ ॥
कै तो मिलि कै करहु म्रिजादा । नांहि त भयो सभिनि ते ज्यादा' ।
सुनति सभिनि सोढीनि बिचारा । 'कबि न उठावहिं गुरता भारा' ॥ २६ ॥

---

1. भारी और लम्बी दाढ़ी । 2. जहाज़ को पार किया । 3. संसार में प्रकट किए
4. गुस्सा । 5. बुद्धिमान । 6. कैसे ।

लेनि देनि की अकल न कोई। बोलिबि की सामरथ न होई।
सिक्खयनि को दैवो उपदेश। इत्यादिक को लखहि न लेश ॥ २७ ॥
धरे मोन घर बैठ्यो रहै। जग विवहार कथं[1] सो लहै।
इक मक्खन की दिशि को देखि। संगति दीनसि भेट अशेख ॥ २८ ॥
जबि इह चल्यो जाइ निज देश। देय उपाइन को नहिं लेश।
सभि हटि जै हैं, जाइ न कोई। जानि जाइं जैसो इह होई ॥ २९ ॥
अबि मक्खण के कहिबे करि कै। परखे बिन शरधा उर धरिकै।
दई उपाइन, मान्यो इही। एक बार ही पुन ह्वै नहीं ॥ ३० ॥
इक तो इम कहि तूशनि ठानी। अति क्रोधी इक तिनहुं बखानी।
'बे मिरजाद बात नहि आछे। भयो अग्रणी[2] सभि करि पाछे ॥ ३१ ॥
किस भ्राता को भै नहि मान्यों। सभि धन आप लए गरबान्यों।
अधिक दरब कबि सिख को ल्यावै। जो अजान इक निकटि चढ़ावै ॥ ३२ ॥
सभि भ्रातनि के ढिग सो देय। भाग समान आपनो लेय।
श्री हरिक्रिशन बाक के कहे। गुरु बकाले महिं सिख चहें ॥ ३३ ॥
यांते अहैं ग्राम महिं जेई। लेनि उचित भेटनि सभि तेई।
गुर इह, नाम न किस को लीना। सभिहिनि को अधिकार सु दीना ॥ ३४ ॥
पूरब आए सिख समुदाइ। ल्याए अलप उपाइन भाइ।
किस ने कोइ किसी ने कोई। दरस परस करि गमने सोई ॥ ३५ ॥
इह सिख ल्यायो दरब बिसाला। दैबो चहिय सभिनि इक साला[3]।
इस ढिग कथं रहनि धन दै हैं। निरबल ते सभि ही हरि लै हैं'[4] ॥ ३६ ॥
अधिक असूयक इमी प्रकारा। करति परसपर बाक उचारा।
केतिक मतसर बहु तपताए। धीरमल्ल की शरन सिधाए ॥ ३७ ॥
'जिसके संग नरन को ब्रिद। चहै सु करै समाज ब्रिलंद।
अधिक दरब एकल ढिग कैसे। रहनि देहिं असमंजस ऐसे ॥ ३८ ॥
जेकरि धीरमल्ल ढिग होइ। इह राखनि को समरथ सोइ।
तिनको ऐश्वरजवंत बिसाला। सदा सु मानहिं मानव जाला ॥ ३९ ॥
भ्रात भतीजा गुरु इस केरे। आदि ग्रिंथ साहिब शुभ डेरे।
इम मसलत करि पहुंचे पास। सोढी कितिक मसंद सु दास ॥ ४० ॥
जाइ सरब बिरतंत सुनायो। 'क्या कीनसि जो मक्खण आयो।
साच कि झूठ नरनि के संग। कहि भरमाए कीनि कुढंग ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादिश रासे 'सभि सोढी ईरखा करन' प्रसंग बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

1. कैसे। 2. अगुआ। 3. एक सार। 4. कमज़ोर से सभी छीन लेते हैं।

अंशु ११

धीर मल्ल मन विकार प्रसंग

दोहरा

धीरमल्य के निकटि जबि सभिहिनि के नर जाइ।
चितातुर मतसर महत चितवति अनिक उपाइ ।। १ ।।

चौपई

इक मसंद तबि जोरे हाथ। भाखति धीरमल्ल के साथ।
तिस के घर महिं हुतो उदारा। जिस बसि लेन देनि बिवहारा ।। २ ।।
हुतो पुशट सो धनी बडेरा। मानहिं जिस को कह्यो घनेरा।
सभि महिं जिसके बाक प्रमान। धीरमल्य अनुसारी जानि ।। ३ ।।
मीहा नाम तिसी को अहै। गुर सों द्रोह् करति बहु रहै।
लोभी कुटिल कठोर महाना। दुशट मूढ शुभ पंथ अजाना ।। ४ ।।
'सुनहुं गुरु ! तुम मेरी बात। महिंमा रावरि जाइ बिलाति।
निकटि आप के तिनहिं पुजाबो। नहिं किस ते लघु भी डरपायो ।। ५ ।।
अबि के सिक्ख मानि हैं आपी[1]। आयो इतो न दरब कदापी।
एक ग्राम सो निकस्यो बाहर। सभि महिं अजहुं भयो नहिं ज़ाहर ।। ६ ।।
कितिक हज़ारनि को धन आवा। इसी प्रकार जि होहि चढावा।
सैंन सकेलहि[2] ब्रिद सुखारे। ऐश्वरज बधहि, घटहिं तुम सारे ।। ७ ।।
श्री गुर हरि गोबिंद हरिराइ। तिन ते अधिक कि सम बन जाइ।
कछू उपाइ न चलहि तुमारो। छाइ जाइ सभि पर बल भारो ।। ८ ।।
अबि तो लघु है बनहि उपाइ। जिम चाहहु तिम करहु बनाइ।
नहीं दास, भट, चाकर नांही। कै गहि लेहु रखहु निज पाही ।। ९ ।।
कै दिहु त्रास न निकसै बाहर। किधौं संघारहु होइ न ज़ाहर।
कै अबि दरब छीन लिहु तांही। आगे को दिहु भै उपजाही ।। १० ।।
किधौं आपने दास पठावहु। दरब जितो तिह ठां ठहिरावहु।
सभि लोकनि को बरजहु भीर। आई जितिक उपाइन तीर ।। ११ ।

1 आपको। 2. सेना इकट्ठी करते हैं।

सभि संगति जबि डेरनि जावैं। सगरी वसतु उठाइ सु ल्यावैं।
दरब आज को जे तिह पास। रहै त तुम को उपजहि त्रास ॥ १२ ॥
बहिर उपाइन घर ते जावत। लेनि उपाइ चितहु तुम तावत।
बहुर न तुमरे कर सो आवैं। ले करि कितहूं गुपत छपावैं ॥ १३ ॥
चाकर राखि होहि पुन गाढो। निकसहि नहीं सु किम, जे काढो[1]।
जिम लघु जर[2] तरु की सु उखारहिं। बडो होइगो कौन उपारहि ॥ १४ ॥
निज हित बात करहु अबि होइ। बीते बनहि उपाइ न कोइ।
इम सुनि धीर मल्ल ने कह्यो। 'तिस के तौ धन लोभ न लह्यो ॥ १५ ॥
जे तिस पास अचानक आवा। सो त्यागनि नहिं मो कहु भावा।
इतो दरब किम दैवें जानि। जिस धन के नहि कछू समान ॥ १६ ॥
अबि तौ गुर हित जितिक उपाइन। उचित आवबो हमरे आइन[3]।
सिख संगति जे जानति भेव[4]। पूजहिं मोहि जानि गुरदेव ॥ १७ ॥
श्री हरिराइ अनुज मैं अहौं। तिनहुं अछत भी नित बहु लहौं।
अबि तिन ते फिरि कै गुरिआई। सरब भांति मुझ घर बडिआई ॥ १८ ॥
मक्खण सिक्ख बिदेशी जोइ। इस महिमा को लखै न सोइ।
निज मति ते करि गुरु बनावा। किम तिह होनि देहिं हम दावा ॥ १९ ॥
इक परंतु मुझ चिंता होइ। मक्खण साथ मनुज बहु जोइ।
नहिं विरोध हमरे संग करै। तौ आछी बिधि रिदै बिचरैं ॥ २० ॥
सो तो गुर को सिक्ख कहावै। किम हम सों उर द्रोह बधावै।
गुर हित भेट हुती सो दीनसि। अपनि कामना पूरन कीनसि ॥ २१ ॥
हम भ्राता किस बिधि सुरचांइ[5]। बीच कहनि तिह नहिं बनि आइ[6]।
यांते रुचहि मोहि मन मांही। दरब छीन करि आनहिं पाही' ॥ २२ ॥
इम सुनि पुनहि मसंद बखाना। 'कारज करनि अलप भी जाना।
तउ उतसाहु अधिक को करै। जिसते सभि सुखैंन ही सरै ॥ २३ ॥
जे अखेर म्रिग के हुइ त्यारे। करहि समाज शेर को भारे[7]।
सो बुधिवान गिन्यो नर जाइ। निज ऐश्वरज को लेहि बधाइ ॥ २४ ॥
उद्दम करनि तोहि बनि आवैं। जिसते गुरता उत्तम पावैं।
मारनि उचित तिसै को मारि। बंधन उचित कैद महिं डारि ॥ २५ ॥
तुव प्रताप तबि बधहि बिलंद। जथा दूज ते पूरन चंद।
जो कारज बुधि ते हुइ आवैं। तिस को नर तिस ही बिधि पावैं ॥ २६ ॥

---

1. निकालो। 2. जड़। 3. घर। 4. भेद, रहस्य। 5. 6. हम भाई हैं, बीच में मक्खण को कुछ कहना अच्छा नहीं लगता। 7. यदि हिरण का शिकार करना हो तो शेर के शिकार की त्यारी करनी चाहिए।

जहिं बल ते कारज सर जाइ। तहां करहि नहिं देर लगाइ।
बल अरु बुधि दोनहुं तुम मांही। देश काल लखि ह्वै उतसाही॥ २७॥
अबि मैं कहौं करहु सो बात। पावहु दरब आप जिस भांति।
पूरन करहु आपनी चाहू। शसत्र बंधावहु जे भट पाहू॥ २८॥
राखहु तहां जसूस लगाइ। जबि मक्खण तहिं ते उठि जाइ।
ततछिन जाहिं तहाँ भट सारे। लेहिं अचानक धन वसु[1] भारे॥ २९॥
खरभराट[2] परि है तिन मांही। तुपक[3] ताक हति हैं तबि तांही।
नित की कलहा देहु मिटाइ। बहुर न बैठहि आप पुजाइ॥ ३०॥
इक मरि गए सरब भै पावैं। पुन संगति तुमरे ढिग आवैं।
चहुंदिशि की पूजा पुन पाइ। लेहु बाहनी ब्रिंद बनाइ॥ ३१॥
शत, सहंस्रै,[4] अयुति, सु लच्छ। आइ दरब[5], नहिं रहि प्रतिपच्छ[6]।
करहु खरीद असत्र समुदाइ। चढहु सैन सैन जुति आप सुहाइ॥ ३२॥
रूचिर मतंग करहु असवारी। मेघ अडंबर[7] पाइ शिंगारी।
छित महिं तुमरो छाइ प्रताप। डरहिं भ्रात ढिग आवहिं आप॥ ३३॥
तुरकेशुर सों संधि करीजै। बहु मोली वसतू दे दीजै।
तिस अनुसार होइ करि नीत। अपर करहु जिम भावति चीत॥ ३४॥
निशकंटक[8] तुम ह्वै कर फेरी। भोगहु माया सौज घनेरी।
श्री नानक परताप बिसाला। चहुं दिशि देशनि सिक्खी चाला॥ ३५॥
अधिक अजाइब वसतू ल्यावैं। सकल आनि तुम कहु अरपावैं।
भरहिं खजाने माया साथ। नरनि हज़ारनि बनि हैं नाथ॥ ३६॥
इसको मारनि ही बनि आवै। नांहि त इह कंटक बधि जावै।
इम मसंद नै मसलत दीनसि। धीर मल्ल ने मानि सु लीनसि॥ ३७॥
तूशनि ठानि बिचारनि लागा। क्या करतव्य मोहि हित पागा[9]।
मारनि मंत्र कहति जो एही। मुझ को नीको लगहि न केही॥ ३८॥
पिता भ्रात[10] हमरो सो अहै। तेग बहादर आख्य कहैं।
दोश नहीं कुछ तिस ने कीना। मसत सुभाव बिहार बिहीना॥ ३९॥
नहीं परसपर बोलनि काहू। सदा रहै बैठ्यो घर मांहू।
'भो मसंद! तिस हतने केरा। नहिं उतसाह होति है मेरा॥ ४०॥
अपर बात तैं जथा बखानी। सो तो करनी बनहि महानी।
सुभट सनद्ध बद्ध[11] कहु करि कै। जाहु तहां तू धीरज करि कै॥ ४१॥

---

1. वस्तु। 2. खलबली। 3. बंदूक। 4. हज़ार। 5. धन। 6. उलट पक्ष वाला (गुर तेग बहादुर की ओर संकेत है)। 7. बड़ा चंदोआ। 8. निर्भय। 9. लगना। 10. चाचा। 11. शस्त्र धारण करके।

सरब उपाइन दरब समेता। बिना बिलम हरि लिहु है जेता।
तुम को बरजनिहार न कोई। त्रिभै जाइ करि आनहुं सोई ॥ ४२ ॥
जबि मक्खन गमनहि निज डेरे। नरनि भीर होवहि नहिं नेरे।
दिन मध्यान[1] काल जबि आवै। हित अहार के सकल सिधावैं ॥ ४३ ॥
तबि लगि तूशनि धारे रहो। भेद नरनि महि किम नहिं कहो।
सुनि मसंद शीहां रिस करिकै। धीरमल्ल सों कहति उचरिकै ॥ ४४ ॥
'गुरु बनावानि जो इस काल। हाथ मसंदनि के सु बिसाल।
जिस को गादी देहिं बिठाइ। सिख्यनि ते तिस लेहिं पुजाइ ॥ ४५ ॥
संगति सभि मसंद अनुसारी। चहै लिजावै तिसै अगारी।
जिसी देश मैं है जु मसंद। तिस पशचात सु हैं नर ब्रिंद ॥ ४६ ॥
को मसंद तुम ते फिरि जावै। मिलहि जाइ कै तांहि पुजावै[2]।
अनिक उपद्रव जीवति करै। निशकंटक हुइ हैं जे मरै ॥ ४७ ॥
जे तुमरी सालाहि न ऐसे। हम तौ नहीं मिटहिंगे कैसे।
जिस महिं संसा सदा निहरीए। बिना बिचारे तिस परहरीए ॥ ४८ ॥
नाहि त पशचाताप करंता। घात पाइ करि दाव चुकंता[3]।
तुझ शरीक इह जबि अधिकावै। पुन कैसे करि हाथ न आवै ॥ ४९ ॥
कहे तुमारे ते इस भांति। हम नहिं चूकहिंगे लखि घात।
नित को झगरा देहिं चुकाइ। सभि को महां त्रास उपजाइ ॥ ५० ॥
इस बिधि करे बिना, गुरिआई। होहि नहिं तुम घर ठहिराई।
इह बड कंटक दै हैं टारि। अपर सरब हैं तुम अनुसारि' ॥ ५१ ॥
दुशट मसंद मंत्र इम कर्यो। लोभ दरब को बहु उर धर्यो।
धीरमल्ल को कह्यो न माना। करति भयो आपहि जिम जाना ॥ ५२ ॥
'तुम गुर गादी पर थित रहो। इस बिधि के भेव न कुछ लहो।
नीति जानिबो मुशकल होइ। छल बल धरे लखति बिधि सोइ ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल्ल मन विकार' प्रसंग बरननं नाम इकादशमो अंशु ॥ ११ ॥

---

1. दोपहर। 2. पूजा करवाए। 3. दान चूक गया।

अंशु १२

धीरमल्ल को बिरोध प्रसंग

दोहरा

दुशट मसंद हकारि करि दुर ब्रिति चितव्यो पाप ।
गुर ढिग लाइ जसूस[1] को सथित त्यार ह्वै आप ।। १ ।।

चौपई

मक्खण शाहि समीप गुरु के । रिदै कामना सकल पुरु के ।
कहति भयो 'मुझ कियो निहाल । द्वै लोकनि दिय अनंद बिसाल' ।। २ ।।
चरन सपरशति कोमल हाथ । सहज बात करि प्रीती साथ ।
संगति दियो दरस थित आप । दुशटनि दाप खापि परताप[2] ।। ३ ।।
नहिं अबि काल छपनि कहु रावरि । छत्र तुमारे सीस फिरावरि[3] ।
सभि सिख्यनि के वाली[4] होवहु । बनहुं सहाइ दास दुख खोवहु ।। ४ ।।
बिना आसरे संगति सारी । इत उत खोजति गुर कहु हारी ।
धीर दिलासा सिख्यनि देहु । दरस करावहु भेटैं लेहु ।। ५ ।।
उपदेशहु लखि करि अधिकारी । इम महिंमा हुइ जग बिसतारी ।
इत्यादिक करि करि अरदास । बैठारे दरसति गन दास ।। ६ ।।
इस को प्रेम हेरि गुर पूरा । करति भए जिम कहि बच रूरा ।
डेढ जाम जबि दिवस चढ्यो है । गुर अरू संगति अनंद बढ्यो है ।। ७ ।।
मक्खण उठ्यो बंदना कीनसि । बसतु सकल को सौंप सु दीनसि ।
हरखति ह्वै गमन्यो निज डेरे । करति बारतालाप धनेरे ।। ८ ।।
निज साथनि सों सकल बताई । जथा कामना अपनी पाई ।
गुर करुना ते जसु मैं पायो । मोहि बहाने जग प्रगटायो ।। ९ ।।
आवनि दूर सफल भा मेरा । सहि संगति गुर दरशन हेरा ।
खुशी अधिक सभि बिधि की होई । निज समान मैं लखौं न कोई ।। १० ।।

1. गुप्तचर । 2. दुष्टों के प्रताप तथा अहंकार का नाश करो । 3. फिर रहा है ।
4. स्वामी ।

कहति परसपर डेरे आयो। भोजन बैठि जथा सुख पायो।
निज सिहजा पर पौढि रह्यो है। किंचत निंद्रा अनंद लह्यो है ॥ ११ ॥
सने सने पुन संगति सारी। ले ले खुशी सरूप निहारी।
जाति भए निज डेरनि मांहि। सतिगुर सतुति बदन ते प्राहि[1] ॥ १२ ॥
गए जथा सुख हरखति सारे। पूरन भए मनोरथ भारे।
जहिं कहिं गुर बिदतनि की बात। पसरति भई महद ग्रविदात[2] ॥ १३ ॥
घटी[3] चतर लौ टिक गुर रहे। म्रिदुल सेज[4] पर निंद्रा लहे।
बहुर उठे श्री गुर भगवान। कह्यो 'तुरंगनि को अबि आनि' ॥ १४ ॥
सुनति दास ने रुचिर बनाई। सरब अंग ते किय उजलाई।
रुचिर ज़ीन को पावन कीनसि। कविका[5] ले करि मुख महिं दीनसि ॥ १५ ॥
डोर साथ बंधनि करि ल्यावा। श्री सतिगुर के निकटि जनावा।
उठे सेज तजि बाहर आए। चंबी[6] बड़वा[7] निकटि अनाए ॥ १६ ॥
पाइ रकाब पाइ आरोहे[8]। गहि बागां आगल मग जोहें।
बहिर गए, गुर छाया हेरि। उतर परे हित बैठनि केर ॥ १७ ॥
कितिक सिक्ख्य तहिं पहुंचे जाइ। दरशन दरसहिं अनद बढ़ाइ।
गुरगादी निशचे अबि भई। सभिहिनि की संसै मति गई ॥ १८ ॥
इम मन जानि जानि ढिग आवें। सफलहिं जनम दरस को पावें।
ग्राम बिखै सभि सोढिन पास। जहिं कहिं भाखहि गुरु प्रकाश ॥ १९ ॥
तबहि जसूस धीरमल केरा। बरनन कीनि ब्रितांत बडेरा।
गए वहिर, सिख तहिं भी आए। होति प्रताप दसहुं दिशि छाए ॥ २० ॥
सुनति धीरमल रिदै बिचारा। निज मसंद सों बाक उचारा।
इह तो ब्याध असाध हमारे। टरहि नहीं क्योंहु बिन मारे ॥ २१ ॥
जित कित बिदत बारता भई। गुरता की गादी इन लई।
त्यों त्यों देश बिदेशनि जावैं। सुनि सुनि सगरे नर तहिं आवें ॥ २२ ॥
अस न होहि इह गुर हुइ जाई। हमरी पूजा परहि पिछाई।
सुनि मसंद ने धीरज दीनो। क्यों पछुताइ मनहुं बल हीनो ? ॥ २३ ॥
मैं जसूस राखे तहिं लाइ। संझ समै लै हैं तिस घाइ।
सकल वसतु को आनहिं छीन। सो तुम ते सभि ही बिधि हीन ॥ २४ ॥
अस तौ फिकर धारि हम रहैं। भलो आपको जिम हुइ, चहैं।
नांहि त अबि जसूस जो आवा। वहिर गयो तिन आनि सुनावा ॥ २५ ॥

1. कहते हैं। 2. उज्ज्वल 3. चार घड़ी। 4 शय्या। 5. लगाम।
6. चितकबरा। 7. घोड़ी। 8. सवार हुए।

जे हमरे ढिग मग[1] को आइ। त्रिद तुफंगे[2] दें चलिवाइ।
इक गुलका लागै मरि रहै। बहुत लगे क्यों जीवन लहै'॥ २६॥
इम कहि त्यार सुभट कुछ करे। कसि कै कमर भए तहि खरे।
जबि आवहि इत दिशि लिहु देखि। हतहु तुफंगैं मिलहु अशेख॥ २७॥
ताक निशानो हनहु बनाइ। नहिं जीवत जिम घर को जाइ।
दुशट मसंद सु बिधि करि ऐसे। धीरमल्ल के ढिग हुइ बैसे॥ २८॥
कहति भयो मैं सुनी दुपहिरे। निंद्रा बसि प्रयंक पर ठहिरे।
गयो न मैं तबि कीनि बिचार। परहि रौर अबि दिवस मझार॥ २९॥
को जानै जो क्या हुइ जाइ। यांते समै सु लीनि बचाइ।
इहां तुफंग जि लगै न कोइ। पुन पहुंचहिं घर महिं जहिं होइ॥ ३०॥
इम करि मंत्र बैठि मिलि रहे। गुरु उडीकहिं[3] पंथहि लहे।
इतने महिं श्री तेग बहादर। बड़वा पर ओढे सिर चादर॥ ३१॥
सहिज सुभाइक आवनि करि हीं। हाथ बिखै बागानि उलरिहीं।
तेज तुरंगनि होति, थंभावति। दे दे धीरज पंथ चलावति॥ ३२॥
सूखम इक कर बिखै रूमाल। मंद मंद गमनति सुख चाल।
जबहि ग्राम प्रविशे गुर आइ। छुटी तुफंगैं शबद उठाइ॥ ३३॥
तुपक तड़ाक अचानक सुनि कै। तेज तुरंगनि भी डर गुनि कै।
तबि श्री सतिगुर बाग उठाई। देखति तिस दिशि गिरा अलाई॥ ३४॥

दोहरा

'भले धीरमल्ल भले जी, भले धीरमल्ल धीर'।
बहुत बारि बोले बदन श्री प्रभु गुनी गहीर[4]॥ ३५॥

चौपई

मंद दुराइ[5] तुरंगनि चले। बोलति 'भले धीरमल भले'।
अपने सदन प्रवेशे जाइ। उतरि सेज परि रहे सुहाइ॥ ३६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल्ल को बिरोध' प्रसंग बरननं नाम द्वादसमो अंसु॥ १२॥

---

1. रास्ता। 2. बंदूकें। 3. प्रतीक्षा करना। 4. गुणों का खजाना। 5. धीरे-धीरे दौड़ाकर।

अंशु १३

श्री गुर तेग बहादर को डेरा लूटन प्रसंग

दोहरा

चित महिं चितहिं कुकरम को जथा धीरमल्ल कीनि ।
सोढी अपर कितेक ही द्वैश बुद्धि महि भीन ।। १ ।।

चौपई

तऊ करति सभिहिनि पर दाया । ठानहिं क्रोध जि लोभी माया ।
अंतर अंधे ग्यान बिहूने । शांती, सति, संतोख ते ऊने[1] ।। २ ।।
ताप ईरखा अधिक तपाए । प्रभू नाम बिन क्यों सुख पाए ।
सिख्यनि श्रेय हेतु हम होए । सहि न सकहिं मूरख मति जोए ।। ३ ।।
जानि भविक्ख्यत को ब्रितांत । बैठे मौन धरे उर शांति ।
पिखि जसूस ने एकल लहे । को इक दास पास जिन अहे ।। ४ ।।
गयो उताइल करति बिलंद । धीरमल्ल अरु जहां मसंद ।
सुधि दीनसि 'एकाकी अहें । आनि वहिर ते अबि ही बहें' ।। ५ ।।
तबि मसंद लै करि भट ब्रिंद । चलत्यो भए कुसौन[2] बिलंद ।
छींक दाहिने दिशि महिं होई । सनमुख पौन धूर मुख गोई ।। ६ ।।
बाम बिलोचन फरकनि लागा । घट फूट्यो इक आवति आगा[3] ।
धीरमल तबि कीनि हटावनि । 'ठहिर, घटी[4] इक मैं करि जावनि ।। ७ ।।
नीकी बात नहीं कुछ होई । बनहि बिपरजै[5] कहै न कोई ।
द्रिढ नहिं, ढ्हयो जाइ मन मेरा । हति होवति उतशाह बडेरा ।। ८ ।।
रिदे समुझि करि कारज करनो । तिह ऐश्वरज न होवति हरनो' ।
धीरमल्ल कहि 'धीर धरीजै । कौन सहाइक तिह परखीजै' ।। ९ ।।
सुनि मसंद नहिं मानी बात । कहनि लग्यो तुम क्यों डरपाति ।
मक्खण सिक्ख दूर है डेरा । किस नहिं बोलनि देउं उचेरा ।। १० ।।

---

1. खाली, रहित 2. अपसगुन । 3. आगे से एक फूटा हुआ घड़ा मिला ।
4. घड़ी । 5. उलटी बात ।

पर न तहां सहाइक कोइ। किह सों मिलहि न बोलहि सोइ।
नित रहति उनमत्त महाना। नहिं सनेह किस हूं सो ठाना ॥ ११ ॥
तुम निचिंत बैठे रहु डेरे। सकल भार इह है सिर मेरे।
कारज सुधरै तौ हुइ तेरा। बिगरै हम मरि हैं तिस बेरा ॥ १२ ॥
इम कहि सनधबद्ध भट हेरि। अपनि साथ हित लीनसि टेर।
सौ तुफग लछ हतने हार[1]। तिह सों भन्यो समीप हकारि ॥ १३ ॥
'जबहि निकटि हुइ तिन के जाइ। हतहु ताक करि तुपक बनाइ।
हुइ जु पिछारी, सभि सहि लेहिं। एक बार तिह को हति देहिं' ॥ १४ ॥
संग पचीसक भट ले चल्यो। केतिक दासनि को गन मिल्यो।
तूशनि ठाने गमन करंते। चलते तूरन कदम उठंते ॥ १५ ॥
सतिगुर के घर पहुंचे जाइ। एकहि बारि परे अरराइ।
केतिक हुते जु मानव पास। 'क्या है क्या है' करहिं अवास ॥ १६ ॥
मारि मारि करि आनि परे हैं। औचक पौर मझार बरे हैं।
हथ्यो हथी गहि लीनसि केई। रौर मच्यो दोनहुं दिशि तेई ॥ १७ ॥
समुख भए केतिक तबि हेरे। 'हतहु बंदूक' मसंद सु टेरे।
ततछिन तिस ने ताक चलाई। सतिगुर के सिर कहु चलि आई ॥ १८ ॥
कर हुंकार[2] दीनि सो टारी। मसतक चाटति गिरी अगारी।
कुछक चरम गुलका ने फारा। रुधिर[3] अरुन सरक्यो[4] तिस बारा ॥ १९ ॥
देखि दास भै मानि घनेरे। हाहाकार कीनि बहुतेरे।
कितिक तरजि[5] करि दूर हटाए। केतिक गहि करि दास बिठाए ॥ २० ॥
सभि दीनार जु धरी अगारी। लई उठाइ वसतु गन सारी।
केतिक को करतल[6] ते मारा। खड़ग मुशट ते कोइ प्रहारा ॥ २१ ॥
जो मुख बोलहि मारहिं तांही। करति आपनो बल गरबाहीं।
वसतु सदन की पूरब जेई। करि बल छीन लीनि सभि तेई ॥ २२ ॥
बसत्र उपाइन को जे आए। बंधे भार तुरत उठवाए।
संख चमर सभि हरे तिनहुं ने। पाप करम को कर्यो जिनहुं ने ॥ २३ ॥
तबि दुरातमा कहति मसंद। 'गुरता को डसाइ मसनंद।
बैठि गयो तुझ किनै बिठायो। धीरमल्ल ते नहिं डरपायो ॥ २४ ॥
ब्रिंद मसंद न तुम ढिग आए। जिस ते गुरता लेति जमाए।
बोलनि मिलिने की सुधि नांही। बननि गुरु किम चहि चित मांही ॥ २५ ॥

1. निशाना बाँधने वाले। 2. वचन कहकर। 3. खून। 4. निकला।
5. चेतावनी देकर। 6. थप्पड़।

लोभ दरब को धारि घनेरा। मक्खण मिल्यो धनाढ बडेरा।
निज घर महिं थित मंत्र पकावा। गुरु गुरु करि रौर मचावा ॥ २६ ॥
गुर हित हुती उपाइन जोइ। कपट धारि करि लीनी सोइ।
तुम समीप सो किम रहि सकि है। जिम स्रिगले जिह केहरि तकि है ॥ २७ ॥
महां गरीब दीनता साथ। किम सो बनै सिखनि को नाथ।
तुझ ते छीनहिं ह्वै जबि ऐसे। पुनहिं त्रसत ले कोइ न कैसे ॥ २८ ॥
गुरता धीरमल्ल की होइ। कथं पुजावहि आन जि कोइ।
क्रित अनजान पने किय एती[1]। यांते भई सासना[2] तेती ॥ २९ ॥
बहुर करहु जे टरहु न टारे। हान प्रान हुइ जाइं तुमारे।
अबि के जीवति जग महिं रह्यो। हित को बाक लखहु, मैं कह्यो ॥ ३० ॥
श्री गुर तेग बहादर माता। नाम नानकी जग बख्याता।
सुनि मसंद ते क्रोध बधावा। तरजति अधिक कहति गुर दावा ॥ ३१ ॥
मम सुत को गुरु पिता पितामै। लेति उपाइन चहुंदिशि धामै।
कौन होइ तुम हमहिं हटावो। बिना काज निज बैर लगावो ॥ ३२ ॥
निज निज घर के सकल बिशेश। कौन हटावहिंगो करि द्वैश।
धीरमल्ल के धाम न गए। तिस के ग्राम प्रवेश न भए ॥ ३३ ॥
सो करतारपुरे ते आयो। बीच बकाले दंभ कमायो।
जे गुरता तिसके ढिग आई। क्यों निज ग्राम न बिखै पुजाई ॥ ३४ ॥
लोभ अगनि ते तुझहि जरावा[3]। धीरमल्ल घर लागिसि दावा[4]।
जहिं कहिं फिरहु हेतु धन चाहनि। निज गंभीरता को करि दाहनि ॥ ३५ ॥
हम बैठे निज सदन मझारा। तूशनि धारे करहिं गुज़ारा।
जे सिख आवहिं देहिं उपाइन। तुम क्यों आवहु हमरे आइन[5] ॥ ३६ ॥
हम तुमरे ढिग जांइ न कबै। दरब चढाइं सिख्य जे सबै।
अबि जबरी करि आनि परे हो। ज्यों बिख[6] पी करि आप मरे हो ॥ ३७ ॥
निम्रि पीर गुरु घर को जानि। ऊचे को ढहि जाइ गुमान।
बुरा होनि तुमरो ढिग आवा। जिसते ऐसो गरब जनावा ॥ ३८ ॥
बरब हज़ारनि ही घर मांही। तऊ न दूतीओ देखि सकाहीं।
श्री बाबा नानक जगतेश। फल दे तुम को कशट बिशेश ॥ ३९ ॥
जे करि मोहि पुत्र के भाल। गुलका[7] लगति मरति ततकाल।
तबि को होवति हाल तुमारो। कियो कुकरम महां हत्यारो ॥ ४० ।

1. इतने अनजानपने के काम किए। 2. दण्ड। 3. जला दिया है। 4. दावा अग्नि, जो जंगल को जला देती है। 5. हमारे घर में। 6. विष। 7. गोली।

इत्यादिक कहि बारंबारी। मात नानकी दुखिति पुकारी।
भाल[1] पुत्र को पौंछनि कर्यो। नीर बिलोचन ते बहु ढर्यो ॥ ४१ ॥
नयो जनम निज सुत को जाना। तपत रिदा दुख पाइ महाना।
श्री गुर तेग बहादर कह्यो। 'धन महिं इह कुकरम ही लह्यो ॥ ४२ ॥
यांते हे जननी दिहु जानि। तिन घर परिहै कशट महान।
धन के त्यागनि ही सुख होइ। लेनहार लहि संकट सोइ' ॥ ४३ ॥
इम धीरज सों बैठे रहे। जननी को बरजन हित कहे।
सो मसंद करि ओज घनेरा। वसतु सरब ले दरब बडेरा ॥ ४४ ॥
अति प्रसंनता धरि करि उर मैं। पहुंच्यो धीरमल्ल के घर मैं।
सगरी वसतू आप दिखाई। बहु दीनार धरी अगवाई ॥ ४५ ॥
हेरति भयो प्रसंन घनेरा। हेम सु कंकन[2] ले तिस बेरा।
'साध साध' कहि दिये मसंद। लै करि हरख्यो[3] रिदे बिलंद ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर तेग बहादर को डेरा लूटन' प्रसंग बरननं नाम त्रोदसमो अंशु ॥ १३ ॥

1. माथा। 2. सोने के कड़े। 3. मन में बहुत प्रसन्न हुआ।

अंशु १४

धीरमल्ल प्रसंग

दोहरा

वसतु सकल को देखि कै धी मल आनंद।
कंचन के कंकन दिये हरखति लिये मसंद ॥ १ ॥

चौपई

बूझे ते सगरो बिरतांत। कह्यो मसंद 'सुनहुं सभि बात।
परालबध ते जीवत रह्यो। चली तुपक तबि नीक न लह्यो ॥ २ ॥
हले हाथ चाटति गई भाल। तिन जननी आई ततकाल।
तिसने रच्छा करि सभि भांती। जीवत रह्यो न होयहु हाती[1] ॥ ३ ॥
नहिं परंतु आगे पुन करे। इम करिवे ते भै बहु धरे।
निशचै जानहु गुरुता तेरी। जहिं कहिं लेहु भेट वहुतेरी ॥ ४ ॥
तेग बहादर क्या हम आगे। सभि सोढी लरिबे ते भागे।
तुम समान नहिं दूसर कोई। उद्दम करि है गुर ह्वै सोई ॥ ५ ॥
इस प्रकार जे द्रिढ तुम रहो। निहसंसै गुरता कहु लहो।
जथा शकति निज सैन बनावहु। श्री हरि राइ सदरश रहावहु ॥ ६ ॥
सुभट शसत्र के धरने हारे। बली तुरंगम तर असवारे।
हुते सहस्र अढाई सोइ। समुख शत्रु के शसत्री[2] जोइ ॥ ७ ॥
जिहठां चलहिं त्यार सभि रहैं। रिपु बलवान तुरत ही गहैं।
श्री हरिराइ अनुज तूं अहैं। तिन की समता सभि विधि लहैं ॥ ८ ॥
आदि ग्रिंथ साहिब तुझ तीर। इही अधिकता लखहु गंभीर।
श्री नानक की गादी बैस। मिलि हम सों करि अनंद हमैश' ॥ ९ ॥
सुनि कै धीरमल्ल हरखावा। गुर गादी पर हमरो दावा।
निहसंसै इहि सभि ही जानैं। देश बिदेश उपाइन आनैं ॥ १० ॥

---

1. मौत नहीं हुई। 2. शस्त्र प्रहारी।

तूं मसंद लायक को मेरे। सुमतिवंत दीरघ नर हेरे।
गुर घर को सगरो बिरतांत। नीकी रीति तोहि बख्यात ॥ ११ ॥
देश बिदेशनि के जु मसंद। केतिक लघु हैं कितिक बिलंद।
लाखहुं धन के देवनहारे। देशनि सिख्य तिन्हैं अनुसारे ॥ १२ ॥
निज मति करि तिन लेहु मिलाइ। किह सनमानहुं किह धन द्याइ[1]।
रात दिवस करि इही उपाइ। करति रहहु जिस ते सभि आइं ॥ १३ ॥
तिन अनुसार सिख्य पुन आवैं। दरब उपाइन अधिक चढ़ावैं।
निहसंसै पुन अनंद करीजै। सरब भांति के सुख बरतीजै ॥ १४ ॥
इम प्रसंनता करि करि घनी। धीरमल्ल आपस महिं भनी।
कितिक काल मनभावति करिही। दुरजनता अरू गरबनि[2] धरिही ॥ १५ ॥
श्री गुर तेग बहादर चंद। निज सरूप महिं सदा अनंद।
आवन जाने दरब समान। हरख शोक जिनके उपजा न ॥ १६ ॥
इक रस नित उर धीरजवंत। महिद जितिंद्रै गुननि महंत।
बड उदार, तेज[3], बुधिवान। छिमावंत, उर क्रिपा महान ॥ १७ ॥
सरल चित्य निशकपट सदीवे। महां मोह मद लोभ न थीवे[4]।
जथा प्रथम आसन पर बैसे। मन उदबेग[5] बिना रहिं तैसे ॥ १८ ॥
मात नानकी अति दुख पायो। अश्रु बेग को बहुत बहायो।
हे सुत ! क्यों तुम चेतति नांही। रहहु बैठि आलस के मांही ॥ १९ ॥
तव शरीक सभि बिधि बिवहारा। करति सदा अपमान हमारा।
दरब हजारनि को नित लेते। भुंचति आप, न दूसर देते ॥ २० ॥
करहिं कपट के अनिक उपाया। ज्यों क्यों हरहिं अपर ते माया।
उतसव ब्याह आदि जो करिहीं। तिस महिं हम को लघू उचरिहीं ॥ २१ ॥
लखहिं निलाइक बुद्धि बिहीना। सुनि सुनि तऊ छिमा तुव कीना।
अबि तिन ने क्या कीनसि एही। महां कुकरम मंदमति जेही ॥ २२ ॥
पुरशारथ तुम करहु न कोई। जिसते सभि निरबाहन होई।
दुशट आतमा जे हति जावैं। दरब हेतु बड पाप कमावैं ॥ २३ ॥
तौ मेरी गति कहु क्या होती। इक पुत्रा मैं दीन उदोती।
अबि लौ पौत्र नहीं मम होवा। निस बासुर तेरो मुख जोवा[6] ॥ २४ ॥
श्री नानक जी रच्छा कीनसि। हती तुफंग निफल करि दीनसि।
बरजनहार इनहिं नहिं कोई। धन भुजबल ते गरबति जोई' ॥ २५ ॥

---

1. देकर। 2. दुष्टता और अहंकार करता है। 3. तेज वाले। 4. होवे।
5. घबड़ाकर। 6. देखती हूं।

इत्यादिक करि करि बिरलाप। लोचन ते छोरति बहु आप[1]।
श्री गुर कह्यो मात धरि धीर। देखि अनुचित नहीं करि पीर[2] ॥ २६ ॥
जबरी[3] करति गरब धरि जोइ। तिन पर हरि प्रभु ऋुधति होइ।
सभि ऐश्वरज हरहि छिन मांही। होहिं दीन, दुख भै बडि पांही ॥ २७ ॥
सभि के सिर पर श्री करतार। देखि करम सुख दुख दातार।
जिनहुं अलंब कर्यो प्रभु सोइ। तिन को त्रास न बिनहूं होइ ॥ २८ ॥
जगत नाथ के आस भरोसा। टिकहि पुरख धारहि संतोशा।
दुख सुख जनम मरन के मांही। कमलाकंत[4] देति, अन नांही ॥ २९ ॥
इह अजोगता कीनसि जोइ। पिखि जननी ! न चिंत करि कोइ।
हते दैव ने सो इस काला। परहि आपदा तिनहि बिसाला ॥ ३० ॥
हुइं अधीन सभि तेरे आइ। ब्रीड़ा[5] सहित त्रास को पाइं।
बिन अपराध आइ जो परे। धन हित पाप करति नहिं डरे ॥ ३१ ॥
मूढ लोभ ते सुधि बुधि नांही। बहु दुरातमा सासन[6] पाहीं।
अरू जो तोहि मनोरथ माता। दे करतार प्रभू बख्याता ॥ ३२ ॥
धीरमल्ल संमत[7] जु मसंद। इह अपराध अजोग बिलंद।
लोभ लगे कीनसि तिन ऐसे। मतश[8] बडिस[9] कहु ग्रासहि जैसे ॥ ३३ ॥
हिंसक जबि ऐंचे. हुइ बाहर। अधिक दुखी म्रितु पावहि जाहर।
ज्यों बटपार[10] धनी मग जाते। छीनहिं तिनहिं त्रास उपजाते ॥ ३४ ॥
न्रिप की सैन आनि पुन परै। घेर सभिनि को दिढ करि धरै।
लेहिं दरब अरु आयुध हरैं। बंधन लहैं अधिक दुख भरैं ॥ ३५ ॥
अस कुकरम करि सुख नहि पावैं। अपजस संचहि उर पछतावैं।
अबि तूं छिमा करनि भलि मानि। छमी[11] सहाइ होइ भगवान ॥ ३६ ॥
बहु अपमान रू म्रितु को पावैं। धन के लोभ दुशट ललचावैं।
बडे मनुज दुरजोधन आदि। लगे लोभ त्यागी मिरजाद ॥ ३७ ॥
सभि ही अपदा पावति रहे। सुख को चहति कशट को लहे।
धीरमल्ल को भाग न लीनसि। हमने कुछ लालच नहिं कीनसि ॥ ३८ ॥
आयो सिख्य भावनी साथ। अरपी वसतु जोरि जुग हाथ।
नहीं हकारनि डेरे गए। आपहि आइ उपाइन दए ॥ ३९ ॥
यांते हमरो दोश न कोई। जिस के दिखति रोस जुति[12] होई।
इस ते चहीअति अबि ही काल। होहि अनादर कशट बिसाल ॥ ४० ॥

---

1. जल (अश्रु)। 2. पीड़ा (दुख)। 3. ज़बर्दस्ती, ज्यादती। 4. ईश्वर। 5. लज्जा। 6. दण्ड। 7. मंत्री। 8. मछली। 9. कुंडी। 10. बटमार। 11. क्षमा करने वाला। 12. क्रोधित।

इम आपस महिं बाक करंते। परम दुखी जननी जुति चिंते।
कितिक सिक्ख तहिं देखनि कर्यो। हाहाकार ग्राम महिं पर्यो॥ ४१ ॥
'धीरमल्ल धन ते गरबावा। करति आप ही गुरता दावा।
जेकरि करामात महिं पूरा। क्यों नहिं सिख्य बुलाइ हदूरा॥ ४२ ॥
मन खैंचहि अपने महिं लावहि। जिसते सभि ही भेट चढावहिं।
इह अजोगता कीनि बिसाला। पर घर महिं बरि[1] धरी कुचाला॥ ४३ ॥
सगरी वसतु लूटि करि लीनि। किनहूं नांहिन बरजनि कीनि।
इम जे होइ. निबल रहिं नांही। सबल संघारहिं छीन लिजांही'॥ ४४ ॥
इम कहिते केतिक मिलि गए। सिख्य सशोक दुखित मन भए।
नहिं अजोगता सकहिं पहारी। करी कुत्रित[2] धीरमल भारी॥ ४५ ॥
क्या हम करहिं समरथ बिहीन। गुरु अवग्या देखनि कीनि।
तिह समीप मानव समुदाइ। धीरमल्ल हम बसि नहिं आइ॥ ४६ ॥
मख्खन साथ पंच सै नर हैं। सो जे करहि मनोरथ उर है।
सो पलटा[3] निज गुर को लेहि। जथा गरब को फल तिस देहि॥ ४७ ॥
इम मसलत करि द्वै सिख दौरे। हुतो बहिर उतर्यो जिस ठौरे।
जाइ तहां सुधि सकल बताई। जथा धीरमल्ल किय जबराई॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल्ल' प्रसंग बरननं नाम चौदशमो अंशु॥ १४ ॥

अंशु १५

मक्खण शाह क्रोध प्रसंग

दोहरा

पौढ़्यो हुतो प्रयंक पर मक्खण सिख्य बिसाल ।
ऊचे बाक पुकारते पहुंचे सो ततकाल ॥ १ ॥

चौपई

'मक्खणशाह ! परे हो कहां । भयो बिघन सतिगुर घर महां ।
जो तैं दरब जाइ अरपावा । अरू सिख्यनि का जितिक चढावा ॥ २ ॥
धीरमल्य सुनि कै अनखायो । करति असूया लोभ वधायो ।
संग मसंद कितिक दे सूर[1] । पठि दीने करि रिदै ग़रूर ॥ ३ ॥
सो चलि आइ कुकरम कमावा । सनमुख सतिगुर तुपक चलावा ।
छुइ लिलार[2] गिर परी अगारी । निज अज़मत करि बचे, बिचारी[3] ॥ ४ ॥
तुम जो दरब दीनि सो लीना । अपर समाज खसोटनि[4] कीना ।
बासन हुते रसोई केरे । इत्यादिक ले वसतु घनरे ॥ ५ ॥
करि अपमान बाक दुर[5] कहे । नहीं त्रास दूसर को लहे ।
मन भावति करि कै सभि बात । चहिति हुते सतिगुर को घात ॥ ६ ॥
होती निकटि न जे तिन मात । जियति न रहनि देति किस भांति ।
तरजि तरजि करि बरजि हटाए[6] । कौन अहो तुम कित ते आए ? ॥ ७ ॥
श्री गुर हरिगोविंद की दारा । दीरघ दरशन तेज उदारा ।
रच्छ्या सुत की सभि बिधि करी । जबि लौ ढिग, तबि लौ तहिं खरी ॥ ८ ॥
सभि वसतू ले करि अपमाना । गए निरभै हुइ अपने थाना ।
श्री गुर तेग बहादर धीर । तुझ ते आगे सदा गंभीर ॥ ९ ॥
नहीं अवग्या काहू कीनसि । पति समेत निज घर सुख भीनसि ।
तैं अबि आइ गुरु बिदतावा । अधिक दरब अरप्यो अरपावा ॥ १० ॥

---

1. शूरबीर । 2. माथा । 3. विचार ले । 4. छीन लिया है (दूसरा सामान भी) । 5. कुबोल । 6. प्रयत्न करके रोक कर रखा ।

यांते बिघन भए समुदाइ। जो अबि तुझ को दए सुनाइ।
कारन कशट देनि को होवा। भलो आइ गुर दरशन जोवा ॥ ११ ॥
सुनि मक्खन को भयो बिखाद। हति होवति भा उर अहिलाद।
किस को गह्यो धीरमल ओटा। कीनसि करम जांहि अस खोटा ॥ १२ ॥
धरि मूरखता किनै न होटा। परहि अव्रहि जिस के घर टोटा।
इहां देश किम बसि हैं वासा। छीनहिं निबलनि सबल हुलास ॥ १३ ॥
मम सतिगुर तौ निरबल नांही। चित करि जिस के हुइ पख मांही।
सगरी अवनी को पति हौन[1]। इस जैसे की गिनती कौन ॥ १४ ॥
तद्दपि महिमां सतिगुर ग़रवी[2]। होवति ओज अवग्या जरवी[3]।
नहीं जनायो अपनो आप। जिन महिं समरथ महिद प्रताप ॥ १५ ॥
तीन लोक महिं कोइ न ऐसे। समता धरहिं गुरू चित जैसे।
सभि ते महिमा इह अधिकाई। अजर जरन जो रिदै बसाई ॥ १६ ॥
अस नर कौन अहै जग मांही। ह्वै अति बली, जनावहि नांही।
इक सतिगुर बिन अपर न बीओ। अपनि हानि को को चहि कीओ ॥ १७ ॥
अबि जो बिघन गुरु घर होवा। सरब दोश मैं अपनो जोवा।
सो तो रहे हटाइ बधेरे। मैं बिदताए सभि प्रति टेरे ॥ १८ ॥
जे अस बिघन बिनासौं नांही। महां दोश फल ह्वै मुझ मांही।
निज बल ते मैं सकौं सुधारी। जे बलवान मोहि को मारी ॥ १९ ॥
म्रितू होइ किरतारथ जानौं। अबि मैं जीवन सफल न मानौं।
इम बिचार करि आइसु दीनि। 'सुभटहु सुनहुं' बिलम क्यों कीनि ॥ २० ॥
जिस कारन हम मग चलि आए। कई कोस लौ संकट पाए।
सो कारज बिगरति अबि जातो। गहहु शसत्र तीछन रिपु[4] घातो ॥ २१ ॥
जे मुझ सों को करहि लराई। अयुध हतहु बिजै लिह पाई।
धरम हेतु करि जे म्रितु पावहु। सुरग निसंसै सुख सों जावहु ॥ २२ ॥
तूरन करे त्यार नर सारे। चल्यो आप उदबेगहि[5] धारे।
सिपर खड़ग निज कर महिं लीनसि। गुरु अवग्या ते रिस भीनसि ॥ २३ ॥
ग्राम नजीक जबै चलि आयो। सुन्यो रौरं जो नरनि मचायो।
हाहाकार करहि तहिं कोई। 'महां जुलम कीनसि' कहि सोई ॥ २४ ॥
'महत भयो उतपात बकाले[6]। सोढी ब्रिंद शरीक बिसाले।
गादीपति अबि रह्यो न कोई। सभि झगरति हैं, हम गुर होई ॥ २५ ॥

---

1. मालिक। 2 भारी। 3. सहन कर लिया। 4. शत्रु। 5. घबड़ाहट।
6. बकाला में बहुत उपद्रव हुआ।

अजमतवंत गुरु बनि जै है। सने सने कूरे गिर पै हैं।
गयो ग्राम महि, गुर को दास। सकल कही मक्खन के पास॥ २६ ॥
सुनति छोभ[1] दूनो[2] हुइ आयो। तिस को अपनै संग रलायो।
जिस मसंद ने ऐती करी। तिस को दिहु दिखाइ इक बिरी[3]॥ २७ ॥
इम कहि औचक जाइ पर्यो है। मारि मारि बड रौर कर्यो है।
डेरे बिखै प्रवेश्यो जाइ। सभि सुभटनि को ल्यो दबाइ॥ २८ ॥
जोधा हुते पंच सै संग। जिनहुं उठाए खड्ग उतंग।
मक्खण ऊचै कह्यो पुकार। नहिं पूरब ही करहु प्रहार॥ २९ ॥
धीरमल्य के मानव जोई। करहि शसत्र हति प्रथमै कोई।
तौ सभि आयुध एव प्रहारो। रुंड मुंड न्यारे करि डारो॥ ३० ॥
इह भी जानहिं, ऐसी करो। महां दुशट गहि लिहु न डरो।
लूट लेउ इनको सभि डेरा। जो ऐश्वरज ले रहे घनेरा॥ ३१ ॥
जे करि आगे हाथ उठावहि। किधौं कटक को बात सुनावहि।
इक ते द्वै, द्वै ते करि चार। ऐसे कीजहि खड्ग प्रहार॥ ३२ ॥
श्री गुर संग करी इन जैसी। चहियति हुती करनि अबि तैसी।
तदपि गुर के कुल महिं भयो। यांते जीवत अबि रहि गयो॥ ३३ ॥
धीरमल्य को कुछ न कहीजै। गहो[4] मसंद बंधि करि लीजै।
हाथ पिछारी करि कै दोइ। दामनि[5] साथ बांधि लिहु सोइ॥ ३४ ॥
सगरी वसतु संभारि उठावहु। सतिगुर के घर को पहुंचावहु।
इम कहि मक्खण रिस उर भरि कै। बदन बिलोचन आरुन[6] करिकै॥ ३५ ॥
निरभै होइ जिम केहरि क्रूर। पिखि अजोगता तपत्यो भूर।
होवनि म्रितू नीक मुख जाना। धिक जीवन लखि गुर अपमाना॥ ३६ ॥
गुर की निंदा सुनी न जाइ। दुशट बाक जबि कहिति बनाइ।
पाप आतमा कुमति असाधू। पिखति जि करहि गुरु अपराधू॥ ३७ ॥
सो किम सह्यो जाइ सिख पाही[7]। नीकी म्रितू लखहि मन मांही।
तुला[8] न रंचक सहि है जोइ। तोला धरै सहै किम सोइ॥ ३८ ॥
बिमल रिदा नहिं कुवच सहित है। गुर अपमान सू कथं लहिति है।
छुभति होइ इम मक्खण शाह। तिस डेरे पर पर्यो उमाह॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खण शाह क्रोध' प्रसंग बरननं नाम पंचादशमो अंशु ॥ १५ ॥

---

1. गुस्सा। 2. दुगुना। 3. एक बार। 4. पकड़ो। 5. रस्सी। 6. आँखें लाल करके। 7. पास से (सिक्ख के)। 8. रत्ती।

अंशु १६

धीरमल को डेरा लूटन प्रसंग

दोहरा

आवनि निज पर क्रोध कै ब्रिद नरनि को जानि।
धीरमल्ल ने धीर सभि कीनसि बल जुति हानि ॥ १ ॥

चौपई

मक्खण लिये सैन को आवा। 'करों जुद्ध मैं' बाक अलावा।
संगति महिं नर आयुध धारे। करे सकेलनि सकल हकारे॥ २ ॥
जानति भयो मनुज समुदाइ। हमर भट थोरे बिन पाइ[1]।
अपनो दुरग न अपनो ग्रामू। अपनो मित्र न अपनो धामू॥ ३ ॥
बिगर जाइ जे परहि लराई। सबल ब्रिद जै[2], निबल पलाई।
मरहिं सुभट अरु जै हैं भाजू। नशटहि कारज सकल समाजू॥ ४ ॥
याते तूशनि ही बनि आवै। बैठे कोइ न आयुध घावै।
निज मसंद सों बोल्यो तबै। 'हम करतब्य करैं क्या अबै॥ ५ ॥
भागे बनहि, न बनहि लराई। सदन आपनो निकटि न थाई।
लरहिं, सुभट दिखीयति हैं थोरे। उत जोधा गन भए स जोरे॥ ६ ॥
लरिकै मरि जै हैं सभि आज। कै निज निज दिशि परि हैं भाज[3]।
लुटहिं बसतु सभि होवै रौरे। दुसहि[4] भई परहहिं अबि हौरे॥ ७ ॥
पिखे कुशगन हटायो तोहि। गयो, सु होनहार ही होहि।
सुनति मसंद अनानंद[5] महां। कहति भयो 'ह्वै जानहिं कहां॥ ८ ॥
मक्खण कर्यो चहति जंग जोइ। इसे अनुचित सभी बिधि सोइ।
नहीं बिचार रिदै महिं कीना। उचतानु चित नहीं मन चीना॥ ९ ॥
तुम गुर रूप भ्रात गुर भयो। पुनहि भतीजे सो पद लयो।
गुरु ग्रिंथ साहिब तुम पास। सादर दरशन जास प्रकाश॥ १० ॥

---

1. पैर। 2. बिजय पा लेंगे। 3. भाग जाना। 4. कठिन। 5. उदास।

पच्छपात करि जे नहिं मानहि। पुनहि अवग्या करनी ठानहि।
बिन उपचार असाध जु ब्याधी। सिख लखि होयो चहि अपराधी ॥ ११ ॥
तिस को करामात के ज़ोर। चहीअति बसी करनि बल तोर।
अबि इह समां आप को आवा। करि जु सकहिं हम, करि दिखरावा ॥ १२ ॥
दाम भेद को रह्यो न काल। दंड न उचित, सैन बडनाल।
साम[1] उपाइ बनहि जे इहां। होइ त करहु शीघ्र बुधि महां' ॥ १३ ॥
भै आतुर इम आपस मांही। बोलति हुते रही सुधि नांही।
सुन्यो द्वार पर रौर बिसाला। दर पर आइ गए ततकाला ॥ १४ ॥
इक इक को दस दस नर धाए। गहि गहि सभि के शसत्र छिनाए।
हाथ जोरि सभि नै हुइ दीन। इम कातुर[2] करि करि तजि दीनि ॥ १५ ॥
अंतर जाइ प्रवेशे सारे। बदन परसपर करति निहारे।
तजी सूरता[3] डरे बिसाला। नहिं कुछ सक्यो होइ तिस काला ॥ १६ ॥
नहिं भाजनि की तबि गति रही। मुख ते बिनती जाइ न कही।
पूरब सभि के आयुध छीने। कितिक पलाए[4] भ्रितु उर कीने ॥ १७ ॥
हुइ तूशनि तसकर सभ कोई। कितिक बैठिगे व्रीड़ा[5] खोई।
धीरमल्ल को बदन निहारैं। कितिक दुरावति वसतू टारैं ॥ १८ ॥
सभि के शसत्र छीन करि लीनि। एक थान बंधावनि कीनि।
पुनहि वसतु सगरी सु संभारी। सतिगुर के घर की जु निहारी ॥ १९ ॥
बहुरो दरब सरब कढवायो। तिनहूं के नर सिर उचवायो।
पुन तिन डेरे की वथु[6] सारी। बंधि करि सकल संभारी ॥ २० ॥
बहुर ग्रिंथ साहिब जी लीनि। सिर उचवाइ सिख्य के दीनि।
पुन मसंद को गहि करि बंधा। जिन अपमान कीनि मति अंधा ॥ २१ ॥
हाहाकार सकल नर करै। 'किय कुकरम तैसो फल भरै'।
धीरमल्ल बोल्यो उर दुख्य। 'भो मक्खण ! तू सतिगुर सिख्य ॥ २२ ॥
हम सतिगुर के बंस मझार। तैं किम कीनसि इह अपकार।
सतिगुर उर न धरहिं उर मांही। इसको फल दुख लहि सुख नांही ॥ २३ ॥
क्यों अनादर हमरो भारी। वसतु खसोटि लीनि तैं सारी।
पुन मसंद हमरो गहि करि कै। लियो ग्रिंथ साहिब सिर धरि कै ॥ २४ ॥
हम भ्राता सोढी कुल सारे। करहिं परसपर बहु बिवहारे।
लरहिं मिलहिं हम बारि अनेक। बोल्यो अबि लौ सिख्य न एक' ॥ २५ ॥

1. शरण। 2. कायर। 3. शूरवीरता। 4. भाग गए। 5. लज्जा। 6. वस्तु।

मुनि कै मक्खण शाहि बखाना। धीरमल्य तुम कुक्रित[1] ठाना।
करि न सकहि को एती बात। जस तैं करी मती बख्यात।। २६।।
गुर तो सिख के सदा सहाई। दोनहुं लोकनि महिं सुखदाई।
कबहुं कु सभा होइ अस जाई। बनहिं सहाइ सिक्ख अधिकाई।। २७।।
श्री गुर तेग बहादर चंद। सभ रहिं हरख शोक जे दुंद।
नहिं इच्छा थी जग बिदताएं। मैं करि बिनती बहिर बिठाए।। २८।।
नहीं करति कुछ अंगीकारे[2]। जग मिथ्या जिन केर बिचारे।
ब्रह्मग्यान जिन के द्रिढ होवा। उर अबिबेक कटक[3] को खोवा।। २९।।
तब पित को भ्राता बडि थान। ग्यानवान जिन ब्रिती समान।
शांति जितेंद्रै महां प्रबीन। सोढी कुल को भूखन चीन।। ३०।।
तिन की करी अवग्या भारी। हती तुपक, चाहसि चित मारी।
बड अपराध कीनि मति हीने। गुर के बंस बिखे तुझ चीने।। ३१।।
छोरि दीनि, नहिं कीनि संघार। उचित मारबे हुतो बिचार।
इम कहि सभि बध कीनि अगारी। आए सतिगुर सदन मझारी।। ३२।।
सगरी वसतु आनि धरिवाई। सौंपी[4] जहाँ नानकी माई।
पोशिश आदि धीरमल केरी। आनि धरी तहिं पोट घनेरी।। ३३।।
दरब सरब गुर आगे धर्यो। सरबस अपर निवेदन[5] कर्यो।
श्री ग्रिथ करिवायहु डेरा। आयो मक्खण सिक्ख बडेरा।। ३४।।
हाथ जोरि कै बंदन ठानी। मुख देख्यो रहि एक समानी।
प्रापति दरब न हरख भयो है। शोक न चित महि सरब गयो है।। ३५।।
इक रस रिदा देखि गुर केरा। उपज्यो रिदे अनंद घनेरा।
शिव मूरति आनन बिगसाना। मनहुं प्रफुल्लयति कमल महाना।। ३६।।
करुना भरे बिलोचन रूरे। आसन पर बैठे गुर पूरे।
दीरघ दरशन आयुत[6] छाती। लाँबी भुजा धरे उर शांती।। ३७।।
सगरी दीरघ देहि सुहावै। सेत बसत्र निरमल छबि छावै।
सगरे सद्गुन सदन महाना। बैठे महाँ बिराजति थाना।। ३८।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल को डेरा लूटन' प्रसंग बरननं नाम खोड़समो अंशु।। १६।।

---

1. कुकर्म। 2. स्वीकार करना। 3. सेना। 4. अर्पण, सुपुर्द कर दी। 5. कह दिया विशाल (चौड़ी)। 6. विशाल, छाती।

अंशु १७
मक्खण शाह को बरजनि प्रसंग

दोहरा

सगल वसतु देखि करि श्री गुर परम क्रिपाल ।
मुख मक्खण की दिशा करि बूझनि कीनि हवाल ।। १ ।।

चौपई

'सभि वसतु कैसी इह ल्याए । करहि रौर क्यों नर समुदाए ।
तैं अबि संझ पई किम आवा । आयुध बंधे मुख दरसावा' ।। २ ।
सुनि मक्खण हरखंति बखाना । 'जिन तुमरो कीनसि अपमाना ।
महां मंदमति निंदक पापी । दुशट दुरातम दुख संतापी ।। ३ ।।
तिस मसंद को बंधन कर्यो । धीर मल्य के निकटि, न हर्यो[1] ।
वसतु तुमारी लूटि जि लीनसि । तिन ते मैं छीनसि दुख दीनसि ।। ४ ।।
रावर को अपराधी आन्यो । जिसने आइ कुकरम कमान्यों ।
गुर कुल ते उपज्यो लखि करि कै । हत्यो न धीरमल्ल हम धरि कै[2] ।। ५ ।।
मुझ देखति अपराध तुमारो । कोइ जि करहि दुरातम भारो ।
ऐसे शसत्र प्रहारनि करि हौं । मारनि करौं, कि लरि कै मरि हौं ।। ६ ।।
सुधि पहुंची जबि ही मुझ डेरे । तबहि दौर मैं आइ अदेरे[3] ।
धीरमल्य को दोश वडेरा । मैं इम लखि कै लूट्यो डेरा ।। ७ ।।
आनी सगरी वसतु तुमारी । अरु तिन की छीनसि गहि सारी ।
आप सकल संभारहु भले । करहि अनादर रिपु निरबले ।। ८ ।।
आनि, सदन महिं सरब सु लीना । तिन को कुछ अपकार न कीना ।
बिन कारन ते किय अपराधे । यांते मैं आन्यों तिस बांधे ।। ९ ।।
जबहि दुशट तुमरे घर आए । मो ढिग क्यों नहिं सुधि पहुंचाए ।
सभि को ततछिन बंधन करतो । करति शसत्र जे प्रान प्रहरि तो ।। १० ।।

---

1. मारा (नहीं) । 2. पकड़ कर । 3. जल्दी ।

अपनी वसतु दरब युति लीजै। तिन की आनी राखनि कीजं।
पुन आगे जे ह्वै मतिवाना। कबि न करहि कोई अपमाना॥ ११॥
सुनि सतिगुर कहि बाक प्रबीना। 'मक्खण शाह! कहां तैं कीना।
काम क्रोध के बसि ह्वै सोई। आनि कुकरम कर्यो तिन जोई॥ १२॥
हम तिन सम नहिं क्रिबो चाहैं। जानहिं महां दोश तिस मांहै।
जनम मरन जग बारंबारी। देति कामना, ह्वै न उबारी॥ १३॥
काम मूल है सकल बिकारै। काम बिनासहिं सुमति बिचारै।
पुन इह बिना उपाइ नसंते। जनम मरन जो देति अनंते॥ १४॥
तूं सतिगुर को सिख्य महाना। सद गुन धरि. जिसते शुभ जाना।
धीरमल की वसतू सरबा। फेरि देहु तिन ढिग युति दरबा॥ १५॥
जो हमरे ढिग धन अरपायो। सभि देवहु तिस ढिग पहुंचायो।
मन उद्वेग को निबल करीजै[1]। हुइ प्रसंन इह सभि तिस दीजै॥ १६॥
बहुरो तुझ नीके उपदेशहिं। लखहु सुभाशुभ[2], तजहु कलेशहि।
सतिगुर भिलिनि सुफल हुइ जावै। जनम मरन ते थिरता पावैं॥ १७॥
सुनि मक्खण कर जोरि बखाना। 'जिनहुं कीनि अपमान महाना।
प्राणांतक लौ करि अपराधू। कुमती, दुशट, कठोर, असाधू॥ १८॥
तिन पर म्रिदुल छिमा बहु करनी। नीति बिखै इह नीक न बरनी।
छमी पुरख के काज उदारा। नशट होति, जिम अगनी पारा॥ १९॥
तिस को सकल करहिं अपराधा। उर को छोरि, देति हैं बाधा।
दारिद्री अरु आलसकारी। इम अपकीरति हुइ बिसतारी॥ २०॥
करि अपराध नहीं डर पावैं। जस किय तस फल जे नहिं पावैं।
पुनहि करनि को ह्वै उतसाही। भीरु लखै, अपर सों प्राही॥ २१॥
दंड उचित ही नित अपराधी। पुरशोतम मिरजादा बाधी।
देखहु राम चंद बड धीर। नीरध को गंभीर अभीर॥ २२॥
अस आशै लखि ओज प्रकाशा। जिस ते अति चितव्यो चित त्रासा।
हुइ भै भीत उपाइ बताइव। सकल कटक कपि[3] पार लंघाइव॥ २३॥
जे न छिमा त्यागति तिस काला। नहिं कारज किम होति सुखाला।
पुन श्री क्रिशन चतुर बलवाना। सभा कैरवनि की जु महाना॥ २४॥
बैठ्यो बीच छिमा करि रहै। दुरजोधन बड पद को लहै।
तेज प्रभाव अपनि बिदतावा। जिस ते अपनो आप बचावा॥ २५॥

1. मन के गुस्से को ठण्डा करो। 2. भला तथा बुरा। 3. बंदर।
4. दुख।

इम अछिमा महिं गुन बहु रहै। छिमावान बाधा[4] बड सहै।
अक्रित काज, अपजसु बिसतारनि। दोश छिमा महिं करे उचारनि ॥ २६ ॥
जे तुम रहहु छिमा कहु धारी। सभि ही करहिं अवग्या भारी।
दुशट कुकरम करनि नित चाहैं। रुकहिं दंड को त्रास धराहैं ॥ २७ ॥
नाहिं त करहिं सभिनि अपकारा। देहिं प्रजा को कशट अपारा।
दंड त्रास ते अपनि म्रिजादा। रुके रहैं, नहिं लहैं बिसादा[1] ॥ २८ ॥
क्यों तुम दुशट अवग्या सहो ?। अबि हे प्रभो ! मोहि सों कहो।
निज सिख ते सुनि करि इम बैन। क्रिपा द्रिशटि जुति सुंदर नैन ॥ २९ ॥
धीरमल्य की वसतु हटावनि। सरब दरब को तिसै दिवावनि[2]।
क्रिपा निधान अपनि भ्रिपाइ[3]। कह्यो चहति शुभ मत दरसाइ ॥ ३० ॥

दोहरा

सदगुन सगरे ग्यान युति रिदा सदन जिन केर।
सिख को करन निहाल पुन बोले सतिगुर फेर ॥ ३१ ॥

चौपई

सुख को चाहति जिनहुं करति है। तिन ही ते बड कशट परति है।
अजितेंद्री जबि पिखहि कि सुनि है। काम उपाबति उर ततछिन है ॥ ३२ ॥
तिय को चहनि कहति हैं काम। सकल चाह सो भी लखि नाम।
धन इसत्री ते आदि पदारथ। पिखि सुनि लैबे चाहति स्वारथ ॥ ३३ ॥
जबहि लैन हित काम[4] उठावा। तिह प्रतिबंधक जो दरसावा।
तबहि क्रोध मन मांहि उपावै। क्रिताक्रित न पुन चित आवै ॥ ३४ ॥
होइ क्रोध बसि करति कुकरम। बुधि सभि नासहि त्यागहि धरम।
जबि नर को उर क्रोध उपाइ। को अस पाप जु करि न सकाइ ॥ ३५ ॥
मात पिता गुरदेव महाने। करति अवग्या कछू न जाने।
जो है अवध, बधहि तिन ताईं। निशठुर[5] बाक कहै समुदाई ॥ ३६ ॥
उपजे क्रोध अपर क्या कहिनो। प्रान बिनासहि जाइ न सहिनो।
आन समान न प्रान हान कै। सो भी करहि अजान जानि कै ॥ ३७ ॥
जे क्रोधति हुइ बसि नहिं चलै। उर महिं तपतहि काम न मिलै।
तिह दुख ते नहि करहि अहारा। निस महिं नींद न पाई दुखारा ॥ ३८ ॥

---

1. क्लेष। 2. दिलवाने के लिए। 3. इरादा, अभिप्राय। 4. कामना।
5. कठोर, निर्दयी।

दिवस जामनी इम तपतावै। अनिक भांति संकलप उठावै।
गिनती गिनहि न ओरक आवै। एक कशट महिं बैस बितावै।। ३९ ।।
मतसर महत असूया धारै। इत्यादिक उपजाइ बिकारै।
यांते काम मूल मन जानि। अपर बिकार कांड फल मानि।। ४० ।।
जबहि मूल को देहिं उखेरा। शाखा पत्र न फल ह्वै फेर।
इम अवगुन उर ते परहरै। सद गुन आनि प्रवेशनि करैं।। ४१ ।।
करनी छिमां महां तप जान। छिमा करनि ही दैबो दान।
छिमा सकल तीरथ अशनान। छिमा करति नर की कलिआन।। ४२ ।।
छिमा समान आन गुन नांही। यांते छिमा धरहु मन मांही।
सद गुन को नहिं त्यागनि कीजै। सदा रिदै महिं इसथिर कीजै।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मक्खण शाह को बरजनि' प्रसंग बरननं नाम सपतदसमो अंशु ।। १७ ।।

अंशु १८
मात नानकी बाक प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार जबि सतिगुरु मक्खण को बहु बारि ।
'धीर मल्य की वसतु सभि फेरहु' करति उचारि ॥ १ ॥

चौपई

मात नानकी तबि चलि आई । जिसके रिदे अधिक रिस छाई ।
धीरमल्ल कीनसि अपराधू । तिस को हित चहि पुन इह साधू ॥ २ ॥
जोग दंड को शत्रु बिसाला । जवाला बमणी[1] इति तिस काला ।
प्रान हानि लगि कीनि खुदाई । हम घर की सभि वसतु लुटाई ॥ ३ ॥
इम असमंजस लखि करि आई । मक्खन सहित उठे अतुराई ।
हाथ जोरि पद बंदन ठानी । बैठी माता परम सु स्यानी ॥ ४ ॥
श्री गुर पिखि कै तूशनि रहे । अपरभि नहीं बाक किसि कहे ।
दीरघ सीतल स्वासनि लीनसि । जल पर पुलत[2] बिलोचन कीनस ॥ ५ ॥
भो मक्खण सिख ! सुनीअहि बाती । मम सुत सदा रहति इह भांती ।
भए पंच भ्राता बर बीर । छत्री धरम बिखै धरि धीर ॥ ६ ॥
वडो भ्रात गुरदिता भयो । सभि ते लघु मम सुत जनम्यो ।
नहिं बिवहार रुचहि जिस कोई । बैठहि नित इकांत को होई ॥ ७ ॥
नहिं बोलनि करतो किह संग । लेनि देनि तो कहां सु ढंग ।
सिख्य अनेक उपाइन ल्यावहिं । मनहिं बेनती गुरू मनावहि ॥ ८ ॥
इस के भ्रात सरब बुधिवंते । लेबि देबि[3] सभि सों बरतंते ।
बहुत मोल के बसत्रनि पहिरैं । सिख्यनि बिखै पुजावहिं ठहिरैं ॥ ९ ॥
है जिस उचित बरत हैं तैसे । अनिक मनुज संगी रहिं जैसे ।
बहुत मोल के भूखत धारैं । अपनि अधिकता चहति उचारैं ॥ १० ॥

---

1. बंदूक । 2. भरे हुए । 3. लेन देन ।

पिता पास ते अपनि बडाई। अभिलाखति भे बिधिनि बनाई।
तरुल तुरंगनि पर आरोहैं। शसत्र सजाइ सभिनि महिं सोहैं॥ ११ ॥
पिता के साथ जहां कहिं जाहिं। भनहिं सुनहिं बिदतहिं सभि मांहि।
सवतन[1] सुत अरु निज सुत चाल। मम मन होवति देखि बिहाल॥ १२॥
निस बासुर चिंता महिं रहौं। किस संग कैसे नहिं कहौं।
अपने भाग जानि करि मंद। सवतनि सुत को लखौं बिलंद॥ १३ ॥
कितिक द्योस बीतहिं घर मांहि। कबि कबि जांहि पिता निज पाहि।
सभि ते लघु अपनो सुत देखि। रीति शांति की रिहै अशेख[2]॥ १४ ॥
चारहुं सुत ते पिखि लघु मेरा। करति भए सनमान बडेरा।
चरन उठाइ बिठावनि कीनसि। मुख ते बोलि अधिक हित दीनसि॥ १५ ॥
देखि पुत्र पर पिता सनेह। मन मेरे भा हरख अछेहु[3]।
कितिक बेर बैठे उठि आवा। नहीं पुत्र मम कछू अलावा॥ १६ ॥
आवति की दिशि देखति रहे। प्रेम भरे लोचन मैं लहे।
इसी प्रकार जबहि जबि गइउ। दिन प्रति प्रेम अधिक ही भइउ॥ १७॥
कई बार मैं देखनि कीनि। त्यों त्यों मम मन संसै भीन।
एक दिवस पिखि जग गुर बैसे। हाथ जोरि मैं बूझे ऐसे॥ १८ ॥
मम सुत नहिं जानहिं बिवहार। नहीं रिदे महिं बुद्धि उदार।
नहिं बोलहि नहिं किस ते सुनि है। को कारज किहु भांति न बनि है॥ १९॥
सरब भांति महिं भोर सुभाऊ। नहीं सुजान पछान न काऊ।
इक परंतु ऐसे सुख होवा। तुमरे ढिग मैं आवति जोवा॥ २० ॥
चारहुं पुत्रनि ते इस केर। करते हो सनमान बडेर।
गुर दित्ता सूरज मल्ल जोइ। अनीराइ तीसर सुत सोइ॥ २१ ॥
अटलराइ चारहुं मतिवान। इन को अस न करहु सनमान।
मम सुत को सादर बैठाई। श्री मुख ते बहु करति बडाई॥ २२॥
को कारन इस महिं समुझावहु। नित संसै हुइ रिदै मिटावहु।
सुनि कै जग गुर मुग़ल अराती[4]। दीरघ बाहू आयुत छाती॥ २३ ॥
कमल पत्र बिसतिरति बिलोचन। अविलोकति मोचति चित सोचनि।
सरब नरनि ते दहि बिसाल। कौन करै समता तिन माल॥ २४॥
कहति भए पिखि मुझ कर जोरी[5]। इसकी सुनहुं बात, मति भोरी।
महां पुरख इह हुइ बडभाग। जिसके रिदै द्वैश नहिं राग॥ २५ ॥

---

1. सौतेला पुत्र। 2. पूरण। 3. बहुत। 4. नाश करने वाले, शत्रु। 5. हाथ जोड़ना।

इसके सुत पुरशोतम होइ। जिसकी समता करहि न कोइ।
जगत बिखै बड बधहि प्रतापु। करता दुशट मलेछनि साप ॥ २६ ॥
श्री गुर नानक को जसु चंद। चंदन सम उजलाइ बिलंद।
रच्छा करहि धरम की धरनी[1]। धरनी कीरति करि है करनी ॥ २७ ॥
अवनी अखिल, आप निध अंबर[2]। अंबर लगि जसु कथहि सुरंबर[3]।
श्री गुर नानक नाम उदारा। उज्जल करहि जगत बिसतारा ॥ २८ ॥
यांते इन को आदर घनो। करति सभिनि ते कीरति सनो[4]।
इसके पित अस साच उवाची। करवि प्रतीछन रुचि मैं राची ॥ २९ ॥
मैं बय[5] ते अबि बिरधा भई। कबि सुसमा इस सुत जनमई।
तिन को बाक होइ सद साचे। सत्य संध[6] नित सति अहि राचे ॥ ३० ॥
इक तौ इह बिरतांत बखाना। दुतिय कहौं मक्खण ! सुनि काना।
अंत समैं महि मैं तिसकाल। निज दिश ते हुइ दीन बिसाल ॥ ३१ ॥
हाथ जोरि करि आगै खरी। खरी रीति मैं बिनती करी।
करी[7] सुंड जैसे भुजदंड। दंड जु देति शत्रु गन खंडि ॥ ३२ ॥
हे प्रभु! मोहि गती क्या होइ। मम सुत लखहि बिहार न कोइ[8]।
आप बिना को हमरो नाथ। जिन के पखी कोइ न साथ ॥ ३३ ॥
किसके हम अलंब हुइ जीवहिं। जबि निरासरे तुझ ते थीवहि।
गुरदिते के सुत हरिराइ। गुर गादी पर दए टिकाइ ॥ ३४ ॥
पुत्र सरल की मैं हौ माता। जिस बिवहार कछू न जाता।
रावर अबि बिकुठ चहि जाने। प्रतिपालक थे सदा महाने ॥ ३५ ॥
तेग बहादर के पित सुनि कै। धीरज दीनि मोहि बच मनि कै।
नहि चिंता करि तूं किस भांति। सभि गुन की निधि है तुव तात ॥ ३६ ॥
अपर थान फिर करि गुरिआई। पुन आवहि तुझ घर वडिआई।
सभि ही नमहि तोहि ढिग आइ। कोइ न करि सकि है समताइ ॥ ३७ ॥
निंदक मतसर करि पछुतावहि। जो पूजहि सभि बांछति पावहि।
इस प्रकार कहि सुझ हरखावा। क्रिपा द्रिशटि देखे सुख पावा ॥ ३८ ॥
मम सुत-पित[9] को जो अस बैन। करहुं प्रतीछन[10] मैं दिन रैन।
अबि साचा सो होवनि लागा। तऊ मोहि सुत दिढ बैरागा ॥ ३९ ॥

1. धरती। 2. आकाश। 3. श्रेष्ठ देवता (विष्णु)। 4. सहित। 5. आयु। 6. वाक्य सत्य हो। 7. हाथी। 8. मेरा पुत्र दुनियादारी को नहीं समझता। 9. पति। 10. प्रतीक्षा।

धीरमल्ल ते आदि शरीका। करति द्वैश नहिं भावहि नीका।
प्रान हानि लगि करति खुटाई। ज्वाला बमणी कहि चलिवाई ॥ ४० ॥
तिस के भी हित, बातनि हेरि। फेरहि कौन कहैं बहु बेर[1]।
धीरमल्ल को बडो समाज। सरब सम्रिद्ध तांहि, घर श्राज ॥ ४१ ॥
हमरो जेतिक अहै गुजारा। सो नीके तैं द्रिगनि निहारा।
तऊ संतोष सहित सुत मेरा। फिरवावति[2] कहि दरब घनेरा ॥ ४२ ॥
त्रिशना अगनि लगी तिन घर को। चहैं दरब नित, शांति न उर को।
जिम इह कहैं मानिबो सोऊ। चलहि नहीं बस हमरो कोऊ' ॥ ४३ ॥
इम कहि जननी ढोरति लोचन। असमंजस लखि करती सोचन।
मम सुत तिन को करहि भलेरा। धन मद ते सो क्रित अघ केरा ॥ ४४ ॥
तूशनि जननी ने तबि ठाना। मम सुत बच्यो इही बड जाना।
इम बोलति सुनिते गुर धामा। बीती तबहि जामनी[3] जामा[4] ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मात नानकी बाक' प्रसंग बरननं नाम अशट दशमो अंशु ॥ १८ ॥

1. बार (बहुत)। 2. लौटा देता है। 3-4 पहर रात।

अंशु १९

धीरमल से मसंद बाक प्रसंग

दोहरा

सुनि जननी के वाक को दुचिता मक्खण जानि ।
बहुर कह्यो 'नहिं देर करि जाहु धीरमल्ल थान ।। १ ।।

चौपई

फेरहु वसतु जितिक तिन केरी । निज धन को भी दीजहि फेरी ।
चंचल लछमी थिर न रहति है । आए सुख चित, गई दहति[1] है ।। २ ।।
लोभी इस हित पाप अनेक । करति करति म्रितु लहिं अबिबेक ।
ज्यों प्रभु राखै तिम इह रहैं । शबद बिखै श्री नानक कहैं ।। ३ ।।

श्री राग महला १ घरु ५ ।

अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ।
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ।। १ ।।

चौपई

छल ते छली न जावहि माया । आदि कटार न आयुध छाया ।
तऊ नरनि के मन टलपलै[2] । हम को सभि ते बहुती मिलै ।। ४ ।।
संचनि, पालनि, नाश मझार । दुख दायक धन को निरधार ।
भो मक्खण ! क्यों चिंता करैं । देहु धीरमल्ल उर दुख हरैं ।। ५ ।।
लोभी धन ते सुख को चाहै । निस दिन इह तिन के उर दाहै ।
अपर बिचार करहु नहिं कोई । आनी वसतु दीजि यहि सोई ।। ६ ।।
गुर बच श्रिखल ते रुक गइउ । मक्खण मन कुंजर[3] तबि भइऊ ।
कहनि लग्यो 'भो गुरहि रजाइ । हमरो बस न चलहि किस भाइ ।। ७ ।।
रावरि वार्कनि के अनुसारा । इस प्रकार है मतो हमारा' ।
गुर जननी के देखति तहां । निज म्रित्यनि सो मक्खण कहा ।। ८ ।।

---

1. जलाती है । 2. उलटना । 3. हाथी ।

'धीरमल्ल के निकटि सिधावहु। दरब वसतु दिहु, पुनहिं सुनावहु।
इम जानहुं सतिगुर बडिआई। बुरे करति सो ठरहिं भलाई॥ ९ ॥
बहुर नहीं किम करनी रार। दुरचारनि सों मसलत धारि।
सतिगुर करुना ते इम भई। वसतू अपराधी कहु दई॥ १० ॥
भली भई नहिं आयुध चाले। चलति जि, नहिं पायत कित भाले।
जीवति रह्यो दरब पुन पाया। इह श्री तेग बहादर दाया[1]॥ ११ ॥
इम कहि पठे सु मक्खण शाह। वसतू अखिल सौंपि करि तांहि।
श्री गुर इम वसतू फिरवाइ। पौढे म्रिदुल सेज पर जाइ॥ १२ ॥
तबि मक्खण उठि बंदनि करि कै। सौंपति वसतु संभारनि करिकै।
अखल दई वसतू जबि फेरि। पुनहि ग्रिंथ साहिब जी हेरि॥ १३ ॥
दियो न चहति अमोलक जानि। रहै गुरू ढिग इच्छा ठानि।
तिह ढिग होनि अजोग पछानि। गुर घर महिं रहि उचित सु मानि॥ १४ ॥
गुर जननी सों बानी प्राही। 'इह समान दूसर कुछ नांही।
नहिं फेरहुं ऐसे मत मेरा। निज घर महिं करिवावहु डेरा॥ १५ ॥
पुछ न पूछें, कहहु न कोई। इस दरशन परसे सुख होई'।
एम मतो करि सदन रखायो। नहिं बहुतनि के पास बतायो॥ १६ ॥
कै करि सरब वसतु को दास। अरपी जाइ धीरमल पास।
कहिवत मक्खण की सु सुनाई। सतिगुर की करुना सु बताई॥ १७ ॥
बाव बाक ते बीधन होवा। धीरमल्ल ऊचे नहिं जोवा।
बरै लोभ, तन तज्यो न जाई। सहै न उर बाक जि दुखदाई॥ १८ ॥
दुशनि रह्यो धार करि जदा। लीनसि वसतु मसंदनि तदा।
श्री गुर तेग बहादर केरी। बड बहादुरी लखि तिस बेरी॥ १९ ॥
बानि जानि बड ए बडिआई। लज्जयत होति, सही नहिं जाई।
अपनो भी हित है जिस मांही। तऊ दुखद लखि हरखति नांही॥ २० ॥
आइ दास जो दे दे जांहि। ले मसंद सो राखहिं पाहि।
नहिं बिलोकनो किस दिशि करिही। लज्जा धरति मनहु अबि मरिही॥ २१ ॥
रिदै बिचारति भा बहु भांति। गुरता के गुन इह बख्यात।
मैं अपराध कीनि तिन ऐसे। प्रान हानि हुइ जावहिं जैसे॥ २२ ॥
सो अपराध चितो नहिं कोई। पुन कीनसि जिम मम हित होई।
हरि किस महिं ऐसे गुन नांही। जस गुर तेग बहादर मांही॥ २३ ॥

---

1. कृपा, दया।

गुरता उचित न कैसे होइ। धंन धंन तिन सम नहिं कोइ।
अपनो दरब, वसतु मम सारी। फेरि, दीनि, अवगुन न बिचारी ।। २४ ।।
सुनति हुते ब्रिच्छनि की रीति। संतनि बिखै बसति है मीत।
अपकारी पर ह्वै उपकारी। सो अबि नीकी नैन निहारी ।। २५ ।।
इम बिचारि करि करि पछुतावहि। अपनि आप को धिकहि[1] मनावहि।
सरब वसतु को लेय मसंद। पिख्यो धीरमल दुखी बिलंद ।। २६ ।।
ग्रीवा को ऊची न उठावै। नहिं सनमुख किह नेत्र लगावै।
इम मम जानि धीर को देनि। कह्यो मसंद फुलावनि फेन[2] ।। २७ ।।
'क्यों तुम दीन मने हुइ रहे। अपनि प्रताप आप नहिं लहे।
बडो प्रभाव पछानि तुमारो। निज को लघुता बिखै बिचारो ।। २८ ।।
दरब सहित वसतू दे दीनसि। अपने उचित नहीं इम चीनसि।
तुमरे सदन बिखै गुरिआई। नहिं किस हूं ते छपहि छपाई ।। २९ ।।
गुर हरिराइ अनुज तू अहै। निज भ्राता की समता लहैं।
द्वै हज़ार द्वै शत असवार। हुते साथ निज शसत्रनि धारि ।। ३० ।।
ऐश्वरज महिं घर बडो तुमारा। जाहर जगत जानतो सारा।
श्री गुर हरि गुबिंद जी आपी। तुमरे घर को गुरता थापी ।। ३१ ।।
देश अनेक गिने नहिं जाइं। पूजति रहे उपाइन ल्याइ।
कहां भयो इक सिख परदेसी। किय अजोगता मूढनि जैसी ।। ३२ ।।
तउ चचा तुम तेग बहादर। लखहि आप के घर को आदर।
तुम ते ऊन[3] आप को जाना। अखिल उपाइन को अरपाना ।। ३३ ।।
किधौं तुमारे ते डरपावा। बात भविख्यत महिं चित लावा।
परदेसी मक्खण चलि जाइ। के चित बासुर इहां बसाइ ।। ३४ ।।
पुनहि इकाकी मैं रहि जावौं। तदा सहाइत किस की पावौं।
त्रास भविख्यत केर विचारा। दीनसि वसतू अरु धन सारा ।। ३५ ।।
हरखहु करि उतसाहु बडेरा। चिंत करनि की नहिं इह बेरा।
मिलहि तोहि सभि बिधि वडिआई। व्रधहि सभ्रिध[4] सैन समुदाई ।। ३६ ।।
वसतु संभारहु दरब समेता। गुरुता थिरता तोहि निकेता।
धरि धीरज अस बातनि मांही। होहि दीन उचिती तुझ नांही ।। ३७ ।।
जे उतसाह गेर इम देवैं। कोइ न आइ तोहि पग नेवैं।
सकल पदारथ अबि घर आए। देहु लेहु मन मोद बढाए ।। ३८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल से मसंद बाक' प्रसंग बरनन नाम एक ऊन बिसती अंशू ।। १९ ।।

---

1. धिक्कार। 2. झाग। 3. कम। 4. समग्री।

अंशु २०

धीरमल्ल को चढ़न प्रसंग

दोहरा

सुनि मसंद के बाक को धीरमल्ल लघु धीर[1]।
कुछक दीन मन होइ कै कह्यो पाइ पर पीर ॥ १ ॥

चौपई

'भो मसंद ! तैं भन्यो बनाइ। जे ऊह चहित मोहि मरिवाइ।
जिस के पास पंच सै नर हैं। अस मक्खण अबि अनुसरि है ॥ २ ॥
तिस रजाइ को पाइ करंता। यांते बच्यो मोहि नहिं हंता।
पूरब भी शांती चित सोइ। कबहुं कुकरम कीनि नहिं कोइ ॥ ३ ॥
अबि भी करि नहिं सकहि खुटाई। मुझ मन मैं इस ही बिधि आई।
अथवा तोहि कह्यो जिस भांती। हुई होइगी तैसिहुं बातीं ॥ ४ ॥
तऊ सुनहु मोकहु दुखदाई। भयो बिगार जि नहिं सुधराई।
पति महिं रखणा[2] अस पर गइउ। जिस ते पूरब सम नहिं भइउ ॥ ५ ॥
अपजसु बिथरहि सभिहिनि मांही। इह बिरतांत दुरहि किम नांही।
सोढी ब्रिंद शरीक हमारे। मिलहिं परसपर हसहिं उदारे ॥ ६ ॥
सभि बिधि मेरी भनहिं खुटाई। तेग बहादर की भलिआई।
किम बैठौं मैं सभा मझारी। होवौं लज्जित रिदे बिचारी ॥ ७ ॥
जे रहिते करतारपुरे महिं। अस बिनपती[3] होति तिहठां नहिं।
निज निकेत रहि सुजसु समेत। आवहिं सिख संगति करि हेतु ॥ ८ ॥
अनगन चली उपाइन आवहि। निज घर महिं सभि बिधि सुख पावहिं।
केतिक मिलति जि मक्खन जैसे। पिखनि समथ न ह्वै तिह कैसे ॥ ९ ॥
तें कहि कहि उपदेश घनेरे। इहां आनि करिवायहु डेरे।
पुनह चल्यो छींकति मैं बरज्यो। नहिं मान्यों, अपनो मत सरज्यो ॥ १० ॥

1. थोड़ा सा धैर्य। 2. अंतर। 3. अनादर।

अपजसु को संकट मुझ दीनसि। तुम अनुसार एहु फल लीनसि।
जथा तुरंग होइ मुहताणा[1]। जाहि कुमारग करे धिङाणा[2] ॥ ११ ॥
बिखरी धरा गेरि असवार। पुन बिचरति निज इच्छा धारि।
तस मेरे संग कीनसि बात। पुन न हाथ आवहि किस भांति ॥ १२ ॥
मम चित अबि थिरता नहिं गहें। कुतो[3] शरीक हास को सहें।
मैं तो इहां राति ही रहौं। तिमर[4] होति ही निकसनि चहौं ॥ १३ ॥
नहिं किस हूं निज मुख दिखलावौं। अरणोदै[5] ते प्रथम सिधावौं।
अस लालच तैं मोहि करावा। जिस ते पूरब सुजसु नसावा ॥ १४ ॥
अबि तू वसतु संभारनि करीअहि। रहो गई की सोझी धरीअहि।
सभि के भार लेहु बंधवाइ। डेरा त्यार करहु समुदाइ ॥ १५ ॥
अपने नगर बिखै नित रहैं। जहिं सभि बिधि की कीरति लहैं।
रहैं जि ग्राम बकाले ठौरा। सरब शरीकनि महिं भा हौरा[6] ॥ १६ ॥
चाहनि[7] आए अधिक बडाई। भई प्रथम ही ते लघुताई।
इस प्रकार को मति सुनि करिकै। रह्यो मसंद मौनता धरिकै ॥ १७ ॥
धीरमल्ल ते सुनि भ्रित सारे। वसतु सहित डोरे किय त्यारे।
जाग्रत रहे नींद नहिं आई। बंधे भार धरे इक थांई ॥ १८ ॥
मक्खण के नर दे दे जाहिं। ले ले भार सकल बंधावहिं।
अरध रात्रि लौ रौरा रह्यो। पुन टिक रहे थान निज लह्यो ॥ १९ ॥
मक्खण अपने जन सभि लीने। सिवर जाइ सिहजा सुख भीने।
निज गुर को बदला लै गयो। तऊ रिदे महिं अटपट भयो ॥ २० ॥
गुर सुशीलता अधिक बिचारति। अपर कौन इम छिमा सु धारति।
तिनहुं कीनि दीरघ अपराधू। इह कैसे बरतैं बड साधू ॥ २१ ॥
निज धन वसतू तिस की दई। नहीं बिकिरता[8] बुधि की भई
धीरज उर महिं रहि इकसारा। नहिं कोई अपराध बिचारा ॥ २२ ॥
इत्यादिक गुण सहित बिबेक। मक्खण चितवति रिदे अनेक।
भयो नींद वसि मुंद्रित नैन। निज घर पौढे गुर सुख दैन ॥ २३ ॥
आधी राति ढरी जबि आइ। लोक गए टिक निज निज थांइ।
आदि मसंद अपर मुखि मानव। धीरमल्ल सों कीनि वखानव ॥ २४ ॥

---

1. मुंहज़ोर। 2. ज़बर्दस्ती। 3. कैसे। 4. अंधेरा। 5. सूर्योदय से पहले।
6. लज्जित। 7. चाव से। 8. बिगाड़।

'अपनी वसतु अखिल ही आई। आयो संग दरब समुदाई।
श्री ग्रिथ साहिब जी महां। सो नहिं दीनसि राख्यो तहां ॥ २५ ॥
जिस कै सम को दूसर नांही। वसतु अमोलक तुमरे पांही।
जिसको तजनो नहिं बनि आइ। जो बडिअनि के हाथनि काइ ॥ २६ ॥
संगति सगरी जिह बड मानहि। दरशन करहि क्रितारथ जानहि।
ज्यों क्यों देवहि तिह अनवावहु[1]। तिस बिहीन किम घर को जावहु ॥ २७ ॥
ऐसी वसतु हाथ नहिं आवहि। सभिहिनि बिखै महतता पावहि'।
सुनि कै धीरमल्ल अनुखायो। मम घर ते तुम ने सु गवायो ॥ २८ ॥
मम घर किम आवै जे गयो। रिपु बलवान पास जे थियो।
लरिबे ते हम हाथ न आवै। जाचनि तिन ते किम बनि आवै ॥ २९ ॥
मारनि मरन बैर परि गयो। तुमरे प्रेरे मैं करि लयो।
आइ ग्रिथ साहिब हम पाही। अस उपाइ को पायति नांही ॥ ३० ॥
बसतु दरब इह सभि कर आइ। कहहु ग्रिथ साहिब कित पांइ[2]।
इहु तौ काज बुरो बहु भयो। जिस को नहिं उपाइ कुछ थियो[3] ॥ ३१ ॥
जे करि बैठि रहौं इस थान। तऊ न सो दै है मुझ आनि।
श्री गुर अरजन जी इहु कीना। हमहिं गुरु हरिगोबिंद दीना ॥ ३२ ॥
उन के हमरे हैं सु बडेरे। दावा करि बैठहिं इस बेरे।
जे गुर तेग बहादर देय। नहिं लालच करि आप सु लेय ॥ ३३ ॥
तौ हमरे कर आवैं सोइ। अपर उपाइ चलहि नहिं कोइ।
तऊ न मेरो होवहि रहिनो। महां कशट इह जाइ न सहिनो ॥ ३४ ॥
मोर होति ते प्रिथम सिधावौं। श्री करतार पुरे महिं जावौं।
श्री गुर नानक आदि महाने। श्री हरिराइ तीक जग माने ॥ ३५ ॥
सभिहिनि के में चरन मनावौं। बहु पंचांम्रित करि बरतावौं।
श्री गुर तेग बहादर रिदे। बस करि, बुधि फेरहिं जद कदे ॥ ३६ ॥
देहिं ग्रिथ साहिब बिन जाचे। पुरहिं काम इह सतिगुर साचे।
शरन बडनि की बिना जि आन। नहिं उपाइ को निशचै जानि ॥ ३७ ॥
सो मैं शरन सभिनि की अहों। तिन ते पुरन कामना चहौं।
जतन हुतो इहु सो करि दीनि। अपर उपाइन ते मैं हीन' ॥ ३८ ॥
पसचाताप करति बहु बारी। सोचति संकट प्रापति भारी।
इम बिरलापति बहुत बिसूरति। अचल रहति जनु चित्री मूरति ॥ ३९ ॥

---

1. मंगाओ। 2. कहां से प्राप्त करें ? 3. जिसका कोई उपाय नहीं हो सकता।

जाग्रति बीत गई सभि रैन। पौढि, नहीं तबि मुंदे नैन।
चिंता सलिता मन अरबिंद। बह्यो फिरति दुख मानि बिलंद ॥ ४० ॥

चतर घटी राती जबि रही। धीर मल्ल निज जन सो कही।
आनहुं अबहि जु बाहन मेरा। परहुं पंथ, नहिं कीजहि देरा ॥ ४१ ॥

अपनी बसतु अखिल संभारी। लीनि दरब मुख तूशनि धारी।
गमने मारग पुरि करतार। चितहि ग्रिंथ जी रिदे मझार ॥ ४२ ॥

भली बडाई पावनि आए। हुती प्रथम भी दई गवाए।
अधिक बिसूरति निज घर गयो। नहिं बसि चल्यो रिदे पछुतयो ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीरमल्ल को चढ़न' प्रसंग **बरननं** नाम बिसंती अंशु ॥ ३० ॥

अंशु २१

श्री अंम्रितसर गमन प्रसंग

दोहरा

ग्राम बकाले के बिखै होई जबहि प्रभाति।
धीरमल्ल की सिवर पिखि पर्यो, गा रात[1] ॥ १ ॥

चौपई

सभिहिनि पेख्यो उठि सो गयो। नहिं रहि सक्यो खोट जिन कयो।
निज प्रानिनि मैं संसे जाना। जिस ने क्रूर करम इत ठाना ॥ २ ॥
कैसे चरन टिकहिं तिस केरे। बड अपराध कीनि सभि हेरे।
बसति करति भा संसे प्रान। सम काइर के धीर धरा न ॥ ३ ॥
इस प्रकार तहिं मक्खण शाह। रह्यो गुरु ढिग प्रेम उमाह।
दरशन दरसहि परसहि चरन। हर्यो चहै दुख जनम रु मरन ॥ ४ ॥
नित प्रति शरधा अधिक बधावहि। श्री सुख बाक सुनहि सुख पावहि।
श्री गुर भगति ग्यान उपदेशहिं। कटति कलेश अशेश हमेशहिं ॥ ५ ॥
इक दिन मक्खणशाह बखाना। 'श्री गुरदेव अनंद निधाना।
गुर अरजन जी रच्यो सुधासर। तिन के पित उपदेश्यो जो कर ॥ ६ ॥
तहां जानि की है मम चाहू। मज्जन करो कलुख गन दाहू।
भलो परब अबि पहुंच्यो आनि। भयो बिसाखी को इशनान ॥ ७ ॥
दरशन दरसौं श्री गुर धाम। कही प्रशंसा जिस अभिराम।
रावर की मैं आइसु पाइ। पुन आवौं सुंदर दरसाइ[2] ॥ ८ ॥
श्री गुर कह्यो दूर कुछ नाँही। जिस दरशन ते सभि सुख पाहीं।
हम भी गमनहिं चलि दरसैं हैं। करहिं शनान थान सिर न्यै हैं ॥ ९ ॥
चलहिं बेग इकठे मग सोइ। मिलहि आइ पुन हरखति होइ।
सतिगुर करहिं भावना पूरी। उज्जल सुमति होइ बिधि रूरी ॥ १० ॥

---

1. रात को चला गया। 2. दर्शन करके।

इस प्रकार सतिगुरु फुरमाइ। 'त्यारी करहु' सु दीनि रज़ाइ[1]।
सुनि मक्खण हरख्यो इस भाइ। कारन इक, द्वै कारज पाइ ॥ ११ ॥

अपने भाग धंन मन जाने। दया गुरु की मानि महाने।
जबि लौ दरशन होवति रहैं। तबि लौ लाभ अधिक मुझ अहै ॥ १२ ॥

भयो सु त्यार कूच किय डेरा। गुरू घर को आयहु तिस बेरा।
पद अरबिंद बंदना कीनसि। दरशन दरसि प्रेम रस भीनसि ॥ १३ ॥

'रावर करहु अरूढनि जिस पर। सो अनवावौं[2] तुम रज़ाइ करि।
चढ़हु उचावहिं जाहिं कहार। नतुर तुरंगम बली उदार ॥ १४ ॥

कै बड़वा[3] की लिहु असवारी। गमहु पंथ जिस रीति सुखारी।
रावर की रज़ाइ है जैसे। तुम हित करि हैं त्यारी तैसे ॥ १५ ॥

सुनि करि श्री गुरु तेग बहादुर। 'जो वाहन[4] होवहि अबि हादर[5]।
तिस पर चलहिं बिचार न काई'। तबि मक्खण बड़वा मंगवाई ॥ १६ ॥

सुंदर जीन जराऊ पाइ। सरब साज जिस उचित सुहाइ।
बरण सवेत तन रजत समान। धीर तुरंगनि रूचिर महान ॥ १७ ॥

छेरति तेज उठाव बडेरा। सुखदायक मग गमनत बेरा।
मारग चलै थोरई जानै। पहुंचहि दूर उलंघि बड थानै ॥ १८ ॥

पिखि प्रसंग तिहं श्री गुर भए। त्यारी कीनि दास संग लए।
हुती तेज तुरंगनि गुर केरी। सो बिच[6] सदन बंधाइव हेरी ॥ १९ ॥

हुती धीर जो मक्खण दीनि। तिह अरूढि करि चले प्रबीन।
गमन्यों मक्खण शाह पिछारी। लिये संग मानुख भट भारी ॥ २० ॥

मारग गए उलंघ करि सारा। जाइ सुधासर तबहि निहारा।
हुते मसंद अगारी जेते। गुर आगमन श्रोन सुनि तेते ॥ २१ ॥

कहूं कहूं गमने डरपाइ। मत हम साथ बिगर इह जाइ।
दरब आमदन देखि बिसाला। अबि मेले को आयो काला ॥ २२ ॥

रहहिं जि आप बिलोकहिं तांही। हम ते पुन लै हैं बिधि याही।
मक्खण सिक्ख संग जिन अहै। हम सों करहि जथा चित चहै ॥ २३ ॥

धीरमल्ल को लूट्यो डेरा। गुर घर महिं तिस ते न बडेरा।
अपर कौन सों करहि भलाई। हम ते धन ले पाइ गुराई ॥ २४ ॥

---

1. आज्ञा दी। 2. मंगवाता हूँ। 3. घोड़ी। 4. वाहन; सवारी। 5. त्यार। 6. घर में।

मिलहु नहीं को जाइ अगारी। छमीअहि निज निज थान मझारी।
इन को सदा सुभाव सिसूते[1]। प्रीति न करिहैं कबहि किसू ते ॥ २५ ॥
सभिहिनि ते हुइ बहहि निराला। मेल न किस मसंद के नाला।
गुरता इन कहु प्रापति भई। इह सभि बात अबहि बिदतई[2] ॥ २६ ॥
नहिं मसंद को मिलने आवा। अपर न किन हूं दीनि चढावा।
प्रथमै अंम्रितसर जी आयो। दरब संभारनि को ललचायो ॥ २७ ॥
अपर मसंद सरब मिलि जाइं। गुरता इन की अचल टिकाइं।
अबि लौ सभिहिनि संसै अहा। गुरु भयो निशचै नहिं लहा ॥ २८ ॥
हरिगुबिंद गुर के इह नंदन। दावा राखति उपर मसंदन।
इन सों मिलिनि न अबि बनि आइ। नहीं कठोर कहे बच जाइं ॥ २९ ॥
इम बिचारि करि आपस मांहि। दुरे मंरमति संसै प्राहि।
श्री हरिमंदर चारों द्वार। करे असंजति सभिनि किवार ॥ ३० ॥
हुतो दरशनी पौर बडेरा। दे कपाट तारे पुन मेरा।
श्री गुर तेग बहादर स्वामी। लखि मसंद बिधि अंतर जामी ॥ ३१ ॥
गए तहां जबि, पिख्यो न कोई। बेमुख भए जानि मन सोई।
मक्खण साथ साथ कह्यो इस भांति। 'पिखहु मसंदनि को बिरतांत ॥ ३२ ॥
भिनं भिनं हुइ छपे सथान। नहिं आए करिबे सनमान।
धन के लोभ लगे मतिमंद। हम को सुनि नहिं भए अनंद ॥ ३३ ॥
श्री गुर मंदिर के दरवाजे। भोरि गए नहिं बाजति बाजे।
सबद कीरतन सुनियति नांही। कीनस कहां महां लब मांही ॥ ३४ ॥
सुनि मक्खण बोल्यो गुर संग। फुरमावनि मुझ करहु निसंग।
इन सो करौं धीरमल्ल जैसे। दंड उचित दुरजन हुइ ऐसे ॥ ३५ ॥
तुमरो वसतु दरब समुदाए। करहिं चुरावनि मद[3] उपजाए।
अबि तुम को देखति दुर[4] रहे। सनमुख आइ सु बाक न कहे ॥ ३६ ॥
नहीं उपाइन आगे धरी। दीन होइ नहिं बिनती करी।
अस अनीति कस सकहिं सहार। जावति मति दीजहि नहिं तार[5] ॥ ३७ ॥
छमी पुरख महिं तुम परधान। करहु छिमा सभि दंड सथान'।
श्री गुर कह्यो 'समो जबि आवहि। दुशट मंद ताड़न को पावहिं ॥ ३८ ॥
सभि मसंद ते लै हैं लेखा। पीड़हिं निज दरगाह बिशेखा।
श्री गुर अरजन जी इक काल। इन को पिखि करि खोट बिसाल ॥ ३९ ॥

---

1. बाल्य काल से। 2. प्रकट हुई। 3. अहं। 4. [illegible]ना। 5. ताड़ना।

दीनहुं स्राप रहहिं जर[1] नांही। किसी समें महिं ह्वै बिनसाही।
समैं आइ जबि प्रापति होइ। इन को मूल बिनासहि सोइ ॥ ४० ॥

घरे लोभ इह मरे अगारी। दयो स्राप इन जरे उखारी।
मरे हूए इह, क्या हम मारैं। शरधा हीन सिदक उर हारैं ॥ ४१ ॥

हम नहि बुरा किसू को करिहीं। जस कुकरम तस फल को भरिहीं।
तू अबि करि शनान सर माहिं। जिसते अखिल पाप बिनसाहिं ॥ ४२ ॥

मनो कामना पूरन करै। मन की तन की मल को हरैं।
करहु तिहावल हुइ अरदास। सतिगुर पूरति उर की आस' ॥ ४३ ॥

अस कहि मक्खण को तबि छोरा। हटे आप गुर उतर ओरा।
हरख शोक महिं त्रिती समान। सभि पर क्रिपा द्रिशटि को ठानि ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री अंम्रितसर गमन' प्रसंग बरनंन नाम एक बिंसती अंशु ॥ २१ ॥

---

1. जड़।

अंशु २२
श्री गुर अंम्रितसर ते हटन प्रसंग

दोहरा

भई मसंदनि को खबर बसे न गुरु क्रिपाल।
खरे होइ हसि कै गए हमरी हेरि कुचाल॥ १ ॥

चौपई

हरखति होइ निकसि पुन आए। लेहिं उपाइन जो सिख ल्याइ।
दरब घनो दुकूल[1] बहु मोले। वसतू अपर देहिं सिख सो लें॥ २॥
सिख्यनि को मेला बड होवा। मजहिं हरिमंदर बर जोवा।
पंचाम्रित करिवाइ लिआवहिं। करि बंदनि अरदास अलावहिं॥ ३॥
मक्खण सिख कीनिसि इशनान। अधिक भावना उर महिं ठानि।
पहिरी पोशिश पुनहिं नवीन। पंचाम्रित करि संगे लीनि॥ ४॥
श्री हरिमंदिर को तबि गयो। हाथ जोरि नंम्री बहु भयो।
नमसकार करि बारंबार। पुन अरदास कराइ उदार॥ ५॥
पंचाम्रित को तबि बंडवाइ[2]। इकठो भे मसंद समुदाइ।
तिन सभि को पिखि मक्खण कह्यो। 'तुम महिं अधिक खोट मैं लह्यो॥ ६॥
श्री गुर कारन करन क्रिपाल। चलि करि आए करनि निहाल।
तुम बेमुख हुइ दूर घरनि मैं। नहिं दरशन कीनसि तिस छिन मैं॥ ७॥
नहिं सनमान कीनि तिन केरा। इह क्या कीनसि खोट बडेरा।
छिमावंत गुर कहैं न कांहू। नांहि न बिपत परति तुम मांहूं॥ ८॥
इह अपराध जि तुम ते भयो। नहीं बिचारनि उर किछ कियो।
तऊ आपनी संतति केरा। कीनि बुरा लहि कशट बडेरा ?॥ ९॥
बाकनि ते ही सुख दुख दाता। अस सतिगुर तुम क्यों नहिं जाता।
तीखन बड कुठार ले हाथ। निज पग हत्यो मूढता[3] साथ॥ १०॥

1. रेशमी वसत्र। 2. बटवाया। 3. मूर्खता।

अबि ही फल लेते तुम पाइ। पर सतिगुर की जथा रजाइ।'
सुनि मसंद बोले धरि त्रास। 'भो मक्खण ! सुनि कहिं तुझ पास ॥ ११ ॥
इह परताप गुरनि को सारा। सभिहिनि पर तिन को उपकारा।
रण जो करि श्री हरिगोबिंद। करे नाश दल तुरक बिलंद ॥ १२ ॥
तबि के करति ईरखा, द्रोही। इह सति बीत कहति हैं तोही ॥
श्री हरिराइ गुरू पुन भए। नहीं सुधासर बासो कए ॥ १३ ॥
सुनि करि जे मलेछ समुदाइ। आइ बिगार करहिं इस थाइं।
इत्यादिक उर गटी बिचार। नहीं आइ बैठे दरबार ॥ १४ ॥
इह अबि लौ भे गुरू न नीके। सकल मसंदनि किये न ठीके।
अरु संसे महिं सगरी संगति। निशचे कियो न सिख्यनि संगति ॥ १५ ॥
नहीं उपाइन कित की आई। कीरति किते नहीं बिथराई[1]।
जबि इक आनं होइ सभि जान। हम भी दास, लेहिं मन मानि' ॥ १६ ॥
सुनि मक्खण ने पुन समुझाइ। 'श्री हरिक्रिशन बाक को गाए।
बाबा कह्यो बकाले मांहि। सो इह प्रगटे रूकहिं न काहि' ॥ १७ ॥
अपनी कथा सु अखिल सुनाइ। पुनहिं सभिनि को डर उपजाइ।
अबि भी जाहु जाचना करो। रिदे दुशटता सगरी हरो ॥ १८ ॥
गई बीत पर तऊ संभारहु। कर जोरहु अरु बिनै उचारहु।
इम सुनि मिले मसंद बिचारहिं। मक्खण को न बाक त्रिसकारहिं ॥ १९ ॥
मति इह बिगर परै हम संग। धीरमल्ल सम करहि न ढंग।
चलहु वहिर ही मिलि कै तांहि। कह शुभ बाक लेहु हरखाहि ॥ २० ॥
कछू उपाइन लेहु प्रशादि। जथा अहै गुरु घर मिरजादि।
इम बिचार करि अखिल मसंद। गमने बाहर लाज बिलंद ॥ २१ ॥
श्री गुर अंम्रितसर ते मुरि कै[2]। एक ग्राम नहिं निकटि निहरि कै।
वल्ला कहैं तिसी को नाइ। तीन कोस ऊलट दिशि थाईं ॥ २२ ॥
तहिं इक सिख के कर करि डेरा। सेवा करति सु भाव बडेरा।
पर निसा कीनसि बिसरामू। जिनके बाक मोख के धामू ॥ २३ ॥
अगली जबि प्रभाति हुइ आई। करी सकल तन की सुचताई।
बैठे श्री गुर तबहि प्रयंक। तबि मसंद उर धरे अतंक[3] ॥ २४ ॥
दीन मने दोनहुं कर जोरे। पहुँचे ढिग गुर, चहति निहोरे।
बंदन करहिं नंम्रता धारि। अरपि उपाइन कछुक अगार ॥ २५ ॥

1 फैली। 2 अमृतसर से वापिस लौट कर। 3 डर।

कहति भए 'भै तुरकनि केरा। रहै सुधासर बीच बडेरा।
को गुर रहहि, कि नांही इहां। पिखि पिखि जाहिं बैर करि महां॥ २६॥
पैंदे को सुत आदिक आनि। जिनहिं गुरु रण महिं किय हान।
तिन के सनबंधी जो अहैं। सो प्रतीछना करते रहैं॥ २७॥
तिन दुशटनि ते हम डरपाइ। आइ बिगार न कुछ करि जाइ।
हम अंम्रितसर रहति हैं जेते। नित गुलाम गुर घर के तेते॥ २८॥
इह असथान सदीव तुमारो। राबर स्वामी सदा संभारो'।
सुनि कै श्री गुर तेग बहादर। पिखे मसंद आइ भे हादर॥ २९॥
मन खोटे जिन के सभि भांती। मुख ते अपर बनावहिं बाती।
धन लोभी इह स्वान[1] समाना। करहिं चुरावनि भेट महाना॥ ३०॥
बहुत दिवस के करहिं कुकरम। भए मंदमति बिसरे धरम।
इनहिं बिनसनि करने हारा। होहि अगारी पुरख उदारा॥ ३१॥
इम बिचारि जग गुर सभि स्वामी। बचन बखान्यो अंतरजामी।
'नहिं मसंद, तुम अंम्रतसरीए। त्रिशनागन ते अंतर सरीए[2]॥ ३२॥
जस खोटे मग कीनि अलंब। तस फल प्रापत कशट कदंब[3]।
तुम कै संतति पाइ तुमारी। जिम गुर घर के भे दुराचारी'॥ ३३॥
इम कहि ठानी मौन गुसाईं। मिलि मसंद गमने समुदाई।
भयो स्राप दुखदायक जिन को। नहिं गुरमति प्रापति किम तिन को॥ ३४॥
'अंतर सरीए[1]' स्राप जु कह्यो। अबि लौ तहां अहै हम लह्यो।
श्री गुर बसहिं ग्राम तिस फेरी। करति प्रतीखन मक्खण केरी॥ ३५॥
मगन स्वरूपानंद महिं बैसे। छिनहिं बिकार छुयो नहिं कैसे।
खान पान करिकै शुभ भांती। टिके सेज ऊपर पशचाती॥ ३६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर अंम्रितसर ते हटन' प्रसंग बरननं नाम द्वै बिंसती अंशु॥ २२॥

---

1. कुत्ता। 2. तृष्णा की अग्नि से भीतर से जले हुए 3. बहुत। 4. भीतर से जले हुए।

अंशु २३

श्री गुर तेग बहादर गमन प्रसंग

दोहरा

मक्खण करि इशनान को दरशन परसन कीनि।
पुन कराइ अरदास को चल्यो सु मती प्रबीन।। १ ।।

चौपई

श्री गुरु तेग बहादर जित को[1]। गमने हुते चल्यो तबि तित को।
अधिक प्रसंन होइ तिस छिन मैं। महिमा सतिगुर की लखि मन मैं।। २ ।।
सहिन शील जिन के न समाना। सरब शकति धरि श्री भगवाना।
मग महिं इम ठानति बडिआई। पहुंच्यो ग्राम गुरु जिस थाईं।। ३ ।।
बहिर ग्राम ते कीनसि डेरा। वसतु संभारि धरी तिस बेरा।
सरब भांति ते करि तकराई[2]। भद्र देश नर जानि खुटाई।। ४ ।।
मिल्यो गुरु संग वंदन धारा। सभि प्रसंग भा तथा उचारा।
लोभ मसंदन को धन केरे। बेमुख भए कपाट सु मेरे।। ५ ।।
अजहुं न शरधा जिन ने भई। कौन गुरु, पारूख नहिं अई।
मैं तरजन करि सुजसु उचारा। तबि मिलिबे हित इत पग धारा।। ६ ।।
धन हित गुरु सथान संभारे। लोभ रिदे डहिकाइ उदारे।
जे करि इनहुं सजाइ न बने। करि हंकार अफर हैं घने।। ७ ।।
तुम ते शंकति मैं अबि रह्यो। त्रास देन को नहिं कुछ कह्यो।
सुनि श्री तेग बहादर स्वामी। बोले जानि मसंदनि खामी।। ८ ।।
'इनहुं सजाइ दोनि को भारी। उपजहिगो इक पुरख अगारी।
करहि ताड़ना, प्राननि हानहि। जरा उखारहि कोइक मानहि।। ९ ।।
कयों क्रित को तति फल पावैं। गुर सिख अपने मुख नहिं लावैं'।
इम कहि सतिगुर सुखपति धारी। मक्खण गा निज सिवर मझारी।। १० ।।

---

1. जिस ओर। 2. दृढ़ता।

सुपति भए सुख निसा बिताई। जागे बहुर प्राति हुइ आई।
भए त्यार मग करनि पयाना। सुंदर जीन पवाइ किकाना[1] ॥ ११ ॥
भए अरूढ़नि मारग चाले। पहुंचे आइ सु बीच बकाले।
डेरा करति भए निज धामं। मिले मात को कीनि प्रनाम ॥ १२ ॥
अनिक बिघन ते सुत बचि गयो। यां ते अधिक नेहु उर भयो।
मिलि करि मुख सिर पर कर फेरा। बारि बारि धरि मोद घनेरा ॥ १३ ॥
तैसे मक्खण उतर्यो आनि। डेरा करति भयो निज थान।
खान पान करि कै सभि भांती। सुपते तिमर प्रविरते राती ॥ १४ ॥
जाम जामनी जाग्रन करे। बिधि ते सौच सु मज्जन करे।
बिदती बात जहां कहिं देशु। बिदत भए सतिगुरू बिशेश ॥ १५ ॥
मंजी अपर सोढीअनि लाई। लज्जित होति गए निज थाई।
श्री गुर हरिगोविंद को नंद। गुरता गादी थिरे बिलंद ॥ १६ ॥
कहैं परसपर सिख पुरि ग्राम। सभि बिधि सुजसु सुनहिं अभिराम।
निकट कि दूर दरस के हेतु। आवति ग्रमने तजे निकेत ॥ १७ ॥
अनिक अकोरनि को लै आवहिं। ग्राम बकाले की दिशि धावहिं।
जबि बैठहिं श्री तेग बहादर। संगति आनि खरी हुइ हादर[2] ॥ १८ ॥
दरब आदि बहु धरहि अगारी। बंदन करहिं भाउ को धारी।
आवनि लगी भेट चहूं ओर। मानहिं सिक्ख झुकें कर जोरि ॥ १९ ॥
सुनहिं बिलोकहिं सोढी सारे। जरहिं नहीं[3] उर जरहिं कुढारे[4]।
द्वैश उपावति कटु बच कहैं। नहीं महातम गुर को लहैं ॥ २० ॥
कितिक दिवस रहि मक्खण शाहू। अपने देश गमन करि चाहू।
बहु दिन बिते छोरि घर आयो। बांछति रावरि दरशन पायो ॥ २१ ॥
रिदै बिचारति इक दिन ऐसे। चलि आयहु जहिं सतिगुर बैसे।
निम्र होइ करि बंदन ठानी। प्रेम जनावति बोल्यो बानी ॥ २२ ॥
'दर अधिक ते मैं चलि आयो। बांछति रावरि दरशन पायो।
भयो क्रितारथ अबि सभि भांती। हति संसै भा, सीतल छाती ॥ २३ ॥
चिरंकाल भा तजे निकेत। चल्यो चहति तुम नाम समेत'।
सुनि सतिगुर कहि सहज सुभाइ। हम ते भी इत बस्यो न जाइ ॥ २४ ॥
तजहिं देश हुइ सतुद्रव पार। कहूं करहिं गे अपनि अगार[5]।
मतसर इहां करति हैं घने। अस न होइ को जावहि हने[6] ॥ २५ ॥

---

1. घोड़ा। 2. हाज़िर। 3. सहन नहीं कर सकते। 4. खोटे अपने मन में जलते हैं। 5. घर। 6. मारे जाये।

जहां शांति हुई [illegible] केरे ।
श्री हरि क्रिशन बाक के कहे । ग्राम बकाले गुरता लहे ॥ २६ ॥
इह कहि श्री सतिगुर भे त्यार । जननी सों तबि कीनि उचारि ।
'अपर ग्राम बसिबो अबि बनै । द्वैशी द्वैश करति इत घनै' ॥ २७ ॥
इत्यादिक कहि कै संग मात । सुपते सतिगुर बिती सु राति ।
भई प्रभाति सौच सभि कीनि । मज्जन कर्यो पहिरि पट लीनि ॥ २८ ॥
मात नानकी लखि सभि बात । नहिं रहिबे की मरज़ी तात[1] ।
घर की वसतु सरब संभवाई । चिरंकाल की बसति जु हाई[2] ॥ २९ ॥
नहिं चित चहति त्यागिबे ग्रामू । पति पाछे बासी करि धामू ।
तऊ जानि सभि रीति लचारी । वसतु संभारति द्रिग[3] जल डारी ॥ ३० ॥
ज़ीन तुरंगन पर शुभ पाए । मक्खण त्यार भयो सहिसाए ।
सभि दासनि सों कीनि उचारी । 'आनहु सगरी वसतु संभारी ॥ ३१ ॥
गुर घर की अरु अपणी जेती । ले करि आवहु बेग समेती' ।
इम कहि आनि मिल्यो गुर संग । कीनसि वंदन उतरि तुरंग ॥ ३२ ॥
हाथ जोरि करि गिरा उचारी । 'चढ़हु आप नहिं करहु अवारी[4] ।
सलिता तरनी पर चढ़ि तरनी । मिलहिं आइ सभि, वसतु संभरिनी' ॥ ३३ ॥
सुनि श्री तेग बहादर चंद । कहि बड़वा मंगवाइ बिलंद ।
सजति ज़ीन जुति ले करि आवा । आगे खरो दास द्रिशटावा ॥ ३४ ॥
श्री नानक को तबहि मनाइ । उठि श्री तेग बहादर राइ ।
ले मक्खण को अपने संग । चढ़े तुरंगनि पर शुभ रंग ॥ ३५ ॥
दास छोरि तबि बाग गहाई[5] । मारग गमन कीनि अगवाईं ।
पाछे मक्खण चढ़ि करि प्याना । संग कितिक असवार सुजाना ॥ ३६ ॥
श्री गुजरी को भ्राता अहै । नाम क्रिपाल तिसी को कहैं ।
सो तुरंग पर ह्वै असवार । कीनसि त्यारी गुर की लार[6] ॥ ३७ ॥
अपर दास केतिक संग होए । केतिक वसतु संभारति जोइ ।
सने सने श्री सतिगुर चाले । पर्यो बहीर दास बहु नाले ॥ ३८ ॥
इक आगै इक पाछै आइ । गवने इम उर शोक उपाइ ।
रिदै बिचारहिं गुरता गादी । भई बिदत सिख्यनि अहिलादी ॥ ३९ ॥
तऊ शरीका सोढी करैं । नाहक वैर परसपर धरैं ।
इह बड सोढ देति दुख भारी । बसति बकाले ग्राम मझारी ॥ ४० ॥

---

1. पुत्र । 2. थी । 3. आँखें । 4. देर न करें । 5. पकड़ाई । 6. साथ ।

हेरि बैर को छेरनि कर्यो। अपर थान बसिबे चित धर्यो।
किसको सुधि किस थल चलि जावैं। कहां थिरहिं निज ग्राम बसावैं॥ ४२॥
इत्यादिक गिणती महिं दास। गमने संग सु रिदे उदास।
श्री गुर तेग बहादर चले। मक्खण संग सुभट गन भले॥ ४३॥
कुछ मग उलंघति पहुंचे आइ। नदी बिपासा चलि जिस थाइ।
तरनी[1] पर चढ़ि कै तट पार। हेरी चलहि बिमल बहु बारि॥ ४४॥
नौका नहीं निकटि को आई। इम बिलोकि ठांढे तिस थाई।
साथ पाछलो आवति चाला। करति बिलोकनि खरे क्रिपाला॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर तेग बहादर गमन' प्रसंग बरननं नाम तीन बिसती अंशु॥ २३॥

1. किश्ती।

अंशु २४

श्री ग्रंथ साहिब प्रसंग

दोहरा

ठांढे तरी प्रतीखते पिखति पाछलो साथ।
आह मिलहिं इकठे सकल उलंघनि को चहिं नाथ ॥ १ ॥

चौपई

अलप वसतु कुछ सदन मझारी। धीरमल्ल को दीनसि सारी।
लघु तुरंगनि पर धरि सो ल्याए। सने सने गुर ढिग चलि आए ॥ २ ॥
केतिक सिख्य फकीर कितेक। मिल संगी भे जलधि बिबेक[1]।
आइ आइ गुर ढिग हुइ ठाढे। शरधालू प्रेमी मन गाढे ॥ ४ ॥
इतने महिं सिख सो चलि आयो। गुरू ग्रिथ जिन सीस उठायो।
देखति गुर भर सिख तिस ओर। बंदन करी सकल कर जोरि ॥ ४ ॥
तेग बहादर गुरू बखान्यो। 'कौन ग्रिथ साहिब इह आन्यो।
कित ले जाइ अहै किस पास? बूझहु इसको करहु प्रकाश' ॥ ५ ॥
तबि क्रिपाल गुजरी को भ्रात। सरब सुनाइ भन्यो सु ब्रितांत।
'श्री गुर अरजन प्रथम लिखायो। धीरमल्ल सो जल करि पायो ॥ ६ ॥
डेरा लूट लीनि जबि सारे। तबि ते आयहू सदन हमारे।
महां महातम है इस केरा। जिसके दरशन पुंन घनेरा ॥ ७ ॥
रावरि बर्डनि[2] बनायो एही। इस डिग हुइ पूजा बहु लेही।
इस करि सरब संगतां आवैं। दरसहिं अनिक अकोर चढावैं ॥ ८ ॥
यां ते आप निकटि अबि रहैं। अपर थान के उचित न अहैं'।
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो। 'हमरे संग कौन त्रिधि रह्यो ॥ ९ ॥
किन इह राखि साथ निज आन्यो। फेरनि[3] कह्यो नहीं सो मान्यो।
धीरमल्ल के निकटि कदी को। अबि भी दैबो बनहि तिसी को ॥ १० ॥

---

1. विवेक के समुद्र-अर्थात् गुरू जी। 2. बुजुर्ग। 3. वापिस लौटाना।

छीन लेनि इहु उचित न हैं। रिदे बिसूरहि दुख सानि सभै'।
तबहि क्रिपाल सुनावति कीनि। 'भक्खण अरु माता नहिं दीनि।। ११ ।।
हुतो पितमने रावरि केरा। जिनहुं ग्रिंथ कीनि[1] बडेरा।
यांते बसतु आप की अहै। जो गुर गादी पर, सो लहै।। १२ ।।
इम विचार करि दियो न माता। उचित विचार लेहु सुखदाता।
अतिशै दुरलभ वसतु अजाइब। इह नहिं देनि बनहि गुर साहिब ।। १३ ।।
इतने विखै नानकी आई। सुंदर स्यंदन पर सुखदाई।
गुजरी संग चढ़ी शुभ डोरे[3]। झालर ज़रीदार चहुं ओरे।। १४ ।।
निकटि आइ सुत के बच सुने। हठ करि रहे हेरि सिर धुने।
शत्रु को हित चाहति रहै। प्रान हानि लगि खोटो अहै।। १५ ।
कहौं कहां लगि बहु समुझाए। सरल सुभाउ न कुछ लखि पाए।
सिख्यनि संग गुरू पुन कह्यो। 'धीरमल्ल को हम इह लह्यो।। १६ ।।
को अबि गमनहु ले करि जाबो। सौंपो जाइ तिसी कों पाहौ[2]।
हमरे संग न राखनि करो। श्री करतारपुरे ले धरो।। १७ ।।
सुनि सिख्यनि सभि जोरे हाथ। होइ नंम्रि बोले गुर साथ।
धीरमल्ल तन मन ते खोटा। तिस को देखनि ते बहु तोटा।। १८ ।।
गुर निंदक बड पाप कमाए। कहि करि तुम पर तुपक चलाए।
करहि सदा दुशटनि की संगति। उत्तम जन जिस की नहिं पंगति ।। १९ ।।
इम तिस की दिशि मुख नहिं करैं। मिलिबे की बांछा नहिं धरैं।
रावर को अपराधी भारो। हम बिलोकि नहिं सकहिं सहारो।। २० ।।
सुनि गुर सभि सिकवनि की बिनती। मन महिं गिनति रहे गन गनती।
नहिं न ग्रिंथ साहिब हम राखैं। तिस ढिग पहुंचै चित अभिलाखैं।। २१ ।।
मात नानकी बरजति हेरि। 'हे सुत क्यों हठ करहु बडेर ?
दुरलभ वसतू अपनि बडनि की। बहुर न प्रापति अनिक जतन की।। २२ ।।
नहिं दीजहि निज साथ रखीजहि[3]। नीके रिदे बिचार लखीजहि।
रिपु को कछू तदारक[4] होइ। करी अवग्या ले फल सोइ।। २३ ।।
अधिक शरीका बड अहंकारि। नहिं जिसके कुछ रह्यो बिचार।
।। २४ ।।
किसी रीति ते अदब न राखा। करति सदा मारनि अभिलाखा।
इम सनेहु तिस के संग धरना। किम न चितहु जिम दुरमत करना।। २५ ।।

1. रचना की। 2. डोली। 3. पास। 4. रूकावट।

सुनति मात ते धारि [illegible] कीन ।
सिख सेवक तहिं जाइ न कोई । लखहिं महां अपराधी सोई ॥ २६ ॥
करता जानि कुकरमनि केरा । नहिं चाहति सिख दरशन हेरा ।
करहिं परण, तिस मुख नहिं लागहिं । किम पहुंचाइ ग्रिथ तिस आगहि ॥ २७ ॥
तरनी की प्रतीखना करते । इस कारज को रिदै बिचरिते ।
जबि नौका चलि करि ढिग आई । भइ अरूढ़नि तबहि गुसाई ॥ २८ ॥
स्यंदन डोरे नर समुदाए । मक्खण आदिक तुरत चढ़ाए ।
गुरु ग्रिथ को तरी मझार । शुभ थल पिखि करि धर्यो सुधारि ॥ २९ ॥
करनधार तबि प्रेरनि करी । नीर गंभीर शीघ्र चलि तरी ।
परले तीर[1] गई ततकाला । उतरि परे सतिगुरू क्रिपाला ॥ ३० ॥
इक नर श्री करतारपुरे को । उतर्यो गुर कै संग उरे को ।
बूझन कीनो, तांहि बखाना । 'मैं तिस नगर बिखै चलि जाना' ॥ ३१ ॥
सतिगुर कह्यो 'काज हम कीजै । एह संदेस धीरमल दीजै ।
गुरू ग्रिथ जो तुम ते लियो । सो दरिआउ बिखै धरि दियो ॥ ३२ ॥
आप जाइ करि लेउ निकास । पुन सदीव तुम राखहु पास ।
हम नहिं कीनसि अंगीकार । जाइं अगारी पंथ मझार ॥ ३३ ॥
हाथ जोरि तिह मानव सानी । 'मैं पहुंवति ही करौं बखानी' ।
इम समुझाइ गुरू गति दानी । हुतो गंभीर बेग जहिं पानी ॥ ३४ ॥
मंजी[3] के समेत जल मांहि । कहि करि भले रखायहु तांहि ।
'भले संभालहु भो दरिआइ । तुझ ते लेहि धीरमल आइ' ॥ ३५ ॥
जल गंभीर महिं जबहि टिकाए । सकल बिलोकति बहु बिसमाए ।
'प्रथम कहति बिप्रीत बिसाला । रिपु को चहति भलो सभि काला ॥ ३६ ॥
वसतु अमोलक रखिबे लाइक । दे शरीक के सदन सुभाइक ।
को तहिं गयो न, अबि क्या कर्यों । सलिता सहित बेग महिं धर्यो ॥ ३७ ॥
जल महि कागद भीगहिं जबै । बचहिं न शीघ्र जाहिं गर[3] तबै ।
किम अखर साबत रहि जैहैं । बिना भीत[4] जिम चित्र न पै है' ॥ ३८ ॥
इत्यादिक आपस अहिं कहैं । गुर महिमा कहु मेव न लहैं ।
पुन सतिगुर चलि परे अगारी । मक्खण आदिक चले पिछारी ॥ ३९ ॥
सिख शरधालू तूशनि रहैं । गुर को चरित भले उर लहैं ।
'जो किछ करहिं सु आछी बनै । सतिगुर मति जानहि को मनै' ॥ ४० ॥

---

1. दूसरे किनारे । 2. छोटी खाट, खटिया । 3. गल जाते हैं । 4. जैसे दीवार पर चित्र नहीं पड़ता ।

केचित कहै 'दुलभ शुभ महा। बहै नदी, पुन प्रापति कहा।
श्री गुर अरजन हाथनि केरा। इनहुं कीनि लोप सु इस बेरा ॥ ४१ ॥
अस वसतू पुन हाथ न आवै। कौन गुरु संग कहि समुझावै।
क्यों निफल जल बिखै टिकायो। कित बहि जाइ, कौन ले पायो' ॥ ४२ ॥
पिखति नानकी रिदा तपायो। नहिं सुत सों पुन बाक अलायो।
मारग चले जाहिं अगुवाई। सेवक सिख फकीर समुदाई ॥ ४३ ॥
सतिगुर की क्रित मक्खण देखि। धरी मौन बिसमाइ बिशेख।
कहि न सकहि कुछ लखि सरबग्य। हम क्या जानि सकहि अलपग्य ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री ग्रंथ साहिब' प्रसंग बरननं नाम चतुर बिंसती अंशु ॥ २४ ॥

अंशु २५

धीरमल्ल प्रसंग

दोहरा

गमनहार करतारपुरि सुनि गुर क्रिती निहारि।
उर बिसम्यो-गुर क्या कर्यो, कागद नीर मझार ॥ १ ॥

चौपई

बहुर धीरमल संग उचारा। 'जल ते लिहु निकासि बिन बारा[1]।
जे अबि साबत प्रापति हाथ। तौ अति करामात के साथ ॥ २ ॥
जे नहिं निकस्यो, कै गर गयो। दुलभ ग्रिंथ तौ बिनसति भयो।
धीरमल्ल सों ठान्यो हास। जिस प्रति कह्यो कि 'लेहु निकासि' ॥ ३ ॥
एव बिचारति मारग जातो। कहिबे कारन ते उतलातो[1]।
श्रोता! सुनहुं ग्रिंथ की कथा। पुन सतिगुर की उचरौं जथा ॥ ४ ॥
सो नर पहुंच्यो पुरि करतार। अद्भुत गाथा रिदै बिचारि।
धीरमल्ल के सदन सिधायो। गुरु जानि तिह सीस निवायो ॥ ५ ॥
हाथ जोरि सभि कथा उचारी। 'मैं आवति इत, जथा निहारी।
सतिगुर तेग बहादर धीर। देखे नदी बिपासा तीर ॥ ६ ॥
कहैं सिक्ख सों—ग्रिंथ लिजावहु। श्री करतार पुरे पहुंचावहु।
इति आवनि को किनहुं न मानी। तबि धीर दीनि ग्रिंथ बिच पानी ॥ ७ ॥
मो संग कह्यो तहां तूं जाति। तिन सों कहि दीजै इह बात।
सौंप्यो ग्रिंथ बीच दरीआउ। आउ निकासि, पास ले जाउ ॥ ८ ॥
मैं गुर ते सुनि देखति भयो। मंजी सहित तहां धरि दयो।
चलि तूरन ही मारग आयो। तुमरे हित इह आनि सुनायो' ॥ ९ ॥

---

1. जल्दी। 2. पानी में।

बिना ग्रिंथ झूरति मल धीर[1]। चित महिं पीर गहीर अधीर।
सुनति बात को हरख उपायहु। जान्यो रिदै, मोहि ढिग आयो ॥ १० ॥
बूझनि लग्यो 'नीर महिं कैसे ?। रहहि सबूत सु पूरब जैसे[2]।
कागत भीग जाहिं गर सोई। लेहिं निकासि काज क्या होई' ॥ ११ ॥
सुनि मसंद बोल्यो मति खोटा। 'इह क्या कर्यो न किनहूं होटा[3]।
बड़े गुरुनि की हाथि निशानी। महां महातमवान समानी ॥ १२ ॥
गुर संगति जिह देखनि चहैं। दरशन करें पाप बड दहैं।
हम ते अरू आपनि ते खोयो। इस महिं कौन भलो निज जय्यो ॥ १३ ॥
पुन तुम संग हास करि भेजा। सलिता ते निकासि करि लेजा।
बडो काज तिन दीनि बिगारी। अबि कैसे को सकहि सुधारी' ॥ १४ ॥
धीरमल्ल चितवनि चितवंता। बोल्यो सभि महिं गुरु ब्रितंता।
'आछो ही तें कीनि उचार। तऊ देखीए रिदै बिचारि ॥ १५ ॥
लघु बय ते श्री तेग बहादर। बडे गुरु भी ठानति आदर।
भूल न कबिहूं कूर[4] बखाना। रह्यो सदा मन सदगुन साना[5] ॥ १६ ॥
अबि भी पिखहु बकाले मांहि। हम कैसे कीनि संग तांहि।
सील साधि तिन कुछ न बिचारा। हम पर पुन कीनसि उपकारा ॥ १७ ॥
लुटि वसतु भेजी ततकाला। निज पूजा संग दीनि बिसाला।
इम किस ते बनि आवहि कार। यांते लखीयति साधु उदार ॥ १८ ॥
भोरा[6] बह सुभाव जिन केरा। तिन के बच निशचा हुइ मेरा।
हास करनि सों क्योंहू न जानहिं। पुन हम सों किम कूर बखानहि ॥ १९ ॥
जे अबि करीअहि भले बिचार। हमते ही सभि भयो बिगार।
तऊ छिमा धारनि उर कीनि। इतो पदारथ पठि जो दीनि ॥ २० ॥
चलहु नदी को अबहि निहारहिं। ग्रिंथ निकासहिं बहुर संभारहिं।
श्री नानक आदिक गुर सारे। कीनि मनावनि मैं बहु वारे ॥ २१ ॥
करनि तिहावल मान्यो घनो। भए सहाइ आइ, मन गिनों।
दुरलभ उद्दम ग्रिंथ पदारथ। जे करि लहैं, भए सभि स्वारथ ॥ २२ ॥
मोहि बंस महिं रहे बडाई। चढ़हिं अकोरन के समुदाई।
तिस ही संग सु गुरता गादी। बनहि अबादी, झूरहिं बादी[7] ॥ २३ ॥

---

1. धीरमल्ल। 2. पहले की भांति पानी में कैसे पूरा रह सकता है। 3. रोका।
4. झूठ। 5. श्रेष्ठ गुणों युक्त। 6. भोला, सरल स्वभाव। 7. झगड़ा करने वाले।

जथा रंक सुरतरू को पावहि। मोकहु अस अनंद उपजावहि।
चलिबे की त्यारी करि लीजहि। इस महिं संसै नैक न कीजहि॥ २४॥
सुनि मसंद शींहें बच कह्यो। 'बातनि ते अनंद किम लह्यो।
तैरो है शरीक सो भारा। शुभ गुनवंता जिसहि बिचारा॥ २५॥
हासी करी तोहि संग ऐसे। जग महि हीरा हुइ है जैसे।
खोजहिं जबिहूं जाइ बिपासा। सुनि पिखि करहि सकल नर हासा॥ २६॥
बिना अकल ते जानहिं तोही। नदी सबेग[1] बिखै क्या होही।
बह्यो होइ गो जल के जोर। केतिक थान करहिंगे टोर[2]॥ २७॥
किम प्रापति ह्वै, रिदै बिचारो। दब्यो होहि सिकता[3] पर भारो।
जे कदांच करि आवहि हाथ। कागद गर होहिं जल साथ॥ २८॥
उजर[4] आपनो क्यों तूं खोवहि। नहिं शरीक को आशै जोवहिं।
प्रथम पदारथ जे सभि मोरे। किम दीने, सो लख्यो न थोरे॥ २९॥
महिमा संगति बिखै बधावनि। अपने गुन गन करति दिखावनि।
जिस को लोक बिलोकि बिसाले। अरपहिं आनि पदारथ जाले॥ ३०॥
आशै गूढ लख्यो तुम नांही। निशचै करहु शत्रु बच मांही।
इत्यादिक बहु कह्यो मसंद। जो गुर निंदक हुतो बिलंद॥ ३१॥
राख्यो रोकि चढ़नि नहिं दयो। सो दिन इम बितीत करि गया।
गुर सों धीरमल्ल करि बिनती। सगरी निस मन महिं गिन गिनती॥ ३२॥
उतरहिं चढ़हिं गटी[5] बहु बारी। भई प्राति चढ़िबे कहु त्यारी।
गुरू वाक पर निशचा धरै। कूर न कहैं सदा सच ररैं॥ ३३॥
शीहां दुशट मसंद हटावै। गुर महि औगुन कलपि[6] सुनावै।
पुन मिट रहहि संदेह उपाइ। चित महिं नहिं इसिथिरता पाइ॥ ३४॥
आठहुं जाम सचित बितावै। चढ़नि लगें तबि दुशट हटावै।
कितिक दिवस बीते इस भांती। मिलि मिलि करहि अनिक बिधि बाती॥ ३५॥
कहौं कहां लगि सकल ब्रितंत। चित महिं अति चिंता चितवंति।
गुर पर करहि जबहि बिश्वास। दुशट मसंद सु देति बिनासि॥ ३६॥
गुर जसु स्वांती बूंद समान। सिख मन सुकता[7] परहि जि आन।
मुकता अनंद अमोलक होइ। दारिद चिंता सभि दे खोइ॥ ३७॥
दूशट सरप के अंतर परै। निंदा बिख को ततछिन करै।
बुरा करहि लोकनि उस जाइ। गुर निशचा कहि देति डुलाइ॥ ३८॥

---

1. तेज़ी से चल रही (नदी)। 2. खोज। 3. रेत। 4. शक्ति। 5. गिनता
[illegible] 6. बढ़ चढ़कर सतगुरु जी के अवगुण बताये हैं। 7. सीप।

खोटी संगति रंगति होइ। कहहु कौन बिगर्यो नहिं जोइ।
प्रथम धीरमल ह्वैशी आप। दुखहि बिलोकहि गुरू प्रताप ॥ ३९ ॥

गुन गन तिखि उपजहि बिस्वास। दुशट मसंद सु देति बिनाश।
इम केतिक दिन जबहि बिताए। धीरमल्ल तहु चित उपाए ॥ ४० ॥

हठ को धारि चढ़नि पुन चाहा। खोजौं एक बारि जलमाहां।
महां पुरुष श्री तेग बहादर। बचन साच जिन, मान्यो सादर ॥ ४१ ॥

अनिक जुकति[1] कहि दुशट सुनावै। 'क्यों होरा हुइ' ? चढ़ति हटावै।
कह्यो कि 'एक बारि मैं जाऊं। गुर बच साच ग्रिथ मैं पाऊं' ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धीर मल्ल' प्रसंग बरननं नाम पच्चीसमो अंशु ॥ २५ ॥

---

1. युक्ति।

अंशु २६

श्री गुरु ग्रंथ साहिब बिपासा प्रसंग

दोहरा

उठि प्रभाति को त्यार भा करि कै सौच शनान ।
केवट ब्रिंद बुलाइ करि देनि दरब बहु मानि[1] ।। १ ।।

चौपई

अपर नीर महिं तरने हारे । सुनि सुनि गुनि तिन लीनि हकारे ।
जार[2] ब्रिंद को ल्यो मंगाइ । सभि विधि ते त्यारी करिवाइ ।। २ ।।
जीन पर्यो सुंदर हय आयो । गुरगन को मन बिखै मनायो ।
नम्रि सीस करि बंदन धारी । 'इही कामना पुरहु हमारी ।। ३ ।।
पंचांम्रित बहु आनि करावौं । जे करि ग्रिथ जाइ मैं पावौं ।
इम मनौत को भानि घनेरी । हय पर चढ्यो सौन शुभ हेरी ।। ४ ।।
हरख्यो लख्यो काज हुइ मेरो । जिस ते और न भलो बडेरो ।
गमन्यो मारग लै नर ब्रिंद । संग बिबस हुइ चल्यो मसंद ।। ५ ।।
तिस नर को लै संगि कर्यो है । आनि बिपासा कूल[3] खर्यो है ।
जहिं तिन थान बतावनि कीना । देखि तहां डेरा करि दीना ।। ६ ।।
तंबू अरु कनात लगवाए । तारनहार नर चलि करि आए ।
सभि को दीनसि अधिक दिलासा । 'करहु काज पुरवहु मम आसा ।। ७ ।।
धन गन दैहौं रेशम चीर । जबिहूं ग्रिथ ल्याइहौ तीर' ।
सुनि करि बरे बीच बहु पानी । पाए जार बिथारि महानी ।। ८ ।।
खोजनि लगे फिरहिं जल मांही । केवट ब्रिंद पाइ सो नांही ।
खोजहिं कर सों, टुभकी[4] मारहिं । इत उत बिचरहिं, जार पसारहिं ।। ९ ।।
फिरहिं मद्य अरु दोनहुं तीर । जहिं थोरो अरु दीरघ नीर ।
अधिक बिधिनि के जतन रचंते । जल मैं लै हुइ कितिक फिरंते ।। १० ।।

---

1. मान कर । 2. बहुत से जाल । 3. किनारा (व्यास नदी का) । 4. डुबकी

श्री नानक को कितिक मनावैं । 'करहु क्रिपा जिम ग्रिंथ सु पावैं' ।
केतिक जतन बतावहिं खरे । केतिक बुधि कर बल ते करे ॥ ११ ॥
धीर मल्ल बहु देति दिलासा । 'श्री सतिगुर पुरवहिंगे आसा ।
मंजी सहित ग्रिंथी जी पावहि । इम निशचा मेरे मन आवहि ॥ १२ ॥
अचहु तिहावल सभि त्रिपताइ । करैं हमेश कितिक दिन जाइ' ।
ज्यों ज्यों भनै धीर मल्ल तिन को । त्यों त्यो जतन करहिं तन मन को ॥ १३ ॥
इक दिन बीति दुतिय दिन बीता । चिंता होति सभिनि के चीता ।
कहै जि नर, बुलवायो पाही । 'धरति ग्रिंथ तैं पिख्यो कि नाहीं ? ॥ १४ ॥
कौन सथान टिकावति लह्यो ? । भयो सथिर कै आगे बह्यो' ।
सुनि कै पुनहिं बतावनि कीए । 'इस थल बर्यो सिक्ख सिर लीए ॥ १५ ॥
मुझ देखति ही तबहि उतारा । इहां टिकायहु नीर मझारा ।
श्री गुर तेग बहादुर फेर । नीको धर्यो बिलोचन हेरि ॥ १६ ॥
नमो ठानि करि गमने आगे । सरब लोक तिन के संग लागे ।
इह ठां जबि नर कोइ न खल्यो[1] । मैं तुमरी दिशि मारग चल्यो ॥ १७ ॥
कै सिकता ऊपर को फिर्यो । कै जल बेग बहावनि कर्यो ।
इस ते तरै और खुजवाईए । मिहनत करे सु दुरलभ पाईए ॥ १८ ॥
सलिता बिखै ग्रिंथ है इहां । उर निशचा कीजहि द्रिढ महां ।
धीर मल्ल सुनि बाक उचारे । 'क्योंहुं न प्रापति खोजति हारे ॥ १९ ॥
जिह बिधि निकसहि जतन बतावहु । मम आगवनि इहां सफलावहु ।
टुभकी मारहिं सिकता हेरहिं । हाथनि ते गहि जल युति प्रेरहिं[2] ॥ २० ॥
कर्यो टिकावनि जहां बतावहु । तिह के तरे दूर खुजवावहु ।
सो नर बोल्यो पुनहि बतावै । 'जे तुम चहहु ग्रिंथ जी पावैं ॥ २१ ॥
कहौं ढीठ ह्वै आप अगेरे । इस प्रकार बच मानो मेरे ।
ह्वै निशकपट तजहु अहिमत[3] को । धरहु भाइ सूधा करि चित को ॥ २२ ॥
श्री नानक आदिक सुख धाम । तेग बहादर लगि लिहु नाम ।
सभि की करहु अराधनि अबै । मन महिं मानि मनौतनि तबै ॥ २३ ॥
जबि तुम करहु इसी बिधि काज । गुर निवहहिं नाम की लाज ।
औचक होहिं सहाइक आइ । ततछिन दुलभ ग्रिंथ लिहु पाइ' ॥ २४ ॥
धीरमल्ल बानी सुनि मानी । कीनि सराहनि 'वीक बखानी ।
को अस अहै, काज के परे । सुगम जतन ते सिख्य न करें' ॥ २५ ॥

1. खड़ा हुआ 2. परे हटाते हैं 3. अहं, घमंड

निर हंकार होइ मन बानी। पद अरु पान[1] पखारसि पानी।
सरल रिदा करि होइ सि खर्यो। नौ सतिगुर को सिमरनि कर्यो ॥ २६ ॥
पच बारि सभि ले करि नाम। कर को जोरति कयों प्रणाम।
'अपनो कारज आप करीजै। पान[2] निसानी कौ बिदतीजै ॥ २७ ॥
पंच हज़ार रजतपण केर। पचांम्रित कराइ तिन हेरिं।
इम सभि महिं कीनसि अरदास। खरे होइ सलिता के पास ॥ २८ ॥
नव गुरुअनि को करि करि नमो। सिमर्यो ग्रिंथ बहुर तिह समो।
'सतिनाम की जागति जोति। चितवति जहिं कहिं, हाजर होति ॥ २९ ॥
मनो कामना दें ततकाल। तुम ते नहि को अपर बिसाल।
बारि बारि कहि सिर धरि धरनी। पर्यो प्रेम करि सतिगुर शरनी ॥ ३० ॥
'इम कहि बच नर मुझ ढिग भेजा। आइ धीरमल्ल ग्रिंथ जु लेजा।
सो बच पूरनि को जहि अबै। जिसते बिदत होइ जग सबै' ॥ ३१ ॥
नमो करति इम बाक उचारे। बंदन करति भए सिख सारे।
पुन प्रविशाए नर बिच नीर। खरो धीरमल्ल सरिता तीर ॥ ३२ ॥
टुभकी मारि हाथ जबि फेरा। इत उत सिकता गन को प्रेरा[3]।
तबहि पंघूरे को बड पावा। लग्यो हाथ जान्यौ तबि पावा ॥ ३३ ॥
निकस्यो जल ते बहिर बतायो। 'चिंता दजहु ग्रिंथ जी पायो।
ऊपर सिकता केतिक पर्यो। जिस ने सकल अछादनि कर्यो'। ३४ ॥
सुनि हरखे दीरघ तिस काल। तहिं को पहुंचे मानव जाल।
टुमकी मारति सिकता टारैं। गहैं पंगूरा उरध उठारैं ॥ ३५ ॥
मानव चार लगे चहुं ओरे। गहि कर महिं कीनसि बड जोरे।
ऊपर को निकासि ले आए। देखति भए मुहत समुदाए ॥ ३६ ॥
आनि तीर पर जबहि टिकावा। सभिनि पहुंचि तहिं सीस निवावा।
निचुरति नीर धीरमल्ल हेरति। हाथनि सिकता प्रेरति गेरति ॥ ३७ ॥
ऊपर तिस के पंच रूमाल। दोइ रेशमी सुंदर लाल।
तीन रूमाल तूल[4] के हुते। खोलनि करे आप कर तिते ॥ ३८ ॥
निकस्यो ग्रिंथ बिलोक्यो तबै। ऊपर जल सों भीज्यो तबै।
शुशक बसत्र तबि तरे बिछाए। आतप नीकी रीति लगाए ॥ ३९ ॥
खोलि बिलोक्यो सभि बिसमाए। श्रपर ते भीग्यो सभि थाएं।
जहिं लगि अक्खर हैं बिच लिखे। पहुंच्यो नीर न तिन के बिखे ॥ ४० ॥

---

1. हाथ और पैर। 2. पैरों की निशानी। 3. परे हटाया। 4. खटिया का बड़ा पाया। रूई-कपास।

सकल शुशक ज्यों के त्यों अहे। देखति रिदे अचंभा लहे।
जबि के धर्यो दिवस तबि गिने। त्रौदस बीते तिस नर मने ॥ ४१ ॥
सतिगुर दे करि हाथ बचायो। नीर बरन पर छुहनि न पायो।
बड उतसाह करति ले चाले। बादित को बजवाइ बिसाले[1] ॥ ४२ ॥
चौर दुरति चारहुं दिशि सोइ। संख बजांइ शबद बड होइ।
अंछुल पुशपनि के बरखावें। गूंदति गन माला लरकावें ॥ ४३ ॥
धूप धुखावति चलति अगारी। भयो अनंद सभिनि महिं भारी।
श्री करतारपुरे नर सारे। हित आदर हुइ मिले अगारे ॥ ४४ ॥
पुरहि प्रवेशति भयो उछाहू। नमो करहि अचरज मन मांहू।
सुनि रूनि नर सभि ग्रिथ कहानी। दिन त्रौदस महिं धुयो न पानी ॥ ४५ ॥
उत्तत सदन बिखे लै गए। अति अनंद नर नारी भए।
दीपमालिका निसा मझारी। गरी बजारनि घर थर बारी[2] ॥ ४६ ॥
सुख सों सुपति प्राति पुन चीन। सौच शनान सरब ने कीनि।
बखशिश धीरमल्ल बहु करी। बसत्र बिभूखन धन तिस धरी ॥ ४७ ॥
करि पंचाम्रित बहु बरतायो[3]। त्रिपत होइ सभिहूं नर खायो।
अपर कहां लगि करौं बखानि। दिन दिन प्रति उतसाह महान ॥ ४८ ॥
गर्यो सुपेदा[4] कागद जोइ। अपर लगाइ सुधार्यो सोइ।
अबि लौ चिन्हति पत्रे सारे। कहति कवी हम आप निहारे ॥ ४९ ॥
पूजा नितप्रति होति बडेरी। आइ अकोर धनादि घनेरी।
पंथ खालसा अबि लौ दरसै। गुर कर को लखि सभि को हरशै[5] ॥ ५० ॥
तबि ते धीरमल्ल के धाम। रहै ग्रिथ साहिब अभिराम।
तिस की कुल के लेति अकोर। अबहि खालसे करि कै जोर ॥ ५१ ॥
आदि सुधासर[6] लवपुरि[7] मांही। राखहि ग्रिथ सु अपने पाही।
धन आदिक भेटा जो देय। धीरमल्ल के सगरी लेय ॥ ५२ ॥
करी क्रिपा नहिं लीनसि छीन। सतिगुर मति को जानि प्रबीन।
पुनहिं भविक्ख्यत की सुधि नांही। लेहि पंथ कै रहि तिन पाही ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब विपासा' प्रसग बरननं नाम खशट बिसती अंशु ॥ २६ ॥

---

1. बहुत बाजे बजवाइ। 2. दीपमाला जलाई। 3. प्रसाद बांटा। 4. हाशिया। 5. प्रसन्न होता है। 6. अमृतसर। 7. लाहौर।

अंशु २७

श्री अनंदपुर थान आगवन प्रसंग

दोहरा

गुरु ग्रिंथ गाथा जथा कथी सु मैं चित लाइ।
अबि प्रसंग नौमे गुरु सुनि श्रोता सुख पाइ॥ १॥

चौपई

नदी ग्रिंथ साहिब को धरि कै। सौंपि भले अरु बंदन करि कै।
जाइ मजल[1] उतरे निस जानि। खान पान सभि कीनि सथान॥ २॥

सुपति जथा सुख करि बिसराम। जागे जामनि जानि सु जामु।
सौच शनान कीनि गुर पूरे। दासनि सुखद चलित जिन रूरे॥ ३॥

आसावार रबाबी गावति[2]। सुनहिं सिख्य सभि पाप मिटावति।
सतिगुर ध्यान लाई करि थिरे। निज सरुप महिं इकता करे॥ ४॥

भई प्रभाति भोग[3] तबि पायो। सुनि अरदास सीस सभि न्यायो।
सगरे वाहन कीनसि त्यारी। डोरे अरु स्यंदन असु[4] भारी॥ ५॥

पहिर बसत्र सभि शसत्र लगाए। प्रथम खड़ग सुंदर गर पाए[5]।
कंचन मुशट महां खर धारा[6]। सर खर भरि तरकश गर धारा॥ ६॥

धनुख हाथ गहि भे असवार। मक्खण संग लोक गन लार[7]।
सने सने चलि पंथ गुसाई। करि डेरा निस आई बिताई॥ ७॥

देश विदेशनि महिं सुधि होई। बिदते गुरु सुनति सभि कोई।
ले करि घर ते अनिक अकोर। संगति आइ गुरु की ओर॥ ८॥

मारग बिखै मिलहिं दरसंते। दरब आदि अनगन अरपंते।
चहुंदिशि ते चलि आइं घनेरे। मनो कामना पाइं बडेरे॥ ९॥

---

1. पड़ाव 2. कीर्तन करने वाले 'आसा की वार' नामक वाणी का कीर्तन करते हैं 3. समाप्ति की 4. घोड़े 5. गले में डाली 6. तीखी धार 7. पंक्ति

नितप्रति मिलहिं हजारहुं आइ। अरपहिं वसतुनि को समुदाइ।
पंथ उलंघि गए गुर धीर। खरे जाइ सत्तद्रव तीर॥ १० ॥
कहि करि तरनी तबि मंगवाई। करनधार[1] आनी सहिसाई[2]।
मक्खण सहित पार तबि परे। सगरे नर तैसे जल तरे॥ ११ ॥
डेरा कर्यो पारले कूल। श्री गुर देव अनंद के मूल।
चहति आपनो नगर बसायो। रुचिर सथान चितवि मन भायो॥ १२ ॥
पंच कोस कीरत पुरि परे। तहां जाइ गुर डेरा करे।
हुतो राज गिरपत[3] कहिलूरी। दूण पहारनि की बहु रूरी॥ १३ ॥
इत सत्तद्रव को चलहि प्रवाहू। निरमल नीर सदीव अथाहू।
सिंध गामनी[4] सलिता महां। बैठे द्रिशटि परहि जल तहां॥ १४ ॥
दुतिय दिशा महिं तुंग पहार। पूरब पशचम धार उदार[5]।
निकटि शिखर पर नैना देवी। जग जननी ईशुरी अभेवी॥ १५ ॥
करनी बिदत भविक्ख्यत जानी। अविनी रवनी पिखिय महानी।
तिस थल महिं कीनसि गुर डेरा। सरब रीति सुखदाइक हेरा॥ १६ ॥
पुरि अरु ग्राम अपर सोढीनि। करहिं शरीका द्वैशी चनि।
तहिं निवास ह्वै बधहि बिखादा। देखि परसपर बंधहिं बादा[6]॥ १७ ॥
श्री अंम्रितसर लवपुरि नेरे[7]। तहिं जे बसिहैं परहिं बखेरे।
इत्यादिक बहु भांति बिचारा। नगर बसायो चहैं निआरा॥ १८ ॥
जिम पूरब गुरु जेतिक भए। निज निज नगर बसावनि किए।
तिम अपनो हम अबहि बसावैं। पुनहिं शरीका क्वै न कमावैं॥ १९ ॥
सुख सों बास करहिं निज पुरि मैं। मतसर ते न तपै को उर मैं।
इम बिचार करि कारन ब्रिंदू। थिर भए तेग बहादर इंदू॥ २० ॥
सुनि सुनि पुंज संगतां आवैं। धन समुदाइ वसतु अरपावैं।
नित प्रति आमदनी बहु होइ। देग़ करहिं गुर समियै दोइ[8]॥ २१ ॥
देशनि के मसंद गन अहैं। गुरु भए, निशचै जबि लहैं।
भाई ब्रिढ को बंस पवित्ता। पिता पूत झंडा गुरदित्ता॥ २२ ॥
भेट अनेक प्रकारनि ल्याए। शुभ दसतार देनि कहु आए।
बाज अमोलक कठन कमान। आन्यो तरकश भरि खर बान॥ २३ ॥

1. मल्लाह 2. तुरंत 3. पहाड़ी राजा 4. समुद्र की ओर जाने वाली—नदी 5. पहाड़ों की पंक्तियाँ 6. झगड़ा 7. निकट, नज़दीक 8. दोनों समय—सवेरे और सायंकाल को लंगर चलता है

गादी पर श्री तेग बहादर। पहुंचे निकटि करनि कहु आदर।
सकल अकोर अरपना करी। सूखम पाग नमो करि धरी॥ २४॥

जथा जोग सतिगुरु उतारे। सेव कराई अनिक प्रकारे।
ब्रिद्ध को बंस मिल्यो जबि आई। जान्यो तबि मसंद समुदाई॥ २५॥

लै लै ब्रिंद पदारथ आए। भए दीन पद सीस निवाए।
सभि के सिवर गुर करिवाए। जथा जोग दे मान बधाए॥ २६॥

प्रथम रीति सों दे सिरुपाऊ। तिन देशनि को दई बिदाऊ[1]।
गुर सुभाव की करति प्रशंशा। कहैं कि 'अबि नास्यो मन संसा'[2]॥ २७॥

जबि ऐसे आए समुदाइ। धीरमल्ल सुनि मन खुनसाइ[3]।
दे धन को मसंद अपनावै। तऊ न को तिस के ढिग जावै॥ २८॥

काबल महिं मसंद इक रहै। बिना संदेह न गुर को लहै।
तिन दोनहु थल मनुज पठाए। तूरन मग उलंघति सो आए॥ २९॥

कुछक भेट गुरु निकटि पठाई। धीर मल्ल ढिग तिती पुचाई।
दोनहुं ते ले दसतार। गमने निज पुरि पंथ मझार॥ ३०॥

तिस मसंद को दीनी जाइ। दोनो देखि संदेह उपाइ।
इन मैं किम परखौं गुर जोइ। पुन मैं रहौ दास तिस होइ॥ ३१॥

चितवति चित महिं इन पुन आई। तोल लेहुं द्वै पाग जि पाई।
गुर की गरुवी, बिन गुरु हौरी। लेउं पता बैठ्यो इस ठौरी॥ ३२॥

पाछे धीरमल्ल, गुर आगे। धरि पगरी तबि तोलनि लागे।
चित महिं चितवनि धारी ऐसे। जो गुर होइ जनावहु तैसे॥ ३३॥

निज अज़मत को मोहि जनावहु। दास जानि अबि चरन लगावहु।
इम उर धरि तकरी पर तोली। भई धीरमल्ल की तबि हौली[4]॥ ३४॥

पठी जु गुर सु उठे न उठाई। त्यों त्यों होति अधिक गरवाई[5]।
सिख संगति तहिं ध्वे समुदाइ। 'धंन गुरु' बोले हरखाइ॥ ३५॥

इम लिखि पिखि करि पता अनेक। जान्यों सतिगुर जलधि बिबेक।
देश बदेशनि कीरति होई। लख्यो नवां सतिगुर इम लोई[6]॥ ३६॥

सूरज चढ्यो न छपै छपायो। महि मंडल तम[4] मोह मिटायो।
धीरमल्ल करि चिंता मने। ब्रिद्ध कुल निकटि पठे नर घने॥ ३७॥

---

1. विदाई 2 संशय 3. मन में ईर्ष्या करता है 4. हलकी 5. भारी 6. आँखें 7. मोह रूपी अंधेरा

'कलगी बाज भेट मुझ दीजै। जितो चहो धन तुम अबि लीजै'।
अनिक उपावनि को करि हारा। तिनहुं नहीं मानी इक वारा ॥ ३८ ॥
नहिं अपने ते भेट पठाई। नहीं आइ निज ग्रीव निवाई।
इस ते आदि जतन बहु करे। प्रथम समान रह्यो थिर घरे ॥ ३९ ॥
बिन धन जे लखपती कहावैं। हुंडी कहि कहि कूर चलावैं।
सुमतिवान स्याने नहिं माने। बिरम[1] जाहिं जे होहि इआने ॥ ४० ॥
गरज्यो केहरि जबि बन मांही। म्रिग जंबुक[2] किम थिरता पाहीं।
गज[3] आदिक जिस ते भै धारें। तिस आगै क्या अपर बिचारे ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री अनंदपुर थान आगवन प्रसंग' बरननं सपत बिसती अंशु ॥ २७ ॥

1. भटकना 2. गीदड़ 3. हाथी

अंशु २८

श्री अनंदपुर बसावनि प्रसंग

दोहरा

जबि सतिगुरु थिरता गही ऐश्वरज भयो बिसाल ।
मक्खण रिदै अनंद ह्वै पूजै गुरु क्रिपाल ॥ १ ॥

चौपई

इक दिन हाथ जोरि करि कह्यो । 'प्रभु जी रावरि दरशन लह्यो ।
मनो कामना पूरन होई । जनम मरन की चिंत न कोई ॥ २ ॥
ज्यों ज्यों नित प्रति दरशन कर्यो । मोह तिमर उर ते परहर्यो ।
लोक प्रलोक सहायक भए । सभि संगति के संसे गए ।
अबि मैं चाहौं चल्यो अवास । चित नित चरन कवल के पास ॥ ३ ॥
नहिं बिसरहु उरबर को दीजै । इह सेवक पर करुना कीजै ।
बांछति रहौं दरस को हेरे । आवति अहै चुमासा नेरे ॥ ४ ॥
चल्यो न जाइ पंथ हुइ पानी । सदन हमारे दूर महानी ।
हे प्रभु ! मुझ को नांहि बिसारो । सेवक जानि सदा संभारो' ॥ ५ ॥
सुनि श्री तेग बहादर पूरे । भए प्रसंन दीनि बर* रूरे ।
'जनम मरन तेरो कटि गइउ । श्री नानक को सेवक भइउ ॥ ६ ॥
सत्तिनाम सिमरहु दिन राती । गुर बानी पढ़ि ह्वै चित शांती ।
मनसों मिले सदा मिल रहे । पुन वियोग सो कबहूं न लहे ॥ ७ ॥
द्रिशटिमान पर कहां सनेहु । बिनसनहारे आदिक देहु ।
सत्ता चेतन फुरिबे हारी । बाल ब्रिद्ध बय के न मझारी ॥ ८ ॥
सदा एक रस परम पुनीता । निज सरुप लखि थिर करि चीता ।
जिस मैं दुख सुख हरख न शोक । आवन जान न लोक प्रलोक ॥ ९ ॥
मन थिर सदा तिसी महिं करीअहि । सदा सरुप अनूप संभरीअहि ।
इम कहि खुशी करी गुर जबै । चरन कमल संग लिपट्यो तबै ॥ १० ॥

---

*सुन्दर वरदान दिया।

तजे न जाहिं सीस धरि रहिउ। हाथनि साथ पलोसति गहिउ।
कितिक बारि महिं गुरु छुराए। प्रेम बसी द्रिग[1] जल ढुरि आए॥ ११॥
बारि बारि बंदन करि भले। बिदा भयो चित चहति न चले।
मुरि मुरि हेरति नीठ चलंता। उर धरि लीनि ध्यान भगवंता॥ १२॥
बहुत मोल को बर[2] सिरुपाइ। करुना सहित गुरु ते पाइ।
सिर पर धरि निज आइवि डेरो। चढ्यो तुरंगम पर गम प्रेरो॥ १३॥
गुरु गुरु सिमरति कीनि पयाना। लेकरि अपनि समाज महाना।
गयो आपने देश मझारी। जहिं कहिं कीरति गुरनि उचारी॥ १४॥
इम मक्खण जबि सदन सिधारा। भयो सफल निज जनम सुधारा।
पीछै सतिगुरु उद्‌दम धरैं। नगर बसावनि को चित करैं॥ १५॥
न्रिप के लोक ग्राम के और। करति मालकी जे तिस ठौर।
तिन के निकटि मसंद पठायो। जाइ पहूंचि प्रसंग सुनायो॥ १६॥
'श्री हरि गोविंद गुरु बिसाला। तिनके नंदन बीर क्रिपाला।
जिन श्री तेग बहादुर नामू। बिरति शांतकी बड गुन धामू॥ १७॥
सो चाहति हैं नगर बसाए। थांन चंडिका तरे सुहाए।
जथा[3] इनहुं के जेशट भ्राता। बाबा गुरदित्ता बख्याता॥ १८॥
पूरब आइ निकटि गिर[4] थान। पिखि रमणीक अनंद महान।
श्री कीरतपुरि कीनि बसावनि। चारहुं बरन करे घर पावनि॥ १९॥
तिम अभिलाखति थिरता लहे। ज़र खरीद छित[5] को चित चहे।
इस कारन ते हम चलि आए'। सुनि मसंद ते न समुदाए॥ २०॥
अवनी पति को बूझनि कीना। दीनि हुकम नीके चित चीना।
न्रिप के नर अरु ग्रामनि केरे। आइ सथान सरब को हेरे॥ २१॥
मिलि सभिहिनि जिम मोल बखाना। केतिक दीनि दरब तिन पाना[6]।
ज़र खरीद[7] के पटे लिखाए। ले सतिगुर निज निकटि रखाए॥ २२॥
रुचिर महूरत महिं करि त्यारी। गन कारीगर लीनि हकारी।
ब्रिंद मजूरनि दे धन आने। ले सभि अपने संग प्याने॥ २३॥
सभ तरकीब[8] आप उपदेशी। सदन आदि की नीव विशेशी।
थान अजीत जानि पुरि कीना। बिजै महूरत महिं चित चीना॥ २४॥
टक लगाइ गुर प्रथम मनाए। दासनि ते पकवान अनाए।
सरब प्रकार कीनि गन मंगल। जिन दरशन ते मिटहिं अमंगल॥ २५॥

---

1. आँखें 2. काफी मूल्यवान और सुन्दर सिरोपा गुरु जी ने मक्खण शाह को दिया 3. जैसे 4. पहाड़ी इलाके में 5. ज़मीन 6. हाथों से धन दिया 7. पैसे देकर खरीद करके लिखित करवा ली 8. योजना

कारीगर लगाइ गन दए। सदन उसारनि[1] लागति भए।
बसनहार गन लोक बुलाए। दान मान करि से हरखाए ॥ २६ ॥
निकटि कि दूर सुन्यो सभिहूनि। 'गुर पुरि बसनि लग्यो बिचदूंन[2]।
केतिक बनक आइ करि मिले। बनज हेतु हाटनि करि भले ॥ २७ ॥
कितिक मिहनती मानव आए। चलहि जीवका—मन लखि पाए।
अपने सदन उसारनि चहे। सुत बनिता ले करि तहिं रहे ॥ २८ ॥
केतिक द्वाबे आदिक देश। बसनहार मिलि गुरु विशेश।
कितिक पहारनि की जहिं दूंन। गुर पुरि बसनि जानि सभिहूंनि ॥ २९ ॥
सुन बनितादिक[3] लिए कुटंब। बस्यो चहति भे गुरु अलंब।
मिलहिं मसदनि के सगि जाइ। चहति बसतु को जाचति पाइ ॥ ३० ॥
हुकम कियो श्री तेग बहादर। 'जो मंगहि कुछ, दीजहि सादर'।
यांते करी सहाइ मसंद। काशट आदिक देति बिलंद ॥ ३१ ॥
केतिक चिनहिं चिनावहिं केई। ले कुटंब वासे तहिं तेई।
चिनी दुकान बजार बनायो। ले वसतुनि बिवहार चलायो ॥ ३२ ॥
संगति आवति देश बिदेश। सौदा होवनि लग्यो बिशेश।
चावर[4], चून[5], दार[6] ते आदि। सभि वनजहिं हित भोजन सादि ॥ ३३ ॥

इस विधि कितिक बसे तहिं आंनि। मिहनत मानव ठानि महान।
लेति मजूरी जो जिस करिही। अपनि जीवका सभि अनुसरही ॥ ३४ ॥
प्रथम सभिनि को जो जिस लाइक। देति भए गुर सभि सुखदाइक।
प्रथम गुरनि जिम नगर बसाए। तिम ही होति भयो समुदाए ॥ ३५ ॥
पुन सतिगुर निज धामनि केरी। नीवी नीव खुदाइ घनेरी।
खरे होइ करि जुगति बताई। 'इम चिनीयहि निकेत सुखदाई' ॥ ३६ ॥
सुनि कारीगर लगे उसारनि। सुंदर घर समेत बिसतारनि।
इक ध्रमसाला वडी बनाई। जिस महिं संगति उतरहि आई ॥ ३७ ॥
राखे दर अनेक चहुं ओर। ग्रीखम महि समीर की लोर[7]।
इक दर के केतिक बनवाए। इस प्रकार पुरि गुरु बसाए ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे **'श्री अनंद पुर बसावनि प्रसंग'** बरननं नाम अशट बिसंती अंशु ॥ २८ ॥

---

1. मकानों का निर्माण करने लगे 2. तराई-घाटी में गुरु का नगर बसने लगा है 3. पुत्र-पत्नी आदि परिवार के सदस्यों को लेकर 4. चावल 5. आटा 6. दाल 7. गर्मी में ठण्डी हवा लेने के लिए

अंशु २६
माखो निकासनि प्रसंग

दोहरा

सतिगुर रिदै बिचारि करि पिखि पुरि की दिशि दौन ।
हुते मसंदनि सहित थित, चढ़ि करि ऊचे भौन ॥ १ ॥

चौपई

इक दिशि धार कैल जुति सैल । हरित तरोवरु सुंदर सैल ।
दिखीअति गिरवर तुंग नजीका । जहां बास श्री देवी जी का ॥ २ ॥
दुतिय दिशा द्रिग फेरति हेरा । सतुद्रव केर प्रवाह बडेरा ।
होति अनंद पिखे अभिरामू । यांते धरि अनंदपुरि नामू ॥ ३ ॥
जिस दिन धर्यो सु नाम गुसाईं । तिस ते निसा भई जबि आई ।
खान पान करि पौढनि कीना । तिमर दसो दिशि छायो पीना ॥ ४ ॥

तबि इक दानव आवनि चह्यो । बहु दुरगंधति वायू वह्यो ।
जबि बदबोइ गुरु को आई । मुख ते बसन ठानि सहसाई ॥ ५ ॥
कर्यो बिलोकनि जिस दिशि पौर । दारुन वेख खर्यो तिस ठौर ।
महां भयानक रुप दिखावा । जिह के पिखे त्रास नर पावा ॥ ६ ॥

सीस महांन बिसान खरे खर[1] । लाल बिसाल कराल वाल धरि ।
ओठनि को चाटति बड जीहा[2] । रकत बिलोचन दारुन दीहा ॥ ७ ॥
शमस वाल भी लाल बडेरे । गर महिं कर महिं हाड घनेरे ।
कारो रंग अंग सभि केरा । थूल उदर अरु धमनी[3] हेरा ॥ ८ ॥
हाथनि महिं नर मुंड बजावहि । क्रूर द्रिशटि ते गुरनि डरावहि ।
'अबि हम खै हैं' त्रिय संग कहै । 'त्रिपतहिं रकत ब्रिंद जबि लहैं ॥ ९ ॥
निज पुरि हमरे बास बसायो । तनक नहीं उर मैं डरपायो' ।
इम बोलति को सुनि रिस धरिकै । धनुख धर्यो ढिग गुरु गहि करिकै ॥ १० ॥

1. बड़े तेज सींग 2. जिह्वा 3. नाड़ी

तीखन भीखन संध्यो[1] बान। जबि खैंच्यो करि बाहुनि तानि।
लख्यो प्रताप शकति मैं महां। मो कहु पिखि सधीर थिर इहां ॥ ११ ॥
ऐसी होइ न, सर को छोरहिं। अज़मत बल ते मुर उर फोरहिं।
त्रसति होइ करि तबि घिघिआयो। करे कोप गुरबाक् अलायो ॥ १२ ॥
'खरो होहु तुझ जानि न दै हैं। एक बान ते प्रानहि ध्वैहैं।
हिल्यो डरावनि अपर नरनि को। छिन मैं करहिं नास तुव तन को ॥ १३ ॥
फेर न फेरा करहिं, न हेरै। सहित कुटंब हतहिं इस बेरै।
नांहि न कहु, अपनो बिरतांत। थाउं नाउं कीजहि बखयात' ॥ १४ ॥
सुनि कर जोरि निहोरनि करता। सनमुख हुइकरि असुर[2] उचरिता।
'माखो नाम जानीअहि मेरा। इस पीपर तरु पर नित डेरा ॥ १५ ॥
चिरंकाल को बास हमारो। निज कुटंब जुति रहति सुखारो।
छीन लीनि तुम कीनि बसेरा। चहो बसावनि नगर बडेरा ॥ १६ ॥
रह्यो न जाइ समीप तुमारे। करहु कीरतन ऊच उचारे।
पढ़हिं सिक्ख ऊचे गुरु बानी। हमरी कुल को इह दुखदानी ॥ १७ ॥
रच्छया सगल देश की होई। कछू न भच्छन दें हम जोई।
शबद पढ़ति जहिं लगि सिख फिरैं। तिस दिशि महिं उरकरि नहिं बरैं ॥ १८ ॥
अपर थान कित नगर बसावहु। हमरो बासा इहां बचावहु।
बरख सात सै बीते मोही। बहु गुज़रान भली बिधि होही ॥ १९ ॥
गिर कहिलूर दूण इह सारी। बिचरौं सभि थल करौं अहारी।
भई चिंत जबि के तुम आए। छुधति रहनि लागे दुख पाए ॥ २० ॥
इस कारन ते आयहु तीर। तुम नहिं त्रसे रहो धरि धरि।
देखि बान मारति मन जाने। करामात जुति गुरु महाने ॥ २१ ॥
जे इम होति न, देतो मार। करति नगर के नरनि उजारि।
अति समरथ जुति जबहि पछाने। तजि गिनती सभि बिनती ठाने ॥ २२ ॥
अस कहि खरो कंप तन करता। सैल जु सुरमे[3] की समसरता।
मनहु श्यामघन, दांत निकारे। अहैं बलाका बिसद[4] निहारे ॥ २३ ॥
सुनि करि सतिगुरु तेग बहादुर। क्रूर बाक् ते करति अनादर।
'चल्यो जाहि अबि रहो न ईहां। अपर थान बसिको करि प्रीहा[5] ॥ २४ ॥
इस थल गुर कुल अचल बसेगी। बिघन अनेकनि तुरत नसेगी।
हुई है राज प्रताप हमारा। आवहि संगति वार न पारा[6] ॥ २५ ॥

---

1. मारा 2. दैंत्य 3. सुरमें की भांति काला 4. बगले की भांति सफ़ेद 5. इच्छा 6. जिसका अंत नहीं पाया जाएगा

तुम सभ की किम होइ रिहाइश । अबि चलि जाहु मानि मम आइसु ।
अपर मलेछनि के गन देश । तहिं बसि करि गुज़ारन विशेश ।। २६ ।।
इहां जंग बड परहिं पवाड़े[1] । दल जूटहिं करि अधिक अखाड़े ।
तुझ को बनहि गमन इस काला । नतु संकट को लहैं बिसाला ।। २७ ।।
सुनि माखो तबि जोरति हाथ । 'करुना करहु कुछक गुरुनाथ ।
मेरो नाम कहैं अरु सुनैं । बिदतौं जगतु चाहि अस मनैं[2] ।। २८ ।।
पुरि मैं जिम मेरो हुइ नामु । करिबे उचित तथा, सुख धामु' ।
इम कहि बिनती कीनि महानी । सुनि करि सतिगुरु करुना ठानी ।। २९ ।।
'जितिक भूप जुति मनुज पहारी । अर हिंदू जे देश मझारी ।
हमरे सिख सेवक जे नांही । अपर पंथ के गमनहिं माही ।। ३० ।।
सो सभि तोहि नाम पर कहैं । माखोवाल अनंदपुरि लहैं ।
इम संग्या इस पुरि की होइ । नर नारी भाखहिं सभि कोइ ।। ३१ ।।
बिदतहिं जगत बिखै तुव नाम । बसहि नगर इस थल अभिरामु ।
सुनति बाक् को जिम गुर भाख्यो । हरखति हुई माखो नहिं माख्यो[3] ।। ३२ ।।
बूझनि लग्यो 'देश अबि कौन ? बसों जाइ करिकै निज भौन ।
आप बतावहु सो इसथाना । करि बंदन पद ठानि सु पयाना ।। ३३ ।।
तबि सतिगुर हित तांहि बिचारा । लख्यो भविक्ख्यत जो हुइ सारा ।
कह्यो बाक् माखो संग फेर । 'बस्यो चहैं जे काल बडेर ।। ३४ ।।
बिन चिंता चित सहित कुटंब । ब्रिद्ध जीवका धारि अलंब[4] ।
देशबावनी तुरकनि केरी । बासहि पुरि सिर्हंद बडेरी ।। ३५ ।।
तहां जाइ सुख साथ बसीजहि । गन ग्रामनि महिं जीवा कीजहि ।
सूके हरे खेत हैं जेऊ । सभि की लेहु मच्छ करि तेऊ ।। ३६ ।।
आच्छो देश करहिं गुजराना । सुनहुं तोर हित कीनि बखाना ।
प्रथमै बास हुइ तहिं तेरा । कितिक काल बीतहि लिहु हेरा ।। ३७ ।।
तहिं आवहि बहु जाति तिहारी । बसहि बठिंडे के जु मझारी ।
एक आंख जिसकी बलवंता । सौ संमत को बास करंता ।। ३८ ।।
तिसहि दुरग ते देहिं निकासी । करहिं पठावनि सो तुझ पासी ।
बड कुटंब को ले करि आवहि । बीच सिर्हंद बसहि सुख पावहि ।। ३९ ।।
तिस के संग मेल करि रहो । सभि के सहित बसहु सुख लहो' ।
इम क्रिपाल जबि थान बतायहु । बंदन ठानि रिदे हरखायहु ।। ४० ।।

---

1. झगड़े, झंझट 2. मेरे मन में यह चाह है 3. माखो दैंत्य ने गुस्सा (नहीं किया) 4. आसरा

ले करि निज कुटंब को साथ। सिर पर आइसु मानी नाथ।
गयो सिरहद बिखै जहिं बाग। बडे ब्रिच्छनि कहु करि अनुराग ॥ ४१ ॥
बस्यो भले निज जीवा करे। खेतनि की शै सभि की हरे॥
बाढ़ि बटोरहिं गाहि बनावहिं[1]। आनहिं कि पीसि पकावहिं ॥ ४२ ॥
सतिगुरु हरि परमेशुर नामु। करहि न, क्रित्त करहिं सभि धामु।
तिन ते वहिर कि घर महिं होइ। शै[2] अनाज की काढहि सोइ ॥ ४३ ॥
कहूं चुथाई कहूं तिहाई। कित ते अरध लेति सो खाई।
अचवनि लग जु हरि गुर नामू। सिमरहिं, नहिं प्रविशै तिस धामू ॥ ४४ ॥
इम माखो जबि गुरु निकारा। सुपति जथा सुख भई सकारा[3]।
सौच शनान कीनि प्रभु बैसे। पुरि की कार करावहिं तैसे ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे '**माखो निकासनि प्रसंग**' बरननं नाम ऊन त्रिसती अंशू ॥ २९ ॥

---

1. खेती काट कर इकट्ठी करते हैं और गहाई करके अनाज निकालते हैं
2. अन्न वस्तु 3. सवेर

अंशु ३०

पीर प्रसंग

दोहरा

श्री गुर हरि गोबिंद के नंदन बंदन जोग।
तेग बहादर धरम धुर सदा रहैं ब्रिति जोग ॥ १ ॥

चौपई

मंदिर सुंदर हेत करावनि। श्री गुर शिलपी[1] करे अवाहनि।
ब्रिद मजूर बुलाइ लगाए। धरमसाल को ब्योंत बनाए ॥ २ ॥
दार बिलंद सुगंधति ब्रिंद। नाना चित्रति बन अरबिंद।
सुघरन घरि घरि[2] घर घर द्वारा। करी सुहावन अनिक प्रकारा ॥ ३ ॥
चारु चौक चौकोन अकार। रच्यो फरश इत उत दरबार।
रुत खशटनि महिं सभि सुखदायक। सुंदर बन्यों देखिबे लायक ॥ ४ ॥
इक ध्रमसाल बिदेशनि[3] हेतु। इक रहिबे हित बने निकेत[4]।
एक पीर कित गमनति जाई। थल अनंदपुरि पहुंच्यो आई ॥ ५ ॥
चितवती लगी देखि करि सोइ। रचना रुचिर बजारनि जोइ।
'किनहुं कीन इह ? पूछति भइउ। सुनति शिलपीयनि उतर दइउ ॥ ६ ॥
'श्री गुर हरि गुविंद कुल चंदु। तिनके तेग बहादर नंद।
बैठहिं बिदत अबहि गुरगादी। भरे बिराग ग्यान अहिलादी ॥ ७ ॥
तिनहुं कराए इह बर मंदर। बांछति पुरि बसाइबो सुंदर'।
सुनति पीर ने तरक बिचारी। करनि कहिन गुर बिखम[5] निहारी ॥ ८ ॥
जे बैराग होति उर मांही। इतो अरंभ करति किम नांही।
इक सरीर निरबाह बिचारैं। जिस किस बिधि करि काल गुजारैं ॥ ९ ॥
पुन हिंदवनि को गुर कहावैं। किम निज सिक्खनि को सु तरावैं।
इम मन ठानि बखान्यो धीर। 'शिलपी ! सुनहुं होहु तुम तीर[6] ॥ १० ॥

1. कारीगर बुलवाए 2. घड़ घड़कर 3. विदेशियों के लिए 4. घर 5. अंतर 6. पास आकर

गुर समीप जाइबो जबै। इह संदेसा भाखहु तबै।
इस प्रविरति महिं रिदा तुमारो। गन सेवक किम पार उतारो ॥ ११ ॥
एव प्रशन करि उत्तर लीजो। हटि आवों मैं, तबि तुम दीजो।'
इम कहि चल्यो गयो जित जाना। शिलपी करी कार तिस थाना ॥ १२ ॥
गुर ढिग संध्या को उठि गइउ। रिदे संदेसा सिमरति भइउ।
दरस्यो दरस वंदना ठानी। समुख खरो हुइ गिरा बखानी ॥ १३ ॥
'एक पीर तिह मारग जाति। हम सों पूछि कही तिन बात।
इम प्रव्रिति महिं जबि गुर होवा। किम तरिबो सिक्ख्यनि को जोवा ॥ १४ ॥
इस को उत्तर गुरु ते लीजो। हटि हम आवहिं तबि तुम दीजो।
ज्यों रावर को होइ रजाइ। त्यों आवति को कहैं बनाइ' ॥ १५ ॥
सुनि तिन ते श्री गुर मुसकाने। कह्यो तबहि 'इम करहु बखाने।
हमरे साथ चलो गुर पास। जिम पूछहु तिम करहु प्रकाश ॥ १६ ॥
उत्तर चहति रुबरो[1] दीए। इम कहि आवहु तिह संग लीए।
सुनि शिलपी सो रैन गुजारी। भई प्राति लगि करन उसारी[2] ॥ १७ ॥
करहि प्रतीखन देखनि पीर। ले करि चलवि संग गुर तीर।
इतने महिं आयो चलि सोइ। मिले परसपर हरखति होइ ॥ १८ ॥
बूझ्यो 'मोहि संदेसा देहु। गुरु सो कह्यो कि नांही एहु'।
शिलपी सादर सुधि सु बताई। 'हुकम भयो लिहु दरशन पाई' ॥ १९ ॥
सुनति पीर ने रिदै बिचारा। उत्तर उचरहिं कौन प्रकारा।
चह्यि सुन्यो, मिलिनो बनि आवै। सिफत खुदाइ पंथ व्रिदतावें ॥ २० ॥
होइ गुफतगो[3], नीकी अहै। महां पुरख संगति सुख लहै।
एक विचारति गमन्यो साथ। जिह ठां बैठे गुर जग नाथ ॥ २१ ॥
झुक्यो सलाम कीनि, भा खरो। खरो भाइ अंतर उर भरो।
आइसु पाइ असीन्यो[4] पीर। बूझनि कीनसि गुरु गहीर ॥ २२ ॥
'कौन अहो ? तुम कहां बसंतो ? क्या पूछति हो ? कहहु मतंतो'।
भन्यो पीर ने 'सय्यद मैं हों। रोपर नगरी बिखै बसैं हौं ॥ २३ ॥
हमरे हुते मुरीद अगारी। तिन ढिग जानि हेतु उर धारी।
इत दिशि आवनि भयो हमारा। जिस ते याफत[5] दरस तुमारा ॥ २४ ॥

1. सामने 2. निर्माण 3. वार्तालाप 4. पीर बैठ गया 5. प्राप्त किया

तुम हिंदुनि के गुरु कहावहु। भलो होनि को पंथ बतावहु।
इह महिलाइत[1] महां उसारनि। नित प्रति ममता अधिक बिथारनि ॥ २५ ॥
संत जनहुं कै नांहिन नीकी। बडता जग की जानति फीकी।
हुइ प्रलोक महिं जो सुखदाई। तिस आचरहिं, तजहिं चपलाई' ॥ २६ ॥
'सुनहु पीर !' गुरबाक् उचारा। 'सभि आश्रम ते ग्रिहसत उदारा।
अपर सकल कहु इह उपजंतो। पुन सभिहूंनि अलंब रहंतो ॥ २७ ॥
जो ग्रिहसत ते उतरहि पूरा। अंतकाल प्रापति पद रूरा।
पुंन दान का करहि सरीर। सो गिरही[2] गंगा का नीर ॥ २८ ॥
जो जो थान वान जित होइ। हेरि अतिथि को पूजहि सोइ।
महां पुंन फल है इस केरा। चिरंकाल सुख पाइ बडेरा ॥ २९ ॥
इसी पुंन के फल चहि देखा। बसत्र अछाद सरीर अशेखा[3]।
पोढहु, जानि लेहु इस काल। जिम इसते सुख लहिसि बिसाल' ॥ ३० ॥
सुनति पीर चि चक्रिति होवा। देखनि चहति पर्यो तबि सोवा।
भयो सुपन, हुइ गुर कै संग। बडे बेग ते जाइ उतंग[4] ॥ ३१ ॥
पहुंचे सुरग सु मंदिर सुंदर। भोग अनंद महां जिन अंदर।
अनिक भांति की रचना देखी। पीर मती बिसमाइ बशेखी ॥ ३२ ॥
कितिक दूर गमनति ने हेरा। घर कंचन को जहिति बडेरा।
रेशम डोर बीच लरकाई। ज़री दार गुंफे छबि छाई ॥ ३३ ॥
रुचर प्रयंक सु चामीकर को। चहुंदिशि मुकता झालर बर को।
म्रिदुल सेज पय फेन[5] समाना। आसतरन सिहजा उपधाना ॥ ३४ ॥
तिस पर बैठ्यो पुरख सुहाई। चंद्रमुखी गहि डोर झुलाई।
तिस को श्री गुरु बूझनि कीना। 'को सुभ करम, दान को दीना ॥ ३५ ॥
जिस ते अस सुख प्रापति भइउ। सो तुम कहहु जथा बिधि कइउ।
सुनति पुरख ने करि उर ग्यात। अपनो उचरति भयो ब्रितांत ॥ ३६ ॥
'पूरब जनम शेर को मेरा। जून तामसी अघी बडेरा।
एक सथान करति मैं बासा। अलप महीरहु तरै निवासा ॥ ३७ ॥
बिड़ा हीस[6] को संघन घनो। मानुख सदन बनायो मनो।
पानी पौन छुवै नहिं जहां। निस महिं बसौं जाइ करि तहां ॥ ३८ ॥
एक दिवस मैं गमन्यो बाहर। हित अहार जीवन इति जाहर[7]।
बिचरति वन महिं म्रिग को मार्यो। त्रिपत होइ मग सदन सिधार्यो ॥ ३९ ॥

1. महल मंदिर 2. गृहस्थी 3. सारे 4. ऊंचा 5. दूध की झाग 6. एक बेल
7. जीवित जीवों को मारना

चली बाड[1] घन की घट आई। धूल उडी द्रिशटी तम छाई।
पंथी दोइ तहां रुकि गए। कितो आगरो पिखति न भए॥ ४० ॥
इत उत बिचरति जा घर मेरा। देख्यो कीनसि दौरि बसेरा।
अपर अलंब नहीं ढिग कोई। करका[2] की बरखा बहु होई॥ ४१ ॥
बैठि तिन्हों ने जानी हेरि। इह सथान बासो बड शेर।
अस न होइ अबि चलि सो आवै। इतहि हमहिं दोहनि को खावै॥ ४२ ॥
करका बरखति मैं तबि आयो। बोल नरनि को ढिग सुनि पायो।
जान्यों मनुज अहैं घर मांहि। आगे गमन कीनि तबि नांहि॥ ४३ ॥
मेरे अतिथि भए इह आइ। रैन बसेरा करि सुख पाइ।
इस ते परे धरम नहिं और। अभिआगति को दे सुख ठौर॥ ४४ ॥
पूरब किसी पुंन ते मोही। इस प्रकार मति उर महिं होही।
खरो रह्यो मैं बाहर तबै। ओरे सहे गात[3] पर सबै॥ ४५ ॥
डरति सु पंथी बासे घर महिं। सुख सों बिती जामनी तिम कहि।
देखति रहे बहिर दिशि दोऊ। मत केहरि संघारहि कोऊ॥ ४६ ॥
मैं मन धरम जानि हटि रह्यो। दुख बरखा सभि तन पर सह्यो।
अरध राति लौ ब्रिशटी[4] भई। बिना आसरे मैं सिर लई॥ ४७ ॥
पुनहिं पौन गमनी अति सीर[5]। व्याप्यो सगरे सीत सरीर।
भोर[6] होति मैं मिरतक भइउ। सिसर[7] बिसाल प्रान छुटि गइउ॥ ४८ ॥
भई प्राति सो संत प्रबीना। निकसे म्रितक मोही पिखि लीना।
करुना कीनि जानि मम करम। फल दीनसि अस, जस अति धरम॥ ४९ ॥
तिस रात्री का फल अस होवा। पहुंचि सुरग सभि बिधि सुख जोवा।
अतिथि पूजिबे धरम महाना। नहिं ग्रिहसती के अपर समाना॥ ५० ॥
इह सभि पीर सुनी जबि कान। कर्यो जगावन्दि पर्यो जि थान।
उठति चरन पर बंदन कीनि। 'रावरि भेद सक्यो नहिं चीन॥ ५१ ॥
जो तुम कहहु सु है सभि नीकी। रावरि करै बिना बहु फीकी।
जगत उधारनि धारनि तन को। मैं अस निशचै कीनसि मन को॥ ५२ ॥
सतिगुर खुशी भए सुनि बिनती। शरधा दई, त्यागि बिय गिनती।
बंदन करि निज धाम सिधारा। अपर थान महिं सुजसु पसारा॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'पीर प्रसंग' बरननं नाम त्रिसंती अंशु॥ ३०॥

---

1. हवा 2. ओले 3. शरीर 4. वर्षा 5. ठण्डी 6. सवेर 7. सर्दी

अंशु ३१

धीरमल्ल आदि प्रसंग

दोहरा

सुंदर सदन सुधारि करि बसैं गुरु महांराज।
प्रजा वसावनि पुन करी दे सभि विधिनि समाज ॥ ३ ॥

चौपई

नित प्रति संगति आइ नवीन। डेरा परहि बनज हुइ पीन[1]।
बैसन[2] आदि दुकान बनाई। गनी[3] गरीब बसैं समुदाई ॥ २ ॥
कितिक सिख्य ही रचैं अवास। हेतु जीवका कीनसि बास।
त्रित के करन हार नर ब्रिंद। बसे आनि करि ढिग बखशिंद ॥ ३ ॥
आइ सैकरे नित नर नारी। रहै भीर दरबार अगारी।
ब्रिंद मसंद अनंद बिलंदे। रचैं निकेत निकटि सुखकंदे ॥ ४ ॥
अनिक फकीरनि पंकति आई। लखे क्रिपाल परे शरणाई।
बंदन करि बैठहिं नित पास। बनहि देग ते अचवहिं ग्रास[4] ॥ ५ ॥
बांछति बसत्र पाइ गन रहैं। जनम सुधारहिं 'गुरु गुरु' कहैं।
केतिक दास सदा रहिं साथ। सेवा करहिं जोरि करि हाथ ॥ ६ ॥
दिनप्रति ऐश्वरज बधहि बिसाला। दुगुन चुगूना दसगुन जाला।
इक आवहि संगति इक जाही। पसर्यो सुजसु अशट[5] दिशि मांही ॥ ७ ॥
जे दुरलभ हैं अनिक अकोरें। अरपनि करै खरे कर जोरें।
अंबर[6] पशमंबर, पाटंबर। सुंदर आदि ऊन के कंबर[7] ॥ ८ ॥
श्री गुजरी हित घने बिभूखन। आगे अरपहिं आनि अदूखन[8]।
धन की गनती कछू न होइ। दिन प्रति गुर आगे बहु जोइ ॥ ९ ॥
पिखि श्री तेग बहादर दरब। खरचन करति जाति तिम सरब।
नगर बसावनि महिं बहु देति। जहिं कहिं सुंदर बनहिं निकेत ॥ १० ॥

---

1. भारी व्यापार होता है 2. वैश्यों आदि ने 3 धनवान 4. कौर (भोजन करते हैं) 5. आठों दिशाओं में यश फैल रहा है 6. सूती कपड़े 7. ऊन के कंबल 8. दुख रहित होकर प्रसन्नता पूर्वक (गुरु जी)

दीरघ देग़ बनहि जुग काला। होति खरच के अंन बिसाला।
सिरेपाउ सिक्खयनि को देति। लेति श्रेय के हेतु सुचेत ॥ ११ ॥
इत्यादिक बहु कारन और। खरचि करति सोढी सिरमौर।
इस बिधि केतिक बिते महीने। गुरु बिदत सभि देशनि चीने ॥ १२ ॥
जो शरीक सोढी कुल अहैं। सतसर सहित बिसम उर रहैं।
किस प्रकार बिवहार मझारी। नहिं मति हुती, बिती बय सारी ॥ १३ ॥
लखहिं निलयक सगले जाहूं। जिम निशचै गुर कीनसि तांहूं।
बड ऐश्वरज बध्यो ततकाला। देखा देखी मानव जाला ॥ १४ ॥
हम को तजि तजि तिस ढिग गए। इक मक्खन ने अस बिधि कए।
अजहुं न कुछ विचार उर आयो। धीर मल्ल घर ग्रिथे पुचायो ॥ १५ ॥
दुलभ वसतु निज बडिअनि कर की। महिमा लखि न सक्यो असबर की।
कै धरि त्रास फेर करि दीना। राख्यो निकटि न, क्या इह कीना ॥ १६ ॥
जो संगति हम माननी लागी। सहित उपाइन सो अबि भागी।
इत्यादिक सोढी दुख पावैं। औगुन कलपहि अनिक सुनावैं ॥ १७ ॥
ज्यों ज्यों धीरमल्ल जसु सुनै। संगति जाति देखि सिर धुनै।

महिमा मन नहिं मानहि नीकी। तऊ लोभ बसि महि है फीकी ॥ १८ ॥
जानहि—ऐश्वरज भयो घनेरे। चहुंदिशि की संगति तिस नेरे।
ब्रिंद दरब को अरपहि जाई। महि महिमा महित लखाई ॥ १९ ॥
भ्रात भतीजा मम गुर भयो। तिन पशचात उचित मैं थयो।
दुइ पीड़ी इह ऊपर रहैं। किम गुर करे, न इस पद लहैं ॥ २० ॥
दिल्ली महिं मसंद बिरमायो। तिस ते अपनो नाम कहायो।
पुन मक्खण मूरख अनजान। धन देकरि जग कीनि बखान ॥ २१ ॥
देनि लेनि करि इनके साथ। बैठ्यो बनि बिलंद गुर नाथ।
मो ते जरी न जाइ बडाई। 'कहु शीहां ! क्या करहिं उपाई ॥ २२ ॥
इसकी जिम मनीत हटि जाइ। चहुंदिशि ते धन भा समुदाइ।
भयो गरीब प्रथम इह रहिऊ। नीठ नीठ गुज़रान ने बहिऊ ॥ २३ ॥
छप्यो रहै को जानहि नांही। नहिं कुछ बिदत संगतां मांही।
एक बारि ऐसे बनि गयो। नगर वसावनि समरथ भयो ॥ २४ ॥
मारन हित जे करे उपाइ। सो सभि बाद[1] गए दुखदाइ।
अबि जो बनहि बतावहु मोही। जबि इह टरै शांति चित होही' ॥ २५ ॥
धीरमल्ल ते सुनि करि बैन। दुशट मसंद क्रूर करि नैन।
कह्यो कि 'मैं सभि करने हारा। जानौं जतन अनिक परकारा ॥ २६ ॥

1 कार्य

मोहिं कहे महिं रहीए आप। वधहि चौगुनो[1] अधिक प्रताप।
को अस काज जु तुम ते होइ न। तूरन रिपु के सुख को खोइ न॥ २७॥
अबि इम जतन बनावनि करो। रामराइ संग प्रीती धरो।
अहै भतीजा पुत्र मनिंद। कुल महिं लायक जनु नभ[2] इंद[3]॥ २८॥
आलमगीर[4] कहे महिं जांही। सादर नित समीप चलि जाही।
शाहु संग सो बात चलावै। अजमति हित नित निकटि बुलावै॥ २९॥
दिल्ली बिखै जाइ जे बरै। इत हम रहैं काज सभि सरै।
शाहु सभा महिं हेहि प्रवेश। जाचहि अजमत अधिक हमेश॥ ३०॥
अपने काज चहे करिवावै। नहिं आवनि दे निकटि बसावै।
राम राइ महिं अजमति भारी। किम सरबर[5] हुइ शाहु अगारी॥ ३१॥
जे करि करामात नहिं होइ। कै हठ करै दिखाइ न सोइ।
महां क्रूर मति अवरंग शाहू। पकरहि देहि कैद के मांहू॥ ३२॥
कै करि क्रोध कुमति ततकाला। धर ते सीस कराइ निराला।
जबि दोनहु मैं इक बनि जाइ। होइ कैद कै प्रान बिलाइ॥ ३३॥
तबि तुम ही हो गुरु जग मांही। सभि सिख आइं आप के पाही।
अरपहिं दरब चहूं दिशि केरा। हुइ रावरि ऐश्वरज घनेरा॥ ३४॥
इह उपाइ अबि जान्यो मरै। जिस ते निज शत्रू परहरै।
सुनति धीरमल्ल अनंद उमाहा। 'साध साध' सौ दुशट सराहा॥ ३५॥
होनहार तैं बात बखानी। तहिं पहुंचे हुइ निशचै हानी।
संत सैंकरे तिह मरिवाए। किमहूं किस ते त्रास न पाए॥ ३६॥
मोर भतीजा अजमत भारी। हम पर बनहि क्यों न उपकारी।
इक तो हम पर अहै असान[6]। दूजे तिस को भी रिपु जानि॥ ३७॥
जे जग गुरता इन बिदताई। रामराइ लघुता को पाई।
नित प्रति दरब हजारहुं जोइ। हमरो अहै, लेति है सोइ॥ ३८॥
रामराइ हम एको अहैं। हान लाभ दोनहुं सम लहैं।
यांते लिखो भली बिधि पाती। तूं किम बैठ्यो सीतल छाती ?॥ ३९॥
शत्रु शरीक हमार तुमारो। वधति जाति दिनप्रति अति भारो।
बिन टारे इस, किम बनि आवै। जिस ते महिमा महि महि जावै॥ ४०॥
इत्यादिक मिलि मंत्र बिचारा। गुर उपकार न उर कुछ धारा।
लोभ ग्रसे माइआ मद चर्यो। चितवनि कलमल को चित कर्यो॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे एकादशि रासे 'धीरमल्ल आदि प्रसंग' बरननं नाम इक त्रिंसती अंशु॥ ३१॥

---

1. चार गुणा 2. आकाश 3. चन्द्रमा 4. औरंगजेब 5. बराबरी 6. एहसान, उपकार

अंशु ३२

संगति प्रसंग

दोहरा

धारमल्ल पाती लिखी करी तरीफ[1] उदार।
'सभि उपमा के उचित हो सुनि सुत बरखुरदार ।। १ ।।

चौपई

मोहि अनुज श्री गुर हरिराइ। तिह जेशट सुत गुन समुदाइ।
तुरकेशुर को बसि करि लीना। जग महिं बिदत्यो अजमत पीना ।। २ ।।
तो सम अपर नहीं जग कोई। इती शकति कित पय्यति सोई।
तुव पित जैसे अनुज हमारा। तिन ही सम मैं तोहि निहारा ।। ३ ।।
गुरता वसतु हमार तुमारी। सभि कारन ते लखि अधिकारी।
तेग बहादर दूर वडेरी। किम गुर बनि बैठ्यो इस बेरी ।। ४ ।।
चित महिं क्यों न चिंत को ठानैं ?। महि महि महिमा महिती[2] हानै।
दरब हज़ारहुं रोज़ संभारैं। बड ऐश्वरज आपनो धारै ।। ५ ।।
शाहु निकटि बुलवावनि ठानो। ज्यों क्यों करि शत्रु तहिं हानो।
करे जतन मैं सर्यो न कोई[3]। बच्यो संघारन सभि ते सोई ।। ६ ।।
यांते सुधि[4] तुव निकटि पठाई। बनि आवै अबि करनि उपाई'।
इम लिखि दूत पठावनि कीना। जान्यो-रिपु हुइ प्रान बिहीना ।। ७ ।।
बहुत मोल को इक सिरूपाउ। वसतु अजाइब अपर पठाउ।
दिल्ली महिं ले करि सो गयो। रामराइ ढिग पहुंचति भयो ।। ´ ।।
बंदन ठानि दीनि पुन पाती। अपर सुनाइ कुशल बहु भांती।
रामराइ तबि खोलनि कीनि। पठि करि सभि मतलब को चीनि ।। ९ ।।
धीरमल्ल भा मोहि अधीन। यां ते कुछक हरख मैं लीनि।
पुन चिंता चित बिखै उपाई। गई अपर थल महिं वडिआई ।। १० ।।

---

1. प्रशंसा 2. अधिक स्तुति 3. मैंने कई यत्न किए हैं, परन्तु कोई भी सफल नहीं हुआ 4. खबर

प्रथम भयो उतपात बिसाला। दुहूं दिशिनि जे स्राप कराला।
सभि संगति महिं मोर खुटई। पित सतिगुरु पूरब बिदताई॥ ११॥
श्री हरि क्रिशन बहुर परलोक। जिसते सभि कुटंब महिं शोक।
मो कहु बुरा जगत ठहिरायो। अबहि अपर उतपात उठायो॥ १२॥
ह्वै जै है कुछ ते कुछ और। महां कलंकति कहिं सभि ठौर।
इत्यादिक मन गही बिचारहि। कहां करौं मैं जतन सुधारहि॥ १३॥
पाती को उत्तर लिखि दीनो। 'तुम हो वडे सकल विधि चीनो।
जितिक उपाइ मोहि ते बनै। करों सु मैं जिम चिंता हनै॥ १४॥
कहे तुमरे महिं दिन राती। मानो क्यों न रावरी बाती'।
लिखी पठाई पुरि करतार। पठति धीरमल्ल आनंद धारि॥ १५॥
कह्यो मसंद संग समुझाइ। 'सफलहि तेरो कह्यो उपाइ।
रामराइ खातर करि पठी। इहु पाती मैं तिस की पठी॥ १६॥
इस प्रकार इह भयो ब्रितंत। गुर द्रोही अनहित[1] चितवंति।
बुरे भले की सार न जानै। भए लोभ बसि कुक्रित ठानै॥ १७॥
इक दिन तुरकेशुर के तीर। बैठ्यो रामराइ नर भीर।
कह्यो प्रसंग गुरनि को तौन[2]। 'अबि गादी पर बैठ्यो कौन ?॥ १८॥
श्री हरि क्रिशन बाल बय जांहि। पहुंचे सो प्रलोक के मांहि।
अधिकारी सुत हुतो न कोइ। गादी पर बैठति है जोइ'॥ १९॥
रामराइ सभि बात सुनाई। 'श्री हरि क्रिशन कही गुरिआई।
हुतो हमारी कुल महिं एक। जिसकै नहिं बिवहार बिबेक॥ २०॥
सो गादी पर हुइ बिदतायो। सुन्यो सु मैं निज नगर बसायो।
अजमत सहित लोक तिस कहैं। अरपहिं दरब कामना लहैं॥ २१॥
प्रगट्यो गुरु तबहि लखि लेहिं। ढिग रावर के अजमत मैं बहु लही।
नहिं एतिक किस अपर मझारी। कहाँ करहिं तिस निकटि हकारी[3]॥ २२॥
तुम भी गुर घर के सुत पोते। अपर अलप जानों सभि तो ते'।
रामराइ सुनि बहुर बखानी। 'तुम मालक हों सकल सथानी॥ २३॥
तिस महिं बसहिं जि नर समुदाइ। क्यों न तुमारो काज बनाइं'।
सुनि इम शाहु मौन करि रह्यो। अपर प्रसंग चल्यो किस कह्यो॥ २४॥
इह ब्रितंत भा सभा मझारी। सुन्यों सु पुरि ली संगति सारी।
'रामराइ इन संग खुटाई। कर्यो चहति है बहु बिदताई[4]॥ २५॥

1. बुरा 2. उस (पातशाह) ने 3. पास बुलाया 4. सब ओर प्रकट हो गया है।

मिलहिं परसपर सिख सभि कहैं। 'इह उतपात[1] करति ही रहै'।
पुन केतिक दिन दीनि बिताइ। पुन संगति मिलि करि समुदाइ ॥ २६ ॥
दरशन की लालस बहु जागी। भए त्यार केतिक बडभागी।
लै लै बसतु अजाइब चले। धन गन लीनि रिझावनि भले[2] ॥ २७ ॥
सिमरति सतिगुर को चलि आए। पंथ अनंदपुरे नियराए[3]।
हरखे जबहि प्रवेशे पुरि मैं। प्रथम सिवर को करि सुख उर मैं ॥ २८ ॥
पाइ रू पान पखारे पानी। बसत्र पहिर करि श्रम को हानी।
सभि अकोर लै गुर ढिग गए। महां मसंद अगाऊ भए ॥ २९ ॥
चरन कमल पर अरपि अकोर। अभिबंदन सनमुख कर जोरि।
बैठे दरशन करि हरखाए। कुशल प्रशन को कीनि सुनाए ॥ ३० ॥
बिनती करि करि बित अरपंते[4]। सभि सिक्ख्यनि के नाम भनंते।
'महाराज ! इह दसवंध ल्यायो। 'इनहिं मनोरथ गुर ते पायो' ॥ ३१ ॥
'इसने इह मनौत मन मानी'। 'इसकी तुम सहाइता ठानी'।
'इस सिख को रुज तन ते हर्यो'। 'इह चाहति सफल्यो धन कर्यो' ॥ ३२ ॥
इत्यादिक अरदास प्रकाशि। धर्रहिं अकोर चरन के पास।
सुमतिबंत गुरबखश मसंद। जिस के सिख अनुसारि बिलंद ॥ ३३ ॥
पुन कर जोरि प्रसंग उचारे। 'श्री हरि क्रिशन बिकुंठ सिधारे।
अंत समैं मुझ संग बखाना। बाबा बसहि बकाले थाना ॥ ३४ ॥
सो सरूप तुम देखे आइ। दासनि लोक प्रलोक सहाइ'।
श्री गुर मुसकाए मुख कह्यो। 'रामराइ कैसे कहि लह्यो ।! ३५ ॥
शाहु निकटि किम पहुंचे जाइ ? किम तिन स्राप दीनि रिस पाइ ?
कीरतपुरि ते प्रथम हकारे। तुरकेशुर को सीख सिखारे। ३६ ॥
जबि पहुंचे तबि क्यों दुख पायो ? कहां बिगार कीनि पुरि जायो ?
जिस ते श्री हरि क्रिशन कि संग। रच्यो बिरोध स स्राप निसंग' ॥ ३७ ॥
सुनि गुरबखश ब्रितांत सुनायो। 'गुरता गुर की पिखि तपतायो।
कहि बुलिवाए आशै एव :—मिलहिं न तुरक साथ गुरदेव ॥ ३८ ॥
बाहिं पलाइ कि जंगल देश। मिलहिं जि, टूटहि प्रण सु विशेश।
बहुर सिखायो अजमत हेरहिं। बारि बारि इस ही हित प्रेरहि ॥ ३९ ॥
श्री हरि क्रिशन सु पहुंचे तबै। तिसते महिमा अधिकी तबै।
तुरकेशुर सों मिले न जाइ। इत्यादिक पिखि रिस उपजाइ ॥ ४० ॥

---

1. झगड़ा 2. प्रसन्न करने के लिए चले 3. पास आ गया 4. धन अर्पण करते हैं

अपर न बस कुछ चल्यो अगारे। स्राप सीतला केर उचारे।
हरख न शोक गुरू को होयो। होनहार कहु नीके जोयो ॥ ४१ ॥
तिस कारन ते तज्यो शरीर। श्री हरि क्रिशन महां मतिधीर।
केतिक तिन कीने उतपात। अजहूं न बैठति चित करि शांति ॥ ४२ ॥
एक दिवस रावर की गाथा। कहिति भयो तुरकेशुर साथा।
गुरू भए अबि तिनहुं हकारो। अजमत नाना बिधिनि निहारो ॥ ४३ ॥
शाहु नहीं मानी कुछ बात। चहिति आप सों भी उतपात।
कहा करहिगो तुमरो सोइ। किम समसरता प्रापति होइ ॥ ४४ ॥
गुरता नहीं हाथ किम आवै। जतन अनेक सु निशफल जावैं'।
इत्यादिक सभि बात सुनाई। मुसकाने सुनि तबहि गुसाईं ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'संगति प्रसंग' बरननं नाम द्वोइ-त्रिंसती अंशु ॥ ३२ ॥

अंशु ३३

गुरु गमन प्रसंग

दोहरा

तेग बहादर सतिगुरु सभि ग्याता सु प्रबीन।
लखी भविक्खयति बारता जिम ह्वै है सो चीनि[1] ॥ १ ॥

चौपई

पुन सिक्खयनि को करनि उधार[2]। कितिक प्रतीखति सदन मझार।
पूरब देश जु दूर विशेशु। संगति को अभिलाख अशेशु ॥ २ ॥
गमन तीरथनि कीनि बहाना। निज दासनि चाहति कल्याना।
पुरि अनंद जेतिक बस गए। तिते बसाइ देति सुख भए ॥ ३ ॥
लख्यो शरीका सोढिनि केरा। पिखि संकट को पाइं वडेरा।
अनिक उपावनि को नित ठानैं। दरब लोभ जिन रिदै महानैं ॥ ४ ॥
हम चित शांति धरे बहु रहे। तऊ देखि तिन, उर दुख दहे।
इन ते अधिक दूर अबि जाइं। बिन देखे हम को, सुख पाइं ॥ ५ ॥
तांते गमन करनि अबि आछे। पुरहिं कामना जे सिख बांछे।
बहु कारन को जानि गुसाईं। कहि निज लोकनि सकल जनाई ॥ ६ ॥
'सरब भांति त्यारी करि लीजै। देश विदेशनि बिचरनि कीजै।
सने सने गमनैं सुख पाए। डोरे सयंदन साजि बनाए' ॥ ७ ॥
केतिक दास फकीरनि साथ। चहति दरस नित सतिगुर नाथ।
तीरथ करैं पुंन जिन महां[3]। बिचरहिं सैल[4] करहिं जहिं कहाँ ॥ ८ ॥
सफल जनम अपने को चाहति। इत्यादिक को जानि उमाहति।
जेतिक पुरि महिं लोक वसाए। करि इकठे सभि निकटि बुलाए ॥ ९ ॥
सादर कह्यियो 'बसहु सुख पाइ। हम अबि तीरथ करनि सिधाइं।
केतिक दिन इस जंगल देश। करहिं बितावनि होइ प्रवेश ॥ १० ॥
पुन हम पूरब दिशा पधारैं। बिचरहिं तहिं के देश निहारहिं।'
हाथ जोरि पुन नरनि सुनाई। 'तुम हमरे नित नाथ सदाई ॥ ११ ॥

---

1. जान ली 2. उद्धार 3. तीर्थ यात्रा करने से महा पुण्य होता है 4. सैर करते हैं

दूर कि निकटि रहहु किस थानू। सद समरत्थ गुरू भगवान्।
अपने जानि, सहाइक रही अहि। बहुरो आवनि तूरनि चहीअहि ॥ १२ ॥
सदा अलंब तुमारे रहैं। सदा प्रतीखति ही चित चहैं।
जबि आवहु पुरि बसहि बडेरा। नाहि न इतो होइ जिम हेरा ॥ १३ ॥
सुनि सतिगुरू प्रसंन बिसाला। कहति भए तिन को ततकाला।
'महां पुरख जबि जनम सु पावै। अपनो जानि इहां तबि आवै ॥ १४ ॥
करहि बसावनि इसहि बिसाला। रचना अधिक रचहि ततकाला।
बीज मात्र हम कीनि बसावनि। तरुवर सम तबि होइ ब्रिधावनि ॥ १५ ॥
लोक हजरहुं नित प्रति आवैं। बसनहार दीरघ सुख पावैं'।
इत्यादिक सुनि गुर की बानी। सभिनि जरि कर बंदन ठानी ॥ १६ ॥
तबि सतिगुर त्यारी करिवाई। बाहन जीन अधिक छबि छाई।
सभि को धीरज दे करि भले। सिक्ख उधारनि देशनि चले ॥ १७ ॥
मात नानकी सयंदन मांही। पुत्र सनेह धारि संग जाही।
बहुर तीरथनि के इशनान। अधिक शरीका सोढनि जानि ॥ १८ ॥
श्री गुजरी चढि करि तबि डोरे। पति के संग चली सुख लोरे।
भ्रात क्रिपाल साथ निज करिओ। सो तुरंग सुंदर पर चरिओ ॥ १९ ॥
अपर सकल पाइन संग चले। जे चाहति प्रलोक हुइ भले।
श्री सतिगुर ह्वै कै असवार। श्री नानक उर सिमरन धारि ॥ २० ॥
मंद मंद गमने गुर स्वामी। सकल घटनि के अंतरजामी।
प्रथम सिवर दुइ कोस लगायो*। नर समुदाइ मिलिनि को आयो ॥ २१ ॥
जेतिक दरब कोश महिं जाना। कोशपती संग बाक बखाना।
एक दास को पुरि महिं त्यागा। आइसु मानि रह्यो बडभागा ॥ २२ ॥
सगरो धन तिस को तबि दीना। कह्यो गुरू 'लखि खरच प्रबीना'।
कूप लगावहु सदन बनावहु। खरचहु पुरि के हेतु बसावहु ॥ २३ ॥
जिम सभि लोक अधिक सुख पाइं। सो तुम कीजहि सदा बनाइ।
पुरि को खेद दहि नहिं कोई। जे को देहि, रहै नहिं सोई' ॥ २४ ॥
इम तिस को समुझाइ गुसाईं। बैठी संगति ढिग समुदाई।
तिनि दिशि देखि द्रिशटि युति कखना। चाहहिं तिनहिं कलेशनि हरना ॥ २५ ॥

*पहले दो कोस की दूरी पर डेरा डाला

कुछक दिनि उपदेश बनाइ बहुर बिसर जनि कीनि सुनाइ।
'भो सिखहु! नर तन इह रतन। जिम सफलहि तिम कीजहि जतन ॥ २६ ॥
जग धंधे महिं फसि न बितावहु[1]। बिनस जाइ, पिखि नहिं बिरमावहु।
हेतु जीवका होइ निशपाप। करो कार को—हरि हरि—जाप ॥ २७ ॥
मन महिं सिमरन की लिव राखहु। स्वास न ब्रिथा जाइ-इम कांखहु।
संगति जहिं गुरू की मिलि जाइ। सेवा करहु प्रेम उपजाइ ॥ २८ ॥
पक्खा पानी पीसनि कीजहि। जथा शकति धन आदिक दीजै।
अंन बसन अरपनि करि दै हो। चरननि चांप सफलता पै[2] हो ॥ २९ ॥
अबि तप करिबे को नहिं काल। जिस ते उपजति शक्ति बिसाल।
तीनहुं देव आदि जग अहे। सो भी तप को तापति रहे ॥ ३० ॥
अस को वस्तु न जानी परे। पा नहीं तप तापन करे।
ध्रू ते आदि जितक वडिआई। अधिक प्रताप होइ बिरधाई ॥ ३१ ॥
तिस ते सहस गुना फल पावं। जो सतिसंगति सेव कमावै।
तप की महिमां ते अधिकाई। अपर बात क्या कहैं बनाई ॥ ३२ ॥
यांते जानहुं सेरा सार। सेवहु संत कि गुर दरबार।
ऐसी दुलभ वसतु कुछ नांही। सेवहि संगति बहुर न पाही ॥ ३३ ॥
महां महातम सिमरे नामु। मन को कीजहि तहिं बिसराम।
स्वारथ किधों अकारथ ब्रिंद। फुरहिं सदा मन थिर न रहिंद ॥ ३४ ॥
सने सने तिस को अटकाइ। करहु टिकावनि केर उपाइ।
जिम जिम थिरता गहे सुभाऊ। तिम तिम निपुन करहि बिरधाऊ[3] ॥ ३५ ॥
सतिगुरू के पग पंकज लावै। कै लिव नाम झिखै अटकावै[4]।
जल प्रवाह सम मन को अहै। जितहि करहि तित ही नित बहै ॥ ३६ ॥
सने सने बिशयनि ते रोकै। लघु सुख पुन दे नरक बिलोकै।
नाशवंत जग मोद जु अहै। अलप काल महिं, थिर नहिं रहै ॥ ३७ ॥
सतिगुर संतनि की नित सेवा। करि मन अमल जनाइ सुभेवा।
दुख जबि आनि कि अपदा परै। प्रभु भाणो लखि सिर पर धरै[5] ॥ ३८ ॥
जानि करम फल तरक न ठानै। नहिं ईशुर पर दोश बखानै।
भोगहि संकट को हरखाइ। लखहि कुकरमनि फल बिनसाइ ॥ ३९ ॥
सुख जबि आइ न करहि हंकार। जानहि दीनि प्रभू करतार।
क्रिपा करी मुझ पर, गुर दयो। सिमरहि सत्तिनाम दुख छयो ॥ ४० ॥

---

1. जग के धंधों में फंसकर आयु व्यर्थ न व्यतीत करो 2. प्राप्त 3. बढ़े 4. नाम में लौ लगाकर 5. आज्ञा जान कर सिर पर रखे

इत्यादिक बहु दे उपदेश। संगति कीनसि बिदा अशेश।
ठानि बंदना सदन सिधाई। बसि तहिं सतिगुर राति बिताई॥ ४१॥
भई प्रभाति अगारी चाले। करि मंज़ल डेरा पुन डालें।
सने सने चलि मग बिचरंते। मिलहिं जु सिक्ख उधार करंते॥ ४२॥
जहां जाइ सिख सुनि गन आवै। सभि डेरे की सेव कमावैं।
रोपर नगर उलंघति आए। इम चलि बसे ग्राम समुदाए॥ ४३॥
पटिआरो* पुरि बस्यो न जबै। तिस ते परे ग्राम लंघि तवै।
तहां जाइ डेरा करि दीनि। बसे निसा सिख सेवा कीनि॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि 'गुरु गमन प्रसंग' बरननं नाम तीनुत्रिसती अंशु॥ ३३॥

---

*पटियाला शहर में

अंशु ३४

ग्राम बिचरनि प्रसंग

दोहरा

श्री गुर हरि गोबिंद के नंदन धीर क्रिपाल।
सहिज सुभाइक बिचरते पहुंचे मूलोवाल ॥ १ ॥

चौपई

देखि ग्राम गुर ठांढे रहे। रुचिर उचित थल तहिं को लहे।
डेरा कीनि ग़रीब निवाज[1]। अपर टिकायो सकल समाज ॥ २ ॥
बीत गई घटिका जुग जबै। मईआ गोंदा[2] दोनहुं तबै।
आनि बंदना कीनसि गुर को। बैठे निकटि भाउ करि उर को ॥ ३ ॥
श्री सतिगुर तिन साथ बखाना। 'आनहुं सुंदर जल हित पाना।
मारग सगरे श्रम को हरिबे। हाथनि पाव पखारनि करिबे' ॥ ४ ॥
सुनि गोंदे तबि बाक उचारा। 'इह जो कूप नीर बहु खारा।
कंकर बीच परे जु समूह। ग्राम न लेवहि जल इस खूहु[3] ॥ ५ ॥
हुकम आप को जे अबि होइ। बाहर कूप दूर है सोइ।
तहां जाइ करि जल को ल्यावैं। लगहि बिलम पर आछो आवै ॥ ६ ॥
सगरो ग्राम तहां ते आनैं। पीवति पानी दिन गुज़रानैं।
कठन ल्याइबो सभि को अहै। तऊ ल्याइं नीकी तिस लहैं' ॥ ७ ॥
नीर कठनता ल्यावनि केरी। श्री सतिगुर सुनि कै तिस बेरी।
तिन पर करनि हेतु उपकारा। कह्यो बाक 'इहु होइ न खारा ॥ ८ ॥
विच ते कंटक सकल कढाओ। ऊपर ते सुंदर करिवाओ।
होहि मधुर जल सीतल अबै। पीवहु ग्राम बिखै नर सबै ॥ ९ ॥
प्रथम हमारे कारन ल्यावहु। वाहिगुरु कहि करि मुख पयावहु'।
सुनि बिसम्यों गोंदा हुलसायो। मान्यों बचन नीर सो ल्यायो ॥ १० ॥
श्री सतिगुरु जबि पीवनि कर्यो[4]। सीतल मधुर स्वाद को भर्यो।
त्रिपत होइ करि बाक बखाना। 'इंहु तौ सुंदर मधुर महाना ॥ ११ ॥

---

1. ग़रीबों के रक्षक 2. सिक्खों के नाम 3. कुआं 4. फिर सतगुरु जी ने जल पिया

अबि ते कूप गुरु को होइ। अपर जि इहां लगावसि कोइ।
तौ लगि लगहिं, होहिं दस सारे। इकदशमों जे बहुर उसारे॥ १२॥
तौ नहिं लगहि हुकम है ऐसे। भगनि[1] बिदीरन[2] होइ सु कैसे'[3]।
इह जो बाक गुरु को भयो। अबि लगि इकदशमो नहिं थियो॥ १३॥
दस ही कूप रहैं तिस ग्राम। सलिल भयो सीतल अभिराम।
जल को प्रथम गुरु जबि पियो। पुन माइए अरु गोंदे पियो॥ १४॥
पाइ स्वाद जल को बिसमाए। गुर पग पंकज शरध वधाए।
ग्राम बिखै भई कथा अनूप। 'श्री गुरु मीठा कीनसि कूप'॥ १५॥
सरब भाउ धरि बंदन करिहीं। अनिक भांति के गुननि उचरिहीं।
इक दुइ दिन गुर उहां गुजारे। उपदेशति सतिनाम सुखारे॥ १६॥
सेवा गोंदे नीक न करी। हिरदै अधिक न शरधा धरी।
अपर हुतो सो करते रहे। जथा शकति उर प्रीति लहे॥ १७॥
श्री गुर तिन को पाग बंधाई। 'अबि तुम चौधर लिहु इस थांई।
बनहुं ग्राम के मुख्य उदारे। तुमरे अनुसारी हुइ सारे'॥ १८॥
सुनि गोंदा आयो तबि धाइ। हाथ जोरि करि कह्यो सुनाइ।
'चौधरता मेरे घर मांही। अपर किसी को मिलि है नांही॥ १९॥
है हमेश ते मम अनुसारे। बसैं ग्राम महिं जे नर सारे।
अपर चौधरी किम ठहिरावहु। रंकनि को पद ऊच बिठावहु'॥ २०॥
गुरु कह्यो, 'गोंदे! सुनि लेहु। प्रथम चौधरी तुम सभि केहु।
अबि तुमरे घर रहै न कोइ। यांते अपर चौधरी होइ'॥ २१॥
तबि कौ पंचपनो[4] तिन केरि। रह्यो न, भए सु अपर बडेर।
पुन श्री गुरु ने कीनसि प्याना। पहुंचे शेखे ग्राम सथाना॥ २२॥
छाया जल को सुख जहिं हेरा। ग्राम वहिर कीनसि गुर डेरा।
तहां जाट जीवंधा[5] रहै। नाम तिलोका तिस को कहैं॥ २३॥
वहु ग्रामनि को बड सरदार। जिस के लोक ब्रिंद अनुसारि।
सिक्ख बिरागी को सो अहै। तिस न हुकम बिखै नित रहै॥ २४॥
श्री गुर को आवनि सुनि पायो। मिलौं कि नहीं—भरम उपजायो।
अपने गुरु बैरागी साथ। मिलिबे हित बूझी सभि गाथ॥ २५॥
'गुरु नानक की गादी पर हैं। सरब लोक मिलि बंदन करि हैं।
वहिर आनि उतर्यो तिन डेरा। मिलौं कि नहिं, भरमति चित मेरा'॥ २६॥
सुनति बिरागी छुभ्यो[6] बिसाल। जे करि जाइ मिलै तिन नाल[7]।
होइ न ऐसे, इह फिर जाइ। ले सिक्खी तिन सीस निवाइ॥ २७॥

1, 2, 3, किसी न किसी तरह ढहकर नष्ट हो जाएगा 4. चौधराई
5. जाटों का एक गोत 6. गुस्से हुआ 7. यदापि उनके साथ जाकर मिल जाए

जबि इह जाइ, प्रबोधहिं सोइ। नहिं मनता मेरी पुन होइ।
इस फिर गए अपरि फिर जाइं। गुर के सिक्ख बनहिं समुदाइं ॥ २८ ॥
मो कहु नमसकार नहिं करि हां। आनि उपाइन बहुर न धरिहीं।
यांते अबि ही बनहि उपाइ। मिलिने देउं न, लेहुं हटाइ ॥ २९ ॥
जे मिल करि महिमा ले जानि। पुन मम कह्यो न धरि है कान।
इम बिचार करि कह्यो बिरागी। 'सुनहु तिलोका! हरि अनुरागी ॥ ३० ॥
अपन पंथ को हौरा गौरा। सुनति जाइ मिलीअहि तिस ठौरा।
शुभ मारग की बात बतावै। दरशन बोलनि पुंन उपावै ॥ ३१ ॥
बधहि धरम सुधरहि परलोक। सुजसु कहैं निज पंथी लोक।
पर मत को मिलिबो नहिं नीका। नहिं कल्याण होति तिस जी का ॥ ३२ ॥
तुम धनवाननि के ढिग जाइ। लें बिरमाइ सु बात बनाइ।
अनिक मतनि के चाहति ऐसे। धनी होहिं सिख हमरे जैसे ॥ ३३ ॥
ज्यों क्यों कहि मन को बिरमावैं। बनहिं सिक्ख बहु दरब चढ़ावैं[1]।
अपनि पंथ ते बेमुख होइ। मिलि परमति[2] धन अरपहिं सोइ ॥ ३४ ॥
यां ते नहिं मिलीअहिं किस साथ। लिहु तुलसी चरणोदक हाथ'।
इम बरज्यो हटि रह्यो तिलोका। नहिं श्री गुरु को दरस बिलोका ॥ ३५ ॥
करी न सेवा किसू प्रकार। अतिशै मूरख मंद गवार।
दिन दोइक तहिं राख्यो डेरा। सहिज सुभाइक गुर तिस बेरा ॥ ३६ ॥
बैठे हुते लोक कुछ पास। करति बारतालाप प्रकाश।
निकस्यो बहिर जिवंधा गयो। जित दिशि गुरु, हटि तिस दिशि अयो ॥ ३७ ॥
निकटि नहीं गुर के चलि आयो। नहीं भाव करि सीस निवायो।
नहीं समीप जाइ करि बैसा। बोल्यो सुन्यों बाक नहिं कैसा ॥ ३८ ॥
ग्राम प्रवेश भयो जबि लह्यो। श्री गुर तेग बहादर कह्यो।
'कौन हुतो इह गमन्यो ग्राम? कौन जाति कुल क्या है नाम'? ॥ ३९ ॥
तहि के नर गुरु ढिग जो अहैं। तिनहुं प्रसंग तिसी कहु कहैं।
'इह जीवंधनि महिं सिरदार। बहुते लोक रहैं अनुसार ॥ ४० ॥
घर ते बहिर जि कित को चालै। नार समुदाइ चलहि इस नाले।
अबि भी हुते संग नर ब्रिंद। मानहिं इस को हुकम बिलंद ॥ ४१ ॥
जीवंधनि को बाहिया[3] सारा। तिन महिं इह सरदार उदारा।
सुनि सतिगुर बोले रिस भोई। 'नहिं बाहिया! नहिं तेहिया कोई ॥ ४२ ॥
कछु नहि रहहि उजर सभि जावहि[4]। बचहि जु अपर सु ग्राम बसावहि।
नहि सरदारी नहिं सरदार। मरि मरि जनमहि होहिं खुआर[5] ॥ ४३ ॥

---

1. भेंट करते हैं 2. दूसरे का मत 3. बाईस ग्रामों का समूह 4. कुछ भी नहीं रहेगा, सब कुछ बरबाद हो जाएगा 5. दुःखी

होइ एमनावाद समान[1]। बिनसहिं शीघ्र महान अजान'।
इक सिख सेव करी सुनि गयो। निज कुटंब संग उचरति भयो।। ४४।।
बज्र समान स्राप इह हुयो। जिस ते जीवंधनि कुल छ्यो।
सभि बाहिबे को होयहु नाश। करिका सम गरिगे[2] नर नाश।। ४५।।
तहिं ते श्री गुरु कूच कराए। पहुंचे आइ मगर हडिआए।
उतरे तहां लगायो डेरा। कुछ मिलि ग्राम भए तिस बेरा।। ४६।।
उरे स्राप ते बिनती ठानी। 'किम सभि ही की करते हानी'।
श्री गुर कह्यो 'हुकम है ऐसे। मेट सकहि को इस नहिं कैसे'।। ४७।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'ग्राम बिचरनि प्रसंग' बरननं नाम चतर त्रिसती अंशु।। ३४।।

---

1. एमनाबाद की भांति बरबाद होंगे, जिसे बाबर ने आक्रमण करके नष्ट किया था 2. गल गए

अंशु ३५

पुरि हडिआए बिपर प्रसंग

दोहरा

वहिर हड्याए नगर ते उतरि रहे शुभ थाइं ।
बैठे गुरू बिराज ही नियोग्रेध[1] की छाइ ॥ १ ॥

चौपई

तहिं इक पुरि को नर परि रह्यो । ज्वर तन चढ्यो अगनि जनु दह्यो ।
मुख सूखति ले स्वास सजोर ! कंपति काइआं संकट घोर ॥ २ ॥
सिर अरु हाड फोरनी घनी । पीड़ति ज्वर ते जाइ न भनी ।
कबि बैठहि कबि भू महिं परिही । कबि अंगराइ जंभावन[2] करि ही ॥ ३ ॥
व्याकुल देखि गुरु बच कह्यो । 'इह को अहै पाइ दुख रह्यो ?
अपने घर क्यों जाइ न पर्यो ? वहिर प्रिथी पर रज[3] सों भर्यो ॥ ४ ॥
तिह पुरि के मानव इक दोइ । दीन मने सुनि बोले सोइ ।
'इसि को चढ्यो बडो ज्वर जोर ! पाइ रह्यो संकट उर घोर ॥ ५ ॥
गात दूबरो पीरो रंग । भए निबल जिह सगरे अंग ।
नहिं भोजन की रुचि उर जागे । पर्यो रहै निरा दिन सुख पागे ॥ ६ ॥
इस नगरि महिं ज्वर के जोर । गन मानव प्रापति दुख घोर ।
दीखति है जस इस को हाल । तस वहु नर को कशट बिसाल ॥ ७ ॥
म्रितु के बसी सैंकरे होए । ज्वर के गेरे नहीं खरोए ।
हाहाकार होनि पुरि मांही । जीवन[4] आसा जीवन नाहीं ॥ ८ ॥
करि करि हारे गन उपचार । रंक राव सभि कै इकसार ।
इह कंपति दुख पाइ बडेरा । बोलनि शकति भि नहिं इस बेरा ॥ ९ ॥
सूख गयो मुख, लेटति अहैं । आस न, इह जीवति बच रहै ।
ने करि रावरि बस उपचार । करहु क्रिपा दिहु दान उदार ॥ १० ॥

---

1. वट का वृक्ष 2. जंभाई, उबासी 3. मिट्टी 4. जीवों में जीने की आशा नहीं है ।

पुरख क्रिपाल होति उपकारी। बचहिं प्रान जे हुइ जुर टारी'।
बैठि बिराजे सतिगुर जहां। टोवा[1] खन्यो हुतो लघु तहां ॥ ११ ॥
सो जल सों पूरन तिस काल। नेत्र चलाइ बिलोकि क्रिपाल।
कह्यो 'जाइ तुम इसे उठावहु। लघु सर महिं मज्जन करिवावहु ॥ १२ ॥
उतर जाइ ज्वर आछो होइ। बहुर न प्रापति संकट कोइ'।
भाउ धारि गुर को बच मान्यो। गहि कै तिह जल संग शनान्यो ॥ १३ ॥
नीर सपरश्यो जहिं जहिं तनु मैं। सगरो उतरि गयो ज्वर छिन मैं।
बिसमे लोग अरोग निहार्यो। सतिगुर चरन भाउ उर धार्यो ॥ १४ ॥
पुरि महिं इक दुइ साथ बताए[2]। सुनि ज्वर चढे दौरते आए।
हाथ जोरि करि बिनै उचारे। 'हम दासनि के दास तुमारे ॥ १५ ॥
पुरि के भाग जगे तुम आए। बहु मरि रहे जु ताप दबाए।
अबि हम शरण तुमारी परे। करहु उबारनि व नांहि त मरे ॥ १६ ॥
जिसको ताप आप ने खोवा[3]। गयो कशट भा नवां नरोवा[4]।
तिसै बिलोकि दौर हम आए। करहु बाक ज्वर देहु गवाए' ॥ १७ ॥
इम कहि जबि बहुते घिघिआए[5]। क्रिपा करी गुर पिखि मुसकाए।
कह्यो कि 'तुम भी करो शनान। उतरि जाइ जुर संकट हानि' ॥ १८ ॥
सुनि करि लघु सर महिं सो बरे। मज्जन करति ताप को हरे।
तिम ही सुनि सुनि आवनि लागे। गात दूबरे तन जुर दागे ॥ १९ ॥
सभिहिनि को श्री गुर फुरमायो। 'जिस को तनु ताप तपतायो।
सो सभि करते जाहु शनान। सिमरहु वाहिगुरु सुख दान ॥ २० ॥
जिम दुख ते गुर इहां छुटाए। तिम जम ते द हाथ बचाए।
यांते सिमरहु श्री सतिनाम। हलत पलत सुखदा अभिराम' ॥ २१ ॥
चढति जितिक जो ज्वर पुरि मांही। सुनि सभि आइ शनान कराहीं।
अपर सैंकरे रंक सु धनी। कीरति बिसद गुरु की सुनी ॥ २२ ॥
लेकरि अनिक उपाइन आए। असन बसन धन बहुत चढाए[7]।
अनिक सिक्ख होए धरि भाउ। सिक्खी धारि जप्यो सतिनाउ ॥ २३ ॥
बसे जितिक बासुर[7] तिस थान। दिन प्रति करिहीं सेव महान।
लग्यो तड़ाग[8] तहां पुन भारी। जहिं बैठे सो थान सुधारी ॥ २४ ॥

---

1. गड्ढा खोदा 2. एक दूसरे से बात की 3. जिनका ज्वर आप ने उतारा है 4. उसका कष्ट दूर हो गया और वह स्वस्थ हो गया 5. गिड़गिड़ाए 6. कपड़े, वस्त्र और धन भेंट किया 7. जितने दिन वहां पर ठहरे 8. तालाब

सो अबि लौ हम देखनि कर्यो। गुरद्वारा तिस तीर निहर्यो।
महिमा सतिगुर की प्रगटाई। पुरि हडिआए मांहि अबि तांई ॥ २५ ॥
तहिं ते कर्यो कूच गुर स्वामी। गमने श्री प्रभु अंतरजामी।
करि पुरि के नर भाउ बडेरा। राखनि हेतु कह्यो बहुतेरा ॥ २६ ॥
दे धीरज तिन को बहु भांती। चलति भए गुर होति प्रभाती।
'धौला' ग्राम कोस जुग लह्यो। तहां तुरंग अड़ी करि रह्यो ॥ २७ ॥
हनहिं रकाबनि कमची[1] मारैं। तऊ न पाइ अगारी डारैं।
गुरु कह्यो 'इह तुरकनि बंदे[2]। प्रभु गुर को न लखहिं मतिमंदे' ॥ २८ ॥
हटे तहां ते गमने ग्रामू। 'सोहीबाल' कहैं तिह नामू।
उतरे तहां सुचेता कीनि। चडे 'कैल' इक ग्राम सु चीन ॥ २९ ॥
तहि ते नरनि भाउ नहिं कीना। पुन गमने तिन लखि मति हीना।
संगति आनि मिली समुदाई। बहु धन आदि उपाइन ल्याई ॥ ३० ॥
दरशन करि करि अरपनि करी। पुरी कामना जिम उरधरी।
ग्राम 'ढिल्लवीं' पहुंचे जाइ। डेरा कीनि हेरि शुभ थाइं ॥ ३१ ॥
एक निसा बसि कै तिस थान। भए परब को चाहति दान।
धेनु इकत्तर सै मंगवाई। बरन बिखै कपलां[3] समुदाई ॥ ३२ ॥
दे दे दरब मोल अनवाई। करी दान हित सभि इकठाई।
गुजराती दिज तबै बुलाए। 'लेहु दानु धेनू समुदाए ॥ ३३ ॥
अपर दरब इन संग घनेरा। दै हैं तुम को सभि बेरा।
सुनि कै दिजहुं न मानी बात। 'कठन दान इह सह्यो न जाति ॥ ३४ ॥
प्राननि को पलटे अस दान। लेते होइ जीव की हानि।
महां पतिग्रहु[4] किम ले सकहीं। हानि प्रान लौ जिस महिं तकहीं' ॥ ३५ ॥
जबि अस क्रित सो बिप्र निहारे। पुनह खोज करि अपर हकारे।
सुनि सुनि धीर न धरि हैं कोई। नहिं समरथ लैबे को होई ॥ ३६ ॥
बहुर तप कउ इक गुजराती[5]। गुर महिमा सु लखहि सभि भांती।
हाथ जोरि करि गुरू अगारी। भाउ धरे उर गिरा उचारी ॥ ३७ ॥
'क्रिपा करहू जे बनहु सहाइक। तौ इह दान सकहि ले पायक[6]।
लेउं धेनु मैं आप भरोसे। हरहु[7] पतिग्रहु कहु सभि दोशे ॥ ३८ ॥
गरब जाति को हौं नहिं करिहौं। श्रेयद[8] रावरि शरनी परि हौं,
चहुं अलंब दुहि लोक तुमारा। हो समरथ करहु निसतारा' ॥ ३९ ॥

---

1. चाबुक 2. तुर्कों की पूजा करने वाले 3. काले स्तनों वाली 4. महादान
5. गुजरात का रहने वाला 6. दास 7. दूर करो 8. मुक्तिदाता

सरल रिदै दिज बिनै जु ठानी। क्रिपा निधान बिहस कै मानी।
'जे नर करहिं भरोसा गुर को। नहिं डुलाइ दिढ निशचा उर को ॥ ४० ॥
तिन के क्यों न सहाइक होइं। श्री नानक जग सूरज जोइं।
तबि संकलप कीनि शुभ भांति। लीनसि तपे ग्राम गुजराती ॥ ४१ ॥
गुर कर ते जल कर पर धारा। श्याम बरन हुइ गा तन सारा।
चित ब्याकुल धीरज नहिं रह्यो। संकट निज सरीर पर लह्यो ॥ ४२ ॥
बहु पीड़ित है गिरा उचारी। अबि सहाइ की रावर नारी।
त्रास बिसाल हरहु सभि मेरा। क्रिपा निधान ! जानि करि चेरा ॥ ४३ ॥
सुनि सतिगुर ने कर सिर धारा। कशट पत्तिग्रहु तुरंत बिदारा।
सीतल भयो तपत सभि भागी। जिम रवि तेज होइ धन आगी[1] ॥ ४४ ॥
गुरु हाथ को पिख्यो प्रभाऊ। भयो दीन तजि जाति सुभाऊ।
नमो ठानि पुन बिनै बखानि। देति लेति तुम ही सभि थानी ॥ ४५ ॥
इक महिं थिर कै होवति दाता। दुतीए महिं जाचति चितराता।
मम गरज़ी की अरज़ी सुनीअहिं। अपर दास सम सेवक जनीअहिं ॥ ४६ ॥
मानहुं मोंहि कह्यो इम करीअहि। चरन आपनो मम सिर धरीअहि।
जग सागर ते डुबति डबरीअहि[2]। राखहु शरन दास गन हरीअहि ॥ ४७ ॥
त्यागयो बिप्र जाति टंकारा। लखि सतिगुर उर सरल सुधारा।
पग पंकज दिज के सिर लायो। जनम मरनु को भरम मिटायो ॥ ४८ ॥
जीवति रह्यो बिप्र गुर सिमर्यो। प्रापति भई सु राति जबि मर्यो।
पुन सतिगुर बड जग्य करायहु[3]। सभि संगति मन भावति खायहु ॥ ४९ ॥
निकटि ग्राम दिज आदिक सारे। पठि पठि नर निज निकट हकारे।
सभि को भोजन दे पकवाना। पूप पूरिका स्वाद महाना[4] ॥ ५० ॥
ब्रिप्रनि को धन दछ्ना दीनि। सभिनि गुरु की उसतति कीनि।
इस प्रकार करि तहां निहाल। कर्यो कूच सतिगुरु क्रिपाल ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'पुरि हडिआर बिपर प्रसंग' बरननं नाम पंच त्रिंसती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. बादल के आगे जैसे सूरज का तेज ठण्डा हो जाता है 2. संसार समुद्र में डूबने से बचाइए 3. यज्ञ करवाया 4. पूरे तथा पूरियां

अंशु ३६

जंगल देश विचरनि प्रसंग

दोहरा

तहिं ते सतिगुर गमन किय गए 'भंदेहरी' ग्राम।
निकटि जाइ ठांढे भए पठ्यो सिख्य तिन धाम ॥ १ ॥

चौपई

सिक्ख जाइ करि नर गन लह्यो। उतरनि हेतु सभिनि सों कह्यो।
'वाहिगुरु ठाढे ढिग ग्राम। डेरा करहिं बतावहु धाम ॥ २ ॥
बसहिं जामनी प्रात सिधारैं। दरशन दरसहु बिघन बिदारैं'।
सुनि भंदहेरी[1] कहि तिस काल। 'जाहु बूझि करि सदन कुलाल[2] ॥ ३ ॥
है हमेश की रीति हमारे। घर कुलाल के देति उतारे।
जो चाहति किय राति बसेरा। सदन तिनहुं के पावति डेरा' ॥ ४ ॥
सुनि सिख ने गुर निकटि सुनाई। 'मूरख लोक बसहिं इस थांई।
नहिं कुछ महिमा लखहिं तुमारी। जामनि[3] बसनि कुरीत उचारी ॥ ५ ॥
अपर ग्राम चलि करहु बसेरा। इन मनमुक्खनि भाग मंदेरा।
जथा रंक गन सुरतरु पाए। नहिं सेवहिं किछ ले न सकाए' ॥ ६ ॥
सुनि सतिगुर चलि परे अगारी। मूढनि महिमा कछु न बिचारी।
'अलीशेर'[4] डेरा किय ग्राम। बैठी बिराजे श्री सुख धाम ॥ ७ ॥

दोहरा

पीछे सभिनि भंदेहरनि महिमा सुनी बिसाल।
हुते पुरख पूरन गुरु सभि पर होति क्रिपाल ॥ ८ ॥

चौपई

मिले न हम उठि, घर महिं आए। नहिं कुछ सेव करी मन लाए।
पशचाताप करति मिलि बैसे। तिन महिं लग्यो कहनि इक ऐसे ॥ ९ ॥
'अबि भी निकटि अहैं तिन डेरा। चलहु लेहु दरशन इक बेरा'।
कहहिं परसपर 'सभि ही चलीए। कौन भेट आगै धरि मिलीए ॥ १० ॥

1. भंदेहरी गाँव के लोग 2. कुम्हार का घर 3. रात 4. गाँव का नाम

क्या ले करि दरशन को देहिं ? किम प्रसंन हुइ बचन करेहिं' ?
इक नर कहनि लग्यो तिन मांहि। 'मैं जिम सुनी कहौं तुम पाहि ॥ ११ ॥
टकियनि रोकन की इक थैली। अपर प्रशादि लेति हैं भेली।
खुशी होति पुन दरशन देति। मिलि करि इम नर बर बर लेति ॥ १२ ॥
भेली सभि महिं दें बरताइ। दरसहिं लोक होइ समुदाइ।
नगर हड्याए ज्वर नर गन को। दियो उतारि उचारि बचन को' ॥ १३ ॥
नर ते सुनि भंदेहर सारे। लै थैली अरु भेली त्यारे।
मारग परे दरसिबे हेतु। जिन के सुधि परलोक अचेत ॥ १४ ॥
अरध पंथ जब पहुंचे जाइ। मिल्यो समुख मानव इक आइ।
बूझनि लगे 'कहां ते आयो ? गुरु सिवर किस थल मैं छायो ? ॥ १५ ॥
जे करि तिनको दरशनि लीनि। हमहुं बतावहु किसि बिधि कीनि।
कौन उपाइन अरपी जाइ ? किम श्री मुख कहि निकटि बिठाइ' ॥ १६ ॥
सुनि कै तिस ने सकल बताई। 'गुर दरशन कीनसि ढिग जाई।
मैं न पास ते पैसा दीनसि। नहिं तिन जाचि कछू अवि लीनसि ॥ १७ ॥
बैठे जो प्रशादि कुछु आवा। बरतीत दियो तहां मैं खावा।
बिना दिये दरशन बहु करैं। आवहिं जाइ निकटि बहु थिरैं ॥ १८ ॥
सुंदर है सुभाइ जिन केरा। अलीशेर ढिग कीनसि डेरा।
लेनि देनि की बात न कोई। बैठे दरशन देवहिं सोई" ॥ १९ ॥
सुनति भंदेहर हरख बधाए। बैसि गए तिह ठां समुदाए।
गुर रोरी तहिं कोरनि करी। आपस महिं बरती समसरी ॥ २० ॥
लालच करि खंबे मिशटान। तिसी थान महिं कीनसि खान।
कहहिं परसपर 'भी ह्वै आछे। गुड़ खावहिं लें दरशन पाछे ॥ २१ ॥
नांहि त अरपति तिन के पास। सो लेते हम होति निरास।
निकटि टके भी राखहु नांही। खनिकैं दाब चलहु छित मांही ॥ २२ ॥
ढिग ते हेरि जाचि नहिं लेहिं। राखे जाइं न गुर ते एह'।
मन के रंक महां मतिमंदे। करम करति हैं पसू मनिंदे ॥ २३ ॥
इम कहि तिस थल टके दबाए। सभि मिलि गए गुरू जिस थांए।
दरशन कीनसि हाथनि जोरि। नमो ठानि ढिग टिके बहोर ॥ २४ ॥
करहिं परसपर बोलनि ऐसे। सतिगुर सुनहिं बाक तिन जैसे।
'कहति हुतो इक मानव कूर। ले करि दरशन देति हजूर ॥ २५ ॥
इहां लेनि को जिकर न कोई। बैठे देति दरस गुर सोई।
दरशन हम अमोल ही पायो। जिन को सुजसु जगत मैं छायो' ॥ २६ ॥

इम भाखति घटिका जुग बैठे। पुनहिं ग्राम अपने चलि पैठे[1]।
अलीशेर के मनुजनि सुनी[2]। 'उतरे बहिर गुरु जग धनी ॥ २७ ॥
नर समुदाइ आइ दरसंतें। अनिक भांति की सेव करंते।
हम को भी अबि इम बनि आइ। दरशन करहिं मिलहिं ढिग जाइ ॥ २८ ॥
पुरख महान समीपी पाइ। जहिं दरसहिं इह दोश कहाइ'।
पुनहिं परसपर कहति सुनंते। 'क्या ले चलहिं जि तिन दरसंते ॥ २९ ॥
पूरब करहु उपाइन त्यार। मिलि सभि दरसहु दरस उदार'।
इक ने, कह्यो 'भंदेहर आए। तिनहिं आनि क्या तहां चढाए ? ॥ ३० ॥
सभि सुधि लिहु गमने मिलि जथा। पुन तुम करहु लाइकी तथा।
ग्राम पंचाइत हुती सु जैसे। घाट न तुम भी लाइक तैसे' ॥ ३१ ॥
तिन महुं इक ते सकल सुनाई। 'उन की सुधि मुझ ते लिहु पाई।
कछू न भेट धरी गुर आगे। छूछे पान दरस कहु लागे ॥ ३२ ॥
मिलि करि गए न बोल्यो कोऊ। इम दरशन कीनसि मिलि सोऊ'।
सुनि कै कहति भए नर सारे। 'हम क्या तिन ते हीन बिचारे ॥ ३३ ॥
तिनहुं जि मिलि कै नहिं कुछ दियो। छूछे होइ दरस गुर लियो।
तैसे ही तुम गमनहुं सारे'। मंदमती महिमा न बिचारे ॥ ३४ ॥
छूछे जाइ दरस कौ कर्यो। रहे मौन गुर कुछ न उचर्यो।
एक निसा बसि कै तिस थाई। गमने 'जोगे' ग्राम गुसाई ॥ ३५ ॥
हुतो निकटि डेरा करि दीना। बैठि बिराजे प्रभू प्रबीना।
दुगध देति इक महिखी[3] साथ। तिसकी दिखा देखि जगनाथ ॥ ३६ ॥
पास दास गन तिन सों कह्यो। 'दिवस दुपहिर भयो हम लह्यो।
नहीं ग्राम ते को नर आयो। घास आदि कुछ नहिं मंगवायो ॥ ३७ ॥
भाउ न कर्यो आनि कर काहू। मानव हैं कि नहीं इस माहू ?
पर्यो शूंन जैसे द्रिशटावै। बहिर नहीं को आवति जावै ॥ ३८ ॥
सिक्खयनि सुनि कै भवे जनायो। 'है इम था आप फुरमायो।
सभि नर गुन ते हीन दिसावैं। इस थल निस सुख सों न वितावैं' ॥ ३९ ॥
सुनति सतिगुरू कूच करायो। गमने मारग सिख समुदायो।
जिसने जोगा कर्यो बसावनि। सो जुगराज हुतो तिस थावं न ॥ ४० ॥
तिस को पिता मिल्यो मग मांहि। गुर पद पंकज बंदे तांहि।
कह्यो बाक तिन देखि समाज। 'रलीए उतरहु गुर महाराज ॥ ४१ ॥

---

1. चल पड़े 2. अलीशेर गांव के लोगों ने सुना 3. भैंस

डेरा करहु सकल सुख पावहु। बसहु निसा पुन कूच करावहु'।
सुनि सतिगुर श्री मुख फुरमाइ। 'नहिं अबि रलिये उतरहिं, जाइं ॥ ४२ ॥
डेरा करहिं ग्राम 'भूपाल'। जामनि तहां बितावहिं चालि।
तू जोगे नूं अधिक बसाओ। थल अजीत तिह को लखि पाओ' ॥ ४३ ॥
इम कहि उतरे जाइ 'भूपाली'। निसा बितावनि कीनि सुखाली।
खान पान करि सभि बिधि आछे। भई प्रभाति गमनि गुर बांछे ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जंगल देश बिचरनि' प्रसंग बरननं नाम खसट त्रिसती अंशु ॥ ३६ ॥

अंशु ३७

जंगल देश बिचरनि प्रसंग

दोहरा

कूच भुपालां[1] ते कर्यो तेग बहादर राइ।
आइओ 'खीवा' ग्रास पुन उतरे सहिज सुभाइ ॥ १ ॥

चौपई

ग्राम बिसाल बसति सो अहै। सिंघा राहिक इक तहिं रहै।
सहिज सुभाइक सो चलि आवै। दुइ त्रै घटिका बैठि सिधावै ॥ २ ॥
इक दिन वहु बैठ्यो जबि आई। तुरत चल्यो उठि कै पिछवाई।
बूझ्यो गुर 'क्यों तुरत सिधारा ? काज कौन अस भौन मझारा ?' ॥ ३ ॥
सिंघा कहै 'ना कारज कोई। इक के सदन सगाई होई।
बांटति हैं सभि को मिशटान। भए लोक इकठे तिस थान ॥ ४ ॥
तहां जाइ कै निज बरतारा। लै आंवों, इस हेतु सिधारा'।
सुनि सतिगुर बोले करि करुना। 'अबि ते कबहि जाहु किस घरना ॥ ५ ॥
तुव्र बैठे निज सदन मझारे। पहुंचहिं आइ जुगल बरतारे।'
सुनि कै राहक सिदक कमावा। बैठ्यो निकटि न अनत सिधावा[2] ॥ ६ ॥
कहति भयो 'तुम पुरख वडेरे। हम से तुम चेरनि के चेरे[3]।
बाक उचारनि करि हो जथा। तातकाल फुरि होवहि तथा' ॥ ७ ॥
उत जिस के घर भई सगाई। सभि भाईन बिखै बरताई।
सिंघा नहिं देख्यो तहिं, पूछा। 'आयो क्यों न, रहै पुन छूछा' ॥ ८ ॥
तहिं इक ने भाख्यो 'सो गयो। बहिर गुरू जहिं उतरति भयो।
होइ निकंमा दिवसं बितावै। साधु फकीर निकटि चलि जावै ॥ ९ ॥
बैठ्यो रहै संझ लौ तहां। परिरनि खैबो पाइ न जहां।
ऐसी सदा रीति तिस केरे। बैठहि बहिर कोइ कित हेरे ?' ॥ १० ॥

---

1. गांव का नाम 2. और कहीं नहीं गया 3. दासों के दास

सुनि करि ग्राम चौधरी तबै। बाक बखान्यों सुनते सबै।
'नीकी रीति साधु ढिग जानो। तुम सगरे इस बिधि अविमानो ॥ ११ ॥
देवहु तिस तिस के दो बरतारे। जे न आइ, दिहु सदन मझारे'।
तबि ते कुछ बरतावहि कोऊ। पहुंचहि तिह बरतारे दोऊ ॥ १२ ॥
तिस बिन गुर को मिल्यो न कोई। भाग बिहीन ग्राम थो सोई।
सेवा करी न फल किछु पावा। सतिगुर ते नहिं को बरुसावा ॥ १३ ॥
तहिं ते कर्यो कूच गुर स्वामी। डेढ कोस गे अंतरजामी।
तबि पिशौर की संगति आई। खोजति बहु थल ते समुदाई ॥ १४ ॥
ब्रिंद उपाइन संग उठाए। गुर दरशन के अधिक तिसाए[1]।
जानि प्रेम तिन के मन केरे। उतरि परे उद्यान बडेरे ॥ १५ ॥
जाल बिरछ की छाया हेरी। हुती सघन सुंदर तिस बेरी।
उतरि तहां परयंक डसावा। चारु चुकौन बिछौन बिछावा ॥ १६ ॥
बैठि गए सतिगुरू बिराजैं। जिन दरशन करिबे दुख भाजैं।
चारु चादरा दीरघ घनो। सुंदर बदन चंद्रमा मनो ॥ १७ ॥
अंम्रित सम कोमल बर बैन। करुना भरे दरसीले नैन।
सुंदर शमस चुगिरदै मुख के। मुसकावति बोलति बच सुख के ॥ १८ ॥
संगति आनि चरन लपटाई। हाथ जोरि सिर देति निवाई।
कर सो चरन छुवहिं मुख फेरहिं। धंन जनम अपनो पुन हेरहिं ॥ १९ ॥
धरहिं उपाइन अरपि अगारी। धन अरु बसन मोल जिन भारी।
अपर पदारथ अरपति रास। श्री गुरु निकटि होति अरदास ॥ २० ॥
बिनै ठानि परिकरमा करि हैं। उसतति अनिक प्रकार उचरि हैं।
मन भावतिं सतिगुर बर दीने। तिन की घाल प्रेम युति चीने ॥ २१ ॥
मिले बहुत दिन खोजति आए। श्रमति भए पुन दरशन पाए।
गुर कहि दीनसि धीर दिलासा। क्रिपा दिशटि देखति चहूं पासा ॥ २२ ॥
इतने महिं राहक इक आवा। पिखि प्रभाव को सीस निवावा।
'निकटि खेत मैं लांगुल[2] वाहति[3]। नर गन पिखि करि दरस उमाहति ॥ २३ ॥
तक्र[4] हमारे घर ते आई। करहु आप भी पान मंगाई।
गुर तबि कह्यो 'भाव शुभ हेरा। तूंही पान करहु इस बेरा' ॥ २४ ॥
सुनि पुन भन्यो 'आप भी पीयो। क्रिपा द्रिशटि मैं पेखति जीयो'।
बारि बारि कहि राहक रह्यो। तबि सिक्खनि सों कह्यो ॥ २५ ॥

1. प्यासे, इच्छुक 2,3 हल चलाता था 4. लस्सी

तक्र पान कीनसि तिस बेरी। संगति लिखा मिटाइ बडेरी।
राहक सों तबि सतिगुर प्राही। 'दुगध रहै बहु तुव घर मांही ॥ २६ ॥
थुरहि नहीं कबि[1], होइ घनेरे। सतिसंगति सेवी इस बेरे।'
इम संगति को करि सनमान। तहि ते सतिगुर कीनशि प्यान ॥ २७ ॥
सगरी संगति संग लिआए। 'भिखी' ग्राम समुख को आए।
सने सने गमनति सुख साथ। तहां आइ उतरे जग नाथ ॥ २८ ॥
इक दिन संगति तिहठां रही। पुनहिं बिदा गमने उर चही।
सिरेपाउतिन को बंधवाए। जथा जोग जेतिक मुखि आए ॥ २९ ॥
पुन मसद सों पाग बंधाई[2]। बिदा दई सभिहिनि सुखदाई।
गुर की खुशी लई सभि पाइ। गमन कीनि संगति समुदाइ ॥ ३० ॥
तिन पाछे सतिगुर सुख धामा। बसे कितिक दिन भिक्खी ग्रामा।
तहि देसू सरदार बिसालै। चाहल गोत चढहि तिस नालै[3] ॥ ३१ ॥
दुइ दिन बिते मिलनि नहीं आयो। जिम सरवर सेवा चित लायो।
देंहि दरूद रोट पकवाइ। सादर बैठि भिराई खाइ ॥ ३२ ॥
सरवर की खूंडी गर[4] गेरी[5]। तिस महि शरधा ठानि घनेरी।
हिंदू धरम न कछू बिचारहि। तुरक रीति सिर ऊपर धारहि ॥ ३३ ॥
परमेशुर को जानहिं नाहीं। महां मंद गमनै बदराही[6]।
जे दिज पंडित, इन कहु मानहिं। अरपन की तबि कौन बखानहिं ॥ ३४ ॥
गुग्गा, मीरां, अरु सुलतान। धरम छोडि इन मानहिं आन।
तौ परमेशुर को क्या मानहिं। डहिके हिंदू त्यागति स्यानहिं ॥ ३५ ॥
कितिक सिक्ख भिक्खी के मांहि। देसू को समुझावति चाहि।
'श्री नानक की गादी पर हैं। मिलहु इनहिं जे निज सुख करि हैं ॥ ३६ ॥
इन को क्रोध प्रसंन अफल नहि। दाता बर सराप के सभि महि।
देवनि कहु भी दुख सुख दानी। नर बपुरनि की कहां कहानी' ॥ ३७ ॥
इत्यादिक तिस को समुझाइ। सतिगुरु साथ मिलिनि ठहिराइ।
भयो त्यार कुछ लई उपाइन। मिलि करि मैं बंदों गुर पाइन ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जंगल देश बिचरनि प्रसंग बरननं नाम सपत त्रिसती अंशु ॥ ३७ ॥

---

1. कभी भी कमी नहीं होगी 2. पगड़ी 3. साथ 4. गला 5. डाली
6. कुमार्ग पर चलना

अंशु ३८

जंगल देश बिचरनि प्रसंग

दोहरा

समुझायहु सिक्खनि जबहिं देसू ह्वै करि त्यार।
भीर संग लै नरनि की आयो गुर दरबार ॥ १ ॥

चौपई

दिवस तीसरे दरशन आयो। प्रथम उपाइन धरी जु ल्यायो।
बिनै सुनी बानी कहि करि कै। बंदन कीनि चरन सिर परि कै ॥ २ ॥
निंम्रि देखि कै श्री गुर पूरे। कह्यो बाक बाकनि के सूरे।
'आवहु देसराज बनि बैठहु। जे दिढ शरधा शुभ घर पैठहु[1] ॥ ३ ॥
सकल देश पर हुकम चलावहु। जे गुर सिक्खी सिदक कमावहु।
इह खूंडी[2] किम घर महिं राखी ? क्या गुन करहि सुनावहु साखी ॥ ४ ॥
सुनि देसू ने सकल सुनाई। 'सरवर की खूंडी इहु पाई।
निस दिन रख्या करहि हमारी। महिखी धेनुनि[3] देति हजारी ॥ ५ ॥
दूध पूत को अधिक बधावति। सकल देश तिस बहुत मनावति।
करहिं रोट अरपहिं तिस तांई। हाथ जोरि बंदहि सि न्याई' ॥ ६ ॥
सुनि सतिगुर ने पुन समुझावा। 'हिंदु धरम बन को इह दावा[4]।
क्यों अपनो परलोक बिगारा ? सतिनाम को रिदै बिसारा[5] ? ॥ ७ ॥
जबि जम के बसि पर हैं जाई। तहां होइ है कौन सहाई ?
जिसको दंड सभिनि पर अहै। तिस आगे को धीरज लहै ? ॥ ८ ॥
सतिगुर सतिनाम बिन और। नहीं छुराइ सकहिं तिस ठौर।
जग मैं जे प्रताप को चाहैं। निज दुशटनि को दलनि उमाहैं ॥ ९ ॥
हम ते पंच तीर तुम लेहु। सभि बिधि कारज करि है एहु'।
सुनि सतिगुर के बाक सुहाइ। देसू उर महिं तिस छिन भाए ॥ १० ॥

---

1. प्रवेश करो 2. छड़ी 3. गऊ 4. दावा अग्नि (हिन्दू धर्म रूपी जंगल को जलाने वाली) 5. भुला दिया है

सरवर की खूंडी गर पाई। तूरन तोरति दूर बगाई।
पंच तीर ले बंदन ठानी। भयो प्रसंन नीक मन मानी ॥ ११ ॥
अपने लोकनि महिं पुन कह्यो। 'अबि लौ मैं भूल्यो बहु रह्यो।
तुरकनि को मानति हम रहे। हिंदू धरम रीति महिं लहे ॥ १२ ॥
प्रथम जवन[1] को अरप जु दीना। पाछे आप अचवनो कीना।
राम रहीम न मान्यों कोई। आइ सहाइक अंत जु होई ॥ १३ ॥
अबि मैं रहि करि सतिगुर शरनी। करवि सकल ही आछी करनी'।
इम कहि नमो ठानि घर गयो। सेव गुरनि की करतो भयो ॥ १४ ॥
दुगध अंन मिशटान घनेरे। चहिय वसतु पहुंचावै डेरे।
बैठहि निकटि सुनैं गुर बैन। दरसहि करहि सफल जुग नैन ॥ १५ ॥
पुन श्री तेग बहादर राइ। भए सु त्यार चलनि अगवाइ।
देसराज कहु द्रिढता दीनसि। मति अडोल रहु निशचा लीनसि ॥ १६ ॥
इन कहु तीर नहीं मन जानि। पंच बीर आए तुव पान[2]।
जेतिक है चहुकुंट मझारी। कोइ न ठहिरहि इनहुं अगारी ॥ १७ ॥
जिस चाहैं जीतहु करि जंग। नहिं अरि अरहि होहि भट भंग'।
क्रिपा धारि कहि कै इस भांति। गमने श्री हरि गोविंद तात ॥ १८ ॥
जाइ पहुंचे ग्राम जु 'ख्याल'। बासहिं चाहल गोत बिसाले।
उतरि परे डेरा तहिं कीनि। सतिगुरु क्रिपा निधान प्रबीन ॥ १९ ॥
मिलिबे हेतु जाट नहिं आए। तनक न सेव करी मन लाए।
मंद भाग जिन के पछुतावा। लै नहिं सके, घरहि गुर आवा ॥ २० ॥
इक दिज मिल्यो सेव बहु ठानी। करति भाउ काया मन बानी।
हाथ जोरि करि बैठहि पास। सुनि है श्री मुख वाक बिलास ॥ २१ ॥
इक दिन श्री गुरु सहिज सुभाइ। बिचरति चरन साथ तिस थांइ।
हुते संग दिजबर बिचरंता। अधिक भावनी रिदै धरंता ॥ २२ ॥
केतिक लोक संग तहि फिरिहीं। तबि दिज सों सतिगुरु उचरिहीं।
'कुछ संमत बीते इस थान। लगहि एक बट ब्रिच्छ महान ॥ २३ ॥
अरु इस निकटि कूप बनिवावै। जिस ते नीर बहुत नर पावै'।
इम श्री मुख ते बाक बखाने। सो अबि लगे कहै कवि जाने ॥ २४ ॥
ग्राम सु खयाले महिं अबि अहैं। बिदत लगे नर जाइ सु लहैं।
इस प्रकार सतिगुर तहिं बासे। दिज पर भए प्रसंन बिगासे ॥ २५ ॥

1. तुर्क 2. पांच पीर तुम्हारे हाथ में अथवा नियंत्रण में हो गए हैं

करी बिप्र पर खुशी बिसाला। हलत पलत महिं रह्यो सुखाला।
श्री गुर कर्यो कूच निज डेरा। निकट दमदमे मीड़ बडेरा ॥ २६ ॥
तिसी ग्राम कहु पहुंचे जाई। उतर्यो चहति देखि शुभ थाई।
इक थल कंटक की बड वार। बारा कर्यो हुतो[1] इकसार ॥ २७ ॥
तहिं के कंटक कुछ हटवाए। डेरे सहित गुरु प्रविशाए।
उतरनि लगे तबहिं नर आइ। बरजति भए 'न शुभ इह थाइं ॥ २८ ॥
जंड खरो इस महिं जो भारा। कांड पत्र जुति लहि बिसतारा।
बसहि पिशाच इसी मैं कबि को[2]। ग्राम बिखै दीनसि भै सभि को ॥ २९ ॥
तुम भी नहिं उतरहु इस थान। घात पाइ करि हानहि प्रान[3]।
पिखहि अवग्या जिस महिं कबिहूं। करता तिसहि बिनाशनि तबिहूं ॥ ३० ॥
हम पूजति भै जुति नित रहैं। इस कारन तें तुम को कहैं।
वहिर करहु कित डेरा जाइ। सुख तो बसहु निसा को पाइ ॥ ३१ ॥
तुम को सुधि हम दई बताइ। होइ न आस पीछे पछुताइ'।
सुनि सतिगुर ने तिन सों कह्यो। 'अबि लौ इहां पिशाच जु रह्यो ॥ ३२ ॥
आगै नहीं रहै इस थान। निकसि जाइगो बिहरहि आन।
बसहिं देवता इस थल आइ। जिस ते तुम सगरे सुख पाइ' ॥ ३३ ॥
तबि डेरा सतिगुरु जमायो। भई जामनी देव सु आयो।
हाथ जोरि कै बिनती ठानी। 'तुम समरत्थ सगल गुन खानी ॥ ३४ ॥

दोहरा

पूरब हम इकठे सकल बसते गोइंदवाल।
गुरू अंगद, श्री अमर को कहित भए हित नाल[4] ॥ ३५ ॥

चौपई

गोइंदवाल थेहु[5] जो पर्यो। उजर्यो धरम झूठ थो कर्यो[6]।
अबि तुम जाइ बसावनि करीअहि। हमरे कर की छटी सुधरी अहि ॥ ३६ ॥
भूत प्रेत को लाखहुं दल है। देखि छटी भाजहि तजि चलि हैं।
हुकम मानि श्री अमर सु आए। हम सभिहनि को दीनि पलाए ॥ ३७ ॥

---

1. एक स्थान पर कांटों से बाड़ बना रखी थी 2. इसी जंड के वृक्ष में कभी का भूत रहता था 3. दाव लगाकर प्राण खत्म करता है 4. प्रेम सहित 5. खंडहर 6. इसी लिए उजड़ गया है क्योंकि गोंदा ने झूठ को ही धर्म माना था

जंगल देश इतहि सभि आए। आदि बठिंडे बसि सुख पाए।
आवनि भा इस देश तुमारो। हम को दुखद सु डर-उर धारो ॥ ३८ ॥
कहां बास हम करि हैं जाए। क्रिपा धारि दिहु देश बताए'।
श्री गुर कह्यो 'आइ इक काल। बितहिं बरख केतिक इस ढाल ॥ ३९ ॥
एक पुरख आवहि इस देश। जाइ बठिंडे करहि प्रवेश।
तहिं तें देव* निकासहि सोइ। बसिबे देश देइ जबि होइ' ॥ ४० ॥
इम सुनि नमसकार करि गयो। श्री गुर सेज सोइ सुख लह्यो।
सुपति जथा सुख निसा बिताई। पुन तम नस्यो प्राति हुइ आई ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जंगल' देश बिचरनि प्रसंग' बरननं नाम अशट त्रिसंती अंशु ॥ ३८ ॥

---

* भूत

अंशु ३६

जंगल देश बिचरनि प्रसंग

दोहरा

कितिक दिवस तिस ग्राम महिं बसे गुरु महाराज ।
संगति देखि निहाल हुइ सिक्खनि सुधरे काज ॥ १ ॥

चौपई

चलदल[1] लग्यो जंड तिस मांही । सतिगुर बाक निफल किम जाहीं ।
भयो देवता को तहिं बास । जो सभि को सुख देति प्रकाश ॥ २ ॥
सुठ प्रयंक इक द्‌योस उसायो । उज्जल आसतरन सों छायो ।
तिस पर बैठे गुर महाराज । दरशन देति गरीब निवाज ॥ ३ ॥
अपर पंचाइत गुर ढिग आइ । कंबल पर बैठे समुदाइ ।
दरशन करहिं होइ अरदास । अरपहिं ब्रिंद उपाइन पास ॥ ४ ॥
उत देसू दी[2] सुनहु कहानी । ज्यों कीनसि निज शरधा हानी ।
हेतु परखिबे निशचा तांहि । कुछ सकट होयहु तन मांहि ॥ ५ ॥
कितिक दिवस गुर पाछे भयो । कशट संग तन को तपतयो ।
धाइ नाम तिस इसत्री केरा । बेमुख सरवर ते पति हेरा ॥ ६ ॥
भई क्रोध सों ताड्यो कंत । 'तैं किस ते सीख्यो अस मंत ?
बडे तुमारे मानहिं जांहू । दूध पूत जो दे घर मांहू ॥ ७ ॥
देति मुराद हज़ारनि जोइ । तैं कैसे करि त्याग्यो सोइ ?
खूंडी गर ते गेरनि कीनि । किस दंभी ते इह सर लीनि ॥ ८ ॥
यांते कशट तोहि कउ होवा । निज मंनत पर नहीं खरोवा' ।
इत्यादिक कहि बाक घनेरे । सरवर मंनत पर पति प्रेरे ॥ ९ ॥
दोइ दिवस नहिं मान्यो देसू । कहि समुझावनि कीनि विशेशू ।
दिवस तीसरे महिं मनवावा । तास कशट को बहुत बतावा ॥ १० ॥
कहे भारजा के मति अंधे । सरवर की खूंडी गर बंधे ।
बोलि भिराई रोट पकायो । हाथ जोरि करि बहु घिघिआयो ॥ ११ ॥

1. पीपल का पेड़ 2. की

करि छल तीर धाइ ले लीने। बहुत खंड तिह तोरनि कीने।
करी अवग्या सतिगुर जानी। बैठे 'मौड़' ग्राम इत थानी ॥ १२ ॥
पंचाइत सों बचन उचारे। 'गज़ब कर्यो देसू मतिमारे।
पंच बीर तीरनि महिं थापे। सो ले करि नहिं राखे आपे ॥ १३ ॥
निज दारा कहु दे तुरवाए। अबि लौ तिह फल दुख नहिं पाए।
शंकमान हम ते हुइ बीर। तजि तीरनि आए हम तीर' ॥ १४ ॥
तिस पंचाइत महिं नर केई। सनबंधी देसू के तेई।
खरे भए कर जोरि अगारी। 'श्री गुर ! छिमां करहु इस बारी ॥ १५ ॥
हम जौ लौ समुझावनि जाइं। शरन आप की परै सु आइ।
धीरज धरम धाम तुम अहो। ततछिन करहु आप जिम चहो' ॥ १६ ॥
बिनै बाक इत्यादिक कहिकैं। गमने भिक्खी कहु चित चहिकै।
मिले आइ करि बात जराए। 'क्यों गुर के तुम तीर तुराए' ॥ १७ ॥
सुनति नट्यो[1] देसू कहि तांहि। 'गुर ढिग झूठ कह्यो किस जांहि।
नहिं तोरे हम तीर तिनहु के। सिक्खी धारनि कीनि जिनहुं के' ॥ १८ ॥
सुनि पंचाइत गुर ढिग आई। 'तुमरे पर इक आस टिकाई।
रावर की सिक्खी तिन धारी। अपरनि की मंनत सु बिसारी' ॥ १९ ॥
झूठे बाक सुने गुर कह्यो। पता बतायो तिन जो चह्यो।
'हुकम भारजा को तिन माना। मंदमती नहिं भेद 'पछाना' ॥ २० ॥
पुन हटि कै पंचाइत आई। सगरी साची बात बताई।
घर मैं दुरि कै जो तुम कीनसि। मन गति जुति सभि ही गुर चीनसि ॥ २१ ॥
कहे तुमारे क्या अबि होइ। परहु चरन बखशावहु सोई।
सुनी धाइ, पंचाइत आई। पति को झिरकति क्रोध बधाई ॥ २२ ॥
घर से बहिर न निकसनि दीनसि। मिलनि पंचाइत को नहिं कीनसि।
इक दुइ दिवस बैठि हटि आए। करि बंदन बिनती मुख गाए ॥ २३ ॥
'छिमा निधान आप तुम अहो। लखि सभि ओगुन कुछ नहिं कहो।
पतित पावनो नाम तुमारा। धन सम क्रिपा करहु इकसारा' ॥ २४ ॥
सुनि पंचाइत को बच दीन। क्रिपा निधान कह्यो सभि चीन।
'बीच फिरे तुम इक दुइ बार। यांते तलका बसहि उदार ॥ २५ ॥
अरु देसू की गति भई एही। कल्कर[2] ते हम कीनहुं लेही[3]।
पुनहु लून कल्लर हुइ गयो। बंस आपनो नाशनि कियो ॥ २६ ॥

1. बात करके फिर गया, बदल गया 2. ऊसर भूमि 3. उपजाऊ

अबि तें आगे उपजै नांही। सने सने जीवति मरि जांही।
लहै सजाइ जाइ जम धाम। को न छुटावनि को लै नाम॥ २७॥
बिन हाकम जिम रय्यत[1] लुटीयहि। पति समरथ बिन कहु किम छुटीयहिं'।
इस प्रकार गुर स्राप[2] बखाना। पर्यो जाइ तिह बज्र समाना॥ २८॥
दिवस कितिक महिं देसू मर्यो। गैंडा पुत्र बिठावनि कर्यो।
किचत मास बिते जबि तांहूं। पित को राज करति सभि मांहूं॥ २९॥
गैंडे की त्रिय को इक भ्रात। तिसने कर्यो खून कित जाति।
सो गैंडे ततकाल बुलावा। निज करते बरछी संग घावा॥ ३०॥
तिस के भ्रात होइ इक ठाए। महां शोक धरि रिदा तपाए।
तसकर सम निस महिं तहिं गए। गैंडा सुपति जहां थिन किए॥ ३१॥
तरवारनि संग ऐसो मार्यो। भाजनि हेतु न पग इक धार्यो।
जबि संघार करि चले पलाई। सुभटनि सैना के सुधि पाई॥ ३२॥
चढी फौज तिन पाछै परी। बहिर हते लर करि इक घरी।
जबि गैंडा इम मार्यों गयो। पौत्र सु देसू के इक थियो॥ ३३॥
सो बिख देइ शरीकनि मार्यो। इम सगरो तिह मूल उखार्यो।
रह्यो न जग महिं तिस को कोई। गूरू द्वैश ते अस गति होई॥ ३४॥
अबि सतिगुर की कथा सुनी जैं। गाम मौड़ महिं थिरता कीजैं।
डेढ कोस तहिं ते इक ताल। तहां सु बैठे जाइ क्रिपाल॥ ३५॥
जो संगति दरशन कौ आवै। उपदेशहिं शुभ ताल खनावैं[3]।
खुशी करहिं सिक्खनि पर घनी। चार पदारथ के गुर धनी[4]॥ ३६॥
निज निज सभि अरदास करावहिं। पाइनि परसहिं सीस निवावहिं।
तहां तड़ाग बडो खनवायो। जल सुंदर हित त्यार करायो॥ ३७॥
कितिक दिवस बसि कै तिस थाने। बहुर कूच करि श्री गुरु प्याने।
'खाने' ग्राम गए सुखदाइ। पुन दम दमे पहुचे जाइ॥ ३८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जंगल देश बिचरनि' प्रसंग बरननं नाम ऊन चत्वारिंसती अंशु॥ ३९॥

---

१. प्रजा 2. अभिशाप 3. तालाब खुदवाते हैं 4. स्वामी

अंशु ४०

जंगल देश बिचरनि प्रसंग

दोहरा

इसी रीति सेवति सुमति बर पावति नर ब्रिंद ।
जबहि अवग्या को करहिं स्राप सहै मतिमंद ॥ १ ॥

चौपई

पुन सूलीसर[1] को गुर आए । डेरा कर्यो देखि सुभ थाए ।
सूरज असत्यो भा अंधकारे । खान पान करि सुपते सारे ॥ २ ॥
द्वै तसकर[2] गुर के संग लागे । कितिक दिननि ते मूढ अभागे ।
एक तुरक इक हिंदू सोइ । लेनि तुरंग तकति हैं दोइ ॥ ३ ॥
सिवर निकटि बैठे कित दुरि कै । देखनि घात लेहिं जिम हरि कै ।
तबै केहरी भीखन भेखा । गुर डेरे को आवति देखा ॥ ४ ॥
चारहुं ओर फिर्यो करि बंदन । इम मनाइ कै दोश निकंदन ।
गमन्यो पुन कानन को सोई । देखति दुरे सु तसकर दोई ॥ ५ ॥
कह्यो तुरक 'इह साचो पीर । उचित मानिबे गुनी गहीर ।
जिस ढिग पशू शेर चलि आवा । नमों प्रदच्छनि करनि सिधावा ॥ ६ ॥
मैं तो करौं न इन की चोरी । इह ठां बंदति हौं कर जोरी ।
जे निज भलो करनि उर धरैं । चलहु अपर थल चोरी करैं ॥ ७ ॥
सुनि हिंदू ने बाक अलायो । 'क्यों निज मन महिं भरम उठायो ?
किट कौ सुधि क्यों आयो शेर । तैं क्या अजमत पिखी वडेर ? ॥ ८ ॥
कितिक दिननि ते हम संग फिरे । आज भयो तम नभ घन[3] घिरे ।
कैसे तजि करि जाहिं तुरंग । लै हैं आज भली बिधि संग ॥ ९ ॥
रिदे संदेह न करीअहि कोऊ । वहु मोला अस्वलै हैं दोऊ ।
एक बारि मैं चढिबो पाइ । नहिं दै हौं पुन, जाउं पलाइ ॥ १० ॥
किम बिसाल तैं चिंता करी । मैं लै हों संग रहु इक घरी' ।
सुनि कै तुरक नहीं मन मानी । तहां बंदि कर बंदन ठानी ॥ ११ ॥

---

1. एक गांव का नाम 2. चोर 3. आज आकाश पर बादल छाए हैं और अंधेरा हुआ है

गमन्यों सदन तास को पाइ। हिंदू बैठि रह्यो तिस थांइ।
अरध जामनी बीती जबै। तुरंग समीप पहूच्यो तबै ॥ १२ ॥
परनि लगी पतरी जल बुंद[1]। जहिं तहिं पसर रह्यो तम ब्रिंद।
चौकीदार गयो बिच छाया। पुरे बाउ[2] ते कुछ अलसाइआ ॥ १३ ॥
तबै तुरंग खोलिबो कर्यो। दे कविका मुख ऊपर चर्यो।
जबि डेरे कहु उलंघि सिधावा। श्री सतिगुर ने बाक अलावा ॥ १४ ॥
'भो घुरवार[3] ! जगहिं कै सोवहिं ? तुरंग चलति कै खरको[4] होवहि।
अपने थान खरों कै मांहीं ? फेरहु हाथ महां तम मांही' ॥ १५ ॥
सुनि सेवक ने नैन उघारे। जाइ तुरंग को थान निहारे।
नहीं बिलोक्यो, तूरन बोला। 'गुर जी तसकर ने अस्व खोला ॥ १६ ॥
अबिही मींह मंद बरसाया। हेतु बचावनि प्रविशयो छाया।
देरि न परी तुरंग को लीना। महां कुकरम मूढ किन कीना ॥ १७ ॥
अदब नहीं सतिगुर को चीना। लोक प्रलोक दुहनि ले हीना।
तुरंग आपनो आप हटावहु। तसकर उचित सजाइ दिवावहु ॥ १८ ॥
नांहि त इसी देश के लोक। वसतु खसोरहिं मारग रोकि।
तुम समरथ सभि भांतिनि मांही। रहै अदंड उचित इह नांही ॥ १९ ॥
पुनहि जामनी महिं सो आवै। हिल्यो वस्तु कुछे अपर लिजावै।
जे न दिखावहु शकति विशेश। नहिं बच सकहु फिरहु परदेश' ॥ २० ॥
सुनि सतिगुर कहि धीरज दीना। 'फल सो पाइ करम जिन कीना।
उत्तर दिशि ले गयो तुरंग। पकरि लेहु दौरहु तिह संग ॥ २१ ॥
सघन तिमर ते करहु जु शंका। होति प्रभाति गहो मति रंका।
नहीं जाइ है तुरंग हमारो। इहठां आवहि बिदत सकारो[5] ॥ २२ ॥
सुनि सतिगुर के वाक उदारे। करि धीरज बैठे नर सारे।
केतिक सुपति रहे को जागे। तसकर गहनि चित महिं लागे ॥ २३ ॥
बोलति बच प्रभाति हुइ आई। तबि शारत सतिगुरू बताई।
समुझि गए सेवक सभि दौरि। पहुंचे आध कोस के ठौर ॥ २४ ॥
ठांढो तसकर तहां निहार्यो। हय कविका ते पकरनि धार्यो।
सतिगुर दासनि गह्यो सु जाई। मूरख अधम रह्यो सिर न्याई ॥ २५ ॥
तुरंग समेत लए चलि आए। गुरु के निकटि आन दरसाए।
'अरध कोस पर बैठ्यो एहू। ले करि गयो नहीं किम ग्रेहू'[6] ॥ २६ ॥

1. छोटी-छोटी बूंदें पड़ने लगीं 2. पुरवा के चलने से कुछ सुस्त सा हो गया 3. घोड़े के रक्षक 4. खड़े हो गए 5. सवेरे 6. घर को

सुनि श्री तेग बहादर राइ। बूझयो 'दीजै साच बताइ।
किम नहिं लेइ गयो घर घोरा। बैठि रह्यो हमरे ढिग भोरा॥ २७॥
तबि तसकर ने सकल बताई। हम, द्वै थे इक गयो पलाई।
मैं असु खोल्यो आइ तुमारा। दे कविका ह्वै करि असवारा॥ २८॥
कितिक दूर मैं मारग गयो। जाह तहां लौ अंधा भयो।
कित दिश गमन्यो जाइ न जबै। साथी के बच सिमरे तबै॥ २९॥
नमो करति केहरि को देखा। तुरक हुतो, समुझाइ विशेखा।
मैं तिस की इक कही न मानी। सो चलि गयो आपने थानी॥ ३०॥
भयो अंध मैं बहु पछुतावा। पुन हटि करि तुमरी दिशि आवा।
भ्रम दिशि भयो न जान्यो गयो। हुइ लचार तिसही थल थियो॥ ३१॥
प्राति होति गे दास तुमारे। गहि लीनसि मुझ को रिस धारे।
अति मतिमंद कियो बड पाप। द्रिग ते देखनि लग्यो प्रताप॥ ३२॥
मैं तसकर, दिहु जथा सज़ाइ। नीच बुद्धि ने कुमग चलाइ।
भाग हीन मन समुझ्यो नांही। तुम प्रकाश रवि सम जग मांही'॥ ३३॥

दोहरा

सतिगुर कहिं 'रे कुटणो[1]! सभि जग सों करि द्रोह।
इह फकीर को गोदरा[2] सो पि न छोर्यो तोहु॥ ३४॥

चौपई

पाप अनिक भांतिनि के अहैं। करि करि अधम कशट को लहैं।
तऊ इनहुं महिं अंतर महां। लघु ते लघु बड ते बड कहा॥ ३५॥
कहां अपर की चोरी करनी। कहां वस्तु संतानि की हरनीं।
यांते जो तसकरनि सज़ाइ। इह बूझति हैं देहु बताइ॥ ३६॥
जगत विदत है सूली देनि। सो इह आपहि कर ही लैन।
इम कहि दासनि तें छुरिवायो। तसकर बच कर जोरि अलायो॥ ३७॥
'हुकम आप को जैसे होइ। तिम करि हौं बस मोहि न कोइ।
अबि मरिबे ही भलो पछानों। भा तुमरो अपराध महानों'॥ ३८॥
श्री गुर कह्यो जंड तरू खरो। इस काशट पर चढि करि मरो।
सुनति चोर आरोहा जाइ। ऊचो कांड[3] गहयो सहिसाइ॥ ३९॥
बल करि तेर्यो जिम रहि तीखन। देखति सभि के करमा भीखन।
तिस पर उदर टिकायो आपनि। पाइ ज़ोर निज जीवन खापनि॥ ४०॥
जबि अलंब तिस के हुइ गयो। फट्यो पेट काशट प्रविश्यो।
ततछिन मर्यो सुथल अबि अहै। जिस को सूली सर नर कहैं॥ ४१॥
इक दुइ दिन करि कै तहिं बास। श्री सतिगुर सेवक सुखरास।
पुनहिं कूच तहिं तो करि दीनसि। 'बरे[4]' ग्राम को मारग लीनसि॥ ४२॥
इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जंगल देश बिचरनि प्रसंग' बरननं नाम चत्वारिंसती अंशु॥ ४०॥

---

1. दुष्ट लोग 2. गुदड़ी 3. टहनी 4. गाँव का नाम

अंशु ४१

धनधान आगवन गुरु प्रसंग

दोहरा

तहिं ते चढि श्री सतिगुरु 'बरे' ग्राम महिं आइ।
कर्यो निवास सु थान सुठ मिले लोक समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

करि सेवा दिन कुछक टिकाए। हुतो चुमासा घन बरखाए।
तहां मोठ को खेत बिजाइ। चारति भए तुरंगनि पाइ ॥ २ ॥
महिखी को नित प्रति बहु चारे। पशू पुशट कीनसि इकसारे।
संगति दूर दूर ते आवहि। सगल देश ते भोजन खावहिं ॥ ३ ॥
आनि उपाइन बहु अरपंते। रहैं कितिक दिन दरस करंते।
शरधा सहित सुनहिं उपदेश। जनम जनम के कटहिं कलेश ॥ ४ ॥
जो मसंद जिस देश मझारे। ले गुर कार होहिं करि त्यारे।
संगति अपने संग लगाइ। आवहिं सतिगुर को दरसाइ ॥ ५ ॥
इक मसंद दरसहि रहि पास। संगति अनिक संग हुइ तास।
अनगन धन सतिगुर ढिग आवै। पर उपकार हेतु सभि लावैं ॥ ६ ॥
नरनि हजारनि को भल करिहीं। दरशन दे करि दोशनि हरिहीं।
बित्यो चुमासा तिस ही थान। मग के सूकि गए बहु पानि ॥ ७ ॥
बरे ग्राम पर भए प्रसंन। अविलोक्यो नीको थल अंन।
पूरब थान सदन उठिवाए। ग्राम दूसरी दिशा बिठाए ॥ ८ ॥
भान्यो बाक बसे तहिं जाइ। धन अरू धान अधिकाइ।
जो जिन करी कामना मन मैं। पूरन करति भए तिस छिन मैं ॥ ९ ॥
कूच कर्यो पुन गुर प्रसथाने। ग्राम 'बुलाढे' उरे सथाने।
उतरि सु निसा बितावति भए। पुन 'गोबिंदपुरे' गुर गए ॥ १० ॥
गमने तिह ते 'गागे' आए। डेरा कर्यो हेरि सुभ थाए।
बाही गए घास हित बाहर। जाइ कर्यो खेतहि महिं आहर ॥ ११ ॥

बीन बीन त्रिण कितिक किदारन[1]। करि इकठे बंधति निज भारनि।
राहक जाट आनि करि परे। छीन लीनि त्रिण रिस महिं भरे ॥ १२ ॥
भ्रिरकि गारि दे मारनि करे[2]। निज खेतनि ते वहिर निकरे।
छूछे दीनमने बहु दास। आइ पुकारे गुर के पास ॥ १३ ॥
'इहां जाट मतिमूढ बिसाले। गुर महिमा नहिं लखहिं कुचाले।
नहीं बिगार्यों तिन का खेत। प्रविशे हम त्रिण लैबे हेतु ॥ १४ ॥
नहीं शाम सों आनि हटाए। त्रिणनि छीनकै हते रिसाए।
कहि बहु रहे—न कीनि उजारा। नहि भान्यो मतिमंद गवारा ॥ १५ ॥
गुरमुख नहिं इह मनमुख महां। गुर जी नहीं रहनि भल इहां।
त्रिण बिन सरै नहीं निज डेरे। असु महिखी रहिं छुधित घनेरे ॥ १६ ॥
सुनि सतिगुर ने मानी बात। चढि करि चले टिके नहिं राति।
तनक क्रोध ते स्राप न दीनहूं। 'गुरनें' ग्राम सु डेरा कीनहु ॥ १७ ॥
नर पीछै मिलि करि पछुताए। 'बुरो गुरू अपराध कमाए।
सरब ग्राम जिन सेवा करिहीं। हाथ जोरि बंदहिं हित धरिहीं ॥ १८ ॥
बरे ग्राम ने राखि चुमासा। करति रहे सेवा हुइ दासा।
लोक हज़ारों मिलि करि आवें। धन अरपहिं अरु सीस निवावैं ॥ १९ ॥
रिदे कामना पूरन होइ। जहिं कहिं पूजति हैं सभि कोइ।
करे अवग्या स्राप बखानहिं। धन अस धान माल सभि हानहिं ॥ २० ॥
करामात मैं पूरन एह। हमहिं स्राप कहि करि हति देहिं।
तांहित सभि चलि मिलि बखशावहु। करि जोरहु पग सीस निवावहु ॥ २१ ॥
इम कहि घ्रित बासन इक लीनि। इक भूरा[3] संग चलिबो कीन।
गुरने मिले गुरू कहु सारे। बिनती युति बच दीन उचारे ॥ २२ ॥
'छिमहु क्रिपा करि हम अपराधू। बखशहु महां पुरख तुम साधू।
अबि लौ स्राप जे न कुछ कह्यो। शुभ सुभाउ रावर को लह्यो ॥ २३ ॥
तांहि त हम क्या जंत बिचारें। शीघ्र होति जो मुखों उचारें।
बज्र समान स्राप नहिं फिरै। तुम रिस ते को रच्छा करै' ॥ २४ ॥
इत्यादिक बहु बिनै बखानैं। लखि गवार तिन, गुर नहीं मानैं।
राख्यो तीन दिवस गुर डेरा। गुर ने ग्राम बिखै, चलि फेरा ॥ २५ ॥
रहे मनाइ नंम्रिता को ले। तिन दिशि देखि गुरू नहीं बोले।
चलि 'मकमोड़' ग्राम महिं आए। तहिं भी संग गमनते भए ॥ २६ ॥

1. खेती 2. झिड़क कर और गाली देकर मारने लगे 3. कम्बल

'श्री गुर जबि डेरा करि दीनि। हाथ जोरि बहु ह्वै करि दीन।
बिनती अनिक प्रकार उचारी। सिख्यनि देखि सुपारश करी ॥ २७ ॥
'बहु दिन को इह बिनै बखानैं। बिरद आपको क्रिपा निधानैं।
हैं गवार[1] नहीं जानि सके हैं। अबि पछुताए शरन तके हैं ॥ २८ ॥
सिर गवार के लगहि त जाने। तऊ आप हो छिमा महाने।
तास आप को धारि घनेरा। पशचाताप करति बहुतेरा ॥ २९ ॥
क्रिपा द्रिशटि को करहु बिलोकनि। संसे हति शरधा हुइ लोकनि।
सिक्खी धरहिं होहिं अनुसारी। भाउ भगति नित गहैं तुमारी' ॥ ३० ॥
इम सिख्यनि को रुख लखि करिकै। महांराज गुर करूना धरिकैं'।
भूरा, भूर घटा[2] घ्रित लीनि। बखशनि करे देखि कै दीनि ॥ ३१ ॥
'कुल बरखेशीआन[3] की जेती। करनी हुती उखारनि तेती।
अबि तुम आनि मिले घिघिआए। बधहि न बंस न हुइ समुदाए' ॥ ३२ ॥
अलप रहै गो बंस तुमारो। रार करति हुइं सूर करारो।
जैसे अगनि जोर बित गए। राह थोरी पाछे, सु धुकए[4] ॥ ३३ ॥
तैसे कुल तुमरी जग रहै। नहीं पराजै रिपु ते लहै।
कुल गुल गुल्लीआन[5] की जोइ। जे करि पंच बीर नर होइ ॥ ३४ ॥
संग सिद्धूअनि अरते[6] रहो। भै करि भाजनि कबहि न चहो'।
इस प्रकार बखशे नर सोइ। माननि लगे आनि सभि कोइ ॥ ३५ ॥
देहिं उपाइन बिनै सुनावहि। केतिक मन बांछति फल पावहिं।
धन अरु धानु आइ अधिकाइ। हित उपकार गुरू सो लांइ ॥ ३६ ॥
चलहि देग भोजन हुइ घनो। निस दिन महि इक रस त्रिप मनो।
छुधित नगन कोऊ चलि आइ। भोजन बसत्र देति समुदाए ॥ ३७ ॥
श्री गुरदेव तबै चलि आए। ग्राम नाम 'धनधान' बताए।
तहां जाइ डेरा निज घाले। स्यंदन अरु डोरा नाले ॥ ३८ ॥
सगरे तहिं उतरे जबि आई। ग्राम बिखै सभिहिनि सुधि पाई।
सुन्यों हुतो जसु प्रथम बिसाला। ले करि जाट दुगध तिस काला ॥ ३९ ॥
बास न भरि करि लै तबि आयो। गुर आगै धरि सीस निवायो।
समुख बैठि दरशन को देखा। बीच सभा के गुर जगतेशा ॥ ४० ॥

1. गँवार 2. घड़ा 3. अपने कुल का नाश करने वाले 4. सुलगना 5. कुल का नाम 6. लड़ते

कह्यो देखि करि दुगध जु आना। 'इह जानो है श्रोण समाना।
नहीं पान[1] के उचित हमारे। ले गमनो निज सदन मझारें'।। ४१ ।।
सुनि राहक बोल्यो कर जोरि। 'इह तौ दुगध, कछू नहिं और।
क्यों तरकहु इस कीजहिं पाना। मैं आन्यों करि प्रेम महाना'।। ४२ ।।
श्री गुर कह्यो दुगध किस केरा ? दुहि आन्यो बासन महिं हेरा'।
राहक कह्यो 'महिख[2] घर मोहि। जिसको बतस[3] मर्यो, नहिं होहि ।। ४३ ।।
बैठनि देति नहीं सो तरे। मूड़ी दीनि गोडबो[4] करे।
तबि तिस ने तर दुगध उतारा। दुहि आन्यो मैं तबि ही सारा ।। ४४ ।।
कहौं आपके ढिग सभि साची'। तबि सतिगुर इम गिरा उबाची।
'बांगर[5] के नर अधिक कठोर। कोजे गोडैं देकरि जोर ।। ४५ ।।
बार बार समुझाई जु तरजहिं। सिख्या देइ बिकारनि बरजहिं।
तौ सिख होंइ किधौं हुइ नांही। अस बिधि बांगर देश कि मांही'।। ४६ ।।
दुगध हटाइ दीनि कहि ऐसे। डेरा टिक्यो गुरु कहु तैसे।
देग बिसाल नितप्रति होइ। आइ जाइ अचवहिं सभि कोइ ।। ४७ ।।
दूर दूर ते संगति आवहिं। अनिक अकोरनि कह, अरपावहिं।
ब्रिंद सिक्ख सेवा कहु करिहीं। अपनी श्रेय लेनि हित धरिही ।। ४८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'धनधान आगवन गुरु प्रसंग बरननं एकचतवारिंसती अंशु ।। ४१ ।।

---

1. पीना 2. भैंस 3. बच्चा 4. भैंस की भग में उसकी पूछ को देना।
5. एक इलाके का नाम

अंशु ४२

मेहे को प्रसंग

दोहरा

रहे ग्राम धमधान ढिग नित अखेर ब्रिति जाइं ।
करति निहाल अनेक को आवहिं नर समुदाइ ।। १ ।।

चौपई

मात नानकी साथ रहति है। श्री गुजरी निज नुखा[1] सहित है।
बहुत दिवस डेरा तहिं रह्यो। मंगल नित अनंद गुर लह्यो ।। २ ।।
नंदलाल सोहने को नंद। गुर ग्रिह सेवा लग्यो बिलंद।
मेहां नाम तिसी को अहै। सेवा अधिक सेवतो रहै ।। ३ ।।
तहिं जल हुतो दूर ते ल्यावनि। सिर धरि ढोवति चहि मन पावन[2]।
भगत भाउ मैं रंग्यो मन को। नहिं सुख ठानति है कबि तन को ।। ४ ।।
प्रेम बिखै सेवति सतिगुर को। लागी लगन इसी बिधि उर को।
किस के साथ न बोलै कबिहूं। जितो खरच जल आनहिं सबिहूं ।। ५ ।।
वाहिगुरु सिमरन उर करता। भाग जगे शरधा गुर धरता।
खान पान किछु सहिजे मिले। खाइ अलप सेवै गुर भले ।। ६ ।।
भोजन केर स्वाद नहिं धरै। मिलै जथा सो खैबो करै।
गागर को सिर पर धरि ल्यावै। दे करि तिस को, और लिजावै ।। ७ ।।
जल की तोट न होने पावै। निस महिं तम हुइ तौ भरि ल्यावै।
इक सेवा महिं भा अभिलाखी। अपर नहीं किस बिधि को काखी ।। ८ ।।
गागर ते छिल गा सिर मास। दिन प्रति वधति भयो चहुंपास।
धरहि भाव, सिर घाव बिसाला। मखका[3] काटति हैं सभि काला ।। ९ ।।
नहीं घाव की मीर बिचारै। तिसी रीति गागर सिर धारै।
जल की तोट टोनि नहिं देई। सभि डेरे इशनान करेए ।। १० ।।

1. पुत्न बधु 2. पवित्न 3. मक्खियां

बहुत नरनि को लंगर होवै। तिस हित बहुत आनि जल ढोवै।
सरब प्रकार याहीयहि पानी। बिन आलस जल सेवा ठानी ॥ ११ ॥

कितिक दिवस बीते इस भांति। परे किरम तहिं कटि कटि खाति।
किस के संग न कबिहूं कहै। तूशनि करे कशट को सहै ॥ १२ ॥

जल ढोवति सिर चांदी[1] परी। नहिं सरीर की सुधि किम करी।
इक सेवा के ततपर होयो। पूरब के सम ही जल ढोयो ॥ १३ ॥

कटि कटि किम खाति हैं मास। ऊपर भार धरति है रास।
ईनू[2] गागर तरे टिकावती। सु चुभि चुभि करि घाव बधावति ॥ १४ ॥

बध्यो रहै ईनू सिर नीत। कबि खोलहि द्रिढ़ बंधन हीत[3]।
इक दिन सिर ते जबहि उतार्यो। खोलि रज़ू ते कर महिं धार्यो ॥ १५ ॥

तिस के संग किरम कुछ आए। दिखति गिरे अवनी पर जाए।
मेहे कीनसि रिदै बिचार। गिरे इहां मरि हैं बिन बार[4] ॥ १६ ॥

मास कहां ते भखहि एही। मरहिं तरत पैर जु धरि देहि।
इनके जीवन केरि उपाइ। मम सिर बिना न जाने जाइ ॥ १७ ॥

दया धारि सो लिये उठाइ। जहिं ते गिरे दए तहिं पाइ।
इस थल पालनि हुइ इन केरा। भक्खयनि करहिं मास सिर मेरा ॥ १८ ॥

मात नानकी ने तिस देखा। रिदे उपाई दया विशेखा।
कहनि लगी 'सुनि मेरे भाई। अधिक प्रेम ते सेव कमाई ॥ १९ ॥

श्री गुर के ग्रिह घाली काल[5]। हुइ कै कशट बिहीन निहाल।
सिर पर कीरे परे न जाने। तिसी रीति गुर सेवा ठाने' ॥ २० ॥

मेहे सुनि करि कीनसि बिनती। 'निज सरीर की मोहि न गिनती।
मेरी सेवा जे परवान[6]। इन किरमनि को हुइ कल्यान ॥ २१ ॥

इन को संकट होइ न जैसे। करनि उपाइ मात जी! तैसे'।
'सतिगुर होइ दयाल सुनि भाई। देहिं सकल बिधि क़ी वडिआई' ॥ २२ ॥

इम सुनि लग्यो सेव को जाइ। जल की गागर भरि भरि ल्याइ।
जबि श्री तेग बहादुर चंद। बैठे मात निकट सुखकंद ॥ २३ ॥

इतते महिं मेहां तहिं आयहु। जल गागर को सीस उठायहु।
देखि नानकी मात बखाना। 'हे सुत! इसकी सेव महाना ॥ २४ ॥

हेरि काल[7] मैं अचरज होई। कर्यो घाव ईनू सिर जोई।
मुझ देखति सो जबहि उतारा। परे किरम सिर घाव मझारा ॥ २५ ॥

कुछक तबहि अवनि पर गिरे। इन उचाइ[8] सो सिर पर धरे।
अबि इसने बहु घाली घाल। रह्यो आप के संग बिसाल ॥ २६ ॥

---

1. सिर पर निशान पड़ गया 2. इंडी 3. बांधने के लिए 4. देरी 5. परिश्रम किया 6. स्वीकार 7. कल 8. उठाकर

कबहूं किस को नहीं जनाई। तूशनि धारे सेव कमाई।
खान पान को स्वाद न लीना। निस दिन प्रेम सेव को भीना ॥ २७ ॥
अबि क्रिपाल ह्वै करहु निहाल। जो बांछति सो देहु बिसाल'।
मात नानकी ते सुनि बैन। करुना भरे रसीले नैन ॥ २८ ॥
अविलोकति सो लीनि बुलाइ। जानी सेव महां सफलाइ।
पूरब जुग महिं ज्यों तप घालहिं। अनिक भांति सहिं कशट बिसालहिं ॥ २९ ॥
हिम रुत महिं बड जल तहिं पैठहिं। ग्रीखम पंचागनि बिच बैठहिं।
फल को खाइ सथंडल[1] जाई। पद ऊरध[2] करि निज लटकाई ॥ ३० ॥
पुन अहारी ब्रत को साधहिं। बन महिं बसहिं इकंत अराधहिं।
पदमासन करि जोग करंते। केतिक गिनीअहि तप जु तपंते ॥ ३१ ॥
तपीअनि के तप देखि बिसाला। ब्रह्मादिक सुर होहिं क्रिपाला।
आनि देति मन बांछति तांही। अपर सरब सुख, कैवल[3] नांही ॥ ३२ ॥
सो तप दुशतर है कलि काल। होति नहीं, हठ करे बिसाल।
कसट सहिन की शकति न रही। त्रितक होइ जि खावहिं नहीं ॥ ३३ ॥
किम कानन महिं होवहि बासा। बिन कानन क्यों ह्वै तप रासा।
यांते सतिगुर रीति चलाई। सति संगति सेवनि अधिकाई ॥ ३४ ॥
दिढ ह्वै करि जो घालहि घाल। सुख द्वै लोक लहै सु निहाल।
जगत परादथ की क्या बात। मुकति होइ, बंधन मिट जाति ॥ ३५ ॥
ऐसी वसतु नहीं जग कोई। गुर संगति ते लहति न जोई।
तप करिबे ते सेव सुखारी। चिरंकाल लौ तापहि भारी ॥ ३६ ॥
सेवनि अलप दिनन को जानि। फल प्रापति ह्वै महद महान।
तपहि बरख, इक दिन की सेवा। तऊ न सम, सुकचौं कहि एवा[4] ॥ ३७ ॥
मेहे की सेवा को देखि। गुरू प्रसंन भए सु विशेख।
निकटि बिठाइ कह्यो भगवंता। 'अबि संतन को बनहु महंता ॥ ३८ ॥
कुछक कामना चहिं वडिआई। यांते लेहु महंती पाई।
सिर के किरम बनहिं सिख तेरे। तू इन चाहति श्रेय घनेरे ॥ ३९ ॥
सेवा को फल लेहु महान। उपजहि उर मैं ब्रह्म गिआन'।
इम कहि दया द्रिशटि को देखा। ततछिन रिदै प्रकाश विशेखा ॥ ४० ॥
भा पपीलका[5] ते बड शेर। रज कनका ते बनि गा मेरु[6]।
हाथ जोरि पुनि बंदन कीनसि। महां अमित गुर महिमा चीनसि ॥ ४१ ॥

---

1. चबूतरा 2. उलटा करके 3. मुक्ति 4. इस प्रकार 5. चींटी 6. मिट्टी के कण से पर्वत बन गया

दखनी बैल हुतो गुर डेरे। सुंदर तन परमान बडेरे।
मेहे को सो बखशिश कीनि। दीरघ एक दमामो दीनि ॥ ४२ ॥
इक झंडा भगवो[1] बनिवायो। मेहां भा महंत हरखायो।
हते कशट ले दान महाना। सतिगुर पारब्रह्म करि जाना ॥ ४३ ॥
बिचरति भयो महां मति धीर। प्रथम कर्यो चेला लखमीर।
गुरु पादका[2] करी पुजावनि। गुर महिमा बड कीनि जनावनि ॥ ४४ ॥
इस प्रकार करि कै गुर सेवा। भा महंत मेहां, सुख लेवा।
दोनहुं लोकनि की वडिआई। गुर सेवा ते ततछिन पाई ॥ ४५ ॥
इम तिस ग्राम बास को करते। अनिक प्रकारनि बिचरनि चरिते।
करहिं अखेर आइं निस डेरे। संगत दरसहिं पहुंचि घनेरे ॥ ४६ ॥
दरब बिसाल संगतां आनैं। सतिगुर देग[3] कराइं महानै।
तऊ दरब इकठो बहु होइ। जबि सतिगुर अविलोकति सोइ ॥ ४७ ॥
परउपकार हेतु सो देति। कूप कहूं कित बाग लगेति।
नहिं समीप राखहिं गोसाईं। ज्यों आवति त्यों देति चलाई ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मेहे को' प्रसंग बरननं नाम दोइ चत्तवारिसती अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. गेरूआ 2. खड़ाव 3. कड़ाह प्रसाद

अंशु ४३

गुर बिचरनि प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर धमधान महिं बासर बसे बिसाल।
लंमे देशनि संगतां देश अपर जे जाल ॥ १ ॥

चौपई

खोजति सुनति चलति गन आवैं। श्रम ते पहुंचि दरस को पावैं।
ज्यों ज्यों आइं दूर ते दास। चित महिं करते प्रेम प्रकाश ॥ २ ॥
त्यों त्यों बड फल के अधिकारी। होइं सिख्य हंकार निवारी।
मनो कामना प्रापति होइ। सुजसु बखानति आवति सोइ ॥ ३ ॥
घनो दरब गुर के ढिग होवा। अरपि संगतां दरशन जोवा।
कर्रात रह्यो इक राहक सेवा। बैठहिं आइ निकटि गुर देवा ॥ ४ ॥
केतिक दिन बिताइ सो गए। त्यारी कर्रात कूच की भए।
तबि सो राहक पास हकारा। हुतो जु दरब दयो तिस सारा ॥ ५ ॥
हुकम कर्यो 'बड कूप खनावहु। धन गन लाइ नीक बनिवावहु।
इस थल धरम साल चिनवावहु। को सिख साध बहुर बैठावहु ॥ ६ ॥
ब्रिद महीरुह सफल[1] मंगावहु। धन को खरचहु बाग़ लगावहु।
शरधा सहित काज इह करो। रिदे आपने लोभ न धरो ॥ ७ ॥
अपर सथल जे चहहिं लगायहु। कुछ नहिं बनहि बाद[2] सभि जायहु।
इम अनगन धन तिस को दीनि। कूप बाग़ की आइसु कीनि ॥ ८ ॥
मनो कामना संगति लीनि। निज निज सदन पयानो कीनि।
कर्यो कूच पुन सतिगुर डेरा। चलयो चहित चित पंथ बडेरा ॥ ९ ॥
पाछे तिस राहक की गाथ। अहै तनक सुनीयहि हित साथ।
धन को देखि लोभ हुइ आयो। नहिं चाहति कुछ काज बनायो ॥ १० ॥

1. फलदार वृक्ष 2. व्यर्थ

तऊ गुरनि ते धारे त्रास। होइ न मम बंस बिनाशि।
लोभ तरंगनि अधिक बिचारति। राख न सकहि न कूप उसारति ॥ ११ ॥
कितिक द्योस महिं अस ठहिराई। खेत हमारे जहिं समुदाई।
तहां कूप को देहिं लगाइ। गुरू बाक निशफल नहिं जाइ ॥ १२ ॥
लगहि कूप हुइ काज हमारा। कितिक महीरुहि लाइं उदारा।
मोहि काज कै मम सुत पोते। काशट आइ काजु ढिग होते ॥ १३ ॥
इम चित्त महिं धरि जाइ खनायो। कारीगरनि पास चिनवायो।
रह्यो उतारि न उतर्यो तरे। जतन अनेक बिधिनि को करे ॥ १४ ॥
अपर कहां लगि कहौं बनाइ। अबि लौ खरो बहिर तिस थाइ।
जो धमधान सिंघ गन रह्यो। सभि देखति हम सों मिलि रह्यो ॥ १५ ॥
'हैं अबि तीक् खरो छित बाहर'। इम गुरु बचन अनिक जग जाहर।
नहिं आइसु राहक गुर मानी। जिस समाज सभि कीनसि हानी ॥ १६ ॥
तजि धमधान पंथ गुर परे। पहुंचे एक ग्राम, भे खरे।
सलिता सारसुती तहिं बहै। हद कुरछेत्र की सो अहै ॥ १७ ॥
तीरथ की चहुंदिशि मांहि। चारहुं जच्छ रच्छकहिं[1] तांहि।
सो पशचम दिशि को थित जानहु। 'बहिर जच्छ' तिस नाम पछानहुं ॥ १८ ॥
सारसुती के तट पर सोई। बूझयो तबहि 'इहां सिख कोई' ?
है कि नहीं घर जो गुर मानहिं। जो मत अपने महिं सवधानहिं ॥ १९ ॥
सुन्यो जांहि नर, तांहि बतावा। 'सिख तिखान[2] इक इहां बसावा।
आगै कर्यो कहै जिन ऐसा। पहुंचे तिस घर देख्यो बैसा ॥ २० ॥
कह्यो तांहि सों 'सतिगुर आए। उठि बंदन करि लिहु फल पाए'।
सुनि तिखान त्यागी निज कारा। समुख खरो हुइ दरस निहारा ॥ २१ ॥
दीरघ मुख मंडल को देखि। धर्यो चरन सिर प्रेम विशेख।
पान जोरि पुन बैन बखाना। 'प्रभु जी ! तुमरे सरब सथाना ॥ २२ ॥
उतरहु आप, क्रिपा बहु धरो। निज सिख जानि सफल मुहि करो'।
सुनि सतिगुर लखि प्रेम बिसाला। उतरे हित निहाल ततकाला ॥ २३ ॥
स्यंदन खरो कीरि दर पास। अंतर प्रविशे प्रभू अवास।
सरब समाज दास चलि आए। सिवर कर्यो श्रम को बिनसाए ॥ २४ ॥
चावर चून आदि को ल्याइ। देग करी सभि तबि त्रिपताइ।
सुपति जथा सुख राति बिताई। जाम जामनी जागि गुसाईं ॥ २५ ॥

1. रक्षा करते हैं 2. खाती, बढ़ई

दास उठाइ सौच को ठानि। गमने तीरथ करनि शनान।
सारसुती सलिता बहु पावन। निरमल नीर लगे तबि न्हावन ॥ २६ ॥

करि मज्जन कौ पौछि सरीर। पहिरति भए सकल बर चीर।
बैठि ध्यान को ठानि महाना। निशचल ब्रिति सरूप मन माना ॥ २७ ॥
सूरज उदै भयो असमान। दिज गन आइ असीस बखानि[1]।
सभिहिनि को धन दीनसि दान। के करि उर हरखे सुख मानि ॥ २८ ॥
कीरति करति निकेत सिधाए। 'तिम देखे जिम हम सुनि पाए'।
जथा शकति तबि सिक्ख तिखान। अरपन कीनि उपाइन जानि ॥ २९ ॥
जानि दीनि शरधा लखि उर की। खुशी बिसाल भई सतिगुर की।
भयो निहाल अनंद को पावा। गुर पग पंकज सीस लगावा ॥ ३० ॥
इम श्री तेग बहादुर धीर। रहे तीन दिन तीरथ तीर।
पुन त्यारी करि चहिति पयाने। तिस तिखान सों बैन बखाने ॥ ३१ ॥
'कैंथल पुरि को हम ने जाना। को सिख है कि नहीं तिस थाना।
तहां जाइ करि डेरा पावैं। सुख सों बसि करि दिवस बितावैं' ॥ ३२ ॥
सिख कर जोरि बतावनि कीनि। कैंथल महिं सिख के घर तीन।
इक तिखान है हमरी जाति। दुइ घर बनकनि[2] के बख्यात ॥ ३३ ॥
सुनि गुर भाख्यो 'संग हमारे। चलहु तहां लगि देहु दिखारे।
पुन हटि आइ बसहु सुख साथ'। इम कहि कीनि प्यानो नाथ ॥ ३४ ॥
अशट कोस को मारग 'कैंथल'। ल्यायो सिक्ख तिखान तिसै थल।
प्रथम वहिर उतरे सर तीर। खरी महीरहु की जहिं भीर ॥ ३५ ॥
बूझे गुरु 'कौन घर चलो ?'। बनक जुगल इक खाती भलो'।
कर्यो हुकम 'जिसको हुइ नेरा। तिसके करहु जाइ अबि डेरा ॥ ३६ ॥
तबि तिखान को घर ढिग जाना। लए समाज गए तिस थाना।
कह्यो 'गुरु आयहु चलि आप। जिन दरशन ते बिनसति पाप ॥ ३७ ॥
सुनिकै अनंद धारि सिख गयो। वहिर जाइ गुरु देखति भयो।
करि बंदन को कर ले आयो। सादर डेरा कहि करिवायो ॥ ३८ ॥
जथा शकति सिख सेवा करी। गुर प्रसंन हुइ अपदा हरी।
दोनहुं सिक्खनि के घर जोइ। सहित कुटंब आइ करि सोइ ॥ ३९ ॥
अरपि उपाइन बंदन ठानी। मनो कामना पुरवि महानी।
'धंन धंन' कहि सदन सिधारे। 'गुर दरसे बडभाग हमारें ॥ ४० ॥

1. आशीर्वाद देने के लिए बहुत से ब्राह्मण आए 2. बनियों के

कितिक दिवस बसि करि तिसपुरी । बहुर चलाने की मनसाकरी ।
जिस तिखान घर महिं तबि बासे । अबि गुरद्वारो तहां प्रकाशे ।। ४१ ।।

शबद कीरतन होति हमेश । रहैं सिंह पूजै सु विशेश ।
तिस कैंथलपुरि महिं कवि बसै । गुरजसु करति रह्यो अघ नसै ।। ४२ ।।

मिलहिं भाउ धरि शरधा साथ । करहिं निहाल क्रिपा धरि नाथ ।
कवि संतोख सिंह इस हेतु । बिचरति महि तलमहिं सुख देति ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'गुर बिचरनि प्रसंग' बरननं नाम तीन चत्वारिंसती अंशु ।। ४३ ।।

अंशु ४४

बारने ग्राम

दोहरा

क्यों निहाल तिखान को घर बसि दरशन दीनि ।
पुन इच्छा उर ठानि कै चलिबे त्यारी कीनि ।। १ ।।

चौपई

श्री गुजरी डोरे असवारी । जिस छादनि[1] मखमल जरकारी[2] ।
इक सुंदर स्यंदन संग भले । मात नानकी जिस चढ़ि चले ।। २ ।।
ब्रिखभ बिलंद बली तन पीन[3] । जिनकी ककुद[4] तुंग दुति कीनि ।
तिन पर बसत्र लाल ही डाले । चलनि बेग बहु, स्त्रिग बिसाले ।। ३ ।।
ब्रिद बिभूखन को पहिराए । जबहि चलति बड शबद उठाए ।
अग्र चलहि रथ पंथ मझार । पुन डोला लै बली कहार ।। ४ ।।
बहुर बहीर संग जे दास । को चाकर को प्रेम प्रकाश ।
चले जाहिं गुर कीरति करिते । देश बिदेश विशेश निहरिते ।। ५ ।।
श्री गुर तेग बहादर तरे[5] । बली तुरंग बीच गुन खरे ।
चंद्रिक चंद मनिंद बिलंद । सेत बरन, सुदर दुतिवंद ।। ६ ।।
बिन मरजी नहिं करे चालाकी । चाल अडोल अमोलक तां की[6] ।
मोर मनिंदु मोरि करि ग्रीवा[7] । चलहि कि खरे पुशट[8] तन थीवा ।। ७ ।।
गुरू सधीरज मारग तोरहिं । करति कुंडली पाइनि मोरहिं ।
तजि कैंथल आगै गुर चाले । लोक आपने लीनसि नाले ।। ८ ।।
कोस पंच दस मंजल गए । उतरनि को गुर चाहति भए ।
नाम 'बारना' ग्राम बिलोका । तिस के निकट जाइ ह्रय रोका ।। ९ ।।

---

1. ऊपर ओढ़ने का कपड़ा 2. जरी की कढ़ाई वाला 3. मोटा । 4. ऊंचाई
5. श्री गुरु तेग बहादुर के नीचे बलवान घोड़ा था, अर्थात् आप घोड़े पर सवार थे
6. उसकी चाल अमोलक थी 7. गरदन 8. मोटा

इक नर निकसि निकटि गुर आयो। दरशन देखति सीस निवायो।
खरो भयो बूझयो तनि तांही। 'सिख को सदन अहै कि नांही'॥ १०॥
सुनति बतायो 'राहक अहै। सगरे ग्राम एक सिख रहै।
कुछक भलो शरधालू थोरा। बसहि इकाकी; सिख्य न औरा॥ ११॥
तबि श्री तेग बहादर भाखा। तिसहि हकारनि की हम कांखा।
करनो डेरा तिस के धाम। यांते करहु बुलावनि काम॥ १२॥
सुनि गुर आग्या को नर गयो। मिल्यो जाट सों भाखति भयो।
'बहिर हकारति हैं नर भले। तोहि प्रतीखनि करते खले[1]'॥ १३॥
काछू[2] तबहि तहां चलि आयो। कछ को करति फिरहि तिस थायो।
सुनति जाट नै रिदै बिचारी। मैं अबि जानो खेत मझारी॥ १४॥
तऊ देखि मिलि करि पुन आवौं। कूत[3] मिलनि कारन उतलावौं।
इम बिचार करि तूरन आयो। बैठे गुर के दरशन पायो॥ १५॥
जानि पछाने वंदन कीनि। डेरा करिबे आशै चीन।
हाथ जोरि करि बाक उचारे। 'चलीअहि सतिगुर सदन हमारे॥ १६॥
सिवर करहु नीके सुख पावहु। शीघ्र चलहु नाहन बिलमावहु।
आयो कूत करनि कछ इहां। मैं जावौं निज खेती जहां॥ १७॥
सुनि श्री तेग बहादुर भाखा। 'तहिं पहुंचनि की करहु न कांखा।
तोहि खेत रख्यक करतार। बचहि अंन घर आनि सुधारि॥ १८॥
अबि तू सिवर करइ हमारो। रहु सेवा महिं समों न टारहु।
पावहिं बरकत गुरू घनेरी। जे करि रहै बुद्धि थिर तेरी॥ १९॥
सुनि राहक कर जोरि बखाना। 'आप करहु बिसराम सथाना।
क्रिखी किदारनि बिखै घनेरी। खशट मास की मिहनत मेरी॥ २०॥
जे करि मैं न जाउं इस काला। कूत धरहि कण अंन बिसाला[4]।
बिनती करि हौं अग्र बडेरी। लेउं छुटाइ अंन इस बेरी॥ २१॥
खसट मास भौ खाइ कुटंब। जीवहिं सभि हम तिसै अलंब।
एक जाम को काम अहै सो। किम न जाउं घर अंन रहै सो'॥ २२॥
सुनि सतिगुर तिस जान्यों मूढा। नहिं समुझति मन आशै गूढा।
तऊ क्रिपा कर पुनहिं बखाना। 'जे न हटहि निशचै तहिं जाना॥ २३॥
तीर किदार खरे हुइ रहीअहि। बिनै आदि कुछ बाक न कहीअहि।
होवहिं सतिगुर तोहि सहाइ। सुणि कण खेत आउ सहिसाइ'॥ २४॥

1. खड़े हैं 2. पटवारी 3. पटवारी अथवा गिरदावर 4. गिरदावर अनाज का अन्दाजा बहुत लगा देगा

मान्यो बैन पयानो कीना। जहां कूत को बिचरति चीना।
सिख किदार ढिग पहुच्यो आइ। छित को मिनति सु इत उत जाइ ॥ २५ ॥
दो सौ बीघै खेत बिसाला। सो ज़ान्यो मिनकरि तिस काला।
लिखनि लगे तबि जाट शरीका। बोल्यो 'इहन मिनी छित ठीका ॥ २६ ॥
हुतो खेत दो सैइह सदा। करति रहे कण को जद कदा।
अबि किम कमी उतारनि कर्यो। इस छित को नित हाला[1] भर्यो' ॥ २७ ॥
मिननहार को काछू कह्यों। 'इह क्या कर्यो दरब तैं लह्यो।
अरध मामला दयो बिगार। भरि लै हैं तुझ को बहु मारि' ॥ २८ ॥
सुनि कै कह्यो रिदै डर कीनि। मैं अवनी आछै मिन लीनि।
करहु बिलोकनि पुन मैं मिनौं। चौकस होइ भली बिधि गिनौं' ॥ २९ ॥
बहुर जेवरी[2] लागे पावनि। अपर कर्यो नर एक मिलावनि।
सने सने नीके पुन मिनी। ऊचे कहि कहि गिनती गिनी ॥ ३० ॥
सो सिख खरो लोक समुदाए। सौ उतरी पुन सुनि बिसमाए।
कहां भयो इह जाइ न जानी। मिननहार को खोट पछानी ॥ ३१ ॥
बरख अनेक मिनति इस रहे। दो सै होति कमी नहिं लहे।
सिख भी खयौ रिदै बिसमान्यों। तूशनि ठाने कछु न बखान्यों ॥ ३२ ॥
भयो नरनि महिं दीरघ झगरो। मिन गिन ठानति निरनै सगरो।
बध्यो संदेह सभिनि के रिदे। मिनन लग्यो काछू पुन तदे ॥ ३३ ॥
जाट शरीक संग गन होए। गिनहिं जेवरी को सभि कोए।
अति चौकस हुइ खेत मझारा। नीके मिनति भए तबि सारा ॥ ३४ ॥
दो सै कहति सु झूठे परे। सै बीघे को कण तबि भरे।
रिदै बिसूरति बहु नर आए। गुर प्रताप लखि सिख मुद पाए ॥ ३५ ॥
आइ आपने सदन प्रवेशा। करि त्यारी सभि रीति विशेशा।
जाइ गुर पग बंदन ठानी। पुनहिं बारता सकल बखानी ॥ ३६ ॥
सुनि तिस को सतिगुरू बखानति। 'जे करि प्रथम बचन को मानति।
सरब खेत को लेति अनाज। सुधरति जे निकेत के काज ॥ ३७ ॥
दुती बाक शरधा करि मान्यो। अरध काज भा आयो हान्यो।
सुनि महिमा गुर की बहु जानी। बारि बारि पद बंदन ठानी ॥ ३८ ॥
ले करि संग चल्यो निज धामू। करे उतारनि दे बिसरामू।
भिच्छ अंबली[3] को घरि माहि। गुर तुरंग बंध्यो संग तांहि ॥ ३९ ॥

---

1. [illegible] का लगान 2. [illegible] 3. इमली

स्यंदन आदिक सादर सारे। दे दे करि बिसराम उतारे।
जथा शकति सभि सेवा ठानी। ल्याइ वहिर ते निरमल पानी ॥ ४० ॥
खान पान नीके करिवायो। सुपति जथा सुख समै बितायो।
निस बिसराम उठे लखि जाम। संगी सिमरति भे सतिनामु ॥ ४१ ॥
सौच शनान ध्यान को लाइ। उदै भयो जबहूं दिन राइ।
तबहि सिक्ख निज निकटि हकारा। श्रेय हेतु उपदेश उचारा ॥ ४२ ॥
'गंदाधूम[1] बंस ते त्यागहु। अति गिलान इस ते धरि भागहु।
सिख संतनि सेवा महि लागहु। अबहु वंड[2] करि क्रिति अनुरागो ॥ ४३ ॥
दुह लोकनि महिं गुरू सहाइ। दुख ते देकरि हाथ बचाइं।
जावद तव कुल गंदा धूम। त्यागहि, क्रिखी करहिं निज भूम ॥ ४४ ॥
वधहि अधिक तुमरे धन धान। धाम विखै गो महिख महान।
किसू वसतु की कमी न होइ। सभि सुख पाइ बंस महिं जोइ ॥ ४५ ॥
गंदा धूम करहि जबि पान। तव कुल रंक होहि धन हान'।
सुनि सतिगुर जे पाइनि पर्यो। गुर उपदेश धर्यो उर कर्यो ॥ ४६ ॥
कहि कवि सिंह बंस तिस केरा। ग्राम बारने महिं अबि हेरा।
जबि लौ गंदा धूम न पीयो। तबि लौ घर महिं सभि किछु थीयो ॥ ४७ ॥
जो अबि अहै, कर्यो तिन पान। भयो रंक धन धान सु हानि।
हम भी मिलि तिस को त्रास। खान हेतु अंन नहिं जिस पास ॥ ४८ ॥
गंधाधूम पियनि तजिवायो। खंडे को अंम्रित पीलायो।
पुन किछ जान्यो गयो न सोइ। रंक रह्यो कैधों धन होइ[3] ॥ ४९ ॥
इम सतिगुर के अबिलौ बैन। बिदति अहै जग दिखी अति नैन।
दिन द्वै तीन कर्यो गुर डेरा। करि सिख्ख कौ कल्यान बडेरा ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'बारने ग्राम प्रसंग' बरननं नाम चतुर चत्वारिंसती अंशु ॥ ४४ ॥

---

1. तम्बाकू 2. बाँट कर खाओ 3. फिर पता नहीं वे गरीब ही रहे अथवा अमीर बन गए

अंशु ४५

श्री गुरु पंथ गमन प्रसंग

दोहरा

ग्राम बारने ते गुरु कीनो अग्र पयान।
सेत सजति पोशिश महां सेत तुरंग सुजान ॥ १ ॥

चौपई

गर शमशेर दुतिय दिशि भाथा। अधिक कठोर सरासन* हाथा।
सभि समाज युति पंथ पधारे। नगर 'थनेसर' आइ अगारे ॥ २ ॥
खशट कोस थो मग उलंघाए। देख्यो तीरथ जहिं समुदाए।
सूरज ग्रहण जानि करि मेला। चहुंदिशि ते नर भयो सकेला ॥ ३ ॥
भीर नरनि की घनी सु आवति। जहिं कहिं नर डेरा निज पावति।
पहुंचे सतिगुरु पिखहिं सु थान। हित उतरनि के करनि शनान ॥ ४ ॥
पुरि ते उत्तर की दिशि गए। रम्य सथान बिलोकति भए।
सुंदर सारसुती बर सीलता। पावन जल कबि कबि शुभ चलता ॥ ५ ॥
तिंह सथान तीरथ अभिराम। बिदत जगत महिं लखीयति नाम।
तिस के तीर उतरि थल टोरा। धन पर खरे भए तजि घोरा ॥ ६ ॥
तीर तीर तीरथ गन जाने। श्री गुरुदेव हेरि हरखाने।
सभि नर आए सिवर लगायो। त्रिण अंनादिक तबहिं मंगायो ॥ ७ ॥
निसा बास को सतिगुर करिकै। रही जाम जाग्रत को धरि कै।
सौच शनान कीनि पुन ध्यानू। बैठे रहे उद्‌यो पुन भानू ॥ ८ ॥
सुधि मेले महिं जहिं कहिं होई। देखनि कारन चहि चित सोई।
आइ बिलोकति पावन दरशन। सीस निवाइ करहिं पग परसन ॥ ९ ॥
कहैं 'भए द्वै काज भलेरे। भज्जन करनि अपर गुरु हेरे।
ज्यों ज्यों सुनहिं सिख्य बिच मेले। त्यों त्यों आवति ब्रिंद सकेले ॥ १० ॥
बंदन करहिं चहूं दिशि खरे। बैठे ब्रिंद सभा को भरे।
जिस दिशि प्रेरति द्रिशटि गुसाईं। अनिक नरनि पर सहिज सुभाई ॥ ११ ॥

---

*धुनुष

तिस दिशि नंम्रि सीस गन होवैं। भरे प्रेम ठांढे सभि जोवैं।
गुर को फैल्यो सुजसु विशेखा। सुनि किन रूप प्रथम ही देखा ॥ १२ ॥
बूझहिं मनहिं परसपर केई। 'श्री नानक गादी पर एई[1]।
सकल कला समरथ गुरदेव। रीझहिं हेरि प्रेम की सेव ॥ १३ ॥
करहिं निहाल शकति के दानी। दुहूं लोक महि संकट हानी'।
इत्यादिक महिमा कहु कहें। इक आवति इक जावति लहे ॥ १४ ॥
इस बिधि दे दरशन गुरु धीर। भरी रहै सभि बासुर भीर।
केतिक संत सकल मत केरे। मिलहिं बिठावहिं तिन कउ नेरे ॥ १५ ॥
शुभ संबाद शांतकी करैं। जिस ते श्री प्रभु करुना ढरैं।
सुनि सुनि 'धंन धंन' कहि जाति। करैं सराहनि की बहुत बात ॥ १६ ॥
केतिक साध नंम्रिता धरैं। श्री गुर साथ बूझिबो करैं।
'प्रभु जी ! इह मेला करि आछे। बहुर गमन को कित दिशि बांछे ? ॥ १७ ॥
मद्र देश को करहु पयाना ? कैधों आन थान को जाना' ?
सुनि श्री तेग बहादर भाखा। तीरथ करिबे की अभिलाखा ॥ १८ ॥
पूरब दिशा पुंज थल पावन। करहिं अनेकनि महि बर न्हावन।
ब्रह्मपुत्र लौ तीरथ घने। सने सने करिहहिं सुख सने ॥ १९ ॥
जमना, सुरसरि पुन परयाग। आदि गया जिन ते अघ भाग'।
इम सतिगुर ते सुनि हरखाए। कहैं 'साथ हम उत्तम पाए ॥ २० ॥
नित रावर को रदशन दरसैं। पावन तीरथ ब्रिंदनि परसैं।
देश अनेकनि की करि सैल। रहैं सुखाले तुमरे गैल' ॥ २१ ॥
तीरथ जात्रा को गुरु जाहिं। बिदत भई सभि साधनि मांहि।
मुदित होइ करि रिदे घनेरे। आनि मिले सतिगुर के डेरे ॥ २२ ॥
इक दुइ दिन बीते इस भाइ। समा ग्रहण को पहुंच्यो आइ।
पावन जल मज्जे[2] तिस बेरे। दयो दिजनि[3] को दान घनेरे ॥ २३ ॥
जो जो दिज गुर ढिग जबि आयो। पाइ दान दारिद्र गवायो।
आशिख देति मुदित मन होइ। कहति रहे कीरति बर सोइ ॥ २४ ॥
रवि निरमल ते बहुर शनाने। हुतो जु पास दीनि सभि दाने।
पुन डेरे महिं आनि गुसाईं। खान पान शुभ कीनि बनाई ॥ २५ ॥
निसा बास करि प्राति बहोरी। गन तीरथ मज्जे सभि ठौंरी।
इक दुइ दिन बसि बहुर बिताए। पुन सतिगुर त्यारी करिवाए ॥ २६ ॥

---

1. यही 2. स्नान किया 3. ब्राह्मणों को

केतिक सिक्ख मिले संग आइ। अधिक लाभ को उर लखि पाइ।
गुरु दरशन अरु तीरथ न्हान। इसते अपर न बड कल्यान ॥ २७ ॥
कितिक तुरंगनि पर चढि आए। इम नर भए आनि समुदाए।
चढे थनेसर ते गुरु पूरे। मन बांछति पहुंचनि को दूरे ॥ २८ ॥
कोस इकादश कीनि पयाना। 'बणी बदरपुर' एक सथाना।
तहां जाइ करि कीनसि डेरा। गुरद्वारा तहिं अबि हम हेरा ॥ २९ ॥
पहुंचे नर संगी समुदाइ। खान पान को कीनि बनाइ।
निस बिताइ पुन कर्यो मुकाम। सभि संगी सिमरति सतिनाम ॥ ३० ॥
संगति कितिक कितहुं ते आई। दरब उपाइन को बहु ल्याई।
कितिक मसंदन मुनि सुधि आए। दीरघ मजल करनि उतलाए ॥ ३१ ॥
आइ मिले दरशन को हेरा। अरप्यो ले करि दरब घनेरा।
जथा जोग श्री तेग बहादर। सिरेपाउ बखशे तिन सादर ॥ ३२ ॥
जो जिस देश हुते थिति आगे। तिह पुन पठे गुरु पग लागे।
गए संगतां ते धन लेते। कबहि कबहि श्री प्रभु को देते ॥ ३३ ॥
बदरा[1] भयो दरब को हेरा। करै जु राहक निकटि बसेरा।
तिनहुं बुलाइ दियो धन सारा। कह्यो 'कीजीअहि इह उपकारा ॥ ३४ ॥
इहां ब्रिच्छ अरु कूप लगावहु। सदाबरत छुधितनि[2] मुख पावहु।
करहु न लोभ खरच दिहु सारो। तुम सुख पावहु जनम सुधारो' ॥ ३५ ॥
तिनहुं जोरि कर बदरा धन को। लीनो प्रेम कर्यो बहु मन को।
बदरा लैबे ते तिस नाम। बणी बदरपुर भा अभिराम ॥ ३६ ॥
ब्रिच्छ संघेन अबि लौ खरे। गुरद्वारो तहिं चिनिबो करे।
इस प्रकार सतिगुरु दिन दोइ। कर्यो मुकाम दियो धन सोइ ॥ ३७ ॥
बहुर कूच करि श्री गुर पयाने। ब्रिंद भए नर संग सुजाने।
चले अनंदति रिदे मझारी। गुर आगे सभि होति पिछारी ॥ ३८ ॥
सने सने जिम सभि सुख पावैं। श्रमत होइं नहिं तथा सिधावैं।
तहिं ते मंजल करी लघु तैसे। जिस ते थकति न हुइं नर कैसे ॥ ३९ ॥
तहां बास करि निसा बिताई। सभि की सुधि को लेहिं गुसाई।
बांछति वसतु बूझि करि देति। बसत्र अंन आदिक सभि लेति ॥ ४० ॥
सुख के साथ साथ को राखे। थुर्यो न रहै लेहिं जो कांखे।
न्रिभै सभिनि ते बिघन न कोई। स्वामी समरथ के संग होई ॥ ४१ ॥
तहिं ते चढि सतिगुरू सिधारे। ग्राम 'सुढैल' सु जाइ निहारे।
तिस ते बहिर ब्रिच्छ शुभ खरे। सो थल हेरि उतरि सभि परे ॥ ४२ ॥

---

1. चमड़े का थैला 2. भूखों को भोजन कराओ

सेवक सिख्य मिले गन जबि के। नहीं ग्राम मांहि उतरे तबिके।
डेरा वहिर करहिं लखि ग्राम। छोटी मजल करहिं बिसराम ॥ ४३ ॥
बहुर मुकाम न कीनसि कोई। दिन प्रति चलिबे बांछा होई।
खान पान सभिहिनि तहिं करे। सुपति जथा सुख श्रम पर हरे ॥ ४४ ॥
भाई भोर पुन कीनि पयाना। त्याग्यो ग्राम सुढैल सथाना।
कोस दसक पर जमना सलिता। जिस जल सुंदर श्यामल चलता ॥ ४५ ॥
तिस के तीर उतरि गुरु खरे। सकल नरनि को मेलनि करे।
शसत्र सु वसत्र सरीर उतारि। कर्यो शनान सु पावन बारि ॥ ४६ ॥
बिप्र बिलोकति ग्रामनि केरे। जानि बिदेशी पहुंचे नेरे।
देखि तिनहुं गुरु दीनो दान। लेकरि मुदित असीस बखानि ॥ ४७ ॥
मिले ब्रिंद को गयो न खाली। करते कीरति गए बिसाली।
पुन कहि करि तरनी मंगवाई। सहित समाज चढ़े गोसाई ॥ ४८ ॥
तरनि तनूजा* को तर तीर। थिरे जाइ सतिगुरु गंभीर।
स्यंदनि डोरा नर समुदाए। जबि सभि पार उतर करि आए ॥ ४९ ॥
तहिं ते चढि आगे गुर गए। ग्राम समीप सिवर को कए।
निस बिसराम खान अरु पान। करति भए निज श्रम को हानि ॥ ५० ॥
दिन प्रति सतिगुरु इसी प्रकारा। गमने जाति सु पंथ मझारा।
दश, इकादश कै द्वादश कोस। डेरा करति जाति हति दोश ॥ ५१ ॥
पूरब को मुख करि गमंनते। दीरघ मग सुख संग चलते।
तीरथ मज्जन कीनि वहाना। चहैं करनि सिक्खनि कल्याना ॥ ५२ ।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुरु पंथ गमन प्रसंग' बरननं नाम पंच चत्वारिंसती अंशु ॥ ४५ ॥

*सूरज की पुत्री, यमुना

अंशु ४६

पूरब देश सिक्खयनि प्रेम प्रसंग

दोहरा

पूरब दिशि सिक्खी बहुत ब्रिंद सिखय शरधालु ।
पंथ दूर बनहि न मिलनि दरशन चाहिं बिसाल ।। १ ।।

चौपई

मिलहिं परसपर शबदनि गावैं । सिमरहिं सित्तनाम गुरु ध्यावैं ।
चरन कमल सों प्रेम लगावैं । कबि करुना करि आनि दिखावैं ।। २ ।।
पूरहिं कबहि आन कर आसा । जिम घन चात्रिक हरहि पिपासा ।
कबि सूरज सम उदहिं क्रिपाला । बिकसावहिं द्रिग कमल बिसाला ।। ३ ।।
कवि रांकापति[1] बदन दिखावैं । ब्रिंद चकोरनि सिख हरखावें ।
दास त्रिखातुर लखि समुदाइ । कबहुं सुधा सम बाक सुनाइं ।। ४ ।।
इही कामना अहै हमारी । सदन बिखै सतिगुरु निहारी ।
सरब भांति की सेवा करैं । जमन मरन के कलमल टरैं ।। ५ ।।
इम अभिलाखा ठानि बिसाला । करी प्रत्तग्या निज निज शाला ।
किनहूं रूचिर प्रयंक बनायो । बहुत दरब तिस पर लगवायो ।। ६ ।।
सूखम् सूत साथ बुनवाइव । आसतरन ले बिसद उसाइव[2] ।
रेशम की डोरैं गुंदवाइव । ज़रीदार गुंफे लरकाइव[3] ।। ७ ।।
अनिक रंग के चित्रति पावे[4] । करि त्यार इस सदन टिकावें ।
सिक्खनि गन महिं चरण अलावहिं । 'इस पर श्री गुर कौ पौढावहिं' ।। ८ ।।
पूजा करहिं नितप्रति ताहीं । धूप दीप चंदन चरचाहीं ।
धरहिं ध्यान जनु सतिगुरू बैसे । भ्रम[5] ते भानि लेति कबि ऐसे ।। ९ ।।
कितिक प्रेम करि बसत्र महीन[6] । बहु धन खर्च मोल को लीनि ।
गर जामे को बडो सिवावैं । ले बिसाल चादर करिवावैं ।। १० ।।

---

1. पूर्णिमा का चन्द्रमा 2. बहुत से बिछौने बिछाए 3. लटकाए
4. रंगीन पाए 5. कल्पना में । 6. पतला

धन को खरचहिं हित दसतार। गुरू के कारन धरहिं सुधारि।
पुशप धूप चंदन चरचाइ। पूज पूजकरि सदन टिकाइ ॥ ११ ॥
गन महिं बैठहिं नेम अलावैं। 'हम अपनो गुर को पहिरावैं।'
को सुंदर मंदिर चिनवावहि। तिस को पौर बडो रखवावहि ॥ १२ ॥
चढे तुरंग प्रवेशहिं आई। वहिर न उतरहिं गुरू कदाई।
अंतर ते रचि चित्रति कारी। बैठनि कारन थांइ[1] सुधारी ॥ १३ ॥
कहैं सकल महिं मिलि तिस बेरा। 'इहां करावहि गुरू को डेरा।'
तिह सथान को पूजहिं सदा। गुरू प्रतीखति 'आवहिं कदा' ॥ १४ ॥
किनहूं सुंदर बाग़ लगाए। कदली[1], बदरी[2] तरू समुदाए।
आरू, आमरूद, बहु मेवे। लगे सेउ[3] जिन को खग सेवें ॥ १५ ॥
बहु रंगनि की सुठ[4] फुलवारी। दारम[5], नींबू सींचति बारी।
लतका लाइ मनोहर नाना। हित बैठनि के बीच सथाना ॥ १६ ॥
चहुं दिशि महिं सुंदर सवजाई। मणी बिडूरज मनहुं सुहाई।
किनहूं उत्तम अंन धरे हैं। मेवे मधुर इकत्र करे हैं ॥ १७ ॥
'श्री गुरू आवहिं देहिं अहारा'। सकल समिग्री करि धरि त्यारा।
किनहूं रूचिर फरश बनवाए। असु के हित त्रिण किनहुं रखाए ॥ १८ ॥
इत्यादिक वसतू गुरू कारन। धरहिं घरनि नित करहिं संभारनि।
मेल जोड़ संगति को होइ। करहिं विनय कर जोरहिं दोइ ॥ १९ ॥
'गुर अंतरजामी सरबग्य। सभि थल संगति सेव क्रितग्य!
लाज बिरद की राखि क्रिपाला। सिक्खनि के प्रण पुरहु बिसाला ॥ २० ॥
चहुं जुग महिं जिन जिन आराधे। जाइ सभिनि के कारज साधे।
प्रेम डोर ते ऐंचति जोइ। निज समीप ही देखति सोइ ॥ २१ ॥
दैत बली बल ने सुर लोक। छीन लीनि दे देवन शोक।
शक्र होनि को जग्य अरंभे। सुनि सुर गन को भयो अचंभे ॥ २२ ॥
अपनि सदन ते भए निरास। हे मध सूदन ! करि तव आस।
इंद्र समेत अराधनि लागे। बिनै भवति बहु प्रेम सु पागे ॥ २३ ॥
तिन के हित प्रभु रह्यो न गयो। बावन रूप आप धरि लयो।
जान्यो भगत भूप अंबरीश। इच्छुक भए प्रभु जगदीश ॥ २४ ॥
होते रामचंद अवतार। बन गमने जिन चरित उदार।
बित्यो प्रतीखति जिह चिरकाला। जाति भीलनी बहुरो बाला ॥ २५ ॥

1. स्थान 2. केला 3 सेब 4. सुन्दर 5. अनार

तिह संतोश देनि के कारन। श्री प्रभु कीनसि निकटि पधारन।
मनो कामना पूरन कीनि। सभि ते ऊचो पद तिस दीनि ।। २६ ।।
पुन श्री कृष्ण बिदर के गए। सोदामा के तंदुल खए।
लाज द्रोपती की रखि लीनि। रच्छा कीनि पिखे जो दीन[1] ।। २७ ।।
श्रीनानक कलि महिं अवतार। नगर एमनाबाद मझार।
लालो शूद्र तांहि घर जाहि। रूचि सों असन बनायो खाहि[2] ।। २८ ।।
तिन गादी पर भए जु पाछे। इसी रीति प्रेमी बांधे।
करति रहे सभि पूरन आसा। यां ते हमहिं सभिनि भरवासा[3] ।। २९ ।।
दीन दयाल की बान बिचारति। यां ते हम प्रतीखना धारति।
शरधा पूरहिं अंतरजामी। दासनि की बिनती सुनि स्वामी ।। ३० ।।
अपर जहां कहिं प्रेम निहारे। सभि को त्यागति तहां पधारे।
कहें कहां लगि गिनती करि कै। करें हकारनि नाम सिमरि कै ।। ३१ ।।
धन ऐश्वरज नहीं किस देखो। सुच तप तापनि, नहीं परेखो[4]।
खट शासत्रन महिं बिद्या पंडत। अतिमति जुति, मंडति मन खंडति ।। ३२ ।।
इत्यादिक सभिहिनि कहु त्यागति। जे पग पंकज महिं अनुरागति।
तिन को प्रेम परखि करि स्वामी। बसि रहहु नित अंतरजामी ।। ३३ ।।
ततछिन पूरति हो अभिलाखा। इह प्रण तुमरो सभिहिनि भाखा।
बैदक रीति, लौकिक कान[5]। तजि करि ततछिन श्री भगवान् ।। ३४ ।।
बसी रहति निसदिन तिस केरे। गुन बिसाल इह प्रभु ! सभि हेरे।
इम पूरब दिशि की निति संगति। करति अराधनि मिलिमिलि पंगति ।। ३५ ।।
संग्रह वसतुनि को करि प्रेम। अरपहिं गुरुनि धारते नेम।
शबद कीरतन गावति भले। अनुरागति लोचन जल चले ।। ३६ ।।
पूरब भाग जगे जिन केरे। तिन के उर भा प्रेम बडेरे।
सिमरहिं वाहिगुरू सभि सभैं। 'दीन जानि दिहु दरशन हमैं ।। ३७ ।।
सुने सु गुन श्री तेग बहादर। जहिं सिमरहिं तहिं ततछिन हादर।
दरशन देति सहाइक बनैं। इस महिं नहिं को संसै भनैं' ।। ३८ ।।
गुरू ग्रिथ साहिब के आगे। हाथ जोरि बिनवति बडभागे।
'करहु हमारी पूरन आसा। जागति जोति[6] मुकंद सु दासा' ।। ३९ ।।
करहिं तिहावल भनि अरदासा। बंदति हैं करि सतिगुर आसा।
'नहिं बिलमहुं श्री तेग बहादुर। दिहु दरशन हम बंदहिं सादर' ।। ४० ।।

---

1. निम्न 2. प्रेम से त्यार किया हुआ भोजन रुचि से खाया 3. भरोसा 4. परख करना 5. लोक लज 6. जाग्रत ज्योति

इस प्रकार पूरब दिशि मांही। कितिक ग्राम महिं कित पुरि जांही।
गुरू प्रतीखति प्रेम उपाए। जहिं कहिं गुन गावति उमगाए* ॥ ४१ ॥
श्री गुर तेग बहागुर स्वामी। लख्यो ब्रितांत सु अंतरजामी।
सभि कारज तजि चाहति चले। दरशन देति संगता भले ॥ ४२ ॥
ज्यों ज्यों प्रेम वधहि तिन केरा। त्यों-त्यों चित अकुलाइ बडेरा।
मिलनि चहिति हैं सिखनि अपने। जिनहुं लगी लिव गुरु गुर जपने ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'पूरब देश सिक्खयनि प्रेम प्रसंग' बरननं नाम खशट चत्वारिंसती अंशु ॥ ४६ ॥

---

*उमंग भरे

अंशु ४७

मलूक दास प्रसंग

दोहरा

सिक्खनि प्रेम बिचारि कै तेग बहादर चंद ।
मिस[1] तीरथ इशनान को कहि करि चले मुकंद ।। १ ।।

चौपई

'कड़े' सु 'मानिकपुर' के राहू[2] । गमने सतिगुरु बेपरवाहु ।
'संग फकीरनि को समुदाइ । सिमरन श्री प्रभु करते जाइं ।। २ ।।
बसत्र कखाइ[3] जिनहुं ने धारे । कर तूंबे जल पीवनहारे ।
सिर पर ऊची टोपी धरैं । कितिक बिभूतन मलिबो करैं ।। ३ ।।
ब्रिंद सिक्ख्य जे चड़े तुरंग । बसत्र शसत्र सुभ धरि कैं अंग ।
प्रथम पहुंचे सुरसरि थान । निरमल नीर पुनीत महान् ।। ४ ।।
जाइ कूल पर कीनसि डेरा । पाप निवारनि दरशन हेरा ।
मनभावति सभि कर्यो शनाना । जथा शकति दे करि दिज दाना ।। ५ ।।
द्वै दिन टिक सुरसरी तीर । दरसहि सतिगुरु को नर भीर ।
तहिं ते आगे गमने स्वामी । पुरनि कामना सिक्खनि कामी ।। ६ ।।
थल कछार को सुंदर आवा । खिलति अखेर तहां मन भावा ।
आमिख पावन है जिन केरे । हते हेरि करि फिर तिस बेरे ।। ७ ।।
म्रिगनि बिहंगनि को संघारि । गमने खेलति पंथ शिकार ।
आमिख काटि काटि सभि लीनि । निजबाजी संग बाधन कीनि ।। ८ ।।
इम बहु सुभट संग गुरू चालति । करति अखेर म्रिगनि को भालति ।
'कड़े' समीप पहुंचे जाइ । साध मलूकदास जिस नाइ ।। ९ ।।

1. तीर्थ स्नान के बहाने 2. रास्ता 3. गेरूए रंग के

बसहिं तहां सु बैसेनो धरम। करति सदा ही आछे करम।
सुनि किस ते 'सतिगुर जी आए'। रिदे अनंद भयो अधिकाए ॥ १० ॥
मैं दरशन करि हैं गुरु केरा। जिन को जसु बिसतार बडेरा।
होहि परम मेरो कल्यान। सुनौं बाक हित दे करि कान ॥ ११ ॥
इम उतसाह करति बहुतेरा। पुन इक आयो जिन गुरु हेरा।
तिस ने सगरी बात सुनाई। 'गुरु के संग साधु समुदाई ॥ १२ ॥
चढ़े तुरंगम सिख कुछ साथ। गहे जिनहुं ने आयुध हाथ।
म्रिगनि बिहंगनि के गन मारे। आए खेलति पंथ शिकारे ॥ १३ ॥
आमिख काटि काटि समुदाए। हयनि संग बाध्यो लटकाए।
जथा ब्याधि निरद्यालू मारे। तिम देखे मैं जीव संघारे ॥ १४ ॥
सगरों जगत करहि जिह पूजा। जिन के सम को सुन्यों न दूजा।
अज़मत बिदत जहां कहि जनियति। सतिसंगति महि बड़ जसु भनियति' ॥ १५ ॥
सुनति मलूकदास भरमायहु। शंक मान, मन महिं नहिं भायहु।
कह्यो बैशनो मत है मोरो। सतिगुर मास अहारी हेरों ॥ १६ ॥
करनि मिलाप तिनहुं ढिग जाना। असमंजस मैं मन जाना।
बैठि सदन महि सिमरों हरि हरि। गुरु बड़, मैं लघु, नांहिन समसर ॥ १७ ॥
जग मैं को दुरबल को मोटा। किनहुं लाभ किनहुं कै तोटा।
पर की कहां बिचार करीजै। बैठि सदन प्रभु को सिमरीजै ॥ १८ ॥
मिलिबे की प्रसंनता तजि कै। बैठि रह्यो घर हरि हरि भजि कै।
श्री गुरु तेग बहादर जान्यो। हरि को भगति सुनति भरमान्यो ॥ १९ ॥
बिधि बिखेधि करमनि बिवहार। यहि नहिं संतनि के बीचार।
बहिर क्रिआ पिखि शरधा त्यागी। अंतर ब्रिति को नहिं अनुरागी ॥ २० ॥
तजि मिलाप की बातनि, बैठ्यो। सुनि आमिख को, नाक सु ऐंठ्यो[1]।
बिधि बखेध ते करि कै बाहर। चहिय मिलावनि तिस को ज़ाहर ॥ २१ ॥
इम श्री तेग बहादर धारी। कर्यो निहाल चहसि उपकारी।
बैठि मलूक दास जबि रह्यो। गिनती गिनहि, न मुख कछु कह्यो ॥ २२ ॥
कितिक देर महिं तांहि रसोई। अनिक अंन की सिध सभि होई।
थाल परोस्यो पाइ अहार। सूखम चाव्र[2] मूंग की दार[3] ॥ २३ ॥
फुलका[4] बहुत घ्रित के सने। ठाकर हेतु सुधारति घने।
अपर सलवण[5] पाइ करि प्रेम। प्रथम भोग लावति नितनेम ॥ २४ ॥

---

1. नाक चढ़ाई 2. चावल 3. दाल 4. बहुत ज्यादा चुपड़ी रोटी 5. सालन।

बसत्रनि साथ अछादयो थार। जाइ धर्यो ठाकर अगवार।
घंटे संख बजाइ बिसाले। खरो अराधहिं चित गोपाले॥ २५॥
बहुर उठाइ थाल को ल्याए। बसत्र उतारि जबहि द्रिगलाए।
आमिख देख्यो बीच अहार। चावर दार जु अनिक प्रकार॥ २६॥
डालि मसाले रीध्यो नीके। पिखि अचरज होयहु बिच हीके।
दूह क्या भय न जान्यों जाइ। थार बीच किन आमिख पाइ॥ २७॥
कहां भई गति हे प्रभु मेरे। करहि बिचार महंत घनेरे।
पुन सतिगुर की चितवति बात। ठाकर रूप सु आमिख खाति॥ २८॥
तिनहुं भोग आमिख को लायहु। मन मेरे को भरम मिटायहु।
सुनति मास मन संकति मेरा। मिलिबो त्याग रह्यो इस बेरा॥ २९॥
भोग्यो भोगु सु ठाकुर बनि कै। शंका हरन हेतु भ्रम मन कै।
इस बिन अपर न कारन कोई। सदा अलेप प्रभू गुरू सोई॥ ३०॥
छुव न सकहिं जिस क्रिया कलाप[1]। सभि को प्रेरक आपे आप।
तिस के करमनि क्या अवरेखनि[2]। नीको है शरधा धीर देखनि॥ ३१॥
जिसको दरशन चाहति जगत। करति क्रितारथ लखहि जु भगत।
सिख्य अराधहिं चहुंदिशि जिस को। पुरहिं मनोरथ हित सभि किस को॥ ३२॥
ब्रिति अखेर करति नित लील्ला। रामचंद बलवान छबीला।
पुरशोतम मिरजादक नीके। करनहार सेवक के जीके॥ ३३॥
पुन श्री क्रिशन भए अवतार। लील्ला कीनसि अनिक प्रकार।
तथा इनहुं के जो बड भए। आयुध धरति जुद्ध जै कए॥ ३४॥
यां ते लखीयति है इह आदि। बीर, शसत्र धरि की सु क्रियादि।
नई अनीति न कीनी कोइ। मैं मूरख हुइ तरकी जोइ॥ ३५॥
समरथ को नहिं दोश कदाई। शिव संघारक[3] त्रिशटि सबाई।
सूत कथति मुनि महिं इतिहासा। बिन अपराध हली[4] सु बिनासा॥ ३६॥
इम बिचार करि शरधा धारी। गुरू अवतार जानि भ्रम टारी।
घन के पटल दुरहि रवि जैसे[5]। संक मलूकदास भई तैसे॥ ३७॥
पता पिख्यो इह पौन बही है[6]। नस्यो संक घने, पिख्यो सही है।
दरशन की लालस बड जागी। पग पंकज को भा अनुरागी॥ ३८॥
अपनि आप को बहुत धिकार्यो। बहुर रिदे महिं अस प्रण धार्यो।
कलिजुग मैं सतिगुर अवतार। छपे नहीं, सभि जग बिसतार॥ ३९॥

1. समूह 2. परख करना 3. संहार करने वाला 4. बलभद्र 5. जैसे बादल के परदे में सूरज छिपा हो 6. हवा चली है

अबि मेरे मन की गति जानहिं। आप हकारनि मोको ठानहिं।
करहिं क्रितारथ दरशन देय। राखहिं लाज दास लखि लेय ।। ४० ।।
एव मनोरथ धरि करि वैसा। ध्यान पराइण थिर जढ जैसा।
करिकै प्रेम अराधति भयो। तन की सुद्धि बिसर तबि गयो ।। ४१ ।।
श्री गुरु तेग बहादर जानी। बैठ्यो साधु प्रतग्या ठानी।
निज सिक्खनि को बाक बखाना। 'संत मलूकदास बुधिवाना ।। ४२ ।।
तिसकै संग मिलनि हम चाहति। सो भी आवनि रिदै उमाहति।
सिवका ले जावहु तिस पास। हमरो आवनि करहु प्रकाश ।। ४३ ।।
ऊपर सादर तांहि चढाइ। आनहु हम समीप तिह जाइ'।
सुनि करि दास पालकी लीनि। गए बूझि करि जहिं थल चीनि ।। ४४ ।।
नमो करी गुरु कहिवत कही। सुनि हरख्यो नहिं शंका रही।
भयो अरूढि पालकी मांहि। कुछ चेले ले करि संग वाहि ।। ४५ ।।
आनंद मगन सहित बडिआई। आइ निकटि उतर्यो सहिसाई।
पर्यो चरन पर मसतक धारि। कर्यो दोहरा एक उचार ।। ४६ ।।

दोहरा

'मलूका पाप पेडको[1] भगति न जानी तोहि।
भगति लिखी थी अवर को प्रभु धोखे दे मोहिं' ।। ४७ ।।
सुनि मलूक ते दोहरा श्री गुरु करुना धारि।
तिस प्रति उत्तर को कह्यो धीरज दीनि उदार ।। ४८ ।।
'सुनि मलूक हरि के भगत ! नहिं राखो मन द्रोह।
भगत लिखी थी अवर को करि किरपा दई तोहि' ।। ४९ ।।
पिखि सतिगुर के दरस को भयो निमगन अनंद।
न्रिपति बीर बर बख[2] तन, मन ब्रह्मग्यान अमंद ।। ५० ।।
हाथ जोरि हुइ करि खरो करि उसतति बहु भांति।
'गुन समुंद्र, मैं कथौं किम कुमति कुचील कुजाति ।। ५१ ।।
बहु बिनती करि ले गयो गुर को निज ग्रिह माँहि।
सेवा अनिक प्रकार की कीनि दीन बन तांहि ।। ५२ ।।
बार बार चरननि पर्यो भूल छिमा करिवाइ।
हर्यो भरम निशचै धर्यो आपनपै सफलाइ ।। ५३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'मलूक दास' प्रसंग बरननं नाम सपतचत्वारिसंती अंशु ।। ४७ ।।

---

1 जन्म से 2. तन पर श्रेष्ठ तथा शूरवीर राजाओं वाला पहरावा है

अंशु ४८

प्रयाग आगमन श्री तेगबहादुर को प्रसंग

दोहरा

महां सिंघासन पर गुरु हाथ जोरि बैठाइ।
अनिक प्रकारनि असन को तबि मलूक करिवाइ ।। १ ।।

चौपई

थार परोस्यो धर्यो अगारी। खरे होइ बहु बिनै उचारी।
'नित शरधा सों भोग लगावौं। नहिं सरूप प्रभु को दरसावौं ।। २ ।।
आज प्रत्तख्य द्रिगनि के आगा। ठाकुर भोग लगावनि लागा।
भयो सफल मैं, ग्रिह चलि आए। भोजन अर्चहिं होहिं त्रिपताए' ।। ३ ।।
देखि भाउ श्री गुर तिस केरा। भोजन अच्यो क्रिपा करि हेरा।
भयो क्रितारथ कशट निवारे। पुन सेवा कीनसि हित धारे ।। ४ ।।
निसा बास करिकै गोसाईं। जागे पुन प्रभाति ह्वै आई।
आदि शनान सौच करि सारे। श्री गुरु भए चढनि कहु त्यारे ।। ५ ।।
जेतिक संगति तहिं ते आई। अरपि उपाइन को समुदाई।
जो जो गुर हित दाखनि करी। सो सभि आनि अगारी धरी ।। ६ ।।
संगति पर बहु खुशी करी है। दासनि की अपदा सु हरी है।
मारग गमन कीनि गुर पूरे। अनिक प्रकारनि वाहन रूरे ।। ७ ।।
मात नानकी संग चलंती। चढि स्यंदन सुंदर सुखवंती।
श्री गुजरी डोरे पर चालै। जरी सितारनि दिपति बिसालै ।। ८ ।।
ब्रिद दासीआं संग सिधारी। जथा जोग सभि ले असवारी।
साधनि को समुदाइ सिधारै। गुरु संगति ते जनम सुधारैं ।। ९ ।।
सिख तुरंगनि पर असवार। अनिक बिधिनि के आयुध धारि।
तीरथ मज्जन कीनि बहाना। करनि हेतु सिख्यनि कल्याना ।। १० ।।
नितप्रति मारग जाइं अगारी। जो नर मिलहि भावना धारी।
तिस की सकल आपदा टारी। करति जाति कल्यान उदारी ।। ११ ।।

तीरथ राज प्रयाग बिसाला। तहां पहुचे जाइ क्रिपाला।
सति संगति सिक्खनि बड भागे। परम छेत्र गुर दरशन लागे ॥ १२ ॥
जहां त्रिवेनी संगम होवा। प्रथम जाइ तहिं गुरु खरोवा।
कर्यो फरश पुन गए असीन। जुग सलिता दुति देखनि कीनि ॥ १३ ॥
जल उज्जल, इक स्यामल[1] बारी[2]। सारसुती बिदताइ मझारी।
पाप अनेकनि कतरनि छैनी[3]। बड सोभा निह होति त्रिवैनी ॥ १४ ॥
सत[4] रज[5] तम[6] तीनहुं के रंग। मनहुं बिदति हुइ उठहिं तरंग।
जनु त्रै देवनि केर सरीर। रहे प्रकाश होइ करि नीर ॥ १५ ॥
मनहुं त्रिसंध्या[7] सूरज केरी। पाप तोम तम हरति घनेरी।
तीनो ताप बिदारनि हेतु। तीनो रंग धरे दुति देति ॥ १६ ॥
निरमल जल की अति हुई शोभा। अस जन कौन न पिखि मन लोभा।
प्रथम गुरु जी मज्जन कीना। हुते जु दिज ढिग दान सु दीना ॥ १७ ॥
सुनि सुनि बिप्र आइ समुदाए। सो भी लै करि दान सिधाए।
बिप्र ब्रिंद सुनि सुनि पुन आवति। जाति न छूछे, गुरु ते पावति ॥ १८ ॥
तिस दिन सगरे गुरु भगवान। देते रहे दिजनि कहु दान।
जितिक समिग्री गुरु के पास। सरब सु देति भए दिज रास ॥ १९ ॥
मात नानकी गुजरी सहित। करे शनान दान दे महित।
अपर सरब ने मज्जन कीनि। जथा शक्ति बिप्रनि बिप्रनि धनदीन ॥ २० ॥
संगत ने सुनि सतिगुरु आए। इकठे होति भए समुदाए।
लै लै अनिक प्रकार उपाइन। आए रिदे धार करि भाइन[8] ॥ २१ ॥
पूजा करी अनेक प्रकार। हाथ जोरि बंदन को धारि।
बिनति करिकै अधिक रिझाए। सभि संगति ने बाक अलाए ॥ २२ ॥
'हमरे भागनि करि तुम आए। दीन बंधु शुभ बिरद सदाए।
मज्जन तीरथ कीनि बहाना। आए करनि हमहिं कल्याना ॥ २३ ॥
बसहु इहां केतिक दिन आप। दिहु दरशन को हति त्रै ताप।
सभि संगति की है अभिलाखा। अपनि भले हित हमनै भाखा' ॥ २४ ॥
सुनि प्रसंन हुइ सतिगुरु कह्यो। 'हमहं राखिबो तुम ने कह्यो।
जानो तीरथ करनि अगेरे। है जो पूरब देश बडेरे' ॥ २५ ॥
सुनि संगत ने पुनहिं बखाना। 'तीरथ धरहिं नरनि अव नाना।
तुमरे होइ सपरशनि जबै। पावन होति नाश अघ सबै ॥ २६ ॥

1. काला 2. पानी 3. छेनी 4. सतोगुण (सफेद रंग) 5. रजोगुण (लाल रंग) 6. तमोगुण (काला रंग) 7. तीन संध्या (सवेर, दुपहर, शाम) 8. श्रद्धा

तीरथ गन को करनि पुनीत। गमनंति हो इम इच्छा चीत।
तऊ कामना संगति केरी। पूरन करिबे उचित बडेरी ॥ २७ ॥
करो क्रितारथ, को दिन रही अहि। बहुर गमहु जैसे चित चही अहि।
बहुत दिवस की हमरे आसा। तुम पूरहु धारति भरवासा' ॥ २८ ॥
इत्यादिक बिनती सुनि कान। मान्यो रहनि गुरु भगवान।
एक हवेली सुंदर सारी। सभि संगति ने दीनि सुधारी ॥ २९ ॥
तहां नानकी मात सिधारी। श्री गुजरी जुति सौज[1] उदारी।
बसे जाइ करि तिस के बीच। दरसति भए ऊच अरु नीच ॥ ३० ॥
करहिं त्रिबेनी नित इशनान। नित संगति दरशन गन आनि।
सुनि सुनि ग्राम नगर जे और। संगति बहु आवहि तिस ठौर ॥ ३१ ॥
अरपहिं भेट दरस करि जाइ। देग अखंड अैन समुदाइ।
श्री गुरु कीनि हवेली बास। डेरा सरब त्रिबेनी पास ॥ ३२ ॥
केतिक दिवस सु बसति बिताए। एक समैं थिति सहिज सुभाए।
मात नानकी चलि करि आई। कीनि जाचना सुत अगुवाई ॥ ३३ ॥
'सुनहुं पुत्तर ! लालस मम उर की। अरु बानी है तव पित गुरु की।
यांते रहों प्रतीखति सदा। तिन को बाक न निफलहि कदा ॥ ३४ ॥
महां प्रतापवंत भुज भारी। महां सूरमा परउपकारी।
श्री नानक ते आदि जि गुरु हैं। सकल गुननि करि बहु भरपुर हैं ॥ ३५ ॥
सभि को सुजसु प्रकाशन वारो। सभि को नाम करै उजियारो।
अस सुत उपजहि सदन तुमारे। खशटम गुरु इम बाक उचारे। ३६
सिमरि सिमरि बच मैं अभिलाखी। तोहि पुत्र कबि देखवि आंखी।
सो दिन कबि होवहि मुझ आई। रहौं प्रतीखति निज अधिकाई ॥ ३७।
सुत के सुत को लेकर गोद। करौं दुकारनि पाइ प्रमोद।
हे सपुत्र ! इहु मेरी आसा। पूरन करहु देहु सुखरासा ॥ ३८ ॥
प्रान अहैं मेरे तन जावद। तुव नंदन को दरसौं तावद'[2]।
सुनि जननी के बाक सुहाए। श्री गुरु मुख ते भाखि सुनाए ॥ ३९ ॥
'हे जननी ! जु मनोरथ तोही। पौत्र बिलोकनि को सुख होही।
पारब्रहम करतार क्रिपाला। परमेशुर सुख सिंधु, अकाला ॥ ४० ॥
एकंकार जोतियनि जोती। चेतनता सभि घटनि उदोती।
तिस अधीन इह तेरी आशा। पूरन करहिं हमहुं भरवासा ॥ ४१ ॥

1. सामान 2. जब तक मेरे प्राण रहेंगे, तब तक तेरे पुत्र के दर्शन करती रहूं

जबि प्रसंन हुइ दीनन दानी। दें सुत तेज पुंज ब्रह्म ग्यानी।
समा समीप पहूंच्यो आई। नित अराधिवे मैं मति लाई, ॥ ४२ ॥
दया सिंधु करि दया पठावैं। अपनि मनोरथ को अबि पावैं।
सुनति प्रसंन नानकी होई। मनौ रंक लै नव निधि कोई॥ ४३ ॥
निज अनुकूल पुत्र के बैन। सुनति लखी—अबि देखौ नैन।
: श्री तेग बहादर चंद। जोग साधना सहत बिलंद ॥ ४४ ॥
कार इशनान लगाइ समाधनि। नित प्रति सुत हित करहिं अराधन।
रह प्रयाग त्रिबेनी तीर। नित आवहिं संगति की तीर ॥ ४५ ॥
इम श्री तेग बहादर कथा। रहे प्रयाग बखानी तथा।
अबि श्री गोबिंद सिंह को आवनि। बरनन करौं संत मन भावनि ॥ ४६ ॥
ले आग्या प्रभु की जिम आए। पूरब जनम जथा तप ताए।
सो अबि सुनहुं कथा गुनखानी। श्रोतानि को मन बांछति दानी ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'प्रयाग आगमन श्री तेग बहादर को प्रसंग' बरननं नाम अशट चत्वारिसती अंशु ॥ ४८ ॥

४६

तप करनि प्रसंग

दोहरा

पूरब तपसा करनि की कहौं कथा गुर पूर।
पूरब करि हौं अंत लौ श्री गुरु कीरति पूर[1] ॥ १ ॥

चौपई

मुनी बेश धरि श्री प्रभु आपहिं। अनिक प्रकार तपनि को तापहिं।
हेम कुंट परबत बिसतारा। झरने झरहिं अनेक प्रकारा ॥ २ ॥
निस बासुर जिन महिं धुनि भारी। सुंदर बिमल प्रवाहति बारी[2]।
कहूं बेग सों चलहिं स ज़ोर। कहूं भ्रमरका परहिं बिलोर[3] ॥ ३ ॥
फटक[4] समान स्वच्छ जल सुंदर। नारे[5] बहै मीन गन अंदर।
कहूं फेन उज्जल बिधि ररूं। कित सुनीयति धुनि दूरहदूरं ॥ ४ ॥
अनिक धातु न चित्रति गिरवर। पीत[6], रक्त[7], अंजन[8] के समसर।
दुरबा[9] सम बैडूरज जहिंवा[10]। अनिक भांति की औशधि तहिंवा ॥ ५ ॥
सुंदर थल जहिं अनिक प्रकारा। तुंग सथंडल[11] पांति उदारा।
चारों ओर नीर तहिं फिरिही। हरिआवल सभि थल मन हरि ही ॥ ६ ॥
फूलन बारी चहुं दिशि मांहि। रंग रंग के बिगसे तांहि।
महां सुगंधति, भौर गुंजारति। सीतल मंद बहति बर मारूत[12] ॥ ७ ॥
पिखति बिलोचन अनंद दानी। रचना मनुहर गंधनि सानी[13]।
म्रिदुल दलनि के परे बिछौने। रक्त बरन के दीखति लौने[14] ॥ ८ ॥
फल मधुरे बहु स्वाद बिसाले। अलवालति तरु थल जल चाले।
खग म्रिग सेवति जिस को नीता। सरब जतु ते भै सभि बीता ॥ ९ ॥
करहिं परसपर अनंद घनेरा। बैर बिसार्यो आपस केरा।
ब्रिच्छन के संबूह बहु खरे। खर स्वाद फल दलकल[15] हरे ॥ १० ॥

---

1. कीर्ति से भरा हुआ 2. बहता हुआ पानी 3. चमकीला रंग 4. बिल्लौर 5. नाले 6. पीले 7. लाल 8. काले 9. हरी मणि जैसा 10. जहां पर घास है 11. ऊंचे चबूतरे 12. श्रेष्ठ वायु 13. सुगंधि सहित 14. सुंदर 15. पत्ते (हरे)

साल[1], सरल[2], बदरी[3], कचनाल[4] । नालकेर[5], ब्रिदल[6], क्रितमाल[7] ।
मालिक पिच[8], फलरह्रा[9], रसाल[10] । शालमली[11], पुंनाग[12], बिसाल ।। ११ ।।

सिंदक[13], तिंदुक[14], मधुर[15], तमाल । कपर[16] खदर[17] ,बट[18], नकुतैमाल[19] ।
कुलक[20], तिलक[21],चलदल[22],सु कुदंब[23] । बातपोत[24], सिसंपा, कदंब[25] ।। १२ ।।

खरे[26], मधूक[27], उदालक[28] हरे । हरेतपत[29], चंपक[30], गंध बरे[31] ।
बरे लता इकसारे जरे[32] । जरे न कबि, अस तरु बर खरे ।। १३ ।।

खिरणी,अरणी[33]बरण, बि॰ीरण[34] । कीरण[35], सपत परण[36],बिसतीरण ।
अरजन, कुंद[37], कुंभ[38], कांरभा[39] । रंभा[40], भूरिंडी[41], सु अचंभा ।। १४ ।।

नीचलफल[42], गूलर, च कनेर । नेर नेर मुदपरन[43] घनेर[44] ।
बीर ब्रिख[45], चैतकी[46], बहेरा[47] । हेरा जिन दे मोद बडेरा ।। १५ ।।

कुटज[48],कुटंनट[49],सीता[50],बंजल[51] । जलजुति[52],राइबेल[53],तरु मंजल[54] ।
तल[55],छित[56],केसु[57],मालती जाल[58]। जालइंगदी[59] खरे बिसाल ।। १६ ।।

---

1. साल का वृक्ष 2. सीधे 3. वेरी 4. कचनार 5. नालियर 6. जल बैंत 7. अमल तास 8. नींम 9. पाटल वृक्ष 10. आम 11. सिंमल 12. जायफल 13. संभालू 14. आवनूस 15. जंगली वेर 16. सफेद खैर 17. खैर वृक्ष 18. बट वृक्ष 19. करंज वृक्ष 20. काकेंदू 21. श्रीमत वृक्ष । 22. पीपल 23. एक वृक्ष 24. छिछरा 25. अधिक 26. ब्रिंदाल वृक्ष 27. महूआ 28. लेसुआ 29. मूली 30. हेम पुष्पक 31. सुगंधि वाला 32. जड़ित 33. अग्नि मंथिका 34. ओक 35. विखरे हुए 36. छतवन का पौधा 37. बोट 38. गराल 39. काकुनी 40. केला 41. श्री हस्तनी 42. समुद्र फल नामक वृक्ष 43. मुंगफली 44. अधिक 45. मिलावा 46. हरहर 47. वहेड़ा 48. कुर्या 49. साखोन 50. सीताफल 51. मौल सिरी 52. जल सुगंधि बाली बूटी 53. रवेल 54. अंजीर 55. ताड़ का वृक्ष 56. करंज 57. छिछरा 58. जाल का वृक्ष 59. तापशत्रु

उतकंटक[1], स्पंदन[2], सहिकारी[3]। समी[4], ससंबर[5], सावर[6], सार[7]।
जंबू[8] रुचिर[9], मालती ताल[10]। ताल भरे सुंदर जल नाल[11] ॥ १७ ॥
देवदार, अमरुदक[12], सेव[13]। सेवति खग जिन शोभा देव।
जरदालू[14], अंगूर उदार[15]। दारम[16], नागरंग[17] फल भार ॥ १८ ॥

सवैया

कोरनि[18] के मुख चै[19] मुकलै[20] बिकसे रंग फूल निकोरन[21] के।
कोरनि के धारता बहु राजति बाजति पात पतोरनि[22] के।
तोरनि के नहिं दाइ बड़े फल बूट बिसाल बिजोरनि[23] के।
जोरन के सिखरे जन गुंदति बायु के बेग अकोरन[24] के ॥ १९ ॥

सवैया

बारी[25] बडी तरु झूल रहे, अनुकूल बहै नित मूलन बारी[26]।
बारीन पाइ[27] बिहंगम बोलति नंदन[28] की सुखमा[29] सभि बारी[30]।
बारी अधूम[31] मनो अगनी, अस लाल महां फल फूलन बारी।
बारीज रंग अनेकन के गन और गुंजार तिन्हें पर बारी ॥ २० ॥

चित्रपदा छंद

मोर बिहंग, मराल[33] बिसाल, कबूतर, कोकिल कीर[34], अघोर[35]।
घोरन ते घन बोलि उठैं, पिखि चात्रिक खंजन की सुनि शोर।
सो रहिं सेवति कानन को, नित वैर बिसारि, नहीं कर जोर[36]।
जोर[37] सदंपति ह्वै करि कूंजति[38] बैठति पंख सुधारति मोर ॥ २१ ॥
जोट मिले चकवानि जि कुंजनि पूजति काम रहे हरखाइ।
खाइ सदा मन भावति जे फल, मोर गुजारति हैं अकुलाइ[39]।
लाइक जे सुखदाइक सुंदर अंदर कानन के बिरधाइं।
धाइ महां म्रिगमाल[40] फिरैं गन रोझ झंखारन के समुदाइ ॥ २२ ॥
केहरि, भालक डोलति हैं,[41] गज बोलति है करनी[42] अवलोक।
बाघ बकारि, कनीन फुंकारि, मनीन सुधारि, बसैं करि ओक।

---

1. तज 2. तिनिश वृक्ष 3. सुगंधि वाला आम 4. जंड 5. साल 6. लोधवृक्ष 7. चरौंजी 8. जामुन 9. स्वादिष्ट 10. ताड़ 11. जल से भरे 12. अमरूद 13. सेव 14. जरदालू फल 15. द्राक्ष 16. अनार 17. नारंगी 18. कलियां 19. समूह 20. अर्धखुला 21. नवीन 22. हवा से पत्तों का उड़ना 23. चकोधरा 24. भेंटा करने के लिए 25. बाड़ी 26. जल का मूल-वायु 27. बारी नहीं आती 28. इन्द्र का बाग़ 29. शोभा 30. न्यौछावर कर दी 31. बिना धुएं के 32. कमल 33. हंस 34. तोता 35. सुहावना 36. ज्यादती 37. जोड़ी 38. कुंज 39. व्याकुल होकर, 40. हिरनों का झुंड 41. घूमते हैं 42. हथनी।

कोल तसे, नकुले तरकैं[1] गन जंबुक, सारक[2], सारस, कोक ।
कौंचे[3] सु आरनचुड़[4] पुकारति कोक सु बत्तक ब्रिंद अशोक ॥ २३ ॥

सवैया छंद

अनिक रीति के मुनि तप तापति, इक फल खाइ, खांहि इक पात ।
जलहारी, त्रिणहारी केतिक, निराहार केतिक नहिं खाति ।
शुशक पत्र भखयति[5] नितप्रति इक, पंचागनि ते तापति गात[6] ।
कितक सथंडलसाई[7] तापति वरखा सीत सहैं सभि भांति ॥ २४ ॥

असम कुट[8], तन बलकलधारी[9], ऊरध पग केतिक लटकंति ।
जलसाई[10], इक बिचरति नितप्रति एक चरन[11] द्वै हाथ उठंति[12] ।
केतिक बिद्या ब्रह्म म बिचारति सम सरूपै[13] सभि बिखै लखंति ।
सविता[14] तेज हुतासन[15] जैसो तिस बन महिं अस् तपी बसंती ॥ २५ ॥

जथा क्रिपन धन संचन महिं मन तिमतप को संचति दिन रैन ।
जिम इसत्री कामी उर बासहि तिम ब्रह्म बिद्या बसहि टरै न ।
न्रिपति निकटता चहिंम्रित नित जस तसु अकाल चहिं शरनि सदैन[16] ।
ज्यों दारिद्र हरन कहु ग्रिहसती त्यों हति मोह चहिति चित चैन ॥ २६ ॥

उत्तम जिवहुं कामना मन महिं तिन तपसनि को तिह बनवास ।
जनना मरन जिन कबहु न हुइ फुन गेय ग्यान अग्याय विनाश ।
पुंन अशेश, लेश जिन पाप न, खामि बिकारनि, बाप प्रकाश ।
बीतराग, बडभाग सु पावन अस पुरशोतम परम निवास ॥ २७ ॥

तिन के बड महंत हुइ तासहिं कठन करति तप शंभु समान ।
रोकि रिखीकि नीक बिधि प्रभु जू उरध करे इक पद जुग पान ।
जिम गिर दर तरू सथिर सिसर रूत तिम रहिं अचल रिदा दिढ ठानि ।
मनहुं कमल पर चतुरवदन थितु तप को तपहिं महित सवधान ॥ २८ ॥
आमिख शुशक दिखति धमनी तान[17], तेज प्रताप दसो दिशि छाइ ।
जिम ग्रीखम अध्यान भानु[18] हुइ उरपति चित सभि, सहि न सकाइ ।

---

1. उछलते हैं 2. मैना 3. कराकुल 4. मुर्गा 5. खाते हैं 6. शरीर 7. भूमि पर सोने वाले 8. पत्थर से अन्न को कूट कर खाने वाले 9. भोजपत्र पहनने वाले 10. जल पर सोने वाले 11. एक पैर पर चलने वाले 12. दोनों हाथ ऊँचे उठाए रखते हैं 13. ब्रह्म स्वरूप 14. सूरज 15. अग्नि 16. सदैव 17. मांस सूख गया है और सभी नाड़ियाँ दिखती हैं 18. दोपहर की गर्मी के मौसिम का सुर्य

अगनी मनहुं अधूम प्रकाशति, अग्रै आइ न कोइ थिराइ।
ब्रह्म लोक लौ तेज तपन कहु बिथर्यो जहिं कहिं दुशहि सुभाइ॥ २९॥
जीत्यो मन हुइ ध्यान पराइन करता पुरख साथ लिवलाइ।
सरब जोति की जोति उदोतक अस सरूप महिं रहे समाइ।
एक रूप हुइ तन सुधि बिसरी पारब्रह्म परमेसुर पाइ।
बीते बरख असंख, एकभे मूरति तप की तनू सुहाइ॥ ३०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'तप करनि प्रसंग' बरननं नाम एक ऊन पंचासती अंशु॥ ४९॥

अंशु ५०
श्री गुर प्रिथम जनम प्रसंग

दोहरा

दिढ तपसा महिं ध्यान लगि तप को तेज बिसाल ।
खरभर देवन महिं पर्यो आकुल[1] भे तिस काल ॥ १ ॥

सवैया छंद

अगनि पुरोगम सहित पुरंदर[2] गए ब्रिंद सुर ब्रह्मा पास ।
'किसने तेज निगम तप[3] ताप्यो सुरग लोक ली भयो प्रकाश ? ।
नहीं सहार सकहिं सुर सारे कठन घोर अस बिदत्यो रास ।
करूना करहु सहाइक ह्वै करि हमरे संसै देहु बिनाश' ॥ २ ॥
कह्यो द्रुहण[4] ने 'चिंता त्यागहु काल समापत तप को आइ ।
अखल[5] जगत को रक्क्यक स्वामी सो तुमरे भी होहि सहाइ ।
प्रथम अवतरे[6] प्रभु पुरशोतम श्री नानक निज नाम धराइ ।
बरत्यो बिना काल कलि भेख[7] भर्यो नरक पापी समुदाइ ॥ ३ ॥
तिन जीवनि को नाम अलंब दिय सतिसंगति को पंथ बिसाल ।
तप आदिक मैं लखि अशकति नर श्रेय सुखेन पाइं ततकाल ।
भंग मुशट तिन बखशिश कीनसि गमने जमन[8] सु अबै कुचाल ।
हिंदुनि धरम बिनाश न चाहति महां मंद मति दुशट कराल ॥ ४ ॥
सीस देय करो तिन करिकै हर्रहिं तेज तिन राज बिनसि ।
नौ सरीर धरि बरते प्रभु जी अबि दसमें को करहिं प्रकाश ।
देवी देव देहुरे तीरथ आगम निगम[9] अपर मतिरास[10] ।
हिंदु धरम के रक्खयक होवहिं श्री गुर गोबिंद सिंह हुलास ॥ ५ ॥
परम तेजसी, परम सूरमे, परम अमानुख[11] करम करहिं ।
जिनके तम को तेज निगम[12] इह सो अबि धरहिं जाइ नर देहि ।

---

1. व्याकुल 2. इन्द्र 3. उग्र तेज वाला तप 4. ब्रह्मा 5. अखिल, सारे 6. अवतार धारण किया 7. बिना समय के भयंकर कलियुग आ गया है 8. मुसलमान अब दुष्टता करने लगे हैं 9. शास्त्र 10. दूसरे सारे मत 11. जो कर्म मनुष्य से संभव न हो सकें, अर्थात् ऊँचे कर्म 12. उग्र तेज वाला

अखिल जोति की जोति प्रकाशक श्री नानक की धारहिं एहि ।[1]
तुम भी जाहु जगत मैं जित कित मनुज सरीरनि को धरि लेहि ॥ ३ ॥

दोहरा

इंद्र पुरोगम सुर कह्यो,[2] अस तपसी है कौन ?
किम तम ताप्यो, तात किस, करम कियो क्या तौन ? ॥ ७ ॥

जिसकी अपने बदन ते करति प्रशंशा एव ।
बध्यो बिसाल प्रताप जग किम प्रगटहि तपसेव[3] ? ॥ ८ ॥

सवैया छंद

कहति भयो कमलासन तिन कहु 'सुनहु ! सुरहु अक्खयान[4] महान ।
चिरंकाल को अहै पुरातन जबि सतिजुग को समय सुजान ।
दानव दैत बिलंद बली गन तीन लोक जीते सभि थान ।
दुशट बिसाल अनिशटै[5] ठानति, तुमहि निकास्यो सुख करि हानि ॥ ९ ॥
निकटि भगवती तबि तुम गमने अनिक भांति की सतुति सुनाइ ।
दुरगा भई प्रसीदत हिंत करि अपनि सरीर कीनि बिदताइ ।
दीनसि दरशन धरम गोपता[6] तुम को दीन देखि बिकुलाइ ।
दुरनिरीछना[7] पूछन कीन, दुख दैतनि को कह्यो बुझाइ ॥ १० ॥
सुनि कै प्रन को कीनि अंबका[9] शत्रु तुमारे हतों रिसाइ ।
यग भाग अरु सदन सुरग को बहुर देउं तुम को हरखाइ ।
क्रुद्धति भई जुद्ध कउ उद्धति[10] आयुध सद्ध बिरोध बधाइ ।
हतै दैत धरनी तल छायो संघर महि घमसान बनाइ ॥ ११ ॥
रकतबीज[11] सों रण पुन कीनसि आयुध लगे रकत धर पात[12] ।
भए सैंकरे दैत सहस्रै अयुत लच्छ कोटैं इक जाति[13] ।
हते बहुर उपजे पुन तैसे जिनकी संख्या गनी न जाति ।
चिरंकाल लौ रही घाल करि श्रमति भई कुछ तबि जग मात ॥ १२ ॥

---

1. ये (गुरु गोबिंद सिंह जी) सभी ज्योति का प्रकाश करने वाले श्री गुरु नानक देव जी की ज्योति को धारण करेंगे 2. इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने ब्रह्मा से कहा 3. तपस्वी 4. कथा 5. उपद्रव करते हैं 6. धर्म रक्षक 7. जिसके दर्शन अशुभ हो (देवी) 8. देवी 9. उग्र हुई 10. शस्त्र ठीक करके गुस्सा बढ़ाया 11. दैत्य का नाम 12. धरती पर रक्त गिरेगा 13. दस हजार से लाख और करोड़ों एक जाति के

दोहरा

संख्या नौ के अंक पर खोड़स शून लगाइ[1] ।
इते दैत देवी हते गिने रिखिनि समुदाइ ॥ १३ ॥
बिंध्याचल पर थित भई जगत ईशुरी जोई ।
बिंध्याचल सु निवासनी यांते कहि सभि कोइ ॥ १४ ॥

सवैया छंद

होइ सु लोप धारि लघु मूरति विंधयाचल पर कीनि निवास ।
उग्र महां तप तपने लाग-पुन दैतन कुल करौं ब्रिनास ।
इत उत दुशट लगे तबि खोजन कानन बड़े पहार अवास ।
सरिता सरुवर[2] दरी[3] कंदरा जहिं कहिं फिरहिं रिसे बल रास ॥ १५ ॥
बेल सुबेल[4] दैत दुइ दीरघ लिये संग सैना समुदाइ ।
रिदै सुद्‌ध इक तपसी देख्यो चिरंकाल को तप गन ताइ ।
ब्रह्म विद्‌या महिं निसठित[5] नित प्रति सूरज अगनी के सभ ताइ[6] ।
बैठ्‌यो आश्रम निज तम महिं थित एकाकी मन शांत सुहाइ ॥ १६ ॥
असुरन कीनि विलोकनि पूछ्‌यो अहो तापसी ! हमहिं बताइ ।
इक इसत्री सभि अंग मनोहर रण करती अबि गई पलाइ ।
द्रिशटि सुगोचर रही न हमरे तिस हित खोजे सकल सु थाइ ।
भयो महां अचरज नहिं जानी दैत हते जोधा समुदाइ ॥ १७ ॥
सुनि तपसी रिस करि कै बोल्यो-रे मूढहु दुरमति उरधारि ।
क्या बकबाद करति अनजानहु सो शकती है परम उदार ।
जहां कहां परि पूरन पावन सिमरहि शरधा करे निहार ।
जबि बिदतइगी[7] रूप भयानक तबि तुम गन को करहिं संहार ॥ १८ ॥
सुनि उनमत्त दैत उर क्रोपे मारि मारि सनमुख रिखि धाइ ।
तबहि तपोधन रिदै बिचार्यो इन सों हम क्या करहि रिसाइ ।
ब्रह्म पराइण ब्रह्मण तन है धरम न हमरो जुद्‌ध मचाइ ।
तैसे सिस[8] हैं इसी धरम महिं मोहि समान शांति चित लाइ ॥ १९ ॥
कौन उपाइ करहि अबि इन सों क्रित अपराध उचित है दंड ।
इम निशचै कर मुनि बर रिसधरि निज दरशन अति कियो प्रचंड ।

---

1. नब्बे खरब (90000000000000000) 2. सरोवर 3. खड्ड 4. दो दैत्यों का नाम 5. स्थित 6. तप का तेज 7. प्रकट होगी 8. शिष्य-चेले

लाखनि बरखनि को तप भीखन[1] सिमरनि तीखन करि बरबंड।
करता पुरख ध्यान कहु धरि कै जिसको ओज तेज अनखंड[2] ॥ २० ॥

ओंअ ते हुंकारा कीनसि सिंहखाल को कर महिं धारि[3] ।
करि लघुता[4] झटकाइत झार्यों झिझ्कन झारन जुझे जुझार।
दुरनिरीछ अति पुंज तेज को निकस्यो तिस ते पुरख उदार।
आयुत उर[5] दीरघ जुग बाहू, कंध उतंग,[6] महा बरियार[7] ॥ २१ ॥

लाल बिलोचन भरे छोभ सों धनुख बान कर तरकश दोइ।
हाटक मुशट खड़ग[8] खर निरमल आगे दैतनि रह्यों खरोइ।
लगे प्रहार करनिगन आयुध बखतरपोश बिलोक्यो सोइ।
इत ते तजे पुरख सर तीखन, गन शत्रुनि को तनू परोइ ॥ २२ ॥

तुमल मच्यो संग्राम[9] अनिक बिधि तीरनि लीनि दसो दिशि छाइ।
गजारोह[10] भटरथी क्रोध करि हयारोह[11] आइ गन धाइ।
अनिक भांति के शसत्र उठाए मुगदर मूसल बल समुदाइ।
तोमर, खड़ग, त्रिसूल हूल खर भाले धौपें,[12] गुरज उठाइ ॥ २३ ॥

सार शकति, बड कठने कुंदडै, खपरे बाण, जमधरा धारि।
धार जिनहुं की तीखन भीखन चमकति लोह डसनि सम मार[13]।
मारि मारि कहि आन परे बहु, आयुध जुद्ध मझार प्रहार।
हार न होति सुरहुं ते[14] कबहूं से जोधा अर[15] परे असार[16] ॥ २४ ॥

शलभ दलन[17] से चले तीर गन दुहि दिशि छाड्यो असमान।
उत अनेक इत एक रह्यो रूप राखश हते बेधि करि बान।
लच्छ होइ सो रच्छ न होवै,[18] ऊंधे समुख परहिं तजि प्रान।
आयुध आवति पंथ बिदोर खंड खंड धर[19] गिरे महान ॥ २५ ॥

अनुज सुबेल बेल को रिस भिर्यो आइ मारे खर तीर।
तबि तपसी सुत बीधन होवा निकसि श्रोण भा अरुण शरीर[20]।

---

1. भयंकर तप 2. अखंड 3. हाथ में शेर की खाल ली 4. शीघ्रता 5. विशाल छाती 6. ऊंचे कंधे 7. महां बलि 8. सोने की मुट्ठे वाली खड़ग—तलवार 9. संग्राम का शोर मचा 10. हाथियों पर सवार 11. घोंड़ों पर सवार 12. तीखे भालों को हिला कर 13. साँप की भांति डँसते हैं 14. जिन दैत्यों को देवताओं से कभी हार नहीं होती थी 15. भिड़ गए 16. बहुत 17. टिड्डी दल की भाँति 18. जिनको तीर लगता है, उनकी रक्षा नहीं होती 19. राक्षसों का शस्त्र 20. शरीर लाल हो गया

अंग बिलोकि आपने हस करि धनु सर धरि कै धीर गंभीर।
शत्रु चाप को इक तें काट्यो, चारन ते तुरंग बर बीर॥ २६॥

गरूवी गुरज गही तबि राखश दुती हाथ मैं सिपर संभारि।
जाइ प्रहारी तपसी सुत के शत्रु के सहि दुसहि[1] प्रहार॥ २७॥

हत्यो सुबेल बिलोकि बेल ने बोल्यो बली बीर बड़ बाहु।
खरो होहु तव जानि न दैहों—इम कहि चमूं लीनि रण मांहु।
घोर कर्यो संग्राम राखशनि एक बार ही शसत्र प्रवाहु[2]।
भीखन भेख भूर भभकंते, परे उमडि भट रण करि चाहु॥ २८॥

रिखि नंदन गन करे निकंदन ब्रिंद प्रहार शरीर सहारि।
करि लाघवता शसत्र व्रखाए निज पित को तप रिदे संभारि।
तीखन तीर तरातर[3] छोरति फोरति धर फिर कर दिशि चार।
जिम खाती बन गन को काटति तिन एकाकी करति प्रहार॥ २९॥

जितिक हते कित भजे त्रास धरि कर्यो बेल ने क्रोध महान।
सैल श्रिग करि ओज उखार्यो समुख प्रहार्यो रण घमसान।
आवति पिखि सर सों करि चूरन मर्यो धरनि कुछ काज सरान।
मुनि सुत ज्वलति बान घन तान्यो रिपु उर हन्यो गिर्यो तजि प्रान॥ ३०॥

चमूं असंख भई दिढ ठांढी जो चाहति रण भीम मचाइ।
कटि कटि बिकटि[4], सुभट[5] झट गिरि-गिरि बरी बरंगन[6] सुर पुरि जाइ।
शसत्रनि की बरखा करि घन सम परे आइ चारहुं दिशि धाइ।
तपसी सुत परवारनि कीनसि[7] कहैं—हतहुं इस, ह्वै न पलाइ॥ ३१॥

निज प्राक्रम संभारनि करिकै गहि कुदंड को तपसि तात।
मरदनि करे दैत बड जोधा, तत तीरन ते हते पपात[8]।
चरन कितिक के गुलफ[9] रू जानू[10] केतिक कट ते कटि गिर जाति।
केतिक रिदे बिदीरन कीन, केतिक भुजा काटि किय घात॥ ३२॥

कटे ग्रीव ते बदन बेधि बहु केतिक मसतक सीस गिरंति।
उठे कबंध अंधगन डोलति दैतनि को काटति बलवंत[11]।
जित कित तपसी सुत को देखति शसत्र उठावति शत्रुनि हंति।
लोथनि[12] गन पोथन को करि कै अति लाघवता करि दिखरंति॥ ३३॥

---

1. कठिन 2. शस्त्र चलाए। 3. अधिक 4. कठिन। 5. सूरमा 6. देव स्त्रियां वर लीं 7. तपी के पुत्र को घेर लिया 8. मार कर धरती पर गिरा दिए 9. रखने 10. घुटने 11. दैत्यों के धड़ बिना सिर के दौड़ते है 12. शव

बेल सुबेल दैंत मथि सगरे, अपर पलाए दह दिशि मांहि ।
रकतबीज के निकटि सिधारे सूधि दीनसि इक तपसी आहि ।
तिस ने करि संग्राम खपाए असुर असंख, बच्यो तहिं नाहिं ।
दुरमद[1] गरबति पुन रण चाहति अरे अगारी को तित जाहि[2] ।। ३४ ।।
पुन चतुरंगनि अधिक पठाई दे करि दान दरब सनमान ।
मुनि नंदन सों सिरज्यो संघर आयुध हतहिं बूंद जिम बान ।
बरख अनेकैं इस बिधि बीते करते घोर घनो घमसान ।
हते जाहिं अरि पुन चढ़ि आवहिं, कहौं कहां लौ जुद्ध कहाँ महान ।। ३५ ।।
संमत ब्रिद बहुत बहुत ही बीते हति हति शत्रु दए खपाइ ।
पुन आवहिं उपजति नित जावहिं बेशुमार मरि हैं रण धाइ ।
ग्रंथ बढ़नि ते कीनि समासं[3] जबि ऐसो संग्राम मचाइ ।
उठी चंडिका सहित कालका क्रोधा लै शकती समुदाइ ।। ३६ ।।
भई युद्ध महिं बिदत भवानी गण अनेक भैरव दरसाइ ।
मारि मारि असुरन पर करि कै एकहि बार परे अरि राइ ।
गुरजनि गदा गरव गहि पाथर, रथ माथे थित[4] मथहि रिसाइ ।
श्रोणत निकसति अचति[5] कालका किलकत कहि कहि कटक खपाइ ।। ३७ ।।
इम करि जतन अनेक बिधिनि के सभि दैंतन दल कीनसि हानि ।
अपराजिता,[6] भगवती, भीमा, भद्रा, अभै, भैहरा जानि[7] ।
परम प्रसीदति उतफुल नयना[8] जनु अरबिंद मोर मिखि भानु[9] ।
असुर असंखन ते करि प्राक्रम बिजै लई रिपु सभि छै मानि ।। ३८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुर प्रिथम जनम' प्रसंग बरनंन नाम पंचासती अंशु ।। ५० ।।

---

1. घमंडी । 2. उसके आगे कौन डटे । 3. संक्षिप्त । 4. रथ के आगे बैठकर । 5. पीती है । 6. अजित । 7. ये सारे नाम भवानी के हैं । 8. प्रफुल्लित नैनों वाली । 9. सवेर के सूरज को देखकर ।

अंशु ५१

पूरब जनम प्रसंग

दोहरा

'भो देवहु ! तुम सभि लखहूं जथा भगवती जीत।
पुर्नहि पुरख कउ पेखि करि परम प्रसीदति चीत ॥ १ ॥

सवैया छंद

हे तपसी के तपु पुरशोतम,[1] अबिनासी की अंस समेत ।
करि प्राक्रम रिपु घात पपाते[2] अनगन परे अयोधन खेत ।
दारुण दुसहि मचायो संघर सुनति गरजना दुशट अचेत[3] ।
भए अधीर भीरुता[4] धरिकै रहे समुख गे म्रितू निकेत ॥ २ ॥
कीनसि बहु सहाइता मेरी हति के दैत भीस[5] समुदाइ ।
एक बेर तुम मोहि बुलावहूं तबि आवहुंगी मैं हरिखाइ ।
मेरी बहु प्रसंनता तुव पर बंरब्रह[6] लिहु जिम उर आइ ।
अबि सरीर जो धारनि कीनो चिरंजीव होवहु सुख पाइ ॥ ३ ॥
जदा चहहु चित, तदा तिआगहु लाखों संमत जरा[7] न आइ ।
तपनि तपहु अति उग्र तेज हुइ दुशट दमन निज नाम धराइ ।
संगति बनहि असंख अनिक थल, मम सरूप ही है जिस भाइ ।
इसी बेस महि बेन रहो नितु, जबि कबि जहिं कहिं करवि सहाइ[8] ॥ ४ ॥
बाक बिशारद द्रुगा बाक को सुनति पुरख ने भाख्यो बैन ।
नाम सिंह को धारन करि हौं खुल्हे केस, कट तागे हैं न[9] ।
उग्र तेज शत्रुनि को पाखहुं हति मलेछ, हे पंकज नैनि ।
रचना अपर बचन की पदवी भोग भोख जुग मिलहिं सुखैन ॥ ५ ॥

---

1. हे तपस्वी के तप रूपी पुत्र पुरुषोतम 2. मार गिराए 3. तेरा गर्जन सुनकर दुष्ट जड़ हो गए 4. कायरता 5. भयंकर 6. वरदान मांग ले 7. लाखों वर्षो तक बुढापा न आए 8. सहायता करुंगी 9. गले में जनेऊ नहीं है

दुशट अधरमी सों करि संघर मारग धरम रहे थित छाइ।
जित कित हतहिं मलेछन गन को, बधहि युद्ध, प्रिय युद्ध मचाई।
दूशट दमन ते देवी सुनि करि कही भविक्खयत बात सुनाइ।
पूरब भाग चतुरथे जुग[1] को तबै समो ऐसे बनि आइ ॥ ६ ॥

मोहि अवाहन को तुम करि हो अभिबांछति बर को चित चाहि।
मैं तबि शबद प्रकाशनि करि कै प्रविशावों सभि बिधि तुम माहि।
निज कुटंब को मोह न करीअहु रहो समान दुंद[2] उपजाहि।
तावत इस सरीर को धारहु, तप प्रिय तप कहु तपउ उमाहि[3] ॥ ७ ॥

तबि अबिनाशी नर तन धरि है[3] नौ मूरति बरतहि जग बीच।
दसम सरीर उपजि है तेरो प्रविशहि जोति महां हित सींच।
एकंकार रूप मैं लै हुइ पंथ प्रकाशहि दे रिपु मीच[4]।
धरम थिरहि, बिथरहि जसु पावन, करहिं उधारनि ऊच रु नीच ॥ ८ ॥

इम कहि जगत ईशरी तहिं छिन उपजायो उर प्रेम अपार।
लगी चाटिवे, अंगनि सूंघति जथा बतस को धेनू प्यार[5]।
हे सुत ! इह क्रिपान लघु लीजहि निज तन सों नित रखहु संभारि।
सिंह खाल से होहि खालसा छत्री पद सभि आयुध धारि ॥ ९ ॥

तेज सिंह को सदा पुरोगम रहित सहत जे सिंह उदार[6]।
पीछे पछुतावा हुइ तिन महिं उर उनमाद वसतु ते धारि।
कशट देहि को तोहि पंथ कहु उबरहि मरहि सु जुद्ध मझार।
इम कहिकै अर बहु हित करि कै प्रेम साथ तन सरब निहार ॥ १० ॥

भई सु लोप भगवती तहिं ते, दुशट दमन निज नाम धराइ।
तपसी पुरख गयो पित के ढिग, दरशन देखति सीस निवाइ।
पुत्र बिलोकति हरखति हुइ करि, दुरगा बर लखि बाक अलाइ।
शकती करि प्रसंन हे सुत तव, बर लीनसि करि कै चित चाइ ॥ ११ ॥

जुद्ध करनि को बर इह लीनसि, युद्ध हेतु ही मैं उपजाइ।
अधिक जुद्ध हित करता शरधा जुद्ध सु अनदिन रिदे बसाइ।

---

1. चथुर्थ युग, कलियुग 2. फसाद 3. उत्साह से तप करो 3. तब अविनाशी-ईश्वर मनुष्य का रूप धारण करेगा 4. मौत 5. अंगों को चूमती है जैसे गाय बछड़े से प्यार करती है 6. मर्यादा वाले सिक्ख जो होंगे उनमें शेर का सा बल होगा

रच्छया मोहि करहु इम जानह[1] आरबला[2] बालिक जबि पाइ।
तबि मैं रण नहिं करवि बिलोकन हे सुत इसको रचहु उमाइ ॥ १२ ॥

जिम गोभी[3] तूरू हुइ उतपति तिम उपज्यो मुझ ते हे नंद।
लोक स्रबोतम ते छित प्रापति यांते नाम सु होति गोबिंद ।
सिंह सु पद देवी दिय पूरब अबि तुम तप को तपह बिलंद।
समो आइ तबि बिदतहु जग महिं ब्रिधहि तेज बड सूर मनिंद ॥ १३ ॥

कहे पिता के उग्र सूरमा महां प्रतापवंत धरि धीर ।
तेजवंत धरमातम सद ही अति उदार गुणनिधि बरबीर।
ब्रिदं अंरिदम[4], आयुधधारी, अजर जरन कहु रिदा गंभीर ।
पर उपकार करनि अभिलाखी तरनि ग्यान कहु, कर धन तीर[5] ॥ १४ ॥

खड़ग महां खर निरमल धरता, महां करम करता दुसहार[6] ।
अभिबंदन चरननि पर धरि कै, आइसु रावर की सिर धारि ।
कह्यो आपको मैं सभि करि हौं सरब प्रकार सदा अनुसारि ।
इम करि गए तबहि तन तापनि अबिक भांति के तपे उदार ॥ १५ ॥

कानन महिं बड उच्च पहारनि, दरी कंदरा नदी बिसाल ।
देश अगम महिं नीर न तीरहि[7], बैठहिं तप तापहिं दुख घाल[8] ।
जे बिसतरति पुलन के थल हैं[9], निरजल बिखे बसे चिरकाल ।
मन इकाँत करि पौन रोध[10] करि लगी समाधि रहे हित नाल ॥ १६ ॥

कबि जल पीवहिं, कबहि न पीवहिं, थीवहिं निराहार थित होइ ।
आतप, बरखा सीत सहारहिं, रहहिं अडोल अबोल खलोइ ।
कहति बिधाता, सुनहु सुरहु सभी ! सभापति की अबि सोइ ।
निज सिक्खयनि जुति नर तन धरि कै पंथ प्रकाशहिं तेज अखोई[11] ॥ १७ ॥

सुनि करि सुर उर अचरज धरि करि लखि भविक्खयति सभिही बात ।
जित कित देश देह नर धरि कै कौतुक पिखनि चहति सभि भांति ।
हिंदु जमन[12] की दुरमति लखि करि करता पुरख भगत सुखदात ।
निज गन सो आयसु उस दीनसि 'गमनहु के बिबान अविदात ॥ १८ ॥

---

1. मैं यह जानता हूं 2. आयु । 3. अंकुर 4. समूह शत्रुओं का दमन करने वाला 5. हाथ में धनुष और तीर धारण करने वाले 6. असह्य 7. जहां पर जल नहीं है 8. दुःख से परिश्रम करके 9. मरुस्थल 10. हवा को रोककर 11. अनश्वर तेज 12. यमन

रूप तपो मै[1], तप को तापति अतिशै तपसी तम महिं प्यार ।
मोहि समीप जाइ अबि आनहुं घोर तप्यो तप दरस उदार ।
संमत बिते असंख जिसी कटु मम सरूप सों इकता धारि ।
मोहि रूप महिं उचित मिलनि कौ असथि मात्र जिस गात निहार ॥ १९ ॥
हेम कूट के सपत शिंग शुभ सभिनि बीच बर स्रिग सुहाइ ।
तिस पर खरे करहिं तप दीरघ अचल शुशक काशट समताई ।
सुनिगन ले बिवान कउ गमने जिस की शोभा कही न जाइ ।
सुंदर बंदनवार दरन पर मुकता महित प्रकाश कराइ ॥ २० ॥
दिनमण[2] सम मणि गग की जड़ती अहित प्रकाशक कमल बनाइ ।
हीरे कोरदार करि कोरन पौरन पद्मराग छबि छाई ।
हंसनि की प्रतिमा घर चित्रति[3] ऊपर कलस उरध दिपताइ ।
जाल किंकणी करति कुलाहल[4], मन अनुसार चलनि सभि थाई ॥ २१ ॥
मुकता जाली ज्वलति झरोखनि रंम्य मनोहर दिपति बिमान ।
आसतरन बर म्रिदुल कलति करि[5] सुंदर धरे सुभग उपधानु[6] ।
शयामल रकत रंग ते आदिक लगे रतन हीरे दुति खान ।
जांहि देश जिस, देखै को तिह, करैं परस्पर 'है इहा भानु' ॥ २२ ॥
सपत शिंग के के मध्य शिंग पर थिर्यो आइ गन सहत बिमान ।
सादर बिनै सुनावनि कीनसि हे तपुधन ! तप रूप महान ।
तप अधिको तुम, तपहि बिथारहु तप साधक तुमरे न समान ।
पूरन करहु कामना तन की पुरशोतम परमारथवान ॥ २३ ॥
परमेशुर, परमातम, पूरन, परम पुरख आवाहनि कीनि ।
करहु अरूढ़नि बर बिमान पर, दरशन लेहु सफल निज चीनि ।
अखिल लालसा पुरवहु अपनी, तुम सभि ग्याता परम प्रबीन ।
तप ते शांति करहु उर अंतर, आइसु मानहु बिलम बिहीन ॥ २४ ॥
श्री मुख प्रभ अकाल की आग्या सुनति भई पुलकावल आइ ।
उर अनंद, अश्रु भर आए, प्रेम बिखै गद गद बच गाइ ।

1. तपमय 2. सूरज 3. घर में हंसों की मूर्तियां बना रखी हैं 4. चलते समय तड़ागी की झंकार होती है 5. अच्छे ढंग से सजाया हुआ 6. तकिए

क्रिश तन जुशट पुशट रिशटे अति[1] सिक्खयनि को[2] शुभता दरसाई।
आस्वान करि सभिहिनि केरा म्रिदुल सुखदकहि श्रेय सुनाइ ॥ २५ ॥

करी अकाल पुरख दिशि बंदन पहुंचे पुनहि समीप बिमान।
झालर मुकता लरकति चहुंदिशि बीच बैठका बनी महान।
तीन प्रदच्छन दीनसि फिर करि नम्री होइ अरूढ़े जान[3]।
परम गुरू महिं मन को कीनसि गमन चह्यो दरशन इच्छ ठानि ॥ २६ ॥

इति श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'पूरब जनम प्रसंग' बरनंन नाम एक पंचासती अंशु ॥ ५१ ॥

1. अति दुर्बल शरीर हृष्ट-पुष्ट हो गया 2. तपस्वी के शिष्यों को 3. फिर विमान पर सवार हो गए

अंशु ५२

श्री अकाल पुरख सों मेल प्रसंग

दोहा

कर्यो गमन को मुनि जबहि, वेग बिसाल बिमान ।
तूरन ही ऊरध उठ्यो, चल्यो जाति जिम भानु ॥ १ ॥

स्वैया छंद

बेग विमान समान जु मन के[1] निमख बिखै पहुंच्यो दरबार ।
छरीदार दरशन प्रिय ठांढे, सिंहपौर जनु रजत पहार[2] ।
सूरज समसर महिद प्रकाशक, कवि समरथ को करहि उचार ।
तहिं ते उतरि खरे तबि दरसे मुख मंडल जनु चंद उदार ॥ २ ॥

सुन्दर दरशन मंदर दर पर[3] मंदहास, त्रिदुशवर मुदपाइ ।
सादर अग्रलैन को आए मिले संग लै चले लवाइ ।
गए, प्रभू के दरशन करि कै करी दंडवत प्रेम बधाइ ।
पुट लोचन ते रूप अमी निधि पान करति बहु, नहिं त्रिपताइ[4] ॥ ३ ॥

हाथ बंदि पुन वंदन धारी ठांढे भए निम्रता साथ ।
कहे नाम जो बीच 'जायजी' बरनन करे सतुति की गाथ ।
कहि करि मुखि ते 'नमहि नमहि प्रभु' बारंबार निवायव माथ ।
सरबजोति की जोति रूप तुम, अखिल लोक नाथनि के नाथ ॥ ४ ॥

भुजंग प्रयात छंद

नमो सत्यं नामं[5] ! नमो सत्य रूपं । चिदानंद एको, अनामै, अरूपं ।
नमो बीज बीजं, महाने महानं । समानं सभूतं, भविक्खयं, भवानं[6] ॥ ५ ॥

---

1. विमान की गति मन के समान तेज है 2. सिंह पौर मानो चांदी के पहाड़ की भांति है 3. मन्दिर के द्वार पर सुन्दर दर्शन वाले मुस्करा रहे हैं 4. नेत्र रूपी डोनों से स्वरूप रूपी अमृत पीकर तृप्त नहीं होते 5. सत्यनाम वाले 6. भूत, भविष्य तथा वर्तमान में एक रस

नमो नाथ पूरे सदा सिद्ध दाता । महांदेव देवं, विधातै बिधाता ।
जुगीसं, भुगीशं, अधीशं, अनीशं[1] । सहस्त्रै सु सीसं[2] ।। ६ ।।
सहस्त्राछ श्रोणं,[3] सहस्त्रै सु घ्राणा[4] । सहस्त्राननं,[5] जै, सहस्त्रै सु प्राणा[6] ।
नमो तीन रूपा, नमो तीन हीना । नमो पंच मूलं नमो पंच कीना[7] ।। ।।
अरूपं, अनंगे,[8] अभंगे,[9] अनासै[10] । समसतं उपावै, समसतं प्रकाशै ।
समसतं संघारैं, समसतं अलंबो[11] । नमो शेख साई थिरो जाति अंबो[12] ।। ८ ।।
नमो दाड़गाढ़ं[13] करालै बिसालं । नमो खड़ग केतं महा काल कालं[14] ।
नमो चार चारु सरुपं बिराजै । सदा जै, सदा जै, सदा जै, सदा जै ।। ९ ।।
नमो युद्ध युद्धं, नमो शांति शांत । नमो अन्धकारं नमो जोति जोतं[15] ।
समसतं बिखै नीत तो मैं समसतं । नमसतं नमसतं नमसतं ननसतं ।। १० ।।
सदा मंडलाकार जोती अखंडं । अनादं, अनंतं, अदंडं, प्रचंडं ।
सतं लोक सीसं, पगं है पतालं[16] । ससी सूर नेत्रं, सुखं ज्वाल ज्वालं ।। ११ ।।
क्रिपालं, अकालं, दुकालं[17] प्रणासी[18] । सदा जै, सदा जै, नमो जोतिरासी[19] ।
चिदानंद संगी सदा संग सोहै । नमो है, नमो है, नमो है, नमो है ।। १२ ।।

दोहा

वार बार करि कै नमो पद पंकज सिर राखि ।
कह्यो 'मोहि आग्या दिजै जिम रावरि अभिलाख ।। १३ ।।

सवैया

श्री पुरशोतम श्री परमातम श्री परमेश्वर पावन पूरन ।
देखि क्रिपाल बिसाल प्रसीद कै जां दरसन को पावनि कूर न[20] ।
रूप अनंत अनादि प्रभु निज दासन केर सहाइक पूरन ।
जां पद के नख सुंदरता लखि आन तिलोक बिखै सम रूर न ।। १४ ।।

---

1. पृथ्वी के राजाओं के राजा और सेनापतियों के सेनापति 2. हजारों बाहें और हज़ारों सीस हैं 3. हजारों नेत्र 4. नाक 5. हजारों मुख 6. आप हजारों के प्राण हैं 7. पांच तत्त्वों के कर्त्ता 8. अंग रहित 9. अविनाशी 10. आशा रहित 11. आश्रय हैं 12. प्रलयकाल में जल पर शेशनाग पर सोकर स्थित होते हैं 13. पक्के दांत 14. काल के भी महा काल 15. हे अन्धकार रूप और ज्योतियों की ज्योति 16. पाताल में चरण हैं 17. दोनों समय—जन्म—मरण 18. नाश कर्त्ता 19. ज्योतियों की राशि 20. झूठे नहीं—जिसके दर्शन को प्राप्त कर सकते

सवैया छंद

धुनि गंभीर सघन म्रिदुला बहु बोले बाक मंद मुसकान।
'दुशटदमन ! सुनि पथ मै उपज्यो, कर्यो तपीशुर ने मम ध्यान।
अपने तप प्रभावति कीनसि कारन करिबे जुद्ध महान्।
याँते अंस अहैं तूं हमरी तपे महां तप क्वै न समान[1] ॥ १५ ॥
नहीं किसू भी तप्यो इतो तप तीन जुगनि लौ कीनि महान।
अबि अवतार प्रिथी तल धरिकैं मोरे काज करहु बच मानि।
दुशट जमन ने भिशट हिंन्द किय[2] तुम अलंब होवहु सवधान।
मानुख तन धरि लीला निज करि सत्यनाम भगती दिहु दान ॥ १६ ॥
सुनि कै धुशट दमन कर जोरे 'तहां जानि मैं बिघन बिसाल।
अनिक भांति की होंहि प्रबिरता[12] अरु बहुवध्यो कलीको काल।
चरन आपके सुरत चुभी मम, टिक्यो अधिक मन प्रेम रसाल।
चित महिं नहीं जानि अभिलाखा इक रस रच्यो सरूप संभालि ॥ १७ ॥
सुनि कै प्रभु ज्यों क्यों समुझायो श्री देवी को कह्यो ब्रितांत।
'भए लबध बर शकती ते तुम[3], सोपि समो आयो निजकात[4]।
पंथ खालसा सिरजनि उत्तम मारग भगति प्रेम अविदात।
छत्री धाम नहीं जग दिखीयति, भए मलेछ, अचारण घात[5] ॥ १८ ॥
रच्यो जगत जबि पूरब हम ने उपजाए बलि दैत बिसाल।
महां दीन[6] लौ बहुत पठाए तिनहुं चलाए निज निज चाल[7]।
सत्यनाम उपदेश न कीनसि पारब्रह्म की नहीं संभालि[8]।
अबि तुम सुगम चलावहु नीके रहिति कहति के सहित रसाल ॥ १९ ॥
इम कहि दुशट दमन कहु बहु बिधि अपने अंक बिखै बैठाइ।
'मैं अपना सुत तोहि निवाज्यो पंथ प्रचुर करीअहि जगजाइ।
श्री नानक की जोति महां वलि नवम् सरीर बिखै प्रविशाइ।
सो तपसी है पिता तुहारो शांतिमतती सभि सों समताइ ॥ २० ॥
प्रथम जनम जिम हुतो शांतिमति दुतिय जनम महिं तिसै समान।
जोग जग्य करि मोहि अराधति चहति पुत्र तुम को तिस थान।
श्री नानक की जोति उदारा प्रविशहि तुम महि इकता ठानि[9]।
मोहि सरूप होइ करि को महिं, लैता प्रापति महिद महान ॥ २१ ॥

---

1. तेरे समान कोई नहीं है 2. दुष्ट यवनों में हिंद को भ्रष्ट कर दिया है 3. प्रवृत्ति 4. आपने देवी से वरदान प्राप्त किया था 5. नज़दीक 6. शिष्ठाचार का घात 6. मुहंमद—मुसलमानी धर्म का बानी 7. अपना-अपना ढंग 8. प्रभु चेते नहीं किया 9. एक रूप हो जाएगी

मम सुत तूं हैं मम सरूप ही, पिता पुत्र महिं भेद न होइ।
धरम करहुं बिदतावनि जग महिं तुझ बिन अपर समरथ न कोइ।
पुत्रादिक महिं रहिन अमोह, रिपुनि हतनि को आलस खोइ।
सिमरन सत्तिनाम परबिरतहु छत्री पंथ उपजि है सोइ' ॥ २२ ॥

इम कहि मसतक सूंघत देखति जिम् मित ते सुत किते सिधाइ।
म्रिदुल मधुर सारथ पुरशरथ श्रेय भरे शुभ बाक सुनाइ।
सुनि कै दुशट दमन हुइ ठांढो, हाथ जोरि करि बिनै अलाइ।
'पंथ चलहि तबि जगत मझारे जबि होवहु तुम आप सहाइ' ॥ २३ ॥

आइसु मानि सीस पर प्रभु की बार बार अभिबंदन कीनि।
करता पुरख अकाल क्रिपाल एकंकार सु गुरु प्रबीन।
होइ बिसरजन तजि दरबारहि, आए पिख्यो बिमान असीन।
नमो करति ही तुरत प्याने निज आश्रम को पहुंचे चीन ॥ २४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री अकाल पुरख सों मेल' प्रसंग बरननं नाम दोइ पंचासती अंशु ॥ ५२ ॥

अंशु ५३

श्री गुरु प्रयाग सथित प्रसंग

दोहरा

सगरे सिक्खय हकारि कै दियों ब्रितंत सुनाइ ।
धरहिं धारतल जनम को श्री गुरु[1] आइसु पाइ ।। १ ।।
तुम भी चलि सभि देश मैं धरहु सु नरनि सरीर ।
छत्री धरम बिबाहिकै जुद्ध बिखै बनि बीर ।। २ ।।

सवैया

केस रखो कछ ऊपर बेस मैं[2] आयुध धारि मचाइ लराई ।
शत्रुनि जीतहु तौ थित पावहु राज करहु सुख लै समुदाई ।
नांहित जुद्ध मैं कुद्धति ह्वै दिहू प्रान, लहो, ब्रह्म लोक सुथाई ।
श्री गुर देव को[3] सेवनि कै अहंमेव बिना दिहु बंध नसाई ।। ३ ।।
सिक्खनि सों इम कोमल भाखि महांरथ है सभ को सुखदाई ।
'जोग महां तप साधनि आदिक है इन को फलु सो लिहु पाई ।
चीत लगावहु मोहि बिखै, मन संग रहो, पुन ना भरमाई ।
श्री सतिनाम सदा सिमरो कलि काल मैं, अंत समै[4] मिलि जाई ।। ४ ।।

सवैया छंद

दुशट दमन निज रूप रमन सदा, इम सिक्खयन को तप फल दीनि ।
रहित सहित हुइ उर गुर सिमरन, छत्री धरम न्रिबाहि प्रबीन ।
'जनम मरन संकट को त्यागनि नित मम निकटि कि मो महि लीन ।
दुहूं लोक को आनंद दीनसि प्रथम पंथ ते पंथ नवीन'' ।। ५ ।।

---

1. ईश्वर की (आज्ञा पाकर) 2. ऊपर के शरीर में केश और कच्छा रखो 3. ईश्वर को 4. सदैव सुन्दर रूप

सुनि करि सिक्खय अखिल हरखाए हाथ जोरि कै सीस निवाइ।
'महांबाहु उतसाह महातम प्रथम इकाकी रिपु समुदाइ।
सहित सुबेल बैल बड जोधे द्रिढ ह्वै संघर महित मचाइ।
तजे मारगण असुर मारि गण जथा मार गण हति खगराइ[1]' ॥ ३ ॥
वेल सुबेल संघारनि करि कै दुशट दमन निजनाम धराइ।
रण प्रिय रण करि असुर संघारे बीरज[2] धीरज अधिक उपाइ।
मानुख तन लीला मंहि खेलहु जथा आपकी होइ रजाइ।
नतु अबि कौन लरै तुम सम हुइ ओज सु रावरि सहिन सकाइ ॥ ७ ॥
'गुर बर श्री अकाल की आइसु जिम हुइ तिम रहनो बनि आइ।
उतपति पंथ खालसा करि हौं जिस मंहि शकति तेज प्रविशाइ।
रहित राखनी[3], तप को साधहिं[4], सिमरहि सत्तिनाम सतिभाइ।
भो सिक्खहु ! इहु कारज साधो पुरशोतम की पाइ रजाइ ॥ ८ ॥
हिंदु धरम को राखनि करि हौं तुरक तेज तरू को तुखाइ[5]।
दोनहुं पर हुइ पंथ खालसा भोग मोख को करतल[6] पाइ।
जंहि कंहि बिदतहि गुण अनेक जुति रण प्रिय रण को चहति सदाइ।
कली काल मंहि गति सुखेन मंहि दहि[7] बिकार, रहि नाम समाइ ॥ ९ ॥
निज सिक्खयनि रिखि बेखन सो[8] इमु भनी भविक्खयत सभि ही बात।
करे बिसरजन निज निज थावनि जाति बिचारति मति अवदात[9]।
श्री प्रभु दुशट दमन जल मज्यो चढ़े सथंडल पर चित शांति।
कुश बिसतर पर हुइ पदमासन बैठि गए करि कै रिजगात[10] ॥ १० ॥
खैंचि प्राण को जोर पाइ करि दसमो द्वार फोरिब्रो कीन।
जनम धरनि को धरन बिखै प्रभु निज इच्छा ते छोरि सु दीन।
ब्रिंद पुशप ब्रिंदारक लैकरि ब्रिंद्र जिम बरखाइ प्रवीन[11]।
अधिक सुगंधै धूप दीप बहु अति उतसव अपने महि चीनि ॥ ११ ॥
इति श्री तेग बहादर गुरू जी ब्रिंद तीरथनि तीर निवास।
सभि असथान दान दे मानद, पावन ते पावन कर तास[12]।
जग्य होम दच्छना बहु कंचन साधन दिजन रंक जे रास।
अनिक प्रकार कराइ अहारनि देनि अचावति स्वादनि रास ॥ १२ ॥

---

1. तीर चलाकर बहुत से दैत्य मारे जैसे गरुड़ सांपों को मारता है 2. शौर्य 3. मर्यादा के अनुसार चलना 4. तप करना 5. तुड़वाकर 6. हथेली पर 7. जलाकर 8. चेलों के भविष्य की बात कही 9. उज्ज्वल मति वाले 10. शरीर सीधा करके 11. देवताओं ने कई प्रकार के फूलों की वर्षा की 12. हाथों द्वारा दान देकर तीर्थों को पवित्र करते हैं

इम अनेक ही तीरथ करि कै तीरथ राज त्रिवैणी तीर ।
पुंन दान करि दिवस बिताए जोग समाधि बिखै गंभीर ।
करहिं जग्य बहु कंचन देवहिं, पाटंबर पशम्बर चीर ।
बहुत मोल के दुरलभ सुंदर देति बिभूखन मुकता हीर ॥ १३ ॥
बेद पाठि गे बिप सु करमी शांत, दांति[1], सुच, संजम धारि ।
समदर्सी संतोशी धीमति[2] बिनु मतसर मुख म्रिदुल उचारि ।
सहनशील अनुकूली तपके बिद्या महिं अभ्यास उदार ।
सतिबादी परमातम जिनके, सद धरम अपने अनुसार ॥ १४ ॥

सवैया

ब्रिद दिजोतम आइ मिले अस श्री गुरु को जस कान सुने ।
सोढि सु बंस कि भूखन उत्तम धीर उदार बिसाल गुने ।
दान के देति हैं, मान को देति हैं, ग्यान को देति हैं आस पुने[3] ।
नंद को देति अनंद को वेति हैं, रूप मुकंद के बाक भने ॥ १५ ॥
देश विदेशनि ते दिज आवति पावति हैं धन को मन भायो ।
ब्रिद अहार सु कीनसि माधुर पूरक[4], मोदक[5]; पूप खुआयो ।
भूर पंचांम्रित होति रहै नित होम करैं जव घ्रित मंगायो ।
कामना पूरन होति अनेकनि श्री गुरु नै जसु यौं बिथरायो ॥ १६ ॥
राति को ठानि के त्याग महान अलख की सेव करैं डर माँही ।
प्राण निरोधि कै ऊरध को करि मूरध में थिरता, न चलाहीं[6] ।
चंचल जो मन को बास मैं करि प्रेम अगाध ते ना निकसाहीं ।
केतिक काल बितीतहि बैठति श्री परमेशुर मैं थित पाहीं ॥ १७ ॥

दोहरा

इस विधि करी अराधना अलख रूप गुरदेव ।
परम प्रसीदे जानि कै निसबासुर की सेव ॥
दुशट दमन पठिबो करे अपनी अंस सु जान ।
मोहि पुत्र करिबो चहति अस संकलप पछानि ॥ १९ ॥

सवैया छंद

तीरथ राज त्रिबेणी ऊपर बीत गए जबहिं खट मास ।
पुनं दान दिन करति बिताए तहीं आनि कीनसि प्रकाश ।

---

1. इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाले 2. बुद्धिमान 3. आशा पूरी करते हैं 4. पूरियां 5. लड्डू 6. प्राणों को दशम द्वार में स्थित करते हैं

श्री गुजरी गर्भ धार्यो पावन ब्रधै चंद सम चारु उजास[1]।
जहिं कहिं इसत्री जो अविलोकहि विसमहि प्रेत परिसि दुति रास। २० ॥

देखि नुखा को मात नानकी बध्यो अनंदु न रिदे समाइ ।
दान बहुत रंकनि को दीनसि लेति आशिखा को हरखाइ ।
महां प्रतापी सुत के सुत है पति को बाक अबहि बिदताई ।
सकल गुरुनि को महां अराधति करहि तिह्लावल को बरताइ । २१ ॥

महिमा महां पौत्र की जानति यांते उतसव को अधिकाइ ।
मनहिं मनहिं मनावति प्रभु को एकंकार सभिनि को राइ ।
करो मनोरथ पूरन मम अबि रहौं प्रतीखति बरख बिताइ ।
सद बलिहार जाउं तिसदिन पर सुत को सुत जबि मुख दिखराइ॥ २२ ॥

मम सुत के नहिं संतति होई संमत बीते बांछति जाल ।
तीन लोकपति प्रभु परमेशुर मैं जान्यो अभि भयो क्रिपाल ।
पुंज तेज को अधिक प्रतापी जनमहिंगो अस सुंदर बाल ।
धंन भाग मैं बनों दिवस तिस' इम माता को मोद बिसाल ॥ २३ ॥

संगत नित प्रति आइ घनेरी निकटि निकटि चहुं दिशि ते ब्रिंद ।
श्री गुर तेग बिहादर दरसहिं बांछति फल को पाइं बिलंद ।
सुत चाहति, बित केतिक चाहति, को अरोग, चहिं कितिक अनंद ।
केतिक भगति भाउ को जाचति, चहिं सिमरन सतिनाम मुंकद ॥ २४ ॥

उपजहि ब्रह्म ग्यान उर केतिक, नवनिध सिद्धा[2] के चित पांइ ।
केतिक सेवति नित पग पंकज बसहिं निकट दरशन दरसांइ ।
करहि देग को, आनहि जल को बसत्र पखारहिं धीर चित चाइ ।
केचित पवन झुलावहिं गुरु को, को पनही को पौंछ बनाइ ॥ २५ ॥

धरहि भाउ को चरन पखारहिं, को इंधन आनहि हरखाइ ।
सूखम बसत्र मोल बहु दैकै को पोशिश ल्यावैं बनवाइ ।
चीर जनाने जरी जुगत को अरपहि घर सतिगुरु के जाइ ।
आनहिं अंन कितिक बहु श्रेशट सिता घ्रित लंगर महिं पाइ ॥ २३ ॥

कौन कौन सेवा को गिनीअहि करहिं आनि हित निज कल्यान ।
भरी भीर सतिगुरु के चहुं दिशि रहैं नितप्रति हित निज ठानि ।

---

1. सुन्दर उजाला 2. सिद्धि

पाइं सरब कुछ धरहिं कामना, होहि कीरतन सुनहिं सुजान।
लोक प्रलोक सुधार्यों, केतिक सहत सिद्धि के बिदति जहाज ॥ २७ ॥

नमो करनि अविकाश न पावहिं संगति नई हज़ारों आइ।
इक रखसद होवहि* करि वंदन अनिक प्रकारनि जसु बिदताइ।
ल्याइ तिहावल करि अरदासनि दिन प्रति बहुत बारि बरताइ।
'धंन धंन' चहुंदिशिनि सुनावहिं, इम मंगल सुख के समुदाइ ॥ ९८ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'श्री गुरु प्रयाग सथित' प्रसंग बरननं नाम तीन पंचासति अंशु ॥ ५३ ॥

---

*बिदा होता है

अंशु ५४

कांशी आगमन सतिगुर को प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु किरिकै बास तहिं केतिक दिवस बिताई।
भए त्यार आगे चलनि मिलैं मनुज सेमुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

सभि ते रूखसद हुइ गुर चाले। वारन अनिक सजाइ बिसाले।
संग फकीरनि को समुदाइ। कितिक तुरंगनि पर भट जांइ ॥ २ ॥
सिव का डोरे स्यंदन जाति। तजि प्रयाग को गमने प्राति।
थोरे कोसनि डेरा करैं। सने सने आगै चलि परैं ॥ ३ ॥
इस प्रकार गमनति गुरु पूरे। जिहके गुन गन पावन रूरे।
कांशी पुरी पहूंचे जाइ। डेरा कर्यो हेरि सुभ थांइ ॥ ४ ॥
जबि ही संगति को सुधि होई। मिलैं परसपर सिख सभि कोई।
अनिक उपाइन को करि त्यारी। जाइ सु अरपी गुरु अगारी ॥ ५ ॥
हाथ जोरि अरदास कराई। करे भावना गुर ते पाई।
मुक्खि मसंद आइ पग पर्यो। दरब जितिक सभि आगे धर्यो ॥ ६ ॥
जीवन लाभ लह्यो गुर दरशन। आइ कर्हिं पग पंकज परसन।
नाना भांतिनि उतसव करैं। ल्याइं तिहावल आगै धरैं ॥ ७ ॥
कितिक दिवस गुरु डेरो राखा। राखहि संगति करि अभिलाखा।
सिक्ख्नि मन बांछति बर जाचे। देखि भाउ दे सतिगुर साचे ॥ ८ ॥
पसर्यो सुजसु अधिक बिच कांशी। मिलि मिलि नर जित कितै प्रकाशी।
बहु पंडित विद्या महिं निपुंन। आवति हैं गुर के हित दरशन ॥ ९ ॥
संन्यासी बहु तपी* दिगंबर। अनिक भेख जे पहिरति अंबर।
पूछहिं आनि ब्रहम को निरनै। नित प्रति उत्तर सतिगुरु बरनै ॥ १० ॥

*तपस्वी

जस जस जिन जिन बूझनि कर्यों। तस तस उत्तर गुरु उचर्यो।
हरखहिं सुनि उसतति बखानैं। 'जथा जोग जग गुर हम जानैं' ।। ११ ।।
सिक्ख हजारहुं होवति आइ। शारक्त धरि धरि बर को पांइ।
बहु संगति को लग्यो दिवान[1]। हरखति हुइ सतिगुरु बखानि ।। १२ ।।
'इह लवपुरि शिव को महां महातम। रहहिं संत सिख निरमल आतम।
गुरु सिक्खी को कोठा अहै। गुर शरधा उर धरि[2] बर रहैं ।। १३ ।।
पावन छेत्र आदि को भयो[3]। नीलकंठ रुचि सों रचि दयो।
जे मानव बासहिं समुदाइ। गति देवनि महिं बनहिं सहाइ ।। १४ ।।
सिमरहु सुखदा नित सतिनाम। शंकर पुरी बसहु करि धाम।
सुनि करि 'कांशी महिं गुरु आए। केतिक द्योस बसे मन भाए ।। १५ ।।
संगति जौनपुरे की आई। अपर जि गाम नगर गिरदाई[4]।
सुनि सतिगुर को तहिं आगवनू। प्रेम धरे आए तजि भवनू ।। १६ ।।
अनिक अकोरनि को अरयंते। हाथ जोरि करि नमो करंते।
पग पंकज कीं रज को लै कै। सिर मुख पर फेरहिं हित कै कै ।। १७ ।।
जनम लभा सिक्खनि सभि लीना। धरि धरि प्रेम दरस गुर कीना।
इक भाई गुरबखश हुलासी। संगति संग जवन पुर बासी ।। १८ ।।
प्रेमी महां भजन को करिता। रिदै ध्यान सतिगुर को धरिता।
श्री गुर तेग बहादर तीर। कर्यो भजन नित धुनि गंभीर ।। १९ ।।
धरि धरि प्रेम महां धुनि साथ। करहि सुनावनि सतिगुर नाथ।
एक जाम लगि करति रह्यो है। सुनि गुरदेव सु प्रेम लह्यो है ।। २० ।।
क्रिपा निधान प्रसंन बिसाला। इस विधि वर दीनसि तिसकाला।
'सुनि भाई गुरबखश निहाल। नहीं फसहिं निशठुर जमजाल ।। २१ ।।
तुव घर पुत्र होइ है जोई। किरतन करहि भजन को सोई।
तोहि बंस ते किरतन कथा। सुनहि प्रेम धरि संगति जथा' ।। २२ ।।
पुन सभि संगति पग लपटाई। खुशी करी सतिगुर सभि ताई।
तिनके मसतक पर कर धरि करि। हरख महां सिक्खनि उर भरि भरि ।। २३ ।।
बिदा भई गुरु जसु को गावति। बर बहु लै लै उर उगमावति।
इम बहु संगति करी निहाल। कितिक द्योस बसि तहां क्रिपाल ।। २४ ।।
आदि जौनपुरि संगत जेति। भई बिदा लै अभिमति तेती[5]।
पुन श्री सतिगुर कूच कर्यो है। चलनि मनोरथ अग्र धर्यो है ।। २५ ।।

1. सभा 2. हृदय में श्रद्धा रखते 3. काशी का स्थान शुरू से ही प्रविद्व है 4. इर्द गिर्द के नगर 5. सारी संगत इच्छा पूरी करके

सह सराव को चले अगारी। तहिं इक बसहि प्रेम धरि भारी।
गुरु को सिक्ख हुतो अभिराम। चाचा ढग्गो तिस को नाम ॥ २६ ॥
गुरुमुख सो सतिगुर को प्यारो। प्रकट प्रेम ते प्रण तिन धारो।
नवों सदन अपनो चिनवाइव[1]। ऊचो द्वार बड़ो रखवाइव ॥ २७ ॥
अंदर मंदर सुंदर कीनि। अजर[2] चार चौकोन नवीन।
आछे दर तिनके रखवाइ। रचवावहि सभि आप बताइ[3] ॥ २८ ॥
इक दिन संगत भी इक ठौर। हेर्यो सभिनि वहिर को पौर।
घर प्रमान ते बड़ो करायो। रिदै बिखै संसै उपजायो ॥ २९ ॥
बूझनि कर्यो सभिनि ने ऐसे। पौर इतो करिवायहु कैसे ?
सरब सदन को तज्यों प्रमान[4]। राख्यो द्वारा कुतो महान ? ॥ ३० ॥
सुनि फग्गो ने उत्तर दीना। सदन चिनावति मैं प्रण कीना।
सतिगुरु आवहिंगे मम डेरे। अंतर जामी घट घट केरे ॥ ३१ ॥
तिन के हित मैं कर्यो निकेत। प्रण पूरहिं पिखि प्रेम समेत।
शसत्रनि सहति अरूढ तुरंग। आवहिंगे जबि भए उतंग ॥ ३२ ॥
वहिर नहीं प्रभु उतरनि करैं[5]। चढ़े तुरंगम मम घर बरैं।
उतर सिंहासन पर थिर जाइ। वहिर उतरि नहिं पग सो आइ[6] ॥ ३३ ॥
यांते रच्यो बड़ों मैं पौर। मैं हेरौं सतिगुर सिर मौर।
क्रिया करहिंगे आवहिं घर महिं। सहित प्रेम के शरधा उरमहिं ॥ ३४ ॥
कहति संत अरु वेद पुरान। इस विधि की महिमा भगवान।
पूरन करहिं प्रत्तग्या दासनि। सुनि करि ससै कीनि बिनाशनि ॥ ३५ ॥
बिद्या बुधि अरु दरब समाज। ऐश्वरज बड़े सु देशनि राज।
अपर अनेक भांति बडिआई। तपनि घोर तपते[7] समुदाई ॥ ३६ ॥
नहिं देखति तिन को प्रभु भूल। रहैं प्रेम के नित अनुकूल।
दासनि पास दोर करि आवहिं। जिम जन मन ह्वै तथा करावहिं ॥ ३७ ॥
नाम देव के संग फिरे हैं। छावन छपरी[8] काज करे हैं।
पंडत पंडे कीनि पिछारी। फेरि देहुरा थिरे अगारी ॥ ३८ ॥
धने के बछुरे गन चारे। कीनसि रोटी छाछ अहारे।
बदरीफल सवरी[9] ते खाए। बिदर दास लखि तिस ग्रिह आए ॥ ३९ ॥
श्री नानक आदि जु गुरु भए। इसी प्रकार दास ग्रिह गए।
बरन जाति को नहीं बिचारति। प्रेम हेरि तिस ढिग पग धारति ॥ ४० ॥

---

1. उसने अपना नया मकान बनवाया था 2. आंगन 3. आप वता बताकर 4. अनुमान 5. गुरु जी बाहर नहीं उतरेंगे 6. पैदल नहीं आएंगे 7. घोर तप करते हैं 8. छप्पर बनाना 9. भीलनी

इम गुनु सुनि मैं शरधा धारी। कीनसि निशचै रिदै मझारी।
दास जानि करि आइं ज़रूर। करहिं प्रत्तग्या मेरी पूर ॥ ४१ ॥
इम फग्गे ते सुनि करि सारे। अधिक प्रेम करि शरधा धारे।
गुरु चरननि मैं प्रीति उपाई। सतिनाम सिमरति सुखदाई ॥ ४२ ॥
धंन गुरु जिस के गुन एहु। कोस हज़ारनि जन लखि लेहिं[2]।
हेरि प्रेम न्रिप मन को[1] भारी। गए संगलादीप मझारी ॥ ४३ ॥
दरशन दीनि क्रितारथ कर्यो। गुरु सथापि मंजी बैठर्यो।
अबि लौ श्री नानक को ध्यावति। अनिक प्रकारनि के गुन गावति ॥ ४४ ॥
श्री हरि गोविंद बाहु बिसाला। गमने पुरि कशमीर क्रिपाला।
ब्रिधा सिक्खनी निज़ करकाति[3]। पोशिश पहिराई गुरु गात ॥ ४५ ॥
तिसको प्रेम जानि करि धाए। उलंघे बिखम सैल समुदाए।
कौन कौन गिनीअहिं गुन रूरे। जथा करैं जग सतिगुरू पूरे ॥ ४६ ॥
फग्गो की परतग्या सुनी। सतिगुरू की महिमा बड़ गुनी।
भए सिक्खय प्रेमी समुदाइ। गुर हित रखी वसतु गन ल्याइ ॥ ४७ ॥
सकल प्रतीखति गुर आगवनू। सुंदर भेट धरहिं निज भवनू।
जिम बावन चंदन उपजै है। सभि कानन चंदन बनि जैहै ॥ ४८ ॥
फग्गो ते प्रण सुनि तिम सारे। गुरू उड़ीकति संझ सकारे।
तिन सिक्खयनि के मन की जानि। काँशी ते गुर कीनि प्यान ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'कांशी आगमन सतिगुर को' प्रसंग ब्ररनंन नाम चतर पंचासती अंशु ॥ ५४ ॥

---

1. हज़ारों कोसों पर दास को जानकर 2. राजा शिवनाम का मन 3. अपने हाथों से कात कर

अंशु ५५

फग्गो केर प्रसंग

दोहरा

रतनाकर गुरू ग्यान के देशनि प्याना कीनि।
ऊखर[1] पोखर[2] सभि भरे[3] सिक्खी पंथ नवीन[4] ॥ १ ॥

चौपई

पूरन प्रण हित सिक्ख्यनि केरा। कर्यो कूच काँशी ते डेरा।
खैंचे प्रेम डोर ते दासनि। चले जाति प्रभु हाथ सरासन[5] ॥ २ ॥
भाथा खड़ग बंधि कट संगे। गमनति हुई असवार तुरंगे।
मात नानकी नुखा समेत। डोरे स्यंदन पर छबि देति ॥ ३ ॥
कबि शिवका पर चढहिं गुसाईं। सेन सेन मारग उलंघाई।
पहुंचति भे मिरज़ा पुरि नगरी। सुनि करि गुरु सुधि संगत सगरी ॥ ४ ॥
उपहारनि ले अनिक प्रकारी। आदर हित आए अगवारी।
मिले धाइ करि बहुत उमाहति। जथा त्रिखातुर जल को चाहति ॥ ५ ॥
कर जोरहिं निज सीस झुकावहिं। गुरु के पद अरबिंद लगावहिं।
ले करि संग सिवर करिवायव। करति भए जिन गुरु फुरमायव ॥ ६ ॥
अनिक प्रकारनि की करि सेवा। करे प्रसंन महाँ गुरु देवा।
खान पान की टहिल बिसाला। पुरि की संगति करि तिस काला ॥ ७ ॥
हुती इकत्र जु गुरु की कार[6]। धर्यों आनि करि दरब उदार।
बसत्र बिभूखन सुंदर दीनि। अरपन सकल अकोरन कीनि ॥ ८ ॥

---

1. ऊसर भूमि 2. छप्पड़ 3. सिक्ख धर्म रूपी जल से भर दिए 4. नया सिक्ख मार्ग 5. हाथ में धनुष धारण करके 6. भेंट

इक दुइ करि मुकाम गुर चलैं। मग मैं बहु सिख संगति मिलैं।
अरपि उपाइन बंदन ठानैं। जाचहिं बर को बिनै बखानैं ॥ ९ ॥
करति जाति सतिगुरु निहाल। अनिक नरनि के बंधन टालि।
जै जैकार होइ तहि रह्यो। पुरि ग्रामनि सभि ने जसु कर्यो ॥ १० ॥
जथा महा घन उमडहि सावन। थल उच्चावच[1] करहि बसावनि।
तपत हरहि सभि की इकसार। तथा निहाल करति इकबार ॥ ११ ॥
चलति चलति क्रमनाशा[2] सलिता। तहां आइ हेर्यो जल चलता।
उतरि तहां कीनसि इशनाना। जे अपवित्र अहै असथाना ॥ १२ ॥
सतिगुर परसे होहि पुनीत। महां दोश तिस जाइ बितीत।
पुन संतनि सों बाक बखाना। हुतो त्रिशंकू[3] भूप महाना ॥ १३ ॥
मुनि गन तीरथ गन जल लीनो। तिस न्रिप को मजनावनि कीनो।
तिस ते नदी कहैं क्रमनाशा। अबि ते भई कुकरम बिनासा[4] ॥ १४ ॥
गमने सतिगुर गए अगारी। सहसराव के पहुंचि मझारी।
सभि को त्याग इकाकी भए। निज तुरंग को बेग चलाए ॥ १५ ॥
कह्यो पिछारी सगरे आवहु। मंद मंद मारग गमनावहु।
हम नै करनो काज अगारे। इम कहि सतिगुर बेग सिधारे ॥ १६ ॥
चाचा फग्गो के घर गए। करी प्रतग्या पूरति भए।
पौर सदन को बडो चिनायो। प्रेम डोर गुर ऐंचि मंगायो ॥ १७ ॥
वाहन चढे अजर महिं आवैं। इम प्रण ठान्यों प्रीत वधावै।
श्री गुरु तेग बहादुर चंद। आए चढे तुरंग बिलंद ॥ १८ ॥
गर शमशेर[5] सुहाइ निखंग। हाथ सरासन दीरघ अंग।
बाज अरुढे अंतर बरे। अजर रूचिर महिं शोभति खरे ॥ १९ ॥
इत उत नर हेरहिं समुदाइ। 'इह को नभ ते' उतर्यो आइ ?
महाराज सम बड उतसाही। कित ते शंकमान चित नांहीं ॥ २० ॥
बदन प्रफुल्लिति कमल समान। नेत्र बिसाल क्रिपाल सुजान।
दीरघ भुजा शस्त्र सभि धारी। गर जामा जिनके दुति भारी। २१।
आइ अचानक प्रविशे धामू। न्रिभै सभिनि ते तन अभिरामू।
भए अचंभै देखति रूप। जनु उतर्यो इह देव सरूप ॥ २२ ॥
मसतक महां दिपत है जोति। अहिलादक जनुचंद उदोति।
तबि चाचा फग्गो चलि आयो। ठांढे अजर गुरु दरसायो ॥ २३ ॥

1. ऊँचा नीचा 2. नदी का नाम है 3. राजा का नाम 4. अब नाम कुर्कमनाशक बन गया है 5. तलवार

निशचै भयो न—हैं गुर एही। खिच्यो जाति मनलऊ सेनही।
बिकसति जाति बदन जलजाता[1]। देखति रिदा उमगि हुलसाता[2] ॥ २४ ॥
सहज सुभाइक प्रेम बधंता। खरे समुख चित महिं चितवंता।
बूझि न सकहि तेज दरसंता। पिखि बिसमति बोले भगवंता ॥ २५ ॥
हे फग्गों। तैं प्रण अति धार्यो। घर को पौर बिसाल उसार्यो।
हम अति दूर, न रिदे बिचार्यों। किम आवहिं गे, नहिं निरधार्यो ॥ २६ ॥
पंथ सैंकरे कोसनि केरा। किते दिवस महिं पहुंचै डेरा।
बिना बिचारे प्रेम महाना। संगति मैं सुनाइ प्रण ठाना ॥ २७ ॥
तुम मनशा के पूरन हेतु। सदन प्रवेशे बाज समेत[4]।
तोर प्रतग्या पूरन करी। जिम इच्छा तिम करि इस घरी ॥ २८ ॥
सुनि फ़ग्गो को निशचै भयो। इह गुर तेग बहादर अयो।
ततछिन उमग्यो रिदे बिलंद। देखि चंद को सिंधु मनिंद ॥ २९ ॥
भरे बिलोचन महिद अनंद। मुकता सम छुटति जल बुंद।
मुख परफुलत अशु के संग। त्रिपति न देखति चढे तुरंग ॥ ३० ॥
भा सथंभ कुछ कह्यो न जाई। रुक्यो कंठमुख गिरा न आई।
चखनि सपलक थिर्यो रहि आगे। बहुर पाइ सुधि को बडभागे ॥ ३१ ॥
पूजति रह्यो जिसे दिन राती। हुतो प्रयंक रच्यो शुभ भांती।
करि तूरनता आनि उसायहु। सुंदर आसतरन सो छायहु ॥ ३२ ॥
धरे मुलाइम बर उपधानु। रेशम डेरैं तनी महान।
जाइ रकाब गही तबि हाथ। तुरंग उतारे श्री गुर नाथ ॥ ३३ ॥
सिंहांक्षन पर तबहि बिठाए। पर्यो डंडबत गुर अगवाए।
बारि बारि अभिबंदन भूम। पग पंकज गहि आनन चूंम[5] ॥ ३४ ॥
ले गुरु की पनही[6] निज हाथ। तिस ते धूल लगावति माथ।
हाथ जोरि हुइखरो अगारी। बारि बारि होवति बलिहारी ॥ ३५ ॥
'श्री गुरु ! तीन लोक के सुवामी। सदा सभिनि के अंतरजामी।
कौन रंक मैं' चलि घर आए। बिरददास बतसल तुम गाए[7] ॥ ३६ ॥
दीन बंधु है नाम तुमारा। राखहु लाज बिदति संसारा।
तुम बिन इम गुन महिं किस मांहूं। निरधन के धन हो सभि कांहूं[8] ॥ ३७ ॥
सहसराव के पुरि महि सारे। सुनि सुनि सिख हरखति उर भारे।
जो जो वसतु धरी गुर हेतु। सो सभि लै लै प्रेम समेत ॥ ३८ ॥

---

1. कँवल (की भांति) 2. प्रसन्नता से 3. उच्छलता है 4. घोड़े सहित 5. मुंह से चरण कँवल चूमे 6. जूता 7. आपका बिरद है भक्त वतसल्य 8. आप सबके है

अनिक अकोरनि कर धरि आए। देखति दरशन सीस निवाए।
कर जोरहिं अरु बिनै बखानहिं। करहिं तिवाहल को बहु आनहिं ॥ ३९ ॥
क्रिपा सिंधु सभि की दिशि देखि। करहिं खुशी लहि अनंद विशेख।
उतसव ठानहिं अनिक प्रकारी। धूप धुखाई[1] आरती उतारी ॥ ४० ॥
फूलनि माला रचहिं बिसाले। बहुत सुगंधति गुर गर डालें!
मेवे मधुर मधुर फल ल्याए। भोजन हेतु अंन समुदाए ॥ ४१ ॥
मात नानकी नुखा समेत। आइ बास किय तिसी निकेत।
डेरा अपर बहिर सभि होयो। नर नारिनि मिलि सतिगुर जोयो ॥ ४२ ॥
हेतु देग[2] के श्रेशट अंन। गन आनहिं चहिं गुरु प्रसंन।
दुगध घ्रित बहु बिधि मठिआई। सूखम चावर फल समुदाई ॥ ४३ ॥
अनिक बिधिनि करिवाइ अहारे। सतिगुर को अचवावनि धारे।
ब्रिंद सिक्ख बैठति हैं पास। गुर को बाक सुनहिं सुखरास ॥ ४४ ॥
केतिक दिन तहिं कीनसि डेरा। पूर्यो प्रण बहु सिक्खनि केरा।
जो जो गुरु हित जिस जिस राखा। सो सो अरपति पूर भिलाखा ॥ ४५ ॥
सभि सिक्खयनि पर खुशी भए हैं। रिदै मनोरथ पूर दए हैं।
पुन चहि गमन्यो गुरु अगारी। कवि संतोख सिंह ह्वै बलिहारी ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादिश रासे 'फग्गो केर' प्रसंग बरनन नाम पंच पंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

1. धुप जलाकर 2. भोजन—लंगर के लिए

अंशु ५६

साहसराव को डेरा प्रसंग

दोहरा ॥

बिहस कह्यो सतिगुरु तबहि फग्गो निकटि बुलाइ ।
'सिक्खनि ग्रिह ते कार गुरु के कीनसि इकथाइ[1] ॥ १ ॥

चौपई

सो अबि अरपन की जहि आनि । हम चाहति आगै प्रसथान ।
हाथ जोरि तिन सकल सुनाई । कह्यो जु मैं आगे इकथाई ॥ २ ॥
सो गिन गिन पैसे लग[2] सारे । हुंडी को कराइ बहु बारे ।
रह्यो हज़ूर पुचावति सोई । छानी[3] नहीं आपने कोई ॥ ३ ॥
अबि बाकी जेतिक धन कीना । सो सभि चहों आप को दीना ।
इम कहि दयो दरब को आनि । जो सिक्खयनि ते लीनि महान ॥ ४ ॥
पिखि सतिगुर ने तिह सों कह्यो । अपर ल्याउ जो बाकी रह्यो ।
हमरे हित जो किछ किस दीना । सो अबि देहु जु तुव कर लीना ॥ ५ ॥
सुनि फग्गो मन महिं बिस मान्यो । इह क्या सतिगुर बाक बखान्यो ।
मो ढिग तउ अबि कुछ नहिं रह्यो । इह किम जाचहिं, क्या उर लह्यो ॥ ६ ॥
कूर बाक इह कहैं न क्यो हूं । मुझ ढिग रह्यो न, सति भीयौं हूं ।
चित चितवति बितवति तिस काल । इक सिखनी गति[4] कीनि संभाल ॥ ७ ॥
सुनहु प्रभु ! जो मैं नहिं दीना । आप सिमरि[5] चाहहु जिस लीना ।
इक दिन इक सिख के घर गयो । तहां न सिख को देखति भयो ॥ ८ ॥
सिखनी हुती तिसी संग भाखी । दिहु गुरु कार जु है घर राखी ।
कहनि लगी-सिख नाहन घरो । निकटि न कुछ दैवो क्या करों ॥ ९ ॥
सुनि कै पुन मैं बोल्यो तां सों । जो किछ होहि देहु निज पासो ।
जो देवहि सो मैं लै जाऊं । सतिगुर पास देह पहुंचाऊ ॥ १० ॥

---

1. इकट्ठी 2. एक एक पैसे तक 3. गुप्त 4. एक सिक्ख स्त्री का कौतुक
5. याद करके

निरधन सिख गरीब को धाम। काल निबाहति करि पर काम[1]।
भई सु कोप सुने बच मेरे। ऐसे कहनि लगी तिस बेरे॥ ११॥
जे करि छूछा गमनति नांहि। कूरा पयौं अजर ले जाहि।
अपर कहां देवौं तुम हाथ। लूयाइ कमाइ न घर को नाथ[2]॥ १२॥
मैं सुनि बिनै कीनि—तवि एहो। रिदे भावना सो तुम देहो।
भरि अंजुल रिस ते उर पूरा। मम अंचल संग बंध्यो कूरा[3]॥ १३
सो मैं तिसी रीति ले आयो। ग्रिह महिं खोलयो अवनि गिरायो।
तिस महिं एक परी[4] मैं हेरी। बदरी फल की गिटक[5] बडेरी॥ १४॥
सो मैं इहां बोइ करि दीनी। तिस ते बदरी को तरु चीनि।
तुम अंतरजामी सभि जानी। कार आप की इहै निशानी॥ १५॥
लीजै सो, सिख करो सहाइ। अंस गुरु इह तरु निपजाई[6]।
गन सिक्खयनि महिं सुनति प्रसंने। कह्यो गुर 'सिख ! तू धन धने॥ १६॥
गुरमुख परस्वारथ को करिता। रिदै लोभ हंकार न धरिता।
गुर कारज को करति अरंभ। सिक्खी थंभन के तुम थंभ[7]॥ १७॥
भवसागर ते उतरैं पार। अपर अनेकनि करहु उधार।
तुव गति चहति हुते बिदताई। गन सिक्खयनि महिं अबहि सुनाई॥ १८॥
गुन गन अपने, पर के दोश। चहति छपाए युति संतोश।
सेई[8] सिक्ख भले मम प्यारे। सास सास महिं मोहिं चितारे[9]॥ १९॥
हे फग्गो तू गुरमुख सिख्य। सुनहि कथा सिख तोहि भविक्खय।[11]
तिन को सिक्खी प्रापति होइ। काम क्रोध हंकार न कोई'॥ २०॥
सुनि करि संगति बाक बिलास। महिमा जानी अनंद प्रकाश।
हाथ जोरि पुन अरज गुजारी। 'पुरहु भावनी प्रभू हमारी॥ २१॥
गन सिक्खनि मिलि करी अनुराग। तुम हितवहिर लगाइव बाग।
आरू, आमरूद, तरु अंब। कदली मुकत सींचि तरु अंबु[10]॥ २२॥
चहुं दिशि दुबा[11] हरित खरी हैं। हेरति मन को हरति खरी है।
बरन बरन की बड फुलवारी। बारी बारी पाइ करि पारी[12]॥ २३॥
बीच सथंडल चार चुकोना। सफल औन तरु[13], बरनै कौना।
आप चरन तिस थल चलि पावहु। सफल बाग को सफल बनावहु॥ २४॥

---

1. दूसरों का काम करके गुजारा करते थे 2. घर का मालिक—पति 3. कूड़ा 4. पड़ी हुई 5. गुठली 6. उत्पन्न हुआ है 7. सहारा 8. वही 9. भविष्य में तेरी कथा को सिक्ख सुनेंगे 10. जल द्वारा वृक्षों को सिंचकर 11. घास 12. वाटिका को जल देकर पाला है 13. धरती पर फलदार वृक्ष हैं

इम दासनि की बिनती सुनि कै। सभी संगति की प्रीती गुनि कै।
जीन पवायो रूचिर तुरंग। भए त्यार निज सिक्खनि संग ॥ २५ ॥
हय अरूढि तिस दिशि को चले। आगे करहिं कीरतन भले।
संगति ब्रिद भजन को करिते। गमनति गुरु को दरस निहरते ॥२६ ॥
पहुंचे चलि करि बाग मझार। चहुं दिशि महिं सिख जै जैकार।
सुंदर जहां सथान बनाइव। तहां जाइ सतिगुरु उतराइव ॥ २७ ॥
सुंदर आनि प्रयंक उसाइव। चहुं दिशि फरश अपर करवाइव।
भजन अनंद करति तहि बैसे। रघुनंदन मुनि गनि महिं जैसे ॥ २८ ॥
माली फूलनि माल बिसाल। अपर पुशप बहु रंगनि जाल।
फल मधुरे[1] अरु तुरश अनेक। कीने अरपनि जलधि बिवेक ॥ २९ ॥
बहुत भांति के बिटप[2] दिखाए। श्री सतिगुर हित जे लगवाए।
नहिर नीर की बहुत चलाई। चहुंदिशि महिं दुरवा छिरकाई ॥ ३० ॥
बेलनि के बिसतार बडेरे। संगत सहति गुरु सभि हेरे।
सगरे दिवस बसे तिस बाग। हेरि हेरि संगति अनुराग ॥ ३१ ॥
करी भावना पूरन नीके। धरति जु रहे मनोरथ जी के।
इत उत निज द्रिशटी को प्रेरति। रचना उपवन की सभि हेरति ॥ ३२ ॥
जानि प्रेम सिक्खनि को जाल। भन्यो बचन 'तुम भए निहाल'।
संझ भई ले संगति संगि। सतिगुर भए अरुढि तुरंग ॥ ३३ ॥
सने सने पुनि पुरि महिं आए। उतसव करति अनिक मनि भाए।
धरमसाल महिं उतरे जाइ। जो सभि संगति कीनि बनाइ ॥ ३४ ॥
रूचिर प्रयंक सु ऊपर राजै। पिखि पिखि सिक्खनि कलमख[3] भाजै।
भई निसा पुन मंगल करे। धूप धुखावहिं आनंद भरे ॥ ३५ ॥
दीपक बारि[4] आरती साजी। गन संखनि की धुनि बड गाजी[5]।
फूलनि की बरखा बरखावहिं। माल बिसाल गरे पहिरावहिं ॥ ३६ ॥
शबद कीरतन कीनि बिसाला। जागति रहे सिक्ख्य तिस काला।
अनिक प्रकारनि केर अहारा। मधुर सलवण सु तुरश अचारा[6] ॥ ३७ ॥
जिसके ग्रिह की वसतु जु आई। श्री गुर तेग बहादर खाई।
सफल जनम तिन अपनो जाना। निशचै धरि, जम को दुख हाना ॥ ३८ ॥
जुति मिसरी के दुघध लिआए। मात निकटि कुछु दियो पुचाए।
को चांपति है चरन सप्रेम। हांकति पौन चाहते छेम[7] ॥ ३९ ॥

---

1. मीठे 2. वृक्ष 3. पाप दूर हो 4. जलाकर 5. शंख बजाए 6. खट्टा अचार 7. कल्याण

धरमसाल महिं करि कै सैन। तीन जाम जबि बीती रैन ।
उठे प्रभु करि सौचाचार। पुन शनान करि निरमल बारि[1] ॥ ४० ॥
बैठे मन को गुरु टिकाइ। आसावार सिक्खय तबि गाईं।
शबद प्रेम के छंतनि गाए। होति प्राति को भोग सु पाए ॥ ४१ ॥
श्री गुर तेग बहादर चंद। गमन्यो चहति धरे अनंद ।
वाहन सगरे करि कै त्यार। होति भए ततछिन असवार ॥ ४२ ॥
कितिक दूर संगति संग आई। करि करि प्रेम चरन लपटाई।
दे दे धीरज सतिगुर मोरी[2]। आप प्याने पूरब ओरी ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'सहसरांव को डेरा' प्रसंग बरननं नाम खसट पंशासती अंशु ॥ ५५ ॥

---

1. जल 2. लौटाई

अंशु ५७

पटने श्री गुरु आगमन प्रसंग

दोहरा

सने सने श्री सतिगुरु गमने मारग जांइ ।
छेत्र सु ग्यासुर[1] के बिखै पहुंचति भए सुथाइ ।। १ ।।

चौपई

अदभुत लीला सतिगुरु द्याल । करनि हेतु नर अधिक निहाल ।
घाट बामनी[2] कीनसि डेरा । चढि तुरंग फलगू[3] महिं हेरा ।। २ ।।
बिप्र छेत्र के मिलि समुदाए । सुनि आगवन गुरु ढिग आए ।
जग्योपवीत भेट लै मिले । छेत्र महातम उचर्यो भले ।। ३ ।।
दान पुंन तीरथ बिवहारू । कीनि उचारन सरब प्रकारू ।
'करहु शनान गया पिंड दीजहि । देव पित्र त्रिपतावनि कीजहि' ।। ४ ।।
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो । 'तीरथ महातम तुम नहिं लह्यो ।
फलगू बिखै चरन जो धारे । पितर आपने तिनहुं उधारे ।। ५ ।।
सुर त्रिपतहिं जैकार उचारें । सरब अघनि को दूर निवारें ।
सुनि दिज गन सगरे बिसमाए । हाथ जोरि करि बिनै अलाए ।। ६ ।।
'तुम सतिगुर बिशन अवतार । जे न करहुगे श्राध अचार ।
पुन कोई न करि है इह रीति । हम सों होइ जाहिं बिप्रीत ।। ७ ।।
नहिं मानहिं धन देहिं न कोई । आवहिं करहिं श्राध नहिं सोई ।
जाइ जीवका बिगर हमारी । पुरशोतम मिरजादा धारी ।। ८ ।।
तुम को उचित न ऐसे करनी । धरम सथापहु सगरी धरनी' ।
सुनि बिनती बिप्रनि की ऐसे । करति भए तस, भाखति जैसे ।। ९ ।।

---

1. गय असुर का तीर्थ—गया 2. घाट का नाम है 3. बिहार की फलगू नदी

उतरे तबि तुरंग ते तरे। फलगू महिं मज्जन को करे।
सकल दिजनि को श्री मुख कह्यो। 'जाचि लेहु जो तुम चित चह्यो' ॥ १० ॥
सुनि बोले सभि दिजबर बंस। 'हम कौ दिहु आपन सरबंस।
तबि सतिगुर ने रिदै बिचारी। इहि सभि माया के अधिकारी ॥ ११ ॥
जितिक संग सभि दीनो दान। धोती एक उपरना पान[1]।
शिवका असु स्यंदन धन सारो। ले विपप्रनि जैकार उचारो ॥ १२ ॥
कितिक काल बीते सुधि आई। 'इह सभि जग गुरु बहु बडिआई।
इतो समाज लेनि इन ही ते। नहिं किछ बडो, विचारहु चीते ॥ १३ ॥
पत्र लिखाइ लेहु अबि ऐसे। हमरी संतति ले नित जैसे।
जेतिक संगति जगत तुमारी। दान सरब के हम अधिकारी' ॥ १४ ॥
करि मसलत सतिगुर पहि आए। 'बिजै तुमारी होहु' सुनाए।
'श्री गुरु ! जो हम जाचा कीनि। दीन आपने, सो सभि लीन ॥ १५ ॥
निज संगति सगरी को दान। लिखहु पत्रिका पुंन महान'।
सुनि कै श्री सतिगुर फुरमायो। 'पूरब जाच्यो सो तुम पायो ॥ १३ ॥
लोभ छोभ तजि करहु संतोश। अपनि धरम राखहु निरदोश।
दिज को मुखय धरम यहि जोइ। जथा लाभ संतुशटै होइ ॥ १७ ॥
यांते परालबध जेतीक[2]। पूरब जाचि लीनि तेतीक[3]'।
पुन तूशनि हुइ रहे गुसाईं। खान पान करि निसा बिताई ॥ १८ ॥
जथा जोग सभिहूं तहिं करि कै। गमन कीनि पुन सतिगुर चरिकै[4]।
सरब संग मैं हुइ करि त्यारी। मारग गमने जाति अगारी ॥ १९ ॥
मिलहिं पंथ महि धरि करि भाऊ। लहैं श्रेय इह सहज सुभाऊ।
जिम सूरज ते तम बिनसाइ। पावक निकटि न सीत रहाइ ॥ २० ॥
पटणे नगर तीर गुर गए। इक सिख के घर प्रापत भए।
जैता सेठ नाम तिस कहैं। कर पकवान हाट पर बहै ॥ २१ ॥
वेसनि सान फिलोरी करै[5]। गुर सिक्ख मिलहि सु अरपन धरै।
आलमगंज मझार बसाई। करता सदा हार हलवाई ॥ २२ ॥
अंतर गति निस दिन गुर ध्यान। दुरबल दीन, लोभ नहिं मान।
करति शनान सु किनहुं न देखा। बसत्र मलीने तन पर बेसा ॥ २३ ॥
बिचरति गुरु को सिख मिलि जाइ। तिस के पग निज सीस झुकाइ।
पंच फिलौरी देति अकोर। बिदा करति दोनो कर जोरि ॥ २४ ॥

---

1. हाथ में दुपटटा 2. जितनी 3. उतनी ही 4. चढ़कर 5. पीठी वाली पूरी

महिमा नहिं जानहि तिस कौन। सिमरनि सतिगुर धरि करि मौन।
मिथ्या जानहि जगत पसारा। साच न भासहि नसवर सारा ॥ २५ ॥
इक दिन गुर संगति नर केई। बूझति भए प्रेम करि तेई।
'कहो सेठ जी! क्यों न शनानहु? वस्त्र सरीर मलीनो ठानहु' ॥ २६ ॥
तिन सों कह्यो 'जि देखयो चहो। सरब क्रिया, तुम मम घर रहो।
कहे बिना नहिं, लीजहि देखि। जिम शनान मैं करौं विशेख ॥ २७ ॥
सुनि सिख द्वै तिस के घर रहे। निस महिं क्रिया करति सभिलहे।
निज दुकान ते बैठ्यो आई। सिमरति भयो नाम सुखदाइ ॥ २८ ॥
जाम निसा बाकी जबि रही। उठे सेठ जी मन मैं लही।
सौचाचार कर्यो जल नाल। सुरसरि आई घर तिस काल ॥ २९ ॥
बड़ा हौज़ इक हुतो बनयो। निरमल जल ते सो भरि गयो।
तिनके देखति कीनि शनान। पुन लाग्यो सिमरन सुखदान ॥ ३० ॥
प्राति होति लौ बैठ्यो रह्यो। तिन सिक्खन सगरो क्रम लह्यो।
संगति बिखै बात बिदताई। 'जैते सेठ बड़ी वडिआई ॥ ३१ ॥
श्री गंगा जिस के घर जाई। जाम निसा ते देति नुहाइ'।
सो सिख गुर को करति उडीक। आइ कबहुं दे दरशन नीक ॥ ३२ ॥
मम कर को कीनसि पकवान। बैठि सदन महिं करि हैं खान।
रहति प्रतीखति सुनि गुन गुरु को। निस बासुर अनुरागी उर को ॥ ३३ ॥
तिस के मन की गति को जानि। पहुंचे श्री सतिगुर भगवान।
ऐचंहि प्रेम डोर ते जहिं जहिं। करि तूरनता पहुंचाहि तहिं तहिं ॥ ३४ ॥
दीन दयालु की बान बिसाला। परखहिं प्रेम मिलहिं ततकाला।
गुहज रिदै की गति को लखौं। करति बास प्रभु घट घट बिखै ॥ ३५ ॥
नगर प्रवेश भए गुर पूरे। करति बिलोकन बिपनी* रूरे।
मंदर सुंदर अंदर बाहर। धनी लोक बहु बासहिं ज़ाहर ॥ ३६ ॥
रचना अनिक प्रकारन केरी। चले जाहिं सतिगुर सभि हेरी।
आलम गंज बिखै पुन गए। सदन सेठ के प्रापति भए ॥ ३७ ॥
निज जन के पूरन को आसा। लोक प्रलोक देनि भरवासा।
उतरे जाइ जबहि घर मांही। सुधि सुनि जैता सेठ तदाही ॥ ३८ ॥
प्रेम मगन ते दौर्यो आई। पिखि गुर पग पंकज लपटाई।
सादर मंच उसावनि करे। प्रभू बिठाइ मोद उर भरे ॥ ३९ ॥

*दुकानें

निज कर ते करि कै पकवान। राखयो सतिगुर आगै आनि ।
अपर अहार अधिक करिवाइ। सभि उरे को दियो अचाइ ॥ ४० ॥
वाहन सरब सदन बंधवाए। सभि विधि को दे करि त्रिपताए।
त्रिण दाना जो कहि मिशटान। हाथ जोरि सेवा सभि ठानि ॥ ४१ ॥

दोहरा

सतिगुर कर्यो अराम को बीत्यो केतिक काल।
कवि संतोख सिंह पुरि बिखै संगति सुनै क्रिपाल ॥ ४२ ॥
जहिं कहिं बिदती बारता गुर आए पुरि माहिं ।
सिक्खयनि सुनति अनंद भा कहैं कोन बिधि तांहि ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रतापे सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'पटने श्री गुरु आगमन' प्रसंग बरननं नाम सपत पंचासति अंशु ॥ ५७ ॥

अंशु ५८

पटने आवनि प्रसंग

दोहरा

जहिं कहिं संगति ने सुन्यों भा आगमन क्रिपाल ।
हरख परसपर मिलति भे ले करि भेट बिसाल ॥ १ ॥

चौपई

संगति शब्द कीरतन करते । भरे अनंद सिर चरननि धरते ।
जरी जुगत बहु बसत्र लिआए । रुचिर बिभूखनि धरि अगवाए ॥ २ ॥
अरपहिं दरब अनिक नर आइ । दरस करनि अवकाशहिं पाइ ।
पटना शहिर लोक बहु बसें । बे शुमार गुरु जसु बहु लसैं ॥ ३ ॥
अनिक भांति की आनि मिठाई । खरे हुइ अरदास कराई ।
तहिं के बड़ मसंद चलि आए । ब्रिदं संगतां संग सु ल्याए ॥ ४ ॥
गुर को अरप्यो दरब बिसाला । सेवा अपर करि ततकाला ।
छोटो थान लोक समुदाए । भई भीर, थित थांउ न पाए* ॥ ५ ॥
संगति संग मसंद मिले हैं । आपस महिं इम करति भले हैं ।
'नगर बिखै इन हेतु निकेत । चहीअत है बिसतार समेत ॥ ६ ॥
बसहिं इहां गुरु केतिक काल । दरसहिं नित हम होंहि निहाल ।
इस सिख के घर नहीं समावहिं । दरशन करनि हजारहुं आवहिं ॥ ७ ॥
सगरे नगर नहीं सुधि होई । सुनि सुनि आइ पिखहि सभि कोई ।
बाहर नगर रहैं जे गाम । सुनहिं जबहि आए गुरु धाम ॥ ८ ॥
सगरे उमडि आइं इक वारी । पिखहिं गुरु उर शरधा धारी ।
इस बिधि सभि महिं करति बिचार । तबि इक सिख ने कीनि उचारि ॥ ९ ॥

*खड़े होने के लिए जगह नहीं मिलती

'मैं इक देउं हवेली गुर को। हाथ जोरि करि भाउ सु उर को।
तिस महिं बसहिं सदा सुख पाई। मेरो जनम सफल हुइ जाइ' ॥ १० ॥
इम कहि सभि महिं शरधा धारि। सतिगुरु के ढिग कीनि उचार।
'प्रभु जी लेहु हवेली मो ते। तिस महिं बसहु अनंद उदोते' ॥ ११ ॥
तबि अरदास मेवरे करी। तिसी सिख्य अपदा हरी।
श्री गुर तेग बहादर धीर। अपने दास हकारे तीर ॥ १२ ॥
'सिख के संग जाहु ले डेरा। करहु तहां बिसराम बडेरा।
मात नानकी को ले जावहु। सकल समाज समेत सिधावहु' ॥ १३ ॥
सुनि कै आइसु सगरे दास। गमने ततछिन तिसी अवास।
सभि समाज तहिं आनि उतारा। मात नानकी सकल निहारा ॥ १४ ॥
श्री गुजरी तहिं कीनि निवास। दासी दास बसे तिह पास।
श्री गुरदेव बहुर चलि आए। दे आइसु को तहां बसाए ॥ १५ ॥
अपर सिक्ख्य निज निज घर माहिं। गुर वाहन बंधवाए तांहि।
बहु दासनि के आलय[1] डेरा। करति भए पिखि भाउ घनेरा ॥ १६ ॥

सवैया छन्द

बसन लगे श्री तेग बहादुर केतिक दिवस बितावन ठानि।
पटना नगर जानि कै दीरघ बसे हेरि करि सुंदर थान।
करहिं उधारनि अधिक नरनि कउ जो सेवहिं उर शरधा ठानि।
श्री मुख बाक स्राप कै बर को फुरहि तुरत पिखि नर भै मान ॥ १७ ॥
जथा हुतासन अधिक ज्वलत हुइ निज तन को नहिं चहति छुवाइ।
तथा अवग्या ते भै मानहिं नहिं बिप्रै कबि मन मैं ल्याइं।
देइं उपाइन, ठानहिं सेवा, करहिं प्रसीदन चरन मनाइ।
मन बांछति नर कहैं पदारथ जहिं कहिं सुजस महद बिदताइ ॥ १८ ॥
'राउ, रंक, मूरख अरू पंडित चारहुं बरन तुरक अरू हिंदु।
साध अनेक अनेक भेख के जहिं कहिं मिलहिं होहिं नर ब्रिंद।
सत्यबाक पतिआवहिं केतिक करामात महिं लखहिं बिलंद।
अंबर, पशंमबर, पाटंबर अरपहिं दरब मनाइ मुकंद ॥ १९ ॥
जे[2] शरधा धरि होइं ममोखु[3] उपदेशहिं वे आतम ग्यान।
जे उपासना के अधिकारी सत्तिनाम लिव दे प्रभु ध्यान।
जगत बिखै शुभ पंथ प्रकाशहिं, चलहिं जि नर भव बंधन हानि।
ह्वै जु सिक्ख तिह अंग संग रहिं, हलत पलत महिं रच्छा ठानि ॥ २० ॥

---

1. घर में 2. अगर 3. मोक्ष के इच्छुक

दुरमति काटि सुमति उपदेशहिं, सत्यनाम सिमरन को दीन।
दीन प्रभू के आगै रहु नित, तन हंता को हानि प्रबीन।
बीन बीन कै हनहु बिकारन, भाणा[1] भानि शाँति चित लीनि।
लीनि कहां नर को तन धारे गुरु बचमानि जिनों नहिं कीनि॥ २१॥

सवैया

श्री गुरु तेग बहादर की इम कीरति चारु महां बिसतारी।
पाइन पास उपाइन को अरपावति हैं उर प्रेम सुधारी।
जाचति हैं मन बांछति को परसीदति देति सभै सुखकारी।
दीन दिआल की बान इहै निज पैज पुजावति प्रीति निहारी॥ २२॥

पटना पुरि बास बिसाल बसै, सभि भांति बिलासति हैं नरनारि।
धनवान महान अनेक ही मानव कंचन भूखन हीरनि धारी।
मुकता गन हार, सु कुंडल चार, उदार बड़े भुज अंगद वारी[2]।
तन अंबर रीति अनेकनि के जिम अंबर मैं उड हैं दुति भारी[3]॥ २३॥

बाहन है, गज, पालकी, सुंदर मंदर अंदर बाहर सेता[4]।
धाम धुजा अभिराम बनी जनु पंख लगाइ चहैं उड जेता[5]।
पौर बड़े जुग कौर सजे,[6] सभि ठौर सजे धुनि आनंद देता।
देख्यो सु जाइ किते दिन मैं, बड़ दूर लगौं बसिओ पुरि एता॥ २४॥

बाग बिसाल खरे फल लागि दिवार बने बहु रंगनि के।
ताल, तमाल, उदालक,[7] दाड़म, श्री फल[8] शोभति रंगन के।
जामन के कदलीन बगीचनि सींचति नीर अपंगन[9] के।
बेल तंबुलन[10] की अमरूद सु पात अनेक ही ढ़ंगनि के॥ २५॥

बारी फिरै बर बूटन[11] मैं, सबज़ी सबि जी हरखंति निहारी।
हारी धनेसर की नलनी छवि यौ नलनी बिकसै सुखकारी।
कारी सु कोकलका कुहकावति, मोरन शोर, सु भौर गुंजारी।
जारी वसंत जहां बहु होवति, यौं चहुं ओर खिरी फुलवारी॥ २६॥

---

1. प्रभु आज्ञा 2. बांहों पर अंगद वाले 3. शरीर पर वस्त्र आकाश पर तारों की भांति शोभा दे रहे हैं 4. सफेद 5. घर मानो पंख लगा कर उड़ना चाहते हैं 6. दोनों स्तंभों पर बड़ी सीढ़ियां सज रही हैं 7. लेसुआ 8. नालियर 9. कीचड़ मुक्त जल, [illegible] 10. पान की बेल 11. [illegible]

दोहरा

नदी बहतर जहिं मिली बही सरब इक थाइं ।
जल की लील्हा अनिक विधि करहिं नारि नर चाइ ॥ २७ ॥
महां नगर बरनो कहां तिह को सरब समाज ।
तेग बहादर गुर तहां टिके ग़रीब निवाज ॥ २८ ॥

सोरठा

नर नारी समुदाइ दरशन दरसहिं गुरु को ।
रिदे हरख अधिकाइ बड़े भाग निज जानि के ॥ २९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासं 'पटने आवनि प्रसंग' बरननं नाम अशट पंचासती अंशु ॥ ५८ ॥

अंशु ५९

जरासंध प्रसंग

दोहरा

श्री गुर पटणे पुरि बिखै रंम्यसथान निहारि ।
साहिबज़ादे को जनम हुइ है इहां बिचार ।। १ ।।

सवैया

संगति आइसु सीस निवाइ उपाइन पाइन पै अरपंते ।
'भाग बडे हमरे धनं है निज लोभन ते तुम को दरसंते ।
सेवक आपनि जानि दया निधि आइ निहाल किए सुखवंते ।
कीजिये आप आप महां सुख या पुरि, सेव करैं हम ज्यों बितवंते[1] ।। २ ।।
नांहि त दूर पंजाब को देश थो कौन सकै तिह ठां नर जाई ।
है परिवार जंजार महां जिस ते निकस्यो नहि जाइ कदाई ।
सोवति देति उठाइ किसी कउ सो हमरी गति भी सुखदाई ।
रोज सरोज पदं दरसैं, घर कार करैं, भयो लाभ महाई[2] ।। ३ ।।
यौं सभि संगति भाउ कर्यो अरदास करी पुन आपस मांही ।
सुंदर मंदिर को बनवाइ सभि रुति में सुखदा, दुख नांही ।
कीनि उताइल त्यार अवास को और समाज सभै बिधि जाही ।
आप कर्यो बिसराम दयानिधि सिखवनि कामन पूर कराहीं ।। ४ ।।
जिम जाचति हैं अरु सेवति हैं तिम देवति हैं गुरु रूप उदारे ।
नर नारिनि के गन ह्वै शरधा धरि श्री मुख के दरसैं दरबारे ।
इक आवति हैं इक जावति हैं इक पावति हैं मन बांछति सारे ।
वहु भांति उपाइन पाइन पै अरपं बिनती युति बंदनधारे ।। ५ ।।

चौपई

श्री गुजरी साध्वी को भ्राता । नाम क्रिपाल जगत बक्ख्याता ।
पुरि मैं कितिक द्योस करि बास । बैठे हुते सतिगुरु पास ।। ६ ।।
अपर सिक्ख सेवक गुर तीर । दरशन करहिं नरनि की भीर ।
तबि क्रिपाल ने बूझनि कीनो । 'आप जगत के गुरु प्रवीनो ।। ७ ।।

---

1. जितना वल होगा 2. बहुत ही लाभ होगा

भूत भविक्ख्य अनेक ब्रितांत। तुमरे रिदे सभिनि की ग्यात।
नगर बिसाल मनोहर महां। धनी पुरख बैठे जहिं कहां॥ ८॥
मंदिर बर सुंदर बड करे। नर नारी गन आनंद भरे।
सतिगुरु की संगत समुदाइ। रावरि को दरसै हरखाइ॥ ९॥
चलै प्रवाह बिमल बहु पानी। सकल देश शोभति गुन खानी।
भांति भांति के उपबन खरे। फल फूलनि युति तरु दल हरे॥ १०॥
इस महिं भयो कौन बड राजा? जिसने सकल बसाइ बिराजा।
सुंदर देश राज जिन कीनसि। करो सुनावनि सकल प्रवीनस'॥ ११॥

दोहरा

सुनि कै सभि संगत बिखै जानि रिदै इतिहास।
तेग बहादुर श्री गुरु कह्यो सभिनि सिख पास॥ १२॥
'इसी देश मैं होति भा न्रिपति ब्रिहदरथ नाम।
तीन छूहनी सैनपति अति सूरो बलि धाम॥ १३॥

चौपई

ब्रिंद समान महां बलि सूरा। सकल भांति ऐश्वरज पूरा।
रच्छा करति देश इस केरी। सभि मानहिं जिह आन[1] बडेरी॥ १४॥
कांशी न्रिप की तनिया दोइ। तिन को ब्याह आनि घरि सोइ।
चिरंकाल तिस को बित गयो। पुत्र नहीं घरि न्रिप के भयो॥ १५॥
जग्ग[2] अनेक सदच्छन[3] कीने। अपर उपाइ भूप करि लीने।
तऊ न सुत उपज्यो सुखदाइ। चिंतातुर होवति पछुताइ॥ १६॥
चंद्रिक नाम रिखीशुर एक। तिसके गुन सुनि श्रोन अनेक।
लै अपने संग दोनहुं रानी। न्रिपत जाइ तिह सेवा ठानी॥ १७॥
ब्रिछ अंब्र को तिह थल खर्यो। तरे रिखीशुर ने तप कर्यो।
अनिक भांति के तम को तापति। रिदै सुद्ध श्री प्रभु को जापति॥ १८॥
केतिक दिन जबि सेवा ठानी। क्रिपा द्रिशटि देखि मुनि ग्यानी।
तिसहि अंब के फल को दीन। पुत्रबली हुइ सूर अदीन[4]॥ १९॥
ले हरख्यो राजा बुधिवान। घर निज गमन्यो बंदन ठानि।
दुइदारा प्यारी सम जानै। किसको देउं चितवनो ठानैं॥ २०॥
इक दुख पावहि इक हरखाइ। इह बिधि नहिं मेरे मन आइ।
गुन सरूप मैं दुऊ समान। मो महिं प्रीति करैं सम जानि॥ २१॥

---

1. प्रभुत्व 2. यज्ञ 3. दक्षणा सहित 4. जो किसी के अधीन नहीं होगा

बहुत काल चितव्यो मन मांहि। इक को देनि रुचै चित नाहिं।
फल दुखंड करि कै कर लीनि। दुह नारी प्यारी को दीनि॥ २२॥
हुइ प्रसंन दोनहु फल लह्यो। खाए, किंतिक दिनन ग्रभ भयो[1]।
भूपत के मन हरख उपावां। गरभवती देखति सुख पावा॥ २३॥
अवधि गरभ जबि पूरन भई। जनमे पुत्र दुहनि गति नई।
अरध अरध जनमे तन दोइ। निरखति नारि बिसम रही होइ॥ २४॥
तांको जान्यो भा उतपात[2]। अहैं खंड[3] दुइ एको गात[4]।
अंबर बिखै लपेट्यो तांहि। 'गेरहु वहिर बिलोकहु नांहि'॥ २५॥
इकी तिय ने ले बाहर डार्यो। जरा राखशी[5] गिरत निहार्यो।
गई शीघ्र भक्ख्यनि के कारन। आमिख श्रोणत करति अहारनि॥ २६॥
देख्यो तिह उठाइकै जबै। अचरज भई नई गति सबै।
बड बल सों गहि भारी भार। जोरति[6] भई जरा तिस बार॥ २७॥
एक नैन कर पद इक कान। पर्यो हुतो जिह थान भ्यान।
तिह ते बल करि कै सु लगायो। जीव्यो बालिक रूदन सुनायो॥ २८॥
शबद भयो जिम घन गरजंता। नगर लोक सुनि चिंत करंता।
जरा राखशी अचरज मान्यो। भई चित्र सम तूशनि ठान्यो॥ २९॥
जरा उठाइ रही नहिं हाल्यो[7]। सगरो अपनो ओज समाल्यो।
बडो शबद सुनि ऊच रू नीच। धार पर्यो रौर पुरि बीच॥ ३०॥
जरा राखशी को तहिं बरज्यो। न्रिप के भटन क्रोध करि तरज्यो[8]।
लियो उठाइ बहुत ने मिलि करि। ले करि पहुंचे भूपत के घर॥ ३१॥
जरा गई महिपालक पास। हे न्रिप तुमरे पुरि मम वास।
यांते बालिक मैं लखि पावा। जोरि दुखंड आनि जिय पावा[9]॥ ३२॥
न्रिप ने हुइ प्रसनं सुत लीनसि। मोद सहत दारा दुइ दीनसि।
जरा राखशी संधु कर्यो है। जरासंध इम नाम पर्यो है॥ ३३॥
दिन दिन बधै अधिक बल धरै। शकति बिसाल न्रिपहुं सम करै।
महां बाहु[10] आयतु जिस छाती। शुभ लच्छन सुंदर सभि भांती॥ ३४॥
बीतति भयो जबहि चिरकाल। सुनि कै सो रिखी अखिल हवाल।
इसी देश चलि आयो सोइ। देखनि हित न्रिप को सुत जोइ॥ ३५॥

---

1. खाने के कुछ दिनों के पश्चात् गर्भ हो गया 2. वह उपद्रव हुआ जाना 3. टुकड़े 4. शरीर 5. जरा नामक राक्षसी 6. राक्षसी ने टुकड़ों को जोड़ा 7. हिला नहीं 8. [illegible] 9. प्राण भर गए 10. लम्बी बांहें

सुनति भूप ने सुख को माना । पूजन की लै सौज महाना ।
दुऊ भारजा ले करि साथ । रिखि के चरन धर्यो निज माथ ।। ३६ ।।
बिनै भनी सादर बैठायो । बडे भाग हम दरशन पायो ।
मो पर क्रिपा बिसाल तुमारी । दिये पुत्र जोधा बल भारी ।। ३७ ।।
अबि इह राज आप ही करी अहि । हम सभिहिनि को आशं थिरी अहि ।
कहै रिखीशुर सुनहु नरेश । तुम ही को शोभति सभि देश ।। ३८ ।।
तपसा[1] बन्यो हमारो राज । तुम ही राखहु सैन समाज ।
इहु सुत तुमरो ऐसो भयो । बिदतहि सकल जगत जसु लह्यो ।। ३९ ।।
जगत बिखै इसके सम भूप । नहीं होइ है महद अनूप ।
सभि राजन को राजा होइ । यांकी समसर करै न कोइ ।। ४० ।।
सुर असुरनि को जीतै जुद्ध । करहि प्रजा की रच्छा सुद्ध ।
जो नरिंद इस पर चढ़ि आवै । भुज बल ते तिह हतहि पलावै ।। ४१ ।।
न्रिप तपसी ते सुनि करि गाथा । सुत गुन ते बिसाल सुखसाथा ।
राज तिलक अभिखेकनि[2] कीना । आप पंथ कानन को लीना[3] ।। ४२ ।।
सुत को कहि सिख्या दे घनी । जुग दारा ले करि भामनी[4] ।
बन मैं गमन्यों तपसी संग । कीनसि तप बन सैल उतंग ।। ४३ ।।
जरसंध निज पित के पाछे । चतुरंगनि करि धुजनी[5] आछे ।
जो न्रिप तिसकी आग्या मोरै । संघर करि रिपु को सिर फोरै ।। ४४ ।।
किस कउ काराग्रिह मैं डारे । किसहि निकासहि छीनहि सारे ।
भली भांति निज राज बधावा । सभि पर अपनो हुकम टिकावा ।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जरासंध प्रसंग' बरननं नाम ऊन-सशटी अंशु ।। ५९ ।।

---

1. तपस्या 2. राज्याधिकार देते समय की जाने वाली रीति 3. आप जंगल का रास्ता लिया 4. सुन्दर स्त्री 5. चार प्रकार की सेना

अंशु ६०

जरासंध प्रसंग

दोहरा

भए क्रिशन अवितार प्रभु महांवीर बलवान।
जनम भयो मथरा बिदते गोकल थान ॥ १ ॥

चौपई

दुशटनि महां पूतना मारी। तिणावरत[1] की देह बिदारी।
बाल सरूप बिखै इह नामे। ब्रधति भए गन गोप अवासे[2] ॥ २ ॥
दैत अघासुर[3], धनेक[4] मारा। केसी[5] को बल करि संघारा।
मथरा को अक्रूर ले आवा। प्रथम कुदड[6] दुखंड करावा ॥ ३ ॥
मल्ल चंडूर सु मुशटक[7] मारा। पुन न्रिप कंस दशट संघारा।
जरासंध को हुतो जमाता। जबि घन श्याम कीनि खल घाता ॥ ४ ॥
सुता गई पित पास पुकारी। बिधवा देखि अधिक दुखिआरी।
जरासंध कोप्यो बल भारी। सकल बाहनी कीनसि त्यारी ॥ ५ ॥
उतसाहित भूपत तबि चढ्यो। हतौं हली हरि[8] क्रोध सु बढ्यो।
मथरा घेरि कर्यो संग्रामू। लाखहुं भट पहुंचे जमधामू ॥ ६ ॥
रण भैरव करि कै वहु वारि। हटि हटि गयो प्रभू ते हारि।
पुनहि द्वारका सिंध मझारे। रची पुरी बस रह सुखारे ॥ ७ ॥
कितिक काल बीत्यो तिस पाछे। पांडव भए सूरमा आछे।
राज सूअ को चाहति कर्यो। शत्रु अजात मनोरथ धर्यो ॥ ८ ॥
तहिं ते श्री घनशयाम बुलाए। अति प्रिय लखि करि तिन ग्रिह आए।
अपनि मनोरथ भन्यो अगारी। सुनि मधुसूदन गिरा उचारी ॥ ९ ॥

---

1. एक दैत्य का नाम 2. ग्वालों के घर 3. दैत्य 4. एक राक्षस 5. एक दैंत्य 6. धनुष 7. चांडूर और मुष्टक दो मल्ल 8. बलभद्र और कृष्ण

महांबीर जो मगध नरेश। जरा संध बल बिखै बिशेश।
तिस मार बिन मख नहिं होइ। पूरन भयो आरबल सोइ ॥ १० ॥
एक बार निज मंदिर चरि कै। गदा प्रहारी कर बल करि कै।
सौ जोजन मग को बिसतार। पहुंची हम ढिग करनि प्रहार ॥ ११ ॥
तबि बलदेब शकति करि अपनी। आवति गदा निफल करि खपनी[1]।
जरासिंध राखति बल घना। केतिक तांकि गिनर्ती गना ॥ १२ ॥
तांते नी को इहै उपाइ। सैना हम सों चलै न काइ।
जिह सनमुख हुइ सकहि न कोइ। चमू लरे क्यों जीतनि होइ ॥ १३ ॥
अरजन भीम संग लै जाऊं। कई भेद करि तिह जित आऊं।
अबि पहुंचहिं हम जाइ समीप। भीम संग रण करे महीप[2] ॥ १४ ॥
देहु सुभट द्वै संग हमारे। जस जै हैं तस लेहु संभारे[3]।
कहा जुधिशटर पाडव राज। आप सिधारति हमरे काज ॥ १५ ॥
जिस प्रकार नीकी मन तुमरे। तिम ही शुभ हुइं कारज हमरे।
सुनि तीनहुं करि दिज को बेस। इसी देश को अए ब्रिशेश ॥ १६ ॥
मग सूधे को तजिबो कानि। अपर देश को गए प्रबीन।
मन हमरो आगम सुनि पावै। हतनो पुनहि कठन हुइ जावै ॥ १७ ॥
उतरति भए सुरसरी पार। नदी गंडका तरि कै बारि।
श्रोणा सलिता को तजि गए। मागध बिखै आवते भए ॥ १८ ॥
जरासंध जोधा महिं राजा। निकटि बाहनी अधिक समाजा।
बसहिं देश महिं सुख सों लोक। नहिं पावति कबिहुं मन शोक ॥ १९ ॥
बड़ो नगर जहिं दुरग चुगिरदे। कोइ न मरद जाहि को मरदे।
बड़ जोधे चहुं दिशि रखवारे। शसत्र असत्र को धारनहारे ॥ २० ॥
घंट माल इक मग नहिं अहै। शत्रु जानि बाजहि सुध कहै[4]।
शबद घंट राजा सुनि पावै। हुइ सुचेत बडसैन पठावै ॥ २१ ॥
चक्र बनायो इक मंत्रन करि। बूझति शत्रु बेग सिर दे हरि[5]।
इस बिधि को लखि कै घनश्याम। तज्यो प्रवेश द्वार अभिराम ॥ २२ ॥
हुइ पशचात कोट चढ़ि गए। अरजन भीम संग द्वै लए।
कूद तहां ते अंतर बरे। भूपति निकटि जाइ भे खरे ॥ २३ ॥
तिस दिन जरासंध महिपाल। देखति भा अपशगन बिसाल।
बैठ्यो दान करति धन भारे। जाचक खरे समीप निहारे ॥ २४ ॥

1. खपा दी 2. राजा जरासंध 3. जैसे देंगे वैसे ही संभाल लेंगे 4. घण्टों की माला के बजने से शत्रु को खबर हो जाती है 5. सिर को फोड़ देता है

क्रिशन भीम अरजन की ओर। महिपालक अविलोक्यो घोर।
दरस अपूरब[1] कित ते आए। इह छत्री दिज वेख बनाए ॥ २५ ॥
धनुख घास इन सभि के हाथ। क्या इह करहिं कपट के साथ।
उठ्यो भूप तिन के ढिग गयो। बुधि बल ते सभि जानति भयो ॥ २६ ॥
कह्यो तिनहू सों को तुम अहो ? नहीं बिप्र मन साची कहो।
सीधे मग नहिं अंतर आए। कोट कूदि पहुंचे पिछवाए ॥ २७ ॥

दोहरा

सूधे मग जे आवते घंटा शबद करंति।
चक्र भयानक छिनक महिं धरते सिर उतरंति ॥ २८ ॥

चौपई ॥

सुनि घन श्याम बखान्यो तिसे। चतुर पुरख चहिं गहि रिपु जिसे।
सूधे मग सो आवति नांही। अपनो काज करन को चाहीं ॥ २९ ॥
जरासंध भाख्यो बच तबै। बैर कर्यो हम सों तुम कबै ?
मैं तौ किह सों करों न द्वैश। तुम किम जानहु, कहो अशेश ॥ ३० ॥
कह्यो क्रिशन जे बैर न काहू। बीस सहस्र अठ सत नर नाहू[2]।
क्यों इह बांधि कैद महिं डारे ? मुख महिं चाहति हैं इन मारे ॥ ३१ ॥
इस ते परे बैर क्या होइ। इते नरिंद बिनासैं कोइ।
सकल जगत की रच्छा कारन। मैं मानुख तन कीनसि धारन ॥ ३२ ॥
मन महिं चितव्यो बड अपराध। कौन शलाघा करि हैं साध[3]।
याते तोहि हतनि के हेत। बिप्रबेस ते आइ निकेत ॥ ३३ ॥
नांहि त सभि राजनि को छोरि। चलीए संग जुधिशटर ओर।
परहु पाइं निज प्रान बचावहु। दीन हीइ अबि राज कमावहु ॥ ३४ ॥
नांहि त हुइ है जुद्ध हमारा। जीतहिंगे तुझ धारि अखारा।
किधौं हमहि तुम जीतनि करीए। पीछे मन भावति अनुसरीए ॥ ३५ ॥
सुनि कै जरसंध रिस धारी। गरबति अति मुख गिरा उचारी।
इती शक्रति रण करिबे केरी। क्यों दिजबेख बनाइ कुफेरी ॥ ३६ ॥
जो मैं बांध लिए महिपाला। किह सों कयों न कपट कुढाला।
जिम तुम आए कपटी होइ। इम छत्री करि सकहि न कोइ ॥ ३७ ॥
मैं जीते इम सकल नरेश। जुद्ध बिखै जै करे अशेश।
सुनति शयामघन पुनहि बखाना। क्यों अस करतो मान महाना ॥ ३८ ॥

1. आश्चर्यजनक 2. २०८०० राजा 3. साधु

न्रिपति बली अति भए अनेक। अंतकाल महिं रह्यो न एक।
हुतो न बल जे हमरे मांहे। तुम सम सूर लरन किम चाहैं ॥ ३९ ॥
दुशट दमन मम नाम सदीवा। प्रगट क्रिशन तन मैं अबि थीवा।
भीम सैन इहु देखहु सूरा। दुतिएयो अरजन लखि बलि पूरा ॥ ४० ॥
तीनहुं अपने नाम बताए। दुहि महिं करहु जु इक मन भाए।
तजहु कैद ते भूपति सारे। धरमराज के चलहु अगारे ॥ ४१ ॥
जीवहु जगि महिं रहु चिरकाला। भोगहु राज अनंद बिसाला।
नांहित जुद्ध करहु हम साथ। त्रै महिं इक सौंहे[1] नर नाथ ॥ ४२ ॥
सुनति भूप उर क्रोध बधावा। सभा छोरि अंतर प्रविशावा।
सुत सहिदेव आपनो देखा। राज तिलक अभिसेक अशेखा ॥ ४३ ॥
पुन बाहर आयो हरि पास। बोलयो अपना ओज प्रकाश।
तुम तीनहु मुझ घर चलि आए। लरहु मोहिं सो क्रोध बधाए ॥ ४४ ॥
तुम तीनहुं सों एकल लरि हौं। महां ओज अपने महिं धरि हौं।
तुती नहुं को करहुं संघार। कै मुझ को लर कै लिहु मरि ॥ ४५ ॥
सुनि घनश्याम उचारन कीनि। एकल सों हम लरहि जि तीन।
अहै अनुचित, करहि को ऐसे। निरबल होइ करति बिधि तैसे ॥ ४६ ॥
हमने अपनो बल लघु जानि। इक को जाचि लेहु, बुधिवान।
दोनहुं लरहिं न बोलहि और। बल बिसाल सों संघर ठौर ॥ ४७ ॥
जरसंधु तबि बाल उचारे। तुम बहु बारि मोहिते हारे।
कर्यो पलावनि बारि सतारा। मथरा त्यागौ आन पधारा ॥ ४८ ॥
तुम सों लरति लाज महि आवै। बस्यो द्वारका तजि रणथावै[2]।
बडो निलाज सदा तुम जनीयति। महा भीरू[3] जोधनि महिं गिनीयति ॥ ४९ ॥
अरजन धनु बिद्या महिं महा। छोरति बाण दूर रिपु जहां।
बल मैं लघु जानति हौं दोऊ[4]। हीन साथ भट लरहि न कोऊ ॥ ५० ॥
पौन पुत्र[5] इक तुम महिं भारी। सो जे ठहिरै मोहि अगारी।
इनके साथ जुद्ध ममहोइ। देखहु सभिह लरहिं हम दोह ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे 'जरासंध प्रसंग' बरननं नाम शशटी अंशु ॥ ६० ॥

---

1. सामने 2. रणभूमि 3. कायर 4. दोनों—कृष्ण तथा अर्जुन
5. भीम

अंशु ६१

पटणे बसन प्रसंग

दोहरा

'रतन जटति सिर मुकट को भूपति धर्यो उतार।
जूड़ा केसव को कर्यो द्रिढ़ पगीआ को धारि॥ १ ॥

चौपई

कट कहु कसि कै होयो त्यार। गरज्यो भैरव शबद उदार[1]।
भीम सैन इत भयो सुचेत। ठोके भुजादंड रण हेतु ॥ २ ॥
क्रोध भरे दोनहुं बलवान। भरे परसपर महां भयान।
प्रथम प्रहार मुशट के करे। उठ्यो शबद जिम लोहा घरे॥ ३ ॥
मनो ब्रिखभ अति बली भिरे हैं। जिम कुंचर करि कोप लरे हैं।
लपट गए अंगनि सों अंग। पाइ ओरपहिं बल के संग॥ ४ ॥
कबै भीम को कूप धकावै। कबै भूप को भीम लिजावै।
कबहू सीस सीस पर मारैं। घोर नाद को दुऊ उचारैं॥ ५ ॥
सुनि करि लोग मगर के सारे। चिंतातुर त्रासति उर भारे।
सुभट पुरख बालिक अर जवान। बिध नर आइ नारि तिस थाना॥ ६ ॥
अंदर संदरि पर चढि करि कै। चिंतातुर भै धरहिं निहारि कै।
महां भीर चारहुं दिशि मांहिं। देखहिं संकर कितिक उमाहिं॥ ७ ॥
निकटि भीर बहु पहुंची देखि। तजि रण कीने दूर अशेख।
इंद ब्रितासुर[2] जनु द्वै लरे। दोनहुं महिद वीर बक करे॥ ८ ॥
जनु केहरि करि कोप बिसाला। लरहि परसपर जुद्ध कराला।
इस प्रकार जूझे वरिआर[3]। बीते दिन लरते दस चार[4]॥ ९ ॥

1. भायनक आवाज 2. दैत्य का नाम है 3. सैनिक 4. चौदह

देखति श्री प्रभु तिनकी ओरा। जरासंध को पिखि बल थोरा।
निकटि भीम कह्यो बुझाई। किम निरबलि इस लख्यो गुसाई॥ १० ॥
अंग अंग मेरो थक गइऊ। आगे होवौं धीर न पइऊ।
प्राक्रम मों महि रह्यो न भारी। करतो जुद्ध श्रमत तन भारी॥ ११ ॥
महां बली इह अग्रं खरोवा। तुम कैसे इह निरबल जोवा।
भीमसैन ते सुनति बखाना। पवन पुत्र तुं बली महाना॥ १२ ॥
ऐसे तुझ को नहिं बनि आइ। करि उतसाह महां बल लाइ।
जरासंध्र को जीतहि रण मैं। इम निशचै राखो करि मन मैं॥ १३ ॥
इक त्रिण लेकरि कर घनश्याम। करहिं इशारत लोचन बाम।
बिच ते चीयौ सगरो सोइ। करि दिखरायो इक ते दोइ॥ १४ ॥
भीमसैन इम सैन बुझाई। जान्यो भेद रिदे हरखाई।
कर्यो दखंड जोरनो एहि[1]। इम तुम चार देह रिपु देहि[2]॥ १५ ॥
तबि श्री क्रिशन पीठ तीस थापी। दीनसि बल बिसाल को आपी।
श्रम सभि दूरि कर्यो तिस तन ते। मारनि शत्र चाह्यो मन ते॥ १६ ॥
गयो भीम भा खरो अगारी। जरासंध आवा बलि भारी।
भिरैं बहुत बिधि मुशटन हतैं। गहैं अंग ढिग रिस करिचितैं॥ १७ ॥
पाइ घात लरते बड़ जोधे। करहिं प्रहारन दुह तन क्रोधे।
भीम समरि बल श्री प्रभु केरा। भुज ते गह्यो भूप तिस बेरा॥ १८ ॥
बल कर सिर पर फेर्यो ऐसा। चक्र कुचाल भ्रमावहि जैसा[3]।
सकल नगर के देखति तूरन। पटक्यो अवनी पर हित चूरन[4]॥ १९ ॥
इक पग पग के तरे दबाइव। दुत्यि गह्यो कर साथ उचाइव।
बल करि चीर्यो देहि सु हाना। उठ्यो शबद तबि घोर महाना॥ २० ॥
करि दुखंड धरनी महि डार्यो। इम श्री क्रिशन शत्रु संघार्यो।
जरासंध को सुत सहिदेव। कर्यो त्रास तजि कै अहंमेव॥ २१ ॥
निज पित के सभि सचिव बुलाए। बनहिं मिलनि हरि मतोमताए।
जिनहुं अगारी भूपति हारा। मैं तिस को सुत कहां बिचारा॥ २२ ॥
रतन अनेक उपाइन लीने। मिल्यो आनि पद बंदन कीने।
प्रभू अभैता तिस को दीनसि। राज सिंघासन पर थित कीनसि॥ २३ ॥

1. यह (जरासंध) दो खंडों को जोड़कर बनाया गया है 2. शरीर 3. जैसे कुंभकार चक्र को घुमाता है 4. टुकड़े करने के लिए

कह्यो बरख पूरन ते आवहु। धरमराज[1] पग सीस टिकावहु।
राजसूइ मख[2] चाहति कर्यो। राज धरम को द्रिढ करि धर्यो ॥ २४ ॥
श्री प्रभु आइसु जथा तुमारी। हम अबि बरतहिं तिस अनुसारी।
राज देश धन धाम तुमारा। दियो कर्यो हम अंगीकारा ॥ २५ ॥
बासदेव कहि भुप छुड़ाए। कारागिह मंहि जे समुदाए।
ले करि संग भीम भट अरजन। आइ पहुंचति भे पुरिहसतन[3] ॥ २६ ॥
श्री गुर तेगबहादर धीर। कही कथा सभि सिक्खयनि तीर।
'इन देशनि सभि को सहिदेव। राज करनि लाग्यो नरदेव ॥ २७ ॥
पंच दशम संमत पुन जीव्यो। जबि बिरोध कैरव महिं थीव्यो।
भयो संग्राम महां कुरछेत। भूमि भार उतारीन हेतु ॥ २८ ॥
सभि देशनि के निपत बडेरे। इकठे भए काल के प्रेरे।
महां बली बढ शकति धरंते। शसत्र असत्र बिद्या गुनवंते ॥ २९ ॥
पांडव धरम जुधिशटर राजा। करव बिखै द्रुजोधन साजा।
बढी सपरधा[4] दुहुं दिशि मांही। करि हंकार तजैं हठ नांही ॥ ३० ॥
देश देश के न्रिपत हकारे। चलि आए दोनहुं दिशि सारे।
रथ हाथी हय जोधा ब्रिंद। सिमटि प्रिथी[5] ते मिले नरिंद ॥ ३१ ॥
जरासंध को सुत इस देश। इह भी ले करि चमूं अशेश।
छोहनि भई अशस्दस अनी[6]। श्री जुति, बल जुति, लोहे सनी ॥ ३२ ॥
क्रिआ काल की ऐसी भई। लरति परसपर सभि मिर गई।
तहां मर्यो सहिदेव सु जाइ। इसी देश को भूप कहाइ ॥ ३३ ॥
अपर कहां लगि गिनती करीअही। अनिक न्रिपत भे कौन उचरी अहि।
जरासंघ जो मुख्य भयो है। निकट काल महिं[7] कहि सुदयो है ॥ ३४ ॥
श्री गुजरी को भ्राते क्रिपाल। इत्यादिक सिख अपर बिसाल।
सुनि प्रसंग को उर हरखाए। रहिन लगे गुर सहिज सुभाए ॥ ३५ ॥
पटणा नगर जु बसहि बिलंद। बणज करहिं धनवान अमंद।
गुर के सिक्ख्ण आनि करि होइं। अभिमति ओ प्रापति नर सोइ ॥ ३६ ॥
दरशन करहि उपाइन अरपहिं। वर को लेहिं स्राप ते डरपहिं।
किह को प्रापति हुइ सतिनाम। को जाचति प्रिय पुत्रनि धाम ॥ ३७ ॥

1. धर्मपुत्र युधिष्टर 2. राजसूय यज्ञ 3. हस्तनापुर 4. ईर्ष्या 5. भूमि को इकट्ठा करके 6. सेना 7. द्वापर में

तन अरोग को चाहति कोई। केतिक लच्छमी को बर लेई,।
को जाचहि गुर ते चित लाई। 'अंतकाल महि होहि सहाई ॥ ३८ ॥
को दसौंध को देइ कमाइ। 'बनहि पदारथ सभि सुखदाइ'।
करहि नितप्रति दरशन कोइ। को आवति जबि कारज होइ ॥ ३९ ॥
गुर घर की सेवा सभि भांती। करहिं प्रीति सों दिन अरु राती।
पुर पटणे महि इसी प्रकार। कितिक द्योस गुर बसे उदार ॥ ४० ॥
बडे भाग जागे जिन केरे। सेवहि गुर पग हुइ करि नेरे।
जनम मरन बंधन तिन खोए। गुरु क्रिपाते मुकति सु होए ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे इकादशि रासे कवि संतोख सिंह बिरचताया भाखायां 'पटणे बसन प्रसंग' बरननं नाम एक शशटी अंशु ॥ ३१ ॥

इकादशवीं रासि संपूरनं ॥

੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥
੧ओं श्री वाहिगुरु जी की फतह ॥

(अथ द्वादशमि रासि कथनं)

अंशु १

राजा मान सिंह प्रसंग

१. इष्टदेव—श्री अकाल पुरख—मंगल।

दोहरा

पारब्रह्म ! परमातमा ! ब्यापक सकल समान।
सभि अलंब ! प्रेरक ! प्रभू ! बिदतहु रिदे महान ॥ १ ॥

२. 'कविसंकेत' मिर्यादा का मंगल।

सवैया

सुंदर उज्जल चंद अमंद मनिंद दिपै मुख दुंदन हानी[1]।
चंद्रिका चंद्रिक पारद[2] नारद[3] सारद अंग के रंग समानी ॥
देव जि ब्रिंद करैं अभिनंदन आनंद कंद बिलंद सु जानी।
तां पद के अरबिंदनि को गन बंदन[4] ठानि रचौं बरबानी ॥ २ ॥

३. इष्ट गुरु—श्री गुरु नानक देव जी—मंगल ।

चौपई

उपदेशति जग गुर भए फैल्यो जस जिम चंद।
बिघन बिनासहिं क्रिपा ते, श्री नानक पद बंदि ॥ ३ ॥

४. इष्ट गुरु—श्री गुरु अंगद देव जी का—मंगल।

अजर जरन, धीरज धरन, अमर करन सिख ब्रिंद।
श्री अंगद संकट हरन नमहिं पदनि अरबिंद ॥ ४ ॥

५. इष्ट गुरु—श्री गुरु अमरदास जी का—मंगल।

करे बिसाल निहाल जन टालि काल दुख जाल।
अमरदास श्री सतिगुरु रिदै संभालि क्रिपालु ॥ ५ ॥

---

1. कष्ट को दूर करने वाला 2. पारा 3. नारद की भांति सफेद 4. बहुत बार बंदन

६. इष्ट गुरु—श्री गुरु रामदास जी का—संगल।

त्रास नाश निज दास के वाक बिलास प्रकाश।
रामदास श्री सतिगुरु ! बासहु रिदै अवास ॥ ६ ॥

७. इष्ट गुरु—श्री गुरु अरजन देव जी का—मंगल।

तरजन दुख, बरजन विघन, सिरजन जन कल्यान।
श्री अरजन ! अरज़नि सुनहि, नमो पदम पद ठानि ॥ ७ ॥

८. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि गोबिंद जी का—मंगल।

जन ब्रिंदनि आनंद दे जिमि दिनिंद अरबिंद[1]।
श्री हरि गोबिंद चंद गुर नमो सुछंद मुकंद ॥ ८ ॥

९. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि राइ जी का—मंगल।

सुख बिलास दासनि बखशि रिपुनि बचन ते हानि।
श्री सतिगुरु हरिराइ जी नमहि, करहु कल्यान ॥ ९ ॥

१०. इष्ट गुरु—श्री गुरु हरि क्रिशन जी—मंगल।

दरशन ते संकट नसहिं पग परसनि सुखदाइ।
जन हरशन सरसन[2] सदा श्री हरि क्रिशन सुभाइ ॥ १० ॥

११. इष्ट गुरु—श्री गुरु तेग बहादुर जी—मंगल।

त्रिण तुल तन तजि तुरत तिह तुरकनि तेज निकंद।
तेग बहादुर सतिगुरु चरन कमल तिन बंदि ॥ ११ ॥

१२. इष्ट गुरु—श्री गुरु गोबिंद सिंह जी—मंगल।

रच्यो निखालिस[4] खलक ते पंथ खालिसा सुद्ध।
श्री गुरु गोबिंद सिंह जी हति रिपु क्रुद्धति जुद्ध ॥ १२ ॥

१३. दसों गुरु मंगल।

पग सरोज सभि गुरनि के उर महि भले मनाइ।
द्वादशमी अबि रासि को रचौं प्रमेसुर ध्याइ ॥ १३ ॥

दोहरा

कितिक दिवस बसि करि गुरु पटने नगर मझार।
सुख पायहु श्रम परहर्यो. सिक्खयनि करनि उधार ॥ १४ ॥

1. जैसे सूरज कमलों को आनंद देता है 2. दर्शन प्रसन्नता देने वाले हैं 3. दिल्ली को 4. शुद्ध (खालिस-खालसा)

अबहि कथा इक भूप की उचित कहनि के जानि।
तिस को बरननि करति हौं, सुनहु संत ! दे कान ॥ १५ ॥
देस कामरु[1] गुर गमनि कीनसि जिस के संग।
कहौं छोर ते[2] सो कथा जिम हम सुन्यो प्रसंग ॥ १६ ॥

चौपई

दिल्ली महिं अकबर तुरकेश। करनि राज ले देश अशेश।
जहां अवास होहि को जाई। तहिं बड सैना देति पठाई ॥ १७ ॥
करि संग्राम बिजै को पाइ। बसी करे सभि देशनि राइ[3]।
आइसु अकबर की सिर सहैं। अपनो राज करति सों रहैं ॥ १८ ॥
नीति बिसाल नीति उरधारैं[4]। मित्र वधावहिं शत्रु निकारैं।
देश कामरू रह्यो मवासी। तहि कामख्या[5] जोति प्रकाशी ॥ १९ ॥
महां शकति जुति जाहर कला। यांते नहिं अकबर बस चला।
भूप देश के पर जो आवै। सो देवी को शरनि सिधावै ॥ २० ॥
तबि सहाइता करहि बिसाला। हतहि दुशट की बल ततकाला।
अनिक रीति के मंत्र सु जानहिं। तिन के शत्रुनि गन को हानहिं ॥ २१ ॥
अकबर चितवति तिह सर करिबे। कई वार करि लशकरि चरिबे।
नहीं मिल्यो सो आइ कदाई। रहे मवासी . देश सदाई ॥ २२ ॥
मान सिंह राजा बलवंड। जीती पशचम दिशा प्रचंड।
महां मलेछ करे सर जाइ। तहां जीत की बंब बजाइ ॥ २३ ॥
हटि आयहु पुने अपने देश। शंका करति भयो तुरकेश।
इह रजपूत प्रतापी भारे। जे कबि बिगरहिं संग हमारे ॥ २४ ॥
रौरा पतिशाहत महिं पावै। कौन समुख हुइ जंग मचावै।
सुभट बडेरे पशचम देश। करे जोर ते जेर[6] अशेश ॥ २५ ॥
यांते इसहि मुहिम पठावैं। जहां जाइ करि फेर न आवै।
लरिते जीतहि करि रणघोर। देश कामरु मंत्रनि जोर ॥ २६ ॥
चलहि न बसि तहिं जुद्ध करनि को। मंत्रनि संग सु पाइ मरनि को।
जे न मरहि लै बिजै उपाइ। देश मवासी हम ढिग आई ॥ २७ ॥
अस मसलति करि कै छल सानी। न्रिपति हकार्यों बड अभिमानी।
दिल्ली महिं प्रवेश जबि होयो। गोबध ब्रिद कसाई जोयो ॥ २८ ॥

---

1. कामरूप देश 2. शुरू से 3. राजा 4. राजनीति का प्रतिदिन विचार करते हैं 5. गोहाटी के निकट एक देवी का मन्दिर जहां पर नंगी देवी की पूजा होती है 6. अधीन किए

षिखि करि सहि न सक्यो रिस धरिकै। खड़गनि संग कटा तिन करिकैं।
भाज दुरे तिन तिन प्राण उबारे। जो हेरे सो खड़ग बिदारे ।। २९ ।।
इस प्रकार बहु रौर मचावति। तुरकेशुर के निकटि सिधावति।
सुने हुते कुछ नांहिन कर्यो। तऊ रिदा[1] बहु दुख मैं दह्यो ।। ३० ।।
कपट ठानि कैं निकटि बिठाइसि। शसत्र बसत्र बहुमुले दिवाइसि[2]।
सभा लगाइ सकल उमराव। राजे अपर बुलाइ बिठाव ।। ३१ ।।
भरी कचहिरी महिं सनमाना[3]। अधिक दरब को बखशनि ठाना।
बीड़ी पानन को शुभ रंगी। अर शमशेर धरि करि नंगी ।। ३२ ।।
बीच सभा देखहि सभि कौन। गही न किनहूँ ठानी मौन।
देश कामरू मंत्रनि बल है। कहां करहिं तहिं, ले बडदल है ।। ३३ ।।
मान सिंह न्रिप रिदे बिचारी। सभि महिं सनमान्यो मुझ भारी।
इह शमशेर अगारी मेरे। कयौं फरेब अमर दिशि हेरे ।। ३४ ।।
बीच कचहिरी जे न उठावौं। निज बलि को तबि अधिक लजावौं।
'काइर भयो' करहिं पशचाती। इस बिधि होइ आनि घटि[4] जाती ।। ३५ ।।
बडे बली मो सों लरि सारे। मम आगै इह कहां बिचारे।
इम बिचारि अपनी बडिआई। करि सलाम शमशेर उठाई ।। ३६ ।।
तबि अकबर ने बहुत सराहा। निकसि बहिर तित चढनि उमाहा।
अनी[5] घनी घन मनहुं सकेली। गमन्यो भूप पंथ पग भेलि ।। ३७ ।।
लशकर चढ्यो मनहु घन महां। बजी बब बडि घोखति लहा[6]।
शसत्रनि चमक चंचला धरकैं[7]। चल्यो भूप द्रिग बामों फरकै[8] ।। ३८ ।।
सने सने निज डेरे घालति। प्रतिपालति निज चमूं संभालति।
पाछै अकबर दरब पठाइसि। हुइ सर देश कि न्रिप मरि जाइसि ।। ३९ ।।
दोनहुं दिशि ते हरख धरंता। सादर वसतू अधिक पठंता।
मान सिंह पूरब महिं जाइ। अपनो अधिक प्रताप दिखाइ ।। ४० ।।
बहुत देश को जीतनि कर्यो। देखि बली को कहूं न अर्यो।
ब्रह्म पुत्र नद[9] एक महाना। गुआहाट पुरि पार सथाना[10] ।। ४१ ।।
रंगामाटी[11] अहै उरारे। न्रिप दल जुति तहिं डेरा डारे।
चतर कोस पाटा[12] तिस नद को। उतरनि पार बिदारहि मद को ।। ४२ ।।

---

1. हृदय 2. बहुमूल्य शस्त्र और वस्त्र दिए 3. सम्मान 4. शान कम होती है 5. सेना 6. बादल सा गर्जता हुआ लगा 7. शस्त्रों की चमक बिजली की चमक की भांति है 8. बायीं आँख फर्कती है 9. नदी 10. गोहाटी का नगर जिसके पार है 11. एक स्थान का नाम है 12. चौड़ाई

पार जहां कामख्या मंदर। बसहि बिसाल नगर तहिं सुंदर।
तिसी देश को भूपति भारी। रजधानी निज पुरी सुधारी ॥ ४३ ॥
सबल बाहनी लिये महाना। बसहि नरेशुर देव समाना।
सदा उपासन देवी करता। आदि शकति को ध्यान सु धरता ॥ ४४ ॥
नितप्रति होम बिसाल करावहि। धूप दीप चंदन चरचावहि।
मान सिंह को ऐबो सुन्यो। जतन हतनि का चित महिं सुन्यो ॥ ४५ ॥
मंत्र पाठ करि बलि सु दै कै। शकति चलाई मन रिस कै कैं।
जिस छिन हतन हेतु सो आई। मान सिंह बैठ्यो सुच थाईं ॥ ४६ ॥
पाठ चडका करति करावति। चहुं दिशि ब्रह्म कवच[1] को गावति।
जबि सो शकति संघारनि आई। करि न सकी बल,पिखि सिथलाई ॥ ४७ ॥
दे करि हाथ कालका राख्यों। हुतो ध्यान देवी अभिलाख्यो।
बल दल को करि कै न्रिप मान। चहति बिजै करिबो तिस थान ॥ ४८ ॥
जित कित फैल परी बड अनी। त्रासति देश देखि करि घनी।
निज लोकनि भै जानि बिसाला। नौका रची एक महिपाला ॥ ४९ ॥
तिस पर पूतली रुचिर बनाई। जनु साची त्रिय इहां बिठाई।
फूल कमल को कर्यो बनावनि। महां सुगंधति को मन भावनि ॥ ५० ॥
अभि मंत्रति[2] करि सरब प्रकारा। मान सिंह को नाम उचारा।
मंत्र शकति करि नाउ चलाई। सने सने सो चलि करि आई ॥ ५१ ॥
तट पर मान सिंह को डेरा। अविलोकति दरिआउ बडेरा।
इक दुइ दास पास तिस काला। पिख्यो अचंभा आइ बिसाला ॥ ५२ ॥
जल के बेग न नौका चले। नर बिन सने सने निज ठिलै[3]।
अविलोकति चलि आई पासा। बिसम्यों भूपति अजब तमाशा ॥ ५३ ॥
अति सुंदर पुतरी सु निहारी। मान सिंह सुधि देहि बिसारी।
देखि चलित मन मोहति होवा। छुभति अधिक उर धीरज खोवा ॥ ५४ ॥
पहुंची अतिशै आइ समीप। रह्यो न गयो तबहि अवनीप।
बारि बारि अविलोकनि करता। पर्यो ख्याल तिस नांहिन हरता ॥ ५५ ॥
बहु सुंदर जबि फूल निहार्यो। तिस लैबे हित हाथ पसार्यो।
पुतरी करि ते जबि ही लीनहुं। घ्राण[4] निकटि करि सूंघनि कीनहुं ॥ ५६ ॥
ततछिन भयो बावरो मान। दल बल की सुधि गई जहान।
जबहि चमूं नै इम न्रिप जान्यो। इत उत भए त्रास मन ठान्यो ॥ ५७ ॥

---

1. रक्षक मंत्र 2. मंत्र पढ़ कर 3. अपने आप तैरती है 4. नाक

बिना भूप लशकर फटि गयो। आप आप को कित कित भयो।
ले सुधि कावर देश नरेश। लर्यो आइ संग चमूं विशेश ॥ ५८ ॥

मान सिंह सुधि लीनसि नाहिं। ठहिरी नहिं सैना रण माहिं।
भागे दूर अंतरो पाइ। डेरा कर्यो त्रास उपजाइ ॥ ५९ ॥

कितिक दिवस महिं तिस ही देश। मान सिंह भा म्रितक नरेश।
तबि लशकर घर को मुरि आए। बल मंत्रनि को सभिनि सुनाए ॥ ६० ॥

देश कावरू रह्यो मनासी। उर अकबर के चित प्रकाशी।
पुन नंगी शमशेर धरी है। भै करि किनहुं न ग्रहन करी है ॥ ६१ ॥

धरी रही शमशेर बिसाल। तिस पशचात बित्यो चिरकाल।
अकबर मर्यो करति ही आसा। जहांगीर सुत कीनि प्रकाशा ॥ ६२ ॥

तबि भी किनहूं नहीं उठाई। मंत्रनि त्रास धरति अधिकाई।
सो भी पहुंच्यो जम घर जाइ। शाह जहाँ भा तुरकनि राइ ॥ ६३ ॥

इह भी चाहति रह्यो सदाई। नहिं किनहुं शमशेर उठाई।
पुन अवरंग होयसि पतिशाहू। इह भी करति रह्यो चित चाहू ॥ ६४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'राजा मान सिंह प्रसंग' बरननं नाम प्रिथमो अंशु ॥ १ ॥**

अंशु २

बिशन सिंह राजा को प्रसंग

दोहरा

भयो नुरंगा शाह तबि जीते देश अशेश।
लशकर कर्यो बिसाल जिन दे करि त्रास विशेश ॥ १ ॥

चौपई

वहि शमशेर कचहिरी माहूं। धरी रहहि को गहहि न ताहूं।
मान सिंह को नाती[1] भयो। बड मरातबा जिस को दयो ॥ २ ॥
देश बिसालै दरब बिसाल। लशकर बडो चढहि तिस नाल।
चहति नुरंगा तिसै चढायो। सादर दल बल देति बढांयो ॥ ३ ॥
दाव घाव सों करि बडिआई। क'ह करि तिस ते सो उठिवाई।
आदर दरब दीनि बहुतेरा। कर्यो पिछारी कटक घनेरा ॥ ४ ॥
'सदा आफरी[2]' कहि कै शाहू। चढिबे को दीनसि उतसाहू।
हट्यो न जाइ शाह के कहे। मरनि मानि कै सो असि गहे ॥ ५ ॥
रुखसद[3] होइ शाहु ते चल्यो। आइ जोधपुरि सभि सों मिल्यो।
देश कावरू करनि चढाई। जबि अपने परिवार सुनाई ॥ ६ ॥
महां शोक ह्वोयसि रनवासू। रोदन ऊचे करति प्रकाशू।
हाथन तल सों पीटहिं सिर को। सकल हितू रोदति मिलि करि सो[4] ॥ ७ ॥
भूपति बिशन सिंह की मात। बिरलापति ऊचे बिललात।
'हे सुत ! तुमरो बडो भयो है। बड मवास जिन बिजै कियो है ॥ ८ ॥
तुरकेशुर ने तहां पठाइ। करि टामन[5] सो दयो मराइ।
तिह सम तोहि शकति नहिं पईअति। किम जीतहिं इह नहीं लखकई अति' ॥ ९ ॥
शोक बिसाल जोध पुरि होवा। बिशन सिंह जनु मितु ही जोवा।
जीवन जतन न पावति सोऊ। भए सोच वशि तहिं सभि कोऊ ॥ १० ॥
खान पान मन ते बिसराइसि। शोक चिंत ते चित बिकुलाइसि।
बिशन सिंह की इक पटरानी। कुछ गुर महिमा को तिन जानी ॥ ११ ॥

---

1. पोता 2. शाबाश 3. विदा होकर 4. उसको 5. टोने

निज नैहर[1] के बास करंती। तहां रहति इह सकल सुनंती।
श्री हरि गोबिंद दुरग मझारे। न्रिपत बवंजा वहिर निकारे।। १२ ।।
मरन प्रयंत कैद जिन केरी। सरब छुटाइ दीनि तिस बेरी।
तबि की श्री गुर महिमा पूत[2]। पसरी बहुत देश रजपूत।। १३ ।।
करामात साहिब अवतार। क्रिपा सिंधु सुख सभि दातार।
अज़मति सों तुरकेश दबाइस। सादर ब्रिंद नरिंद छुटाइसि।। १४ ।।
अपनी सास संग सभि कही। 'गुर सहाइ ते भै कित नहीं।
तीन लोक पर तिनहुं प्रताप। सेवक के हरित त्रै ताप।। १५ ।।
जो अबि गादी पर गुर होइ। खोजहु कहां बिराजहिं सोई।
तिन की शरनि भूप चलि जावहु। अपनि सहाइक तिनहु बनावहु।। १६ ।।
देश कामरू क्या तिन आगे। तिस ते सकल सुरासुर भागें।
जिस थल थिरहिं गुरु भगवान। नहिं करि सकहि बिघन को आन।। १७ ।।
पीर मीर सिध नाथ महंत। सभि ते अधिक लखहु भगवंत'।
सुनति नुखा के बाक अमी को। सास कर्यो सीतल निज ही को।। १८ ।।
सुत सों सगरी बात सुनाई। 'खोजहु सतिगुर ह्वै जिस थाईं।
रामराइ ढिग नहीं गुराई। अज़मत करि अनेक दिखराई।। १९ ।।
गादी निस के अनुज लई है। पुरि दिल्ली तजि देहि दई है।
तिन पाछे गादी पर जोई। अपनि सहाइक की जहि सोई'।। २० ।।
सुनि जननी ते सभा मझारी। बिशन सिंह ने आन उचारी।
'श्री नानक गादी पर कौन ?। सो अबि कहां ? कहां तिस भौन ?।। २१ ।।
सभा बिखै इक मानव कह्यो। 'मैं तिस गुर को दरशन लह्यो।
गया करावनि मैं चलि गयो। तहां मिलाप तिनहुं को भयो।। २२ ।।
सो भी गया बिखै चलि आए। पुरि पटणे को पुनहि सिधाए।
तिन दासन सों सुनी सु सुनीअहि। कितिक काल बसिब्रो तहिं जनीअहि।। २३ ।।
लोक हजारहुं तजि तजि सदन। आइ करहिं बंदन गुर पदन।
जहां कहां महिमा महीमान। कर जोरहिंदें भेटनि आनि।। २४ ।।
कहति अनेक सुने तिस थांई। अज़मत अजब बहुनि अज़माई।
श्री गुर तेग बहादर नामु। जिनके चलित पिखे अभिराम।। २५ ।।
जिस जिस मारग को गमनाए। सिक्खी अंम्रित को बरखाए।
सो सभि देश महां जस करता। जहिं कहिं उतरि करे शुभ चरिता'।। २६ ।।

---

1. माता पिता 2. पवित्र

बिशन सिंह सुनि धीरज पायो। ततछिन अपनि वकील पठायो।
बहु उत्तम दे ब्रिंद अकोर। बिनती करि भेजी कर जोरि ॥ २७ ॥
'तूरन गमनहु तहिं अटकावहु। मम दिशि ते बहु बिनै सुनावहु।
हेरि महूरत मैं चढि आवौं। तिन को दरसौं बिलम न लावौं' ॥ २८ ॥
सुनति दूत, ले .जवी तुरंग[1]। गमन्यो तुरत कुछक नर संग।
दूर दूर की मंज़ल करता। श्रम की पीर नहीं उर धरता ॥ २९ ॥
पहुंचयो पटणे पुरि महिं जाइ। सतिगुर सुधि बूझी तहिं आइ।
अबि श्री तेग बहादर कथा। श्रोता सुनहुं बितीती जथा ॥ ३० ॥

दोहरा

सिक्खयनि पूरन कामना आप कामना कीनि।
तीरथ तीर समुंद्र लौ मज्जहिं जित कित चीन ॥ ३१ ॥

चौपई

ब्रह्मपुत्र नद करि इशनाना। जगन नाथ आदिक जे थाना।
देश देश के देखनि कारन। शुभ मारग सिक्खी बिसतारन ॥ ३२ ॥
श्री नानक तन कदि जहिं गए। सत्यनाम उपदेशति भए।
लोक अनेकनि को कल्यान। जित कित फिर करि कीनि महान ॥ ३३ ॥
तिसको दिढ करिबे के हेतु। बितव्यो श्री गुर क्रिपा निकेत।
सिक्खनि कितिक प्रतग्या कीनि। हम घर आवहिं गुरु प्रबीन ॥ ३४ ॥
किति किनि पोशिश रखी बनाइ। आवहिं गुर अपने गर पांइ।
कितिक अंन सुध्र धरे सदन मैं। गुरू अचावहिं—चाहति मन मैं ॥ ३५ ॥
निसदिन करहिं प्रतीखन सोऊ। करत्ति प्रत्तग्या अपनी जोऊ।
महां प्रेम धरि करहिं अराधन। मिलि मिलि बूझति हैं बहु साधन ॥ ३६ ॥
'कबि सतिगुर आवहिं इस देश। करहिं क्रितारथ दे उपदेश'।
तिन सभिहिनि के मन की जानि। गमन्यो चहति गुरू भगवान ॥ ३७ ॥
सिख संगति को सुध कहि दई। 'आगे जानि गुरु मति ठई'।
सुनि संगति इकठी हुइ आई। अनिक प्रकार उपाइन ल्याई ॥ ३८ ॥
दरब ब्रिंद सुंदर पट झीने[2]। ज़री बादला के दुति भीने।
जेतिक श्री गुजरी हित ल्याए। बहुत मोल के बसत्र सुहाए ॥ ३९ ॥
जरे जवाहर भूखन चारु। बहुत भांत के बने अपार।
धनी बनिक की दारा ब्रिंद। प्रापति भी बडभाग अनंद ॥ ४० ॥

1. तेज़ चाल वाला घोड़ा 2. बारीक—पतले कपड़े

सभि संगति मिल बिनै सुनाई। 'श्री गुर क्रिपा करहु इस थांई।
सेवा अपनी सभि फुरमावहु। हम दासनि सों कहि करिवावहु ॥ ४१ ॥
चरन आपके जहां उपासे[1]। अखिल आइ तहिं तीरथ वासें।
लहै सपरशन रापर संगा। गंगा हुइ पावन सरबंगा ॥ ४२ ॥
चहहु जहीं निज चरन धरन को। जगे भाग नर धंन करनि को।
इस पुरि की गन संगत सारी। जिम अभिलाखा करहि तुमारी ॥ ४३ ॥
पूरन करनि उचित तुम अहो। निशचै चल्यो जि चित महिं चहो।
माता सहत रहहि सभि डेरा। इसी सदन महिं करहि बसेरा ॥ ४४ ॥
तुमरे थान आइ सिख सारे। पूजहि सरब भांति हित धारे।
श्री माता के चरन मनावहिं। मनो कामना संगत पावहि ॥ ४५ ॥
आप आइ हो, रहे उडीका[2]। पुन दरसहिं सिख दरशन नीका।
अपर तरक नहिं करहु प्रकाश। इहु संगति सगरी तुम दास ॥ ४६ ॥
निस बासुर सेवा महिं ठाढे। गुरू चरन पर निशचा गाढे'।
श्री गुर तेग बहादर हेरी। अधिक भावना संगति केरी ॥ ४७ ॥
कह्यो क्रिपाल संग तिस काले। 'वसहु सरब तुम इहां सुखाले।
हम कैतिक दिन फिर करि सारे। तीरथ करते देश निहारे ॥ ४८ ॥
सभि डेरे बिन गमनहिं तूरन। करहिं कामना अपनी पूरन।
दूम निज दास अपर समुझाए। जें पटने पुरि बिखे हटाए[3] ॥ ४९ ॥
मात नानकी सुनि करि आई परम प्रेम ते कहति सुनाई।
'हे सुत ! तुम को देखनि करौं। सदा आपने उर सुख धरौं ॥ ५० ॥
अबि मोंकहु तजि कै निज संग। गमन अगारी धरो उमंग'।
सुनि कै सतिगुर ने समुझाई। 'पुरवहु उर आशा सुखदाई ॥ ५१ ॥
हम को जानो बनै जरूर। केतिक सिक्खनि शरधा पूरि'।
इस प्रकार दे सभि को धीर। चल्यो चहित हैं गुरु गंभीर ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'बिशन सिंह राजा को प्रसंग'** बरननं नाम दुतीओ अंशु ॥ २ ॥

---

1. पूजे जाते हैं 2. प्रतीक्षा 3. वापिस लौटाए

अंशु ३

न्रिपु बिशन सिंह सतिगुरु सों मिलन प्रसंग

दोहरा

भई जामनी सतिगुरु बैठे सैन सथान।
श्री गुजरी तबि आनि करि कीनसि बिनै बखानि ॥ १ ॥

चौपई

'श्री प्रभु ! हेतु तीरथन आए। रावर की संगति सभि थाएं।
अपनो देश छोरि करि आए। बीच विदेशन आनि बसाए॥ २ ॥
सभि को त्यागि इकाकी चले। क्यों भावति, इहु नांहिन भले।
बिछरहु आप दूर किस थान। चहति इकाकी कर्यो पयान ॥ ३ ॥
सगरे देश प्रभाउ तुमारा। होहिं दास धरि भाउ उदारा।
जहिं कहिं माननीय जग मांही। बंदनीय सभि देशनि जाहीं ॥ ४ ॥
तुमरे करि चिंता हम कोई न। रावर को कैसों करि होइ न।
तऊ बिचारो निज मन मानि। बिच बिदेश एकल चलि जानि ॥ ५ ॥
रावर की जननी ते सुन्यो। जथा तुमारे पित ने मन्यों।
धरम धुरंधर अधिक प्रतापी। महांबीर शत्रुनि गन खापी ॥ ६ ॥
राकापति प्रकाश जग जैसे। पुत्र आपके उपजहि तैसे।
अटल सफल, संसै जिस नांहि। अस बचहैं खशटम पतिशाह[1] ॥ ७ ॥
नित चाहति चित पौत्र दुलारनि। करति प्रतीखन कहि बहु बारन।
दीरघ दरसा सुब्रित सासु। जो मुख कहै हीइ सफला सु ॥ ८ ॥
भयो समैं सुर होवनि[2] केरा। आगै चले आप तजि डेरा।
सुनि श्री तेग बहादर ऐसे। पिता सरूप ध्यान करि तैसे ॥ ९ ॥
हाथ जोरि करि बंदन ठानी। ब्रिंद अरिंदम[3] बहु बलखानी।
श्री गुजरी कहु दीनि दिलासा। 'गुर बच पर राखहु भरवासा ॥ १० ॥

1. छटे गुरु, श्री गुरु हरि गोबिंद जी 2. पुत्र के जन्म का समय 3. शत्रुओं का दमन करने वाले

टिकहु इहां गुर संगति भारी। सकल भांति ते रहहु सुखारी।
हम केतिक दिन तीरथ करि हैं। नीके पूरब देश तिहरि हैं॥ ११॥
निपज[1], ब्रिद्ध ह्वै कुल को टीका। बरख पंच को हुइ तन नीका।
चलहिं कुशल सों तबि निज देश। तीरथ करहिं शनान अशेश'॥ १२॥
म्रिदुल सुखद इत्यादि उचारे। धीरज दई 'लहहु सुख सारे'।
सुनि श्री गुजरी तूशनि ठानी। जग गुर के अनुसारि महानी॥ १३॥
मन बांछति तबि खाइ अहारा। जिन[2] जग हिंदू धरम उबारा।
रुचिर म्रिदुल उज्जल पै फेन। आसतरन दीरघ सुख दैन॥ १४॥
लघु बिसाल उपधानु धरे हैं। सेजबंद मखतूल[3] खरे हैं।
गुंफे जरीदार लरकंते। फूल माल सों रुचिर सुहंते॥ १५॥
अस प्रयंक पर पौढे आए। शांति आतमा गुर गतिदाइ।
रैब बिखै करि सैन सुखारे। तीन जाम जामनि के टारे[4]॥ १६॥
पुनहि प्रबोधति हुइ तिस काल। नित की क्रिआ कीनि बिधि नाल।
करि शनान आसन पर बैसे। चितवति निज सरूप है जैसे॥ १७॥
भई प्रभाति दिवान लगाइ। संगति बीच महां दुति पाइ।
जिम तारन गन करि परवारे। निसपति सम अहिलाद निवारे॥ १८॥
दूत जोध पुरि ते चलि आयहु। अरपि उपाइन सीस निवायहु।
आइसु पाइ सभा महिं थिर्यो। हाथ जोरि करि बिनती कर्यो॥ १९॥
'बिशन सिंह महिपाल त्रिसाला। धर्यो आप के पद पर माला।
अधिक प्रेम ते बिनै बखानी। कीरति तुमरी सुनी महानी॥ २०॥
शरन परे के होहु सहाइक। अनिक बिघन दासनि के घाइक।
महां कशट ते मोहि उधारहु। दीनबंधु निज बिरद संभारहु॥ २१॥
दई मुहिम कामरू देश। महांबली हम पर तुरकेश।
तिन के सग जंग नहिं बनै। अनिक बिधनि के मंत्रनि भनै॥ २२॥
हत्यो पितामा मेरो तहां। दल बल सरत प्रतापी महां।
मैं रावर के ह्वै करि संग। ले बल को ठानों तहिं जंग॥ २३॥
तुम पग पंकज करो जहाज। रण समुंद्र तरि, राखहु लाज।
पिता तुमारे को जसु महां। जग महिं सुनियति है जहिं कहां॥ २४॥
लख्यो आप को परउपकारी। प्रण पूरन कीने सिख भारी।
मम आवति लौ थिरता धरीअहि। अपर सथान पयान न करीयहि॥ २५॥

---

1. अवतार लेने वाले 2. अर्थात् नवें गुरु जी ने 3. रेशम की डोरी वाले 4. रात के तीन पहर बिताए

बिलम न, मोकहु आयो जानहु। मझ को संग आपने ठानहुं'।
सुनी दूत ते बिनै प्रसीने। सरब प्रसंग बूझिबे कीने॥ २६॥
दिवस इकादश पटने थिरे। आयहु भूप उताइल करे।
केतिक संग अहै उमराव। लशकर महां जथा दरीआव॥ २७॥
पुरि पटणे महिं उतर्यो आई। ब्रिंद दुंदभै शबद उठाई।
झंडे गाडे अनिक निशान। गन मतंग अरु बली किकान॥ २८॥
उशटर बहु मोले समुदाए। शमियाने तंबू गन लाए।
गुर की सुध्रि सुनि 'हैं पुरि मांही'। भयो हरख चिंता चितदाही॥ २९॥
गयो दूत ने सकल सुनायसि। 'तोहि भाग करि गुर इत आयसि।
सुनि कै प्रेम सहित तुव बिनती। गमनति टिके त्यागि मन गिनती॥ ३०॥
नांहित चाहति चलनि अगारी। सुनि मुझ ते बहु करुना धारी।
पाछल जाम दिवस के मिलो। पुरहु भावना हुइ तव भलो'॥ ३१॥
सुनि अनकूल गुरू जग केरा। बिशन सिंह कै अनंद घनेरा।
करि डेरा कर चरन पखारे। बसत्र बिभूखन तन शुभ धारे॥ ३२॥
सिपर खड़ग को अंग सजाए। लयो उपाइन को समुदाए।
संग सुभट सभि आयुध धारी। चल्यो नगन पग पनहि उतारी[1]॥ ३३॥
आगै धरे पांवडे[2] जेई। कहि करि हटवाइसि सभि तेई।
देखि दूर ते रूप क्रिपाला। हाथ जोरि करि नंम्री भाला[3]॥ ३४॥
'शरन शरन' मुख बोलति बानी। धर्यो चरन सिर बंदन ठानी।
'दास पर्यों रावरि दरबार। मम भुज गहीयहि हाथ पसारि'॥ ३५॥
तबि सतिगुर दे धीर बिठायो। 'गुर घर ते सिख सभि किछु पायो।
देश कामरू बिजै उपाइ। आवहुगे बड जस उपजाइ॥ ३६॥
जग महिं अस कारज नहिं कोइ। पूरन नहिं सतिगुर ते होइ।
मन निशचै धरि चिंत निबारो। श्री नानक को नाम चितारो॥ ३७॥
करहु तिहावल को समुदाइ। सिख संगति महिं दिहु बरताइ।
करहु कामना मन महिं जोइ। देश कामरू की जै होइ॥ ३८॥
सिमरहु सतिगुरु पूरहिं सारी। उर ते संसै देहु बिदारी'।
हाथ जोरि करि भूप सुनाना। 'मोहि भरोसो पूरब आवा॥ ३९॥
सुन्यों सुभाव जबहि उपकारी। चह्यो शरन मैं परन तुमारी।
मिस मुहिम के जागे भाग। जिस ते भयो गुरु पग राग॥ ४०॥

---

1. जूता उतार कर 2. पायदान 3. माथा टेका

इत्यादिक न्रिप कहि करि बैन। पिखि गुर को करि सीतल नैन।
बंदन करि डेरे महिं गयो। अति उतसव अनंद को कियो ॥ ४१ ॥
तोप, रहिकले, तुपक, जमूरे। करी शलख रव सुनियत दूरे।
सभि मानव पुरि पटणे बासी। सतिगुर कीरति करति प्रकाशी ॥ ४२ ॥
न्रिप प्रसंग को कहैं सुनावैं। 'देश कामरू इह सग जावै।
आगे सतिगुर हुते तिआर। आइ शरन इह डर उर धारि ॥ ४३ ॥
न्रिप को बडो मान सिंह जोइ। तिसी देश म्रितु प्रापति होइ।
मंत्रनि को लखि त्रास महाना। गुरु अलंब ते चहति पयाना' ॥ ४४ ॥
बिशन सिंह पंचाम्रित ब्रिंद। संगति मैं बरताइ बिलंद।
सतिगुरु पद पाहुल को लेय। भयो सिक्खय क्रितारथ सेय ॥ ४५ ॥
श्री गुर तेग बहादर चंद। अनुसारी तबि होइ नरिंद।
चहति कूच आगे को कर्यो। लशकर जुति पुरि के ढिग पर्यो ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे '**न्रिपु बिशन सिंह सतिगुरु सों मिलन प्रसंग**' बरननं नाम त्रितियो अंशु ॥ ३ ॥

अंशु ४

सिक्खनी ब्रिद्धा को प्रसंग

दोहरा

सतिगुर की मरजी लई बिशन सिंह महिपाल ।
कर्यों कूच आगे चल्यो लखहि मुहिम बिसाल ॥१॥

चौपई

श्री गुर तेग बहादर संग । चले अरूढति होइ तुरंग ।
केतिक सिक्ख फकीरनि ब्रिंद । चले संग गुरु धरे अनंद ॥ २ ॥
मात नानकी को करि बंदन । श्री गुजरी को करि अभिनंदन ।
आदि क्रिपाल जु गुजरी भ्राता । दे धीरज सभि को बख्याता ॥ ३ ॥
संगति को हित सेवा कहि कै । सभि पुरि खुशी करी सिख लहि कै ।
चले अगारी श्री गुरु धीर । साथ निपत अरु सैना भीर ॥ ४ ॥
चाले सनमुख देश बंगाले । दुंदभि बाजे शबद बिसाले ।
हुतो मुंगेर नगर इक भारे । बर्सहिं ब्रिंद नर गंगा किनारे ॥ ५ ॥
श्री सतिगुरु तहिं उतरे जाइ । संगति सुनि आई अमुदाइ ।
नाना भांति उपाइन आनी । धरि शरधा पर बंदन ठानी ॥ ६ ॥
जो जो जिस जिस गुरु हित घर्यों । ततछिन अति सु अरपन कर्यो ।
सभि पर जथा उचित गुनखानी । करी खुशी इछ पूरन ठानी ॥ ७ ।
केतिक बासुर कीनसि बासा । सिक्खी पंथ विशाल प्रकाशा ।
सत्यनाम को सिमरन दीनि । निज संगति की श्रेय सुकीनि ॥ ८ ॥
पुन प्रसथाने गुरु अगारी । लशकर भूत समेत पिछारी ।
होति कुलाहल बजति नगारे । ब्रिंद तुरंग हिरेखा धारे ॥ ९ ॥
कुंजर चलहिं उतंग महाने । होदा झूलति झालर साने ।
अनी घनी गमनी बलसनी* । जिस महिं बड़े बड़े गन घनी ॥ १० ॥

* बल वाली ।

राजमहिल पुन पहुंचे जाइ । गन उमराव संग हरखाई ।
केतिक चढ़े मतंगनि आवति । सो सिवका पर थिर सुख पावति ॥ ११ ॥
केतिक चलित तुरग नचावति । शसत्र बसत्र शुभ पहिरि सुहावति ।
तंबू तहां पहुंचि लगवाएं । डेरे महिं गुर बसे सुहाए ॥ १२ ॥
नहीं नगर महिं प्रविशे जाइ । सुनि संगति तहिं की समुदाइ ।
भेट इकत्र करनि को लागे । नहिं पहुंच ढिग करि अनुरागे ॥ १३ ॥
करहिं सु त्यारी ऐबो जावद* । गमने आगे सतिगुर तावद ।
नहिं प्रेमी सिख तहाँ निहारे । बिना मिले गुरु अग्र सिधारे ॥ १४ ॥
पीछे पछुतावति सो रहे । मूढनि नहीं महातम लहे ।
पूरब जिनहुं न भाग उदोते । तिन की दशा इसी विधि होते ॥ १५ ॥
ढिग सतिगुर नहिं दरसे जाइ । बिना भाग ते को किम पाइ ।
चलि क्रिपाल जबि आगे गए । नगर मालदह प्रापति भए ॥ १६ ॥
तिसि पुरि जहिं संगति इसथान । जाइ ब्रिराजे क्रिपा निधान ।
तहिं भी सिक्खय न कोऊ आयहु । सेवा करी न फल को पायहु ॥ १७ ।
शून सथान हेरि गुरु पूछा । कैसे करि सिक्खयनि ते छूछा ? ।
आवति जाति न दीखति कोई । धरमसाल महिं थिर नहिं सोई ॥ १८ ॥
सुनि करि श्री मुख ते इम बानी । गुरु समीपनि बिनै बखानी ।
पंडूए ग्राम सु केतिक दूर । तहां बरस महिं मेला पूर ॥ १९ ॥
पुरिबासी सिख सगरे गए । तिस मेले महिं प्रापति भए ।
दिन दो इक मैं सो चलि आवैं । बहुर मिलै जे सतिगुर भावैं । २० ॥

सहिज सुभाइक गुरु उचारी । 'मम सिक्खी के नहिं अधिकारी ।
तिन सों मेला ह्वै न हमारो । निस को बासि मग चलहिं अगारो ॥ २१ ॥
इक सिख हुतो तहाँ हलवाई । आइ पर्यो सतिगुरु शरणाई ।
लखि मरज़ी अरज़ी तिह करी । मोहि कामना पूरी परी ॥ २२ ॥
पुरवति रहे मनोरथ मेरे । भयो क्रितारथ दरशन हेरे ।
दीन दयाल मैं रावर शरनी । मम इच्छा इह पूरी करनी ॥ २३ ॥
मम कर को पकवान महाना । करूना धारि करहु सो स्नाना' ।
देखि भाउ तिस के मन केरा । आइसु करी गुरु तिस वेरा ॥ २४ ॥
हरखति हुइ तिन भलो बनाइव । भांति भांति पकवान पकवाइव ।
महां प्रेम को धारति ल्यायो । सतिगुर आगै आनि टिकायो ॥ २५ ॥

* जब तक

प्रीति सिक्खय् की देखी उदारा । रुचि सों कीनसि खान अहारा ।
दासनि के समेत त्रिपताए । करि पखारि पर पौंछ सुहाए ॥ २६ ॥
तिस पर खुशी भाए गुरदयालु । छिनक बिखै सिख कीनि निहाल ।
कर्यो कूच ढाके दिशि चले । मारग बिखै सिख्य बहु मिले ॥ २७ ॥
करति कामना पूरन जाते । सिक्खय हजारों नित बरुसाते[1] ।
संगति पर करि क्रिपा क्रिपाला । दरशन देते करती निहाला । २८ ॥
मनहुं कामना चितवहि कोई । सो सतिगुर ते पूरन होई ।
करहि प्रेम भोजन अचवावहि । को पोशिश को तन पहिरावहि ॥ २९ ॥
को अपने घर बिखैं उतारहि । प्रीति धरहि को दरस निहारहि ।
नहिं ठहिरैं पुन गमने जाहिं । लशकर संग चलति उतसाहि ॥ ३० ॥
सैना महिं तंबू लगवाइ । किसू थान गुरु बीच रहाई ।
कबिहूं सिख प्रेमी को देखि । तिन के धर उतरहिं अविरेखि[2] ॥ ३१ ॥
इम केतिक दिन महिं गोसाईं । ढाके पंहुचे दल समुदाई ।
सभि को डेरा वहिर उतारा । आप गुर पुरि नहिं पग धारा ॥ ३२ ॥
ढाके नगर मझार मसंद । बसहि बुलाकी दास विलंद ।
तिस की मात ब्रिध बहु तन की । बड़ी लालसा गुर दरशन की ॥ ३३ ॥
करे प्रेम निज सदन मझारा । गुरु हित एक प्रयंक सुधारा ।
आसतरन सो छादनि कर्यो । सेजबंद संग कसि करि धर्यो ॥ ३४ ॥
तिस कऊ पूजहि संझ सकारे । रिदे मनोरथ को इन धारे ।
इस ऊपर जबि आनि बिराजें । तबि मेरे पूरन सभि काजे ॥ ३५ ॥
तूल[3] सुधारे अपने हाथ । पुन कात्यो सूखम हित साथ ।
प्रेम धारि सो बसन बुनावा । गुरु हित पोशिश सकल बनावा ॥ ३६ ॥
धूप दीप पूजा नित करै । दरशन आस ध्यान पुन धरै ।
आरबला मम भई बितीत । नित प्रति वधहि गुरु पग प्रीति ॥ ३७ ॥
करुना करि गुरु मम घर आवै । इस प्रयंक कर बैठ सुहावै ।
पहिरहिं पोशिश को मम हाथ । करहिं अहार इहां गुरनाथ ॥ ३८ ॥
लखि करि गमने अंतरजामी । लीनसि तिस घर को मग स्वामी ।
जाइ ठाँढि होए तिस पौर । सुधि भेजी अंतर जिस ठौर ॥ ३९ ॥
हरिबराइ[4] सुनि तूरन आई । चरन कमल गहि करि लपटाई ।
'आज घरी पर मैं बलिहारी । जिस ते पुखी आस हमारी' । ४० ॥

1. अनुग्रहीत होते 2. देखकर 3. कपास 4. शीघ्रता से—अधीर होकर

तिस प्रयंक पर आनि बिठाए । हरखति चारू बसत्र निकसाए ।
अपने कर ते करे बनावनि । प्रेम सहित सो किय पहिरावन ॥ ४१ ॥
धूप, दीप, नईबेद सुधारा । करि पूजन सतिगुरु उदारा ।
तबि सों ब्रिरधा भई निहाल । पुर्यो मनोरथ गुरु क्रिपाल ॥ ४२ ॥
भई प्रेम ते गद गद बानी । नहिं उसतति मुख जाइ बखानी ।
नेत्रनि जल अनंद भरि आवा । हरखति रंक मनहुं धन पावा ॥ ४३ ॥
जथा चंद को पिखहि चकोर । इक टक देखति गुर पग ओर ।
क्रिपा निधान प्रेम तिस हेरा । उमड्यो इन के प्रेम घनेरा ॥ ४४ ॥
श्री मुख ते कहि मधुर सुनायहु । 'तव कारन मैं इस थल आयहु ।
तोहि प्रेम मेरे मन भायहु । भाउ बिलोकनि को ललचायहु ॥ ४५ ।
कर्यो मनोरथ पूरन होवा । सदन बिठाइ मोहि कहु जोवा ।
अबि तेरे उर लालस जोई । जाचि लेहुं, मैं देवी सोई ॥ ४६ ॥
सुनि करि ब्रिद्धा भई अधीन । हाथ जोरि करि जाचनि कीनि ।
रावर को दरशन नित पावौं । जबि लगि तन महिं प्रान बसावैं ॥ ४७ ॥
इही आस मेरी सो दीजै । नित दरशन देकरि हरखीजैं ।
सुनि अदभुत बानी तिस केरी । क्रिपा द्रिशटि ते सतिगुरु हेरी ॥ ४८ ॥
'दुरलभ बर जाचन को कीना । प्रेम देखि करि सो मैं दीना ।
जब्रि शनान करि ठानहिं ध्यान । तबि उर देवौं दरशन आनि' ॥ ४९ ॥
बसी प्रेम के हुई गुनखानी । दीनसि दान जाचना जानी ।
दियो अनंद तिह सरब प्रकार । जग सागर ते कर्यो उधार ॥ ५० ॥
बडभागा हरखी बर पाइ । बार बार बलिहारी जाइ ।
जिस को प्रेम गुरु मन माने । क्यों ना होइ तिस को कल्याने ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'सिक्खनी ब्रिद्धा को प्रसंग' बरननं नाम चतुरथो अंशु ॥ ४ ॥

अंशु ५

ढाके की संगति को प्रसंग

दोहरा

नाम बुलाकी दास जो बड़ो मसंद सुदेश ।
हुती नगर की संगतां लीनि सकेल अशेश ।१॥

चौपई

सुनि सुनि सिख सतिगुर आगवन । रुचिर अकोरनि ले निज भवनूं ।
चौंपति चित चाहति दरसावन[1] । होहिं निहाल हेरि पग पावन ॥ २ ॥
सभि इकत्र करि संगति रास । आगै होइ बुलाकी दास ।
गावति शबद प्रेम गुरु भाते । लोचन ते जलबूंदन जाते[2] ॥ ३ ॥
सने सने सभि चलि करि आए । परम प्रीति पाइन लपटाए ।
अरपन कीनि अकोर अनेक । हेरि हेरि करि जलध विवेक ॥ ४ ॥
बार बार होवति बलिहारी । बंदन करि करि बिनै उचारी ।
आइसु पाइ बैठि सभि गए । शबद प्रेम ते गावति भए ॥ ५ ॥
कर्यो कीरतन को चिरकाल । सुनि गुर भए प्रसंन बिसाल ।
क्रिपा धारि ऐसे कहि बाका । इन सिक्खी को कोठा[3] ढाका ॥ ६ ॥
भली भाँति मुहि भजन सुनायहु । अधिक प्रेम ते रिदा रिझायहु' ।
तबि उठि करि सभि संगति रास । जिन महुं अग्र बुलाकी दास ॥ ७ ॥
दीपक बारि[4] आरती करी । धूप धुखाइ अगारी धरी ।
फूलनि माला पर पहराई । अधिक सुगंधैं ढिग छिरकाई ॥ ८ ॥
पग पंकज पावन गहि हाथ । करे पखारनि शुभ जल साथ ।
पुन पट सों पौंछे करि प्रीत । ले चरणांम्रित, हरखति चीत ॥ ९ ॥
देखि भाउ सतिगुरु बखाना । 'हमने तुमरो प्रेम पछाना ।
तिस के बसि हुई इत चलि आए । सेवा तुम ते सभि बनि आए ॥ १० ॥
अबि धर्मसाला[5] सुंदर पावहु । जथा शकति तहिं सत टिकावहु ।

1. दर्शन करना चाहते हैं 2. नेत्रों में से अश्रु निकलते हैं 3. खजाना 4. जला कर 5. धर्मस्थान-गुरद्वारा

तिस महिं मिलहु सिक्खय मम प्यारे। करहु कीरतन श्रेय[1] तुमारे ॥ ११ ॥
जोड़ करहुं परबनि के मांहि। गुरु अराधहु सभि दुख जाहिं।
सुनि संगत ने सतिगुर बानी। हाथ जोरि नंम्री हुइ मानी ॥ १२ ॥
मथरा पुरि महिं सभि ततकाल। ध्रमसाला तहिं रची बिसाल।
श्री सतिगुर हरि गोबिंद धीर। पठ्यो हुतो अलमसत फकीरा ॥ १३ ॥
प्रथम कथा इह कहि सभि आए। जथा काज तिन तहां बनाए।
हुतो तिसी को पोता चेला। मिलति सभिनि जहिं संगति मेला ॥ १४ ॥
भाई नत्था भाखहिं नामु। ढाके बिखे बसहि शुभ धाम।
श्री हरिराइ हुकम को पाइ। बसत्रनि की पोशिश बनिवाइ ॥ १५ ॥
सतिगुर हित भेजति सो रहै। इह सेवा नित सांभति अहै।
भांति भांति के सूखम महां। बहु मोले पट ले करि तहां ॥ १६ ॥
हित पोशिश के बहुत पठावहि। इस सेवा हित तहां रहावहि।
आदि बुलाकी दास मसंद। तिह सों क्रोधति रहति बिलंद ॥ १७ ॥
रिस धरि कई बार लर परैं। नहिं बनि आइ, बैर को करैं।
इक अंगी[2] उनमत्त[3] फकीर। गुरु सेवा प्रेमी धरि धीर ॥ १८ ॥
संगति सहित बुलाकी दास। नालश[4] करी गुरु के पास।
'हे प्रभु जी! इह नत्था भाई। हम सों नित प्रति करति लराई ॥ १९ ॥
संगति अपर मसंदनि संग। नहिं क्यों हूं राखति रस रंग।
बहु दुरबचन कहति ही रहै। सुनि लखि संत सकल ही सहैं ॥ २० ॥
गुर के करे मसंद महान। नहिं राखति इहु किस की आनि'।
कहि श्री तेग बहादर हसे। 'नत्था नित हजूर मम बसै ॥ २१ ॥
नहिं मम ढिग किह देति दिखाई। ढाके बिखैं सु आप लखाईं'।
पठ्यो दास नत्था बुलवायो। संगति के समीप बैठायो ॥ २२ ॥
बूझ्यो तिस को 'नत्था भाई। सभि तेरी इह कहति बुराई।
हम को देति रहहि नित गारी। संगति संग न भलो उचारी ॥ २३ ॥
सिक्खयनि की सलाह नहिं लेवहि। जो मुख आवति सो बक देवहिं'।
सुनि भाई नत्थे बच बोले। 'इह धी के रौड़े[5] मति हौले[6] ॥ २४ ॥
अरल बरल बहु बदन उचारी। 'मैं इन को कब्रि दई न गारी'।
सुनि श्री सतिगुर बहु बिगसाए। बैठे हुते सकल मुसकाए ॥ २५ ॥
'अबि हजूर महिं गारि निकारति। गुरनि सुनावहि मैं न उचारति'।
तबि श्री तेग बहादरि कह्यो। 'इसको इम सुभाव ही लह्यो ॥ २६ ॥

---

1. मुक्ति 2. एक गुरु से प्रीत करने वाला 3. मस्त 4. फरियाद--विनती 5. गाली दी है 6. बुद्धिहीन—मूर्ख

भाई नत्था दे जबि गारी। तुम तबि जानहुं करुना धारी।
इसके उर बिकार नहिं कोई। बोलनि गति ऐसी नित होई॥ २७॥
करहु न गिला सुनति इस बैन। हिरदा शद्ध बिरोधी है न।
इह सूधा उनमत्त फकीर। सूधी बात भनति उर धीर॥ २८॥
इक अंगी सूधे मग परिओ। नहीं कुटिल पन को मन धरिओ।
मानै बचन साच नित मेरा। चढ़्यो रंग अनुराग बडेरा॥ २९॥
संगति सहित मसंद जि अहो। सुनति बाक उर छोभ न लहो।
सदा प्रेम ही इह संग करो। सुख पावहु मम बच मन धरो॥ ३०॥
नहीं कुटलता धारनि करीअहि। रिदै सरलता सद अनुसरीअहि।
मल ब्रिकार उर ते परहरीअहि। गुर अनुराग रंग को धरीअहि॥ ३१॥
सत्तिनाम सिमरन आचरीअहि। जनम मरन बंदन निरवरीअहि।
भव सागर दुशतर को तरीअहि। सतिगुर शबद सदीव बिचरीअहि'॥ ३२॥
इम संगति को दे उपदेश। सभि सिक्खनि से हते कलेश।
कितिक काल तहिं बसे क्रिपालु। क्रिपा द्रिशटि ते करे निहाल॥ ३३॥
पुनह कूच करिबे की त्यारी। आइ सु दासनि पास उचारी।
सुनि करि मात बुलाकी दास। आई तुरत गुरु के पास॥ ३४॥
करति प्रेम पंकज पग परी। जुगल बिलोचन आसूं झरी।
'हे प्रभु! सुन्यो कुच मैं आई। उर जैसे अभिलाख बसाई॥ ३५॥
सो मैं जाची रावरि पास। नित दरशन मुझ देहु प्रकाश।
मोर मनोरथ पूरन कीजै। श्री सतिगुर सद इहां बसीजै'॥ ३६॥
सुनि करि कह्यो 'प्रेम बहु तेरे। तिस ते हम आए घर हेरे।
ब्रिद्ध भई बय गई बितीत। पुन शुभ गति प्रापति तुव नीत॥ ३७॥
हमे करने अबि काज घनेरे। तुव आइसु ते जाहिं अगेरे।
लिहु लिखाइ मेरी तसबीर। है अबि जथा सचीर शरीर॥ ३८॥
तिस प्रयंक पर राखि टिकाइ। हुइ पुनीत पूजहु करि भाइ।
जथा करी अबि मेरी पूजा। तथा शरीर जानि मम दूजा॥ ३९॥
नित दरशन के फल को पाइ। अंत समैं मुझ सों मिलि जाइं'।
सुनि उर हरखी तुरत सिधाई। जाइ चितेरे* कउ ले आई॥ ४०॥
बहु धन दे करि कहति सुनाइ। 'जथा जोग पिखि लिखहु बनाइ'।
चतुर चितेरा कर चित चाऊ। बैठि निकटि बंदति धरि भाऊ॥ ४१॥
अंगु सु बसत्र सजे हैं जैसे। धरे प्रेम को लिख करि तैसे।

* चित्रकार

बदन प्रफुल्लिति कमल समाना। रुचिर बिलोचनि क्रिपा निधाना ॥ ४२ ॥
नहिं लिख सक्यो रह्यो पछुताई। तबि सो कलम गही गति दाई।
अपनि हाथ ते मुख को लिख्यो। उर बिसमाए जिन जिन पिख्यो ॥ ४३ ॥
निज कर ते बिरधा को दई। भरी अनंद सो सुंदर लई।
पिखनि लगी द्रिग आगैं सोइ। मूरति पलक मिलि हैं दोइ ॥ ४४ ॥
पुन देखति दोनहुं खुल गई। अदभुत गति ते विसमत भई।
गुर मूरति इह शकति धरती। द्रिढ़ निशचै को रिदे करंती ॥ ४५ ॥
करी प्रयंक सथापन रूरे। मनहुं आप बैठे गुरु पूरे।
जबि जबि दरशन को दरसाई। लगी पलक पुन खुलति दिखाई ॥ ४६ ॥
सीतल रिदा कर्यो सुख पायो। नित प्रति पूजति ही हुलसायो।
श्री सतिगुर सभि ते हुई बिदा। चले समीप महीपै तदा ॥ ४७ ॥
संगति ब्रिंद मसंद अनंदे। कितिक दूर संग गे पग बंदे।
सभि को दियो हटाइ पिछारी। चले गुरु सिबका असुवारी ॥ ४८ ॥
राजा सुनि आगे चलि आवा। देखति पद पर सीस झुकावा।
ल्याइ सिबर महिं गुरू उतारे। कवि संतोख सिंह हुइ बलिहारे ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'ढाके की संगति को प्रसंग' बरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

अंशु ६

कामरू देश प्रसंग

दोहरा

भई प्रभाति नरिंद युति सतिगुर हुइ असुवार।
दुंदभि बाजैं बहुत ही लशकर कई हज़ार ॥ १ ॥

चौपई

मान सिंह न्रिप जहिं हति होयो। रंगा माटी नगर सु जोयो।
ब्रह्म पुत्र नद निकटि बहंता। चौरा चारहं कोस[1] चलंता ॥ २ ॥
तिस कै तट उचे असथान। डेरा कीनसि क्रिपा निधान।
बड उतंग दमदमा बनाइआ। करनि लगे मानव समुदाइआ ॥ ३ ॥
ऊपर ते करि कै इकरार। सुंदर कर्यो महां बिसतार।
रुचिर बंगला तहिं बनवाइ। सतिगुर बीच बिराजे जाइ ॥ ४ ॥
द्रिशटि दूर लगि दौरहि[2] जहां। जल की सैल बैठिबे तहां।
दूर दूर लगि तीर तिसी के। लशकर डेरा कीनसि नीके ॥ ५ ॥
लगी तुरंगनि लैन बडेरी[3]। ब्रिंद मतंग खरे पग बेरी[4]।
जहां कहां तंबू लगवाए। खरे सेत[5] दीखहि समुदाए ॥ ६ ॥
तोपनि की पंगति करि खरी। परले पार कूल मुख करी।
तुपक जमूरे[6] गन चलवाए। पार तीर पर शबद पुचाए ॥ ७ ॥
निज निज मिसल सिवर सभि करे। ठौर ठौर तोपनि मुख जरे[7]।
देश कामरू को महीपाला। पठी सैन नद तीर बिसाला ॥ ८ ॥
नद के दोनहु तट भट छाए। बर्जाहं दमामे परहिं सुनाए।
तोपनि की शलखैं चलिवावति। आप आपने ओज दिखावति ॥ ९ ॥
अपने मंत्री सकल बुलाए। मंत्र करति भा 'रिपु चढि आए।
मान सिंह जैसी इन साथ। करहु अबहि हति दिहु नर नाथ ॥ १० ॥

---

1 चार कोस चौड़ा 2. जितनी दूर नज़र जाती है 3. घोड़ों की लम्बी पंक्ति 4. पैरों में सांकल 5. सफ़ेद 6. छोटी तोपें 7. जड़ दिए

जितने मुख्य चमूं के माँही। प्रान समेत तजहुं इन नाँही।
ऐसी करहु न हटि पुन आवहिं। अपने देश रहैं डरपावहिं ॥ ११ ॥
तुरकेशुर को लशकर भारो। मंत्र जंत्र करि सरब सघारो।
मान सिंह जबि को इत मार्यो। नहिं किनहूं आवति मन धार्यो ॥ १२ ॥
इह जढ को हम ते अनजान[1]। चढि आयो ले चमूं महान।
नहिं प्रभाव हमरे को जाना। कामक्ख्या को बड बरदाना ॥ १३ ॥
को जीतहि हम को बरिआई। पढ़हिं मंत्र दे शत्रु खपाईं।
इम कहि रचे उपाइ बिसाला। अरु द्रिढ करी चमूं ततकाला ॥ १४ ॥

दोहरा

इत लशकर पतिशाह के आइ परे समुदाइ।
थल नीवौं जहिं कूल पर डेरे दिये लगाइ ॥ १५ ॥

चौपई

इक दुइ दिन जबि बीत गए हैं। महां मंत्र को करत भए हैं।
'आज रात को नद उलटावहु। सभि लशकर के ऊपर पावहु ॥ १६ ॥
सभि को हति हुइ जाहि सुखारे। मरहिं डूबकरि नीर मझारे।
बहु मरि जाहिं रहहि कुछ थोरे। डर डर धरि भाजहि घर ओरे ॥ १७ ॥
इह मसलत जबि दिन महिं कीनसि। गुर अंतरजामी सभि चीनसि।
कर्यो बिचारनि इन हुइ मरना। बिशन सिंह आयो मम शरना ॥ १८ ॥
बाँहि गहे की हम को लाज। हमरे जोर कर्यो चहि काज।
जे न करहिं इस छिन रखवारी। नहिं उबरै म्रितु हुइ, कै हारी[2] ॥ १९ ॥
सिक्ख्यनि बतसल बिरद संभारा। निकटि आपनो दास हकारा।
कह्यो कि 'बिशन सिंह पहि जावहु। हमरे भाखे बाक सुनावहु ॥ २० ॥
नीचे थल डेरा उठवावहु। हेरि हेरि ऊचे थल पावहु।
दिवस जाम इक अबिहैं रह्यो। तूरन करहु हमारो कह्यो ॥ २१ ॥
निम्नि सथान न डेरे करीअहि। सुध करि सगरी चमूं उठरीअहि।
जे करि निस मैं बसहु तहां ही। अस न होइ डुबि ही जल मांही' ॥ २२ ॥
सेवक बिशन सिंह पहि गयो। गुर को बाक सकल कहि दयो।
बिसम्यो सुनि, नर बहुत पठाए। सभि उमरावनि को समुझाए ॥ २३ ॥
गुर को बाक उठावहु डेरे। जाइ करो ऊचे थल हेरे।
नांहि त ऐसी होइ न जाइ। जल नद को दल देइ बहाइ' ॥ २४ ॥

---

1 यह मूर्ख कौन है जो हमें नहीं जानता 2. या मौत होगी या हार जाएगा

हिंदुनि सुनि कै शरधा धारी। ततछिन ऊची ठौर निहारी।
तूरन सिवर कर्यो तबि जाई। अलप बडी सभि वसतु उठाई ।। २५ ।।
सुन्यों तुरक गन मूढ महाने। गुर के बाक न साचे माने।
'क्या काची हिंदुनि मति अहै। बहिकति सभि जैसे इक कहै ।। २६ ।।
दोइ दिवस के उतरे इहां। कहु नुकसान भयो किस कहां ?।
इक को गुर अपनो ठहिरायो। तिसने बहु राज बहिकायो ।। २७ ।।
हम ते जाइ उठाइ न डेरा। कर्यो प्रथम नीको थल हेरा।
इत्यादिक बहु बाक सुनावैं। तरकति मूरख कहि मुसकावैं ।। २८ ।।
हिंद न्रिप जे चमूं समेत। गुर बच पर निशवै लखि भेत[1]।
सभिहिनि डेरे दूर उठाए। ऊची ठौर हेरि करि छाए ।। २९ ।।
जिस दिशि सतिगुर तहां करे हैं। निज सुख हित उर भाउ धरे हैं।
सूरज असत भयो अंधकारा। तुरक निसा महुं बिना संभारा ।। ३० ।।
देश कामरू के नर आए। मंत्र साधि के सभि बिधि ल्याए।
कर्यो उचारनि को जिस काला। ढोलक डमरु वजाइ बिसाला ।। ३१ ।।
बली दई ते अटक प्रवाहू। उछलि बह्यो लशकर के मांहू।
उलट्यो जल को वेग बिसाला। बहे तुरक जुति आयुध जाला ।। ३२ ।।
केतिक तुरत बूडि मरि गए। को तर करि ऊचे थल थए।
रण सामिग्री अधिक बहाई। रौरा पर्यो बोल समुदाई ।। ३३ ।।
को भ्राता को भ्रात बुलावैं। को कित थिर्यो बह्यो को जावैं।
जीन तुरंगनि के बहि गए। खड़ग सिपर नहिं देखति भए ।। ३४ ।।
शसत्र बसत्र किस की सुध नांही। को को बचे बहे को मांही[2]।
हाहाकार सभिनि महिं भयो। महां त्रास दल को उपज्यो ।। ३५ ।।
सुनि कै करि राजा उठि धायो। श्री सतिगुर की शरनी आयो।
'त्राह त्राह' करि कै बिकुलाइव। 'राखहु प्रभु दल जलहि बहाइव' ।। ३६ ।।
श्री गुर कह्यो 'प्रथम सुधि करी। क्यों सैना नीचे थल परी ?।
ऊचे थल जल जाइ न कैसे। तिन को मंत्र निफल ह्वै ऐसे ।। ३७ ।।
अबि नहिं उलटहि नद, हटि रहै। बहे सु बहे अबहि नहिं बहैं'।
गुर बच ते हटि कै दरीआउ। थिर्यो जाइ निज सहिज सुभाउ ।। ३८ ।।
नीठ नीठ होइ भुनसार। सभि उमराव महां डर धारि।
बिशन सिंह के ढिग चलि आए। जामनि को बिरतांत सुनाए ।। ३९ ।।

1. भेद 2. बाढ़ में बह गए

'देश कामरु साधहिं कैसे। मंत्रनि शकति धरति जे ऐसे।
हथिआरनि की नहीं लराई। कहां करहि इह चमूं पलाई ॥ ४० ॥
न्रिप लै के उमरावनि साथ। आयो जहिं बैठे गुर नाथ।
चिंता महिद धीर उर टारी। 'क्या अबि करहिं' सलाह बिचारी ॥ ४१ ॥
करि बंदन सभि ही ढिग बैसे। निसा ब्रितंत भन्यो भा जैसे।
'श्री प्रभु किम इह जीते जाइ ?। जिन पर बल को बस न बसाइ' ॥ ४२ ॥
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो। 'तुमरो काज करनि मैं चह्यो।
दिढ चित राखहु गिनती त्यागहु। मोहि बचन पर मन अनुरागहु ॥ ४३ ॥
चलो कहे पर संसै छोरि। सिद्ध करौं मैं कारज तोर।
मोहि भरोसे सभि चलि आए। मंत्र जंत्र इति हैं समुदाए ॥ ४४ ॥
मानहुं कह्यो बिघन नहिं होइ। फते सु देश कामरु जोइ'।
इत्यादिक कहि धीरज दीनि। पुन उतसाहु भूप सुनि कीनि ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'कामरू देश प्रसंग' बरननं नाम षशटमो अंशु ॥ ६ ॥

अंशु ७

कामरू देश प्रसंग

दोहरा

सुनि सतिगुरु के वचन के धरी धीर महिपाल ।
हाथ जोरि मन दीन ह्वै कीरति करति रसाल ॥ १ ॥

चौपई

'हे प्रभु ! अस कारज नहिं कोई । रावरि शरन परे नहिं होई ।
मोकहु प्रान दान तुम दै हो । देश कामरु सर करि लैहो ॥ २ ॥
नांहि त मेरो होति बिनाशा । नहिं मैं जीवन की करि आसा ।
सुनि बहुतनि ते सुजसु महाना । शरन पर्यो तजि करि मन माना ॥ ३ ॥
तिस दिन ते पाछै बड छोटे । मानहिं गुर बच कबहू न होटे ।
दोनहुं कूलनि पर द्वै डेरे । परे रहैं पुन काल बडेरे ॥ ४ ॥
मंत्र जंत्र प्रेतनि के करैं । अपर अनेक भांति के ररैं ।
त्रिशन सिंह के मारनि कारन । अनिक प्रकारनि के उपचारनि ॥ ५ ॥
बहु भूपति के निकटि पठावैं । सतिगुर दे करि हाथ बचावैं ।
जंत्र मंत्र को नहिं बल चले । जो अजमतिवंतनि को गिले[1] ॥ ६ ॥
महां प्रबल जो फिरहि न फेरे । जिस ते नासहिं बली बडेरे ।
करते आधि रु ब्याधि उपाधा । बैठि बैठि दिन केतिक साधा ॥ ७ ॥
न्रिप को रोम न बांको होवा । किसू मंत्र को सेक न जोवा[2] ।
कितिक मंत्र नर बाव्र करैं । तन आदिक सुधि सगरी हरैं ॥ ८ ॥
कितिक अंग को जुदा करंते । को सथंम को देहि धरंते ।
केतिक तन को दें पलटाई । मानुख ते कुछ और बनाई ॥ ९ ॥
केनिक जिह्वा ठाकनि[3] ऐसे । बाक न उचर्यो जावहि कैसे ।
केतिक बल हरता सभि केरा : कहिं लगि कहौं तिनहुं को झेरा॥ १० ॥

---

1. जो करामात दिखाने वालों को भी खा जाए 2. आँच न लगी 3. रोकते हैं

को ततकाल बिनाशहिं प्रान। फुर्यो न एक न्रिपति पै आनि।
जिसके सतिगुर रच्छक होइं। तीन लोक महिं अस नहिं कोइ ॥ ११ ॥
तिसको बिघन करहि जो जाइ। अपनो आनि प्रभाव दिखाइ।
अनिक बारि बहु बल पतिआए। सो करि करि हारे समुदाए ॥ १२ ॥
चिंता भई कामरू देश। नर अशेश के सहति नरेश।
क्या होयहु नहिं मंत्रनि शकति। करि करि हारे सगरी जुगति ॥ १३ ॥
कौन बनी अस जिस ते हारे। नहीं आपनी शकति दिखारे।
करि न सकहिं कारज सिध कोई। बलि जुति पूजे निशफल सोई ॥ १४ ॥
बहुर उपाउ और तबि करे। इसत्री गन जे मंत्रनि धरे।
तिन सभि को न्रिप निकटि बुलाइ। कह्यो दरब दे करि समुदाइ ॥ १५ ॥
'तुम इकत्र हुइ सगरी जावहु। निज मत्रनि को शकति दिखावहु।
मरहि नहीं तुम ते नर कोई। तऊ दिखावहु, डर उर होई ॥ १६ ॥
जिस ते तुरकेशुर की अनी। जाइ पलाइ त्रास करि घनी।
सुनति जोखता हैं करि त्यार। आगो आने मंत्र संभारि ॥ १७ ॥
धोबानि, कुम्हरेरी, चमरेरी[1]। इत्यादिक जातनि की चेरी।
न्रिप के कहे सकल चलि आई। किनहूं चढि करि भी धवाई ॥ १८ ॥
को ब्रिच्छनि पर चढ़ि करि चाली। छोरति मुख ते अगनि बिसाली।
को ढोलक, को डमरू गहीआ। केहरि पर गरजति को अहीआ ॥ १९ ॥
कितिक भयानक रूप दिखावैं। को सुंदर बनि ठन करि आवैं।
चली आइ सभी बीच अकाश। लशकर को उपजावहिं त्रास ॥ २० ॥
नहिं बस चलहि गही नहिं जाइ। देखि देखि करि नर डरपाइं।
बड अचरज मान्यो सभिहीनि। उर उतसाहु भयो सभि छीन ॥ २१ ॥
बिशन सिंह न्रिप तिय गन हेरी। जिन महुं शकती मंत्रनि केरी।
कह्यो 'तजहु तोवैं समुदाइ। करहु प्रहारनि गोरनि[2] धाइ ॥ २२ ॥
रहैं दूर नहिं नेरै आवहिं। मरहिं जि इह, पुन सुधि सो पावहिं'।
तबहि प्यार करि तोपनि ब्रिंद। लगे चलावनि शबद बिलंद ॥ २३ ॥
जेतिक गोरे तिन पर मारे। पहुँचे नहिं समीप तिन सारे।
केतिक अध मारग गिर परे। केतिक तोपनि बीचहि अरे ॥ २४ ॥
केतिक आगै ते हटि आए। लशकर के जोधा गन धाए।
तिन के तीर छुयो नहिं गोरा। सो पिखि हसहिं मचावति शोरा ॥ २५ ॥

---

1. धोबन, कुम्हारी, चमारी 2. गोले मार कर

नाचति फिरि फिरि लेति भवारी। गावति खुशी करति हैं भारी।
ब्रह्म पुत्र के कबि हुइ उरे। कबि दौरति गमनति हैं परे॥ २६ ॥
केतिक के सिर छूटे बार। बिरधा महां रूप बिकरार।
केतिक जुवा धरे शिंगारे। केतिक मुख ते अगनि डारे॥ २७ ॥
लशकर ऊपर को फिरि गई। 'भच्छहु इनहिं' पुकारति भई।
इस प्रकार जबि देखनि कियो। बिशन सिंह राजा बिसमयो॥ २८ ॥
इन पर नहिं कुछ जतन हमारो। मंत्रनि बल ते करहिं संघारो।
मान सिंह न्रिप मोहि पितामा। इम ही करि भेज्यो जम धामा॥ २९ ॥
बिजै आस अबि कैसे करौं। है इक जतन शरन गुर परौं।
कौतक गन इसत्रीनि विशेखा। केतिक दिन बिसमति ने देखा॥ ३० ॥
हय अरूढ करि तबि महिपाला। श्री सतिगुर मिलिबे को चाला।
ऊचो हुतो दमदमा दूरे। उतरे रहे तहां गुर पूरे॥ ३१ ॥
जोधा ब्रिंद संग महुं चाले। आवति चल्यो चित महिपाले।
जबि दमदमे निकटि चलि आयहु। असु ते उतरि सीस को न्यायो॥ ३२ ॥
पाइन सों ऊपर चलि गयो। बैठे सतिगुरु देखति भयो।
धाइ उताइल चरननि पर्यो। करि बंदन को आगै थिर्यो॥ ३३ ॥
खड़ग सिपर जिसके लगि रही। कंचन खचति मुशट जिस अही[1]।
जरे बज्र कंकन कर धरे[2]। कुंडल करननि मुकता धरे[3]॥ ३४ ॥
जिगर माग पर दमकति दीसि[4]। अरु उतंग कलगी शुभ सीस।
बसत्र शसत्र बहु मोले धरे। सतिगुरु सनमुख बैठिब करे॥ ३५ ॥
सेत बसत्र गुर के गर जामा। बहु सूखम शोभति अभिरामा।
धनुख बान आगे बड धर्यो। सुंदर चमर सीस पर ढुर्यो॥ ३६ ॥
भरे क्रिपा सों नैन रसीले। ब्रह्म ग्यान उर महां गहीले।
शरन परहि जो शरधा ठानी। दोनहुं लोकनि को सुखदानी॥ ३७ ॥
मुसकावति मुख बाक उचारे। 'विशन सिंह! कहु कुशल तुमारे?'।
हाथ जोरि बोल्यो न्रिप भारी। 'प्रभु जी! सभि सुख क्रिपा तुमारी॥ ३८ ॥
देश कामरु मंत्र कराला। देखि देखि मन बिसम बिसाला।
इसत्री गन लशकर ढिग आवति। करि रामन को भटनि डरावति॥ ३९ ॥
सभिहिनि के उर धीरज हारी। तिन पर चलति न को उपचारी।
तोप तुपक जंजैल चलावें। उलटि आइ हमरे भट घावें॥ ४० ॥

1. जिसकी मुट्ठी सोने से जड़ी हुई थी 2. कंगनों में हीरे जड़े थे जो हाथ में पहने थे 3. कानों मे मोतियों वाले कुंडल 4. दिखती है

ब्रिच्छ उडावति मीत भजावैं[1]। मुख ते अगनि लाट निकसावैं।
गही न जाइं निकटि नहिं आवैं। लशकर के ऊपरि फिरि जावैं॥ ४१॥
सभि जोधा बिसमति चित होई। डरति रहति बस चलति न कोई।
मैं तुमरे पर करि बिसवास। चढि आयहु धरि चरननि आस॥ ४२॥
नांहि त मो ते किम बनि आवहि। मान सिंह से जहिं पच[2] जावहिं।
कारज करन बनहि अबि कैसे ?। निकटि आप के बूझो तैसे॥ ४३॥
चिरंकाल बीता इत आए। डेरा ब्रह्म पुत्र तट छाए।
तिन पर जोर पर्यो नहिं कोऊ। प्रभु जी मिलहि आइ किम सोऊ॥ ४४॥
निस दिन इह चिंता चित मेरे। साधौ देश उपाइ न हेरे।
एक जतन मैं दिढ करि राख्यो। रावरि चरन शरन अभिलाख्यो॥ ४५॥
बांहि गहे की लाज बिचारो। चिंता सलिता पार उतारे'।
सुनि करि सतिगुर न्रिप बच भीरु। श्री मुख ते कहि दीनसि धीर॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'कामरू देश प्रसंग'** बरननं नाम सपतमों अंशु॥ ७॥

---

1. दीवार को दौड़ाते हैं 2. मर जायें

अंशु ८

कामक्खया को प्रसंग

दोहरा

बिशन सिंह ते सुनि गुरु श्री मुख ते फुरमाइ।
'मत चिंता चित कीजीए हुइ रघबीर सहाइ ।। १ ।।

चौपई

नहीं मान[1] ते जो बनि आयो। महां कठन है तोहि बतायो।
सो कारज तूं करहिं बनाइ। बिजै कामरू की हुइ जाइ ।। २ ।।
श्री नानक को महिद प्रतापू। तिस ते जसु लै हैं बहु आपू।
सुख के सहित सदन महिं मिलि हैं। रहि केतिक दिन महिं पुन चलि हैं ।। ३ ।।
अबि के इसत्री टामन हारी[2]। जबि आवहिं लशकर दिशि सारी।
ततछिन सुधि हम निकटि पुचावहु। बेग तुरंग सऊर[3] चढावहु ।। ४ ।।
हम देखहिं पुन शकति न रहै। छूछी होइ तिठी थल बहैं।
रिदै संदेह न कीजहि कदा। धरहु अनंद बिलंदै सदा' ।। ५ ।।
सुनि सतिगुर के बाक सुहाए। बह्यो प्रवाह तरी जनु पाए।
हरख भर्यो उर भूप उदारे। मनहुं कलपतरु लह्यो सुखारे ।। ६ ।।
जग महिं सुजसु मोहि ह्वै ऐसे। भूपति मान न पायहु जैसे।
हाथ जोरि करि पग पर नमो। आइसु पाइ गयो तिह समो ।। ७ ।।
सभि लशकर को धीरज दीना। 'रहो सुचेत त्रास करि छीना।
इसत्री जबि आवहि तबि देखो। ततकाल सुधि देहु परेखो[4] ।। ८ ।।
गहहिं तिनहुं को जानि न दै हैं। बहुर कामरुपति फल पैहैं'।
इक भूपति कीनसि तकराई। एक जामनी जबहि बिताई ।। ९ ।।
भई प्रभाति चमूं भट जागे। तिन इसत्रिनि को खोजनि लागे।
जिस दिशि ते आवति तित हेरें। भए सुचेत परसपर टेरें ।। १० ।।
'अबि के गहि लेवहिं तिन कामन[5]। करति अनेक रीति के टामन'।
इतने महिं आई इक धोबन। तरुवरु चढी चढ्यो तन जोबन[6] ।। ११ ।।

---

1. मान सिंह (से जो नहीं बन सका) 2. टोने करने वाली 3. सवार 4. परख कर 5. स्त्रियों को 6. जवानी

ततछिन इक चढाइ असवार। तुरंग धवाइ बेग बड धारि।
श्री सतिगुर को सुधि करि दई। 'श्री प्रभु पिखउ त्रिया जो अई' ॥ १२ ॥
निकसे बहिर बंगले स्वामी। तिस दिशि द्रिशटति अंतरजामी।
जबहि डीठ सतिगुरु की परी। मंत्र शकति त्रिय की सभि हरी ॥ १३ ॥
निशचल तरुवरु तिस थल भयो। शकति बहीन उड्यो नहिं गयो।
हार रही मुख मंत्र उचारति। कछू न होति त्रास उर धारति ॥ १४ ॥
इत उत करति बिलोकनि बवरी[1]। नहीं तजति तरुवरु सो ठवरी[2]।
महां सिद्ध[3] की द्रिशटि परी है। जिस ते मंत्रनि शकति हरी है ॥ १५ ॥
वहु लोकनि तबि धाइ धरी है। निकटि हकारनि गुरु करी है।
गहि आनी उर अधिक डरी है। हेरि रूप को पाइं परी है[4] ॥ १६ ॥
'महां प्रताप आप को अहै। जिह सम सरता कोइ न लहै।
मैं बिलोकि तुम नीके जाने। भए बिशनु अवतार पछाने ॥ १७ ॥
अपर बिखै इम शकति न होई। हेरति हमहुं हरावहि जोई।
सभि जग के स्वामी तुम अहो। कारन करन सरब निरबहो ॥ १८ ॥
किम सहाइ तुरकेशुर भए ?। इस राजा पर चढि करि अए।
हिंदुनि की रच्छया के योग। अहैं अलंब[5] आपके लोग' ॥ १९ ॥
सुनि धोबन त्रिय की चतुराई। श्री मुख ते मुसकाइ गुसाईं।
कह्यो तिसहि सभि ते करि न्यारी। 'न्रिप तुमरे कहु लेहिं हकारी[6] ॥ २० ॥
इम न्रिप सों तिस देहिं मिलाइ। द्वै की दुबिधा दूर कराइ।
राखहिं सम हम तांहि न मारहिं। निज दासनि के काज सुधारहि ॥ २१ ॥
सुनि धोबन ओबन युति ! इहां। रहहु बैठि थित तुव तरु जहां।
सभि कुटंब को लेहु बुलाइ। बसहु सदा निज ग्रिह को पाइ ॥ २२ ॥
बसि हैं अपर लोक समुदाइ। तोहि नाम पर ग्राम बसाइं।
जग महि कीरति तेरी रहै। जबि लगि ग्राम बसति थल अहै ॥ २३ ॥
हम बसाइ करि गमनहिं आन। तबि लगि बैठि ब्रिच्छ के थान'।
पाइ बचन इम सतिगुरु केरा। धोबन जाइ कर्यो तहि डेरा ॥ २४ ॥
तिस पीछे जेती त्रिय आई। गही धोबनी देखि पलाई।
हटि पाछे को नहीं निहारा। हम को गहैं—त्रास को धारा ॥ २५ ॥
बडे बेग सों नगर प्रवेशी। दई भूप को खबर अशेशी।
'नित हम जाति उरावति सभि को। ऊपर फिरति पाइ मग नभ को ॥ २६ ॥

---

1. बावली—पागल 2. वृक्ष उस स्थान से न हिला 3. गुरु जी 4. चरणों पर झुकी है 5. आश्रय 6. बुला लेते हैं

हम ते धोबन गई अगारी। सिदध पुरख को सुनियति भारी।
तिन गहि लीनि शकति परहरि के। फिरति अरुढि जु ऊपर तरु के॥ २७ ॥
अबि ते आगे कोइ न जावहि। जो जावहि निज को गुहिवावहि।
अपर जतन को करहु बनाइ। नांहि त आप पराजै पाइ'॥ २८ ॥
सुनि राजा मन मांहि बिचारे। मंत्र करे मैं ब्रिद अगारे।
हित न्रिप मारनि के बहु प्रेरे। नहीं सरे कारज तबि मेरे॥ २९ ॥
महां पुरख है तिनहुं संहाइ। मंत्र शकति नहिं पहुँच सकाइ।
जे गिरवर को देति उडाई। अचल चलावति, चलति थिराई॥ ३० ॥
जल प्रवाह को राखहिं रोक। तिन आगै क्या बपुरे लोक।
सैना सहित नरेशुर धावत। जतन समेत न बचिबे पावति॥ ३१ ॥
सभि निशफल होए इक बारी। यांते लखियति को सिध भारी।
अबि कामक्खया करहि सहाइ। हारे करिते अपर उपाइ॥ ३२ ॥
सदा बिघन ते हमहिं बचावति। कबहुं न जीत्यो जो चढि आवति।
धरम अरथ नित बनहि सहाई। दासनि लाज रखहि बडिआई॥ ३३ ॥
इम चिंता करि कै महिपाला। होम समग्री लीनि बिसाला।
मंत्रनि पुन नर सकल बुलाए। देवी के मंदिर चलि आए॥ ३४ ॥
होइ पुनीत अराधति सारे। पावक बिखै दरबे[1] को डारे।
कामक्खया को कर्यो अवाहन। मुख पंडे बोली मन भावन॥ ३५ ॥
'भो भूपत ! चिंता मत कीजहि। नहीं खेद तुहि, धीर धरीजहि।
राज सहित कुशली[2] तूं रहैं। रिपु ते नहीं पराजै लहैं॥ ३६ ॥
पुरशोतम[3] तुझ भाखहिं जथा। रहु अनुसारि मनीअहि तथा'।
इम कहि तूशनि भी जगरानी। सचिव समेत न्रिपत नै मानी॥ ३७ ॥
करि बंदन निज भवन सिधाए। चितवहि चित कैसे हुइ जाए।
हम ते अबि उपाव क्या होवै। जिस ते शत्रु को डर खोवैं॥ ३८ ॥
निज बल जंत्र मंत्र करि हारे। तिन ते कछू न कारज सारे।
अबि संग्राम करनि बनि आवै। श्री कामक्खया जै करिवावै॥ ३९ ॥
इम मसलत करि सचिवन संग। भयो सुचेत करनि को जंग।
रण सामिग्री बहु बरताई। सुभट सकेलि करे इक थाईं॥ ४० ॥
तोप तुपक को करि कै सुदध। पठी सैन बड करिबे जुद्ध।
'हम केतिक दिन चढहिं पिछारी। करि संग्राम पिखहिं भट भारी'॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादशि रासे **'कामक्खया को प्रसंग'** बरननं नाम **अशटमो अंशु ॥ ८ ॥**

---

1. अर्थात् सामग्री आग में डालते हैं 2. कुशलता पूर्वक 3. गुरु जी

अंशु ६
कामरू पति प्रसंग

दोहरा

इत धोबन जबि गहि लई अपर नहीं को आइ ।
बिशन सिंह बहु हरख उर गुरु ढिग पहुंच्यो धाइ ॥ १ ॥

चौपई

करी बंदना बैठ्यो आनि । बिनती के जुति करति बखान ।
'रावर के प्रताप ते जाना । फते होहि मम काज महाना ॥ २ ॥
तऊ सुनहु प्रभु जी ! मम अरजी । सभि लशकर बरतहि तुम मरजी ।
देखि सिदक सभि के उर होवा । महां त्रास मंत्रनि को खोवा ॥ ३ ॥
बहुत काल बीत्यो हम आए । खरचे कोश दरब समुदाए ।
बिसरे सदन, रहे सभि ऐसे[1] । रिपु पर जोर पर्यो नहिं कैसे ॥ ४ ॥
नहीं बाहनी पार उतारी । नहिं संग्राम मच्यो भै कारी ।
कबि लगि इह ठां बैठे रहैं । उमराव जि अकुलावति अहैं ॥ ५ ॥
ज्यों ज्यों करुना तुमरी जोवैं । इस मुहिंम ते छुटिबो होवै ।
दीन बंधु जी ! करहु सहाई । बड कलेश ते लेहु बचाई ॥ ६ ॥
लोक हजारहुं तुम दिशि हेरति । कहिबे हेतु मोहि को प्रेरति ।
सगरो लशकर शरन तुमारी । महांराज कीजै रखवारी ॥ ७ ॥
रावर को भरोस है भारो । शरन परे को बिरद संभारो ।
जबि कबि कारज तुमही करना । सगरे चाहति रावरि शरना' ॥ ८ ॥
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो । 'अति शै कठन काज हम लह्यो ।
कामक्खया देवी बरदानी । इसकी सेवा कीनि महानी ॥ ९ ॥
इनके बडे[2] प्रसंन करी है । बर देवनि को शिवा[3] ढरी है ।
अचलराज हमरी कुल रहै । शत्रू आइ पराजै लहै ॥ १० ॥
राज हमरो भ्रशट न होइ । इह बर लियो देश न्रिप जोइ ।
तिस बर को कूरो किम करै । यांते पख देवी तिन धरै ॥ ११ ॥

---

1. सबको घर की याद भूल ही गई 2. पूर्वज 3. देवी

अपर कौन देवी बर खोवै। यांते काज कठन ही होवै।
नहिं देवी बर सकहिं मिटाइ। प्रभु की शकति सकल जग माइ॥ १२॥
तऊ सुनहु तुम कह्यो हमारो। श्री नानक को नाम चितारो।
सत्तिनाम को सिमरन करीयहि। रिदे संदेहनि को परिहरीयहि॥ १३॥
निशचै हुइ है बिजै तुमारी। नहिं बीतहि चिरकाल अगारी।
कितिक दिनन महिं अपने देश। गमनहिं, त्यागहु सकल कलेश॥ १४॥
इम सुनि भूपति पाइ अनंद। कीनि बंदना द्वै कर बंदि।
धरि निशचै गमन्यो निज डेरे। जानहि--करहिं काज गुर मेरे॥ १५॥
नांहि त दुरलभ हुती बिसाल। किस ने ब्रिजै लई किस काल।
इम चितवति जबि जामनि होई। निज निज थान थिरे सभि कोई॥ १६॥
गयो कामरूपति रणवास। अनिक इसत्रीअनि जहाँ बिलास।
रूचिर प्रयंक सैन को कीनि। सेवहिं रानी बैस नवीन॥ १७॥
पीतंबर अरु सिर दसतार[1]। महिपालक ने रखी उतारि।
खंजर इक त्रिप पास रखंता। बसत्रनि बिखै रख्यो दुतिवंता[2] १८॥
रतन जराऊ मुशट गहिन की। अपर बिभूखन शोभा तन की।
सुंदर चौंकी पर ढिग धरे। सिहजा परि भूपति चढि थिरे॥ १९॥
करि देवी कामख्खया नमो। भयो नींद बसि परि तिह समो।
निस महिं शसत्र बसत्र न्रिप केरे। सरब अनाए गुरु तिस बेरे॥ २०॥
देवी देव न किनहुं हटाए। सगरे सतिगुरु के ढिग आए।
भई प्राति न्रिप खुल्हे बिलोचन। नहिं देखे चित सोचति सोचन॥ २१॥
नहिं पावति बिसमावति महां। हे देवी इह कौतक कहां।
अति चितातुर नरपति होवा। ऐसो बिघन न कबिहूं जोवा॥ २२॥
नित देवी मेरी रखवारी। आनि सकहि को बिघन पसारी।
कै देवी को बर मिटि गयो। अस कौतक मेरे ढिग भयो॥ २३॥
बहु जोधा चहुं दिशि सवधाव। किस बिधि कोई न पहूंचै आनि।
जंत्र मंत्र की रच्छया मेरे। कोई न आइ सकहि मम नेरे॥ २४॥
महां शकति जुति जिसने कीनि। सभि दबाइ पर आयुध लीनि।
करि शनान न्रिप बैठ्यो जबै। न्रिप जननी आई चलि तबै॥ २५॥
सुत को अति दीनसि उतसाहू। नहिं सोचहु नरपति उर मांहू।
'मैं हो भगत चंडि जग मात[3]। बूझनि करौं सकल बिरतांत॥ २६॥

---

1. पगड़ी 2. चमकीला 3. जगत माता चंडी देवी

निस चरित्र को भेद बताइ। होइ अंत को आप सहाइ।
सदा कुशल अपनी तूं जानि। राखी हमरी शकति महान'॥ २७॥
इम कहि करि न्रिप जननी गई। करि शनान तन पावन भई।
देवी के मंदिर चलि जाइ। पूजनि को समाज सभि ल्याइ॥ २८॥
धूप धुखाइ आरती करी। कुसमांजुल की बरखा झरी।
सरब प्रकार क्रिआ करि सारी। मुख ते उसतति मंत्र उचारी॥ २९॥
सभि को दीनसि दूर हटाइ। बैठी आप ध्यान को लाइ।
तबहि भवन ते बानी भई। 'सुनि रानी! निस महिं जिम थई॥ ३०॥
तीन लोक पति को अवतार। श्री नानक जसु जगत मझार।
तिस गादी गुरु तेग बहादर। जहां सिमरीअहि तिसथल हादर[1]॥ ३१॥
भगति रूप अपनो बपु धार्यो। नौमों गुरु जगत जिन तार्यो।
जो शरधा धरि शरनी परै। तिह सहाइता सभि थल करै॥ ३२॥
न्रिपति जोधपुरि सेवक भयो। बिनती भनति संग निज लियो।
तुम को तिसते चिंता नांही। कुछ संसै न करहु मन मांही॥ ३३॥
तुम भी तिसकी शरनि सिधारो। मिलि करि अपनो काज सुधारो।
राज अटल नहिं मिटहि तुमारो। मेरो कहो साच निरधारो॥ ३४॥
राजा रानी सभि परिवार। तूं भी जाहु संग तिन धारि।
शरधा धरि दरसहु गे जबै। सकल काज सिध होवहिं तबै॥ ३५॥
श्री गुर करहिं क्रिपा सु क्रिपाले। सगरे बिघन बिनाशनि वाले।
न्रिप जननी देवी ते सुनि कै। बंदन करी बाक सभि मनि कै॥ ३६॥
उठि करि महिपालक ढिग आई। सकल बारता को समुझाई।
'श्री नानक पुरशोतम आए। सरब देश सिक्खी बिथराए॥ ३७॥
जीते सिद्ध बाद को करे। अपर अज़मती के मद हरे।
जिनकी समता करी न काहूं। बिचरे अखिल जगत के माहूं॥ ३८॥
तिस गादी गुर तेग बहादर। बिशन सिंह करि बिनती सादर।
अपने संग तिनहुं को आना। जिसते हमरो बल सभि हाना॥ ३९॥

---

1. हाज़र

तिन हूं बसत्र शसत्र मंगवाए। मिलनि हेत देवी फुरमाए।
क्रिपा करहिं गे शरनी परो। अवचल राज आपनो करो ॥ ४० ॥
सुनि आइसु कामक्खया केरी। त्यारी करि महिपाल घनेरी।
सकल कुटंब संग निज लीनि। गमन्यो तबि महिपाल प्रबीन ॥ ४१ ॥
पहुंच्यो ब्रह्म पुत्र तट आई। सुदर द्रिढ नौका मंगवाई।
भयो अरूढनि जल पर चली। महिपति लए उपाइन भली ॥ ४२ ॥
दिवस बितीत्यो उतरति पार। पहुंच्यो संध्या समैं उरार।
ऊच दमदमे गुरु बिराजे। लशकर निकटि सुनति बजि बाजे ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादस रासे **'कामरु पति'** प्रसंग बरननं नाम नवमो अंशु ॥ ९ ॥

अंशु १०

द्वै भूपन मेल प्रसंग

दोहरा

उतरि नरेशवर तरी ते आगे करे अकोर।
नगन चरन ते गमन करि सभि कुटंब कर जोरि ॥ १ ॥

चौपई

शरधा करे भाउ उर धारा। श्री सतिगुर के निकट पधारा।
'शरनि शरनि' करि पर्यो अगारी। पद अरबिंद बंदना धारी ॥ २ ॥
'देश कामरु को मैं राजा। तुम ढिग आयो त्यागि समाजा।
हिंदुनि के अलंब तुम अहो। दासनि ब्रिद सहाइक रहो ॥ ३ ॥
देवी की आइसु के साथ। आए शरनि तिहारी[1] नाथ।
ज्यों भावहि त्यों कीजहि अबै। तुम आग्या अनुसारी सबै ॥ ४ ॥
तऊ एक सुनीअहि गुर स्वामी। सभि बिधि समरथ अंतरजामी।
हम हिंदू गुरु के सिक्ख अहैं। सगरो देश मानतो रहै ॥ ५ ॥
अबि तुरकेशुर के बसि मांही। गेरहु हमहिं, जोगता नांही।
उचित सहाइक होवनि हमरे। हिंदू सभि अलंब हैं तुमरे ॥ ६ ॥
सुनि बिनती गुर भए क्रिपाल। ले दसतार आप कर नाल[2]।
न्रिप के सीस धरी जिस काला। जागे जिसके भाग बिसाला ॥ ७ ॥
मोह भरम के जटति कपाट। छुटक गए भा और नाट।
पुन दुपटा सुंदर तिह दयो। करुना धारि निहाल सु कियो ॥ ८ ॥
खंजर शसत्र नहीं इक दीनि। श्री प्रभु निज ढ़िग राखनि कीनि।
'भो भूपति ! तुम भाख्यो जैसे। हम भी कर्यो चहति हैं तैसे ॥ ९ ॥
कोइ न चिंता चित महिं करीअहि। हमरे बाकनि के अनुसरीअहि।
दुहि दिशि जैसे होइ सुखैन। देश बिखै जिस ते तुहि भै न ॥ १० ॥
करामात दीरघ को देखि। शरधा धारति हरख बिशेख।
हाथ जोरि पुन बिनती कहै। 'हिंदू धरम हमारो अहै ॥ ११ ॥

---

1. आपकी 2. हाथ से

करहु सहाइ दास की ऐसे। नहीं तुरक को देखैं कैसे।
जमन संग ते हानहिं धरम। बोलनि, मिलनि, सपरश अधरम[1] ॥ १२ ॥
गुर की आग्या धरम हमारे। हरनि भरनि प्रभु करने हारे।
आइसु तुरकेश्वर की जोइ। हम ते नहीं मनावहु सोइ ॥ १३ ॥
इहु कारज प्रभु वडो हमारो। अपर कहो जिम, हैं अनुसारो'।
सतिगुरु क्रिपा धारि तबि कह्यो। 'हम तिम करहिं जिमहि तुम चह्यो ॥ १४ ॥
बिशन सिंह धरमातम राजा। हमहु भरोसे साज्यो काजा।
रिदै सरल छल रंचक नांही। चलहिं अबहि हद्र आइसु मांही ॥ १५ ॥
तिस सों मिलहु संधि करि लीजै। अपनो काज सुधारनि कीजै।
नहीं तुरक सों मेला होइ। हरखति रहहु परसपर दोइ' ॥ १६ ॥
सुनि करि कह्यो 'गुरु गति दैन। रावर को हम मान्यो बैन।
तऊ एक बिनती सुनि लीजै। लशकर मैं बहु तुरक जनीजै ॥ १७ ॥
तिनहुं न हेरैं आन हमारे। अरु नहिं मिलहिं आइ इस पारे।
ब्रह्म पुत्र के पार जि आवहु। पावन चरन आपने पावहु ॥ १८ ॥
देश पुनीत करहु तुम आइ। सगरे नर शुभ दरशन पाइं।
होइं क्रितारथ देहिं उपाइन। सीस सपरशहिं रावरि पाइन ॥ १९ ॥
बिशन सिंह को ले करि साथ। आवहु देश तिसी गुर नाथ।
तहिं दोनहुं को करहु मिलाप। दुहि दिशि मानहिं कहो जि आपि' ॥ २० ॥
सतिगुर कह्यो इसी बिधि होइ। तेरे बिप्रै[2] करहिं न कोइ।
जबि को आनि शरन तैं पर्यो। हम चहिं दोनहुं को भल कर्यों ॥ २१ ॥
सादर गुरु दयो सिरुपाइ। बंदन करि गमन्यो तबि राइ।
निस महिं नौका पर चढि गयो। प्रापति भवन आपने भयो ॥ २२ ॥
भई प्राति निज दास पठायो। बिशन सिंह को निकटि बुलायो।
कीनि बंदना बैठ्यो पास। भनति बिनै 'मैं हौं तुम दास' ॥ २३ ॥
श्री गुरु तेग बहादुर, सारो। बिस्यो ब्रितंत बताइ उदारो।
'बिजै भई तेरी सभि रीति। जिनको सक्यो न कोउ जीत ॥ २४ ॥
सो तुझ मिलै उपाइन[3] दै है। मंत्रनि बल जो बस् नहिं ह्वै है।
राजपूत लिहु संग हजार। बली तुरंगन के असवार ॥ २५ ॥
आज करहु त्यारी सभि भांति। तरीअनि चढहु होति ही प्राति'।
सुनि न्रिप के अनंद बड भयो। जनु नव निद्धनि को हरि लयो ॥ २६ ॥

1. मिलना तथा छूना अधर्म है 2. विपरीत, उलट 3. भेंट

बारंबार बंदना ठानति। 'हे प्रभु ! निज जीवन अबि जानति।
प्रान दान मो को तुम दीनसि। सगरे काज सुधारनिं कीनसिं ।। २७ ।।
इत्यादिक कहि बिनै बडाई। सिवर जाइ त्यारी करिवाई।
राजपूत भट एक हज़ारे। बीन बीन कीनसि सभि त्यारे ।। २८ ।।
शसत्र बसत्र शुभ धारन हारे। कह्यो 'अरुढहु होति सकारें'।
निसा बिखै त्यारी करि सोयो। बडी भोर उठि कारज जोयो ।। २९ ।।
करि शनान पट आयुध धारे। मिलि सतिगुर को कीनसि त्यारे।
सिवका पर न्रिप के संग चाले। चढि तरीअनि पर नीर बिसाले ।। ३० ।।
पहुंचे पार जाइ करि जबै। सुन्यो कामरु पति[1] ने तबै।
कुछ तुरंग अरु बसत्र बिसाले। दरब लयो केतिक संग चाले ।। ३१ ।।
अपर उपाइन आछी केई। उपजहि तिसी देश महिं जेई।
आइ मिल्यो भूपति के साथ। दुहूनि बीच बैठे गुरु नाथ ।। ३२ ।।
लेनि देनि जेतिक मन भायो। श्री प्रभु दोनों ते करिवायो।
भई मित्रता आपस मांही। बध्यो प्रेम रस उर हरखाही ।। ३३ ।।
आपस महिं पलटी दसतार[2]। मिले अंक भरि भुजा पसारि।
भनति परसपर मधुरे बैन। हरखति पिखति समुख करि नैन ।। ३४ ।।
देश कामरु केर नरेश। सतिगुर सों कहि बिनै विशेश।
'को इक चिन्ह आप अबि दीजै। हम पर करुना धारि प्रसीजै ।। ३५ ।।
पग की पनही कै हम देहू। सकल देश पूजहिगो एहू।
अपर वसतु कै दिहु इस देश। जिस ते शरधा धरहिं विशेश' ।। ३६ ।।
इम राजा को प्रेम परेखा। क्रिपा द्रिशटि ते तिस को देखा।
श्री गुरु अपनो धनुख संभारा। तरकश ते इक बान निकारा ।। ३७ ।।
धरि कै जेह कान लग ताना। देख्यो सनमुख बिटप निशाना।
तिस को ताकि धनुख ते त्याग्यो। बडे बेग ते तरुवरु लाग्यो ।। ३८ ।।
भलका भई पार इम गयो। दुहि दिशि तनक तनक दिख पयो।
सतिगुरु कह्यो 'चिन्ह इह थान। पूजहिं सगरे शरधा ठानि ।। ३९ ।।
बिघन देश महिं जे हुइ जावैं। इस कौ मानहुं तुरत मिटावैं।
जो बांछहि फल किस बिधि कोइ। इस पूजहि सो प्रापति होइ ।। ४० ।।
दिवस आज के कीजहि मेला। सकल देश नर करहु सकेला।
मानहु महां महातम पावहु। धूप दीप नईवेद चढावहु ।। ४१ ।।

---

1. काम रूप का राजा 2. पगड़ी बदल ली

सुनि शरधा धरि भूपति ठानी। बिप्र बिठायो कर इस थानी[1]।
नित पंचांम्रित को करिवाइ। आनहि तहां देहि बरताइ ॥ ४२ ॥
सरब भांति की पूज कराइ। मन बांछति तहि ते फल पाइ।
इम सतिगुरु न्रिप दुऊ मिलाए। सभि के सुनत्यों बाक अलाए ॥ ४३ ॥
'तुम दोनहुं भूपति बुधिवंते। हम ते सुनहुं बाक हितवंते।
इहु खंजर हम गाड़हिं अवनी[2]। बसदी तहां बसावहिं रवनी[3] ॥ ४४ ॥
हद करहिं दुहिं राजनि केरी। रहि पतिशाही सैन घनेरी।
इत इह रहै न आगै जावै। नहिं बिरोध को बहुर उठावै ॥ ४५ ॥
पातिशाहि की चौकी रहै। तुहि हम ग्राम बसावहु चहैं।
ग्राम बसावहिं हद के हेतु। न्रिप सुनि दोनहुं हरख समेत ॥ ४६ ॥
आपहु अपनी करि मिरजादा। दुहि दिशि रहैं धरे अहिलादा।
गुर को बाक मानि करि नीका। आदर कर्यो बिशन सिंह जी का ॥ ४७ ॥
कंचन बसत्र तुरंगम दीने। दे करि धन सनमानति कीने।
ले कर बिदा भए चलि आए। चढि नौका नद ते उतराए ॥ ४८ ॥
आवति बिजै निशान बजायहु। तोप तुपक शलखें छुडवायहु।
लिख्यो फते नामा ततकाल। दिल्ली पठ्यो बेग के नाल ॥ ४९ ।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे '**द्वै भूपन मेल**' प्रसंग बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

1. इस स्थान पर 2. धरती में गाड़ते हैं 3. रमणीय

अंशु ११

राजे को सुत देवनि प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुरू नद ते उतर आए दमदमे थान।
धरमसाल सुंदर रची मिले सिक्खय गन आनि ॥ १ ॥

चौपई

जहिं धोबनि को ब्रिच्छ टिकायहु। एक ग्राम तौ तहां बसायहु।
अपर थान खंजर जो लह्यो। अवनी बिखै गाड सो दयो ॥ २ ॥
तहिं इक ग्राम बसायो भारी। खंजर तांको नाम उचारी।
पातिशाहि की केतिक सैना। तहां टिकावनि कीनि सुखैना ॥ ३ ॥
हद[1] करी दुइ राजनि केरी। जिसते उठहि ब्रिरोध न फेरी।
दुहि दिशि को करि हरख समेत। आप आपने राज सुनेत ॥ ४ ॥
देश कामरु केर बरोबर। अपर राज इक तहां हुतो बर।
राजा 'राम' नरेश्वर नाम। 'पुत्र न उपज्यो तिसके धाम ॥ ५ ॥
करि उपचार हारि करि रह्यो। किस बिधि ते नहिं नंदन लह्यो।
श्री गुर तेग बहादर पूरे। इनको फैल्यो जसु बहु रूरे ॥ ६ ॥
केतिक बरख बिते इस थान। यांते जसु तहिं बिदत महान।
लघु दीरघ बहु करहिं उचारनि। श्री गुर देति कामना सारन[2] ॥ ७ ॥
दुइ सेवक जो सेवा करै। रिदे कामना शरधा धरै।
मन बांछति पावै ततकाला। फुरहि बाक जिन केर उताला ॥ ८ ॥
अनिक नरनि पुत्रनि बर पावा। किन सेवति बपु[3] रोग मिटावा।
हुते दारिदी बिनै करंते। सो धनाढ होए सुखवंते ॥ ९ ॥
जो अनजान अनादर करै। तिह ततकाल आपदा परै।
निकसहिं बाक बदन ते जैसे। बिना बिलम फुरि, बनि हैं तैसे ॥ १० ॥

---

1. सीमां। 2. कामना पूरे करते हैं। 3. शरीर।

लोक संकरे आइ समीप। हेइं बाक ते रंक महीप[1]।
भै ब्याप्यो तिस देश मझारे। सादर आवहिं सिक्खी धारे॥ ११॥
तिस न्रिप की रानी ने सुन्यो। बहुतनि जाइ गुरु जसु भन्यों।
पुत्र कामना वान महानी। निस बासुर चितवति दुख सानी॥ १२॥
खान पान पहरिनि अरु देना। जिस मन रुचहि नहीं सुख लेना।
गुरु जसु सुनति प्रफुल्लिति भई। जनु सुत सहति आप हुइ गई॥ १३॥
निसा भई राजा ढिग आयो। नेत्र नीर भर तिसहि सुनायो।
'राज साज धन धाम भंडारे। सभि फीके बिन पुत्र हमारे॥ १४॥
नहीं तिलंजुल[2] हित भी कोऊ। बिना पुत्र ते अविगति दोऊ।
करि करि हारे बहुत उपाइ। नहीं पुत्र को किसते पाइ॥ १५॥
पू[3] जे नरक तरावै जोऊ। पुत्र नाम को अरथहि सोऊ।
पुन इस जग के सुख उपजावै। परंपरा कुल अपनि बधावै॥ १६॥
राज संभालहि हम पशचाती। देख सिराती[4] लोचन छाती।
सो हमको सुख नांहि न होवा। अनिक उपाइनि को करि जोवा॥ १७॥
सुने सु मैं श्री नानक थाएं। इत श्री तेगबहादर आए।
लोक अनेक कामना पावैं। सादर सेवहि सुख उपजावैं॥ १८॥
जिस श्री नानक को जस सारे। भू मंडल महिं बिदत उदारे।
क्यों तुम जाइ न सेव उठावहु। मन बाँछति सुत को बर पावहु॥ १९॥
सुनि बोल्यो तब्रि राजा राम। 'मैं भी सुन्यों सुजसु अभिराम।
श्री मुख ते जिम बाक बखाने। फुरहिं सकल तिम बिदत जहाने॥ २०॥
श्री नानक सूरज सम सारे। कर्यो प्रकाशनि, अनिक उधारे।
इह भी तिन ही के अवतार। यों सभि भाखति है संसार॥ २१॥
एव परसपर हरखति होए। राति ब्रिखै परि सुख सों सोए।
भई भोर जित दिशि गुर जाने। त्यारी कीनसि उतसव ठाने॥ २२॥
निज रानी को ले करि साथ। चढति भयो तबि ही नर नाथ।
ब्रिंद तुरंगम के असवार। चडे संग दुंदभि धुकार॥ २३॥
सिवका डोरे बाहन नाना। ले करि चल्यो संग राजाना।
सुत अभिलाखी[5] मग को उगरा। क्रम करि देश उलंघयो सगरा॥ २४॥

---

1. बचनों द्वारा कंगाल से राजा हुए 2 हिंदुओं में मृतक का दाह करने के बाद पुत्र की ओर से की जाने वाली रीति 3. नरक से उद्धार करने वाला पुत्र 4 ठण्डी हो 5. पुत्र का इच्छुक चल दिया

जहिं सतिगुर को लख्यो बसेरा। आइ समीपि कराइ सु डेरा।
तंबू शमियाने तहिं ताने। उतर्यों भूपति थिरता ठाने॥ २५॥
संध्या भई सुपति सुख राती। बहुर आनि होई जबि प्राती[1]।
करि शनान ले अनिक उपाइन। गुर दिश गमन्यों नंगे पाइन॥ २६॥
भयो दीन मन, शरधावान। सहति भारजा अंजुल पान।
नमसकार करिकै मग कंजनि[2]। मन रंजन भव भै भ्रम भंजन॥ २७॥
आइसु लै बैठ्यो उर धारि। सतुति बेनती करी उचारि।
'घट घट पट के जानण हारे। बनहि न कहिबो आप अगारे'॥ २८॥
पुन कर जोरि सचिव ने कह्यो। 'इत आवनि रावर जे लह्यो।
हम सम जीव हजारनि केरे। लखियति जागे भाग बडेरे॥ २९॥
प्रथम प्रिथीपति की इम इच्छया। धरहि आप के मुख सिच्छया।
पद पंकज पावन घर सुंदर। इन ते चहि पुनीत किय मंदर॥ ३०॥
जो जाचति तुमरे दरबारा। पायति सो, इम सुजसु उदारा।
लैबे हेतु आप चढि आए। भाउ भगति सों चित लपटाए'॥ ३१॥
सुनि कै श्री गुर बाक बखाने। 'मज्जन तीरथ पिखनि सथाने।
आवनि भयो देश इस मांहि। बिशन सिंह को काज निबाहे॥ ३२॥
दान होम बहु बिधि के करिकै। सिख संगति इस देश निहरि कै।
अधिक भावना जे न्रिप केरी। शरधा धारि आइ बिन वेरी॥ ३३॥
कहो कामना अपनी जोइ। आगे गमनि नहीं अबि होइ'।
इम सुनि एक दिवस तहिं रहे। प्राति भई मिलि गुर सों कहे॥ ३४॥
'श्री सतिगुर जसु सुन्यों तुमारा। दरशन को मन भयो हमारा।
कर्यो देश पावन इत आइ। भए निहाल लोक समुदाइ॥ ३५॥
पुत्रन जाच[3] सकहि, कहि कैसे ?। सतिगुर ने उर की लखि तैसे।
म्रिदुल मधुर सुंदर सुखदानी। बोले क्रिपा धारि मुखबानी॥ ३६॥
'भो महिपालक! निज अभिलाख। क्यों सुकचति चित, दीजहि भाखि'।
सुनति भनी बिनती, कर बंदे। 'दानी सभि को आप बिलंदे॥ ३७॥
जतन अनेक करे सभि रीति। पुत्र न प्रापति चिंता चीत।
आरबला चिरकाल बिताई। अबि शरीर पर भी बिरधाई॥ ३८॥
आप राज को मालिक दीजै। क्रिपा निधान! क्रिपा निज कीजै।
चरन आपके अलंब हमारे। तजे उपाइ अपर जे सारे॥ ३९॥

1. सवेर 2. चरण रूपी कमल 3. पुत्र की मांग करना

हुइ रावर के सिक्ख महाने। हलत पलत महिं दिहु कल्याने।
पूरब संत देव बहु माने। अनिक उपाइन पूजन ठाने॥ ४०॥
बहु करि रहे[1], न उपज्यो नंद। हीन मनोरथ चित बिलंद।
अबि सतिगुर की शरनी आए। सभि ते उत्तम सुर तरु पाए॥ ४१॥
नहिं चिंता चित की मम रहै। मो मन मैं निशचै अस अहै।
इस बिधि की बिनती सुनि करि कै। दीन दयाल निज बिरद संभरिकै॥ ४२॥
दीन जानि गुरु कीनसि दया। कह्यो बाक 'तुझ को बर दया'।
हुती मुहर श्री गुर के हाथ। लाइ न्रिपत के ऊरु साथ॥ ४३॥'
'तव सुत हुइ है सिक्खय हमारा। धरम आतमा भाग उदारा।
तिसके सीस मुहर इह होइ। चिन्ह हमारो धारहि सोइ'॥ ४४॥
चरन पखारि चरनांम्रित लीना। बिदा होइ करि प्यानो कीना।
केतिक मासनि सुत निपज्यो। चिन्ह गुरु को सिर पर लयो॥ ४५॥
जबि सतिगुर पटणें ते चलिकै। उलंघे मारग संगति मिलि कै।
आनंद की निधि सुधि तबि आई। 'भयो आप के पुत्र बधाई'॥ ४६॥
सुनति उछाह अनिक बिधि होवा। दयो दान तहिं दारिद खोवा।
गुर घर जनम्यो साहिबजादा। बिशन सिंह सुनि बहु अहिलादा॥ ४७॥
दुंदभि छोटे बड़े बजाए। चिरंकाल लगि सुनि समुदाए।
तोपनि तुपकनि शलख बिसाला। बार बार कीनसि तिस काला॥ ४८॥
न्रिप ने दान दयो बहु रंकनि। बखशे सुनत्यों कंचन कंकन।
जिसने पूरब खबर सुनाई। दुइ लोकनि सुख बखशिश पाई॥ ४९॥
कौतक कीनि अनेक प्रकारन। नट, न्रितकर[2], बंदीजन, चारन[3]।
डूम भाट अदिक जे आए। ते करि दान सकल त्रिपताए॥ ५०॥
अति उतसव सिख संगति करती। सुनि सुनि अनंद महिद को धरती।
सभि लशकर ने उतसव कीनसि। जथा जोग सभिहूं धन दीनसि॥ ५१॥
सभि कारज करि चाहति मुरे। पटणं दिशि सतिगुर मुख करे।
अबि मैं जनम कथा चित लाइ। इसमें गुर की कहौं बनाइ॥ ५२॥

दोहरा

जिमि जिम पटणे नगर महिं खेले बाल मुकंद।
भयो महां उतसव जथा रचौं तथा शुभ छंद॥ ५३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'राजे को सुत देवनि' प्रसंग बरननं नाम इकादशमो अंशु॥ ११॥

1. बड़े उपाय करते रहे 2. नृत्य करने वाली 3. भट

अंशु १२

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जनम प्रसंग

सवैया

गन मंगल के गुर मंगल रूप, महां उतसाहनि के उतसाहू ।
सभि तेजनि के अति तेज दिपैं, सभि ओजन ओज, गुरूरनि गाहू[1] ।
शुभ आदि म्रिजाद टिकावनि को, बिगसावनि संतनि को, रिपु दाहू ।
तुरकानि तरु जर नाशनि को अवतार उदार लियो जग माँहू ॥ १ ॥
सरदूल कि तूल अभूल भए प्रतिकूल नदी गिर राजनि को ।
हिंदवाइन तीरथ पावन को थिरतावन को अघ मांजन को[2] ।
सरबोतम खालसा पंथ सतेज अमेज ह्वै आप ही साजन[3] को ।
कवि सिंह कहै अवितार भयो हम जैसे गरीब निवाजन को ॥ २ ॥
सभि निंदक मोद कमोदनि[4] को वन, दंभ उलूक दुरे समुदाए[5] ।
भगती अति आतप को बिसतारनि तारन से गरबी न दिसाए ।
पसर्यो अंधकार अधरम महां दिढ, एक ही बार सु दीनि पलाए[6] ।
सम सूरज के अवितार भयो, हम से जन पंकज को बिकसाए ॥ ३ ॥

चौपई

श्री गुजरी बड भाग प्रसूता । उपज्यो बालिक छबि अदभूता ।
अशट दीप दीपति ग्रिह जानो । दुति घट गई उद्यो रवि मानो[7] ॥ ४ ॥
सेवयमान[8] धाइन ते माता । भनहिं बधाई आनंद दाता ।
अंतर बहिर दास गन दासी । बिचरति इत उत रिदे हुलासी ॥ ५ ॥
आपस महिं बहु करि करि चाइ । मिलहिं बखानहिं सतुति सुनाइं ।
'गुर घर जनम्यों साहिबजादा । सभि निज जननि देहि अहिलादा' ॥ ६ ॥
पौत्र बदन को देखि परेखी । मात नानकी मोद विशेखी ।
मनहु कोकनद बिकसति सुंदर । चंद मनिंद चारु दुति मंदिर ॥ ७ ॥

1. अहंकारियों को दबाने वाले 2. पापों को दूर करने वाली है 3. निर्माण करने वाली 4. कुमुदिनी 5. दंभ रूपी उल्लू छिप गए 6. नाश कर दिया 7. मानों सूरज उदय हुआ 8. सेवा के योग्य

भई प्राति सभि बजी बधाई। मिलि संगति इकठी हुइ आई।
भांति भांति के कौतक करिहीं। श्री सतिगुर के शबद उचरिहीं ॥ ८ ॥
बजहिं म्रिदंग रबाब बिसाला। करहिं कीरतन शबद उजाला।
पंचाम्रित बनवावहि रास[1]। गुरु दर पर करि करि अरदास ॥ ९ ॥
बंडहिं अचहिं 'धंन गुरु' कहैं। बडे भाग अपने जन लहैं[2]।
भाट कलावट ढाडी आवहिं। भनहिं बधाई बांछति पावहिं ॥ १० ॥
वेख कलीवन देव बधूटी[3]। धरि आवहिं जनु जग दुति लूटी।
ढोलक, टलका[4], घुंघरू, तानी। गाइं बिलावल लेति भवाली ॥ ११ ॥
सभि बाजे अरु हाथनि ताल। गन पाइन के घुंघरु नाल।
अंग चलावहिं ताल मिलाइं। गावहिं नाचहिं राचहिं चाइ ॥ १२ ॥
इस प्रकार गति सुंदर करैं। अचरज देहि सभिनि मन हरैं।
श्री गुरु के मंदिर बर पौर। भई भीर थित लहैं न ठौर ॥ १३ ॥
गंध्रब गावहिं मानुख दंभा[5]। सुनि पुरि बासन होति अचंभा।
'इह गावन नाचन मुदकारी। सुन्यो न देख्यो कबहुं अगारी ॥ १४ ॥
इह गन बसहिं कौन से देश। नए रूप हैं नए सु बेस'।
सुनि कै राग शकति नहिं रही। बूझनि हित किनहुं न किम कही ॥ १५ ॥
चार घटी लौ कौतक करिकै। पुनहि पौर पर मसतक धरि कै।
बंदन करि गमने निज थाइं। नहिं किस हू ते जाने जाइं ॥ १६ ॥
रंग रंग के फूल बिसाला। गूंदि गूंदि करि दीरघ माला।
सुनि सुनि आवहिं मालाकार[6]। बंदहिं सतिगुरु के दरबार ॥ १७ ॥
धन इनाम को ले ले जाहिं। फूलनि माला दर लरकाहिं।
अति उतसव संगत महिं होवा। सभिनि आइ गुर घर को जोवा ॥ १८ ॥
जस जस मनसा धरि करि आए। तस तस मनहु कामना पाए।
तबहि जोतशी लीनि बुलाइ। जनम महूरत खबर बताइ ॥ १९ ॥
लगन महूरत उत्तम जोवा। अधिक हरख दैवग[7] उर होवा।
'उत्तम जोग पर्यो इन ऐसो। आगे किसको भयो न जैसो ॥ २० ॥
बहुते लोकनि कशट निवारहिं। अखिल जगत महिं सुजसु बिथारहिं।
चार पदारथ कर तल[8] होइ। पग पंकज पूजहि सभि कोइ ॥ २१ ॥

---

1. अधिक 2. अपने दास समझते हैं 3. देव स्त्रियां हीजड़ों का रूप धारण करके आई 4. घंटियां 5. मनुष्यों का रूप धारण करके 6. मालाएं बनाने वाले 7. ज्योतिषी 8. हाथ की हथेली पर

सरबोतम गुन लगन मझार। इक चिंता मुझ रिदे उदार।
हे क्रिपाल ! सुनि सो बिधि ऐसे। असमंजस हुइ सकि है कैसे ?॥ २२॥
जेती बात प्रथम मैं कही। सो तो बनि सकि है इम सही।
सतिगुरु के कर जनम उदारा। पूजहिं अरपहिं दरब अपारा॥ २३॥
सुजसु आदि हुइ हैं सभि घने। पर इक रीति अनबनी बने।
जबि सुधि धरहिं ओज संभारहिं। आयुध बिद्या महिं हित धारहिं॥ २४॥
जिम जिम बैस बडी हुइ जाई। तिम तिम उरजहिं चाइ लराई।
घनो घोर संघर घमसाना। हतहिं शत्रु गन को निज पाना॥ २५॥
जुद्ध करनि को लगन बिसाल। जिस महिं उतपति भा शुभबाल[1]।
लाखहु परे खेत महिं सोवैं। इस सिस के कर अस रण होवैं॥ २६॥
जुद्ध करनि को सैन बिसाला। पास न पिखीयति है इस काला।
महां तेजसी रण प्रिय होवैं। थिति रिपु महिं जिम थम्ह[2] खरोवैं॥ २७॥
चहुं दिशि बिखै छाइ परताप। हुकम करहि बड शत्रुनि खापि।
तबि होवहिंगी जो अबि नांही। धरम सथापहिं सभि जग मांही॥ २८॥

दोहरा

हुइ क्रिपाल, दानी महां, जोधा, धीर बिसाल।
बिद्या महिं पंडित चतुर, महां बाहु रिपु सात[3]॥ २९॥
महां जितेंद्रै, महां बुधि, रिदै गंभीर बिलंद।
सभि जग नर सिरमौर ह्वै सोढि बंस को चंद'॥ ३०॥

चौपई

इत्यादिक गुन बहुत सुनाए। सहित क्रिपाल सिक्खय हरखाए।
दियो बिप्र को दरब घनेरा। मंगल उतसव होति बडेरा॥ ३१॥
संगति महां अनंद धरि आवै। अनिक भांति भेटनि अरपावैं।
पटणे पुरि बासी सिखि जेई। पंचाम्रित करिवावहिं तेई॥ ३२॥
सहित भारजा पहिरि सु अंबर। जनु घन छटा दिपहि बिच अंबर।
उतसव करति शबद को गावति। 'श्री नानक' कहि सीस निवावति॥ ३३॥
थिरहिं द्वार अरदास करावहिं। धरहिं भावना धर सिर लावहिं।
नगर बिसाल सुनहिं नर ज्यों ज्यों। नमहुं करनि कौ पहुंचहिं त्यों त्यों॥ ३४॥
इक अरपहिं इक जावहि लेते। सतिगुरु हेतु देति हैं केते।
बनक धनाढ मिलें गन आए। अनिक उपाइन को अरपाए॥ ३५॥

1. शुभ बालक का जन्म हुआ है 2. स्तम्भ 3. दुश्मनों का दमन करने वाला

उर महिं धरहिं कामना पावहिं। आइ जाति मग सुजसु[1] अलावहिं।
'श्री गुर तेग बहादर पूरा। देनि स्राप बर को बच सूरा ॥ ३६ ॥
बहु सिक्खनि पर कीनसि दया। मन बांछति सभि को बर दया।
तिन घर जनम्यों साहिबज़ादा। रच्छक सिक्खयनि दे अहिलादा ॥ ३७ ॥
सरब रीति समरथ गुरदेव। जिनको चहति देवता सेव।
दोनहुं लोकनि बिखे सहाइ। शांति रिदा गुन गन समुदाइ ॥ ३८ ॥
क्रिपा ठानि आए इत देश। घर पंजाब सु दूर बिशेश।
पुरि पटणे महिं कीनि निवास। कर्यो क्रितारथ श्री गुन रास ॥ ३९ ॥
गए बिदेश आइ हैं देश। दरशन करि अघ कटहिं कलेश।
हम लोकनि के भाग जगे हैं। जिसते श्री गुर सेव लगे हैं ॥ ४० ॥
अबि सतिगुरु के सुत इह भयो। जनु सिक्खयनि को पुंन उपजयो[2]।
ज्यों ज्यों सेव करहिं सुख पावहिं। त्यों त्यों द्वै लोकनि हरखावहिं ॥ ४१ ॥
हम निज पुत्रनि जुति दरसै हैं। बिघन अनेकनि को हतवैहैं[3]।'
इत्यादिक पटणे पुरि माही। कीरति करहिं सुभाग सराहीं ॥ ४२ ॥
कितिक नेम करि होवति भोर। आइ द्वार पर द्वै कर जोरि।
अभिबंदन करि कार संभारहिं[4]। संझ भए करि नमो सिधारहिं ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'श्री गुरु गोबिंद सिंह जनम प्रसंग'** बरननं नाम द्वादशमो अंशु ॥ १२ ॥

---

1. आते जाते 2. पुण्य फलीभूत हुआ है 3. नाश करवाएंगे 4. माथा टेक कर काम संभालते हैं

अंशु १३

श्री गुरु गोबिंद सिंह जनम प्रसंग

दोहरा

सोढी कुल भूखन जनम पूस मास[1] महिं लीन ।
हुती शुदी थिति सपतमी सुंदर समैं सु चीन ।। १ ।।

चौपई

जाम जामनी जबिहूं जबिहूं जानी । सुर गन आन प्रशंशा ठानी ।
बिथरी बर सुगंधि पुरि सारे । जागति जे लखि बिसमै धारे ।। २ ।।
अस सौरभ[2] कबि प्रथम न पाई । इह औचक अबि कित ते आई ? ।
श्री गुर मात नानकी तबै । शगन बिचार करहि शुभ सबै ।। ३ ।।
महां पुरश मम सुत के होवा । जिस के जनमति शुभ ही जोवा ।
पति के बाक बिचारन करती[3] । 'कुल दीपक उपजहिं मुद धरती ।। ४ ।।
'श्री नानक कहु उज्जल नामू । करहि जगत सभि महिं अभिरामू' ।
इम प्रसंन हुइ भाख्यो मोही । साच बचन निशचै तिन होही ।। ५ ।।
अति अनंद करती मन माहूं । सुधि को पठनि हेतु सुत पाहूं ।
करी पत्रिका तबहि लिखावनि । 'तुम घर नंदन निपज्यो पावन ।। ६ ।।
भए शगुन तिह समै घनेरे । जो प्रमोद दा अहैं बडेरे ।
क्रिपा कीनि श्री नानक महां । भई कामना पूरन इहां ।। ७ ।।
अबि सुंदर लागहि निज भवनूं । इत को करहु आप आगवनूं' ।
इम लिखि करि ततकाल पठावा । 'पहुंचहु आप आगवनूं' ।। ८ ।
हुते जहां श्री तेग बहादुर । तूरन गयो पहुंचि भा हादर ।
बहु उतसव सगरे दल भयो । बिशन सिंह राजे मुद कियो ।। ९ ।।
तिह सिख को गुर बखशश दीनि[4] । लोक प्रलोक सुखी बहु कीनि ।
पुनहिं पत्रिका आप लिखाई । 'देश कामरू हम अबि जाई ।। १० ।।

---

1. पौष 2. सुगंधि 3. माता जी वाक्यों को याद करती हैं 4. गुरु ने अनुग्रह किया

त्रिप को काज जबै बनि जाइ। तबि हम आवहिंगे इस थाइं।
प्रितपारहु तुम साहिबज़ादा। करहु दुलारनि धीर अहिलादा'॥ ११॥
पठ पत्रिका पटणे आई। जहां अधिक बिधि होति बधाई।
इम प्रसंग नौमे पतिशाहू[1]। सुन्यो जनम को अबि उतसाहू ॥ १२॥
मात नानकी त्रिधा बडेरी। रच्छहि अनिक प्रकार घनेरी।
श्री नानक आदिक गुर नामू। ले मुख ते इत उत फिर धामू ॥ १३॥
'नाना भांति बिघन समुदाए। सकल बिनासहु बनहुं सहाए।
मम पौत्रे की रच्छया धरीअहि। चंद मनिंद बिलंदहि करीअहि'॥ १४॥
लगन जोतकी लिखि लै गयो। बहु दिन भले बिचारति भयो।
लिखी जनम पत्री गिनि सोधि। जिसके उर ग्रैंह राशी बोध[2]॥ १५॥
कितिक दिवस महिं बहुर बुलायहु। मात नानकी निकटि बिठायहु।
आदि क्रिपाल महां मतिवंते। बैठे आनि समूह सुनंते॥ १६॥
'पोख मास को पख सुकल है। सपतम थित को समैं सुकल है[3]।
आदितवार जामनी जामू। भयो जनम बालिक बल धामू॥ १७॥
परे लगन महिं ग्रैह दे मंगल। उच के सूरज शनि कवि मंगल[4]।
लाभ सथान आए ग्रह आछे। पूरन द्रिशटि बिलोकति बांछे[5]॥ १८॥
जनम कुंडली जिम अवतारनि। तिम लखीयति प्रताप बड कारन।
ऐश्वरज वधहि अनेक प्रकारा। जिस को पई अति नहीं शुमारा॥ १९॥
सिंधु मेखला अविनी जेती। जसु प्रताप ते पूरहि तेती।
राम चंद मानिंदै जोधा। क्रिशन समान रिपुनि पर क्रोधा॥ २०॥
जिम बल छलिबे बावन भयो। तन को तनक आपनो कियो।
बहुर बधायो बपुख बिलंद। अपर न को भा जिस मनिंद[6]॥ २१॥
तिमु लघु ऐश्वरज अबै प्रतापू। जबै संभारहि अपनो आपू।
ततछिन दोनहुं को बिरधावै। जिसको पार नहीं को पावै'॥ २२॥
इत्यादिक शुभ गुन समुदाए। गिनती करि जोतशी बताए।
बहु धन सादर दीनसि माता। ले दिज आशिख दे हर खाता॥ २३॥
'चिरंजीव हुइ साहिबज़ादा। दे परवारहिं बहु अहिलादा'।
पीछे मात नानकी हरखति। शुभ लच्छन पौत्रे महिं परखति॥ २४॥
ले निज अंक दुलारहि घनी। पिखि पिखि मुख सनेह के सनी।
खशटी[7] आदिक जगा किरेक। करे जथा बिधि हुते तितेक॥ २५॥

---

1. नवें गुरु – तेग़ बहादुर जी 2. ग्रहों और राशि का ज्ञान था 3. आनन्द-मय समय है 4. सूरज, शनी, शुक्र तथा मंगल ऊंचे स्थान पर आए हैं 5. ग्रह चाहते हैं कि उन पर कृपा दृष्टि पड़े 6. जिसके तुल्य और कोई नहीं हुआ 7. छठी

अंतर राखहिं रच्छया करते। आइ रंक जो जाचहि दर ते।
छूछा नहीं जानि को दीना[1]। मधुर गिरा कहि दैबो कीना ॥ २६ ॥
पुरि महिं जसु पसर्यो जहिं कहां। दान भयो गुर घर ते महां।
बय श्री तेग बहादर जोई। बडी भई सुत भयो न कोई ॥ २७ ॥
अति चाहति कै उपज्यो नंदन। सभि परिवार करहिं अभिनंदन।
इक दिन मात नानकी गिनी। साथ क्रिपाल बारता भनी ॥ २८ ॥
'संमत सोलहिं सया अट्ठतर। मग्घर दुतीया सूर अनुत्तर[2]।
तबि मम नंदन जनम लिए हैं। अबि पैंताली बरख भए है ॥ २९ ॥
संमत सत्रह सै अबि चीन। ऊपर बीते बीसहु तीन[3]।
श्री नानक की क्रिपा उदारा। जिसते सुत को पुत्र निहारा' ॥ ३० ॥
अशट जोगनी कहु अभिलेखा[4]। सुत की कुशल जाचि, सिर टेका।
पंचाम्रित समूह करिबायो। सभि सिक्खयनि के घर पहुंचायो ॥ ३१ ॥
देति लेति के रिदे अनंद। 'अति चाहति के उपज्यो नंद।
श्रेय सहति हुइ उमर दराज़[5]। लहहु अनंद बिलंद समाज ॥ ३२ ॥
श्री गुजरी शुभ मति गुरु घरनी। चिरंकाल सुत बांछा धरनी।
श्री परमेशुर पूरन करी। बिच परदेश आइ पुरि थिरी ॥ ३३ ॥
भई प्रसूत सुपूत निहारा। चिर जीवहु सतिगुरु कुमारा।
देखि बिलोचन को सियराती। हुइ अनंद ते सीतल छाती ॥ ३४ ॥
इत्यादिक बोलति नर नारी। उतसव ते प्रमोद रिद भारी।
माता बडी नानकी तबै। रच्छा के उपाव करि सबै ॥ ३५ ॥
दिन प्रति मंगल रचति बिसाला। आइं हज़ारहुं पुरि की बाला।
मन भावति गावति शुभ गीत। दरसहिं बालिक परम पुनीत ॥ ३६ ॥
बंदन करहिं दूर ते खरी। करहिं सराहनि 'सूरत खरी'।
दिन प्रति मात कराइ शनाना। पट सों पोंछति प्रेम महाना ॥ ३७ ॥
सूधी कर पग की अंगुरीन[6]। म्रिदुल कोकनद पंखरी चीन।
दिपहिं पुनरभू माणिक जैसे[7]। पदमालय[8] जड़ती हुइ वैसे ॥ ३८ ॥
जिन के ध्यान करे अघ जाइं। परे करति चंचल कर पाइ।
श्री गुर तेग बहादर जाते। नाम गए धर प्रथम बख्याते ॥ ३९ ॥

1. किसी को खाली नहीं जाने दिया 2. सूरज दक्षिण में था 3. 1723 4. पूजा की 5. लम्बी आयु 6 पैरों की अंगुलियां 7. नाखून माणिक की भांति चमकते हैं 8. लक्ष्मी

पुरब जनम ब्रितंत बिचारि। श्री गुजरी प्रति कीनि उचार।
सो धरि नाम हकारन करति। बार बार बोले हस परति[1] ॥ ४० ॥
बाच[2] अकाल पुरख ते अए। 'भो[3]' धर महिं, 'ब्रिद' प्रापति भए।
यांते गोबिंद नाम उचारा। जो हुइ चहुं कुंटनि बिसतारा ॥ ४१ ॥
सिंह जु पद देवी ने दीनि। राखश हते करोरहुं चीनि।
गुर श्री नानक जोति मिलए। यांते 'गुर गोबिंद सिंह' भए ॥ ४२ ॥
धरि हाथनि पर कै बिच गोद। बारहि बार करहिं परमोद।
मुख अरबिंद हसावनि करैं। लालति बहु बिधि ते मुद धरैं ॥ ४३ ॥
सासु नुखा ज्यों जीवन मनि ह्वै[4] । देखति पालति आनंद मन ह्वै।
दोनहुं रच्छया करति बडेरे। नयन पलक न्याई बहु बेरे ॥ ४४ ॥
दिन प्रति सुंदर वधहि सरीर। दादी ब्रिधा रहै नित तीर।
कवि संतोख सिंह बलिहारी। जिस गुर अपदा हरी हमारी ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'श्री गुरु गोबिंद सिंह जनम प्रसंग'** बरननं नाम त्रयोदशमो अंशु ॥ १३ ॥

---

1. बुलाने पर हंस पड़ते हैं 2. ईश्वर के बचनों से आए हैं 3. पृथ्वी 4. जीवन मणि

अंशु १४

शाह भीख प्रसंग

दोहरा

पुरि कुहड़ाम[1] बिखै हुतो शाहु भीख जिस नाम।
निज मुरशिद[2] के ढिग रहति ठसके[3] ग्रामसु धाम ॥ १ ॥

चौपई

जिस दिन श्री गुर जग बिदताए। लोक म्रियाद हेतु प्रभु आए।
भई प्राति उर महिं लखि भीख। अवतरिओ नर बर दे सीख[4] ॥ २ ॥
तुरकनि कुमति करी ह्वै कूरे[5]। क्रोधी कुतसत करमनि क्रूरे।
तिनको तेज नासिबे हेतु। धर्यो देह गुरु ताप दलेत[6] ॥ ३ ॥
ब्रिद मुरीद[7] बीच तब्रि बैसा। भयो संकलप रिदे तब्रि ऐसा।
ततछिन उठ्यो अपर सभि त्यागे। पूरब दिशि मुख करि अनुरागे ॥ ४ ॥
मूंदि बिलोचन धरि उर ध्याना। सादर हाथ बंदि थित थाना।
मन महिं कीनि वंदगी घनी। परम प्रेम आतुरता सनी[8] ॥ ५ ॥
नंम्रि होइ धर सिर धरि दीना। कुनसा कीनसि तीन प्रबीना[9]।
उतफुल लोचन[10] हुइ करि बैसा। जनम रंक पारस लिय जैसा ॥ ६ ॥
देखि मुरीद अखिल बिसमाने। कहां कीन इह पीर स्याने।
इति दिशि किस को सीस निवायो। जथा प्राति हिंदुनि को भायो[11] ॥ ७ ॥
पशचम दिशि को प्रिशटी फेरी[12]। भए नंम्रि औचक क्या हेरि।
हाथ जोरि पूछ्यो पुन भीख। 'प्रथम न तुमरी इह बिधि दीख ॥ ८ ॥
उठहिं प्राति हिंदू कर जोरि। बंदन करहिं सकल इत ओर।
हम पशचम दिशि सीस निवाइं। अपनि दीन को राखहिं भाइ ॥ ९ ॥

---

1. घुड़ाम नामक नगर जो पंजाब में है 2. पीर-गुर 3. हरियाणा के ज़िला करनाल का एक गाँव 4 शिक्षा 5. झूठे 6. तप्त दूर करने वाले गुरु जी ने जन्म लिया है 7. अनुयायी, चेले 8. दीनता सहित 9. तीन बार सिजदा—प्रणाम किया 10. आँखें खोल कर 11. जैसे सवेरे हिंदू सीस झुकाते हैं 12. पीठ फेर कर

आप हमेश करति हो ऐसे। अबि किसको पिखि कीनसि कैसे'।
शाह भीख सुनिके तबि कह्यो। 'कारन सुनो जथा मैं लह्यो ॥ १० ॥
दीन दुनी को खावंद आवा! मानुख देहि धारि बिदतावा।
गरबनि के गरबनि को गंजन। मिरजादा भंजन को भंजन[1] ॥ ११ ॥
तेज त्रिलोकनि महिं बिसतारे। तुरकनि औंधे करहिं नगारे[2]।
सिख संगति को त्रास मिटावै। सत्यनाम को जाप जपावै ॥ १२ ॥
अपनो पंथ जगत बिदतावहि। इक मति करति तीन दिखरावहि[3]।
निसा आज की जनमे बालक। तरुन तरनि सम तमु रिपु घालिक ॥ १३ ॥
भई प्रात मुझ सुधि मन भई। करी बंदगी मैं सुख मई।
पुरि पटणा पूरब दिशि त्रिसैं[4]। मैं अबि जाउं दरसहों तिसैं ॥ १४ ॥
बिनै ठानि बखशावनि करिहौं। अपनि इशट थिरता अनुसार हौं[5]।
दरशन को पाक[6] अति होवौं। गुनहि अनिक मन तन ते खोवौं' ॥ १५ ॥
ब्रिंद मुरीदनि सो इम कह्यो। भयो त्यार मारग बड लह्यो।
दोइ मुरीद मुराद धरंते[7]। लिये संग प्रिय सेब करंते ॥ १६ ॥
अपर सभिनि आस्वासन करिकै। 'कितिक दिवस हटि आइ उचरिकै।
आसा[8] हाथ गहे चलि पर्यो। सिफत खुदाइ रंग उर भर्यो ॥ १७ ॥
लई कुरान मुसल्ला[9] धारे। द्वै मुरीद सो चले पिछारे।
सने सने गमने मग जाहिं। निस बिसरामहिं, दिवस चलाहिं ॥ १८ ॥
ग्राम नगर उपवन बन हेरि। तरि सलिता जल चलता हेरि।
दिल्ली आदि उलंघि करि सारे। भली भांति के देश निहारे ॥ १९ ॥
पुरि पटणे के पहुंचे पास। जित कित शोभा रही प्रकाश।
बागनि महिं बिथरी हरिआई। देखनीय[10] तरुवरु समुदाई ॥ २० ॥
सदल सफूल सफल तरु कीरण[11]। पुशपति, लता, शुभति बिसतीरण।
नालकेर कदलीन बगीचे[12]। मनहुं काम माली[13] बनि सीचे ॥ २१ ॥
राइबेल[14] चंबेली चारु। चंपक नीप[15] शुभति गुलजार।
भांति भांति के तरु अविलोके। जिन महिं बिचरति होति अशोके[16] ॥ २२ ॥

---

1. मर्यादा को तोड़ने वालों का नाश करेगा 2. तुर्कों के नगारे उल्टे करेगा 3. औरंगजेब एक मत करना चाहता है, ये (गुरु जी) तीन कर दिखाएंगे 4. पूर्व दिशा में है 5 उनमें अपना इष्ट ठहरा कर उनके अनुसार चलूंगा 6 पवित्र 7. श्रद्धावान 8. सोटा 9. चटाई जो नमाज पढ़ते समय नीचे बिछाई जाती है 10. देखने योग्य 11. बिखर रहे थे 12. केलों के बाग 13. मानो कामदेव रूपी माली ने सींचे हैं 14. बेल 15. कदंब वृक्ष 16. जिनमें घूमने से खुशी होती है

आनंद होति बर्यो पुरि माँही। रिदे लालसा दरशन जांही।
बहुत बीथका[1] घर समुदाए। देखति नगर जाति अगवाए ॥ २३ ॥
नर नारिन के ब्रिंद निहारे। बिचरति आनंद धरि धांनि भारे[2] ।
क्रम करि सकल उलंघति आए। जिसी ठौर गुरु पौर सुहाए ॥ २४ ॥
जहिं सिक्खयनि की भीर घनेरी। करहिं कामना लहहिं बडेरी।
तिह संगति महिं हुइ इक पासे। बैठे पिखहिं बिलास हुलासे ॥ २५ ॥
समां पाइ लखिकै अविकाश। ठांढो भयो भीख सभि पास।
आदि क्रिपाल[3] बिसाल जि बैसे। जोरे हाथ कहित भा ऐसे ॥ २६ ॥
'जो जनम्यों अबि साहिबजादा। देनि जगत सिक्खनि अहिलादा।
तिसके दरशन की हम चाहू। जिस हित गमने बहू दिन राहू[4] ॥ २७ ॥
अबि दरशन करिवावहु मोहि। सफल आइबो मग को होहि।
अपर न कारज कोइ हमारा। आए लख्यो गुरु दरबारा' ॥ २८ ॥
सुनि क्रिपाल ने बाक बखाना। 'भला भयो तुम टिकहु सथाना'।
अंतर जाइ ब्रितंत सुनावा। 'सईयद एक पीर चलि आवा ॥ २९ ॥
साहिबजादे को चहि देखा। रिदै लालसा करति बिशेखा।
श्री गुजरी जुति सेवक और। बैठे सुनति भए तिस ठौर ॥ ३० ॥
सभि के मन संसै तबि होवा। 'तुरक दिलेश दुरासी जोवा[5] ।
सुधि तिस होहि हकारहि तीर। को जानै क्यों आवा पीर ॥ ३१ ॥
घर हमरे सो करता बाद। बादी नौरंग महिद प्रभादि[6] ।
साहिब[7] नहीं निकटि इस काल। जो सभि दिशि ते लेति संभाल ॥ ३२ ॥
श्री हरिक्रिशन बैस जिन थोरी। करे हकारनि निज दिशि ओरी।
तिनहुं दरस नहिं दीनसि लीनसि। तनि तजि दीन कंतूहल[8] कीनसि ॥ ३३ ॥
राज भोज ते मद मसताने। करहिं अकरन होनि कहु हाने[9] ।
यां ते इन कहु टारनि बनै। मधुर गिरा कहि रस के सनै' ॥ ३४ ॥
एव मतो करि उठ्यो क्रिपाल[10]। आयो बहिर मिल्यो तिस नाल।
'सुनहु पीर जी ! आप महाने। रहित कहित के सहत सिआने[11] ॥ ३५ ॥
बिते न तीन महीने चीनसि। अजहुं न वहिर निकसनो कीनसि।
बालिक रूप म्रिदल सभि अंग। बायू बेग बहै हिम संग[12] ॥ ३६ ॥

---

1. गलियां 2. धनाढ्य आनंद से घूमते हैं 3. मामा कृपाल आदि 4. रास्ते में 5 दिल्लीपति खोटी आशा वाला है 6. अज्ञानी 7. गुरु तेग़ बहादुर जी 8. कौतुक 9. नाश होने के लिए 10. मामा कृपाल जी 11. व्यवहार में स्याने 12. बरफानी हवा चल रही है

वहिर न आवहि कारज एते। अलप आरबला अंतर से ते[1]।
मिहिरबानगी[2] करि कै फेर। आवहु गे हुइ लाभ बडेर॥ ३७॥
श्री गुर साहिब तबि लगि आवहिं। तिनकहु दरसहु अभिमति पावहिं।
शाहु भीख सुनि कै पुन बोला। 'महां पुरश अवतर्यो अडोला॥ ३८॥
दे दुशमन कहु दोज़क[3] दुख को। प्रिय सेवक लहि कैवल[4] सुख को।
तुम चिंता चित महि किम कइऊ। चित निसा को सूरज भइऊ। ३९॥
उर महिं भरम करहु नहिं कैसे। भरम तपत को निसपति जैसे[5]।
त्रास तजहु, नहि रंचक कीजै। त्रास तिमर को दीप जनीजै[6]॥ ४०॥
सभि आलम को खावंद[7] होवा। भे अवतार धरम हित जोवा।
दरशन लेहिं इहां हम बैसे। घट घट मालिक प्रेरहिं जैसे॥ ४१॥
प्रविश्यो अंतर बहुर क्रिपालू। कर्यो जनावनि अखिल हवालू।
रहे टारि नहिं टरे, अरे है। साहस पकरे पीर थिरे है॥ ४२॥
बिना बिलोके लोचन आगे[8]। तबि लौ खान पान सभि त्यागे।
जानी जाइ नहीं गति मन की। प्रेम परखियति क्रिया सु तन[9] की॥ ४३॥
देश पंजाब दिशा के जनियति। हेतु हटावनि बहु बिधि भनियति।
रहै बैठि जाहि न बिन देखे। हठ गाढो जिम रिदे बिशेखे। ४४॥
श्री गुजरी सुनि कै तिन बात। नहिं मानी प्यारो अति तात।
'कैसे वहिर करवि मैं बालिक। अलप रूप अंतर थित पालिक[10]॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे शाह भीख प्रसंग बरननं नाम चतर दसमो अंशु॥ १४॥

---

1. छोटी उम्र है भीतर से बाहर नहीं आ सकते 2. कृपा करके 3. नरक 4. मुक्ति 5. भ्रम रूपी तपश के लिए चन्द्रमा के समान हैं 6. डर रूपी अंधकार के लिए दीपक रूप हैं 7. मालिक स्वामी 8 बिना दर्शन किए 9. तन की क्रिया को देखकर प्रेम की परख की जाती है 10. सूक्ष्म शरीर का पालन तो भीतर ही रखकर किया जाता है

अंशु १५

शाह भीख प्रसंग

दोहरा

बसे निसा, कहि रहे बहु खान पान नहिं कीनि ।
भई प्राति बैसे सु थल द्वार अगारे तीन[1] ॥ १ ॥

चौपई

सिमरति रिदे नाम गुरु केरे । 'देहु दरस पूरन प्रभु मेरे ।
दूर देश आगमन हमारा । पूरहु मन संकलप दिदारा[2] ॥ २ ॥
सभि घट को मालिक गुर पूरा । पिता पितामहिं रण महिं सूरा ।
मन प्रेरहुगे जत्रि इन केरे । बालिक रूप लेहि तबि हेरे ॥ ३ ॥
अपनि प्रियहु[3] की पुरहु भावना । परखहु परम सु प्रेम पावना ।
घट घट की तुम जानणहारे । दरशन देहु जानि मा प्यारे' ॥ ४ ॥
इत्यादिक गुन बरनन करिते । भी भुनसार प्रकाश निहरिते[4] ।
श्री गुर घर के सेवक सारे । सुनि सुनि आइ समीप निहारे ॥ ५ ॥
तसबी हाथ फेरिबो करिही । श्री नानक को सिमरति उर ही ।
'दरशन दरसे बिना न जाऊं । बैठ्यो इह ही दिवस बिताऊं ॥ ६ ॥
श्री नानक के सदन महाना । हिंदुनि तुरकनि एक समाना ।
पख्य पात[5] जिनके कुछ नांही । शरधा हेरति हैं उर मांही ॥ ७ ॥
गुर के घर की इह मिरजाद । दुरी नहीं जग बिदती आदि[6] ।'
सुनि क्रिपाल जुति सेवक सारे । श्री गुजरी ढिग सकल उचारे ॥ ८ ॥
'इह तो पीर महां दरवेश । दिखीयति गुर को प्रेम विशेश ।
दरशन बिना चाहि नहिं काही । खान पान भी कीनसि नांही ॥ ९ ॥

---

1. तीनों—एक मुरीद तथा दो चेले 2. दर्शन की इच्छा 3. प्रेमी की 4. प्रकाश देखा 5. पक्षपात 6. गुरु के घर की यह मर्यादा शुरू से चली आ रही है, जग से छिपी हुई नहीं है

बैठ्यो सिमरति नाम खुदाइ। एक मुसल्ला तरे डसाइ[1]।
उर दरशन की जिस लिव लागी। भूख प्यास की बाधा भागी॥ १० ॥
उठहि नही बिन दरशन कीए। बैठि रह्यो उर साहस लीए।
उचित बात तो करहु भलेरी। पशचाताप न हुइ जिस फेरी[2]'॥ ११ ॥
सुनति नानकी बोली तबै। 'रिदै बिचार करहु तुम सबै।
चिरंकाल को चाहति रहिते। बडे गुरनि सो[3] बिनती कहिते॥ १२ ॥
बार बार हुइ नंम्रि अगारी। जाचनि करति पुत्र भुज भारी।
इन को पिता शांति धरमातम। कहि कहि करता पुरख महातम[4]॥ १३ ॥
इक मन होइ समाधि लगावति। पारब्रह्म परमेश्वर ध्यावति।
जोग साधना साधति रहे। सिमरति नाम अधिक गुन कहे॥ १४ ॥
कर्यो प्रसीदन प्रभु अकाल। जिह अराधिवो दुसहि बिसाल।
जगत नाथ करि क्रिपा सु चितको। कर्यो दिखावनि अबि इह सुत को॥ १५ ॥
जिनके उर[5] अभिलाख बिशेखा। अबि लौ नहीं पुत्र मुख देखा।
सो कैसे अबि वहिर लिजावहु। पर मति रिपु के नर दिखरावहु॥ १६ ॥
पुत्र परम प्रिय थोरे दिन को[6]। किम उतसाह करौं मैं मन को।
अनिक भांति की रच्छा करनी। लघु बालिक की सभिहिनि बरनी[7]॥ १७ ॥
नर परदेसो को दिखरावनि। डीठ आदि अवगुन परछावनि[8]।
इत्यादिक उर समझहु सारे। तिनहिं उठावहु बिनै उचारे॥ १८ ॥
गुर घर ते दिहु रुचिर अहारा। घ्रित मिशटान अनेक प्रकारा।
अपर चाहि कुछ जाचनि केरी। बसत्र दरब दीनहि बिन देरी॥ १९ ॥
बालिक वहिर दरस ते बिना। देहु तिनहुं करि आदर घना।
त्रेस भले दरवेश विशेश। ज्यों क्यों करहु प्रसंन अशेश[9]॥ २० ॥
सुनति नानकी ते सभि आए। शाहु भीख को मिलि समुझाए।
'जननी को सुत हुइ अति प्यारो। अरु बालिक बय आप बिचारो॥ २१ ॥
अलप दिवस भे जनम भयो है। अजहुं वहिर निकसनि न कियो है।

---

1. एक चटाई नीचे बिछा रखी है 2. जिसके कारण बाद में पश्चाताप न हो 3. गुरु तेग़ बहादुर जी से 4. ईश्वर की बड़ाई 5. गुरु तेग़ बहादुर जी के हृदय में 6. अर्थात् अभी छोटा है 7. छोटे बालक की हर प्रकार से रक्षा करनी है 8. परछाई 9. सबको प्रसन्न करो

गुरु घर ते भोजन सभि लीजै । त्रिपतहु मन प्रसंग को कीजै ॥ २२ ॥
असमंजस ल्यावनि घर बाहर । तिन जननी नहिं मानहि जाहर[1] ।
बहुर आइ दरसहु दरसंन । मिलहु गुरिन मन होई प्रसंन ॥ २३ ॥
करहु मिहर की नदर[2] बिसाला । शुभ दखेग आप की चाला ।
परवदगार सिफत महिं रंगे[3] । छित सी छमा धरहु सरबंगे[4] ॥ २४ ॥
शमति छुधति तुम पीयो न पानी[5] । इक रस रहे मौन को ठानी ।
श्री गुरू के दरबार अगारी । नहिं बैठनि बनि है हठ धारी ॥ २५ ॥
सुनि करि शाह भीख पुन बोला । शरधा जिसके रिदे अडोला ।
'पटणे नगर बिखे जबि ब्रयों[6] । सिर निवाइ मैं प्रन को कर्यो ॥ २६ ॥
दरसौं बरखुरदारहिं आदि[7] । पुन खावौं पीवौं सालादि[8] ।
कोस सैंकरे चलि करि आए । जनम जानि मन हम हरखाए ॥ २७ ॥
लेनि देनि को अपर न काज । दरशन एक ग़रीब निवाज ।
हम फकीर दखेश हमेश । जग कलेश चहिं हतनि अशेश ॥ २८ ॥
जिम जानहु तिम दरस करावहु । कह्यो मानि हम को हरखावहु ।
नांहि त परे रहैं दरबार । करहिं बंदगी परवदगार ॥ २९ ॥
हम फकीर सद संकट सहैं । इस महिं कोइ न अचरज अहै ।
दिखरावहुगे दरशन करि हैं । नांहि त बैठे हम दर पर हैं ॥ ३० ॥
पूरन होहि कामना जबै । खान पान करि हैं मुख तबै ।
दिढ निशचा हमरे मन एम । देहिं दरस लखि कै मन प्रेम ॥ ३१ ॥
सेवक जुति सुनि श्रोन क्रिपाल । परख्यो साहस अचल बिसाल ।
मात नानकी के ढिग आए । हाथ जोरि सभि गाथ जनाए ॥ ३२ ॥
'हठ फकीर ने कर्यो बडेरे । उठहि नहीं बिन दरशन हेरे ।
करहु आपने रिदे बिचारी । टारैं जिम दिढ साहसधारी[9] ॥ ३३ ॥
थकति छुधति जल को नहिं छूए । दर पर बैठे राति बिताए ।
अबि जुग जाम दिवस बित गइऊ । तऊ अछोभ सधीरज भइऊ ॥ ३४ ॥
सहित सनेह बाक मुख कहे । दरशन सतिगुर की इछ अहै ।
इह अवतार रूप बिदताए । दरशन चहति दूर ते आए ॥ ३५ ॥
मात नानकी सुनि तिस काल । कह्यो बाक, 'सुनि भ्रात क्रिपाल ।
अंतर पौर प्रयंक उसावहु । रच्छया सरब प्रकार करावहु ॥ ३६ ॥
सिख सेवक सभि ही हुइ तीर । फरश करावहु सुंदर चीर ।

1. उनकी माता बाहर नहीं निकालना चाहती 2. कृपा दृष्टि 3. आप पालक ईश्वर की स्तुति के रंग में रंगे हो 4. आप में धरती की भांति क्षमा का गुण है 5. तुम भूखे प्यासे और मौन धारण कर रहे हो 6. प्रवेश किया 7. पहले प्रिय बालक का दर्शन करूंगा 8. प्रसन्नता सहित 9. पक्के हठधारी

गावहिं गुर के शबद उदार। अपनि रबाबी[1] लेहु हकार' ॥ ३७ ॥
सुनति सकल करिवाइसि त्यारी। कर्यो मेल संगति मिलि सारी।
अनिक उपाइन को ले आए। 'प्रथम करहिं दरशन हरखाए'[2] ॥ ३८ ॥
रंगदार झगली पट झीन। चमकति गोटा लग्यो महीन[3]।
अनिक भांति की हुती सु त्यार। 'दरशन करि अरपहिं तिस बार' ॥ ३९ ॥
सो सुनि सुनि उतलावति ल्याए। हुते किनहुं भूखन घरिवाए।
दरशन की प्रतीखना वारे। पहुंचति भे सिख सेवक सारे ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'शाह भीख प्रसंग'.बरननं नाम पंच दशमो अंशु ॥ १५ ॥

---

1. कीर्तन करने वाले—डोम 2. पहला दर्शन करने की इच्छा से प्रसन्न होते हैं 3. बारीक

अंशु १६

भीख शाह दरशन प्रसंग

दोहरा

फरश गलीचे गिलम को रच्यो रुचिर इक सार।
कंचन खचित[1] प्रयंक के आसतरन[2] जिस चारु ॥ १ ॥

चौपई

म्रिदुल मनोग धरे उपधानु[3]। सेजबंद सुठ जरी महान।
श्री गुजरी ढिग होइ क्रिपाल। दुहि हाथनि पर लेइ बर बाल ॥ २ ॥
मंद मंद करि अदब घनेरा। श्री गुर को ल्याइव तिस बेरा।
सूरज मुखी[4] हाथ गहि आगे। किय सूरज दिशि धूप न लागे ॥ ३ ॥
चारु चमर ले करि भा पाछे। करति ढुरावनि इत उत आछे।
गावनि लगे शबद सुखकारी। राग रागनी रुचिर मझारी ॥ ४ ॥
बजहि रबाब म्रिदंग उदारा। जिन को स्रवन देति मुख भारा।
पुरि पटणे की संगति आई। अनिक प्रकार उपाइन ल्याई ॥ ५ ॥
करि करि रिदै कामना आए। दरशन करति पाइ मन भाए[5]।
होनि लगी अरदास अगारी। बसत्र बिभूखन अरपति भारी ॥ ६ ॥
बहुरो शाहि भीख बुलवाइव। 'मन बांछति दरसहु सुख दाइव'।
हरखति उर उठि अंतर होवा। थित समीप करि अदब[6] खरोवा ॥ ७ ॥
बंदन करि तसबी[7] जिस हाथ। बोलति भयों सतुति शुभ गाथ।
'पाक बिपाक[8] रहीम[9], कबीर[10]। बखशहु गुनह[11], पीर के पीर ॥ ८ ॥
श्री नानक श्री कालू नंदन। श्री बेदी कुल चंद स बंदन[12]।
सुजसु बिलंद अनिंद मुकंद। खलक मुमारख दिपहु अमंद[13] ॥ ९ ॥

1. सोने से जड़ित 2. बिछौना 3. तकिया 4. गोल पंखा 5. मन चाहे फल प्राप्त किए 6. सत्कार सहित खड़ा हो गया 7. माला 8. पवित्र से भी पवित्र 9. कृपालु 10. महान 11. पाप-अपराध 12. आप को बंदना करता हूं 13. बिना मंद होकर आप चमकते हैं, चांद की भांति

राइ बुलार उधारनि कर्यो। दौलत खां को दुख परहर्यो।
पीर ब्रिंद केतिक मुलतान। सभि को शांति दीनि दुख हानि ।। १० ।।
अपर हिंदु तुरकनि क्या गिनती। करे निहाल स्रोन सुनि बिनती।
जो जो शरन आनि करि पर्यो। क्रिपा द्रिशटि करि जिसहि निहर्यो ।। ११ ।।
सो सो चतुर पदारथ प्रापत। लगी रिदे लिव[1] सत्य सु जापति[2]।
दुलभ तिनहुं को कछू न रह्यो। रावर ने जिसको निज लह्यो[3] ।। १२ ।।
सूरत सुंदर मूरति पाक। तुमरो दरशन नहिं जम बाक[4]।
ज़ाहिर जग महिं जब्बर ज़हूर[5]। हाज़र जहिं कहिं दास हज़ूर[6] ।। १३ ।।
ग़ाफल गंज[7] ग़रीब निवाज। इह कदीम[8] तुम करते काज़।
जस चित चहो करहु तस मालिक। सिरजनहार खलक को पालिक[9] ।। १४ ।।
लग्यो आनि मैं कदम तुमारे। बूझहु रिदे मनोरथ सारे।
अपने पंथ विखे मम टुकरा[10]। जे राखहु तुम, करहु न उखरा[11] ।। १५ ।।
सभि तुरकनि ते रखहु निराला। मो पर करि कै करम क्रिपाला,।
तौ अबि पता मोहि को देईए। मम उर अंतर की लखि लेईए' ।। १६ ।।
इत्यादिक कहि करि इक घटिका[12]। म्रितका की लघु लघु द्वै घाटका[13]।
तिन महिं पाइ मधुर पकवान। सेत बसत्र मुख बंधन ठानि[14] ।। १७ ।।
प्रिथम मुरीद निकटि मंगवाई। ले करि सो निज हाथ उचाई।
द्वै कर पर दोनहुं सो धरि कै। सतिगुर की शुभ सिफत उचरि कै ।। १८ ।।
हेतु परखिबे ह्वै करि आगा। अति समीप ह्वैवे कहु लागा।
प्रभू बिराजति मातल अंका[15]। सुंदर दरशन मदन मयंका ।। १९ ।।
श्याम बिंदु[16] जननी शुभ,लाइव। डीठ न लगै[17] रिदा अकुलाइव।
मनहुं सु लच्छन चंद[18] सुहावा। दास चकोरन गन हरखावा ।। २० ।।
बिकस्यो मनहुं अलप अरबिंद। बैठ्यो शोभति बतस मलिंद[19]।
सुधा कुंड मुख मंडल मनो। बिकसति कबि कबि बीची सनो[20] ।। २१ ।।

---

1. लौ 2. जपना 3 जिसको आप ने अपना बना लिया है 4. यम का भय 5. जगत में आपका प्रकाश प्रकट है 6. दासों के याद करने पर आप हाज़िर होते हैं 7. बेसुध लोगों के नाशक 8. आदि काल से 9. आप सृजनहार और लोक पालक हैं 10. आपके मत में मेरा भी कुछ भाग है 11. आपकी रक्षा से मेरा कुछ भी नहीं उखड़ेगा 12. एक घड़ी 13. दो मटकियां 14. सफेद कपड़े से ढक दी 15. मामा की गोदी में 16. माता ने काली बिंदी लगा दी 17. कहीं नजर न लग जाए 18. चांद में चिह्न 19. मानो वह चिह्न भँवरे का बच्चा है 20. मुख मंडल मानो अमृत का कुड है जो किसी किसी समय मुस्कराता है वह मानो उसमें लहर सी उठती है

ज्यों ज्यों शाह भीख मुख बोलहि। पिखति हसति त्यों त्यों तनु डोलहि।
हाथनि चरन उछारति डारति। कवि जिन पर उतपल दुति बारति[1] ॥ २२ ॥
हाटक कटक जटे विच हीरे[2]। लागी अगुरी लगों जंजीरे[3]।
जटी मुंदरी सुंदर संगि[4]। झगुली झीन पति शुभ रंग[5] ॥ २३ ॥
लोचन पुतरी इत उत फेरति। करति क्रितारथ संगति हेरति।
आयुत भाल[6] केस बर छोटे। सिर पर बसत्र दमकते गोटे[7] ॥ २४ ॥
संगति चहुंदिशि जोरति हाथ। दरसति खरे अलप गुर नाथ।
शाहि भीख घटका जबि दोनो। करी समीप होइ करि नमो ॥ २५ ॥
श्री गुर दोनहुं हाथ पसारे। घटी सपरशन को तिस बारे[8]।
तऊ न पहुंचे जाइ तहां लौ। परे अंक[9] महिं छुवै कहां लौ ॥ २६ ॥
शाहु भीख के मन की जानि। करी वधावन बाहु महान।
दोनो द्वै घटका पर लाए। संगति खरी न किनहुं लखाए ॥ २७ ॥
शाहु भीख इक करी निहारनि। जबि घटका पर किय कर धारनि।
भार बिसाल हजारनि मन को। कर्यो प्रभू ने हाथ दुहिनि को ॥ २८ ॥
अपनी करामात के साथ। सांभति भा दिढ करि कै हाथ।
पुनहि गुरु ने अधिक दबायो। पीर ओज निज ते बिकुलायो ॥ २९ ॥
उछलति चरन दिशा तबि हेरा। कहित भयो 'मैं हौं इन चेरा।
ततछिन दोनों हाथ उठाए। बिना भीख नहिं किनहु लखाए[10] ॥ ३० ॥
अति अनंद मन मैं हुइ आयो। दुसकर तप को फल जनु पायो।
जनम रंक जिम नव निधि लैके[11]। प्रान अंत तिख जल जिम पैके[12] ॥ ३१ ॥
भई भावनी पूरन सारी। सीस नंम्रि कर वंदन धारी।
घटका दई मुरीदन हाथ। भरि लोचन[13] दरसति गुर नाथ ॥ ३२ ॥
अरपहिं अनिक उपाइन दास। जोरि हाथ करते अरदास।
बसत्र बिभूखन दरब अगारे। धरहिं आनि सिख संगत सारे ॥ ३३ ॥
को पंचाम्रित को करिवाइ। आन्यों सतिगुर ढिग वरताइ[14]।
चतर घटी लगि दरशन दीनसि। सिख संगत उतसाह सुकीनसि ॥ ३४ ॥

---

1. जिन पर कवि कंवलों की शोभा को न्योछावर करता है 2. सोने के कड़े जिनमें हीरे जड़े थे 3. अंगुलियों तक जंजीरें लगी थीं 4. साथ सुन्दर अंगूठी भी जड़ी हुई थी 5. पीले रंग का बारीक कपड़े का झगा—कुर्ता 6. विशाल भाल-चौड़ा माथा 7. गोटें वाले वस्त्र 8. बलिहारी 9. गोदी 10. भीखन के बिना और किसी ने नहीं देखा 11. जैसे जन्म से गरीब को नवनिधि मिल जाए 12. जैसे प्यास से मर रहे व्यक्ति को जल मिल जाएं 13. आँखों में आँसू भरकर 14. गुरु जी के पास लाकर बांटा

सभि नै दरशन कारन जाना। बैठि पीर हठ कियो महाना।
यांते दरशन सभि को भयो। अलप रूप सुंदर गुरु थियो ॥ ३५ ॥
शाह भीख सों मिलि सिख सारे। 'धंन पीर जी' कहति निहारे।
सभि को दरशन तुम करिवाइव। भा उतसाह सिक्ख हरखाइव ॥ ३६ ॥
श्री गुर को अंतर ले गए। पुन सिख निज निज सदन सिधए।
तबहि पीर जी खाना खायो। पुरवि कामना ते हरखायो ॥ ३७ ॥
हुते मुरीद सु बूझनि लागे। 'घटी जु लई पीर जी आगे।
नहीं गुरु कहु अरपनि करे। कारज कौन इनहुं ते सरे ॥ ३८ ॥
जिम ले गए तथा ले आए। बाद[1] क्रिती इह परहि लखाए।
इह हम को कुल परहि न चीने। क्यों धरि हाथ अगारी कीने' ॥ ३९ ॥
शाहु भीख ने सुनति बखाना। 'इह अवतरिओ पुरख महाना।
तुरकनि तेज मिटावनि कारन। अपनि पंथ जग महिं बिसतारनि ॥ ४० ॥
मैं कीनसि इह मन के साथ। धरहिं जि द्वै पर दोनहुं हाथ।
हिंदू तुरक रहैं जग दोऊ। उपजहिं पंथ राज ले सोऊ ॥ ४१ ॥
जे इक पर निज हाथ धरंते। जग महिं तौ नहिं तुरक रहंते।
इस प्रीछा[2] करिबे हित आयो। हुतो संदेह रिदे बिनसायो' ॥ ४२ ॥
इम कहि शाह भीख हरखाइ। हटि मग गमन्यों पुरि निकसाइ।
सने सने आयो निज देश। सिमरति रिदे खुदाइ हमेश ॥ ४३ ॥

दोहरा

बडी आरबल होइ जबि, बिहसहिं बोलहिं बैन।
तबि जाचौं मैं जाचना सतिगुर को पिखि नैन ॥ ४४ ॥

चौपई

मूरति मुदित उदति जन इंदु[3]। बंदनीय जग पिता मनिंद[4]।
अति उदार अति योधा गाढो। अति सुशील अतिशै बल आढो[5] ॥ ४५ ॥
लखहिं भविक्खत[6] चलित उदारे[7]। करम अमानुख[8] रण बिसतारे।
करति प्रतीखन भीख बहोरी। पुन दरशन दरसहुं इस ठौरी ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे '**भीख शाह दरशन प्रसंग**' बरननं नाम खोड़समो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. व्यर्थ 2. परीक्षा 3. आनन्ददायक मूर्ति है, मानो चाँद उदय हुआ है 4. जगत पिता, गुरु तेग बहादुर की भांति वंदनीय 5. बल का आश्रय 6. भविष्य के ज्ञाता 7. उदार चरित्र वाले 8. जो मनुष्य से संभव न हो

अंशु १७

बाल बैस बिलास प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार करि दरस को सैंद भीख सुख पाइ ।
देश आपने को हट्यो सतिगुर चरन मनाइ ॥ १ ॥

सवैया

श्री गुर सुंदर सूरत मोहति, मूरति माधुरी पूरति[1] सारी ।
रेशम डोर बधी पलना[2] संग दास झुलावति ऐंचि अगारी ।
मंदहि मंद[3] अनंद उमंगति अंग उतंग करैं दुति भारी ।
मानहुं संघर के करिबे हित सूचत हैं उतसाहु बिथारी ॥ २ ॥

द्वैपद सुंदर ज्यों अरबिंद सु दासनि ब्रिंद को आनंद दानी ।
कोमल लाल अकार लघू अंगुरी इकसार सभैं दुति सानी ।
चिकवन[4] चारु सु रंगि सु गोल दिपैं नख[5], जान कही कवि बानी ।
फूल बधूप कि ऊपर ज्यों[6] अति उज्जल हीरनि पंगति ठानी ॥ ३ ॥

कूरम[7] पीठ मनिंद दुऊ पद बीच ते ऊरध कोमल एडी[8] ।
किंचत आक्रित है गुलफान[9] के मांसल जांघ सजैं कद जेडी[10] ।
अपर को उछरंति सु नूपर यौं रुणकंति भए छबि मेडी[11] ।
मानहु महातम को उचरैं धरि ध्यान हरैं बिपता बड केडी[12] ॥ ४ ॥

झीन झगा पहिरैं तन मैं गर बाघनखा[13] मढि कंचन[14] ते ।
चारु बिलोचन साथ बिलोकति भूप करे जिन रंकनि ते ।
सीस पै केस सचिकवंन[15] श्याम मुलाइम जे मखतूलन[16] ते ॥ ५ ॥

---

1. मिठास से पूरित 2. पालना 3. धीरे धीरे 4. चिकने 5. गोल नाखून चमकते हैं 6. जिस तरह गुल दुपहिरी के फूल पर 7. कछुए की पीठ 8. एड़ी 9. पैर का जोड़-गट्टा 10. जितनी 11. छवि से मिली हुई 12. चाहे कितनी बड़ी ही क्यों न हो 13. शेर के नाखून 14. सोने से मढ़े हुए 15. चिकने 16. रेशम से भी मुलायम

श्री गुजरी बडभग भरी तट[1] बैठि बिलोकति नंदन को।
बोलति है बतरावन को[2] सुत लालति है[3] अभिनंदन को।
मात दिशा पिखि कै मुसकावति राखहि धरम जु हिंदूनि को[4] ।
अंक बिठाइ दुलारति है कबि सुंदर श्री जगवंदन को।। ६।।

केतिक मास बितीत भए सुत को सुख देखति श्री गुजरी।
गोबिंद नाम समान[5] सरूप तिनो पिखि ज्यों जसुधा गूजरी[6] ।
देख प्रतक्ख्य प्रताप महां तिन शत्रूनि कै सिर क्या गुज़री[7] ।
गौरवता गिर सी जिनकी अबि रंचक भी न, सभी गुज़री[8] ।। ७।।
मोद उदै थित गोद मैं बैठति फेर प्रयंक पै बैठनि लागे।
हाथनि को धरि कै बल पाइ लगे सरकान[9] कछू कबि आगे।
दंद उगे जुग सुंदर सोहति ओठीन साथ महांदुति जागे।
मानो प्रवाल के संपट मैं इह हीर सरेख पयूख मैं पागे[10] ।। ८।।

किलकंति हसति बिलोकति है, चलि रिंगण अंगण मैं फिर आवैं[11] ।
गुलकारि गुलाब गलीचन पै[12] पद ऐंचति नूपर को रुणकावैं।
अति चंचलता जुग लोचनि बीच प्रताप भयों बिधि यौ दरसावैं।
जनु उज्जल पात्र बिलौर बिखै बहु निरमल रंग पर्यो झलकावै।। ९।।

दास अदाइब साथ रहैं पिखि तौर अजाइब साहिब केरा।
देखति बोलति हैं जिसकी दिशि जोरति हाथ थिरैं तिस बेरा।
कौन करै प्रतिकूल किसी बिधि, हैं अनुसारि जथा रुख हेरा[13] ।
सेवक सेवति त्रास धरैं गुरदेव अतेव प्रताप उचेरा।। १०।।

केस अशेश सचिकवन, मेचक, कुचत, कोमल सुंदर सारे[14] ।
गुंदन कीनि सुधारि भले मखतूल[15] मिले जनु पंनग बारे[16] ।
कंचन चारु जराब जर्यो मुकतावल हीरे अनेक प्रकारे।
शोभति है सिरफूल[17] मनो रवि की रसमा परवारिति तारे[18] ।। ११।।

---

1. पास बैठकर 2. बातें करवाने के लिए 3. बच्चे को लाड़-लड़ाती है 4. जो हिंदुओं के धर्म की रक्षा करेंगे 5. कृष्ण जी के नाम के समान 6. इधर माता गुजरी है और उधर यशोधरा है 7. क्या बीती 8. सारी बीत गई 9. सरकने लगे 10. दांत मानो गिरी के डिब्बे में अमृत से भीगे हीरे थे 11. रींगकर आंगन में फिर आते हैं 12. जिन गालीचों पर गुलाब के फूल बने हुए थे 13. जैसे रुख देखते हैं 14. सारे केश बहुत चिकने, काले, काले, कुंडल वाले, कोमल तथा सुंदर हैं 15. रेशम 16. मानो सांपों के बच्चे हैं 17. सिर का एक गोल आभूषण 18. सूरज की किरणों से बींधे हुए तारे

कंध, उतंग बिलंद भुजा दिढ, कंकन कंचन के खचि हीरे।
किंकनि[1] बाजत है चलते, उतलावति रिन्नण हैं कबि धीरे[2]।
बैठति हैं सभि की दिशि हेरति प्रेरति दासनि को हित धीरे[3]।
शारत साथ बतावति हैं करिवावति सो बिधि आपने तीरे[4] ॥ १२ ॥

श्री गुजरी बडभाग भरी निज पान ते खान रु पान करावै।
देखि महां उचता सुत की मुख तेज सुभाइक ही दिपतावै।
होइ बडो पुरशोतम पूत सपूत जथा गुर के घर भावै।
भांति अनेकनि की रछ्छ ठानति जो जग रच्छक नित्य कहावै ॥ १३ ॥
प्रेम करै नित छेम चहै सुत, पालति लालत है बहु बारी[5]।
अंग शनान कराइ बिधान सों[6] सूंघति भाल ज्यों आनंद बारी[7] ॥ १४ ॥
दधि ओदन को अचवाइ भले अनमोदन नंदन मात करे[8]।
बहु चंचलता जुति आवति जाति इते उत होवति आन थिरे।
किलकंति, हंसति, हसावति औरनि भावति ही दुख दोख हरे।
शुभ शोभ धरे परयंक चरे, कबि फेर फिरे निज खेल ढरे[9] ॥ १५ ॥

इस रीति बितीत भए दिन केतिक पाइन मैं तब्रि जोर भर्यो।
हुइ आप खरे अवलंब बिना[10] चरणांबुज चाइ अगारी धर्यो।
इम जानि तिखान[11] इनाम के हेतु गडीरण[12] सुंदर एक धर्यो।
अरप्यो करि बंदन ठानि मनोरथ पूरन सो ततकाल कर्यो ॥ १६ ॥

हाथ गडीरन पै धरि कै पद मंद ही मंद उठावनि लागे।
सुंदर श्री मुख ते बिकसावति शोभति दंत अमी जनु पागे।
चंचल चारु बिलोचन ते चितवंत चहूंदिशि राग बिरागे।
बालिक बै बपु क्रीड़ति हैं इम अंञण[13] मैं बिहरै[14] चलि आगे ॥ १७ ॥

कबित्त

कोमल सुरंग पग चीकने रुचिर नख गोल हैं अकार इकसार सु प्रकाशते।
इंदरा के मंदर पै सुंदर सुधार मानो हीरन की पंकती सची है दुतिरासते[15]।

---

1. तागड़ी 2. कभी तेज़ी से रींगते हैं, कभी धीरे से 3. दूध के लिए 4. अपने पास 5. अपने हाथ से पानी लेकर गुरु जी का सुंदर मुंह धोती है 6. विधि अनुसार 7. जैसे आनंद की वाटिका होती हैं 8. माता बच्चे से लाड़ करती है 9 चक्कर लगाते हुए अपने खेल में मस्त हैं 10. बिना सहारे अपने आप खड़े हो हो जाते हैं 11. बढ़ई ने 12. बच्चों को चलाने वाली गाड़ी 13. आंगन 14. बिचरते हैं 15. बहुत शोभा वाली

क्रांति रूप लच्छमी सुलच्छन को बास नितु सिक्खन के मन मधु ब्रिंद जहां बासते।
देख पाप नासते, लुभावति हुलासते सु ग्यान लेनि व्रासते न छोरै पास दासते ॥ १८ ॥

दोऊ पद ऊपर बिराजैं चारु नूपर अनूप छबि रूप की निरूपनि करैं सु कौन।
गमने शबद करै कट छुद्रघटका[1] है जाहर जवाहर ते जोति जगमगै जौन[2]।
झीनो गर पीरो चीर दीपति शरीर शुभ कंकन जराऊ लघु राजति हैं हाथ दौन।
आइ मौन तौन समैं कामना को मौनकरे नमो औन ठानति ही गौनते हैं पाप तौन[3] ॥ १९ ॥

कोऊ कोऊ बाक लगे बोलन अमोल छबि तोतरे परम प्रिया माधुरी रसाल करि।
बनक धनीन की अनेक आइं भारजा दुलारति हैं आरजा[4] सनेह को बिसाल करि।
जैसी धारि कामना को आई गुरु धाम बिखै, तैसे ही बुलावति हैं बारबार ख्याल करि।

काहूंको उताल करि बोलति निहाल करि, काहूं देहिं टाल करि ईत ऊत चाल करि ॥ २० ॥
बचन अमोघ[5] ज्यों सरोघ[6] रामचंद हाथ तजें[7] ब्रह्म असत्र को सुधारै निज काज को।
तैसे बर स्राप को उचारैं तातकाल होति जिस पै प्रसंन देति सकल समाज को।
काहूं पर क्रोध करि नासते बिभूत[8] घर, फैल्यो जसु पूत[9] पुरि हेरि हेरि साज को[10]।
राखै हिंद लाज को, उठावैं खल राज को, फिरावैं सीस ताज को, निवारैं

सभि पाज को ॥ २१ ॥

कीरती महान भई मालती समान सारे, नारी नर बदन बखानते मिलति हैं[11]।
'मूरति पवित्र सतिगुरु के सपुत्र भयो, श्री मुखों उचारते बचित्र सो फलति[12] हैं।
कांहू तन रोग, काहू सुख केन भोग होति, जाचे बर जोग[13] निज सोग को दलति हैं।
क्रिपा सों ढुलति है, बिहिसकै बुलति हैं, अनंद उगलति हैं, अनूप यौं चलित हैं' ॥ २२ ॥

सवैया

खेलिबे कारन सुंदर खेलने[14] ल्याइ खरीद सु मोल वडेरे।
जो धनवाननि की जुवती[15] पहिरे नव भूखन चीर अछेरे।
आवति हैं बड चाव भरी उचवाइ उपाइनि ब्रिंद अगेरे।
मोदक आदिक मोद सों लै चहुं कोद ते होति बिनोद घनेरे ॥ २३ ॥

---

1. तागड़ी 2. जिनकी 3. उस समय जब कोई दास कामना धारण करके घर में आता है, तो धरती पर नमस्कार करते ही उसके पापों का नाश हो जाता है 4. श्रेष्ठ (गुरु जी को) 5. अचूक 6. संपूर्ण बान 7. जैसे रामचन्द्र ने छोड़े थे 8. घर की विभूति 9. पवित्र यश 10. नगर के लोग साज सामान को देखते हैं 11. स्त्री-पुरुष मिलते जुलते बातें करते हैं 12. जो कुछ कहते हैं, वह फलीभूत होता है 13. योग्य वरदान मांग कर 14. खिलौने 15. स्त्रियां (अमीरों की)

श्री गुजरी ढिग आनि धरैं, परि पाइन बेनति ठानति हैं।
दीन बनैं जुग हाथनि बंदति 'मात सुनो तुम जानति हैं।
श्री गुरदेव को सिक्खय सदा हम, आन नहीं किस मानति हैं।
साहिबज़ादे ते हुइ अहिलाद कों जाचना आनि बखानति हैं।। २४।।

को सुत चाहति, को सुख चाहति, को बित चाहति, को रुजदाहति[1]।
को द्विज आवति, बाहज[2] आवति, बैस[3] बिलोकति, शूद्र उमाहति।
हिंदुनि ब्रिंद वधी शरधा[4], तुरकान कितै गुरभाव निबाहति[5]।
हाथनि जोर निहोरति हैं गुर तेग बहादुर नंद सराहति।। २५।।

कबित्त

कोऊ सिख आपने मैं चाहति प्रसंन गुर, देहि धन लेहि मोल पंछी जाति जाति के।
सारका[6], सु कोकला उदार म्रिदु भाशणी[7], अनेक कीर[8], पारावत रंग[9]
भांति भांति के।
तीतर, चकोर चारु,दासतां हज़ार लाल[10] पिंजरे मझार पाइ धरे पांति पांति[11] के।
गुन को सुनावैं दिखरावैं सो लरावैं बहु बिजै हार पावैं नख चोंच घात घात के[12]।। २६।।

कौतक अनेक ते सदीन माथ टेकते, प्रसंनता के हेत सतिगुरु को रिझावई।
बिहसैं बिबेक निधि[13] बाकको बखानि देति जैसे करि कामना को सेवक सु आवई।
परचैं बिहंग संग अंग रंग रंग हूं को, बोलैं बहु ढंग के उतंग उडवावई[14]।
अपर घनीन के सपूत आइ खेलैं गन साथ के न त्यागि सकैं महां सुख पावई।। २७।।
रंगदार पंगती मतंग[15] बहु भांति हूं के सुंदर तुरंग ज्यों अनंग कारीगर के[16]।
तिनो पै सऊर असि सिपर तुपक धरि संमुख टिकावैं जिम बीर ह्वैं संघर के[17]।
डोरे अरु पालकी सु बीजने[18] अनेक भांति शेर म्रिग कूकर लै आवैं प्रेम करिके।
खेलैं बीच घरके मिले समीप गुर के अदाब साथ लरके[19] सु बोलैं त्रास धरि के।। २८।।
बोलति अचूक बाक जा ते होति राव रांक,[20] सुनैं अरु देखैं पतीआइ बिसमावई।
पटने नगर बाग, बीथका[21] बगर[22] बीच सगरो उजागर सुजस प्रगटावई।

---

1. कोई रोग दूर करवाना चाहता है 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. हिन्दुओं की बहुत श्रद्धा बढी 5. कहीं पर तुर्कों के प्रेम को भी निभाते हैं 6. मैना 7. मीठे बोल वाली 8. अनेक तोते 9. कबूतर 10. बुलबुल 11. पंक्तियां बनाकर 12. मार मार कर 13. अर्थात् गुरु जी 14. ऊंचा उड़ाते हैं 15 हाथियों की पंक्ति 16. मानो कामदेव रूपी कारीगर ने बनाए 17. युद्ध करके 18. पंखे 19. लड़के 20. राजाओं से कंगाल और कंगालों से राजा 21. गलियां 22. आंगन

शरधा बधावैं, सत्तिनाम गुन गावैं, दोऊ लोक सुख पावैं, सिक्खी भाव निबहावईं।
पूरन दरसु आदि[1] दास अप्रमाद सभि[2] दरस बिलोकिबे को मिले मेल आवईं ॥ २९ ॥
गिलम गलीचे गुलकारीनि फरश नीचे, सुदर प्रयंक तिन ऊपर डसावते।
बिसद बिछौना पय फेन सम लौना[3] म्रिदु सेजबंद गुंफे जरीदार लरकावते।
भूखन नवीन चीर पहिरे सरीर धीर हीरे मुकतानि जुति बैठि दीपतावते।
चंद्रमा बदन, बाक सुधा को सदनबर, मानो उडगन आस पास मैं सुहावते ॥ ३० ॥
हाथ चौर चौरीदार चारों ओर चारु ढोरि[4], चलति सुहावै जनु, शोभा राजहंस की।
मातुल क्रिपालु को क्रिपाल बैठ्यो ढिग आइ[5], गावते शबद को रबाबी राग अंस की।
संगति उपाइन को ल्याइ ल्याइ पाइ तट अरपैं[6] अनेक, कहैं शारदा प्रशंश की।
होति अरदास सिख बैठे आस पास बहु परम प्रकाशता है सोढी अवितंश[7] की ॥ ३१ ॥
ऐसे सभि पुरि मैं बिदति भए घर घर, होइ पूरी कामना अनेक मानवान की[8]।
सुनि सुनि कीरति बिशाल बिसतीरता को[9] धारि धारि चौंप जे बधूनि धनवान[10]की।
कोऊ बर लैबे, कोऊ दरस दिखैबे हेतु, पैवे मनु कामना समूह सुखदान की।
डगर डगर[11] आइ बगर[12] बजार हूं ते सगरे नगर भई महिमा महान की ॥ ३२ ॥
ऐसे भीर होनि लागी द्यौस प्रति जानी चित,बलजुति भए पद पंकज पलाइ जाति[13]।
घिरे न रहति धनी बधूनि के पास पुन इते उत बिचरति ख्याल ते टलाइ जाति।
खेलैं संग बालके, न बोलैं संग बाल[14] केकि अंक मैं क्रिपालके बिसाल उतलाइ[15] जात।
अंङण[16] मैं धाइ जाति,मात गोद आइ जाति,सभै बिगसाइ जाति,मोद उपजाइ जाति॥३३॥
सतिगुर नानक प्रमेशर की जोति भए जाहर जहान मैं अनेक नर तारे हैं।

1. पूर्णिमा और अमावस 2. नम्रता वाले दास 3. दूध की झाग की भांति सफेद 4. सुंदर चौर झुलाते हैं 5. कृपालु गुरु जी के मामा कृपाल जी पास आकर बैठते हैं 6. चरणों के पास अर्पण करते हैं 7. शिरोमणि सोढी जी की 8. मनुष्यों की 9. बहुत फैली हुई कीर्ति 10. अमीरों की पत्नियां 11. रास्ते रास्ते 12. आंगन 13. दौड़ने भागने लगे हैं 14. स्त्रियों से नहीं बोलते 15. अधीरता से 16. आँगन

सिद्ध साध पीर मीर करामात बिखै धीर, सभी पर छायो जसु जैसे चंद तारे हैं।
तिनों पीछे होति आए गुरु मन भाए सभि, अरे जे अगारी से हंकारी गिर तारे हैं[1]।
गादी के उचित अबि धरम सथित हेतु दासनि को पारिबे को एही अवतारे हैं[2] ॥ ३४ ॥
केई केई[3] लोक परलोक अभिलाखी हुते, ऐसे ई संभावना करति हैं दरस कै।
हिंदू कि तुरक बिना तरक गुरु को रूप देखे त्रिपतावै सिर न्यावति हरश कै[4]।
जानैं अति ऊचे जांके पार न पहुंचे कोइ, सूचे[5] है बिकारन ते सकै न परस कै।
सभि ते अलेप सभि ब्यापक, न आदि अंत सदा भगवंत देत ऐश जे अरश कै[6] ॥ ३५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे '**बालबैस बिलास** प्रसंग' बरननं नाम सपत दशमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1. पर्वत जैसे अचल अहंकारियों का उद्धार किया है 2. दासों को तारने के लिए इन्होंने अवतार लिया है 3. कई कई 4. प्रसन्न होकर 5. पवित्र 6. स्वर्गीय सुख देते हैं

अंशु १८

बाल लील्हा प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरु बालिक लील्हा कीनि ।
शाहुनि के सुत अनिक ही मिलि खेल्हिं सुख लीन ।। १ ।।

कबित्त

केई धनवान के सपूत आइ खेलैं तबि बैस मैं बडेरे कुछ भाव बहु धारिईं ।
भनै हाथ जोरि जोरि लोरिकै[1] निहोर करि 'निकटि हमारो नाग तरु बिसतारईं[2] ।
नाना रंग फूल हैं सु आलबाल मूल हैं[3] सिकंध[4] झुक झूल हैं फले सुफल भारईं[5] !
अलप, बिसाल, पीत, सबज, सु लाल दल[6] मानो घन घटा घने संघने कसारईं[7] ।। २ ।।

जामन जुगल[8], बट, पीपर[9], खजूर तुंग, बद्दरी अनेक झुरी भार ने बिसालकी ।
दाड़म, नुरंगी, बीजपुर[10] ते सुपारी बहु खारक[11] खरे हैं खरी खिरनी सुडालकी[12] ।
आड़ू, अमरूद, कदलीन के बगीचे बडे फैल रहे, फालसे फले है फल जाल[13] की ।
छबि आलबाल की, उदालक[14] रसाल[15] की सरल तरु[16] ताल[17] की हिंताल की[18]
तमाल की ।। ३ ।।

सरु एकसार खरे हरे हरे पात जरे, देखे मन हरे जहां शोभा रेल झेल[19] हैं ।
सेवती[20] को सेवतिसु मालीमाल मालती को चंपक[21] ते चौप होति, राजैं गनएल[22] हैं ।

---

1. चाट कर 2. वृक्ष फैले हुए हैं 3. वृक्षों के मूल के इर्द गिर्द दौर हैं 4. बड़ी टहनियां 5. फलों फूलो से लदे भारी हो रहे हैं 6. लाल पत्ते 7. घने और एक सार 8. दो प्रकार के जामुन 9. पीपल 10. नींबू 11. छुव्वारे 12. टहनियों के साथ खिर्नियां लगी है 13. बहुत अधिक 14. लेसुए 15. आम 16. चील का वृक्ष 17. ताड़ का वृक्ष 18. बहुत छोटे आकार की जंगली खजूर 19. रेल पेल 20. एक प्रकार का गुलाब 21. चंपक वृक्ष 22. इलाइची

सुंदर गुलाब हैं, अजाब सीचे आब हैं उदै सु आफताब हैं खिलति चटवेल है[1]।
रायवेल फैल है, सुरस नालकेल है[2] चंबेली नागबेल है. गुरु जी ! तहां खेल है[3] ॥ ४ ॥
शाहु धनवान के सपूत यों बखानै नित, चित हित ठानि कै सू बुझैं मात जाइकै ।
'गमनैं गे[4] उपबन देखि आवें ततछिन, लेहिं संग बालकनि एही दे दिखाइकै' ।
जानि कै सपूत को सु हठ बाग जानिबे को आनंद मगन भई आन को बिहाइ कै[5] ।
प्रेम को बधाइ कै सो हाथ को लगाइ कै पलोसति सु भाइ कै[6] मनति समुझाइ कै ।। ५ ।।
'गए बिन रहो जिन' बैन मेरो मानो इम, मातुल को लेहु संग दासनिके ब्रिंदको' ।
'काहूं की न लागै डीठ[8]' तोरै त्रिण डारै पीठराई लौन वारति[9], निहारति मुकंदको ।
ले चल्यो त्रिपालु को त्रिपाल ह्वै प्रसंन मन[10] बीथका की उपमा बढावति बिलंद को ।
मानो लोक हाथजोरि बंदैतिस राशि ओर जामैं उदै होति पूज्य दुतिआ के चंदको[11] ॥६॥

सवैया

'श्री गुरु तेग बहादर नंदन बंदन बदन जोग, निकंदन पीरा[12] ।
बाक फुरै जिस रीत करै[13], सभि सिद्ध धरैं, धरनी जिम धीरा' ।
देखति लोक अशेख कहैं, इम जाति चले सुनते निज तीरा ।
बाल बिनोद चलें चहुं कोद बिराजति ज्यों बिच कंचन हीरा[14] । ७ ॥

दोहरा

बालिक तन श्री सतिगुरु बालिक ब्रिंद क्रिपाल[15] ।
जाइ प्रवेशे बाग मैं बिगसति मोद बिसाल ॥ ८ ॥

कबित्त

चारु तरु फूल रहे छाया अनकूल रहे, मूल द्रिढ़ झूल रहे[16] नीके आलबाल रहे[17] ।
दीपति कदंब रहे, बेल को अलंब रहे[18], मिले नित अंब[19] रहे, रस मैं रसाल रहे ।
चंपक चमक रहे, गंध मैं रमक[20] रहे, धार फूल माल रहे, दल चलचाल रहे[21]
तुंग ह्वै बिसाले रहे ॥ ९ ॥

मानो काम बागवान गुरु सनमान हेतु दल फल फूल ते बसंत बगरायो[22] है ।
सुंदर बिहंग रंग रंक के उतंग बैठि, भौरि समभौर भूर भौर ते भ्रमायो[23] है ।
कूजति अनेक जनु पूजति सुवाक कहि[24], धूजति हैं पंखनि[25] अनंद उमगायो है ।

---

1 सुंदर गुलाब पानी द्वारा सिंचित सूरज के चढ़ने पर खूब खिलते हैं 2. रस वाले नारियल 3. गुरु जी ! वहाँ पर खेलेंगे 4. गुरु जी जाने के लिए कहते हैं 5. दूसरे संकल्पों को भुलाकर 6. प्रेम सहित 7. यदि (मेरी बात नहीं मानो) 8. किसी की नज़र न लग जाए 9. नमक न्योछावर करती है 10. मामा कृपाल जी प्रसन्न मन से कृपालु गुरु जी को ले चले 11. लोग गुरु जी रूपी द्वितीय के चांद को, जिधर भी वे जाते हैं, उधर ही नमस्कार करते हैं 12. ये वाक्य लोग कहते हैं 13. अर्थात् जिस तरह कह दे 14. जैसे सोने में हीरा जड़ा हो 15. बहुत से बालक तथा मामा कृपालु चंद जी 16. वृक्ष मूल से झूल रहे हैं 17. भली भांति लपेट रहे है 18. बेलें जिसके आश्रय रहती हैं 19. पानी (से मिले रहते हैं) 20. चमक रहे हैं-झूल रहे हैं 21. साथ पत्ते भी हिल रहे हैं 22. खिला है 23. पानी के भंवर की भांति सवेर से ही भंवरे घूम रहे हैं 24. मानो पत्ते गीत गाकर गुरु जी की स्तुति कर रहे हैं 25. पंखों को हिलाते हैं

मोरन को शोर ज़ोर कीरनि[1] की भीर गन, पोतक कपोत[2] सारकान[3] ते सुहायो है ।।१०।।
जानी मालाकार[4] गुरु बाग के मझार आयो हरख उदार ते पधारि मिल्यो जाइ कै ।
पावन अनूप महां सुंदर सरूप हेरि हाथ जोरि बंदना करी है सीस नाइ कै ।
बाग के रसाल फल, फूलन की माला कल, डाली[5] को बिसाल ही बनाइ धरी ल्याइ क ।
महां गुन गाइकै बिलोकै नैन लाइ कै, रह्यो बिसंम पाइ कै सु मन बिरमाइ कै ।। ११ ।।
मातुल क्रिपाल ने दरब दीनि माली कर[6], माला को उचाइ गुरु गरे पहिराई है ।
बालिक बुलाए फल सगरे लुटाए तिनै, लूटति बिलोकति प्रसंनता बधाई है ।
बिकसें बदन बर सुखमा सदन हूं[7] ते, सुंदर रदन[8] कुंद बिसदता पाई है ।
चारों ओर चारु बाग चातुरी सोभाग जुति हेर्यो अनुराग करि महां छबि छाई है।। १२ ।।
और नाना भांति साथ क्रीड़ा कीन प्रभू नाथ बालिक पलावते पलाइ चलें पाइ[9] ते ।
खेलें हुलसाइ कहूं, बैठे जल थाइ कहूं, चलति फुहारे कहूं सोहैं समुदाइ ते ।
पान पग पंकज ते पानी रोक राखें कहूं, केतिक तरोवर अरुढें उतलाइते ।
सोहै बन नंदन मनिंद, सुर ब्रिंद सिस, इन्द्र बाल बैस बिखै बिजरें सुभाइते[10] ।। १३ ।।
बीत्यो जबै एक जाम, क्रीड़ ते आराम बिखै[11], पठ्यो दास मात ने सु आयो उतलाइ कै ।
हाथ जोरि कह्यो 'हेरै जननी तुमारी दिशि धीर न धरति राखै द्वारे नैन लाइ कै ।
बाग देखि लीनि अरु खेलिबो बिशेश कीनि गमनो निकेत अबि हरख उपाइ कै' ।
सुनि कै क्रिपाल नै भन्यों 'सु चिरकाल भयो, चलो बाल बोल लेहु[12] देखैं पुनि आइकै' ।। १४ ।।
बालिक हकारे आइ मिले गुर तीर सारे, संग परवारे सु पधारे घर ओर को ।
भूखन रुचिर रंग रंग के पहिरि पट, कोऊ चले मंद, को दिखावत हैं दौर को ।
कोऊ फूल सीस धरि, पातन बजावैं कर[13], बोलति परसपर जाति करि शोर को ।
बडे भाग वारे, गुरु पग अनुराग वारे, हेरि हेरि बारे मन चारु काम कोर को[14]' ।।१५।।

सवैया

बीथका आवति देखति मानव, सीस निवाइ निहोरति हैं ।

---

1. तोतों की भीड़ 2. कबूतर 3. मैना पक्षी 4. माली ने जान लिया 5. फल—फूल की भेंट 6. माली के हाथ में धन दिया 7. शोभा का घर रूपी मुखड़ा 8. आपके सुंदर दांतों से फूलदान के फूलों ने सुन्दरता प्राप्त की है 9. पैरों से 10. बाग, इन्द्र के बाग की भांति सुशोभित होता है और मानो गुरु जी बालक इन्द्र के रूप में विचर रहे हैं 11. बाग में खेलते समय 12. बालकों को लिवा लो 13. हाथों से पत्ते बजाते हैं 14. देख देख कर मन में करोड़ों काम सुन्दरता को न्योछावर करते हैं

सुंदरता जनु पान करे अनमेख बिलोचन[1] जोरति हैं।
डीठ परै जहिं लौ गुरु रूप, नहीं तबि लौ मुख मोरति हैं।
पूरनमा जन चंद अनंद चकोर मनिंद सु लोरति हैं॥ १६॥

धाम गए अभिराम गुरु सुत देखनि को उतकंठति माई।
धेनु महां लघु ज्यों बछ को बिछुरे न थिरे अति ह्वै अकुलाई[2]।
द्वार बिलोचन संमुख ते मुख नंदन देखति ही हरखाई।
धीर ते बैठ्यो गयो न तहां, उठि शीघ्र उछंग मैं लेनि को आई॥ १७॥

गोद लिये उर मोद भयो चहुंकोद बिनोदति बाल महां[3]।
'मात जी! माथ टिके पग पैं', इक बार ही बाक समूह कहा।
आशिख दे सुख साथ भरी, सुखमा[4] गल फूल सु माल रहा।
सूंघति भाल बिसाल मनोहर जोगी जिसै बिच धयान लहा॥ १८॥

श्री गुर नानक को धरि ध्यान दुऊ कर जोरि कै बंदन गाई।
भ्रात क्रिपाल सों बात कही 'करिवाउ तिहावल को समुदाई'।
तात सु पूछनि बात लगी 'कस बाग पिख्यो, किम खेल मचाई'?
सुंदरता तरु ब्रिंद फुहारनि श्री गुरु गोबिंद सिंह सुनाई॥ १९॥

भूखन चीर महां धन को निज नंद निछावर को करि माई[5]।
देति गरीबनि को बुलिवाइ असीस को पाइ रिदे हरखाई।
आपने भाग सराहति उत्तम, दीन दुनी महिं हौं अधिकाई।
कीनि बडो उतसाह भले, नर आइ मिले गुर को समुदाई॥ २०॥

मेवड़े भेजि सभै सिख के घर लीने हकार सुने चलि आए।
चार घटी दिन शेख रह्यो सभि संगति मेल भयो समुदाए।
भेट जथा शकती सभि ले करि बालिक ब्रिद्ध मिले हरखाए।
होनि बिलोचन को सुफले करि यौं दरसैं निधि रूप को पाए[6]॥ २१॥

श्री गुर तेज अमेज हुए[7] परयंक की पीठ बिराजति हैं।
सूरज बाल उदै[8] गिर पै, तम मोह पिखै जिस भाजति है।

---

1. एक टक ध्यान लगाते हैं 2. जैसे गाय छोटे बछड़े से बिछुड़ कर व्याकुल होती है 3. बालक अति प्रसन्न हैं 4. सुशोभित हो रही है 5. माता अपने बेटे पर से गहने, कपड़े और धन न्योछावर करती है 6. इस तरह रूप को देखते हैं कि मानो निधि प्राप्त हुई है 7. तेजस्वी बनकर 8. चढ़ता हुआ सूरज

दासन अंबक अंबुज कानन मोद तिनै उपराजति हैं[1]।
बाद करैं गनचोर निशाचर, देखि दुरैं बहु लाजति है[2] ॥ २२ ॥

होति अनेकनि की अरदास उपाइन सुंदर आनति हैं।
हाथनि जोरि निहोरति सेवक, बंदनि सीस ते ठानति है।
भीर भरी बहु सिक्खयनि की शरधा उर धारि सु मानति हैं।
बैठि गए परवार करे, कोऊ ठाढे पिखैं, अघ हानति हैं ॥ २३ ॥

रास[3] तिहावल आइ गयो धरिवाइ भले अरदास कराई।
श्री गुरु नानक आदि जिते सभिहूनि के नाम लै ध्यान धराई।
देति प्रशाद कर्यो अहिलाद म्रियाद समेत सदा जिम भाई।
जो मन भावति सो तबि पावति आवति जाति मिले समुदाई ॥ २४ ॥

संगति मैं बरतावनि कीनि सभै सिख लेति अनंद भए हैं।
आनन पावन को करि[4] पावन श्री गुर पावन ध्यान लए हैं।
श्री गुजरी तबि द्वै कर जोरि, अराधि मनोरथ ऐसि ठए हैं।
मो सुत के सरि रच्छक होवहु आनंद देहु बिलंद नए हैं ॥ २५ ॥

श्री गुजरी अरु श्री गुरु को अभिबंदन कै निज धाम गए।
जाति प्रशंशति सुंदर सूरति मूरति मानहुं अनंद किए।
सीत प्रशाद प्रशाद धरे घर आपनि मैं सभिहूंन दए।
कीरत को बिसतीरति हैं इह रूप अनूप मनोग[5] थिए ॥ २६ ॥

दोहरा

प्रथम दिवस उपबन गए जननी मोद महांन।
कर्यो अधिक उतसाहु को धरि सतिगुर को ध्यान ॥ २७ ॥
परी निसा करि असन को पौढि गए सुख मांहि।
भोर भई जागे प्रभू नर नाहनि के नाह[6] ॥ २८ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'बाल लील्हा प्रसंग'** बरननं नाम अशट दसमो अंशु ॥ १८ ॥

---

1. दासों के नेत्र रूपी कँवलों के वन को आनन्द प्रदान करते हैं 2. चोरों और उल्लूओं की आशा को निष्फल करते हैं 3. बहुत सा कड़ाह प्रसाद 4. मुंह में डालकर मुंह को पवित्र किया 5. सुन्दर 6. राजाओं के राजा

अंशु १९

बालक बैस खेल प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरु खिलति बहिर निकसंति ।
बालिक ब्रिंदनि के सहति धावति गहि बिकसंति ।। १ ।।

सवैया

इक द्योस लिए, संग बालिक ब्रिंदन मात की आइस ते हरखाए ।
'मिल मातुल संग सु गंग नदी तट आज चलैं जल को दरसाए ।
निकसे निज धाम गुरु अभिराम सु कामना जाचक की पुरवाए[1]' ।
मुख सुंदर ते बच बोलति हैं जनु फूल झरैं हुलसैं समुदाए ।। २ ।।
बीथका मैं बहु बालिक भाव ते क्रीड़त जाति सुहावति हैं ।
देखति सेवक कै नर आनि प्रभाव ते सीस निवावति हैं ।
आपस मैं मिलि कै पुरि के नर कीरति ब्रिंद सुनावति हैं ।
'दीसति हैं लघु रूप गुरु तऊ तेज बिसाल दिपावति हैं' ।। ३ ।।

सवैया

श्री गुर तेग बहादर नंदन वंदन जोग निकंदन पीरा ।
बाक फुरै कहिं जांहि सुभाइक रंक ते राव करैं गज कीरा[2] ।
भूखन सुंदर सूरति है जनु मूरत है इस बीर सधीरा[3] ।
जाति चले तबि आइ गयो सलिता गन के जुति गंग को तीरा[4] ।। ४ ।।
सलिता गन को दरिआउ महां गुर आगम को लखि होति उछाला ।
तरनी पर जाइ बिराज गए इत ते उत हेरति साथ क्रिपाला[5] ।
जल चाहति है छुहिबे पग पंकज, पै असमंजस ऊच बिसाला ।
उछरंति कछू न परंतु लगे सभि पापनि हंत महंत उजाला[6] ।। ५ ।।

---

1. याचना करने वाले की कामना पूरी करते हैं 2. गरीब से अमीर और कीड़े से हाथी बना देते हैं 3. वीर रस सहित धैर्य की मूर्ति हैं 4. गंगा का किनारा 5. मामा कृपाल चंद जी 6. पानी कुछ उछलता है पर फिर भी पापों का नाश करने वाले गुरु जी के चरणों को स्पर्श नहीं करता,

मातुल गोद मैं मोद भरे जल कोद[1] बिलोक करी चतुराई।
द्वै चरणांबुज को[2] तबि हूं तरनी तट जंघ तरे लरकाई।
मूरत धारि पखारति है, मुद धारति हैं लहि कै जलराई[3]।
पाप अनेकनि के हरता इह मंगल के करता समुदाई ॥ ६ ॥

दोहरा

अपर नहीं अविलोकते इक श्री गुर दरसाइं।
पर अरबिंद पखारि कै जल मैं गयो समाइ[4] ॥ ७ ॥

सवैया

दीनि मलाह को दान महां, कहि बाक तिसे तरनी चलिवाई।
नीर गंभीर मैं जाइ फिरी तब्रि, बेग के साथ ही शीघ्र धवाई।
ले कबि जाति परे नवका, कबि ल्यावति बेग ते बार लगाई।
फांदति हैं कबि फेर चढ़ें, सिस दौरति हैं किलकैं बिगसाई ॥ ८ ॥
जल के तट क्रीड़ति हैं मुद सों कर पंकज को निज पंक धसावें[5]।
गन लोक बिलोकनि हेतु खरे कर जोरति दूर ते सीस निवावैं।
दरसैं, परसैं, हरखैं उर मैं बहु भाव धरे गुन भाखि सुनावैं।
'गुर तेग बहादर के इह नंदन, जागति ज़ाहरी जोति' जनावैं ॥ ९ ॥
जुति चंचलता चितवंति चहूं दिशि मान रखैं करि चातुरताई।
गन मानव मैं अस नांहि कोऊ, जिसकी दिशि को नहि डीठ लगाई[6]।
बहु बालिक मैं मिलि खेलति हैं म्रिदु माधुरी पै छबि छाई।
करि बंदन कीरति गावति जाति अलौकिक रीति पुनीत सुहाई ॥ १० ॥
जाचक जाचना जोइ करै सुनि तांहू क्रिपाल दिखावति हैं।
खेलति बीत गयो इक जाम महां अभिराम सुहावति हैं।
श्री गुजरी तबि दास पठ्यो 'कहु जाइ चलो सु बुलावति हैं'।
हाथनि जोर करी बिनती 'प्रभु जू ! जननि उतलावति हैं' ॥ ११ ॥
मातुल लालति चालति हैं बच पालति हैं जिम भाख सुनावैं।
सेवक केर सिकंध अरुढि पिखैं पुरि बीथका ते हुलसावैं।
तांहि पलाइ फंधावति हैं उछलंति उतंग तुरंग ज्यों जावै।
धाम बरे सुखधाम प्रभू जिस नाम जपे जन मोख को पावैं ॥ १२ ॥
श्री गुजरी उठि गोद लिए, मन मोद किये सुत लालति है।
सूंघति माथ पलोसति हाथ, सनेह के साथ निहालति[7] है।

---

1. तरफ 2. दोनों चरण कमलों को 3. जल का देवता वरुण 4. अर्थात् वरुण देवता जल में समा गया 5. अपने हाथ रूपी कँवल को कीचड़ में धंसा देते हैं 6. सारे लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं जिसकी ओर न देखा हो 7. प्यार सहित देखती है

'भा चिरकाल लिए गन बाल नदी जहिं जाल ही चालति है ।
नीक न सो[1], रमनीक रहो घर खेलहु' सीख सिखालति है ॥ १३ ॥

मात सों बात कहैं जुति चाउ 'अरुढि भए नवका पर जाई ।
केवट नीर गंभीर बिखै पहुंचाइ महां बल धारि धवाई[2] ।
दूर गयो पुन ल्यावति भा बड बेग धरे इह भांति भ्रमाई ।
मंदिर, तीर महीरहु थीरु, खरी नर भीर मनो सु फिराई[3]' ॥ १४ ॥

म्रिदु बोलति, डोलति कुंडल स्रोन, कपोलन झाल परै इस[4] भांती ।
जनु पूरन शरद चंद[5] बिखै बर मीन फिरै सुखमा बिगसाती ।
विगसै सुनि बाति रिदै हरखाति बिलोकति मात महां उमगाती ।
जनु साधन साधति को दुखदे तिह सिद्ध मिली हुइ सीतल छाती ॥ १५ ॥

रैन परी करि भोजन ऐन[6], पियो पय[7], सैन करी सुख पाए ।
भोर भई तजि नींद उठें, करि सौच शनान प्रयंक सुहाए ।
सुंदर चीर बिभूखन कंचन मोल वडे[8] जननी पहिराए ।
शाहु धनीन के आइ सपूत नमो करि होंहि मिलें समुदाए ॥ १६ ॥

भांति अनेकनि खेलनि खेलति बोलति डोलति मंदिर माँही ।
एक ब्रिधा घर पास परोसन जाइ खिझावति है घर तांही ।
आंख बचाइ उचाइ लिजावति कातनी[9] तूल रु सूत[10] जि पाही ।
सो अविलोक सकोप उठै गहि छठक[11] हाथ परै पिछवाही ॥ १७ ॥

आइ समीप, पलाइ चलें तबि, ज्यों मिलिकै नहिं छूवन पावें ।
दूर न जाति नजीक रहैं, इम जानति—मैं ग़हिलेऊं पलावें ।
नूपर किंकनी कंकन कंचन भूखन ए सभि नाद उठावें ।
धाइ इतै उत जाइं जितै कित, तांहि गतागति[12] धारि भ्रमावें ॥ १८ ॥

'जांहि कहां, गहि कै तुझ को तुव मात के पास में देउं गहाई ।
छूछक दै अपने कर की, हतवाउं भले सभि[13] बात सुनाई ।

1. यह अच्छा नहीं था 2. बड़े जोर से दौड़ाई 3. किनारे वाले मन्दिर, वृक्ष, पुरुषों की भीड़—सभी मानो उलटे हुए दिखते हैं 4. कानों में डाल रखे कुंडलों का प्रकाश गालों पर पड़ता है 5. मानो सरद ऋतु के पूर्ण चन्द्रमा की भांति 6. घर में 7. दूध पिया 8. काफी कीमती 9. पिटारी (सूत आदि रखने की) 10. पूनियां तथा कता हुआ सूत 11. पतली सोटी 12. आगे बढ़ कर पीछे हटना और बल पेच खाकर पकड़े न जाना 13. भली भांति पिटाई करवाऊंगी

रे सुन गोबिंद ! जाहु अबै टरि, मोहि को श्रम करैं अकुलाई[1] ।
हाथ ते डारि उताइल देवहु[2] नांहि त मैं कहि हौं घर जाई ॥ १९ ॥
तांहि खिझाइ भजाइ स्रमावहिं फेर बखेरति सूत रु पूणी ।
बीनति सो, तबि जाइ मिलैं जहिं बालकि ब्रिंदन खेल सलूणी[3] ।
तूल रु तार जथा बिगरे तिम हाथ धरे हूइ कोप ते ऊणी[4] ।
श्री गुजरी ढिग तीर दिखावति बात सुनाइ सुनावति दूणी[5] ॥ २० ॥
'लेहु बिलोक सु नंदन की करतूत करी घर धूंम उतारे[6] ।
बैठनि देति न कातन देति, सु लेति उठाइ बिना ही निहारे ।
फेंकति दूर, बिखेरति है, तजि दौरति है, कुकरी बिसतारे[7] ।
हाथ न आवति, मोहि भ्रमावति, मैं स्रम पाइ करी है पुकारे' ॥ २१ ॥
श्री गुजरी सुनि पुत्र की बारता चंचलता जिन में अधिकाई ।
जाइ अकावति संझ सवेर ब्रिधा बिन जोर बडी अकुलाई ।
ठानि क्रिपा धन दीनि कछू सभि चीर सरीर के दीनि बनाई ।
'मो सुत जो अपराध करै मन मैं नहिं आनहुं कोप सु माई' ॥ २२ ॥
'मैं न करो रिस को कबि तां पर, मो ग्रहि खेलनि रोज सिधावै ।
बालिक संग लिजाइ प्रवेशहि ले वसतू निज हाथ बगावै ।
गैल परों तबि भाज चलै, जबि मौन करों बहु भांति खिझावै ।
अंतर मैं जबि बाहर भाजति, बाहर मैं तबि अंतर धावै ॥ २३ ॥
देखि बिलोचनि होति हरो मन, तो सुत जीवहु लाख बरीसा[8] ।
आइ बसे जबि के इस थान भयो सुख मो कहु, ओट गिरीसा[9] ।
छादन भोजन पावति हौं हरखावति देति बिसाल असीसा ।
मो उर को प्रिय लागति है मणि ज्यों अवलोक अशोक अहीशा[10] ॥ २४ ॥
कोठन पै घर भूम बिखै बहु धूम करी, चलि आज मैं आई ।
तो सुत होइ सुचेत गयो, इस हेतु जनावनि को बिरमाई[11] ।
नांहि त आवति जाति हमेश ही मैं बिगसौं पिखि क्रीड़न ताई[12] ।
आप बसो सुख सों, सुत जीवहु थीवहु कामन ज्यों मन भाई[13]' ॥ २५ ॥

---

1. मुझे व्याकुल करके थका दिया है 2. थका दें 3. सुन्दर 4. क्रोध से आतुर होकर 5. दुगनी 6. घर में ऊधम मचाया है 7. बखेर कर 8. लाखों वर्ष 9. सुमेरु जैसी ओट 10. जैसे शेषनाग मणि को देखकर प्रसन्न होता है 11. खुशी से बताने के लिए आई हूं 12. कौतुक 13. जैसे मनचाही भावना पूरी हो

श्री गुजरी को प्रसंन कियो इम, सो गमनी अपने घर को।
पौर मैं आवति भेट भई पुनि लागि डरावनि श्री गुर को।
'तो जननी ढिग मैं बरनी जिम धूम करी तजि कै डर को।
छूछक मारहिगी अबि जाहु तूं, फेर नहीं कबिहूं करि को[1]' ॥ २६ ॥
देखि त्रिधा भजि दूर भए निज धाम मैं जाइ प्रवेश कियो।
मात ने गोद लियो भरि मोद सरीर लगी रजु रंग भयो[2]।
पोंछति आपने लै कर चीर, जिसी कहु दीरघ भाग थियो।
नंदन श्री सुखकंद बिलोकि बिलंद सनेह अछेह ठयो[3] ॥ २७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'बालक बंस खेल प्रसंग'** बरननं नाम उनीसमों अंशु ॥ १९ ॥

---

1. फिर कभी मत करना 2. धूली शोभा दे रही है 3. एक रस हुआ

अंशु २०

बाल लील्हा प्रसंग

दोहरा

खान पान करि सतिगुरु सुठ प्रयंक पर सैन ।
सुख सों सकल बिताइ कै उठे मिटी जबि रैन ॥ १ ॥

सवैया

सोच शनान जथावत कीनसि बालिक शाहुनि के पुन आए ।
कै मन भावति भोजन[1] को मिलि आपस मैं शुभ खेल मचाए ।
एक हुतो सिस, बाक कह्यो तिस 'श्री गुरु जी ! सलिता समुदाए ।
आपने धाम की कीनि तरी अभिलाख जथा बिचरैं सभि थांए ॥ २ ॥

मोपित भी चहि कै सु भन्यो—पद पंकज आपनि देहु छुहाए ।
खेल करैं जल बीच फिरैं नवका सु तरैं बहु दूर भजाए' ।
यौं सुनि कै सभि बाल भनैं, 'गुर जी चलिये इह नीक बताए' ।
बूझि कै मातु,क्रिपाल को संग लै, गौन कर्यो दरिआवन थाएं[2] ॥ ३ ॥

सेवक संग अनेक समेत बिबेक के सागर जाति भए ।
शाहु ने आनि प्रशादि धर्यो अरदास करी बरताइ दए ।
श्री पद पंकज चारु उठाइ टिकाइ भले नवका पै थिए[3] ।
बैठि चलावति भे जल मैं मुद होति उदोति समूह लिए ॥ ४ ॥

तीर तजे तरनी तर कै जल मांहि चली गुरवाक उचारे ।
'द्वै दिन मैं नवका हमरी हुइ[4] तां पर बैठि तरैं बिच धारे' ।
शाहु कह्यो कर जोरि तबै, 'इह आपकी है लिहु संझ सकारे' ।
सूयकै और प्रसंग चलाइ हैं, जाति तरी जल जाल मझारे[5] ॥ ५ ॥

---

1. मन इच्छित फल 2. नदी की ओर 3. नाव पर स्थित किए 4. कुछ दिनों तक हमारी अपनी किश्ती बन जाएगी 5. बहुत से जल में

सोरठा

तरी तरी संग और, तरातरी तरि, तरि उतरि ।
नर बर सुर सिरमौर बारि बारि बर बारि बरि[1] ॥ ६ ॥

सवैया

खेलति हैं जल को छिरकावति छींटनि ते छुकरानि[2] लरावैं ।
एक पलाइ चलैं इक सामुहि, एव भिरैं अखीआंनि मुंदावैं ।
जोर ते फैंकति हैं कर सों, इक हाथनि सों करि ओट बचावैं ।
प्रेरति हैं बहु हेरति हैं मुख टेरति हैं उमगैं बिगसावैं ॥ ७ ॥

देति दिलेर दुहूं दिशि दौरति, बोरति बारि ते[3] बारिक सारे ।
मेचक केस म्रिदू बिथरे मुख पैं उपमां कवि यौं मन धारे ।
पंकज पैं गन पंनग छौननि हैं लपटे हित अंम्रत कारे[4] ।
हेइ हला, जल डारति हैं तबि हाथनि के करि कै पिचकारे ॥ ८ ॥

कौतुक भांति अनेकनि के करि ब्रिंद अनंद भरे लरका ।
मंजुल अंजुल को जल सों भरि उज्जल जाल सुरंसरि का[5] ।
मज्जन कीनि लिए पट ऊपर, फेर चले मग जो घर का ।
बोलति बाल बिलोकति डोलति बीच सरूप शुभै हरिका[6] ॥ ९ ॥

यौं बहु भांति बिलासति को दिन, एक समैं मिलि कै तरुनी[7] ।
आवति भी गन अंबर सों[8], घन अंबर मैं तड़िता बरनी[9] ।
सुंदर मंदिर श्री गुर के बर अंदर आंख मनो हरनी[10] ।
मात पैं जाति भई हरखाति सु टेकति माथ धनी घरनी[11] ॥ १० ॥

श्री गुजरी ढिग ह्वै परवारति चारु उपाइन ब्रिंद चढाई ।
आइसु पाइ कै बैठि गई गुर की गन कीरति भाखि सुनाई ।
'हैं हम सेवक, भाउ धरैं नित, आस करे उर बांछति पाई ।
पावन पावनि[12] को सिमरैं हम, दीन दुनी महिं जानि सहाई' ॥ ११ ॥

एक बडो धनवान हुतो तिस शाहु की नारि बधू निज ल्याई ।

---

1 मनुष्यों में से श्रेष्ठ गुरु जी की किश्ती दूसरी किश्तियों के साथ दौड़ी 2. छोकरों को लड़ाते हैं 3. पानी से सारे बालक भीगोते हैं 4. मानों काले सांपों के बच्चे अमृत के लिए लिपटे हुए हैं 5. गंगा का जल 6. गुरु जी का 7. स्त्रियाँ 8. पोशाकों सहित 9. मानो बादलों में बिजली 10. हिरन जैसी आंखें 11. अमीर स्त्रियां 12 पवित्र चरण

संग सुता अरु और हितू जन ब्रिंद दिरानि जिठानि मिलाई ।
साथ शरीकनि लै सगरी गूरु ते निज पौत्र को लेवनि आई ।
भांति अनेकनि के पकवान सुधा सम स्वादति आनन पाई[1] ।। १२ ।।

श्री गुजरी निज सेवक भेजि कै खेलति आपने पास बुलाए ।
बालिक शाहुनि के संग ले सम गोबिंद के[2] गुर गोबिंद आए,
अंक बिहीन मयंक[3] बन्यों मुख, मात के अंक मों बैठि सुहाए ।
ज्यों अदिती[4] करि प्रेम महां सुत बावन को दुलराइ बिठाए ।। १३ ।।

हेरति ही ततकाल त्रिया गन साथ अदाब्र के हाथनि बंदे[5] ।
मान महां महिमां गुर की, पद पंकज सीस निवाइ सु बंदे[6] ।
लोचन लाभ बिलोकति रूप जिसी प्रभु के सभि है नर ब्रंदे[7] ।। १४ ।।

'शाहु महां धनवावनि की इहु नारि अहैं सुत ! तेरी है संगति ।
भाउ करैं गुर के सिख ए सभि धारि रिदे अनुराग उमंगति ।
आन की सेव न ठानति हैं मन कामन को तुम ते नित मंगति ।
आनि उपाइन को अरपैं जसु गावति हैं अपनी बिच पंगति' ।। १५ ।।

यौं रुख मात को जानि त्रिया—अनुकूल सु आपने है मन भाई ।
द्वै कर जोरि करी बिनती 'शरनागति अपकी ए सभि आई' ।
आगै बिठाइ बधू को कह्यो 'उपजै इसके सुत देहु अलाई ।
भाग महां अरु सुंदर रूप सुजान बडो जग ले बडिआई' ।। १६ ।।

यौं त्रिय भाखति, ख्याल करैं नहिं, बालिक संग ही बाक बखानै ।
हेरति टारति डीठ पनो पुन चंचलता इत ही उत ठानैं ।
बारि ही बारि समूह सु नारि उचारति हैं बिनती हितवानै ।
'बाक कहो गुर जी ! इस को उर पूरन आस करो, सभि जानै ।। १७ ।।

शाहु बडे धनवाननि की दुहिता रु बधू इह, सिक्खय तुमारे ।
संतति[8] चाहति है सभि ही पख नैहर सासुर[9] जो परवारे ।
आपके पास करै अरदास, नहीं अबि आन रह्यो उपचारे ।
दारिद जे सभि ही बसतूनि के रावर बाक उदारु बिदारे[10] ।। १८ ।।

यौं बहु बारि सु नारनि ते सुनि श्री गुर कीनि उचारन को ।

---

1. जिनको मुंह में डालने से स्वाद आता है 2. कृष्ण जी की भांति गुरु गोबिंद सिंह जी आए हैं 3. दाग़ रहित 4. बावन अवतार की माता 5. सत्कार सहित हाथ जोड़े 6. दास 7. बंधन में नहीं डालते 8. सन्तान 9. मायके और ससुराल 10. आपके उदार वाक्य सभी दरिद्र दूर कर देते हैं

'ह्वै सुत, कै नहिं होति इसै, हम जानहिं क्या इन कारन को।
आपनै भागनि को भुगतैं जग जीव अनेक प्रकारन को।
मौन करी पुन ख्याल टलाइ छपाइ चहैं बिवहारन[1] को ॥ १९ ॥

ब्रिंद त्रिया धनवानिनि की मन जानि बिनै बहु ठानति हैं।
मात समीप महां हुइ दीन दुऊ कर बंदि बखानति हैं।
'आप क्रिपा करकै सभि रीति कहावहु जो हम मानति[2] हैं।
तात के पास ते आस पुरावहु दासन भाउ पछानति हैं' ॥ २० ॥

यौं हठ नारनि को मन जानि कै पै अनुकूल सु मात पछानी।
बोलति भे तबि बाक उताइल 'जे तुम कामना यौं मन ठानी।
तौ सुनि लेहु सभै तरुनी इन के तरनी इक चारु महानी।
सो हमको अरपो कहि कै[3], सुत होवनि भी भनि हौं पुन बानी' ॥ २१ ॥

श्री गुर बालिक रूप मुखांबुज सुंदर ते सुनि सुंदर बानी।
एक ही बारि हसी सभि सुंदरि[4],'आछी कहो तुम आछी बखानी।
जो नवका इनके अति उत्तम, सो लिहु आप पिखो मुद मानी[5]।
रावर के सभि दीने पदारथ होहिं सकारथ यौ हम जानी ॥ २२ ॥

श्री जननी तुम जामन होवहु जौ लगि देति नहीं तहीं तरनी।
सो हम ने अरपी मन ते, बर देहु अबै सुत ह्वै तरुनी[6]।
सिक्ख्यनि के अविलंब दुलोक, पिखैं नहिं आदिक बैतरनी[7]।
धंन गुरु तुम जां उपदेशति भौजल ते सु तरै तरनी[8] ॥ २३ ॥

सुंदर हाथ छ्री पतरी सुनि कै सभि रीतनि की बिनती।
श्री गुर ऊचे उचाइ भुजा निज लावति भे करि कै गिनती।
पंच प्रहार करे तिस के सिर, बाक कहे सगरी सुनती।
'एक दु तीन रु चारु सु पंचहि होहिंगे पूत' खुशी तिन ती[9] ॥ २४ ॥

कबित्त

सोढि बंस चँद को सु बाक होनि नंद के,
दिवय्याजे[10] अनंद के, सुने सु ब्रिंद भामनी[11]।
बाल मारतंड की रशम[12] ज्यों प्रकाश करैं,

---

1. इस व्यवहार को छिपाना चाहते हैं 2. जो मन्नत हम मानती हैं 3. इनके पास जो एक सुन्दर किश्ती है, वह हमें दे दीजिए 4. स्त्रियां 5. प्रसन्न होकर 6. स्त्री को वेटा हो 7. नरक की वैतरणी नदी 8. भक्ति रूपी किश्ती लेकर भय सागर से पार हो जाता है 9. उन स्त्रियों को खुशी हुई 10. देने वाले (आनन्द के) 11. स्त्रियों ने 12. सूरज की किरण

बदन सरोज बिगसाए [illegible] गामनी[1] ।
हस्स हस्स परैं कर जोरैं भाउ
धरैं उर अधिक प्रसंना उपावैं सभि कामनी ।
जानै लघु बैस मैं प्रभाउ है बिशेश अति-
बारि बारि बंदना करति दुति दामनी[2] ॥ २५ ॥

अनिक प्रकार की प्रशंशा को प्रकाश करि
प्रमुदा प्रमोद पाइ गमनी निकेत को[3] ।
सगरो प्रसंग कहि अपने भातार ढिग
'दीजै जाइ नौका करि पूरन संकेत[4] को' ।
सुनि कै प्रसंन शाहु कहै, 'गुरु धंन धंन'
आयो उतलावति बिलोक्यो सुख हेत[5] को ।
'सुंदर बरन की है कारन, तरनि आप तरनी
सू लेहु, देति सदा भव सेतु को[6] ॥ २६ ॥

दोहरा

नमो ठानि नवका दई शाहु गयो हरखाइ ।
समै पाइ तिसकै सदन पुत्र भए सुखदाइ ॥ २७ ॥

चौपई

इम श्री गुर को सुजसु अपारा । कहति सुनति पुरि बहु बिसतारा ।
सिक्खय अनेक होहिं मन नीवें । करहिं कामना पूरन थीवें[7] ॥ २८ ॥
नित सतिगुर सुरसरि[8] के मांही । चढि नवका पर क्रीड़हिं तांही ।
जल गंभीर महिं महां भ्रमावैं । इत ते उत उत ते इत आवैं ॥ २९ ॥
शाहुनि के सपूत गन संगा । खेलहिं बिगसहिं अधिक उमंगा ।
जल क्रीड़ा को करहिं बिसाला । लघु सरुप सतिगुरु क्रिपाला ॥ ३० ॥
कितिक दिवस इस भांति बिताए । पुरि पटणे महिं जसु[9] उपजाए ।
दास भावना करहिं अनेक । पूरहिं सतिगुर जलधि बिबेक[10] ॥ ३१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे **'बाल लील्हा'** प्रसंग बरननं नाम बिसती अंशु ॥ २० ॥

---

1. स्त्रियां 2. बिजली की शोभा 3. प्रसन्नता प्राप्त करके घर को गई 4. इकरार 5. गुरु जी को 6. आप संसार रूपी सागर को पार करने के लिए पुल रूप हैं 7. आप पूर्ण करते हैं 8. गंगा नदी 9. यश 10. विवेक के समुद्र

अंशु २१
बालिक लीला प्रसंग

दोहारा

बालक बय महिं बर बहुत दीने गुरु क्रिपालु।
मन बांछति को लहति हैं जो शरधालु बिसालु ॥ १ ॥

सवैया

जे शरनागति के प्रतिपालक, भौजल तारनि को पद पोता[1]।
बाक बलि शिकरे सम[2] जो हुई दोश नसैं समुदाइ कपोता[3]।
सेवक के प्रिय देवन देव अभेव सदा गुन ग्यान को पोता[4]।
सो अबि जाहर रूप अनूप भयो गुर श्री हरि गोविंद पोता ॥ २ ॥

कबित्त

घर के शिखर इत उत मैं बिहर करि खैलैं,
संग बालिकनि गुरु एक काल मैं।
फांधति पलावति छुहावति न गात हाथ[5],
साथ साथ धावति भ्रमावति सु ढाल मैं।
अनिक बिलास कौ बिलसति है आस पास,
भूखन शबद को उठावति बिलास मैं।
राते[6] खेल ख्याल मैं, बिराजैं बाल जाल[7] में,
प्रकाशैं उडमाल मैं ज्यों चंद चारु चाल मैं[8] ॥ ३ ॥

---

1. भै सागर से पार करने के लिए चरण रूपी जहाज 2. बाज की भांति 3. दोशों के समुदाए रूपी कबूतरों की भाँति उड़ते हैं 4. ज्ञान का खज़ाना 5. शरीर को हाथ नहीं लगाने देते 6. रांते—लगे हुए 7. बहुत से 8. उसी तरह प्रकाश करते हैं, जैसे सुन्दर चांद तारों की पंक्ति में चलता हुआ प्रकाश करता है

सवैया

पटणें पुरि मैं इक आमल[1] थो तुरकेश दिलीशुर नै तहिं छोरा ।
चढि कुंज रमै तिस बीथका आवति भूर गरुर[2] सों दीरघ जोरा ।
समुदाइ ढलैत चलैं अगुवा सभि लोक निवैं पिखते कर जोरा ।
गज घंटनि की धुनि को सुनि कै तजि खेल बिलोकति भे तिसओरा ।। ४ ।।

कोठन पै थित बाल बिलोकति बीथका मैं चलि आवति सोऊ ।
कुंजर झूल सुरंग पर्यो[3], बर चूड़ चढ़ाए हैं दांतनि दोऊ[4] ।
कंचन होद कस्यो शुभ ऊपर सुंड गही बड़ श्रिखल[5] जोऊ ।
भीर अहै बहु मानव की, जिह देख सलाम करै सभि कोऊ ।। ५ ।।

कबित्त

बरजैं ग़रीबगनी[6] बोलति नकीब आवै,
कह्यो छरीदार ऊचे, हेरि लरकान को ।
'हाथ सीस धारि कै नवाब को सलाम करो,
पाछे फिर होहु खरे अदब[7] प्रमान को ।
सुनि सतिगुरु ने सिखाए, यां के समुख ह्वै,
काढ़ि काढ़ि दंतीआ चिरावो तुरकान को ।
बिक्रत बदन करि बालिक सकल तबि,
तांको दरसावति खिझावति समान को[8] ।। ६ ।।
धाइ जाइं आइं पुन, मुख दिखराइ जाइं पाइ चपलाइ[9],
समुदाइ सभि बालके ।
बाजै अंग भूखन अदूखन के संग फिरैं,
आरबला अलप फिरैया जे उताल के[10] ।
कुछु कोप ठानि कै नवाब ने बखानि कीनि,
'बानर समान सिस बदन दिखालके ।
जाहिं दुर[11] चालि के फिरहिं आल बाल के,
कपीन[12] सम ख्याल के बनति इस हाल के ।। ७ ।।

---

1. शासक 2. अहंकार 3. हाथ पर सुन्दर रंग का झोला पड़ा 4. दोनों दांतों पर सुन्दर चूड़ा चढ़ा है 5. सांकल जंजीर 6. धनी गरीबों को रोकते हैं 7. सत्कार 8. खिझाने की तरह 9. पैर चंचल करके 10. उतावलेपन से 11. छिप जाते हैं 12. बांदरों की भांति

सुनि कै नवाब ते गरूर ग़रकाब[1] ते,
बिसाल रिस आव[2] ते अंकूर स्राप जामिओ ।
बोले सतिभाइ प्रभु स्रौन मैं सुनाइ तिस,
'मानुख सरूप सभि इहां अभिरामिओ[3] ।
बदन बिलोचन[4] समान जिन वानर के,
लै है राज सोई भयो[5] रिदा तव खामिओ ।
जै है तेज थारो, कोई ह्वै न रखवारो,
तबि हौरो होइ भारो बनै समो बिधि थामिओ[6] ॥ ८ ॥

दोहरा

सुनति भयो बिसमै तुरक किम बोलति इह बाल ।
जथा पीर हुई औलीआ स्रापहि रिसे बिसाल ॥ ९ ॥

सवैया

कुंजर कंध अरुढि महावत साथ नवाब कह्यो समुझाई ।
'जो मुख आवति बोलति बालिक जानैं नहीं लघुता बड़िआई ।
खाइ अहार को खेलिबो कार है और नहीं उर मैं ग़म काई ।
आप को भूर प्रताप अहै जग, सागर लौ अवनी शुभ[7] छाई ॥ १० ॥

कबित्त

ऐसे दीनि स्राप को प्रतापि रिपु खापिवे को,
जानति भविक्ख्यत में बादी तुरकान की ।
लागे सतिभाइ पुन खेलिबे को गुरु प्रभु,
क्रीड़ति अनिक रीत साथ लरकान की ।
केते धारि भावना को ल्यावै मधुरंन[8] तहिं,
सीस को निवावैं दरसावै अध हान की[9] ।
मूरति सुजान की महान् सुखदान की,
अनंद ग्यानवान की क्रिपालु मन बानकी[10] ॥ ११ ॥
सतिगुर पास ले प्रशादि अरदास करैं बंटैं बालकान,
खाइं भावना महान करि ।

---

1. अहं में गर्क 2. क्रोध रूपी जल 3. सुन्दर 4. बन्दर 5. कच्चा 6. उसी तरह का समय बनेगा 7. आप के प्रताप के कारण छाई है 8. मीठा अन्न—कड़ाह प्रसाद 9. पाप नाशक—गुरु जी 10. बान—आदत है—जिनकी कृपालू होना

देखैं सिख, मिलैं लरकान मैं परच रहैं,
खेलति अनेक रीति आवन औ जान करि।
लागै धूल अंग मैं रचे सु खेल ढंग मैं,
बिहसि निज संग मैं समूह सुख मानि करि।
पावैं जो न दान करि[1] अनिक बिधान करि[2],
मिलै प्रेम जान करि जतन न आनि करि।। १२ ।।

सवैया

होति सजोर बधै तन सुंदर बालिक एक गुलेल को ल्यायो।
आपनि हाथ धरी तबि ले करि ब्रिंद गुलेलनि ऐंचि चलायो।
हेरि प्रसंन भए तिस पै निज पास रखी मन मैं इम भायो।
लागे कमावनि ता[3] अभिआस को जास के हेतु धर्यो तन आयो।। १३ ।।

पंक मंगाइ बटाइ गुलेलनि[4] पुंज सुकाइ चलावत हैं।
लच्छ धरैं तकि तांहि करै जबि बीच हनैं बिकसावति हैं।
बालिक जे धनवाननि के तिन हाथ गहाइ सिखावति हैं।
बेणु की ब्रिंद गुलेल[5] करी दिढ़ होइ खरी सु मंगावति हैं।। १४ ।।

बाहुन मैं बल होइ बिसाल निता प्रति खैंचति यौं गहि कैं।
हाथ टिकै लछ मारनि को इम सीख को देति 'रखोचहिकैं'।
बालिक श्री मुख ते सुनि कै चित चाउ धरै गुन को लहिकै[6]।
लेति हैं मोल गुलेल भली दिढ, टोलति स्वै पित को कहिकै[7] ।।१५ ।।

सुंदर रंग सुरंग अहैं जिन, ले गुरु के ढिग आवत हैं।
'आज नवीन प्रभू हम लीनि' भनै मुख ते दिखरावति हैं।
ऐंच चलाइ गुलेलन को लच्छ ताक कै बीच लगावति हैं।
काहू सराहति 'खूब लग्यो इहु' कांहू को दाव बतावति हैं[8] ।। १६ ।।

या बिधि संग गुलेल गहे करि खेलति बालिक ब्रिंद मिले।
केतिक द्योस बितीत भयो अभिआसति भे सभि रीति भले।
भीत[9] मैं लच्छ धरैं हुइ दूर चलावति ऐंचति होइ खले।
हाथ टिकाइ लगाइ कै तां महिं हेरति प्रेरति गेरि चले।। १७ ।।

---

1. जो दान करके भी प्राप्त नहीं होती 2. अन्य विधि से भी नहीं मिलती 3. तिसके 4. मिट्टी की गोलियां सुखाकर चलाते हैं 5. बांस की कमानें 6. कमान चलाने के गुण को जानकर 7. आपने अपने पिता को कहकर 8. किसी को दाव बताते हैं 9. दीवार

दोहरा

इम खेलति सतिगुर प्रभू बालिक बैस समान ।
दिन प्रति बधै सरीर बल किधौं दुशट गन हानि[1] ॥ १८ ॥

चौपई

बडी मात जबि पिखहि सुभाउ। खेलति करै जंग को चाऊ।
रिदै बिचारै—जथा पितामा। करति क्रिया कहु तिम अभिराम ॥ १९ ॥
व्रसति चितारति पाछल बाती। श्री हरि गोबिंद जिम रिपु घाती।
सुधा सरोवर निकसे जथा। मुगलसखान सहित दल मथा ॥ २० ॥
वहिर बयाहु तनुजा कहु कीनि। लुटी वसतु धन गन ते लीन।
पुन करतार पुरे बड जंग। निकसे लाखहूं शत्रुनि भंग ॥ २१ ॥
इह भी तिन सम लीला करते। शसत्रनि गहि पिखि आनंद धरते।
होइ तरुन बहु पांइ प्रतापे। शील पितामा सम हुइ जापे[2] ॥ २२ ॥
तेज चपलता पिखि पिखि नीत। तऊ अनंदति अतिशै चीत।
चिरंकाल की चाहति पोता। पायो जनु सनेहु को पोता[3] ॥ २३ ॥
सोहति चारू चीर सरीर। ज़ेवर ज़ेब जवाहर हीर।
दिन महिं अनिक खेल बिचरंते। शाहुनि के सिस आनि मिलंते ॥ २४ ॥
होति सारबरी[4] सदन सिधावैं। मात पितन ढिग गुर गुन गावैं।
'इम हम संग बिलासति खेलति। बल को करति धकेलति मेलति ॥ २५ ॥
मधुर अचन की वसतू नाना। आनति सिक्खय करति बहुखाना।
सभि को करि हित निकटि बिठावै। कहि कहि देति हमहुं त्रिपतावै ॥ २६ ॥
इत्यादिक निज घर महिं कहैं। सुनति संबंधी आनंद लहैं।
सतिगुरु को नित मात बडेरी। गहि बिठाइ ढिग कहि बहु बेरी ॥ २७ ॥
असन अनिक भांतिनि के करि करि। पोखनि हित अचवावति धरि धरि।
चहति रिदे बलि पुशट बिसाला। बनहिं तरुन दुति देखति जाला ॥ २८ ॥
निस महिं रूचिर, पंघूरा डारहि। आसतरन सों बिसद[5] सुधारहि।
सुपतावहि निज निकटि निहारति। नुख संग गुन ब्रिंद उचारति ॥ २९ ॥
सुनि गुजरी सासू के बैन। बंदति गुरनि मूंदि करि नैन।
श्री नानक को सिमरन करहि। 'मो सुत की रच्छया नित धरहिं ॥ ३० ॥

---

1. हानि करने के लिए 2. पितामह की भांति शील स्वभाव लगता है
3. [illegible] 4. रता 5. उज्जवल

पोखनि पालनि अनिक बिधिनि ते। दूर न होवनि देति चखन ते[1]।
देखति रहै प्रेम करि भारा। जिम पंनग निज मनि संभारा[2]।। ३१ ।।
कमल बदन को प्राति पखारहि। नीर उशन[3] करि मज्जन धारहि।
रूत अनुसारी पट पहिरावहि। अनिक बरन के जथा सुहावहिं ।। ३२ ।।
हहिरहि उर महिं लगै न डीठ। लेति गोद महिं बरबस ईठ[4]।
वारति ऊपर लौने[5] सुराई। मुखते कहि 'रहिं गुरु सहाई' ।। ३३ ।।
खेलनि हेतु अंक ते दौरहिं। मिलहिं बालके हुइ इक ठौरहिं।
मात द्रिशटि महिं रखि बिचरावहि। अनिक प्रकार बरजि ठहिरावहि ।। ३४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'बालिक लीला' प्रसंग वरनंन नाम इक बिसती अंशु ।।

---

1. आंखों से दूर नहीं होने देती 2. जैसे सांप अपनी मणि को संभालता है 3. गरम पानी करके 4. जबर्दस्ती प्यारे को 5. ऊपर से नमक न्योछावर करती है

अंशु २२

श्री गुर माता जी कहनि सुननि प्रसंग

दोहरा

उत ते साहिब सतिगुरु तेग बहादर धीर।
करि कारज महिपाल को हटे संग भट भीर॥ १॥

चौपई

अनिक प्रकार गुरु की सेवा। करति भयो न्रिप जानति भेवा।
देश कामरू सर करि दीना। अधिक अनदति लशकरि पीना॥ २॥
संमत केतिक तहां बिताए। फते लेनि की बंब बजाए।
पटणे दिशि को कूच करायो। विशन सिंह राजा हरखायो॥ ३॥
संग गुरु के चह्यो पयाना। बाजहिं आगे ब्रिंद निशाना[1]।
सिवका पर श्री गुरु तेग बहादर। न्रिप कहि करि सु चढाए सादर॥ ४॥
करति मजल पर मजल[2] सदाई। चल्यो आइ लशकर समुदाई।
डेरा परहि आनि करि जहां। सुधि पसरहि गूर की जहिं कहां॥ ५॥
संगति मुदत रिदै चलि आवै। अरपि अकोरन दरशन पावै।
दरब आदि गन बसत अजाइब। हेतु रिझावनि अरपहि साहिब[3]॥ ६॥
बिनती करहिं कामना पै है। जसु को उचरति सदन सिधै है।
भए दुपहिरी डेरा घालहि। भोर होति मारग दल चालहि॥ ७॥
पाछल जाम रहे दिन थोरे। बिशन सिंह आवहि गुर ओरे।
बंदन करिह जुगल कर जोरि। बिनै बखानहि चरन निहोरि॥ ८॥
सादर सतिगुर निकटि बिठावै। क्रिपा द्रिशटि बातनि बतरावें।
अनिक बांर सिख पठे अगारी। मात नानकी प्रीति सु धारी॥ ९॥

1. नगारे 2. पड़ाव 3. श्री गुरु साहब को माता नानकी ने प्रेम करके पहले भी सिक्ख भेजे थे

बहु दिन बिते न पुत्र निहारा। बिछुरि न भयो कदापि उदारा[1]।
आवनि तीरथ हित दिशि पूरब। सुत ते बिछुरी नांहिन पूरब॥ १०॥
पौत्र प्रतीखन धारति उर मैं। बिछुरि रही, बसि पटने पुरि मैं।
अधिक सनेह मिलन कहु धरती। पाती ब्रिंद पठावनि करती॥ ११॥
बारि बारि जननी सुधि पाई। चलि श्री तेग बहादर राइ।
आवति कुशल बूझ बहु बारी। सुत की सुधि सुनि मुद धारी॥ १२॥
इम आवंति गुर पटने ओर। बिशन सिंह जुति नित उठि भोर।
मात नानकी गुजरी दोऊ। बात सुनावंहि बहु बिधि ओऊ[2]॥ १३॥
'सुनहुं पुत्र पंजाब जु देश। सतिगुर तितही बसैं विशेश।
महां जंग तुरकनि के संग। बारि बारि होए भट भंगि॥ १४॥
सोढी बंस शिरोमनि महां। रामदास गुर जसु जंहि कहां।
लवपुरि जनमे नगर बिसाल। बहुर बसे श्री गोइंदवाल॥ १५॥
प्रथम नगर तीरथ अभिराम। बिदत्यो श्री अंम्रतसर नाम।
कर्यो बसावन रचे उपाई। बडे तुमारे भे तिस थाइ॥ १६॥
बहुर पितामे भए तुमारे। जिन त लरति तुरक गन हारे।
बसे पिता के पुरि करतारे। पुनहिं बिपासा कूल निहारे॥ १७॥
सुंदर नगर बसावीन कर्यो। बड रण भयो तुरक गन मर्यो।
तिन पाछे गादी पर पोता। थिर हुइ श्री हरिराइ उदोता॥ १८॥
द्वै सुत तिन ते उपजति भए। जबहुं कितिक दीरघ बय थिए।
जेशट रामराइ तिस नामू। श्री हरि क्रिशन लघू अभिरामू॥ १९॥
जेठे कहु ढिग शाहु हकारा। करामात गन दीनि उदारा।
चाहति कहति दिलेशुर जैसे। बिलम बिहीन करतिभा तैसे॥ २०॥
श्री हरिराइ न मानी आछी। लधु सुत गुरता दे उर बाछी[3]।
कितिक मास द्वै संमत थिरे। बहुर बिकुंठ पयानो करे॥ २१॥
तिन पाछे गुरु पिता तुहारे। भए पूज बिदते जग सारे।
तऊ शरीका करि करि बादै[4]। सोढी धीरमल्ल ते आदै॥ २२॥
बसहिं बकाले ग्राम मझारा। तजि करि उतरे नदी उरारा।
कीरतिपुरि इक नगर बसाया। श्री गुरदित्ता सो तुम भाया॥ २३॥

---

1. इतना लम्बा वियोग पहले कभी न हुआ था 2. वह माता जी को बात सुनाता है 3. हृदय में चाह धारण की 4. झगड़ा करता है

तहां सदन जिन रचे रहे है। पुन परलोक पयान रहे हैं।
तबि तुमरो तहिं आइ पितामा। बसे कितिक दिन पिखि अभिरामा ॥ २४ ॥
गए बिकुंठ गुरु तन त्यागा। दीनसि तिस जागा तब दागा[1]।
हम समेत जबि पिता तुमारा। कीरति पुरि को आइ निहारा ॥ २५ ॥
सूरजमल आदिक मिलि हेरे। बासे कछुक बिचार बडेरे।
सभि ते प्रिथक बसनि हैं आछे। भ्रात शरीका बहुर न बाछे ॥ २६ ॥
ब्रिति शांतकी सुख को पावैं। हमहुं बाद किह संग न भावैं।
इम बिचारि आगे चलि गए। पंच कोस पहुंचे थिर थिए ॥ २७ ॥
ज़र खरीद तहिं कीनसि अवनी। दुहि दिशि सलिता गिर पिखि रवनी।
तहां आपनो नगर बसायो। कहि अंनद पुरि नाम सुनायो ॥ २८ ॥
केतिक चिर[2] सुख सों तहिं बासे। तीरथ करनि पुनहिं अभिलासे।
आदि प्रयाग कीनि इशनान। खशट मास बासे तिस थान ॥ २९ ॥
पुन पटणे पुरि महिं चलि आए। बसे कितिक दिन जबि इस थाएं।
करति प्रतीखनि तोहि जनम की। इहां रहनि अभिलाखा हम की ॥ ३० ॥
इक भूपति रजपूत बिसाला। देश कामरु को चलि चाला।
मंत्रनि ते करि त्रास घनेरा। आइ पर्यो शरनी तिस बेरा ॥ ३१ ॥
पूरब दिशि को पिता तुमारे। हमहु त्याग करि तबहि पधारे।
अबि आवत हैं खबर पठाई। मिलहिं काल चिर महिं हरखाई[3] ॥ ३२ ॥
इत्यादिक पौत्रे संग बाती। करति रहति सुपतहिं जबि राती[4]।
सुनि सुनि पिता पितामे कथा। नित अनंदता उदतहि तथा ॥ ३३ ॥
चंचल होइ होइ तिस बारी। दुहि मातनि[5] सों करहिं उचारी।
'अपनो देश पंजाब महाना। कहहु, कबहि तहिं करहि पयाना ॥ ३४ ॥
उत ही बसहिं अनंदति सदा। बडे बसैं जिस दिशि जद कदा।'
इस बिधि कहि कहि नित उमगावैं। 'मिलहिं पिता तबि तितहि सिधावैं ॥ ३५ ॥
कई बार परचावनि हेत। थिरतावनि निज निकटि निकेत।
देश पंजाब कथा को कहैं। मात सु दादी देखति रहैं ॥ ३६ ॥
करहिं सनेह दुलारनि घनो। क्रिशन पुत्र को जसुधा मनो।
जया जंग महि त्रास घनेरे। उचर सुनावति हैं बहु बेरे ॥ ३७ ॥

1. दाह संस्कार किया 2. समय 3. काफी समय के पश्चात अब प्रसन्न होकर मिलूंगी 4. रात को सोते समय 5. मां और दादी

*करहिं बाद तिस देश बिसाला। भयो बिखाद तहां बहु काला।
आइ देश इस महिं सुख पाए। सिख सेवक सभि थल समुदाए ॥ ३८ ॥
अनिक अकोरन को अरपंते। आइसु मानहिं जथा कहंते*।
लैबो कहां पंजाब मझारे। हे सुत ! इत दिशि बर्सहिं सुखारे ॥ ३९ ॥
इम समुझाइ बरजना करिहीं। तऊ आप बहु बारि उचरिहीं।
'तहां चलनि चित चहति हमारो। जहां बंस सोढी उजियारो' ॥ ४० ॥
इस प्रकार बहु बारि प्रसंग। होति भयो गुर जननी संग।
दिन प्रति वधहि सरीर बिसाला। खेलति बिचरति बालिक जाला ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे, 'श्री गुर माता जी कहनि सुननि' प्रसंग बरनंन नाम द्वै बिसंती अंशु ॥ २२ ॥

*जैसे हम कहते हैं

अंशु २३

पटणे प्रवेश श्री सतिगुर प्रसंग

दोहरा

करति कूच दिन प्रति मजल गुरु समेत नरेश ।
पहुंचे पटणे आनि करि भयो अनंद विशेश ॥ १ ॥

चौपई

लशकर के डेरे समुदाइ। उतरे पुरि ते बाहरि आइ ।
बिशन सिंह न्रिप उतरनि कर्यो। सतिगुर निकटि होति भा खर्यो ॥ २ ॥
'साहिबज़ादे को मैं दरशन। कर्यो चहति हौं, चरन सपरशन ।
अधिक लालसा रहि उर मेरे। प्रापत होहि मोहि इस बेरे ॥ ३ ॥
ठाढे सतिगुर नदी किनारे। सुनि नरेश ते बाक उचारे ।
'हम भी मिलहिं जाइ करि काली। इहां बितावहिं राति उजाली[1]' ॥ ४ ॥
सुध कहि पठी मात के तीर। डेरा कर्यो नदी के तीर ।
'मिलहिं प्राति को' सुनि सुधि हरखी। दरब दान का धारा बरखी ॥ ५ ॥
जाचक गन हकार करि दीनि[2]। सुत सनेह जिस के मन पीन[3] ।
ले पौत्रे को अंक, सूनावै। 'तेरो पिता भोर को आवै' ॥ ६ ॥
अति अनंद सुनि सुनि सभि कीना। सेवक सिक्ख मिले सुख पीना ।
चिरंकाल मैं हटि गुरु आए। देति बधाई मिलि समुदाए ॥ ७ ॥
उतसव करते राति बिताई। जागे पिखि प्रभाति हुई आई ।
श्री गुजरी करि नीर उशन को। पुत्र शनानहि मरदति[4] तन को ॥ ८ ॥

---

1. चाँदनी रात 2. बहुत से भिखारियों को बुलाकर दिया 3. अधिक
4. शरीर को मल मल कर

बहुर बसत्र बर बहुत बरन के[1]। पहिरावति दुति हेतु करन के[2]।
कंचन कुंडल जटति जवाहर। मुक्ता उज्जल दिपतहिं ज़ाहर[3] ॥ ९ ॥
गोल बिसाल आब[4] बड खरी। मुख मंडल पर शोभा करी।
सिर पर चीरा[5] चारू सुहावा। जिगा बंधि करि बहु दुति पावा ॥ १० ॥
लघुमाला मुकतनि की लरी[6]। लोलक[7] लटकति सबज़े ज़री[8]।
हीरे बिच[9] दमकहिं बहु मोले। दिपतहिं इत उत उर पर डोले ॥ ११ ॥
नव रतने बाहुनि बंधवाए[10]। जनु नव ग्रिह भुज सों लपटाए।
कंकन कंचन[11] दिपहिं जराऊ। जुग कर महिं सुंदर पहिराऊ ॥ १२ ॥
झीने अंबर[12] को गर जामा। परि रायहु शोभति अभिरामा।
जरीदार जिस के जुग छोर[13]। डारि सिकंध तरे को छोरि ॥ १३ ॥
इम सजाइ करि सुंदर सारे। समुझावति दे सीख उदारे।
'तोहि पिता के साथ नरेशू। ऐहै नर गन संग विशेशू ॥ १४ ॥
करि बंदन पित अंक थिरीजै। न्रिप के संग बोलिबो कीजै'।
इम घर मैं फरशादिक[15] त्यारी। करति भए परतीखन धारी ॥ १५ ॥
उत सतिगुर करि सौच शनाना। नित को नेम[16] ठानि मन धयाना।
बिशन सिंह न्रिप त्यारी कीनि। बसत्र शसत्र तन पहिर सु लीनि ॥ १६ ॥
श्री गुर तेग बाहदर पास। आइ थिर्यो करि दरशन आस।
बसत्र पहिरि गुर ह्वै करि त्यार। ढिग अनाइ शिवका असवार[17] ॥ १७ ॥
चढि तुरंग पर चालि न्रिपाला। भए सँकरे मानव नाला[18]।
पुरि बज़ार कहु आवति चले। निम्री होति ब्रिंद नर मिले ॥ १८ ॥
पटने की संगति समुदाइ। प्राप्ति होति ही मिलि इक थांइ।
श्रीगोबिद सिंह के ढिग आई। अनिक प्रकार प्रशादिनि ल्याई ॥ १९ ॥
भई भीर सभि अंङन मांहि। केतिक कोशठ पर चरि जाहिं।
भीतनि पर आरूढति कोई। बैठहिं जहां दरस गुर होई ॥ २० ॥
बोलति अग्र नकीब चलंते। दुदंभि शबद उतंग उठंते।
इम आवति गुर अरू नरमौर[19]। पहुंचे जबहिं सदन के पौर ॥ २१ ॥

---

1. बहुत रंगों के वस्त्र 2. सजाने के लिए 3. प्रत्यक्ष चमकते हैं 4. दमक-आभा 5. पगड़ी 6. मोतियों की लड़ी 7. लटक रही है 8. ज़री से ज़ड़ित 9. बीच में 10. नौ रत्ने बाहों से बांधे 11. सोने के कड़े 12. पतले कपड़े का 13. दोनों किनारे 14. कंधा 15. फरश आदि 16. नियम 17. पालकी पर सवार 18. साथ 19. गुरु जी और राजा

सभा खरी होई [illegible] [1]।
पित के पाइन पाइ उठायो। पिखे परसपर नेहु वधायो[2] ॥ २२ ॥
पूरब जनम पिता जिम भए। नाम सु मुंड मुनी तबि थिए।
दुशट दमन निज पुत्र उपायो। लाखहुं बरखन तप बल लायो ॥ २३ ॥
अंस अकाल पुरख की आइ। धर्यो सरूप तेज समुदाइ ।
सिंह खाल से[3] उतपत होवा। बनराखश को दल बल खोवा ॥ २४ ॥
तबि के बिछुरे भा अबि मेला। जनु ब्रह्म ग्यान अंनद सुहेला।
श्री नानक की जोति मझारी। श्री गुर तेग बहादर धारी ॥ २५ ॥
तिसी अंश महिं चाहति मेली[4]। देखति सुत की दुति सुख झेली।
बैठि गए तबि सतिगुर गादी। मिलि सभिहिनि के उर अहिलादी ॥ २६ ॥
बिशन सिंह न्रिप ढिग हुइ आयो। पिखि सरूप पाइनि लपटायो।
दिपहि तेज बिच लोचन ऐसे। रंग, बिलौर पात्र महिं जैसे ॥ २७ ॥
चंचल अधिक सलोनी[5] सूरति। मनहुं बीररस धारी मूरति।
कहति भयो 'इह साहिबज़ादा। रिपुगन घाइक हुई जिम दादा[6] ॥ २८ ॥
आप शांति की ब्रित्त उदारी। इह बड बीर बनहिं भुज भारी।
इन की आक्रित इम दिपतावै। सखा सहाइक अरिनि खपावै[7] ॥ २९ ॥
बिशन सिंह तबि दए बिभूखन। अपने कर पहिराइ अदूखन[8]।
कंकन कंचन जटित जराए। दोनहुं हाथनि मैं पहिराए ॥ ३० ॥
मुकता माल बिसाल उजाली। गर पहिराइ महां दुति वाली।
पशमंबर दे बरन बरन के। निज कर धरे समीप चरन के ॥ ३१ ॥
कुशल प्रशन दुइ दिशि ते होए। हेरति थिरे घेर सभि कोए।
करैं दरस को अरपि उपाइन। को ढिग पहुंचहि परसहि पाइन ॥ ३२ ॥
सतिगुर जथा जोग सतिकारे। म्रिदुल बाक ते सभि बैठारे।
जाचक गन केतिक चलि आए। जाचति ऊचे शबद सुनाए ॥ ३३ ॥
तबि न्रिप ब्रिद दरब कर धार्यो। साहिबज़ादे ऊपर वार्यो[9] ।
पुनि निज चाकर के कर दीनि। कह्यो 'खराइत करि गनदीन' ॥ ३४ ॥
इक थल खरे करे सभि मंगत। दयो दरब को थिर करि पंगति[10]।
ढाढी डोम कलावत[11] आए। भाट आदि सगरे धन पाए ॥ ३५ ॥

---

1. मामा कृपाल चंद जी ने गुरु जी को गोदी में उठा लिया 2. स्नेहु बढ़ाया 3. शेर के चर्म से 4. मिलाना चाहते हैं 5. सुन्दर 6. दादा श्री हरिगोबिन्द की भांति 7. मित्रों के सहायक और शत्रुओं का नाश करने वाले 8. अपने हाथों से गुरु जी को पहना दिए 9. हाथों से गरीबों को दो 10. पंक्ति बंधवाकर 11. कलावंत—गवैया

जै जैकार सुजसु को करैं। देखि गुरनि कहु आनन्द धरैं ।
चार घरी लगि थिर भे सारे। चहुं दिशि रहे गुरु परवारे ।। ३६ ।।
रिदै अनंदति हुइ महिपाला। करि बंदन मगन्यो तिस काला।
उचरति मग तारीफ[1] बिसाला। अपने संग जि मानव जाला ।। ३७ ।।
'धंन गुरु अरु गुरु को नंद। मैं दरशन करि भयो अनंद।
जिनकी करुना ते सर कर्यो। देश कामरु जो बहु अर्यो ।। ३८ ।।
जीव दान मोकहु गुर दीना। नतु किसने मम जीवन चीना[2]।
मिलौं शाहु सो मान समेत। ले आइसु को चलौं निकेत ।। ३९ ।।
'है इम ही' सभि मंत्री कहैं। 'तुमरे भाग बडे हम लहैं।
जिसते इस दिशि को गुर आए। काज तुहारे सभि सफलाए' ।। ४० ।।
इत्यादिक बहु जसु को कर्यो। बिशन सिंह डेरे निज थिर्यो।
तन मन ते सतिगुरु को दास। जिन त पूरन भी उर आस ।। ४१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'पटणे प्रवेश श्री सतिगुरु' प्रसंग बरनंन नाम तीन बिसती अंशु ।। २३ ।।

---

1. स्तुति 2. नहीं तो मुझे जीवित किसने देखना था

अंशु २४

श्री गुर तेग बहादर आगवन प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर थिर सभा मँहि संगति दरशन दीनि ।
अरपि उपाइन सभि मिले पूर कामना कीनि ।। १ ।।

चौपई

पुन उठि गमने ले सुत साथ । जननी निकटि गए गुरु नाथ ।
नंम्रि होइ करि सीस निवायो । पिखि नंदन द्रिग मँहि जल छायो ।। २ ।।
अधिक त्रिधा सुत प्रेम बिसाला । सुत अंगनि परसहि कर नाला ।
आशिख देति 'पुत्र तुम जीवहु । सहति अनंद बडी बय थीवहु ।। ३ ।।
सुख पावहु सभि रीति सुभाइक । श्री नानक जी सदा सहाइक ।
तबि गुजरी पहुंची कर जोरे । नम्रि होइ पति चरन निहोरे ।। ४ ।।
दासी दास नमो सभि करि कै । रहे गुरु को रूप निहरि कै ।
साहिबजादे की दिशि सारे । तिस छिन सतिगुर सहति निहारे ।। ५ ।।
बूझैं 'इतहुं पिता जी गए । किंतिक दूर लौ प्रापति भए ।
सागर बेला[1] लगि अवलोका । किधौं उर ही जावनि रोका[2] ।। ६ ।।
कौन देश हित गए लराई ? भई कि नहीं मिले रिपु आई ?
मधुर पुत्र के वाक सुहाए । सुनि सतिगुरु ब्रितांत बताए ।। ७ ।।
'देश कामरु मंत्रनि जोर । गुर के सिक्ख बसँहि तिस ठौर ।
श्री नानक पहुंचे इक काल । बाला मरदाना जुग नाल ।। ८ ।।
पुरि के वहिर गुरु टिक रहे । सिक्खी प्रगटावनि को कहे ।
त्रिखा लगी मरदाने जानी । गमन्यों पुरि हित पीवनि पानी ।। ९ ।।
तँहि मेढा करि बंधनि कीना । श्री नानक जबि ऐसे चीना ।
गए छुडावनि त्रिय उतलाई । गुर गर तागा पावनि धाई ।। १० ।।

1. समुद्र का किनारा 2. जाने से रोक लिया

ततछिन भेड़ देहि को धारा[1] दूजी[2] ने बाला सु निहारा।
तिस ढिग पहुंची सरमा बनी[3]। पिखी त्रिया आए तिन धनी[4] ॥ ११ ॥
मरदाने को मनुख बनायो। गुर प्रताप को तिन लखि पायो।
भए सिक्ख ध्रमसाला करी। भाउ प्रतीत भगति की धरी ॥ १२ ॥
तुरकनि ते मवास[5] तहिं राजा। मंत्रनि ते नर करहिं कुकाजा।
बिशन सिंह न्रिप तहां पठायो। इह डर करि हक शरनी आयो ॥ १३ ॥
गयो संग ले कारज सरे। दुहुं दिशि मेल हमहुं तिन करे।
बिशन सिंह की पत रहि आई। हटे जीत की बंब बजाई ॥ १४ ॥
सुनि हरखयो सगरो परिवार। अनिक भांति के करे अहार।
करि करि अचवावहि हरखाए। पुत्र समेत गुरु त्रिपताए ॥ १५ ॥
संगति पुरि पटणे की आवै। दरशन करि अकोर अरपावै।
गए देश जिस, बूझहिं बाती। सुनि सुनि जसु को कहिं बहु भांती ॥ १६ ॥
'तुम बिन कौन करै सर जाइ। देश कामरु मंत्रनि थांइ।
मान सिंह से मोर जहां। अपरनि[6] की गिनती कहुं कहां ॥ १७ ॥
बड़ी भीर सतगुर घर होई। आवहिं अनिक जाहिं चलि कोई।
लग्यो अंबार अकोरन केरे। जित कित मंगल वधे वधेरे[7] ॥ १८ ॥
रहनि लगे सतिगुरु निज धामू। होति कीरतन नित अभिरामू।
तीन दिवस तहिं बस्यो नरेशा। पहुंचये चहै निकटि तुरकेशा ॥ १९ ॥
आइ गुरु ढिग ग्रीव निवाई। सभि ब्रितंत कहि लीनि बिदाई।
अधिक दरब को धरि करि आगे। बिनती भनी प्रेम रस पागे ॥ २० ॥
'क्रिपा तुमारी ते जसु पायो। सुख समेत मैं सर करि आयो।
अबि तुरकेशुर निकटि सिधाऊं। मिलि करि पुन अपने घर जाऊं ॥ २१ ॥
चिरंकाल बीता तुम जानो'। सुनि सतिगुर तबि हुकम बखानो।
गमनहु जाहु देश निज फेर। सिमरहु सत्तिनाम सुख हेरि ॥ २२ ॥
बिघन परे सतिगुरु अराधहु। अनिक ब्रिधिनि की बाधा बाधहु[8]।
सुनति सीख को बंदन ठानी। बिछुरि न साकहि प्रीत महानी ॥ २३ ॥
ले आग्या को आयहु डेरे। लशकर त्यारी करि तिस बेरे।
कर्यो कूच दिल्ली दिशि गयो। मिलयो शाह घर पुन पठि दयो ॥ २४ ॥
श्री गुर तेग बहादुर तबै। उपदेशति संगति सिख सबै।
नाना करहिं कामना पूरी, सिक्खी बिसतारी गुन रूरी ॥ २५ ॥

1. उस स्त्री ने भेड़ का रूप धारण कर लिया 2. दूसरी ने 3. कुतिया बन गई 4. उनके पति 5. विद्रोही 6. दूसरों की 7. बहुत बढ़ गए 8. बाधा दूर करो

सुत को देखति अधिक अनंदाहि। जानहि इह जर तुरक निकंदाहि[1]।
मन सनेहु के सने बडेरे। करहिं बिठावनि अपने नेरे ।। २६ ।।

लीला जथा जंग की ठानैं। रचहिं भविक्खत महिं तिम जानैं।
ब्रह्म ग्यान ते उतपति होवा। मनहुं बीर रस लघु तन जोवा ।। २७ ।।

जिम दसरथ करि प्रेम बिलंदहि। देखति राम चंद निज नंदहि।
तथा दुलरति अंक बिठावै। हरि बसुदेव मनिंद सुहावै[2] ।। २८ ।।

पोखति पालति पट पहिरावहि। पहिरि विभूखन सभि मन भावहिं।
कर गुलेल ऐंचहिं करि बल को। हेरति हतहिं निशाने थल को ।। २९ ।।

बहु शाहनि के बालिक आवैं। मिलि करि तिन सों खेल मचावैं।
आधे इक दिशि ठाढे करैं। आधे लै अपने संग थिरैं ।। ३० ।।

हेला करनि मनिंद मिलंते। मारि मारि करि मनहुं लरंते।
इक गाढे[3] हुइ ठाढे रहै। बाढैं उर उतसाह जु चहैं ।। ३१ ।।

करि सनेहु गुर निकटि बुलावैं। 'अबि हूं कहां करनि रण भावै।
थिर हुइ बैठहु हमरे पास। सुनहुं करति है सिख अरदास ।। ३२ ।।

इत्यादिक कहि बाक दिलासे। कितिक समैं राखैं निज पासे।
बहुर जाइं बालिक महिं खेलहिं। रेल धकेलहिं किसहू झेलहिं[4] ।। ३३ ।।

बर्जहि विभूखन दौरति जाते। रहहिं खेल बालिक महिं राते।
सतिगुर बैठहिं. लाइ दिवान। सुधि पसरी ढिग दूर कि थान ।। ३४ ।।

पूरब ते पटणे महिं आए। सुनि सिक्ख दूर दूर ले आए।
दरशन करहिं कामना पावैं। सफल जानि भेटनि अरपावैं ।। ३५ ।।

संगति नई नितप्रति आइ। दरसहिं गुर के चरन मनाइ।
अनिक मसंद दरब ले घेन। सिक्खनि त संचहिं हित सेन ।। ३६ ।।

सो आवहिं गुर को अरपंते। रहैं निकटि को दिन दरसंते।
पुन सिरुपाउ लेति हैं गुरु ते। बिदा होइ निकसहिं तिस पुरि ते ।। ३७ ।।

आपो अपने थान पयानहिं। गुरधन को उगराहनि ठानहिं।
खशट मास कै संमत माही[5]। लेकरि दरब आइं पुन पाही ।। ३८ ।।

इस प्रकार श्री तेग बहादर। बसति भए पटणे पुरि सादर।
सिक्खी को बिसतारति महां। सत्तिनाम सिमरति जहिं कहां ।। ३९ ।।

---

1. तुर्कों की जड़ निकालेगा 2. कृष्ण और वासुदेव की भांति सुशोभित हो रहे हैं 3. तगड़े 4. किसी को धक्का देते है 5. छः महीने अथवा एक वर्ष में

मात नानकी देखि अनंदति । सुत सुत के युति लखि प्रभु बंदति[1] ।
बडे गुरू के साचे बैन । भए बिदति, अबि दिखीयति नैन ॥ ४० ॥
अनिक बिधिनि भोजन बनिवावहि । बैठि समीप जुगनि त्रिपतावहि ।
अधिक पदारथ नित प्रति आवैं । चलहि देग सभि नर गन खावैं ॥ ४१ ॥
किस बिधि कमी रहै नहिं कोई । जहिं बिसराम गुरिन कहु होइ ।
इस प्रकार बसि केतिक मास । सिख संगति की पूरी आस ॥ ४२ ॥
कितिक फकीर तीरथनि मज्जे[2] । गुर के संग फिरे अघ भज्जे[3] ।
बहुर पयाने जित चित चाही । केतिक रहे बहुर गुर पाहीं ॥ ४३ ॥
तिम केतिक सिख संग रहे हैं । केतिक घर को मिलिनि चहे हैं ।
आग्या ले प्रभु की सो गए । जनम उधारि आपनो कए ॥ ४४ ॥
केतिक नए आनि सिख रहे । गुरु को संग महां फल लहे ।
मती दास मतिवान दिवान । आमद खरच संभारनि ठानि ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गुर तेग बहादर आगवन' प्रसंग बरनंन नाम चतुर बिसती अंशु ॥ २४ ॥

---

1. पुत्र को पुत्र समझकर प्रभु को बंदना करती है 2. स्नान किया 3. पाप भाग गए

अंशु २५

श्री गुजरी सों उपदेश करनि प्रसंग

दोहरा

कितिक मास श्री सतिगुरु पटणे बिखै बिताइ।
गमनहिं अबि पंजाब को उर अभिलाख उठाइ ॥ १ ॥

चौपई

मात नानकी सों तबि कह्यो। हम प्रसथान आपनो लह्यो।
बडो देश पंजाब हमारा। त्याग्यो बीत्यो समा उदारा ॥ २ ॥
केतिक संमत इतहि बिताए। पूरब बसे अधिक सुख पाए।
अबि अनंद पुरि देखहिं जाई। जो आवति हम दियो बसाई[1] ॥ ३ ॥
तिसहि बसावनि करहिं बिसाला। नहिं देख्यो बीत्यो चिर काला।
पुरि की सार संभालहिं जाइ। इम सुनि मात द्रिगन जल आइ ॥ ४ ॥
'केतिक संमत प्रथम बिताए। बिछुरि रहे पूरब दिशि जाए।
चिरंकाल महिं दरशन दीना। अबि पुन चहहु पयानो कीना ॥ ५ ॥
देखनि को तरसति चित रहे। तुम बिन किम धीरज उर लहे।
सुनि सतिगुर म्रिदु बाक बखाने। 'हम पंजाब अबि करहिं पयाने ॥ ६ ॥
तहां बसहिं जबि केतिक काल। करहिं पठावन सुध दरहाल[2]।
इतने महिं इह साहिबज़ादा। वधहि सरीर ओज हुइ ज्यादा[3] ॥ ७ ॥
तबि ले करि निज संग सुखारे। उत को आवहु बिलम बिसारे।
इसी हेतु हम करहिं पयाना। लघु गुरु संग बसहु निज थाना ॥ ८ ॥
कहै मात उत अधिक बखेरे। अलप बैस मैं तुम जबि हेरे।
अनिक भांति उतपात बिसाले। सोढी करहिं शरीका नाले[4] ॥ ९ ॥

---

1. जिसे आते समय हमने बसाया था 2. जल्दी से 3. शरीर बढ़ेगा और बल अधिक होगा 4. साथ ही सोढी ईर्ष्या करते हैं

देखि समाज ज्वलत बहु छाती[1]। बनहिं दुखद जिमदहि अराती[2]।
जबि के इत दिशि को चलि आए। बिन उतपात बहुत सुख पाए ।। १० ।।
कहां ग्रामं अरु नगर बसावनि। करहु कहां तिन ते कुछ पावनि,[3]।
गमन करहु नहिं, मसलत मोरी। बसन भलो पूरब दिशि ओरी ।। ११ ।।
सुनि सतिगुर माता समुझाई। हुते पिता समरथ गुसाईं।
तुरकेशुर के संग बखेरा[4]। रह्यो सदीव जंग के झेरा[5] ।। १२ ।।
हम किस के संग द्वैश न धरैं। मतसर बैर अपर को करै ?
तहिं पहुंचे बिन सरै न काजू। अपनो बंस बिसाल समाजू ।। १३ ।।
तिन महिं इह[6] प्रकाश को धरै। उडगन बिखै चंद ज्यों करै।
अनिक बिधिनि के काज अशेश। करहिं तहां हुइ बैस बिसेस[7] ।। १४ ।।
इत्यादिक गुर कीनि बखान। दीनसि धीरज रिदै महान।
पुन श्री गुजरी साथ उचारा। निज सुत के रहीअहि अनुसारा ।। १५ ।।
महां पुरख को इह अवतारु। धारहि तेज प्रताप उदारु ।
मुख ते जो निकसै किस कारन। सो सभि फुरहि, न हुइ किमटारन ।। १६ ।।
जथा कहहि तिम ही तुम मानहुं। हठ बिसाल को क्यो हूं न ठानहुं।
वधहि प्रताप बिलंद समाजू। करहिं अनेक रीति के काजू ।। १७ ।।
जे न कह्यो मानहुं इन केरा। करहि बिसूरनि[8] फेर घनेरा।
गज बाजी सैना समुदाइ। इन के संग होंहि अधिकाइ ।। १८ ।।
सादर प्रतिपारनि को करीअहि। सुत के सुख सभि रीति निहरीअहि।
हमरो मेल बनै कै नांहि। किम बिसास[9] नहिं पईअहि आहि ।। १९ ।।
दूर देश को पंथ बिसाला। उलंघहुं सने सने बहु काला।
राखहु अंतर बहिर सुखारे। दूर न गमनहुं खेद न धारे[10] ।। २० ।।
जानि अपने भाग बडेरे। ऐसो पुरख भयो ग्रिह तेरे।
नई साजना अनिक सजावै। रिपुनि घने घर घालि गवावै[11] ।। २१ ।।
इत्यादिक श्री गुजरी साथ। करहिं बारता सतिगुर नाथ।
सुत महिमा सुनि कै अधिकाई। 'कंत ! गिरा सच कहति सदाई ।। २२ ।।
निशचै ऐश्वरज वधहि बिसाले। अधिक प्रतापी हुइ रिपु घाले।
अबि ही आक्रित जानी जाति। लखिय परति हुनहार जु बात ।। २३ ।।

1. साज सामान देखकर (सोढियों की) छाती जलती है 2. ऐसे दुखी होते है जैसे बड़े भारी शत्रु हो 3. उनसे क्या प्राप्त करना है 4. झगड़ा 5. झगड़ा 6. अर्थात् श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी 7. जब आयु बड़ी होगी 8. पश्चाताप करना 9. भरोसा 10. यदि दूर नहीं जाएंगे तो कोई कष्ट नहीं होगा 11. बहुत सारे शत्रुओं को मार कर खत्म कर देगा

श्री नानक की करुना महां। पिता आप के जिम बच कहा।
चहीअति हुयो भरोसा मोहि। अति प्रताप जुति सुत शुभ होहि ॥ २४ ॥
श्री नानक कीरति अभिरामू। करि है तिन को उज्जल नामू।
इह बच तुमरे पित जो कह्यो। सो निशचै मम मन बस रह्यो ॥ २५ ॥
अचल चलहि, तिन बच नहिं चलै। इम बिसवास मोहि नहिं टलै।
सुत ते अपर न मो कहु पयारों। किम करि सकि हौं कबहुं दुखारे ॥ २३ ॥
खेलति राखों निज अगुवाई। रच्छौ नैन पलक की न्याईं।
क्यों न रहौंगी मैं अनुसारी। होहि सपूत वधै भुज भारी ॥ २७ ॥
अपर बुझारत[1] कहा बुझाई। मिलिबो होइ कि नहिं किस थाइं।
ऐसो वाक कहां तुम कह्यो। सुनति चित सलिता चित बह्यो ॥ २८ ॥
पुत्र आदि जो कछू कुटंब। सभिहिनि के तुम अहो अलंब।
नहीं आसरो दूसर कोई। बाल बंस रावरि सुत जोई ॥ २९ ॥
आनि वसे परदेश मझारा। तुम को पूजति सभि संसारा।
कहां होइ गति बहुर हमारी। ब्रिधा मात बहु वनहि दुखारी ॥ ३० ॥
सदा अनंद आपके संग। देश बिदेश बिखै दुख भंग।
सुनि सतिगुर बहु दीनि दिलासा। निज नंदन पर धरि विस्वासा ॥ ३१ ॥
कवहि गुरनि ते गुरु उदारा[2]। पूजहि चरन सकल संसारा।
अलप बैस इस जानहुं मांही। शकति अधिक ते अधिक सु मांही ॥ ३२ ॥
सभि को रिज़क पुजावन हारा। इस अलंब रहिं लाख हज़ारा।
बचन कहे नविनिधि चलि आवैं। स्रापहि पतिशाहित बिनसावैं ॥ ३३ ॥

अलख अकाल पुरख भगवंतु। करै अराधनि रिदै अनंत।
क्रिपा ठानि बहु रीझे जबै। करे पठावनि इन को तबै ॥ ३४ ॥
जग महिं कारज करहिं अनेक। रहहिं अलेपे जलधि बिबेक।
इत्यादिक सभिबात सुनाई। श्री गुजरी नीके समुझाई ॥ ३५ ॥
'उचित काज करिबे हम जोइ। करहिं तथा, लिहु रिदै परोइ।
शोक न चिंता खेद न कीजै। सुत को पिखहु अनंद धरीजै ॥ ३६ ॥
तन मिथ्या निशचै सभि जानहु। किम सनेह अतिशै इन ठानहु।
बिनसनहार न थिरता पावै। आइ करोर करोरहु जावैं ॥ ३७ ॥

नदी प्रवाह जगत इह राचा। सचिदानंद आतमा साचा।
मरै न बिनसै आइ न जाइ। सदा सथिर है इक रस भाइ ॥ ३८ ॥

1. पहेली 2. बड़ा गुरु

निज सरूप को जानहि ग्यानी। इस विधि की बुधि लिहु उर ठानी।
बड़े भाग ते गुर घर मांही। मोह अपर सम राखहु नांही ॥ ३९ ॥
जो किछु होइ, मानि सभि आछे। भावी पर तरकनि नहिं बाछे।
केतिक चिर जीवहि नर कोई। अंत समैं मरि बो सभि होई ॥ ४० ॥
यांते रिदै धीर को धारि। सुत को सादर नित प्रतिपार।
हमरो मेल बने कै नांही। कीजहि नहिं सुख दुख इस मांही ॥ ४१ ॥
सुनि गुजरी निज पति की बानी। करति बिचारनि—नीक बखानी*।
तऊ सनेह द्रिगन जल छावा। कहिबे हेतु बोल नहिं आवा ॥ ४२ ॥
कंत सरीर बिलोकति रही। रुक्यो कंठ बोलति कछु नहीं।
सहिज सुभाइ गुरु चलि आए। वहिर बैठि दीवान लगाए ॥ ४३ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गुजरी सों उपदेश करनि' प्रसंग बरनंन नाम पंच बिसती अंशु ॥ २५ ॥

---

*कहीं तो सच्ची है

अंशु २६

श्री अनंदपुर आगमन प्रसंग

दोहरा

आइ पिता के ढिग थिरे श्री गोबिंद सिंह राइ।
चलनि सुन्यों पंजाब को बोले अनंद बधाइ ॥ १ ॥

चौपई

'आप पिता जी! करहु पयाना। देश पंजाब सु दूर महाना।
बास हमारे बडन बडेरे[1]। तिन ही सुन्यो महां सुख हेरे[2] ॥ २ ॥
हम को संग चलहु ले अबै। चाहति देश विलोक्यो सबै।
अपने नगर निकेत उसारे। तहां बसहिंगे सदा सुखारे ॥ ३ ॥
नहिं इस देश रहनि हम भावैं। तित ही तुमरे संग सिधावैं।
सुनि श्री तेग बहादर भाखा। 'करहिं भले पूरन अभिलाखा ॥ ४ ॥
तित ही हुइ है बसनि तुहारो। निज प्रभाव को तहां बिथारो।
सकल समाज विभूति बिसाला। करहु आपनो भलो उजाला ॥ ५ ॥
तऊ सुनो जबि समा सु आवै। तबि ही करिबो सभि को भावै।
मग महिं चलनि बिखाद बडेरा। श्रम आदिक ते सभिनि घनेरा ॥ ६ ॥
खान पान बिन समै सु होति। नित प्रति चलिबो रवी उदोत[3]।
लघु सरीर इस लायक नांही। खेलहु मिलहु बालिकनि मांही ॥ ७ ॥
मन भावति करि खानु रू पान। ब्रधैं देह बल होहि महान।
जबहि संभालहु, श्रमहि सहारो[4]। तबि इत ते उत देश पधारो ॥ ८ ॥
हम गमनहिं निज पुरि आनंद। करहिं बसावनि भले बिलंद।
पठहिं पत्रिका सकल ब्रितंत। तबि सुधि जानहु श्रेय मतंत[5] ॥ ९ ॥
सुखदा असवारी पर ह्वै कै। आवहु तित दिशि मोद उपैकै।
सुनि करि बहुर पिता संग भाखै। 'हम प्रतीखना रावर राखें ॥ १० ॥
पठहु पत्रिका तूरन जाइ। तबि इस पुरि ते चलिबो भाइ।
नतु हम तुमारे अबहि पिछारी। करि राखहिंगे सभि बिधि त्यारी ॥ ११ ॥

---

1. पूर्वज 2. सुना है वहां पर ही पूर्वजों ने बड़े सुख देखे हैं 3. चढ़े सूरज में अर्थात् धूप में 4. थकान को सहन कर लोगे 5. सुख देने वाली राय

चले आंइ बिन पाती पिखै। देश पिखिन चाहति चित बिखै।
कह्यो न तुमरो जाति मिटायो। नांहित साथ चलनि मन भायो ॥ १२ ॥
इत्यादिक सुत पित बहु बात। करति भए, गुपत जु बक्ख्यात[1]।
पुन सभि संगति संग उचारा। 'सिमरहु सत्तिनाम सुख भारा ॥ १३ ॥
बालिक गुर जबि लौ तुम पास। जाचहु पूरन कीजहि आस।
नित प्रति दरसहु पावन होवहु। बिघन अनेक रीति के खोवहु ॥ १४ ॥
कीरत करहु सुनहु अघ जै है। बसहि नाम उर मुकती ह्वै है।
जेतिक सेवा हुइ घर गुर की। करहु कामना पूरन उर की ॥ १५ ॥
सुनि मसंद युति संगति सारी। बिनती सहित सनेह उचारी।
'पूरब तुम पूरब दिशि गए। सगरे सिक्ख प्रतीखति भए ॥ १६ ॥
चिरंकाल तुम तहां बितायो। बिशन सिंह कारज सुफलायो।
थोरे मास आनि अबि रहे। तूरन जैबो पुन चित चहे ॥ १७ ॥
संगत नित प्रति दरस तुहारा। चाहति पुरि महि बास उदारा।
बड़े भाग तबि अपने जानै। रावरि निकटि बास जबि ठानै ॥ १८ ॥
सुनि सतिगुरु सगरे समुझाए। 'तन इहं बिछरनि हार सदाए।
हम सम दरशन बालिक गुर के। करहु पिछारी प्रेमी उर के' ॥ १९ ॥
इत्यादिक कहि गुर गोसाईं। भई निसा सुपते सुख पाई।
जाम रही जागे सुच करि कै। मज्जन ठानि ध्यान को धरि कै ॥ २० ॥
उद्यों सूर पहिरे पट सारे। हुतो त्यार पुन कीनि अहारे।
पुत्र अंक मैं लीनि बिठाई। करे दुलारनि प्रीति वधाई[2] ॥ २१ ॥
मात नानकी को करि बंदन। गमनि चह्यो पुन दोश निकंदन[3]।
सिख संगति सगरे मिलि आए। नमो करहि उर प्रेम उपाइ ॥ २२ ॥
घर महिं प्रविशे जबि गुर जाई। श्री गुजरी बहु बिनै सुनाई।
'आज निकटि ही कीजहि डेरा। सुत को सँग रखहु इस बेरा ॥ २३ ॥
भोर होति पुन गमहूं अगारी। आइं सदन को सकल पिछारी[4]'।
सतिगुर तबि होए असवार। मात नानकी बंदन धारि ॥ २४ ॥
बारि बारि सुत को मुख देखि। बिछुर्यौ चहै न प्रेम विशेख।
आशिख देती पौर थिरी है। चहति श्रेय, नहि अश्रु ढरी है ॥ २५ ॥
मिलनि अंत को सतिगुर जानि[5]। दरशन दे करि प्रेम महान।
गमनति गुजरी जुग कर बंदे। बंदन करति चहति सुखकंदे ॥ २६ ॥

---

1. जो गुप्त और प्रकट बातें थीं 2. बढ़ाई 3. अर्थात् श्री गुरु तेग बहादुर 4. फिर सारे अपने घर को वापिस आ जाएंगे 5. सतगुर जी जानते हैं

पुरि मैं गमने घर को त्यागा । [illegible] ।
कितिक दूर सतिगुर जबि आए । साहिबज़ादे को संग ल्याए ॥ २७ ॥
पटणा पुरि बिसाल ही बसै । धनी अनेक ब्रिदं नर लसैं ।
नगर बीच ही डेरा कीनि । सुत जुति संगति संगहि चीन ॥ २८ ॥
पीछे सिख पहुंचे समुदाइ । मिलहिं अनेक अकोरनि ल्याइ ।
बैठे सतिगुर लाइ दिवान । जथा जोग सभि संग बखानि ॥ २९ ॥
सदन जानि को सकल हटाए । निसा परी ते गुर सुपताए ।
जागे सौच शनानहि ठाने । सुत सों सभि बिधि बाक बखाने ॥ ३० ॥
कर्यो प्यार दे करि संग दास । करे पठावनि तबहि अवास ॥
बंदन ठानि पिता को गए । 'आइं तुरत हम' कहिवो किये ॥ ३१ ॥
जाइ मात सों निसा ब्रितांत । दादी सहित कीनि बक्ख्यात ।
अनिक बिधिनि के बाक बिलास । करहिं सुनावनि बैठि अवास ॥ ३२ ॥
'थोरीन दिन महिं हम गमनै हैं । जाइ देश पंजाब रहैं हैं' ।
इत्यादिक चंचलता साथ । जुग मातनि सो भाखहि नाथ[1] ॥ ३३ ॥
इति दिशि सतिगुर कीनि पयाना । सने सने करि मजल सथाना ।
कहिं लगि कहौं पंथ की कथा । डेरा करि करि कींनसि जथा ॥ ३४ ॥
जहिं निस थिरहिं सिवर को घालहिं । सुनि सुनि सिख संगति ततकालहिं ।
अरपि अकोरन अनिक प्रकारा । दरशन करहि लहहिं सुख सारा ॥ ३५ ॥
हम ही करति उलंघि मग आए । तरि जमना को अग्र सिधाए ।
सिक्खी बिसतारति जहिं कहां । सत्तिनाम उपदेशति महां ॥ ३६ ॥
रोपड़ नगर उलंघनि करि कै । कीरत पुरि पहुँचै मग चरि कै[2] ।
केतिक सिख अरु संग फकीर । देखनि 'कर्यो देश गुर धीर ॥ ३७ ॥
मतीदास इक संग दिवान । चार पंच हैं रुचिर किकान[3] ।
करति मजल दे घास निहारी[4] । दाना खाहिं चलहिं थल भारी ॥ ३८ ॥
कीरत पुरि महिं कीनसि डेरा । सूरज मल मिलि प्रेम घनेरा ।
कुशल प्रशन करि आपस मांही । तीरथ करवि कथा पुन प्राही ॥ ३९ ॥
साहिबज़ादे जनम बखाना । 'आयो चहति आपने थाना ।
हम अनंद पुरि करि कै बास । पुनहि पत्रिका पठि तिस पास ॥ ४० ॥
मात नानकी जियत' बताए । सुनि सूरजमल उर हरखाए ।
पुनि उठि श्री हरि गोबिंद थात । जाइ जोरि कर बंदन ठानि ॥ ४१ ॥

1. दोनों माताओं (मां और दादी) से सतिगुर जी ने कहा 2. रास्ता चलकर
3. सुन्दर घोड़े 4. न्यार, पशुओं का आहार

पुन श्री गुरदित्ते थल गए। नमो करति पुरी आवति भए।
निसा बसे श्री तेग बहादर। सूरज मल सेवा करि सादर ॥ ४२ ॥
पौत्र आपने आनि मिलाए। गुर बूझैं 'क्या नाम रखाए ?
'एक गुलाबराइ है नामू। श्यामदास दूसर अभिरामू ॥ ४३ ॥
तिनहुं बिभूखन सतिगुर दए। निकटि बिठाइ प्रेम को किए।
सुंदर वसत्र बहुर तिन दीनि। निज सुत सों मिलिबो इन चीनि ॥ ४४ ॥
प्राति होति मिलि सभि के साथ। चले अनंदपुरे गृर नाथ।
पंच कोस पर पहुंचे जाई। सुनति प्रजा आई अगुवाई ॥ ४५ ॥
दे करि दरबादिक आकोर। मिले सकल बंदति कर जोरि।
कुशल प्रशन गुर सभि को करैं। 'क्रिपा तुमारी ते सुख धरैं' ॥ ४६ ॥
सादर सतिगुर को ले आए। भए प्रवेश सदन महिं जाए।
अधिक अनंद अनंदपुरि होवा। नर नारिनि गन दरशन जोवा ॥ ४७ ॥
बहु पकवान बनक[1] ले आए। ह्वै अरदास बंटि समुदाए।
जथा पाइ पति को चिरकाल। हरख मानती त्रिया बिसाल[2] ॥ ४८ ॥
तिम नगरी के लोक अनंदे। सभिनि आनि गुर के पद बंदे[3]।
होइ सुचित गुर सिवर लगायो। नाना विधि अहार करिवायो ॥ ४९ ॥
खान पान करि निसा बिताए। भई प्राति जागे मजनाए।
लग्यो दिवान आइ सभि कोई। जिस जिस को जबि जबि सुधि होई ॥ ५० ॥
मिलहि आनि सिख संगति सारे। पसरि गई सुधि देश उदारे।
सुनि सुनि चले आइं समुदाए। सहित मसंद मिलहिं हरखाए ॥ ५१ ॥
श्री अंम्रितसर के चलि गए। दरब ब्रिंद को अरपति भए।
ब्रिधः[4] के बंस बिखै गुरदित्ता। आनि बाज सतिगुर को दित्ता[5] ॥ ५२ ॥
लवपुरि[6] को इक धनुख महाना। अरप्यो तरकश भरि खर बाना।
इत्यादिक बहु भेट चढाई। श्री गुर सादर लीनि बिठाई ॥ ५३ ॥
कुशल प्रशन करि सभि सतिकारे। जथा जोग कहि दयो अहारे।
काबल आदि सिक्ख समुदाए। दरब समेत मसंद सु आए ॥ ५४ ॥
कहि लौ कहौं नितप्रति आवैं। सभि देशनि महिं सुनि सुनि धावैं।
सिरोपाउ दे करहिं बिसरजन। जो जिस पुरि महिं तहि को ततछिन ॥ ५५ ॥

1. बनिया लोग 2. जिस प्रकार पत्नी काफी समय के पश्चात पति से मिलकर अत्यंत प्रसन्न होती है 3. गुरु जी के चरणों पर बन्दना की 4. बाबा बुड्ढा के वंश के 5. दिया 6. लाहौर

होति करितन लगहि दिवान। मिलि मिलि उधरे मिलि ब्रिंद जहान।
सो भी गने न जै है मो ते। आइ अनेक नए सिख होते ॥ ५७ ॥

इम सुख पाइ बितायहु काला। सुत को सिमरति गुरु क्रिपाला।
आइ आपनो नगर संभारहिं। हम जहिं जानो तहाँ सिधारहिं ॥ ५८ ॥

लिखि पत्रिका अखिल हवाल। 'पठि करि चलहु बिलम सभि टालि।
देश पंजाब आइबो करीयहि। पहुंचि अंनदपुरि अपनि संभरीयहि ॥ ५९ ॥

लेकर सिक्ख पठ्यो मग चालि। पटणे पुरि के नाम संभालि*।
सतिगुर बसे उधारहिं दास। कवि संतोख सिह बाक बिलास ॥ ६० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री अंनदपुर आगमन प्रसंग' बरननं नाम खशट विंसती अंशु ॥ २६ ॥

---

*याद करके

अंशु २७

कशमीर द्विजन प्रसंग

दोहरा

तेग बहादर सतिगुरु बसि अंनदपुरि मांहि।
समा बितावति सुख सहित दासनि श्रेय सु चाहिं ॥ १ ॥

चौपई

तुरकेशुर बहु गही कुचाली। शरा चलावति जगत बिसाली।
हिंदुनि पर बहु बल को पायो। चाहति सभ को धरम नसायो ॥ २ ॥
'सगरे नर मैं तुरक बनावौं। बहुर शर्हा[1] महिं भले चलावौं।
शर्हा बिना दोजक महिं परैं। नहिं इमान[2] को नीके धरैं ॥ ३ ॥
भयो मुहंमद पशचम देश। तित तुरकाने ओज विशेश।
कित कित हिंदु रहे निजोर[3]। तुरक करौं पूरब तिस ओर ॥ ४ ॥
उत ते होवति आवति सारे। इत के पिखि हुइं शर्हा मझारे[4]।
संग मौलवी[5] मसलत ठानी। सभिनि सराहयो 'नीक बखानी' ॥ ५ ॥
लिखि परवाते पुनहिं पठाए। प्रथम पुरी कशमीर सिधाए।
सूबा तिहठा अफकन शेर[6]। करति हुकम सों सगरे जेर[7] ॥ ६ ॥
रंक देश धन हाकम तेति। दारिद सारी प्रजा निकेत[8]।
पठ्यो शाहु को जबि परवाना। 'करहु तुरक इह देश महाना ॥ ७ ॥
धन धरनी लालच दिखराबहु[9]। बनहुं तुरक सभिहूं सुख पावहु।
सने सने मन को बिरमाइ। मुख ते माधुर बाक सुनाइ ॥ ८ ॥

---

1. मुसलमानी धर्म 2. धर्म 3. कमज़ोर 4. देख देख कर इस्लामी धर्म में आ जायेंगे 5. मुसलमानी धर्म के प्रचारक 6. वहां का सूबेदार शेर अफग़न था 7. जो सारे उसके अधीन थे 8. सारी प्रजा के घर में ग़रीबी है 9. पैसे और ज़मीन का लालच दो

बहुर ओज को दाबा देहु[1]। ज्यों क्यों करहु शर्हा महिं लेहु।
बहु जबरी नहिं जानी परै। दीजै ब्याह लालसा धरै[2]॥ ९॥
हिंदू धरम बिखै दिढ जेई। धन अरू बुधि महिं दीरघ केई।
दिज आदिक जे हैं इस देश। सने सने करि तुरक अशेश'॥ १०॥
अफकन शेर शाहु मति जानी। दिज बुलाइ गन संग बखानी।
जो बुधि महिं अरू धन महिं भारे। सरल आपने निकिट हकारे॥ ११॥
'कागद पठ्यो शाहु लिहु देखि[3]। बडिआइ कहु देहि बिशेख'।
सुनि बिप्रनि गन मन दुख पाए। कुछ नहिं कहयो गयो, पछुताए॥ १२॥
सोचति चिरंकाल लगि रहे। अपने धरम हेतु पुन कहे।
'प्रथम किनहुं नहिं कीनसि ऐसे। ज़ोरावरी चहहु अबि जैसे॥ १३॥
अपनो धरम तजहिं किस सोई[4]। स्रिशटि रची तबि को इह जोइ।
करहु ओज दीजै सभि मारे। नहिं कैसे हम जनम बिगारें॥ १४॥
राखहिं धर्म मरन लौ सोई। कौन कूर को जीवन होई[5]।
इम कहि अपने सदन सिधारे। जे दिढ हुते धरम धन[6] भारे॥ १५॥
पुन केतिक दिन बीते जबै। गई तगीद बाहु की तबै।
अफकन शेर डर्यो रिस कीनि। बुधि करि इस प्रकार उर चीन॥ १६॥
जे ग्रामनि महिं हिंदू ब्रिंद। प्रथम तुरक तिन करौं बिलंद।
परवत बासी दिज समुदाए। केतिक खत्री सदन बसाए॥ १७॥
तहिं चढि आइ ज़ोर को घाला। कीनो तिन को तुरक बिसाला।
बीस तीस कोसन महिं जोइ। इक दिन सकल एकठे होइ॥ १८॥
करे उतारनि सरब जनेऊ। तोल समा मन होयसि तेऊ।
तिस दिन तुरक भए हैं सारे। हिंदुनि हाहाकार उचारे॥ १९॥
खक्खे नाम भयो खत्रीन[7]। भंभे नाम दिजव को कीनि[8]।
पुरि कशमीर तीर गिर जोए। कितिक दिवस महिं तुरक सु होए॥ २०॥
दरब आदि सामिग्री जेती। घर तुरकनि के बिरधी तेती।
इम अड़ हिंदूनि की जबी टूटी। ससेमान भए ध्रिति छूटी[9]॥ २१॥
बहुर बिप्प्र तुरि के समुदाए। सगरे अफकन शेर बुलाए।
कह्यो जोर करि 'कलमा पठो। सरहि न कहां शर्हा ते नठो॥ २२॥

---

1. फिर ज़बर्दस्ती करने की धमकी दो 2. विवाह का लालच दो 3. बादशाह ने जो चिट्ठी भेजी है, उसे देख लो 4. हिंदू अपने धर्म का कैसे त्याग कर सकते हैं 5. झूठ का जीवन कौन जिए 6. धर्मात्मा और धनी 7. खत्रियों का नाम खक्खा मुसलमान पड़ गया 8. ब्राह्मणों का नाम बम्बा पड़ गया 9. हौंसला टूट गया 10. भागो

सुनि कै सभि हिंदूनि को चिंता। भए इकत्र कहैं बिरतंता।
'अपर उपाइ न को बनि आवै। जगत राज इन, थाउं त पावैं॥ २३॥
मिलहूं चलहुं अमरेशुर थान[1]। दिहु धरना तजि खान रू पान।
तहिं मरि रहहु कि रुद्र[2] रिझावहु। राखहिं धरम हिंदु—बर पावहु॥ २४॥
तुरक संग कीजहि तकरार। इक दुइ मासन को ध्रित धारि।
असमिसलत करि पहुंचे जाइ। जहिं सूबा अरू नर समुदाइ॥ २५॥
हाथ जोरि सभिहूंनि उचारा। 'खट मासनि बंधहु तकरारा।
जतन जितिक हम ते हुइ जाइ। सो करि लेहिं जि धरम रहाइ॥ २६॥
नाहिं त हम मानहिं जिम कहो। जगपति आज बली तुम अहो'।
अफकन शेर मानि जबि लीनी। भले दिजन मिलि त्यारी कीनी॥ २७॥
'जीवन ते मरिबो अबि आछो। धरम त्यागिबो नाहिन वाछो'।
इम हठ करि पुरि केतिक कोसा। अमरनाथ गे धारि भरोसा॥ २८॥
तजि करि खान पान ध्रित धरिकै। बैठे चहुं दिशि मज्जन करि कै।
शिव के नाम हजारहुं कहैं। 'शंभू, चंद्रचूड़, म्रिड़ अहैं॥ २९॥
नील कंठ, शूली, हर, जटी। बरन सु बिसद बिभूती ठटी[3]।
अंधक घातक[4], रुद्र, त्रिलोचन। शंकर सेवक सोच बिमोचन॥ ३०॥
तप की मूरति बहुत प्रतापै। होति प्रसन अलप जपु जापैं।
महां देव, भव, भद्र करंता[5]। त्रिपुर हर्यो[6] तिम बिघन हरंता॥ ३१॥
जगत म्रिजादा थापति रह्यो। कथा पूराननि की महिं लह्यो[7]।
पारबति पति, पान पिनाकू[8]। करहु चहहु जिम कहि इक वाकु[9]॥ ३२॥
जबि सुर गन को अपदा आवै। दीन होइ तव शरन सिधावैं।
अपने भगत जानि समुदाइ। बल बिसाल ते करहिं सहाइ॥ ३३॥
दीन बंधु दुख दारिद हरता। सैल किलाश बास आचरता।
प्रभु पशुपति, ईशुर, भगवानु। भुगतहि जग नित तेरो दान॥ ३४॥
अबि आयो भीखन कलि काल। भयो जमन[10] को तेज बिसाल।
हिंदु धरम को नाश करंता। चहित म्रिजादा सगरी हंता॥ ३५॥
दिजगन आवि परे शरनाई। तुझ बिन को अबि होइ सहाइ।
राज तुरक भो महिद प्रकाशा। रावन जिम नहिं चहहु जिनासा॥ ३६॥

---

1. अमरनाथ के स्थान पर 2. शिव जी 3. सफेद रंग की राख मली है 4. अंधक दैत्य का घातक 5. कल्याण करने वाला 6. त्रिपुर का घातक 7. लखा जाता है 8. हाथ में पिनाक धनुष को धारण करने वाला 9. एक वाक्य कह कर जो कुछ करना चाहते हो, वह कुछ कर लेते हो 10. मुसलमानों का

तऊ धरम हिंदुनि को भारी। बन सहाइ अबि लेहु उबारी।
नतु सभि एक भइ हुइ जावै। सुर गन की पूजा बिनसावै॥ ३७॥
बिप्प्र दीन बनि पहुंचे शरनी। करुना करहु धरम रहि धरनी'।
इत्यादिक दिज नाम रटंते। धूप दीप बहु बली चढंते॥ ३८॥
परे करहिं डंडौत घनेरी। बहु बिनती बोलहिं तिस वेरी।
खान पान बिन निस दिन रोवैं। बैठे इक आसन, नहिं सोवैं॥ ३९॥
कनक[1], अरक[2], बिल दल[3] अरपंते। भोला नाथ ध्यान चितवंते।
अशट दिवस जबि भए बितीत। छुधा पिपासा निंद्रा जीति॥ ४०॥
मंड्यो मरण जियनि तजि आसा। नहिं निज करि हैं धरम बिनाशा।
ब्याकुल होइ कितिक गिर रहे। बिना अहार कहां बल लहे॥ ४१॥
कितिक अधिक हठ धारी बिप्प्र। संकट सहैं सधीर अच्छिप्र[4]।
पूजा करहिं अनेक प्रकारा। परहिं निरंतर जल की धारा॥ ४२॥
धरहिं ध्यान जिस पर म्रिग छाला। पारबती अरधंगि सुचाला[5]।
लपटे सरप बिभूत लगाए। मुंडन माल बिसाल बनाए॥ ४३॥
सीस जटा को जूट[6] उतंगा। निरमल नीर प्रवाहति गंगा।
त्रितिय नैन मैं अगनि अछादे। डमरु उमंकति[7] कर महिं बादे॥ ४४॥
रूप अमंगल मंगल करिते। इसि बिधि ध्यान अधिक दिज धरिते।
महांदेव तबि अंतर जामी। जान्यो कशट बड़ो, तिन स्वामी॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे द्वादश रासे 'कशमीर द्विजन प्रसंग' बरननं नाम सपति बिंसती अंशु॥ २७॥

---

1. धतूरा 2. आक 3. बेल के पत्ते 4. जल्दी जल्दी 5. सुन्दर चाल वाली पार्वती 6. जूड़ा 7. डम

अंशु २८

कशमीर बिप्प्रन प्रसंग

दोहरा

प्रान अंत लौ दिज भए जाने रिदै त्रिनैन[1]।
क्रिपा धारि पत्नी बिखे लिखि उपाइ के बैन ॥ १ ॥

चौपई

'श्री नानक जग गुरु बिसाला। अप्प्रमेय समरथ कलि काला।
तिन गादी पर बैठ्यो जोइ। काज तुमारे सारहि सोइ ॥ २ ॥
इही पत्रिका ले तुम जावहु। ब्रिथा आपनी सकल सुनावहु।
सो राखहिंगे धरम तुहारा। तिन बिन अन ते ह्वै न उबारा ॥ ३ ॥
उठहु अहार जाइ करि करो। रिदै भरोसा गुर पर धरो'।
जहिं दिज बैठे मंडल करि कै[2]। त्रिखत छुधित संकट को धरि कै ॥ ४ ॥
अरध जाम जामनि जबि रही। बिप्प्र ब्रिंद बिच उतरी तहीं।
भई प्रभाति सूर उजिआरा। पर्यो सु कागद सभिनि निहारा ॥ ५ ॥
हाथ उठाइ बिलोका खोला[3]। अक्खर शुद्ध पाठ करि बोला।
जानि अचंभै मिलि समुदाए। पठति सुनति सभि ह्वै इक थाएं ॥ ६ ॥
भली भांति आशै को जानि। 'कौन गुरु अबि करहु बखानि'?।
तिन महुं इक दिज लखहि ब्रितंत। तेग बहादर गुर भगवत ॥ ७ ॥
सभिनि सुनावति बाक उचारा। 'मो ते सुनहुं लखौं जिम सारा।
श्री हरिगोविंद पूरब आए। ब्रिधा प्रेम बड धर्यो बुलाए ॥ ८ ॥
दासनि को निहाल करि गए। पंच पुत्र तिनके बर भए।
पौत्रा गादी पर बैठाइ। श्री हरि गोविंद गए समाइ ॥ ९ ॥
तिन सुत श्री हरि क्रिशन भए हैं। बाल बैस गुरु पूज थिए हैं।
संभत द्वै गादी पर रहे। तन के अंत तिनहुं बच करे ॥ १० ॥

---

1. शिवजी 2. घेरा डालकर 3. देख कर खोला

अबि गुर बाबा बसहि बकाले। आप गमन बैकुंठ समाले।
श्री गुर तेग बहादर अहैं। चहुं दिशि बिदति भए सिख लहैं॥ ११ ॥
तिन ढिग चलहु, उबारहिं धरम। तजि करि लोक शरम अर भरम[1]।
बिदत जगत महिं गुरता गादी। श्री नानक जीते सभि बादी[2]॥ १२ ॥
सरब कला समरथ सभि काला। चहैं सु करैं प्रताप बिसाला।
कोस हज़ारहुं सिक्ख सहाइक। सुनति रहे नित सहिज सुभाइक'॥ १३ ॥
सुनि दिज गव निशचै मन आयो। शिव को लिख्यो सभिनि शुभ भायो।
बारि बारि तिह बंदन करि के। उठे बिप्र आए बिच पुरि के॥ १४ ॥
'पूरब मद्र देश[3] को चलीअहि। बूझि खोजि सतिगुर को मिलीअहिं'।
अस मसलत करि मुक्खि जु परिके। गमने मग मिलिबे हित गुर के॥ १५ ॥
उलंघि पहार पीर पंजाल[4]। रतन पंजाल त्यागि पग चालि।
बसे रजौरी पुरि महिं आए। तजि भिंभर[5] गमने अगवाए॥ १६ ॥
सभि पहार उलंघे पुन देश। ग्राम नगर पिखि त्यागि अशेश।
श्री अंम्रितसर पहुंचे आइ। तहिं ते सुधि सतिगुरू की पाइ॥ १७ ॥
'तीरथ पूरब के करि सारे। अबि अंनद पुरि बसैं उदारे।
चहुंदिशि की गन संगति आवैं। पाइ कामाना सीस निवावैं॥ १८ ॥
बैठे श्री नानक मसनंद[6]। सतिगुर तेग बहादर चंद।
सरब कला समरथ गुन खानी। धीरज धरम धाम ब्रह्मग्यानी'॥ १९ ॥
दिज गन सुनि जसु वध्यो अनंद। राखहिं हिंदुनि पैंज बिलंद।
चले पंथ सभि आनंद पुरि के। चाहति चित महिं दरशन गुर के॥ २० ॥
पिखी बिपासा सुंदर सलिता। जिस महिं निरमल जल बहु चलता।
चढि तरनी पर तरि परि तीर[7]। खरे जाइ भे दिज उर धीर॥ २१ ॥
द्वावे देश पंथ सभि चाले। देखी सत्तद्रव नदी बिसाले।
तिसै उलंघति पहुंचे जाइ। सुंदर पुरि अनंद जिस थाइं॥ २२ ॥
शुभ सथान पिखि कीनसि डेरा। पग पखारि श्रम हत्यो बडेरा।
खान पान करि निस महिं बासे। मिलैं प्रभाति गुरनि के पासे॥ २३ ॥
सुपति जथा सुख जाग्रत भए। सौच शनान सरब ने किए।
खट करमी प्रिय धरम चहंते। घस चंदन को तिलक लगंते॥ २४ ॥
अनिक प्रकारनि लै उपहारा। पहुंचे सतिगुर के दरबारा।
हेरि मेवरो अंतर गयो। हाथ जोरि करि बोलति भयो॥ २५ ॥

1. लोक लज्जा और भ्रम का त्याग 2. झगड़ालू 3. पंजाब 4. पर्वत का नाम है 5. जम्मू की एक तहसील 6. गद्दी पर 7. किश्ती पर चढ़कर पार हुए

'प्रभु जी अहै देश कशमीर। तहिं के बिप्प्र खरे दर भीर।
दरशन को चाहति उह आए। सुमतिवंत पंडित समुदाए' ॥ २६ ॥
सुनि श्री तेग बहादर हसे। 'आवन देहु, महां दुख ग्रसे।
शिव को ल्याए हमहिं संदेसा। जथा जगत सुख लहै विशेशा ॥ २७ ॥
श्री नानक को कमलादास। गयो हुतो लैबे हित घास।
तिस कर शिव निज भसम पठाई। तिम हम निकटि पत्रिका आई' ॥ २८ ॥
ढिग मसंद गन सेवक जोइ। सुने गुरु ते बिसमै होइ।
जिन बच महिं आशै गंभीर। रिदै बिचारति बैठे तीर ॥ २९ ॥
जाइ मेवरो दिज गन ल्यायो। सभिनि आइ निज सीस निवायो।
अरपि उपाइन आदि दुशाले। सेउ आदि जे स्वाद बिसाले ॥ ३० ॥
करि दरशन सगरे हरखाए। बैठे अशिख बाद अलाए।
कुशल अनंद बूझि करि तिन को। पुन सतिगुर इम कर्यो बचन को ॥ ३१ ॥
'कहहु देश अपने की बात। किस प्रकार को तहां ब्रितांत ?
अबि के तुम बहु विद्यावान। आए संग न संगति आन[1] ॥ ३२ ॥
सभिनि जाति के सिक्ख हमारे। मिलि आवति सो विधि न निहारे।
दरशन हित कै कारज और ?। मिलि आए तजि कै निज ठौर' ॥ ३३ ॥
सुनति दिजनि कर जोरि उचारी। 'हसतामल जिम जानहुं सारी।
तीन लोक को अखिल ब्रितंत। रिदै ग्यान श्री गुर भगवंत ॥ ३४ ॥
तऊ हुकम बूझनि हित कयो। सुनहुं प्रसंग देश जिम भयो।
चिरंकाल कौ राज जमन को। पीड़त प्रजा लेति धन गन को ॥ ३५ ॥
अबहि दुशटता अधिक उठाई। चाहति हिंदू तुरक बनि जाई।
देश पहारन को सभि जेई। धरम बिगारि जनम भे तेई ॥ ३६ ॥
उतरे जग्गयुपवीत एक दिन। तोलनि करे सु भए सवामन।
पुन पुरि महिं हम पर बल घाला। बनहुं तुरक सभि तजि निजचाला ॥ ३७ ॥
खशट मास को करि तलकार[2]। जाइ शरन लीनसि त्रिपुरारि[3]।
अशट दिवस बैठे तहिं रहे। खान पान किनहुं नहिं लहे ॥ ३८ ॥
प्राति पत्रिका तहिं ते पाई। महां देव तुम निकटि पठाई।
इम कहि सतिगुर आगे धरी। 'पठहु आपकी महिमा करी ॥ ३९ ॥
गज सम तुरक तेज चवगत्ता। हिंदू धरम तरू को पिखि मत्ता[4]।
तोरति मूल उखार्यो जोव्रति[5]। बली केहरी तुमरे होवति ॥ ४० ॥

---

1. दूसरे संगत के साथ नहीं आए 2. छः महीनों का इकरार 3. शिवजी
4. मस्त हुआ 5. तोड़ने के लिए मूल से उखेड़ना चाहता है

परे शरन अबि आनि तुमारी। शिव के कहे करहु रखवारी।
रावरि बिना आन नहिं कोई। समरथ बली जु रक्खयक होई॥ ४१ ॥
एक आसरा आप गुसाईं। गहहु बाह डूबति सभि जाइं।
निज करूना तरनी[1] बर धरो। करन धार[2] बनि पारहि करो॥ ४२ ॥
जग ते बिनसनि लगहि धरम जबि। प्रभु अवितार सुधारि तुरत तबि।
बनहि सहाइक लेहि उबार। सुनीयति कथा पुरान मझार॥ ४३ ॥
अबि अवितार आपके होवा। महां प्रताप जगत मैं जोवा।
श्री नानक ते आदिक भए। चित्र पवित्र चलित्रनि किए॥ ४४ ॥
राखहु अबि हिंदुन की टेक। नाहित जग महिं रहै न एक।
धरम भ्रिशटि जबि सगरे होंइ। पूजहि सुर आदिक नहिं कोइ॥ ४५ ॥
होम जग्य सगरे बिनसैं हैं। बहुर देव किम थिरता पै हैं।
परहिं महां दुरभिच्छ[3] घनेरे। जग भी बिनसि जाइ तिस बेरे॥ ४६ ॥
यांते अबि ही बनहु सहाइ। हिंदू धरम को लेहु बचाइ।
सुर आदिक की रच्छा होइ। रहे जगत मिरजादा जोइ॥ ४७ ॥
इस प्रकार बहु जुगतनि साथ। बिप्प्रनि कीनि सुनावति गाथ।
अधिक दुखातुर शरनी परैं। बारि बारि बहु उसतति करैं॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे द्वादश रासे 'कशमीर बिप्प्रन प्रसंग' बरननं नाम अशट बिसती अंशु॥ २८ ॥

---

1. कृपा रूपी दृष्टि 2. मल्लाह 3. अकाल

अंशु २६

अहिदी चलन प्रसंग

दोहरा

सुनति दिजन ते सतिगुरु चितवति भए उपाइ ।
श्री नानक को बर महांराज तुरक बड़ पाइ ।। १ ।।

चौपई

तिस को बनहि मिटावनि जैसे । अनिक जतन चितवति चित तैसे ।
कितिक देर गुरु तूशनि ठानी । पिखि मुख सभा न को कहि बानी[1] ।। २ ।।
कर महि धरी पत्रिका बाची । शिव की लिखत देखि हित राची ।
पठी सकल ही ठानी मौन । देखति रहे न बोल्यो कौन ।। ३ ।।
चतुर घटी लगि तूशनि रहे । नहि उपाइ को उर महि लहे ।
अपनो सिर दे कूरो करैं । बखश्यो राज सरब इम हरैं ।। ४ ।।
अपर उपाइ न बनि है कोई । भली प्रकार बिचार्यो सोई ।
कर निशचै उर महि जबि लह्यो । दिज गन संग गुरु तबि कह्यो ।। ५ ।।
'बिप्प्र ब्रिंद ! तुम इकठे होवहु । करहु सकेलन जिह शुभ जोवहु ।
दिल्ली पुरि को सकल पयानो । तहां जाइ निज ब्रिथा बखानो ।। ६ ।।
हमरे छत्री हैं जजमान । तिन ते करहिं खान अरु पान ।
रहैं अलंब सदा हम ताहूं । दान अनेक बिधिनि ले जाहूं ।। ७ ।।
तिन महि लीजहि नाम हमारो । करहु बुलावनि—सकल उचारो[2] ।
सो जबि सुनि जिस मग को चालें । तिन पीछै हिन्दू जग जाले[3] ।। ८ ।।
क्यों तुम सभिनि संग इम कहो । एक मूल सों इच्छया लहो ।
इम सुनि हमहिं हकारनि करि है । तबि सभि हिंदुनि धरम उबरि हैं ।। ९ ।।
ज्यों क्यों इच्छया करहिं तुमारी । शिव उचरी सो हम उर धारी' ।
इम उपाइ सुनि दिज समुदाए । 'धंन्य धंन्य' कहि सीस निवाए ।। १० ।।

---

1. सतिगुरु जी का मुख देख कर सभा में से किसी ने कोई शब्द नहीं कहा 2. सारे यही कहो कि उनको (गुरु तेग़ बहादुर जी को) बुलाओ 3. सारे हिन्दू जगत के लोग उनके अनुयायी हो जायेंगे

कही गुरु सभिहिनि मन मानी। 'रहहि धरम हम निशचे जानी'।
एक जाम लगि दरशन कीनी। पुनि उठि आए वहिर प्रबीन॥ ११॥
इक दुइ दिन अनंद पुरि बासे। दरशन करि करि रिदै हुलासे।
बहुर पाइ आइसु गुर केरी। भए त्यार चलिबे तिस बेरी॥ १२॥
अपर बिप्प्र बुधिवंते जेई। करे हकारनि मेले तेई।
ब्रिद होइ करि पंथ पयाने। जिस पुरि महिं तुरकेश महांने॥ १३॥
केतिक दिन महिं पहुंचे जाइ। बहु पुरि के मिलि द्विज समुदाइ।
दुरग तुरक के थिरे अगारी। बुझे[1] अपनी ब्रिथा उचारी॥ १४॥
बहु पुरि के दिज हम समुदाए। दुख को पाइ पुकारू आए[2]।
बादशाहि जबि सुनहि ब्रितंत। तबिहूं निशचै बानहि मतंत[3]॥ १५॥
जे कशमीर आदि गन देश। हुइ हिंदुनि पर ज़ुलम विशेश'।
इम सुनि गयो, शाहि लखि मरजी। करी अरजबेगी तबि अरजी[4]॥ १६॥
'हज़रत शाहु सलमत! सुनीयहि। गन देशनि के दिज बहु गनीअहिं।
पाइ कशट को आइ पुकारू। चहति आपके पास उचारु॥ १७॥
पुरि कशमीर आदि ते आए। धन विद्या महिं जो अधिकाए।
जो नर गन महिं हैं परधान। ते पहुंचे दीरघ बुधिवान'॥ १८॥
सुनति शाहु अविरंग बिचारे। शरा बात लखि निकटि हकारे।
सुनि आइसु को दिज समुदाइ। पहुंचे जमन सभा लगि जाइ[5]॥ १९॥
बैठे काज़ी ब्रिद मुलाने। गन उमराव महां मन माने[6]।
जरे जवाहर ज़ेवर सारे। पहिरे बसत्र महां दुति धारे॥ २०॥
झुकि झुकि बिप्प्रनि कीनि सलाम। पुन कर जोरे खरे तमाम[7]।
निज दिशि शाहु तवाजै होवा। सुन्यो चहैं, इम जीब हूं जावा॥ २१॥
भए सधीरज अरज़ गुजारैं। 'हुइ लचार तुम निकटि पुकारैं।
करहिं बिनासन धरम हमारे। हिंदुनि लै हैं शर्हा मझारे॥ २२॥
सो रावरि की मरज़ी जानी। इस प्रकार हम मिलि मन मानी।
बिप्प्रनि के जजमान अलंब[8]। चलहिं जीवका देति कदंब॥ २३॥
तिन ते दान लेनि अधिकारी। छपी न इहु कछु जगत मझारी।
सो हिंदु जजमान घनेरे। सभि महिं छत्री अहैं बडेरे॥ २४॥

---

1. पूछने पर उन्होंने अपनी व्यथा सुना दी 2. दुखी होकर पुकार करने के लिए आए हैं 3. राय 4. प्रार्थना पत्र पहुंचाने वाले ने प्रार्थना की 5. तुर्क की सभा तक जा पहुंचे 6. घमंडी 7. फिर सारे हाथ जोड़ कर खड़े हो गए 8. आश्रय होते हैं

तुम ते प्रथम राज तिन केरा। करति जग्य दे दरब घनेरा।
सो अबि अपर क्रित लगि परे। ज्यों क्यों अपनि जीवका करे॥ २५॥
तऊ सकल हिंदुनि के मांही। छत्री वड़े और सम नाहीं[1]।
उत्तम जाती करम भलेरे। लखियति सहिज सुभाइ अछेरे॥ २६॥
तिन छत्रीन बिखे सम चादर[2]। सभिनि वड़े श्री तेग वहादर।
गुर नानक की दीरघ गादी। थिर ह्वै सिक्खी कीनी अबादी॥ २७॥
जग के पूज बिदत चहूं ओरे। चरन निहोरति द्वै कर जोरे।
माननीय सभि के सिरमौर। जिन के सम नहिं दूसर और॥ २८॥
संगति नई हज़ारों मानहिं। अनिक अकोरनि को नित आनहिं।
जिन को भन्यो मान मन सारे। चहति लोक द्वै रहित सुखारे॥ २९॥
शरधा धरहिं कामना पावहिं। आवति जाते गुन गन गावहिं।
करहिं कि कहहिं क्रित शुभ जोइ। अंगीकार सभिनि के सोइ॥ ३०॥
यांते जगत गुरु पद भारो। हिंदु नाम तिन के अनुसारो।
भए सभिनि महिं अति परधानू। धरहिं सु धरम जु करहिं बखानू॥ ३१॥
यांते तिन पीछै हिंदवाइन[3]। सभि के अग्री,[4] प्रभू,[5] पराइन[6]।
तिन को प्रथम शर्हा महिं ल्यावहु। निज मत को ईमान रखावहु॥ ३२॥
बहुर न तुम किस को कुछ कहीयहि। बनहिं तुरक हिंदू सभि लहीयहि।
पिखि करि इम श्री तेगबहादर। शर्हा सरब मानहिं तबि सादर॥ ३३॥
फेर न फेरि करहि गो कोइ[7]। गुर के मग हिंदू सभि होइं।
पुन हम सभ की[8] गिनती कहां। बिप्र जीवका बसि जहिं कहां॥ ३४॥
बिना ज़ोर ते बिना बनाए। बनहिं तुरक हिंदू समुदाए।
जहां एक ते कारज होइ। बहु को कशट न दै है कोइ॥ ३५॥
कहि करि पूरब तिनहिं बुलावहु। निज मरज़ी ग़रज़ी समुझावहु।
ज्यों क्यों करि बल छल समुदाइ। प्रथम गुरु लिहू तुरक बनाइ॥ ३६॥
हेरति हुइ हैं सकल पिछारी। बात जथारथ हमहुं उचारी'।
इम सुनि शाहु उचित बिधि जानी। कह्यो 'दिजहु तुम नीक बसानी॥ ३७॥
हुइ है ऐसे जिम जित चित बांछो। गुरु शर्हा महिं गम नहिं आछो।
पुन सभि सिक्ख्य संदेह न करै। गुर को देखि तुरकपन धरै[9]'॥ ३८॥
सुनति शाहु रूख ब्रिद मुलाने। काज़ी अर उमराव बखाने।
'इम सुखेन ही कारज होइ। सादर शर्हा मानि सभि कोइ॥ ३९॥

1. और कोई उनके बराबर नहीं है 2. चादर, परदा, ओट 3. सारी हिन्दू जाति 4. अगुआ 5. मालिक 6. आश्रय 7. फिर कोई नहीं फिरेगा 8. हम जैसों की 9. मुसलमान बन जायेंगे

अज़मत सहति होइ बिच 'दीन। सभि जग बिखै शर्हा बड़ पीन'।
अस मसलत सभिहूंनि सराही। उखरहि मूल सु जानहिं नांही ॥ ४० ॥
जिस ते नसहि तेज तुरकाना। सो दिढ करहिं धरहि मन माना।
'गुरु हकारहुं' मति ठहिरायो[1]। 'आवहि रामराइ जिम आयो ॥ ४१ ॥
पूरब गुर सो गए समाइ[2]। तेग बहादर अबहि बताइ'।
दो अहिदी ततकाल बुलाइ। तिन प्रति हुकम कह्यो समुझाइ ॥ ४२ ॥
'बूझि दिजन सों बसिबे ग्रामू। सोढी तेग बहादर नामू।
जाइ हकारहु इत को ल्यावहु। आइ कि नहीं भेत को पावहु ॥ ४३ ॥
कहहुं, दिखावनि अज़मत करैं। कै हमरे अनुसारता[3] धरैं'।
सुनति हुकम को कीनसि त्यारी। 'नाम अनंद पुरि' दिजन उचारी ॥ ४४ ॥
दिल्ली ते सुनि बाहर भए। श्री गुर सनमुख पंथ सिधए।
तुरक मंद मति हुतो नुरंगा। संत पीर गुर सन बदरंगा[4] ॥ ४५ ॥'

इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे द्वादश रासे 'अहिदी चलन प्रसंग' बरननं नाम एक ऊन त्रिंसति अंशु ॥ २९ ॥

---

1 गुरु जी को बुलाने की सलाह बनाई 2. स्वर्गवास हो गया है 3. अधीनता 4. विरोधी

अंशु ३०

सैफाबाद गुर आगवन प्रसंग

दोहरा

अहिदी चढि करि खाट पर सभि समाज धरि पास ।
निकसे पुरि ते नरन सिर उरध उठाइसि तास ।। १ ।।

चौपई

आगे ग्राम गमनते आवैं । पाछलि नर तिन खाट टिकावैं ।
तहिं ते नए निकासि बिगारी[1] । आइ उठावहिं लें सिरधारी ।। २ ।।
बैठि मंच पर पंथ पयानहिं । सरब प्रजा पर हुकम बखानहिं ।
लेति सभिनि ते घ्रित मिशटान । आमिख सों अहार करि खान ।। ३ ।।
सने सने मारग महिं चालहिं । नित अनंद पुरि नाम संभालहिं ।
चलति चलति केतिक दिन मांही । नरनि सीस पर उठे सु जाहीं ।। ४ ।।
सत्तुद्रव तीर पहूंचे आइ । करति हुकम को गमनति जाइं ।
आइ अनंदपुरि कीनसि डेरा । चढ़े मंच बैठे तिस बेरा ।। ५ ।।
खान पान करि निसा बिताई । जागे पुन प्रभाति हुइ आइ ।
बैठानि सभा सभा सुनि करि के । गुर सो मिलनि लालसा धरिके ।। ६ ।।
भए त्यार अहिदी तबि दौन । थिरता सिंह पौर गहि तोंन[2] ।
सुध सतिगुर के निकट पठाइव । 'शाहु हुकम ते हम चलि आइव ।। ७ ।।
गुरु हकारनि दिल्ली पुरि मैं । दिल्ली पति चाहति आ उर मैं ।
इस कारज को हम चलि आए । मिल्यो चहैं तिन दरशन पाए ।। ८ ।।
सुनति पास गुरदास पयाना । सभि प्रसंग अहिदीनि[3] बखाना ।
'थिरे पौर, द्वै शाहि पठाए । कहैं सु हम लैंने गुर आए ।। ९ ।।
अंतरजामी श्री गुर देव । भूत भविकख्य लखहि सभि भेव ।
सहिज सुभाइक बाक उचारे । 'आए जम के अबहि रबारै[4] ।। १० ।।

---

1. बेगार करने वाले 2. वे (सिंहद्वार पर जा खड़े हुए) 3. अहिदियों का 4. यम के दूत

लखी जाइ नीके इह बात। अवसर पूरन को बिरतांत[1]।
सुनि कै मतीदास तबि कह्यो। शी प्रभू! कहा आप इह लह्यो[2] ॥ ११ ॥
गुरु घर को उर शाहु लखंता। रखहि अदाइब[3] नंम्रि बनंता।
रामराइ को बहु धन दीनि। निकटि बिठाइ शुभासन दीनि ॥ १२ ॥
अबि लौ बनी बात शुभ तांही। भाउ धरै तिम ही तुम मांहि।
करहु शाहु सों मेल सुखारे। कहां कहति हहु बाक दुखारे ॥ १३ ॥
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो। 'सो हुइ है जु प्रेमशुर चह्यो।
हमरो मेल न बनै कदाई। 'कूर, मलेछ संत दुखदाई[4] ॥ १४ ॥
इम कहि अहिदी निकटि बुलाए। पिखि निकेत अंतर प्रविशाए।
समुख बदन गुर जबहि निहारे। ततछिन दुरमति तिन निखारे ॥ १५ ॥
सम संतनि गुर शांति सुभाऊ। हरख शोक नहिं लेश कदाऊ।
नंम्रि सीस करि कीनि सलाम[5]। बैठी देखी सभा तमाम[6] ॥ १६ ॥
निज कर ते दीनसि परवाना। कर्यो पठावनि मतलब्र जाना।
लिख्यो तांहि महिं 'आवनि कीजै। मिहरबान हुइ दरशन दीजै ॥ १७ ॥
लोकन ते जसु सुन्यो तुहारा। यांत मिलिबों नीक बिचारा।
सुनि सतिगुर कागत लिखवाइव। 'जे मिलिवे लालस उपजाइव ॥ १८ ॥
तौ हम आवहिं दिल्ली पुरि को। मिलि करि करहु मनोरथ उर को।
पूरब गुर घर को बल सुनि कै। रामराइ बुलवाइव गुनि कै ॥ १९ ॥
श्री हरि किशन बहुर बुलवाए। अबि तैं हमरे निकटि पठाए'।
तिन अहिदीनि को लिखि करि दयो। करहि तथा जिम चाहति भयो ॥ २० ॥
इम उत्तर लिखवाइ गुसाईं। केतिक धन दीनसि तिन तांई।
हते लोभ ते लै नरमाए[7]। गुर के समुख न कछू अलाए ॥ २१ ॥
बिदा होए करि अहिदी चाले। चढि मंचन पर पूरब ढाले।
सने सने तैसे चलि गए। दिल्ली ब्रिखै प्रवेशति भए ॥ २२ ॥
नौरंग निकटि पहूंचे जाइ। कागद[8] दयो प्रसंग सुनाइ।
'कह्यो गुरु, हम भीतहिं आवैं। केतिक वासुर समा बितावैं ॥ २३ ॥
अबि आयो चौमासा काल। मग महिं पानि पंक[9] बिसाल।
सुनि औरंग तब्रि तूशनि होयहु। आवहिं आप बिचारति जोयहु ॥ २४ ॥

1. अंत के समय का वृतान्त, यह समझ लिया 2. आपने यह क्या जान लिया है 3. सत्कार 4. झूठ, म्लेच्छ तथा संतों के दुखदाई तुर्केशुर के साथ 5. प्रणाम 6. सारी सभा 7. लोभ के मारे हुए नरम हो गए 8. कागज़, चिट्ठी 9. कीचड़

इति सतिगुर निज त्यारी कीनि। बसन अनंद पुरि को तजि दीनि।
अलप दास अपने संग लीनि। कारन करन बिसाल प्रवीन ॥ २५ ॥
मास असाढ बिखै प्रसथाने। सिख मसंद हुइ बिदा पयाने।
निज निज देशनि को चलि गए। 'सतिगुर शील' सराहति भए ॥ २६ ॥
श्री प्रभु पूरब को मुख करे। नित प्रति मजल अलप ही थिरे।
बसहि नहीं नवि पुर पटिआरा[1]। इति को आए गुरु उदारा ॥ २७ ॥

सैफदीन इक तुरक भलेरा। निज पुरि को बसाइ तिस बेरा।
सैफाबाद नाम तिस राखा। गुर जसु सुनति दरस को कांखा ॥ २८ ॥
चितवित रहति जाउं तिन पास। सुनहुं तिनहुं के बाक बिलास।
अटक्यो रहति काज घर केरे। नहिं अवकाश लह्यो किस बेरे[2] ॥ २९ ॥
तऊ रिदे महिं प्यास बडेरी। मिलहिं गुरु को को चलि किस बेरी।
अंतरजामी सतिगुर जानी। दरशन को चाहति हित ठानी ॥ ३० ॥
उतरे तहां जाइ पुरि नेरे। सकल आइ लग्यो तबि डेरे।
सैफदीन ढिग किनहुं बखाना। 'उतर्यो आइ, नहीं को जाना ॥ ३१ ॥
सुध हित सुनि कै मनुज पठायो। बूझि गयो तिन जाइ बतायो।
'जिस के संग मिलनि तुम चाहो। औचक सो पहुंचे अबि पाहो ॥ ३२ ॥
श्री गुर तेग बहादर अहैं। संगी नर बूझे सो कहै[3]।
सैफदीन सुनि करि हरखायो। ततछिन आप मिलीन को आयो ॥ ३३ ॥
क्रितिक अशरफी[4] आगे धरि कै। बंदे पद नंम्री सिर करि कै।
कहति भयो 'मुझ कर्यो निहाल। दरशन दीनसि आनि क्रिपाल ॥ ३४ ॥
अबि पहुंच्यो है आनि चुमासा। बनौं क्रितारथ कीचहि बासा।
इम कहि पग पंकज गहि हाथ। करति पलोसनि प्रीती साथ ॥ ३५ ॥
पुन मुख चख पर फेरति करै। मैं निहाल भा इम उर धरै।
हेरि प्रेम को बहुत क्रिपाल। बाक बखान्यो गुर तिस काल ॥ ३६ ॥
'जे[5] उर शरधा एव तुमारे। करहिं बास चहुं मासे सुखारे।
चहैं शाह ढिग करनि पयाना। बरखा हटे जाहिं तिस थाना ॥ ३७ ॥
इस प्रकार जबि गुरु उचार्यो। सैफदीन कहि सिवर उठार्यो।
सुंदर उपवन बिखै उतारे। आप साथ हुइ तहां पधारे ॥ ३८ ॥

1. पटियाला नगर 2. समय 3. साथियों से पूछा है और उन्होंने बताया है 4. मोहर 5. यद्यपि

भली भांति डेरा करिवायहु। हित सेवा के सकल पुचायहु।
बहु बिधि के प्रिय बाक सुनाए। पुन निज सदन गयो हरखाए ।। ३९ ।।
निसा बास सतिगुर तबि कर्यो। खान पान सभिहिनि सुख धर्यो।
भई प्रभाति सौच इशाने। बैठे थिर हुइ लागि सु ध्याने ।। ४० ।।
दिवस चढे करि प्रेम बिलासा। सैफदीन पहुंचयो ततकाला।
करि बंदन पद पर हरखायो। सादर सतिगुर निकटि बिठायो ।। ४१ ।।
बाक बिसाला अनेक प्रकारा। करति गुरु दे अनंद उदारा।
शांति समेत उचारति ज्यों ज्यों। सुनि करि बसी होति मन त्यों त्यों* ।। ४२ ।।
मुदत होइ पुन बिनती ठानी। 'करहु बास मम प्रीत महानी।
पंक प्रिथी पर प्रापति पानी। गमन कंठन मग को लिहु जानी ।। ४३ ।।
सुनि करि सैफदीन की बिनती। करनि कू चकी तजि की गिनती।
कर्यो वचन 'तुम आछे कह्यो। मग प्रसथान समा नहिं लह्यो ।। ४४ ।।
सरब रीति करि संकट होति। त्रिन गन जीव बिलंद उदोति।
बरखा सकल बितावे जबै। करहिं कूच डेरा हम तबै ।। ४५ ।।
तहिं गुर बसे देनि को छेम। सैफदीन दीरघ उर प्रेमु।
करहि भाव को नीत नवीन। परचहि गुर ढिग रहै प्रवीन ।। ४६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'सैफाबाद गुर आगवन प्रसंग' वरननं नाम त्रिसती अंशु ।। ३० ।।

*वैसे वैसे

अंशु ३१

श्री गुर त्यारी प्रसंग

दोहरा

बसे चुमासा सतिगुरु डेरा कीनि मुकाम।
सैफदीन सेवा करहि नित प्रति आइ सलाम ॥ १ ॥

चौपई

संगति गुर की ठानि हमेशू। त्यों त्यों चित नहिं प्रेम विशेशू।
कबहू ले निज संग सिधारहि। सदन आपने जाइ बिठारहि ॥ २ ॥
परचै रहैं इहां चिरकाला। यां ते ठानति जतन बिसाला।
अनिक भाँति की बात सुनावै। घर अंतर के बाग दिखावै ॥ ३ ॥
बहुर फरश सुंदर डसवावै। करि बिनती सनमान बिठावै।
बारू चौपर अग्र बिछावै। खेलै गुर सो डलन रुड़ावै ॥ ४ ॥
इक दुइ जाम सदन महिं राखै। खेलनि हित पुन पुन मुख भाखै।
खान पान की सेवा करै। सिवर बिखै बसतू सभि धरै ॥ ५ ॥
घ्रित मिशटान अंन गन नीके। अमर अहार जि भावति जीके।
दुगध दधी[1] ते आदिक जेई। हिंदुनि ते पहुंचावति तेई ॥ ६ ॥
चहियति वसतु सिवर महिं जोइ। निज बुधि ते भेजै तहिं सोइ।
फल रसाल के स्वादक जेते। बीन बीन करि पठवहि तेते ॥ ७ ॥
दूर दूर ते करहि मंगावनि। देखि देखि करि जे मन भावन।
जामन फल आरु अरु खिरनी। जे लगवाइ रखे निज धरनी ॥ ८ ॥
दारम दीरघ दाने जोइ। करि करि प्रेम पठावै सोइ।
इत्यादिक सेवा कहु ठानि। जनम सुधार्यो अपनि महान ॥ ९ ॥
देहि तुरंगन को त्रिण दाना। भए पुशट ठाढे तिस थाना।
इम सावन भादों दुइ मास। करे बितावनि सतिगुर बासि ॥ १० ॥
मास असोजु आइ पुन गयो। अविरंग इक दिन बैठति भयो।
चल्यो प्रसंग गुरु को तहां। 'अबि लौ नहिं आए रहि कहां' ॥ ११ ॥

1. दही।

पुन अहिदी द्वै कीने त्यारी। करि तागीद बिसाल उचारी।
'अपने संग जाइ करि आनो। अपर फरेब करहिं, नहिं मानो[1] ॥ १२ ॥
तिन बिन अटक रह्यो बड काजा। जनु हिंदुनि को दिढ दरवाजा।
अपनी अजमत मोहि दिखावें। नातुर शर्हा बीच अबि आवें ॥ १३ ॥
आनहु साथ न तजि करि फिरो। खबर पठहु तिनके दर परह्यो।
सुनि तागीद शाहु ते जोर। अहिदी चले आनंदपुर ओर ॥ १४ ॥
चढि खाटन पर काढि बिगारी। सीस उटाए जाँहि अगारी।
ग्राम ग्राम महिं हुकम करंते। खान पान तिन ले गमनंते ॥ १५ ॥
मग उलंघि करि सगरे गए। जाइ प्रवेश अनंदपुरि भए।
बूझी सुधि, गुर तहां न पाए। 'कहां अहैं ?' को नहीं बताए ॥ १६ ॥
भए सचिंत 'कहां अबि करें। गुर की सुध नहिं स्रवनी परैं।
केतिक दिन रहि बहुरु प्याने। होइ सुधासर अस मन जाने ॥ १७ ॥
सत्तुद्रव पार उलंघि तबि चालै। द्वावे देश देखि करि भाले।
बहुर बिपासा उतरे पार। खोजहिं जहिं कहिं नरन उचारि ॥ १८ ॥
श्री अंम्रतसर पहुंचे जाइ। इकठे करि मसंद समुदाइ।
बूझनि करी गुरु की गाथ। 'अबि किस थल महिं तुमरो नाथ ॥ १९ ॥
जो तुम करहु दुरावनि तिनै। शाहु सजाइ देहिगो घनै।
सदन खसोटहि वहिर निकारहिं। बंद कैद करि तुम कहु मारहि ॥ २० ॥
सुनि मसंद पायो बड त्रासा। कह्यो 'देखि लिहु सकल अवासा।
कहहिं कर नहिं, दोश लगावहु। हम गरीब सगरे लखि पावहु' ॥ २१ ॥
इम निरनै करि कै अहिदीन। शाहु निकटि सुधि लिखि पठि दीनि।
'कितहुं न पावति खोजति हारे। देश बिदेशनि बिखै निहारे' ॥ २२ ॥
सुनि नुरंग ने कितिक सऊर[2]। हित खोजन पठि निकटि कि दूर।
जहां कहां कहु बिचरनि लागे। बूझे जित कित पाछे आगे ॥ २३ ॥
केचित अहिदी अरु असवार। बिचरति देश विदेश मझार।
इति सतिगुर सभि अंतरजामी। जल थल घटि घटि जानत स्वामी ॥ २४ ॥
सैफदान को कीनि निहाल। वैठे हुते कह्यो इक काल।
'अबि हम चल्यो चहैं कित आन। बसे चुमासा तुव बच मानि ॥ २५ ॥
सत्तिनाम सिमरन करि सदा। संकट ब्याप सकहि नहिं कदा।
सति संगति के संग सु प्रीत। सेवा करहु लहहु सुख नीत ॥ २६ ॥

1. यदि दूसरे फरेब करें तो मत मानें। 2. सवार।

जनम मरन तेरो अबि मिट्यो। गुरु क्रिपा ते संकट कर्यो'।
सैफदीन सुनि प्रेम बिसाला। भए सजल लोचन तिस काला॥ २७॥
'मो चित मोचति साथ न चहै। गमनहुं गुरु ! बाक को कहै।
कहां ठगौरी मो पर डारी। मन बसि रावरि रखहु संगारी'॥ २८॥
श्री गुर तेग बहादर सुनिकै। धीरज दीनि प्रेम तिस गुनि कै।
'हम न अबि कुछ करने काजा। नहीं साथ को निबहि समाजा॥ २९॥
नितप्रति उठि करि ठानहु ध्यान। जिम समीप तैसे पहिचान'।
इत्यादिक कहि बहु समुझायो। नीठ नीठ उर धीर बधायो॥ ३०॥
अपर दास अर सिक्ख जि साथ। सभि सों बोले इसि बिधि नाथ।
'निज निज सदन सिधारनि करीयहि। संग हमारो अबि परिहरी अहि॥ ३१॥
होनि इकाकी बनहि हमारो। अबहि संग हुइ अधिक दुखारो।
तहां न शरधा पुन रहि आवहि। रहै संग सो बहु पछुतावै॥ ३२॥
इस कारन सुधि प्रथम जनाई। चले जाहु तजि हठ अधिकाई।
नांहि त त्रास होइगो भारी। रहै कौन तबि धीरज धारी'॥ ३३॥
इत्यादिक सभिहूंनि सुनायो। हिरदे महां त्रास उपजायो।
बोले कितिक जोर जुग हाथ। 'रावरि के अनुसारी नाथ॥ ३४॥
निजसंग राखहु तउ हम रहैं। जाहि सदन को जे अबि कहैं'।
इम कहि आइसु ले घर गए। श्री गुरदेव संग तजि दए॥ ३५॥
पंज सऊर गुरु ढिग रहे। जिनहुं संग को हठ बहु गहे।
मतीदास इक गुरु दिवान। रहति समीप सदीव सुजान॥ ३६॥
रिदे शुद्ध सेवा बहु करी। अज़मत लही कुमति परहरी।
ग्यानवान समरथ सभि रीति। धीरज आदि ब्रिद गुन चीति॥ ३७॥
द्रिढ मन करिकै संग न त्यागा। श्री गुरदेव चरन अनुरागा।
दूसर रह्यो संग गुरदित्ता। ब्रिध के बंस जनम जिन लित्ता[1]॥ ३८॥
खशटम थान ब्रिद्ध ते भयो। राम कुइर जिस ते उपज्यो।
सरब गुरनि के संगी रहे। करामात महिं पूरन अहे॥ ३९॥
जिन के लेश न मोह न माया। उर ब्रह्म ग्यानी आनंद पाया।
दुइ इह संग अपर सिख तीन। रहे गुर के निकटि प्रबीन॥ ४०॥
सैफदीन ते लीनि बिदाई। जीन डारि त्यारी करिवाई।
अपर दास निज निज घर गए। गुरु भेव नहिं जानति भए॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादशि रासे 'श्री गुर त्यारी' प्रसंग बरननं नाम एक त्रिंसती अंशु॥ ३१॥

1. लिया था (जन्म)।

अंशु ३२

समाणे आगवन प्रसंग

दोहरा

कितिक सऊर नुरंग के जहिं कहिं खोजति थान।
देश बिदेशनि ग्रामपुरि बूझहिं नाम बखानु ॥ १ ॥

चौपई

'श्री गुर तेग बहादर हेरे ?। सुने किधौं किन थल इस बेरे।
कित ते आवति कित को जाते। करहु बतावनि तिनकी बाते' ॥ २ ॥
श्री गुर की माया भ्रिरमाते। पिखे सुने जिन से न मिलाते।
आदि अनंदपुरि द्वाबा देश। माझे माझ बिलोकि अशेष ॥ ३ ॥
गिर कहिलूर आदि बहु थानि। बूझति बिचरति नाम बखानि।
'श्री नानक मसनंद बिसाला। तिस पर इसथित जो इस काला ॥ ४ ॥
शाहु तलाश करति है तिस की। बिचरति सुधि लैबे सभि दिश की।
जिसके दुर्यो होइ कबि आइ। सो अबि हम को देहु बताइ ॥ ५ ॥
नांहि त गुर जान्यों जबि जाइ। पातशाहि तिस देहि सजाइ'।
इत्यादिक कहि कहि पुरि ग्रामनि। कहूं बिलोकत हिंदुनि धामन ॥ ६ ॥
संगति मैं बहु त्रास बखानैं। गुरु बतावहु जहिं तुम जानैं"।
माया ते मोहित मन होए। गुर दिशि गए न दरशन जोए ॥ ७ ॥
पिखे सुने जिन, मिले न तिनको। क्यों करि खोज पाइ गुर तन को।
सैफदीन ते लीनि बिदाई। कर जोरे तिन तिन ग्रीव निवाई ॥ ८ ॥
'सिमरहु दास जान करि मोही'। बूझ्यो 'कबि दरशन पुन होही' ?
सुनि श्री तेग बहादर भाखा। 'करी पूर मिलिबे अभिलाखा ॥ ९ ॥
धरहु ध्यान ही दरशन मोरा। बनहुं सहाइक जहिं कहिं तोरा'।
इम दे धीरज कीनि पयाना। अहै नगर इक नाम समाना ॥ १० ॥

ब्रिंद पठान तहां सरदार। गमनहिं सिबका पर असवार।
लघु लघु दुरग पुंज बनवाए। बसहिं भोग भोगति समुदाए ॥ ११ ॥
तिस पुरि सनमुख श्री गुर होए। गमनहिं जाहि सुमारग जोए।
आप तुरंग बली असवार। पंचे गमनहिं मारग लार[1] ॥ १२ ॥
शहिर समाणे पहुंचे जाइ। कितिक सिक्ख मिलिगे पुन आइ।
अरपी भेट बंदना कीनि। पुरी कामना दरशन लीनि ॥ १३ ॥
तिन समेत हुइ थल को हेरा। पुरि ते वहिर जाइ किय डेरा।
खान पान सगरो तहिं करिकै। थिरे प्रयंक पीठ पर चरिकै ॥ १४ ॥
तहाँ पठान एक सरदार। सतिगुर महिमा लखहि उदार।
सैफदीन ढिग बास चुमासे। तबि इह गयो हुतो गुर पासे ॥ १५ ॥
इक दुइ दिन समीप तहिं रह्यो। प्रभुता, शील, भेव गुर लह्यो।
तिसने सुन्यो इहां चलि आए। डेरा वहिर कर्यो किस थाएं ॥ १६ ॥
गमन्यो ले अकोर तबि नीकी। सेवा हेतु उमग करि ही की।
दसक संग नर ले करि गयो। आइ समीपी नंम्रि भयो ॥ १७ ॥
क्रिपा द्रिशटि श्री तेग बहादर। बूझति कुशल बिठायो सादर।
हाथ जोरि करि कह्यो पठान। 'मो पर रावरि करम[2] महान ॥ १८ ॥
पिखति प्रफुल्लित भा मन मेरा। जथा कमल सूरज को हेरा।
पीरन पीर महां दरवेश। सूरति जनु खुदाइ की बेश ॥ १९ ॥
मम ग्रिह मैं अबि सिवर उतारे। सभि सेवा मैं करौं सुखारे।
को दिन बसहु मिहर[3] को करीअहि। सैंफदीन समदास बिचरीअहि' ॥ २० ॥
श्री गुर कह्यो 'टिक्यो अबि डेरा। आप आइ करि दरशन हेरा।
नहीं मुकाम करनि को बांछे। आगे गमन करनि की काछे[4] ॥ २१ ॥
रिदै लालसा पूरन करीअहि। मिल्यो आनि सुनिकै इस घरीअहि।
भाउ बिसाल तोहि मैं हेरा। सभ ही भयो करनि ग्रिह डेरा ॥ २२ ॥
इस प्रकार कहि इक दुइ बेर। निकटि बैठि करि प्रेम बडेर।
ने आग्या को सीस निवायो। गमन्यो ग्रिह को उर हरखायो ॥ २३ ॥
संध्या परी नगर मैं गयो। गरी[5] बजार उलंघति भयो।
तिस ते परे जाइ थिर थाइं। पिखे सऊर आइं समुदाइ ॥ २४ ॥
तिन के संग बूझिवो कीनि। 'कित ते आइ कहहु नवीन ?।
आगै पहुंचनि है किस थान ?। कुछ उतलावति करहु पयान ॥ २५ ॥

---

1. साथ पंक्ति बनाकर। 2. कृपा। 3. कृपा। 4. इच्छा है। 5. गली।

किस उमराव पठे समुदाए। कै किस कारज शाहु पठाए'।
सुनति सऊरनि उत्तर दीनो। 'गमन देश ब्रिंदनि हम कीनो ॥ २६ ॥
श्री नानक गादी पर जोइ। हिंदुनि बिखै गुरू अबि सोइ।
तिसकी शाहु तलाशी करै। गन सऊर बहु खोजति फिरै ॥ २७ ॥
केचित माझे मांहि निहारे। कितिक बिलोकति धार पहारे[1]।
प्रापति नहीं फिरे बहु तेरा। जहां रिहाइश सुनि बहु हेरा ॥ २८ ॥
तिस कारन हम जाइं अगारी। खोजनि करहिं राज छित सारी'।
सुनि पठान तबि औचक कान[2]। मनहु तानि धन मार्यो बान ॥ २९ ॥
उठ्यो दलक[3] उर हट्यो पिछारी। कुमति शाहु की क्रूर बिचारी।
अस दरवेश बेश के संग। रचहि द्वैश कौ चहहि कुढंग ॥ ३० ॥
जानति हौं खै ह्वै तुरकाना[4]। दोजक परहि सजाइ महाना।
अबि मैं तिन को सकल जनावौं। निज निकेत महिं सिवर करावौं ॥ ३१ ॥
नातुर को बताइ नर दै है। अस नहिं होइ पहुंचि गहि लै हैं।
एव बिचारति छिप्प्र पयाना। जहां बिराजहिं क्रिपा निधाना ॥ ३२ ॥
आवति देखि प्रभू मुसकाए। 'कहां होल उरखान उपाए।
कहे किनहुं के क्यों करि त्रासा। इक खुदाइ पर धीर बिसवासा' ॥ ३३ ॥
बैठि निकटि कहि हौरे हौरे। 'टिकहु न गुरु अबहि इस ठौरे।
उठहु शीघ्र सभि किछु ले चालहु। ज़ीन तुरंगन तूरन डालहु ॥ ३४ ॥
सैन शाहु की फिरहि घनेरे। खोजति थल तुम बसिबे केरे।
जित कित फिरहिं बूझि तुम नाम। जहिं सिख संगत को बिसराम ॥ ३५ ॥
अंतरजामी तुम सभि जाना। मिले सऊर प्रसंग पछाना।
तऊ मोहि ते हित सुनि लीजै। भीखन करमा[5] शाहु लखीजै ॥ ३६ ॥
संत अनेकन को दुख दीना। धर को सिर ते करहिं बिहीना[6]।
तिस के ढिग पहुंचनि नहिं आंछो। जालम बडो जुलम जिन बांछो' ॥ ३७ ॥
सुनि सतिगुरु तिस कउ समुझायहु। 'सिरजनहारे जथा बनायहु।
सो नहिं टरहि उपाव अनेकै। इहु निरनै करि जानि बिबेकै ॥ ३८ ॥
सकल काज करता जगतेश। क्यों आनहुं उर त्रास विशेष'।
सुनि पठान कर जोरि बखाना। 'श्री मुख ते सच कहहु सुजाना' ॥ ३९ ॥

---

1. पहाड़ की धारा में। 2. अचानक कानों से सुनकर। 3. कांप गया। 4. तुर्कों का नाश होगा। 5. भयंकर काम करने वाला। 6. धड़ को सिर से अलग कर देता है।

पावन मम घर करहु गुसाईं। अंतर चलहु एव बनिआई।
बाक बिलास सुनावहु आपू। पिखे सुने पापनि गन खापू' ॥ ४० ॥
इम कहि शीघ्र खोलि करि घोरा। जीन पाइ भाखै कर जोरा।
'उठहु अरुढहु निस बिसरामहु। सुख सों बसहु चित बिन धामहुं ॥ ४१ ॥
तसकर आदि बिघन नहिं कोई। अवलोकहु मम दिशि अरजोई[1]।
सुनि सतिगुर पिखि भाउ बिसाले। चढ़ि तुरंग पर अंतर चाले ॥ ४२ ॥
पंचहुं सिक्ख संग निज लीने। अपर आप ते रुखसद कीने[2]।
गढी पठाननि की तहिं घनी। निकटि निकटि गाढ़ी बहु बनी[3] ॥ ४३ ॥
ले करि खान आपणी गयो। डेरा घर सुंदर महिं दयो।
भयो नचिंत आइ दर ठाढे। करे किवार असंजति गाढे[4] ॥ ४४ ॥
कह्यो 'ओपरे[5] नर नहिं बरैं। हमरे वहिर बात नहिं करैं।
इत्यादिक करिकै तकराई। गयो गुरु ढिग ग्रीव निवाई ॥ ४५ ॥
बाक बिलास सुने बहु भांती। सुपत जथा सुख मे बिचराती[6]।
सरब सेव त्रिण[7] आदिक केरी। करी तुरंगनि की तिस बेरी ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश तासे 'समाणे आगवन' प्रसंग बरननं नाम दोइ त्रिसती अंशु ३२ ॥

---

1. प्रार्थना। 2. विदा किया। 3. पास पास घने क़िले (पठानों के) बने हुए थे। 4. किवाड़ भली भांति बंद कर दिए। 5. अपरिचित व्यक्ति। 6. रात में। 7. घास आदि (घोड़ों के लिए)।

अंशु ३३
चिहके आगवन प्रसंग

दोहरा

भई निसा पुरि हेरि करि शाहि सऊर बिचारि ।
उतिर परे डेरा कर्यो लीनसि अंन अहार ॥ १ ॥

चौपई

लेति देति तहिं ज़िकर चलायो । 'किसू देश श्री गुर नहिं पायो' ।
इक नर तबहि बतावन कह्यो । 'आज दुपहिरा जबि कुछ ढर्यो ॥ २ ॥
नगर प्रवेशति मैं गुर हेरे । उत दिशि उतरे कीनसि डेरे ।
निसा आज की इहां बितावें । हुइ भुनसार सु अग्र सिधावें ॥ ३ ॥

सुनि औचक 'गुर पुरि इस आए' । शाहि सऊर घने हरखाए ।
तबहि बिलोकन उत दिशि गए । खोजति थल नहिं प्रापति भए ॥ ४ ॥
पुन दिश के नर जे मिले । तिन को बूझति या बिधि भले ।
'गुर किस थल महिं कीनसि डेरा ? । करहु बतावनि जिसने हेरा' ॥ ५ ॥

इक मानव सुनि सकल बताई । 'भयो तिमर तबि जे किस थाईं ।
उतरे हुते पिखे मैं सोइ । कहां गए अबि लखै न कोइ' ॥ ६ ॥
सुनि करि खोजति उर बिसमाए । परी राति किम देखहिं जाए ।
इत उत बिचरति रहे घनेरे । श्री सतिगुर नांहि न कित हेरे ॥ ७ ॥
शाहु नरनि तबि मसलत गाए । 'हैं पुरि मैं, नहिं अग्र सिधाए ।
इति दिश की कीजहि तकराई । बडी प्रभाति निकसि नहिं जाईं ॥ ८ ॥
जे गहि लेहिं गुर इस थान । हम पर शाहु प्रसंन महान ।
बखशहि अधिक दरब समुदाए । जिस तलाश[1] दिन बहुत बिताए ॥ ९ ॥
आलस करहु न, रहहु सुचेत । लेते बूझहि, सभि के भेत[2] ।

---

1 खोज । 2 रहस्य ।

अपनो डेरा इत ले आवहु । सभि पंथनि पर द्रिशटि लगावहु ।। १० ।।
इम कहि खान पान सभि करि कै । जित कित सगरे सथल निहरि कै ।
जागत रहे न निंद्रा लीनि । भई प्रभाति सभिनि मन चीन ।। ११ ।।
पुरि की गरी गरी[1] सभि हेरी । तकराई सभि पंथ घनेरी ।
हुतो दिवस महिं जहिं गुर डेरा । तहिं ते खोज पगन[2] को हेरा ।। १२ ।।
पहुंचे जाइ गढ़ी दरवाज़े । जिसके अंतर गुरु बिराजे ।
पिखे किवार असंजति[3] जबै । कहि करि खान हकार्यो तबै ।। १३ ।।
सुनि पठान तिन के ढिग आयो । हेर सलामा लेकर गायो[4] ।
'क्यों दर खरे काज को आह्यो ? । मोहि बुलावनि क्यों तुम चाह्यो ? ।। १४ ।।
शाहि नरन बच उग्र बखाना । 'खोजति देश बिदेशन थाना ।
हज़रत घनी तलाशी धरैं । जिकर सभा महिं नित प्रति करैं ।। १५ ।।
सो गुर तुम ने सदन दुरायो । देखति खोज हमहिं अबि पायो ।
बहु नर भनहिं नगर गुर आए । फिरहिं सकल थल, नांहिन पाए' ।। १६ ।।
सुनति खान रिस धारि बखान्यो । 'हिंदू, घर हमरे किम जान्यो' ।
खोज तुरंगम जो तुम हेरा । मैं चढ़ि कै संध्या कहु फेरा ।। १७ ।।
मम पति को होरी तुम कीनि । कहां खोज ऐसो द्रिग चीनि ।
बहुर न कहहु सुनहिं गे और । हसहिं खान सुनि कै सभि ठौर ।। १८ ।।
कहां सतर[5] को राखनि करिबो । कहां हिंदु घर अतर बरिबो[6] ।
अबि तुम कही सही मैं सारी । बहुर कहहु करि हौं तबि रारी ।। १९ ।।
मारन मरन होहि पुन जावै । अस बेसतरी तबहि जनावै ।
करहु ठीढता लाज न आवति । इह बिधि हम घर क्यों बन आवति ।। २० ।।
हसहिं बिरादर[7], लखहिं निलाजू[7] । क्यों करि सकहिं एव हम काजू ।
इत्यादिक करि कोप सुनायो । शाहु नरनि को बहु उरपायो ।। २१ ।।
भए निरास न बोले फेर । साचो लख्यो कुपत को हेरि ।
तज्यो समाणा नगर बहोरी । गए अग्र हेरनि थल औरी ।। २२ ।।
जाइ खान गुर के ढिग बैसा । 'भयो ब्रितांत कह्यो मैं जैसा ।
शाहु सऊर ठाढि भे द्वारे । रिस बच कहि करि इत ते टारे ।। २३ ।।
उचित करनि को मैं करि लीना । अबि तुम करहु जथा चित चीना' ।
शरधा हेरि खान की महां । मुसकावति सतिगुर बच कहा ।। २४ ।।
'साधु साधु तुझ को बहु बारी । सुख सों बैस बितावैं सारी ।

---

1 शहर की गली गली छान मारी । 2 घोड़ों के पद चिन्ह देखे । 3 बंद । 4 सलाम कहा । 5 परदा । 6 हिन्दू को घर में घुसा रखा है ? 7 भाई लज्जाहीन ।

अंत समैं जम त्रास न होवै। इम को अस फल दीरघ जोवैं'' ॥ २५ ॥
इम कहि इक दिन कीनि मुकामू। खान हरख युति राखे धामू।
निसा बिताइ दूसरी तहां। कर्यो कूच दे बर सुख महां ॥ २६ ॥
पंच सऊर संग मग चले। पूरब दिशा बदन करि भले।
सने सने चलि हैं मग चाली। पहुंचे आइ ग्राम करहाली ॥ २७ ॥
उतरे प्रभू लगायहु डेरा। अंन सु त्रिणनि मगाइ घनेरा।
खान पान सभि हूं तबि कीनि। क्रिया निधान सहित सुख लीनि ॥ २८ ॥
इक मसंद को घर करहाली। गुर आवन सुनिग्रों मति खाली।
तुरकनि त्रास धारि नहिं आयो। छरि करि थिर्यो सदन प्रविशायो ॥ २९ ॥
सतिगुर को सिख आइ न हेरहि। नहिं न बतावहु जे दर टेरहि[1]।
छिम निधान[2] कछू नहिं कह्यो। गुर धन अधिक लेति भी लह्यो ॥ ३० ॥
एक जामनी तहां बिताई। पिखी प्राति त्यारी करिवाई।
ज़ीन तुरंगन डारि अरूढे। गमने मारग जिन मति गूढे ॥ ३१ ॥
सपत कोस पर चिहका ग्रामू। तहां मसंद गिलोरा नामू।
प्रथम गुरु जबि जंगल देश। बिचरति सिक्ख उधार विशेष ॥ ३२ ॥
माता पिता मरि गे तबि तांके। भोजन दाता रह्यो न जांके।
तज्यो ग्राम चिहका तहिं गयो। गुर डेरे महिं थिर तबि भयो ॥ ३३ ॥
सेव तुरंगन की पर रह्यो। मन भावति भोजन को लह्यो।
कितिक बरख बीते गुर साथ। भयो तरुन बय, जान्यो नाथ ॥ ३४ ॥
तबि इस को सनबंधी कोई। डेरे निकटि जाति लखि सोइ।
मिलयो दौरि कै कर्यो सनेहु। अपनि ब्रितंत जनाइ अछेहु ॥ ३५ ॥
तिन भी सुनि कै प्रेम बधायो। सो चलि गयो, गुरु ढिग आयो।
बूझयो 'कौन मिल्यो तुझ साथ ?। जिह सों करी बहुत ही गाथ' ॥ ३६ ॥
कहिनि लग्यो 'सनबंधी मेरो। चिहके बसहि अचानक हेरो'।
सुनि गुर भन्यों 'क्यों न इत ल्यायो। जाति पंथ, क्यों ढिग न बसायो' ॥ ३७ ॥
'हुकम आपको प्रथम न भयो'। इम कहि, धाइ निकटि तिस गयो।
आन्यौ मोरि[3] करायो डेरा। करि अहार सेवा तिस बेरा ॥ ३८ ॥
गुर के पास बहुर ले आयो। हाथ जोरि थिर सीस निवायो।
कह्यो प्रभू 'तुम भ्रात गिलौरा। बसाहहु, लिहु धन को, निज ठौरा' ॥ ३९ ॥
इम कहि दरब दीनि चलि गयो। चिहके आनि ब्याह करि लयो[4]।

---

1. यदि कोई आकर बुलाए तो द्वार नहीं खोलना। 2. अर्थात गुरु तेग बहादुर जी। 3. मोड़ कर ले आया। 4. गिलोरा ने विवाह कर लिया।

कितिक मास महिं प्रभु ढिग लाइ। करि सेवा को लए रिझाइ ॥ ४० ॥
पुन गुर दीनि मसंदी तांहि। धन उगराहति संगति मांहि।
हांसी अरु हिसार लगि देश। लेहि दूर लगि दरब बिशेष ॥ ४१ ॥
कुछक देति सतिगुर को आनि। आप भयो दीरघ धनवान।
ब्रिंद अशरफी तिस के धामू। संचन करी लए गुर नामू ॥ ४२ ॥
इक दिजनी[1] तिसकी त्रिय संग। इम चरित्र को कयो प्रसंग।
मति भोरी बातनि बिरमाई। निज धन की सभि गाथ बताई[2] ॥ ४३ ॥
सुनि दिजनी छल रचि इम भाखा। 'दरब धरा महिं जबि को राखा।
तबि को पिख्यो कि नहीं निकारा ?। जर[3] आदिक लागैं हुइ कारा ॥ ४४ ॥
धन महिं जे दीनार कहावति। सो उल्ली[4] लगि बरन गुवावति।
कंचन भार होति बहु हौरा। रहै जि बिन देखे इक ठौरा ॥ ४५ ॥
इक दुइ मास बीत जबि जांइ। तबि आतम को देहु लगाइ।
जुगम जाम जबि सुसकहिं मरी। पुन संभारि देहु तहिं धरी' ॥ ४६ ॥
सुनति, हौल करि, ले तिह संग। चढ़ि कोशठ गहि मंच उतंग।
बसत्र बिछाइ तरे घर गई। गन दीनार[5] निकारति भई ॥ ४७ ॥
काशट के बासन महिं पाई। ऊपर गई मंच जिस थांई।
डारि सूकनी कह्यो बुझाई। हे दिजनी ! तूं देहु खिडाई' ॥ ४८ ॥
जाइ तरे पुन और निकारी। सभि उठाइ करि ऊपर डारी।
तिह ते हुतो बिप्र घर नेरे। द्रिशटि बचाइ बिप्रनी गेरे ॥ ४९ ॥
तरै गई लखि, मूठ बगावै[6]। करहि सुधारनि जब ढिग आवै।
इम मसंद धन दिजनी लीनि। सदन महान चिनावनि कीनि ॥ ५० ॥
सो अबि ले चिहके मैं अहै। तहिं के लोक शाहदी कहैं।
अस मसंद जिस नाम गिलौरा। लौ धन संगति ते बहु ठौरा ॥ ५१ ॥
तिसके सदन गुरु चलि गए। थिर तुरंग करि उतरति भए।
मिल्यो जोरि कर बंदन कै कै। अंतर ले गमन्यों सुख पै कै ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'चिहके आगमन' प्रसंग बरननं नाम तीन त्रिसती अंश ॥ ३३ ॥

---

1. ब्राह्मण स्त्री। 2. अपने धन के बारे में सब कुछ बता दिया। 3. ज़ंग लगने से काला हो गया। 4. फूही लगने से रंग खराब हो गया। 5. रुपये। 6. मुट्ठी भर कर डाल दें।

अंशु ३४

गुर गमन प्रसंग

दोहरा

बालिक प्रतिपाल्यो हुतो अपनि गिलोरा जानि ।
उतरे ताहि निकेत महिं शील क्रिपालु महान ।। १ ।।

चौपई

रूचिर प्रयंक उसावनि कीनि । छाद्यो आसतरन तल पीनि[1] ।
हाथ जोरि थिर बोल्यो सादर । बैठे श्री गुर तेग बहादर ।। २ ।।
त्रिण दाने की सेव संभारि । करिवाहसि बर बिबिध अहार ।
स्वादल मधुर सनिगध खवायहु । बहुर सकल सिक्खनि त्रिपताहू ।। ३ ।।
बसे निसा महिं पौठनि कीनि । सुपत जथा सुख गुरु प्रबीन ।
रही जाम जागे सुच धारी । मज्जन कर्यो बिमल बर बारी ।। ४ ।।
सच्चिदानंद ब्रह्म इक आहि । बैठे थित करि ब्रिति तिस मांहि ।
दिनकर चढ्यो, बिलोचन खोले । मनहुं कमल दल अली अडोले[2] ।। ५ ।।
इक बासुर तहिं कीनि मुकामू । मिलें सिक्ख सुनि सुनि गुर नामू ।
अनिक अकोर आनि कर जोरहिं । दरस बिलोकहिं, चरन निहोरहिं ।। ६ ।।
जिमीदार गन ग्राम मझारा । सभिनि आनि पद पर सिर धारा ।
जिम गुर भन्यों, जिनहुं तिम मान्यों । तिनको बर सुखदाइ बखान्यों ।। ७ ।।
मान्यो जिनहु न शरधा ल्याइ । तिन प्रति बोलें सहिज सुभाइ ।
जथा हुतासन महिद प्रकाशे । हुइ समीप, दुख सीत बिनासे ।। ८ ।।
लखहि न तेज, बीच बर जाइ । जरहिं अंग संकट बड पाइ ।
तिम सतिगुर की सेवा अहै । अदब सहित करि सभि सुख लहैं ।। ९ ।।
न्रिभै होइ शरधा जिन छीन । करहिं अवग्या लहिं दुख पीन ।
दूर देश की संगति आई । दरशन के अकोर अरपाई ।। १० ।।
निसा दूसरी कीनसि वास । क्रिपा धारि जान्यों निज दास ।
सेवा करी सकल बिधि नीकी । गुर महिमा महिं शरधा ही की ।। ११ ।।

---

1. मोटा बिछौना नीचे बिछाया । 2. मुँह रूपी कमल पर आँखों रूपी भँवरे ।

भई प्राति त्यारी करिवाई। निकटि गिलौरा लीनि बुलाई।
इक तरकश तीरन सों भर्यो। हुइ प्रसंन गुर बखशन कर्यो॥ १२॥
कह्यो 'धरम महिं द्रिड़ता कीजै। बस समेत सकल सुख लीजै।
जे करि जाहिं धरम ते हारि। संतति दारिद लहै उदार॥ १३॥
सुख नहिं पाइं, जाइं तुव प्रान। इम समझहु, रखि धरम महान'।
सिख्या अपर दई गुर तांहि। हय अरूढि चाले मग मांहि॥ १४॥
मुख करि पूरब दिशा पयाने। भयो गिलौरा धनी महाने।
हांसी अरू हिसार लौ ग्रामू। संगति ते आनहि धन धामू॥ १५॥
रंघर जाट ग्राम गन तिन के। परे बिरोध परसपर गिन के।
फिरति गिलौरा दोनहुं मांही। गुर प्रताप ते रोकहिं नांही॥ १६॥
रंघर ब्रिदन दे बिसवास। ग्राम जाट जहि आन सु पास।
कह्यो 'लंघाइ देउ मैं आगे'। इस भरोस ते सो नहिं भागे॥ १७॥
रंघर ब्रिद सु दए कटाइ। नहिं मूरख ने लीनि बचाइ।
तिस अधरम ते सो मरि गयो। बंस अधिक दारिद्री भयो॥ १८॥
भोजन की चिंता घर मांहि। कबि रवैं हैं कबि पै हैं नांहि।
इसी दशा महिं अबि लौ अहैं। 'हमने पिखे' सिंह कवि कहै[1]॥ १९॥
सतिगुर चिहके ते चलि आए। कर्रा ग्राम प्रथम गुर थाए।
गमने जबि श्री नानक मते। हरि गुविंद गुर उतरे हुते॥ २०॥
बहिर ग्राम ते अहै सथान। पहुँचे आनि गुरु भगवान।
उतीर परे असु बंधन कीने। शुभ आसन पर गुरु असीने॥ २१॥
तहां मसंद बसहि मति मूढ़ा। जो न लखहि आशै गुर गूढा।
तुरकेशुर सभि देश बिदेश। खोजहि गुर को सुन्यों विशेष॥ २२॥
मैं नहिं मार्यो जाउं कदाई[2]। अस चिंता बहु रिदे उपाई।
सुनिकै सतिगुर को आगवनू। दुर करि रह्यो आपने भवनू॥ २३॥
भाख्यो त्रिय सों 'को जि हकारै। नहीं इहां—तिस देहि उचारै'।
अंतरजामी लखि बिधि सारी। कह्यो न कुछ, तूछनि मुख धारी॥ २४॥
मिल्यो एक राहक तबि आइ। कुछक सेव कीनि वथ[3] ल्याइ।
भए प्रसंन दरब गुर दीनो। श्री मुख ते फुरमावनि कीनो॥ २५॥
'कूप कि बारी[4] दिहु बनवाइ। इस थल उपबन सघन लगाइ'।
इम कहि निसा बसे गोसाईं। भई प्राति त्यारी करिवाई॥ २६॥

---

1. कवि संतोख सिंह कह रहे हैं कि हमने देखे हैं। 2. अर्थात् मैं न कहीं मारा जाऊँ। 3. वस्तुएँ। 4. बावड़ी।

जीन तुरंगन पाइ सुहाए। भए अरूढनि पंथ सिधाए।
इक दुइ मजल दीरघा चाले। बांगर देश बिखै सिख नाले॥ २७॥
'खरक' ग्राम नियग्रोध बिसाला। तहां जाइ डेरा गुर डाला।
जीन उतारे त्रिण अनवाए। दई निहारी हय त्रिपताए॥ २८॥
करिवायहु बहु भांति अहारा। खान पान करि भले प्रकारा।
आन्यों मंच तांहि पर बैसे। संगी सिख बोल्यो ऐसे॥ २९॥
'तुरकनि घाल बिसाली घाली। अवनी राज तेज बड नाली।
नहीं मवासै[1] कित हूँ कोई। हाला[2] भरहिं नंम्रि सिर होई'॥ ३०॥
सुनिकै सतिगुर बाक बखाना। 'सने सने अबि करि हैं हाना।
पाप बडेरे कहु नित लागे। भए अंध दुरमति चित पागे॥ ३१॥
तपन महां तप धरम कमावनि। यां ते राज सु तेज बधावनि।
होहि प्रिथीपति फल को पावैं। न्रिपति बनहि पुन धाम कमावैं॥ ३२॥
करहि न्याउं, नहिं लोभी बनैं। रच्छहि जगत दया मन सनैं[3]।
दूख निवारहि सुख को देहिं। उचित प्रजा ते धन को लेहिं॥ ३३॥
तसकर बटपारनि[4] को मारहि। इत्यादिक गन ब्रिघन बिदारहिं।
तिस की कुल ते राज न जाइ। जथा जोग जो धरम चलाइ॥ ३४॥
जिनहुं प्रथम तप करि भे राजा। राज पाइ पुन लगे कुकाजा।
बिषय भोग महिं बहु गल ताने। प्रजा कशट को सुनहिं न जाने॥ ३५॥
ज्यों क्यों करि लें धन को छीनि। दया न ठानहिं देखहिं दीनि।
इम तिन पर अनुमान करीजै। दिन प्रति राज तेज इन छीजै॥ ३६॥
प्रथम तुरक छितपति जे भए। सभि नर नारि न्याउं को किए।
हिंदू मुसलमान समुदाइ। सभि इमान पर राखि टिकाइ॥ ३७॥
अबि नौरंग बड कुमति उठाई। हिंदू धरम देति बिनसाई।
जबरी करहि जुलम मद मानी। पीड़त प्रजा त्रास को ठानी॥ ३८॥
यांते जान्यों जाइ बिदत ही। राज तेज अबि रहै न कित ही।
सने सने सगरो बिनसावैं। थिरै न अस को दुंदभि वावै[5]'॥ ३९॥
इम कहि तूशनि भए गुसाईं। सुपति जथा सुख निसा बिताई।
भई प्राति करि कूच पयाने। पहुंचे खटकड़ ग्राम सथाने॥ ४०॥
पंचहुं सिक्ख संग महिं लीने। अपर न मिलहिं बरज करि दीने।
हिंदू धरम जगत महिं राखनि। सतिगुर करैं रिदै अभिलाखनि॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'गुर गमन' प्रसंग बरननं नाम चतुर त्रिंसती अंशु॥ ३४॥

---

1. विद्रोही। 2. कर। 3. मन में दया भरकर जगत की रक्षा करता है। 4. बटमार, लुटेरा। 5. कोई नगारा बजाने वाला भी नहीं रहेगा, अर्थात् सर्वनाश होगा।

अंशु ३५

आगरे सतिगुरु आगवन प्रसंग

दोहरा

खटकड़ ग्राम समीप ही उतरे श्री गुरदेव ।
तहिं के राहक आन करि नहीं करी कुछ सेव ॥ १ ॥

चौपई

धन को दे करि मोल मंगायो । खान पान सभि बिधि करिवायो ।
सेव तुरंगनि की सभि कीनि । त्रिण अनवाइ[1] मोल को दीनि ॥ २ ॥
जिमीदार तहिं के तबि आए । पुशट तुरंगम देखि लुभाए ।
मिलि आपस महिं मसलत ठाने । 'अधिक मोल के तुरंग महाने ॥ ३ ॥
लेहु निसा महिं इनहुं चुराइ । इह परदेसी लखहिं न काइ ।
चले जाहिंगे बस न बसावैं । इन पीछे हम सदन बंधावें ॥ ४ ॥
बेचहिंगे धन पाइ बिसाला । औचक भयो लाभ इस काला' ।
इम आपस महिं गिन मति मूढ़े । चहै तुरंगन होइ अरूढ़े ॥ ५ ॥
भयो निसा महिं तिमर घनेरा । सतिगुर सुपति भए तिस बेरा ।
तसकर बनि राहक सो आए । हेरि तुरंगनि के नियराए ॥ ६ ॥
खशट चोर खट घोरनि हेतु । हुइ डेरे के नेर[2] सुचेतु ।
जावत पहिरु जागति रह्यो । ताकति रहे न हय को गह्यो ॥ ७ ॥
ढरी जामनी ते अलसायो । निकटि बिलोकहिं तिन लखि पायो ।
खशटहुं खट घोरन की ओर । पहुंचि समीपी तूरन चोर ॥ ८ ॥
जबि बंधन कहु मोचन लागे[3] । अंध भए ततकाल कुभागे ।
हटि आगे ते गए पिछारी । जबहि दाम दिशि भुजा पसारी ॥ ९ ॥
कछू न दीसहि द्रिशटि प्रहानी[4] । पिखि अदभुत गति मति बिसमानी ।
जबि घोरनि ते दूर सिधारैं । सभि किछु वसतू अग्र निहारें ॥ १० ॥
हयनि समीपी होवहि हेरि । तिम ही द्रिशटि बिनासहि फेर ।
इह बिधि लखि अजमत जुति जाने । दीन होइ सभि बंदन ठाने ॥ ११ ॥

---

1. मंगवाकर । 2. निकट । 3. जब रस्सी को खोलने लगे । 4. नजर जाती रही ।

सदन आपने चलि करि आए। सुजसु बखानहिं मिलि समुदाए।
तिन महुं स्याने कीनि बखान। 'इह गुर समरथ महिद महान॥ १२॥
होति प्रभाति प्रसंन करीजै। मन भावति सुख को बर लीजै'।
मिलि सभि ने मसलत इह धारी। 'ग्राम कूप खारी सभि बारी[1]॥ १३॥
बर जाचउ मीठा जल होइ। जिते बसहु सुख लिहु सभि कोइ।
सांझा सभि को कारज अहै। इस प्रकार को जे बर लहैं'॥ १४॥
भई प्रभाति दूध दधि[2] लीनि। चावर[3] चून सु घ्रित नवीनि।
हम निशकपट गए गुर पास। ठांढे होइ करी अरदास॥ १५॥
'हम राहिक करता अपराधू। अधम उधारन तुम प्रिय साधू।
महि महिं महिमा महां महां है[4]। सुनियति गुरु की जहां कहां है॥ १६॥
हुइ अनजान पने मन खोटे। जानि सकहिं किम जे मति खोटे।
बखशावनि कौ मिलि चलि आए। क्रिपा करहु अबि दयाल सुभाए'॥ १७॥
सुनि अकपट गुर कह्यो क्रिपाला। 'भले लखहु आए इस काला।
निज अपराध बिदत कहि दीनि। बिगरे काज सुधारनि कीनि॥ १८॥
सभि की कहहु कामना कौन। क्या जाचत हैं उचरो तौन'।
गुर करुना को राहक जानी। बंदे पान बखानी बानी॥ १९॥
'हमरे ग्राम समी जहिं तीका[3]। जल खरो हुइ, मिलै न नीका।
आप अहो सति पुरख महाना। श्री मुख ते जहिं करहु बखाना॥ २०॥
इहां कूप को अबि खनवावहु। जिह सथान मैं आप बतावहु।
तहां खनहिं जल मीठा होइ। हरखहिं पान करहिं सभि कोइ॥ २१॥
इही कामना सभि के मन की। शरधा रावरि केर बचन की'।
तबि सतिगुर कर धनुष संभारा। तरकश ते इक तीर निकारा॥ २२॥
संधि पनच महिं ऐंच चलायो[5]। पर्यो दूर गुर बाक अलायो।
'जहिं लगि बान हमारो गयो। तहिं लगि जल मीठो करि दयो॥ २३॥
तिस ते उरे कूप जो लावहु। जल मीठो हुइ पी त्रिपतावहु'।
सुनि कै राहक मन हरखाए। हाथ जोरि सभि सीस निवाए॥ २४॥
गुरु बाक महिं शरधा धारी। कूप खनायहु भा बरबारी।
इक दिन गुर राखे कर जोरति। सेवा कीनसि चरन निहोरति॥ २५॥

---

1. सब का पानी खारी है। 2. दही। चावल। 3. पृथ्वी पर बहुत अधिक महिमा है। 4. जहाँ तक हमारे गांव की सीमा है। 5. चिल्ले पर चढ़ाकर जोर से छोड़ा।

दिवस आगले ज़ीन पवाए। हय अरुढ़ि गुर अग्र सिधाए।
नगर बिसाल 'जींद' जिस नाम। चारहुं बरन बसहि अभिराम ॥ २६ ॥
राज तुरक को क्रूर बडेरा। करहि कुकरमनि हिंदुनि जेरा[1]।
तहाँ जाइ गुरु कीनो डेरा। जहां सथान भलो बड हेरा ॥ २७ ॥
अंन आदि सभि मोल मंगाए। सिद्ध रसोई करि त्रिपताए।
त्रिण दाना हय दीनि निहारी। सुपति जथा सुख निशा गुजारी ॥ २८ ॥
उठे प्रभाती कीनि शनाने। 'करहु कूच' गुर बाक बखाने।
जीन तुरंगन पर तबि डाले। हुइ अरुढ़ आगे मग चाले ॥ २९ ॥
नरदक देश[2] बिखै गमनंते। मजल अलप करि पुन उतरंते।
जींद परे इक है गुर थाना। तहाँ करनि डेरा हम जाना ॥ ३० ॥
आगै थाउं बिदत नहिं कोई। सिक्खी अलप हुती तितजोई।
यां ते नहिं किन थान बनायो। सिक्खन बिखै नहीं बिदतायो ॥ ३१ ॥
नगर आगरे मारग जौन। करि कै सेध चले गुर तौन।
पंथ बिखै नहिं कीनि मुकामू। उतरे नहीं किसी नर धामू ॥ ३२ ॥
दिन प्रति गमने जाइं अगारी। उतरैं जामन देहिं गुजारी।
को सिख संत मिलै सुख पाइ। सतिगुर के पग सीस निवाइ ॥ ३३ ॥
उदासीन हुइ सभि ते चाले। जर नीवीं तुरकान बिसाले[3]।
तिबहुं उखारनि उद्दम धारा। सिर पर दे करि दोष उदारा ॥ ३४ ॥
केतिक दिन लगि गमने गए। अलप मजल करि निस उतरए।
भोजन त्रिण दानारु निहारी। मोल मंगावहिं करहिं अहारी ॥ ३५ ॥
इसी रीति सभि पंथ पयाने। नगर आगरा तबि नियराने।
तुरकनि की सो भी रजधानी। बासहि चिरंकाल तिस थानी ॥ ३६ ॥
निकटि निकटि उपबन लगवाए। खरे सफल तरुवर समुदाए।
तुरश[4] मधुर मेवे जिन महीआ। रखबारे बैठे जहिं कहीआ ॥ ३७ ॥
केतिक दीरघ ब्रिच्छ उतंग। तिन पर बोलैं अनिक बिहंग।
सभि ते सुंदर हुतो बिसाल। बाग बिलोक्यो गुरू क्रिपाल ॥ ३८ ॥

1. हिन्दुओं को अधीन करके। 2. बांगड़ का इलाका - हरियाणा में हिसार, करनाल तथा रोहतक और इसके आस पास का प्रदेश। 3. तुर्कों की जड़ बहुत गहरी है। 4. खट्टे।

बीच रौंस[1] जिह बनी घनी है। बनी ब्रिच्छन की फलन सनी हैं।
बैठनि हेतु सथंडल महां। चार कोर जुति सिरजे तहां ॥ ३९ ॥
मंदर बन्यो ब्रिद दरवाजे। सुंदर देति अनंद बिराजे।
तहां जाइ उतरे गुर पूरे। करें बिलोकनि उपबन रूरे ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'आगरे सतिगुर आगवन' प्रसंग बरननं नाम पंच त्रिसती अंशु ॥ ३५ ॥

1. क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

अंशु ३६
अयाली प्रसंग

दोहरा

उपबन बिखै प्रवेश भे पिखि रमनीक सथान ।
उतरे करि के हय खरे बंधन करि दिढ पान[1] ।। १ ।।

चौपई

निज निज अशु ढिग सिख तबि बैसे । चितवति गुरु करहिं अबि कैसे ।
देखहिं बाग प्रभू बहु भांते । इत को आवति उत को जाते ।। २ ।।
बहुर सथंडल पर चढि फिरैं । आवनि जानि बारि बहु करैं ।
बाग पौर की दिशा बिलोकहिं । अपर दिशनि ते द्रिशटी रोकहिं ।। ३ ।।
फिरहिं कदमपोशी[2] कहु करते । उपबन दर को बहुत निहरिते ।
तिस छिन एक अयाली आयो[3] । अजा[4] ब्रिंद को फिरति चरायो ।। ४ ।।
गमनति देखि हकार्यो तांही । सुनि गुहार चलि आयो पाही ।
दरशन करि पग बंदन ठानी । तबि गुरदेव कही मुख बानी ।। ५ ।।
'हमरो काम एक करि आउ । निज मिहनत ले करि पुन जाउ ।
अजा ब्रिंद हम रहहिं बिलोकति । राखहिं गे चहुंदिशि ते रोकति' ।। ६ ।।
सुनति अयाली लबु ने प्रेर्यो । अरु बड पुरख सु दरशन हेर्यो ।
कहति भयो 'दीजहि फुरमाइ । कारज करिहौं जथा रजाइ' ।। ७ ।।
मानी बात सु कर्यो निहारनि । हुती छाप[5] कर करी निकारन ।
जिस महिं बहुत मोल को हीरा । उज्जल अशट कोर करि चीरा ।। ८ ।।
दई अयाली के तबि कर मैं । कह्यो बहुर 'ले जाहु नगर मैं ।
दोइ रजतपण[6] को पकवान । होइ सनिद्ध अधिक मिशटान ।। ९ ।।
गहिणे[7] धरहु छाप को जावहु । सो अबि ही पुरि ते लै आवहु' ।
सुनति अयाली ने तबि कह्यो । 'मो पर चीर सु जीरण, रह्यो[8] ।। १० ।।
किस महिं आनौं पाइ मिठाई । आछ रहै लेहु तुम खाई' ।
तबि गुरु अपणे ऊपर केरा । हुतो दुशाला मोल बडेरा ।। ११ ।।

---

1. हाथों से तकड़े करके बांध दिए घोड़े । 2. टहलते हैं । 3. गडरिया । 4. बकरियां । 5. अंगूठी । 6. रुपये । 7. अंगूठी को गिरवी रखो । 8. मेरे कपड़े फटे हैं ।

लियो उतारि दियो कर तांही। 'कह्यो पाइ आनहुं इस मांही।
बिलम न कीजहि गमनहु पुरि मैं। जाइ खरीद न संकहु उर मैं[1] ॥ १२ ॥
पटी कामरी बिखै छपाइ। चल्यो अयाली पुरि दिशि धाइ।
मतीदास शिर दूर दिवान। देखि क्रिया किय क्रिपा निधान ॥ १३ ॥
आइ समीप बूझिबो कीनि। 'कहां रंक के कर तुम दीन?
कहां पठ्यो, क्या ल्यावनि करै? गमन्यो नगर छिप्रता धरै' ॥ १४ ॥
सुनि सतिगुर तिह सकल बताई। 'हम को छुधा लगी अधिकाई।
कुछ पकवान मंगावन ठाना। तुम भी छुधति कीजियहि खाना' ॥ १५ ॥
मतीदास बोल्यो कर जोरि। 'मुझ ढिग हुते रजतपण और।
सो पठि देति छाप क्यों दई। जिस महिं बज्र मोल बहु मई ॥ १६ ॥
बहुर दुशाला बिगरहि रंग। रहै व अस जे पहिरहु अंग।
अपर बसत्र ले करि सिख जाते। आनति छिप्र जथा रुचि खाते ॥ १७ ॥
सुनि गुर कह्यो 'बिलम इम लागति। पुरि ग्याता भेज्यो. गा भागति।
खुरजी खोलि रजतपण लेति। सिख सुनेत करि तिस के देति ॥ १८ ॥
गरी बजार नहीं जिन हेरा। आवति जाते लागति देरा'।
बाक अपूरब गुर के सुनि कै। तूशनि ठानि रह्यो मन गुनि कै ॥ १९ ॥
इनहुं कहीं नहिं कबिहुं ऐसे। कहां छुधा अरु बोलहिं कैसे।
को जानहि क्या रचना रची। दई छाप हीरा बिच खची ॥ २० ॥
बिसमत सिक्खनि संग सुनाइ। सतिगुर फेर्यो अपर सुभाइ।
बंधि तुरंग तरोबर साथ। बैठे आइ सकल ढिग नाथ ॥ २१ ॥
श्री मुख ते ऐसे फुरमाइ। 'रहीअहि पिखति अजा समुदाइ।
चली न जाइं गरीब अयाली। आवति लगि सभि रखहु संभाली' ॥ २२ ॥
तबि सिक्खयनि मान्यों कर जोरि। देखति रहे अजा की ओर।
अबहि अयाली को जु बितांत। सुनीअहि मन श्रोता अविदात ॥ २३ ॥
ले करि छाप दुशाला गयो। बडे बजार प्रवेशति भयो।
देखी जाइ हाट हलवाई। जहिं नाना बिधि ब्रिंद मिठाई ॥ २४ ॥
खरो होइ करि हाथ उभारा। देति मुंदरी बचन उचारा।
'इह राखहु गहिणा ढिग लै हौं। दोइ रजतपण सौदा दै हों' ॥ २५ ॥
जबहि बानी अहि कर महिं लीनि। बहु मोला पिखि हीरा चीनि।
मन बिसमान्यो बूझनि ठान्यों। 'इह तैं कहहु कहां ते आन्यों ॥ २६ ॥

1. मन में संशय न करो।

किस उमराव हाथ की अहैं। तोहि उचित नहिं, किम तूं कहैं।
तसकर करि चोरी कहु ल्यायहु। कै बंचक[1] हति कर किस आयहु ॥ २७ ॥
कहहु साच नतु देउं गहाइ। इह सौदा मोकहु दुखदाइ'।
डरति अयाली सकल सुनायो। 'इक उमराव बाग महिं आयो ॥ २८ ॥
दे मोकहु हित पठ्यो मिठाई। नहिं चोरी करि मैं इह पाई।
देहि रजतपण तबि इह लैहैं। छुधित छिप्प्र, इच्छत सो खैहैं' ॥ २९ ॥
धीरज बाक सुने हलवाई। गही तराजू तुलनि मिठाई।
जबहि तोल करि पावन[2] लागा। पल्ला कर्यो दुशाले आगा ॥ ३० ॥
पिखति अचंभै हुइ हलवाई। इह मूरख क्या करहि बुराई।
बसत्र हजार रजतपण केरा। हित पकवान बिगार बडेरा ॥ ३१ ॥
सही चोर इह जान्यो जाइ। को मालिक अस बसत्र गवाइ।
बड मूरख कीमति नहिं जानहि। ल्याइ चुराइ बिगारनि ठानहिं ॥ ३२ ॥
उठ्यो हाट पर ते हलवाई। गही भुजा दिढ भाज न जाई।
जहिं चबूतरा बड कुतवाली। तहिं ले गमन्यो त्रसति बिसाली ॥ ३३ ॥
ब्रिंद बरनि मैं थिर कुतवाल। पकरहि चोर यार जहि जाल।
तिह ठां[3] ठांढे होइ पुकारा। 'सुनि अदालती काजा हमारा ॥ ३४ ॥
इह बंचक कै तसकर कोई। बसतु अजाइब हैं ढिग दोई।
गहिणे धरनि हेतु इह ल्यायो। असमंजस पिखि मैं लखि पायो ॥ ३५ ॥
मम सिर दोश न आवै कोई। तुम हजूर[4] कीनि मैं सोई।
करि लिहु निरनै हुइ जिस भांती। तसकर, बाटमार बिह घाती[5]' ॥ ३६ ॥
इम कहि दोनों छाप दुशाला। धरि दीने सभि महिं तिस काला।
पिखि कुतवाल बिसाली मोल। ताड़्यो कहि करि क्रूर जि बोल ॥ ३७ ॥
'कहहु साच नतु दै हौं फांसी। कहिं ते आने घात बिबासी[6]।
सकल खोज को देहु बताइ। नांहि त प्रान तुरत तुव जाइं' ॥ ३८ ॥
सभि नर तिसके मुख को हेरति। सुनिबे हेतु कहनि को प्रेरति।
त्रसति बिसाल अयाली बोल्यो। 'चोर नहीं मैं किस घर फोल्यो[7] ॥ ३९ ॥
नहिं बटवार न बंचक कोई। सुनियहि ब्रिथा जथा इह होई।
अजा चरावति बहिर फिरंता। आयो उपबन निकटि तिखंता ॥ ४० ॥

---

1. ठग। 2. डालने लगा। 3. स्थान। 4. हजूर, सामने। 5. या यह चोर अथवा लुटेरा या घातक है। 6. विश्वासघात करने वाले। 7. मैंने किसी के घर की चोरी नहीं की।

तहिं उमराव महान समाना। उतर्यो आनि तुरत ही जाना।
आवति मो कहु निकटि बुलायो। दीनि मुंदरी हाथ, अलायो॥ ४१॥
इस को धरि ले आउ मिठाई। बीच दुशाले लेहु पवाई।
आनि उताइल मैं इस दीनी। लखि करि तसकर भुज गहि लीनि॥ ४२॥
बरजि बरजि मैं इह समुझायो। नाहक जबरी तें गहि ल्यायो।
उपबन बिखै खशट असवार। जानहुं तसकर कै बटमार॥ ४३॥
कै किस थल को बड सरदार। साधु असाधु लेहु निरधार।
कहौं न कूर, हेरि तिन लीजहि। बूझहु चलि करि निरनै कीजहि॥ ४४॥
मो महिं दोष होइ जे कोई। चहहु सासना दीजहि सोई।
इम सुनि सभि ही लख्यो अयाली। निरनै करिबे चह्यो बिसाली॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'अयाली' प्रसंग बरननं नाम खशट त्रिसती अंशु॥ ३६॥

अंशु ३७

आगरे दुरग प्रसंग

दोहरा

सुनि अदालती सभिनि महिं साच लखनि के हेतु ।
जुगल सिपाही सों कह्यो 'गमनहुं संग सुचेत ॥ १ ॥

चौपई

उपबन बिखै जाहु इस संग । पिखहु तहां असवारनि ढंग ।
नाउं गांउं बूझहु सभि भांती । आवनि जानि कहां को, जाती ? ॥ २ ॥
किस थल के हुइ हैं सरदार ? । नांहि त लखे परहिं बटमार ।
माल खसोटनि किस को आए । बैठि बहिर जिन असन मंगाए ॥ ३ ॥
जिम भाजहिं नहि, सो गति कीजै । भेद मधुर बाकनि ते लीजै ।
इक तहिं रहहु शीघ्र इक आवै । जथा होइ तिम आनि सुनावै' ॥ ४ ॥
कर्यो अगारी तबहि अयाली । चले सिपाही साथ उताली ।
खड़ग सिपर जिन धारनि कीनि । उपबन को गमने संग लीनि ॥ ५ ॥
आवति देखि दूर ते जबै । मतीदास इम बोल्यो तबै ।
'पठ्यो आप को आवति सोई । आन्यो असन भि नांहि न जोई ॥ ६ ॥
सभिनि सुनावति सतिगुर कह्यो । 'आवति उही ठीक तुम लह्यो ।
तऊ जानीअहि बन्यो कुसूत । आने संग दोइ जमदूत ॥ ७ ॥
नहिं सौदा आन्यों हम लखीयति । अग्र जुगनि के छूछे पिखीयति' ।
सुनि कै मतीदास ते आदि । गुर चरित्र ते भे बिसमादि ॥ ८ ॥
पान अयाली के पकवान । अनवावनि[2] करि चाहति खान ।
जे नित सुचि सों करनि अहार । अत्रि बिलोकि क्या कीनि उचार ॥ ९ ॥
दो जमदूत आंवते साथ । कहां रची गति इस बिधि नाथ ।
करहि बिचारनि को बहु बारी । नहिं बोले, प्रण गुरु अनुसारी ॥ १० ॥

---

1. दण्ड । 1. मंगवाना ।

ब्रिध के बंस साधु गुरदित्ता। होनहार पर मन द्रिड़ कित्ता।
जो गुर करहिं भली सभि होइ। कोटि जतन ते मिटहि न सोइ ॥ ११ ॥
इम लखि कै तूशनि हुइ रह्यो। भली कि बुरी नहीं बच कह्यो।
इतने महिं पहुँचे चलि तीनो। उपबन बिखै प्रवेशनि कीनो ॥ १२ ॥
खरे हज़ूर गुरू के होइ। बूझे 'कित ते हहु तुम कोइ ?।
कहां नाम किस ग्रोम बसंते ?। कित ते आइ कहां गमनंते ॥ १३ ॥
सुनि बोले सतिगुरु सुखधामू। 'तेग बहादर है हम नामू।
श्री नानक की करुना अहै। यांते गुरु जगत मैं कहै ॥ १४ ॥
बिचरहिं जित कित सहिज सुभाइ। थिर हुइ बसहिं नहीं इक थांइ।
इग सुनि कै गुर ते तिस ठौरा। गमन्यो एक सिपाही दौरा ॥ १५ ॥
संग अयाली के थिर खर्यो। प्रभु ने तबहि बूझिबो कर्यो।
'छाप दुशाला कहां मिठाई। नहिं आन्यो कछु निकटि इथाई ॥ १६ ॥
सुनि कर जोरि कह्यो तिस काला। 'गह्यो बानीए देखि दुशाला।
चलि चबूतरे महिं पहुँचायो। छीन मोहि ते तहां रखायो ॥ १७ ॥
हीरा हेरि मुंदरी मांही। धरि अदालती अपने पाही।
निरने करनि हेतु पठि दोइ। इक ते गयो बूझ करि सोइ ॥ १८ ॥
इम मोकउ मुशकल बनि गई। अबि गमनों सभि ही कहि दई।
जाइ अयाली अजा सम्हारी। गयो सिपाही सकल उचारी ॥ १९ ॥
'सोढी श्री गुर तेग बहादर। मानति सभि हिंदू जिह सादर।
छाप दुशाला है तिन केरा। खट असवार संगे तिह हेरा ॥ २० ॥
सुनि अदालती उर हरखाना। औचक भलो आपनो जाना।
जिसके हित खोजति बहु देश। गाहिन शाहु नित चहै विशेश ॥ २१ ॥
आइ अचानक ही अबि गयो। खोजे कहूं न प्रापति भयो।
गहिकरि सुधि[1] को देहिं पठाई। शाहु प्रसंन होहि अधिकाई ॥ २२ ॥
इम ठहिराइ बिचारति ओरे। मम ढिग अहैं सिपाही थोरे।
किलेदार के पहुँच्यो पास। सरब बारता करी प्रकाश ॥ २३ ॥
'तुझ मुझ पर प्रसंन ह्वै शाहू। औचक आइ गयो गुर पाहू।
जिस हित कई बार परवाने। आए हुते पठे तबि जाने ॥ २४ ॥
इसी रीति सभि देशनि मांही। शाहु तगीद, पाइ कित नांही।
पूरब उत्तर पशचम दच्छण। खोजति रहे न लह्यो बिच्छण ॥ २५ ॥
सो तुम फते लेहु इस काला। गहि लीजहि गुर को दर हाला[2]।

---

1. समाचार, खबर। 2. तुरंत।

सुख सों राखहु दुरग मझारे। सुधि पठि देहु शाहु के द्वारे' ॥ २६ ॥
कहि सुनि करि दोनहुं हरखाए। ब्रिंद सिपाही करि इक थाएं।
चल्यो दुरगपति अरु कुतवाल। बोलति मोदति करति उताल ॥ २७ ॥
सो उपबन की है दिशि चार। पठे चार सै तहिं असवार।
'बनि सुचेत हजहि सभि ठाढे। होहि न अस भाजैं बनि गाढे ॥ २८ ॥
बहिर बाग़ ते थिर सभि रहीयहि। निकसि न भाजहि दिढ ह्वै लहीयहिं'।
आप प्रवेशे अंतर जाइ। लिए संग मानव समुदाइ ॥ २९ ॥
सतिगुर बैठे जाइ निहारे। दोनहु ठाढे भए अगारे।
बूझनि लगे, 'गुरु तुम अहो ?। नाम समेत हमहिं सभि कहो ॥ ३० ॥
हिंदू जन के पूज कहावहु। अपनो बरन सथान बतावहु'।
सुनि तुरकनि ते प्रभु जी कहैं। 'जगत गुर श्री नानक अहैं ॥ ३१ ॥
हम तिन के दासनि के दासे। मद्र देश[1] महिं बास अवासे।
तेग बहादर नाम हमारा। कुल सोढी जग महिं उजिआरा' ॥ ३२ ॥
सुनति दुरगपति अरु कुतवालू। लख्यो भेद बोले ततकालू।
'हुकम हमहुं पर हजरत केरा। परवाना भेज्यो बहु बेरा ॥ ३३ ॥
इक हम पर ही नहीं पठायो। देश बिदेशनि सभिनि जनायो।
श्री गुरु तेग बहादर जोऊ। जिस को जिस थल प्रापति होऊ ॥ ३४ ॥
रखहु टिकाइ खबर पहुंचावहु। खोजहु ग्राम नगर जिह पावहु।
अबि आगवन अचानक भयो। हजरत को कारज हुइ गयो ॥ ३५ ॥
मिहरबनगी हम पर धारहु। दुरग बिखै डेरा चलि डारहु।
तूरन सुधि लिखि पठहिं तुमारी। सुनहि शाहु, जिम करहि उचारी ॥ ३६ ॥
हुइ है तथा, कि निकटि बुलावै। कै लिखि करि तुम को छुटकावै।
क्यों तुम गहहु ? आदि इस बात। जे हम कहु बूझहु बिरतांत ॥ ३७ ॥
हम ते उत्तर लहहु न कोई। जानहि हजरत, करहि सु होई।
कहनि सुननि की चाहि न राखहु। चलिबे दुरग बिखै अभिलाखहु' ॥ ३८ ॥
श्री गुर बीर धीर गंभीर। चढिबे तुरंग मंगायहु तीर।
भए अरूढि बाग ते चाले। पंचहु सिक्ख भए चढ़ि नाले ॥ ३९ ॥

---

1. पंजाब।

संग दुरगपति अर कुतवाल। पीछै चढ़ै जाहिं गुर नाल[1]।
हैं असवार चार सै जोई। चारों दिशि ह्वै गमने सोई॥ ४०॥
सने सने चलि पंथ मझारी। जाइ प्रवेशे दुरग मझारी।
सुंदर सदन दीनि हित डेरे। उतरि पर सतिगुरु तिस बेरे॥ ४१॥
खान पान हित त्रिण अरु दाना। लीनि मंगाइ खरच जस जाना।
पाक सिद्ध करि, अच्यो अहारा। सुपत जथा सुख राति मझारा॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'आगरे दुरग' प्रसंग बरननं नाम सपत त्रिसती अंशु॥ ३७॥

---

1. साथ।

अंशु ३८

दिल्ली आगवन गुरु प्रसंग

दोहरा

तेग बहादर सतिगुरु दुरग थिरे इस रीति ।
तुरक हरख उर महिं अधिक जानि दीन की जीत ।। १ ।।

चौपई

होनहार मूरख नहिं जानहिं । अपनी जरां[1] लगी को हानहिं ।
संग दुरगपति के कुतवाल । मिलि मसलत कीनसि तिस काल ।। २ ।।
लिखी बनाइ शीघ्र तबि अरज़ी । 'हजरत पाइ आप की मरज़ी ।
हिंदुनि गुर श्री तेग बहादर । राख्यो रोकि दुरग महिं सादर ।। ३ ।।
उतरे हुते बाग महिं आइ । हम तूरन गमने सुधि पाइ ।
पंच सऊर साथ जिन और । आने साथ जाइ तिस ठौर ।। ४ ।।
अबि रावर की मरज़ी जैसे । लिखि पखाना पठीअहि तैसे' ।
इम कागद पर लिख्यो बनाई । कह्यो सऊर संग समुझाई ।। ५ ।।
'नहिं बिलमहु बिसरामहु थोरा । दौर्यो जाहु शाहि की ओरा ।
पहुंचहु जाइ देहु तबि अरज़ी । पढ़ि करि लिखहि बहुर निज मरज़ी ।। ६ ।।
सभि सुधि देइ, आउ ततकाला । ले इनाम को दरब बिसाला' ।
सुनि सऊर हय दीनि निहारी । ज़ीन पाइ कीनसि असवारी ।। ७ ।।
दिल्ली के मग को तबि धावा । बिलम बिहीना शीघ्र विसाला ।
निस बासुर महिं पंथ पयानहि । अधिक थकहिं बिसराम सु ठानहिं ।। ८ ।।
दिन दो इक मैं पहुंच्यो आई । अरज़ी शाह. समीप पठाई ।
नवीसिंद ने खोलि सुनाई । 'हिंदुनि गुरु कीनि अटकाई' ।। ९ ।।
सुनि हरख्यो मूरख चबगत्ता । अवनी राज तेज मदमत्ता ।
कहि तूरन उमराव बुलायो । लशकर संग समूह पठायो ।। १० ।।
सभि हज़ार द्वादस असवार । चले आगरे पंथ मझार ।
नर पठि पुन कीनसि तकराई । 'सभि बिधि करि राखहु चुकसाई ।। ११ ।।

---

1. जड़ें ।

अज़मतवंति कितिक कहिं जग महिं। छलबल करि छुटि जाहिं न मग महिं।
घने सिपाही जागति रखीअहि। निस बासुर ढिग द्रिग ते लखीअहि ॥ १२ ॥
को राजा राजपूत न आवै। लरै अचानक गुरु छुटावै।
त्यों हिंदू केतिक खग धारी। करहिं मुचावनि मरहिं कि मारी ॥ १३ ॥
इन बातनि ते हुइ सवधान। आनहु शीघ्र गुरु इस थान।
चिरंकाल के खोजति रहे। औचक भे प्रापत अबि गहे ॥ १४ ॥
सभि महिं बजहि दीन को डंका। राव रंक नर धरहिं अतंका।
सिद्ध मनोरथ अबि हुइ मोरा। टूटहि सभि हिंदुनि को जोरा ॥ १५ ॥
शरा बिखै गुर जबि हूं आइ। दिज अदिक आपे बनि जाइ।
प्रथम प्रसंग, पिता इन भयो। मोर पिता में हूतनि कियो ॥ १६ ॥
तबि राजे रजपूत बवंजा। करे छुटावनि तिन भय भंजा।
सो सिमरहिं जे गुर उपकारा। करहिं बटोरनि लशकर भारा ॥ १७ ॥
आनि लरहिं नहिं लेहिं छुटाइ। यांते जाइ सैन समुदाइ।
अपर त्यार दिल्ली बनि रहै। चढ़हि तुरतु जो सुधि अस लहैं ॥ १८ ॥
इत्यादिक गिनती करि ब्रिंद। सावधानता रची बिलंद।
लशकर चढ़ि दिल्ली ते गयो। चलहि अधिक ही श्रम बहु कियो ॥ १९ ॥
मग उलंघि सगरो जबि गए। नगर आगरे प्रापति भए।
सुनति दुरगपति अरु कुतवाल। मिलिबे हित निकसे ततकाल ॥ २० ॥
भांति भांति की दे उपहार। मिले सलामालेक उचारि।
खान पान त्रिण दाने केरी। लशकर की सुधि लीनि घनेरी ॥ २१ ॥
सभि मिलि गुरु पास चलि आए। निकटि बैठि करि भेव[1] बताए।
'हज़रत अधिक तलाशी ठानहि। बहु दिन ते बहु नगर बखानहि ॥ २२ ॥
देश बिदेशनि मैं बहु फिरे। नहिं प्रापति भे नहिं कित थिरे।
सभि जहान को मालिक आज। भयो अधिक ते अधिक समाज ॥ २३ ॥
क्यों न बनहु तिसके अनुसारी। सुधरि जाइ सभि बात तिहारी'।
सुनि सतिगुर प्रसंन मुख कह्यो। 'को बिगार हमरो पिखि गह्यो ॥ २४ ॥
इक खुदाइ को सकल जहान। सिरजहि, पोखहि, हरहि निदान।
रंक राव सभि जग महिं रहिईं। दंडहि शाहु खोट किस लहिईं ॥ २५ ॥
हम सों काज शाहु को कहां। राज न विरसेदार न लहा[2]।
दरवेशनि की रीति हमारी। यांते हम शंका नहिं धारी ॥ २६ ॥
पुन उमराव कहति 'हम आए। चलहु समीपी शाहु बुलाए।

---

1. भेद, रहस्य। 2. न हमारा राज्य है और न ही हम उसके साझीदार हैं।

कहनि होइ जो कुछ, तहिं कहो। अनुसारी हुई सभि सुख लहो ॥ २७ ॥
इम कहि जामनि सुपत बिताई। भई प्राति त्यारी करिवाई।
डारि तुरंगनि ज़ीन बिसाले। चढ़े गुरु भा लशकर नाले ॥ २८ ॥
निकटि निकटि उमराव चलंता। चहुं दिशि महि दल बड़ गमनंता।
तुपकन के धुखाइ करि तोड़े। त्यारी ठानि कला पर जोड़े ॥ २९ ॥
सावधानता करति घनरे। पंथ पयानहि प्रभु को घेरे।
दीरघ मजल करति चलि आए। निस बिसरामहि दिनहिं सिधाए ॥ ३० ॥
पंचहुं सिक्ख संग गुर चाले। सभि बिधि सेवा करहिं बिसाले।
सिध रसोई करि त्रिपतावें। जाम निसा ते न्हान करावें ॥ ३१ ॥
थोरनि दिन महि पहुंचे आई। प्रथम शाहु ढिग सुधि पहुंचाई।
हिंदुनि गुर श्री तेग बहादर। आन्यो सहति सुचेती सादर ॥ ३२ ॥
जथा हुकम अबि रावर केरा। तथा करहिं करिवावहिं डेरा।
सुनि अवरंग आनंद उर पीने। सभा मुलाने बूझनि कीने ॥ ३३ ॥
'किम प खहिं अजमत कुछु इनकी। दिहु बताइ चातुरता मन की।'
सुनि दुरमति चित कहति मुलाने। 'इक उपाव इक करहि बखाने ॥ ३४ ॥
पुरि महि एक हवेली अहै। सूनी परी नहीं को रहै।
नहिं बसिबे को कारन जानो। रहै तहां को प्रेत कि दानो ॥ ३५ ॥
जो तिस महि निम बास करंता। बड़े त्रास को पाइ मरंता।
लगे रजतपण कई हज़ार। तजी सभिनि सो डर उर धारि ॥ ३६ ॥
नहिं प्रवेश दिन महिं भी करैं। मार न देहि देव ते डरैं।
प्रथम उतारहु गुरु तिस मांही। कहे जि तहां प्रवेशहिं नाहीं ॥ ३७ ॥
तौ तुम शर्हा लेहु मनवाइ। हुई अनुसारी सहिज सुभाइ।
जे नहिं मानहि कह्यो तुमारो। निस बसाइ तिस घर मैं मारो ॥ ३८ ॥
सुनि अविरंग जानि चतुराई। संग मुलाने 'साध'[1] अलाई।
'आछी कही परखिबो होइ। जे किछु अज़मत, लखीयहि सोइ ॥ ३९ ॥
शरा बीच जो अस नर आवहि। दीन, हमारो अनि बिरधावहि।
अस मसलत करि सभा मझारा। इक नर सों तबि हुकम उचारा ॥ ४० ॥
'तिस उमराव संग कहि जाइ। जो गुर है हिंदुनि समुदाइ।
प्रेत भयानक जिस महिं रहै। नहिंन प्रवेशहि, उर सभि लहैं ॥ ४१ ॥
तिस महि निस बिसराम करावहु। एकल को अंतर प्रविशावहु।
संगी तिसके बाहिर उतारहु। चहुं दिशि महि नर गन थिर धारहु ॥ ४२ ॥

1. शाबाश कही।

जागत रहो—, करहु तकराई। होइ न अस जे निकसि सिधाईं।'
सुनति गयो तिन जाइ सुनायो। 'हज़रत एक हुकम फुरमायो' ॥ ४३ ॥

सो उमराव गुरु संग लीने। गयो सदन तिस बूझनि कीने।
लोक सैंकरे देखनि आए। तरजि तरजि करि सरब हटाए ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'दिल्ली आगवन गुरु' प्रसंग बरननं अशट त्रिसति अंशु ॥ ३८ ॥

अंशु ३६
तुरकनि प्रसग

दोहरा

दिल्ली महिं प्रविशे गुरु गए हवेली मांहि।
उतरे भयो ब्रितंत जिम, कहौं कथा पुन तांहि ॥ १ ॥

चौपई

सरब प्रसंग सुनावौं फेर। जिस तुरकेगुर अरु गुर केर।
जबि पटणे की कथा बखानौं। अवसर इहां कहनि को जानौं ॥ २ ॥
जबि ते सतिगुर सुत तजि आए। तिन पीछे जिम खेल मचाए।
नित शसत्रनि सों प्रेम करंते। जिस किस ते नंगवाइ रखते ॥ ३ ॥
एक मंच पर राखि टिकाए। तिन ढिग नित प्रति धूप धुखाए।
पुशप अनेक बरन अनवावैं। कबहूं गूंदि माल अरपावैं ॥ ४ ॥
कबहूं अंजुल भरहि चढ़ावैं। बंदन ठानहिं सीस निवावैं।
फिरहुं प्रदछना चहुंदिशि तीन। चंदन चरचहिं प्रेम सु पीन ॥ ५ ॥
ढिग शाहुनि के सिस जबि आवैं। कहि महिमा को बहुत सुनावैं।
इह शाहुनि के सिस जबि आवैं। कहि महिमा को बहुत सुनावैं।
'इह आछो छोटो हम लाइक। करहि प्रहारन रिपु गन घाइक ॥ ६ ॥
करहिं बिलोकन मातु रु दादी। क्या लीला धारहि अहिलादी।
रचहिं पितामा सम क्रित एई। बड़े होइ करि ठानहि सेई ॥ ७ ॥
कर गुलेल को धारति घने। ताकहिं दूर निशानो हने।
गुरु घर महिं इक कूप छुटेरा। जिस को बारी मधुर बडेरा ॥ ८ ॥
निकट निकटि जे सदन बसंते। तहां आनि करि नीर भरंते।
घट भरि करि ले जाहिं सु नीता। करहि पान को हरखति चीता ॥ ९ ॥
कई बार दुर दुर करि मारहि। घट को फोरि तुरत गुर डारहिं।
इति उत देखति दुख को पाइ। किनहुं अचानक कुंभ नसाइ ॥ १० ॥

बरजति गुजरी मात घनेरा। इत उत धाइ जाइं बहु बेरा।
एक दिवस इक तुरकनि आई। बारी[1] भरिबे कहु उतलाई ॥ ११ ॥
धरि सिर पर जब घर को चाली। तबि गुर हाथ गुलेल संभाली।
ताकि हत्यो कर हालति भयो। घट बच गयो, भाल महिं हयो ॥ १२ ॥
छुट्यो रकत दुख पाइ घनेरा। ऊचे बोल कहै तिस बेरा।
'हाइ हाइ' करति चलि आई। जहिं थिर गुजरी अरु बड माई ॥ १३ ॥
'ऊचे अटारी ते मुहि मार्यो। लग्यो भाल मैं श्रोण निकार्यो।
जाउं पुकारु मैं दुख पायो। तुव सुत अति उतपात उठायो ॥ १४ ॥
लोकनि के घट भगनि करते। धरति छिमा, लखि निकटि बसंते।
कहहु कहां लगि करहिं समाई। नहिं तूं बरजति देखति माई ॥ १५ ॥
तुरकेशुर के आइ सिपाही। बाध घाट बोलहिं तुम पाहीं।
सुनि माता उर क्रोध बिसाला। ले करि छरी उठी ततकाला ॥ १६ ॥
ऊचे बोलति ताड़न हेतु। तुरु ऊपर गई निकेतु।
जानी श्री गोबिंद सिंह माता। ताड़न कारन मन रिस राता ॥ १७ ॥
दौरि प्रवेशे बीच अटारी। तुरत भेरि द्रिढ कीनि किवारी।
स्रिखल को लगाइ ततकाला। बैठि रहे निशचिंत क्रिपाला ॥ १८ ॥
श्री गुजरी दर देखि किवारा। देति धकेला नहिंन उघारा[2]।
खरी होइ कहि क्रूर बडेरे। 'नित हेरति मैं अवगुन तेरे ॥ १९ ॥
तुरक राज महिं करि उतपाता। त्रिय के कीनि गुलेलो घाता।
स्रोणत वह्यो जाति बिललावै। अबहिं पुकारु सो चलि जावै ॥ २० ॥
क्या हम कहहिं जतन क्या करैं। राज तुरक ते दीरघ डरैं।
सुनि बोले अंतर तिस काला। 'मैं न जानि मार्यो बिच भाला ॥ २१ ॥
ताकि निशानो दीन चलाई। सो चलि तबहि अग्र क्यों आई।
कहां दोष मेरो इस मांही। क्या हम तुरकनि ते उर पाहीं ॥ २२ ॥
सुनि गुजरी कहि 'मैं मन जानी। नहिं तू बसिबे दे इस थानी।
थिर न रहहु इक छिन भी बैठि। शाहुनि बालिक ब्रिंद इकैठि ॥ २३ ॥
करति रहहु उतपात बडेरे। बरज्यो रहैं नहीं इक बेरे।
इम बोलति उतरी तर आई। क्रोध भरी इम गिरा अलाई ॥ २४ ॥
'श्री नानक परमेशुर रूप। तौ खारा अबि होवहि कूप।
नहिं को आवहि भरिबे पानी। इह बिनती मम लीजहि मानी ॥ २५ ॥
इम कहि तुरकनि निकटि हमारी। दीनि दिलासा म्रिदुल उचारी।

---

1. पानी। 2. खोला।

पंच रजतपन दए सु तांही। पहिरनि को पट दे करि प्राही ॥ २६ ॥
'साहिबजादा अहै अयानो। हतति हुतो किह ताक निशानो।
औचक तू चलि आइ अगारी। लग्यो गुलेला भाल मझारी ॥ २७ ॥
अबि तू छिमा करहु नहिं जाहो। घ्रित मिसटान खाहु घर मांहो।
अपर खबर तेरी हम लहैं। जबि लौ घाव भाल मैं रहैं' ॥ २८ ॥
देखि लोभ को तूशनि ठानी। गमनी अपने घर तुरकानी।
तबि ते भयो कूप सो खारा। पुरि पटणा जानति है सारा ॥ २९ ॥
चार कटी लगि अंतरि थिरे। द्वार किवार उघारनि करे।
तहिं ही बैठि रहे सुख सागर। तूशनि ठानि इकाकी नागर[1] ॥ ३० ॥
सास निकटि गुजरी पछुतापति। सकल बारता आदि बतावति।
'मो प्रति सुत की कहति बडाई। इन प्रतिकूल न करि बिधि काई ॥ ३१ ॥
आज क्रोध ते कहि दुरबानी। पिखी चोट लागी तुरकानी।
करौं कहां मैं लखि उतपाता। घट पर करति गुलेलनि घाता' ॥ ३२ ॥
सुनति नानकी तिह समुझावै। 'जोधा बनहि बैस तरुनावै।
नहिं बोलहु दुर बैन कदाई। बाल आरबल महिं चपलाई ॥ ३३ ॥
मैं अबि जैहौं आनौं पास। देउं दिलासा म्रिदुल प्रकाशि'।
इम कहि ब्रिधा महा, उठि करि कै सने सने मंदिर पर चरिकै ॥ ३४ ॥
पौत्रा देखि प्रेम बहु धारा। गही बाहु निज अंक बिठारा[2]।
मुख पर कर फेरति द्रिग हेरति। 'चलहु तरे को' कहि कहि प्रेरति ॥ ३५ ॥
चहति उठायो अंक मझारी। नहिंन उठायो जाइ, सु भारी।
इक तौ ब्रिध सरीर बहु भयो। दुतीए भार गुरु बहु कियो ॥ ३६ ॥
म्रिदुल भननि गहि भुजा खरे करि। सने सने ले आवति भीतरि[3]।
मधुर बाक पुन गुजरी कहै। 'तुरक राज तैं क्यों नहिं लहैं' ॥ ३७ ॥
अपने बिखै बैठाइ। करे प्रसंन भले परचाइ।
इतने महिं भा त्यार अहार। सूपकार[4] आन्यो धरि थार[5] ॥ ३८ ॥
कहति बचन गुर दिशि के भए। 'केतिक काल बित्यो चलि गए।
नहिं सुधि कीनि पठावनि कोई। आनंदपुरि पहुंचे नहिं सोई ॥ ३९ ॥
किसी थान संगति अटकाए। भाउ बिलोकि थिरे लखि पाए'।
इत्यादिक कहि करि हरखाए। भोजन को कराइ त्रिपताए ॥ ४० ॥

1. चतुर, बुद्धिमान। 2. गोदी में बिठा लिया। 3. नीचे ले आई।
4. रसोइया। 5. थाल।

सुनि कै कहति 'न हम इत रहैं। अपने देश पयानो चहैं।
पिता समीप थिरैंगे जाइं। पिखि पंजाब अनंदपुरि थाइं' ॥ ४१ ॥
सुनि कै माता गुजरी बैन। चहति रिदै किम गमनै हैं न।
'हे सुत ! देश भलो इह मानहुं। अनिक रीति के सुख पहिचानहुं ॥ ४२ ॥
जबहि पिता तुमरे पुरि जै हैं। देश नरनि को उर परखै हैं।
लखहिं बुलावनि को जबि समैं। भेजहिं लिखी पत्रिका हमैं ॥ ४३ ॥
इहां मसंद सिक्ख सभिदास। चहिति वसतु को भेजहिं पास।
सभि सुख सों बसि समैं बितावैं। तुव पित मरज़ी बिन किम जावैं' ॥ ४४ ॥
सुनति बखानहिं 'पिता गए जबि। हम को आग्या करति भए तबि।
तिनकी मरज़ी पाइ चलंते। इहां न ठहिरहिं इही मगंते' ॥ ४५ ॥
इसि बिधि कहैं निताप्रति बाती। चाहति चित महिं पंथ प्रयाती।
सिख मसंद गन आई हमेश। ठहिरावनि हित कहैं विशेष ॥ ४६ ॥
तऊ आपनो हठ करि गाढो। चलनि पंजाब चाउ चित बाढो।
माता गुजरी के संग कहैं। 'हमतौ इस पुरि नांहिन रहैं' ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे द्वादश रासे 'तुरकनि' प्रसंग बरननं नाम ऊन चत्त-वारिसती अंशु ॥ ३९ ॥

अंशु ४०

मुहाफ़े को प्रसंग

दोहरा

जे मसंद सिख वय वडे प्रथम गुरु की रीति ।
सो चाहति मन भावती करहि मेल धरि प्रीत ॥ १ ॥

चौपई

नित प्रति गुर के दरशन आवैं । धरहि कामना बांछति पावैं ।
'इह सतिगुर नवतन मना चाहे । जगति रीति महिं नहिन उमाहे' ॥ २ ॥
संगति पटणे बसहि महानी । सभिहिनि के मन की गुर जानी ।
इह पूरब नर सहिज सुभाऊ । खिनक भाउ धरि खिनक अभाऊ[1] ॥ ३ ॥
द्रिढ़ निहचा नहिं धारन करैं । होहि कामना शरधा धरैं ।
मद्र देश को चितवति रहैं । अपनो थान रिदै महिं लहैं ॥ ४ ॥
बडे हमारे बासति नीत । सभि नर जानति गुर की रीति ।
तन मन धनु अरपनि सभि करैं । इक सम सदा प्रेम को धरैं ॥ ५ ॥
जुद्ध पितामे हमारे कीनसि । रहे संग लरि प्रान सु दीनसि ।
इक दिन पित माता के साथ । कर्यो बाक श्री सतिगुर नाथ ॥ ६ ।
'मुझ को मद्र देश ही भावै । तहां चलिन को चित ललचावै ।
प्रथम देश है वही हमारो । थान बडिनि[2] के तहिं निरधारो ॥ ७ ॥
अनिक बिलास करति कहिं रहे । हम सिक्खयनि ते सुन करि चहे ।
तहां हमारी विरसे दारी ।[3] तहि के नर सिक्खी अधिकारी ॥ ८ ॥
नहिं इत देश लगहि चित मेरो । गमन करनि ही अहै अछेरो ।
सुनि सतिगुर दादी इम बैन । भरे नीर सों दीरघ नैन ॥ ९ ॥
बहु बिरधा सो समैं बिचारे । जिस महिं भे संग्राम अखारे ।
सिमरि सिमरि पाछल गति सोई । कंपति गात धीर उर खोई ॥ १० ॥

---

1. अप्रेम 2. बड़ों के. पूर्वजों के 3. मालिकी ।

पौत्र साथ बिरतंत बखाना। 'भयो खेद तिस देश महाना।'
जबि सो समैं मोहि चित आवैं। तबि मम मन को सुख नहिं भावैं ॥ ११ ॥
जबि ते होइसि जनम तुमारा। सभि सुख सो सुभ समैं गुजारा।
सभि पूरब की संगति सेवति। मन वांछति तिन को तुम देवति ॥ १२ ॥
सभि मसंद अपने अनुसारी। सेवति भेजति कार तुमारी।
नहीं गमन की बुद्धी करीअहि। सुख समेत पुरी बास बिचरीअहि ॥ १३ ॥
पिता मात ते सुनि पुन कह्यो। अभि सुख बास इहां तुम लह्यो।
संगति को बिगार इस थान। नहिं सुधरहि, हम लीनसि जान ॥ १४ ॥
विरले लखीयति हैं सिख प्रेमी। नांहित सकल संगतां नेमी।
फसे जगत की रीति मझारी। नाम धरीकी के अधिकारी[1] ॥ १५ ॥
प्रेमी नेमी सभि मम शरना। हमने इन उधार जग करना।
बिधि निखेध मैं इह सिख रहैं। मुझ को इह बालिक ही लहैं ॥ १६ ॥
जनम भूमका है इह मेरी। यांते शरधा है न घनेरी।
इनके मन की मैं सभि जानी। नहिं महिमा मित मोर पछानी ॥ १७ ॥
मद्र देश गमनहिं हम जबैं। बहु गुन होंहि सभिनि को तबैं।
इह संगति नित दरशन चाहे। बधहि प्रेम कबि मिलहि उमाहै ॥ १८ ॥
इस विधि ते इन को हुइ आछे। दूर रहै ते दरशन बांछे।
अपर सुनहु तिस देश मझारा। करने बहुत कार बिवहारा ॥ १९ ॥
सुनि आशै निज पौत्रहि उर को। गिरा बखानी पुन श्री गुर को।
'इहां मसंद संगतां सारी। तुम को लखहिं गुरु अवतारी ॥ २० ॥
जिम नव गुर को जानति अहैं। तिम निश तुमरे महिं लहैं।
किम इन बिखै अरोपहु दोशे? सिख संगति सभि तोहि भरोसे ॥ २१ ॥
करहिं भाउ सभि वसतू आनैं। कारन करन आप को जानैं।
नांहि न इनहुं प्रत्तग्या लीजहि। सभि पर अपनो हुकम भनीजहि ॥ २२ ॥
हुइ अनुसारि करहिं सो कार। तौ जानहु इन सुध बिवहार।
फेरैं हुकम, तफावत करैं[2]। किधौं कपट कौ उर महिं धरैं ॥ २३ ॥
मुख पर किम, पाछै किम होइ। इस प्रकार को देखहु कोइ।
तौ पूरब की संगत दोश। कहीऐ आप धारि कुछ रोस ॥ २४ ॥

---

1. नाम मात्र के सिक्ख हैं। 2. अन्तर रखें।

सुनि श्री सतिगुर जी मुसकाने । चहति दिखायहु जिम छल ठाने ।
निकटि लिखारी तबहि हकारा । सुनति सभिनि के गुरु उचारा ।।२५ ।।
'लिखहु हुकम नामा पठि पास । बडा मसंद बुलाकी दास ।
ढाके की संगति मग सारी । सभि ते लेति दरब को भारी ।। २६ ।।
एक मुहाफा[1] सुठ बनिवावहु । चित्रति रचि गजदंत लगावहु ।
हेम सात सै तोला तोल । लगहि सकल जो हुइ बड मोल' ।। २७ ।।
सुनि सतिगुर ते लिख्यो लिखारी । करि इकत्र सिख ले करि धारी ।
बंदन करि ढाके को गयो । गुर को हुकम मसंदहि दयो ।। २८ ।।
ले तिस ने ततकाल हकारे । दियो दरब 'सुठ करहु' उचारे ।
बहुते कारीगर मगवाए । कंचन कांटा कड़ी घड़ाए ।। २९ ।।
थोरनि दिन महिं भयो तयारा । सरब रीति ते नीक सुधारा ।
ढाके ते तिन दीनि पठाई । पुरि पटणे महिं पहुंचयो आई ।। ३० ।।
श्री गुरु गोबिंद सिंह अगारी । धर करि तिस की बिनै उचारी ।
तिन के सुनति भन्यों 'भा सुंदर । पठि दीजहि माता ढिग अंदर ।। ३१ ।।
कपट जु कर्यो मसंद धन राखनि । जान्यो सतिगुर कियो न भाखनि ।
पिखि माता दोनहुं हरिखाई । भनी मसंदनि की भलिआई ।। ३२ ।।
बड गुर सिक्ख बुलाकी रास । तुरत त्यार करि भेज्यो पास ।
अति सुंदर कहिकै बनिवायहु । कंचन जिस माहि बहुत लगायहु ।। ३३ ।।
अबि लगि अपर न हम ते हेरा । रच्यो रुचिर इह मोल बडेरा ।
मात नानकी ने समुझाए । 'देखहु सुत ! सिक्खी इस भाए ।। ३४ ।।
मानहिं सागरे हुकम तुमारो । कहुहु जथा भेजहिं करि त्यारो ।
सेव बिखै सभि के मन राते । पूरन गुरु आप को जाते ।। ३५ ।।
सिख संगति अस ब्रिंद मसंद । तुमरे प्रेमी रिदै बिलंद ।
मद्र देश ते हम जबि आए । संकट बिनां सरब सुख पाए ।। ३६ ।।
तहां उपद्रव अनगन हेरे । तुरकन सों रण मचे घनेरे ।
श्री अंम्रितसर बड़ संग्रामा । सैन घनी ते तजि करि धामा ।। ३७ ।।
बीबी बीरो ब्याह तिस काला । कर्यो हुतो पकवान बिसाला ।
तिसते आदि समग्री जेती । भए जुद्ध ते लुट गई तेती ।। ३८ ।।

1. पालकी ।

हम तुरकनि ते भै बड धारे। नीठ नीठ निकसे निज द्वारे।
तिसते आदि बिघन समुदाए। भए देश तिस कितिक गिनाए ॥ ३९ ॥
तुमरो जनम देश इस भयो। हे सुत ! हम तबि को सुख लयो।
आदि बुलाकी दास मसंद। अपर सिक्ख संगति जे ब्रिंद ॥ ४० ॥
निशचा करहिं सु बीच तुमारे। रिदै कपट को नर नहिं धारे।
रहिनो इसी देश को कीजै। मद्र देश को नाम न लीजै ॥ ४१ ॥
तहां शरीक महां दुखदाई। पिखि नहिं सकहिं,सु बिघन उठाई।
अनिक बिधिनि के दुख तिस देश। हे सुत ! हम पर थिते अशेश ॥ ४२ ॥
सो मेरे जबि ही चित आवैं। धीर न उपजति अजहुं डरावै।
नर पूरब महिं शरधा धारी। इहां बसहु नित प्रति सुखभारी ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरजग्रंथे द्वादश रासे 'मुहाफे को प्रसंग बरननं नाम चत्वारिंसती अंशू ॥ ४० ॥

अंशु ४१

तिआर होवनि प्रसंग

दोहरा

पिता की माता के बचन सुनि श्री गोबिंद सिंह ।
तुरकनि म्रिग समुदाइ को चहति हन्यों जिम सिंह ॥ १ ॥

चौपई

सिक्ख मसंदनि की बडिआई । जबि माता ने इस बिधि पाई ।
लखि कै सभि शरधालु विशेश । चहति रह्यो पूरब ही देश ॥ २ ॥
इस निशचै के टारन कारन । मद्र देश हित करनि पधारनि ।
लीला रची तबहि गुर स्वामी । सभि घट घट के अंतरजामी ॥ ३ ॥
बहिर मुहाफा को निकसायो । संगति निकटि हुकम फुरमायहु ।
'ईंधन भार सकेलनि करो । आनि आनि करि इस थल धरो' ॥ ४ ॥
समधा[1] जबि देखी समुदाया । बीच मुहाफा तबहि टिकाया ।
दियो हुकम पावक मंगवाए । ततछिन दई तांहि लगवाए ॥ ५ ॥
जरनि[2] लग्यो सभि नर बिसमाए । लाइ दरब बहु इहु बनवाए ।
मातनि कहि मंगवावनि ठाना । कबहुं अरूढि न कीनि पयाना ॥ ६ ॥
नहिं को दिन इसको सुख लयो । आवति ही जराइ करि दयो ।
जाइ नानकी निकटि बतावा । 'सो पावक के बीच जरावा' ॥ ७ ॥
सुनि करि दासनि साथ बखाना । 'महां पुरख इहु गुरु महाना ।
हुकम न फेर्यो जाइ तिनो का । निकसति मुख ते फुरहि जिनोका ॥ ८ ॥
लगी आग सगरो जरि गयो । सीतल भसम जबहि तिस भयो ।
जितो हेम तिसते निकसायहु । कहि सतिगुर ने सरब चुनायहु ॥ ९ ॥
नीके जल मैं कीनि पखारनि । निकटि अनायहु[3] कर्यो निहारन ।
दासन के कर महिं उचवाए । अंतर माता तीर सिधाए ॥ १० ॥

---

1. ईंधन 2. जलने लगी 3. मंगवाया

धर्यो सु जाइ नानकी पास। 'बडो मसंद बुलाकी दास।
तिस की इह करतूत निहारहु। जिस तरीफ को आप उचारहु ॥ ११ ॥
बड शरधालू पूरब देश। देखहु तिनके कपट विशेश।
दसम अंस कंचन इस मांही। तांबा अपर घरायहु तांही ॥ १२ ॥
गुर घर तिस मुजरै सभि देति। सकल मोल हाटिक को लेति।
राखति घर सतिगुर की कार। भाखति कर्यो मुहाफा त्यार ॥ १३ ॥
ऐसे नर हैं पूरब देश। बुधि हौरी[1], कूरे इन बेस।
बड्यो बड्यो कीजे अस मति है। तौ छोट्यो की कहां सुगति है' ॥ १४ ॥
देखि मात तूशनि हुइ रही। पौत्र पास कुछ जाइ न कही।
सभि घट को मालिक गुर रूरा। बोले उतर्यो जाइ न पूरा ॥ १५ ॥
श्री गुजरी दिशि सास निहारा। पुत्र साथ शुभ बाक उचारा।
'पिता तुमारो इति चलि आयो। बहु तीरथ को हमहिं करायो ॥ १६ ॥
पुन हमको इस पुरि महिं त्यागे। आप गए चलि पूरब आगे।
जबि के इह थल कीनसि बास। करति सेव को संगति रास ॥ १७ ॥
अबि पंजाब गए पित तुमरे। लिख पाती भेजहिं ढिग हमरे।
जिस प्रकार की सुधि पहुंचावैं। हम को करनी तिम बनि आवै ॥ १८ ॥
यांते रूचहि बास सुख पाए। बसते संमत कितिक बिताए।
बहु लोकनि मिलि प्रीत उपाई। सगली बसतु आनि अरपाई ॥ १९ ॥
प्रथम जनम धरि, अलप सरीर। सभि सुध लगे संभारनि धीर।
आगै मरज़ी जथा तुमारी। त्यों बरतहिंगे हुइ अनुसारी ॥ २० ॥
सुनति मात ते गुरु उचारी। 'मद्र देश सिक्खी है भारी।
सकल गुरनि तहिं बासा कीने। अपने पुरि तीरथ रचि दीने ॥ २१ ॥
तिसी देश ते सैन बनाई। दिल्लीपति सों कीनि लराई।
केतिक सिक्ख भाउ धरि रहे। किनहुं नौकरी गुर घर लहें ॥ २२ ॥
बनहि न सो इस देश मझारी। ऊपर बेश दिखावहिं धारी।
जबि गुर को किम कारज बने। सिक्खी त्यागहिं शरधा हनैं ॥ २३ ॥
इत्यादिक कारन हैं ब्रिंद। बनहि गमन तिस देश बिलंद।
सुधि पटणे पुरि महिं बिसतरी। चाहति सतिगुर त्यारी करी ॥ २४ ॥
मद्र देश को चहति सिधावनि। जित गमनैं तित करि हैं पावन।
सगरी संगति सुनि करि आई। ल्याइ उपाइन को अरपाई ॥ २५ ॥

---

1. हलकी-छोटी।

जहिं कहिं के बहु आइ मसंद। अरपहिं आन्यो दरब बिलंद।
श्री सतिगुर को सभि समुझावैं। अपनी अपनी सीख बतावैं ॥ २६ ॥
'गुर जी! इहां बास सुख केरा। संगति ब्रिंद मिलाप वडेरा।
किसू वसतु की कमी न कोई। हम अनुकूली सभि नित होई ॥ २७ ॥
हुकम आपको होवहि जैसा। हम करि सकि हैं ततछिन तैसा।
करहु उचारनि जिमु हुइ मरज़ी। सदा गुज़ारति हैं इम अरज़ी ॥ २८ ॥
सुनि सतिगुर बोले बच पावन। 'हमने मद्र देश को जावनि।
बहु कारज तिह ठां बसि करने। बिदत अबिदत कहां को बरने[1] ॥ २९ ॥
निशचै इन को रिदा गमन मैं। सिक्ख मसंदन जानी मन मैं।
तूशनि होए कछु न बखानी। गमने सदन बंदना ठांनी ॥ ३० ॥
जगत सेठ पटणे पुरि बासी। गुर को सेवक बहु धन पासी।
गमन गुरु को निशचै भयो। जबि ऐसे श्रोननि सुनि लयो ॥ ३१ ॥
ले मिशटान रुचिर पकवान। भरे थार बहु धरि धरि पान।
श्री सतिगुर के ढिग चलि आयहु। हाथ जोरि करि सीस निवायहु ॥ ३२ ॥
दोनहुं मातनि को करि नमो। हाथ बंदि बोल्यो तिह समों।
'श्री प्रभु! जगत जेतनी माया। सभि तुमरी बखशी कर दाया ॥ ३३ ॥
दई आप की बरतहिं सारे। जानति इस बिधि को सिख भारे।
मैं हौं दास आपको जोई। बखश्यो मोहि दरब बहु सोई ॥ ३४ ॥
सभि पुरि महिं कोठी बहु मेरी। सभि प्रकार तहिं सौज घनेरी।
जिस जिस मग को रावर जावहु। जहिं जहिं निस महिं डेरो पावहु ॥ ३५ ॥
तहिं ते खरच लेहु मन भाया। रहहु जितिक दिन तहिं हरखाया।
खान पान शुभ बसत्र जि चहीअहि। मम कोठी को पठि कहीअहि ॥ ३६ ॥
मम गुमाशते[2] मग महिं जेई। मैं लिखि देहुं मानि हैं सेई।
जितिक सेव मोते[3] हुइ जाई। मैं निशचै जानौं सफलाई' ॥ ३७ ॥
जगत सेठ की सुनि करि बानी। गुर प्रसंनता कीनि महांनी।
'जो तुम भाउ हमारो कर्यो। सेवा बिखै प्रेम को धर्यो ॥ ३८ ॥
तिस को फल होवहि तुम भारो। लच्छमी बहु घर थिरहि उदारो।
तिस ते तोटा कितहुं न पावैं। लाभ लेति ही बैस बितावैं ॥ ३९ ॥

1. कोई प्रकट कोई गुप्त, किस किस का वर्णन करें। 2. व्यापारी।
3. मुझ से।

हम कोठी ते लैंहि कि नांही। कहिबे ते फल भा तुव पाही।
हम सुनि कै, किय भाव बिसाला। तुझ को फल प्रापति इस काला ॥ ४० ॥

जगत सेठ सुनि कै गुर बानी। भयो अनंद न जाइ बखानी।
गुर प्रसंनता मो पर होई। लिखी पत्रिका पुरि पुरि सोई ॥ ४१ ॥

निज थल बिखै पुचावनि करे। 'जबि देखहु गुर निज पुरि बरे[1]'।
सादर सरब रीति की सेवा। करहु प्रसंन तहां गुरदेवा' ॥ ४२ ॥

कहि माता को सभि समुझाई। पुन पग परि निज ग्रीव निवाई।
ले करि वर गुर ते मन भाया। करि बंदन को उर हरखाया ॥ ४३ ॥

भुगति मुकति के बर को पाइ। अपनी आपन[2] पहुंच्यो जाइ।
सभि संगति मैं जसु बिसतरा। 'धंन धंन' तिस को सभि करा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे -'तिआर होवनि' प्रसंग बरननं नाम एक चत्वारिंसती अंशु ॥ ४१ ॥

---

1. प्रवेश करें 2. हटी

अंशु ४२

श्री गोबिंद सिंह जी गमन प्रसंग

दोहरा

नित प्रति गुर त्यारी करति भए चलनि कहु त्यार।
इतने महिं आवति भयो पठ्यो जु गुरु उदार ।। १ ।।

चौपई

पहुंच्यो सिक्ख आनि तिह समैं। जुग मातनि बंदति सिर नमैं।
बिचरति आप देखि चलि आए। नर पंजाबी लखि हरषाए ।। २ ।।
सिख पद बंदति जुग कर बंदि। गुर को सभि बिधि कह्यो अनंद[1]।
हाथ बिखै ते दीनसि पाती। देखि तीन हूं सीतल छाती ।। ३ ।।
ततछिन खोलि पढ़ावनि कीनि। लिखी कुशल सभि गुरु प्रबिन।
'संगति सहत मसंदन सारे। हम दिशि ते दिहु खुशी उचारे ।। ४ ।।
सभिहिनि कहु बहु कहहु दिलासा। निज दिशि ते पूरहु तिन आसा।
सिख संगति को उर हरिखाइ। त्यार हो लिहु नर समुदाइ ।। ५ ।।
चलि पंजाब देश को आवहु। गमनहुं सुख सों नहिं उतलावहु।
जग महिं पुरि तिन महिं बहूं संगत। सिमरहिं सतिगुर करि करि पंगत ।। ६ ।।
तिन सभिहिनि कहु दरशन देते। पुरहु मनोरथ सिख कहिं जेते।
सने सने मग उलंघन करीअहि। आनि अनंदपुरि नगर निहरीअहि ।। ७ ।।
बसहु जथा सुख इति चिरकाल। गमनहु मग सभि बिधि संभाल'।
सुनि मन हरखे कहति उताले :—'भली भई पित मरजी चाले ।। ८ ।।
रिदै हमारे की सभि जानि। लिखी पत्रिका गुर भगवान'।
पुन सिख ते सभि बूझी गाथ। 'कहां छोरि आयो गुर नाथ ? ।। ९ ।।
कहां बिलास करति मन भाए ? संगति रहहि कितिक ढिग आए ?
किस बिधि को अनंदपुरि हेरा ? कितिक दूर दरि आउ बडेरा ।। १० ।।

---

1. कुशलता पूछी।

कितिक निकटि दूसर दिशि गिर है ? किस प्रकार की हेरी घर है ?'
सुनति सिक्ख ने सकल बताई। 'आवहि नित संगत समुदाई ॥ ११ ॥
सत्तुद्रव सलिता निकटि प्रवाहू। बिमल अगाध चलहि जल माहू।
निकटि निकटि परबत गन खरे। बास चंडिका ऊपर करे ॥ १२ ॥
अवनी तल सुंदर सबज़ाई। खरे तरोवर जहिं समुदाई।
गुर अनंदपुरि बिखै सुहाए। सिख मसंद ढिग रहिं समुदाए ॥ १३ ॥
जहिं सतिगुर के चरन सिधारें। संगति ब्रिंद आनि परवारैं।
आवति जाति हज़ारहुं नीत। लेति कामना करहिं जु चीत ॥ १४ ॥
जस बहु फैल रह्यो सभि देश। आवहिं लै लै दरब विशेष।
करहिं उधारनि शरधावान। इस बिलास महिं गुर भगवान' ॥ १५ ॥
सुनि प्रसंन सिख पर तबि भए। भुगति मुकति को बर शुभ दए।
जुग मातनि त्यारी करिवाई। वाहन साज़ दास समुदाई ॥ १६ ॥
स्यंदन डोरे पाइ उछार। ज़रीदार जगमगति उदार।
तुंग ककुद[1] वलि दीरघ बैल। चलहिं तुरंग मनिंदै गैल ॥ १७ ॥
कंचन पोरी शिंगनि पाए[2]। भूखन टलका[3] आदि सुहाए।
सिवकादिक जटती नग करे। मुकर चुकोन गोल बर जरे ॥ १८ ॥
झालर ज़री गुंफ लरकाए। मुकता लरी ब्रिंद छबि छाए।
उचित समिग्री साथ उठावनि। सभि के कीने भार बंधावनि ॥ १९ ॥
सुनि त्यारी को संगति आई। मसतक टेकहिं 'दिहु वथ काई[4]'।
अंग संग जो लागि गुरु के। जिस लहैं मनोरथ उर के ॥ २० ॥
तुम सम पूजहिं दरशन करैं। रिदै भावना संगति धरैं'।
सुनि श्री तेग बहादुर नंदन। दियो पंघूरा सिक्खनि बंधन ॥ २१ ॥
'बालिक बय हम इस पर रहे। शरधा धरहु कामना कहे'।
सहित मसंदन आइसु मानी। रख्यो पंघूरा जनम सथानी ॥ २२ ॥
अजलौ अहै सुन्यो हम कान। अभिखेकति सिख गुरु समान।
जनम थान जो दरशन करि है। जनम जनम के कलमल हरि है ॥ २३ ॥
'श्री गुर तेग बहादर जहां। चलनि समै उतरे सुख लहा।
तहा प्रथम डेरा ठहिरायहु'। सभि संगति को भाखि सुनायहु ॥ २४ ॥
जेतिक शसत्र संचि निज करे। सो संदूख महिं सादर धरे।
दासन के सिर पर धरि वाइ। कहि करि पूरब दिए पुचाइ ॥ २५ ॥

---

1. ऊँचे कंधों वाले बैल। 2. सींगों पर सोना चढ़ा हुआ है। 3. टल्लियां। 4. कोई वस्तु पूजा के लिए दीजिए।

अपर समिग्री चलि चलि तहां। आनि पहूंचे डेरे जहां।
बालिक खेलति सो सभि आए। हाथ जोरि बंदहिं समुदाए ॥ २६ ॥
स्याने भनहिं तिनहुं महि ऐसे। 'करि सभिनि सों गोबिंद जैसे।
जबि सुधि भई, त्याग करि गए। ब्रिदावन बासी दुख लए ॥ २७ ॥
मथुरा जाइ बसे ततकाला। बाल सखा सभि भए बिहाला।
तिनहुं मनिंद नाम इन केरा। क्रिआ बिखैं भीसम ही हेरा ॥ २८ ॥
प्रेम दान सों बंधन धरे। बिछुरति बहुर त्याग कहु करे।
दोनहुं जनु इक पाटी पढ़े। मिल सभि के मन लेवति कढ़े ॥ २९ ॥
सोई आनि लीनि अवतार। निशचे जाने परहिं बिहार।
ब्रिहु को संकट जिम घन श्यामू। तिम पटणे महिं सिखयनि धामू ॥ ३० ॥
शाहुनि के सुत केतिक कहैं। 'हम तौ इन के संग ही रहैं।
जबि इस देश आइ हैं फेरे। निज सनबंधनि को पुन हेरे'[1] ॥ ३१ ॥
तिन के मात पिता समुझावैं। 'हे सुत! अबि इह फेर न आवै।
हमरे बडे भाग जे होति। इहां बसति पिखि अनंद उदेति' ॥ ३२ ॥
केतिक निज पुत्रनि गहि राखहिं। जे गुर संग गमन अभिलाखहिं।
टिकहिं नहीं, रोदन को करि हीं। बारि बारि समुझाइ सुधरिहीं ॥ ३३ ॥
निज परोस[2] महिं बिरधा जोई। जिसहि खिझावहिं सो दुख पोई[3]।
बहुत बिनै को करति बखान। हे गोबिंद मम प्रेम महान ॥ ३४ ॥
नहिं मन थिरहि बहुत अकुलाऊं। बारि बारि कहि किसहिं बुलाऊं'।
इत्यादिक बहु प्रेम करंती। बलिहारी हुइ कशट लहंती ॥ ३५ ॥
देखि प्रेम को अधिक क्रिपाला। कह्यो बाक 'हुइ श्रेय बिसाला।
जनम जनम के पाप गवै हैं। जग महिं फेर न फेरा पैहैं ॥ ३६ ॥
तिसकी बय जेतिक लखि शेष। दीनसि कर ते दरब बिशेष।
उर हरखाइ आशिखा[4] देति। लोके प्रलोक भले सुख लेति ॥ ३७ ॥
अपर निकटि जे प्रेमी महां। घर को दिय समाज तिन तहां।
वध्यो ब्रिहा को संकट भारी। मिलि समूह आए नर नारी ॥ ३८ ॥
बन महि रामचंद जिम जाते। लोक अजुध्या के जिस भांते।
किस किस की बिरथा अबि लिखी अहि। महां प्रेम ते दुख बहु लखी अहि ॥ ३९ ॥
संगति बडी कहावहि जहां। चढ़ि करि गमने सतिगुर तहां।
संग हजारों हैं नर नारी। ब्रिहु ते प्रापति संकट भारी ॥ ४० ॥

1. अपने सम्बंधियों से फिर मिलेंगे 2. पडोस। 3. दुख से पिरोई गई। 4. आशीर्वाद।

चढ़ी नानकी स्यंदन मांही। गुजरी डोरे चढ़ि चलि तांही।
बीच पालकी आप सुहाए। देति चले दरशन समुदाए॥ ४१॥

केतिक असवारी पर आवति। दरसहि एक रीति सुख पावति।
गमनहिं संग जु पग पग मांहि। अनिक तीरथनि के फल पांहि॥ ४२॥

दुरलभ दरशन करि हैं नीके। जो गुर पुरहिं मनोरथ हीके।
पर्यो बिहीर गुरु के पीछे। केतिक आइ कामना बांछै॥ ४३॥

म्रिदु बाकिन सों दे दे धीर। मारग चले गुरु नर भीर।
संगति बडी आइ किय डेरा। उतर परे सगरे तिस बेरा॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गोबिंद सिंह जी गमन' प्रसंग बरननं नाम दोई चत्वारिसती अंशु॥ ४२॥

अंशु ४३

गुर गमन प्रसंग

दोहरा

संझ भई जवि लौ तहां आवति गन नार नारि ।
गनी गरीब सु प्रेम मन मिले भाउ को धारि ।। १ ।।

चौपई

तहिं की संगति सेवा ठानी । अचवनि हेतु समिग्री आनी ।
चावर, चून, दार, घ्रित घने । आनति धरे चाव चौगुने ।। २ ।।
सतिगुर उतरे मातनि साथ । आइ कदाचित पुन कवि नाथ ।
बडे धनी सिख चलि करि आए । चह्यो सभिनि को दें त्रिपताए ।। ३ ।।
सुजसु नगर महिं वधहि हमारे । इत्यादिक गुण बहुत बिचारे ।
सेवा सरब दरब ते आदि । अरपि बिलोके गुर अहिलाद ।। ४ ।।
अनिक प्रकारन के उपहारे । लगे गुरु के अग्र अंबारे ।
आइ तिहाबल अरू पकवान । बंटहिं दें सभि सिक्खनि पान ।। ५ ।।
भीर अधिक कुछ वार न पारा । बहु कोसनि लौ नगर उदारा ।[1]
सिक्ख हज़ारनि के घर तहां । सुनि गुर गमन आइ जहिं कहां ।। ६ ।।
बिनै बखानहिं अनिक प्रकार । 'प्रभु जी ! हम को चले बिसार[1] ।
पुरहि मनोरथ करि अरदास । अबि हम जाइं कौन के पास ।। ७ ।।
स्वामी निकटि, चहिति लें जाचा । होहि दूर क्या करहिं उवाचा' ।
सतिगुर कह्यो 'जनम इसथान । करहु बेनती तहां बखानि ।। ८ ।।
सरब कामना मन की पूरा । कर्यो सथापन अपनि पंघूरा ।
बैठों जहि हमरो धरि ध्यान । करहु वेनती जोरहु पान ।। ९ ।।
गुर सभि थान, बहिर क्या भौन[2] । मुख ते कहैं किधिरि करि मौन ।
सतिगुर जानहिं सभि के मन की । क्यों न पुरहिंगे आसा जनकी' ।। १० ।।

1. हमें भुला कर चले है 2. भवन, घर

सहित मंसदनि संगति सुनिकै। बिसमाने पूरन गुर गुनिकै।
लघु बय महिं बहु सुमति बतावैं। निज सिक्खनि की श्रेय जनावैं ।। ११ ।।

क्यों न कहै, क्या अचरज मानो। सतिगुर के नंदन पहिचानो।
'धंन धंन', कर जोरि बखानैं। ब्रिहु ते तऊ महा दुख जानैं ।। १२ ।।

अनिक प्रकारन करे अहारा। आन्यो गुर के ढिग भरि थारा।
तुरश, मधुर चरपरा[1] बनाइ। मेवा ब्रिंद गिरि गन पाइ ।। १३ ।।

बहु बिधि के चावर करिवाए। पतरे[2] बड खुशबोइ उठाए।
मधुर, सलवण[3] घ्रित भुंजवाए। सूपकार मति चतुर बनाए ।। १४ ।।

आनि मुरब्बे जे फल नाना। अनिक अचारन ल्यावनि ठाना।
कहि लौ गिनौं अनेक प्रकारा। त्रिपताए सभि दीनि अहारा ।। १५ ।।

जितनी संग संगता आई। इक सम सभिनि देग बरताई।
गुरु हुकम ते अचव्यो सारे। दियो न कीरबें किसै अहारे[4] ।। १६ ।।

उतसव भयो मिल्यो बड मेला। चहिं दरशन ते जनम सुहेला।
जाम निसा लौ देखति रहे। बहुर नींद सुख को उर लहे ।। १७ ।।

निज निज थान जथा सुख सोए। गुर गुन उर धरि करि सभिकोए।
जाम निसा ते आसावार[5]। गाइं रवाबी[6] प्रेम उदार ।। १८ ।।

सौच शनान करे उठि करि के। सिमरहिं सतिनाम गुर हरि के।
गुर जागे, करि सौच शनाना। पोशिश पहिरी चारू महाना ।। १९ ।।

बडी प्राति ते आवनि लागे। धरहिं उपाइन मन अनुरागे।
चहुं दिशि महिं कहि दिए बिठाइ। निज निज दिशि गुर मुख दिखराए ।। २० ।।

धीरज दई सभिनि को तबै। 'आनि अनंद पुरिं हेरहु कबै।
जनम भूमि पटणे महिं बेरी। महिमा महां बिलोकनि केरी ।। २१ ।।

दरसहु नित ही नेम निबाहो। शरधा सहित कामना पाहो।
हुइ बिसाल प्रेमी सिख जोइ। आवि अनंद पुरि दरसै सोइ ।। २२ ।।

इत्यादिक कहि दै दै धीर। चहुंदिशि महिं संगति की भीर।
चढ़े पालकी महिं ततकाल। 'गमनहु' सभि सों कह्यो क्रिपालु ।। २३ ।।

परे पंथ स्यंदन अरू डोरे। एक चले आवति गुर ओरे।
इक करि करि बंदन मुरि परे। जसु उचरति चितवति घर बरे ।। २४ ।।

1. चटपटा 2. पतले 3. नमकीन 4. किसी को भी भोजन तैयार न करने दिया 5. ... 6. कीर्तन करने वाले

एक दूर लौ गुर संग आए। कहि वहु बारी सिक्ख हटाए।
चरन सपरसहिं आंसू गेरहि। इक थिर रहे, एक हटि हेरहिं ॥ २५ ॥

जो जिस जोग सु जानि सुजाना। सिरपाउ दैबो तिस थाना।
सादर सगरे करे बिसरजन। लखि सुभाव उर हरखत गन जन ॥ २६ ॥

करति प्रशंसा सदन सिधारे। गुर ब्रिहु ते दुख धीरज टारे।
इम पटणे पुरि संगति बरी। घर घर सभिनि बारता करी ॥ २७ ॥

सिवका पर गुर कीनि प्याना। नरनि उठाइ समग्री नाना।
मात नानकी स्यंदन बिखैं। प्रीते कहु प्रताप बड पिखैं ॥ २८ ॥

श्री गुजरी चाली चढ़ि डोरे। गमने मुख करि पशचम ओरे।
दोइ जाम लौ कीनि प्यानू। डेरा कर्यो ढर्यो जबि भानू ॥ २९ ॥

खान पान सगरो करिवाए। पशुअनि त्रिण दाना गन पाए।
निकटि जि सिख सुनि करि सभि आए। अरप अकोरनि दरशन पाए ॥ ३० ॥

इसी रीति गुर मारग चाले। निस बिसराम करहिं सुख नाले।
दिन महिं गमनहिं मग जुग जाम। निस सिख धाम नगर कै ग्राम ॥ ३१ ॥

तहिं ते सुनति मिलैं मुद पाए। लखहिं भाग बड, प्रभु ढिग आए।
जथा शकति सभि मिलैं सेवा करैं। कर जोरहिं पद पर सिर धरैं ॥ ३२ ॥

दिन प्रति करहिं कूच मग चालैं। उलंघति आए पंथ बिसालैं।
सिव की पुरी मुकति दा पावन। जहिं बिद्या बड पढ़नि पढ़वानि ॥ ३३ ॥

केतिक दिन महिं सो नियराई। जुग मातनि सों कहति सुनाई।
'केतिक समैं बसै इस नगरी। महि मंडल महिं जहां उजगरी[1] ॥ ३४ ॥

गन गुनवंते दिज ते आदि। मानव रहैं धरैं अहिलाद'।
सुनति नानकी पौत्रे बानी। हरखति ह्वै करि निकटि बखानी ॥ ३५ ॥

'पिता तुमारे गमनति आए। हम सभि संग तबै दरसाए।
प्रीतवान संगति बहु आई। कर्यो कीरतन उर हरखाई ॥ ३६ ॥

हाथ जोरि राखे दिन केते। दिन प्रति दरसति बहु सुख लेते।
अबि तुम को मिलि हैं सभि आए। रहहु आप जैसे मन भाए ॥ ३७ ॥

इम बोलति बिगसति बहु भांती। दासनि साथ करति पुन बाती।
काशी वहिर आइ करि खरे। सकल वहीर मिलावनि करे ॥ ३८ ॥

1. धरती पर प्रकट हैं

संगति बिखै जाइ सुधि होई। गमने उर धरि हरख त्यार सभि कोई।
आगे आदर के हित लेनि। सभि गमने शरधा मन भेनि ।। ३९ ।।
मेवनि को डाली* गन लीनि। पुरि ते वहिर निकसिबो कीनि।
गुर के सनमुख सभि चलि आए। गावति शबद प्रेम उमहाए ।। ४० ।।
खरे दूर जित दिशि जबि देखैं। भयो सभिनि अनंद बिशेखै।
गंगा जल तरिकै परि पार। गये गुरु आगवन बिचारि ।। ४१ ।।
बंदन करि डेरा करिवाए। आगे मिले अपर समुदाए।
खरे निकटि नंम्री सिर होए। हाथ जोरि करि दरशन जोए ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'गुर गमन' प्रसंग बरनंन नाम तीन चत्वारिंसती अंशु ।। ४३ ।।

---

*टोकरी

अंशु ४४

श्री गुरु गोबिंद सिंह काशी पुरि प्रवेश करनि प्रसंग

दोहरा

मिले कीनि सभि बंदना सिख करि कै उर भाउ।
गन मेवे अरपन करे आनंद रिद न समाउ ॥ १ ॥

चौपई

सभिनि संग हुइ ल्यावनि ठाने। डेरा करिवायहु शुभ थाने।
सुंदर इक प्रयंक ले आए। उजल आसतरन को छाए ॥ २ ॥
श्री गुर तेग बाहदर नंदन। बैठारे करि सिक्खनि बंदन।
सकल पुरि महिं सुधि हुई आई। दरशन हित संगति उमडाई ॥ ३ ॥
आपस बिखै भनैं नर नारी। 'आयो प्रथम गुरु इक बारी।
जिह श्री तेग बहादर नामू। तिन के इह नंदन अभिरामू ॥ ४ ॥
जिन को दरशन पुरवहि स्वारथ। ले शरधालू कार पदारथ।
घर महिं चलि करि नवनिधि आई। होहि कुभागी लेनि न जाई ॥ ५ ॥
इम कहि ले ले करि उपहार। मिलि करि चले ब्रिंद नर नारि।
आनि हजारहुं दरशन करैं। भांति भांति की भेटनि धरैं ॥ ६ ॥
मूरति अलप सलोनी देखि। शुभ गुन महिं सभिहूनि विशेख।
करहि सराहनि आपस मांही। 'इहा गुर जोधा बनहिं महां ही ॥ ७ ॥
महां प्रतापवंत मुख दिपै। क्यों न श्रेय हुइ जो इन जपै'।
इक भावति इक जाति सदन को। इक देखति हैं गुरू बदन को ॥ ८ ॥
संध्या लौ मेला बड होवा। पावन गुर सुरूप कहु जोवा।
देग* हेतु सामिग्री आनी। चावर चून घ्रित मिशटानी ॥ ९ ॥
जेतिक खहैच खान हित जाना। शुभ वसतुन को गन तहिं आना।
बिबिधि बिधिनि के बने अहारा। पाइस महिं मेवा गन डारा ॥ १० ॥

*भोजन तैयार करने के लिए

मन भावति करि थार भर्यो है। सतिगुर अचवन तबहिं कर्यो है।
मातन आदि मनुज समुदाए। खान पान करि सभि त्रिपताए ॥ ११ ॥
सुपति जथा सूख निसा बिताई। जागे जबि प्रभाति हुइ आई।
सौच शनान ठानि गुर बैसे। दरशन हित पुन आवहिं तैसे ॥ १२ ॥
दिज समूह सुनि करि तबि आए। देखति नमो करहिं सिर न्याए।
बैठे सभि समीप हरखाए। कहैं 'प्रथम तुमरे पित आए ॥ १३ ॥
करे परोहत तीरथ केरे। दियो दान हमको बहुतेरे।
करति प्रतीखन रहैं सदाई। गुरु बंस आवहि, धन पाईं ॥ १४ ॥
जिसते त्रिपत होइ हम रहैं। अरपन ते नहिं जाचा लहैं।
जगत शिरोमणि पूज सभिनि को। समसर कहूं न जानिय जिनके ॥ १५ ॥
यां ते हम भी धनं कहावैं। दरशन करहिं दरब को पावै।
सुनि ब्रितांत को तबि मुसकाए। 'कहां जाचते ? देहु बताए ॥ १६ ॥
जो तुम लैबो होइ सु कही अहि। नहिं परवाह गुर घर लही अहिं।
शिव की पुरि सु बास तुमारा। शासत्रन की विद्या सु उदारा ॥ १७ ॥
सुनि दिजि विद्यावान बखानैं। 'हमहिं देहु सरबंस महानै।
दैव जोग[1] आगमनि तुमारा। यां ते जाचहिं दान उदारा ॥ १८ ॥
तबि सतिगुर बानी तिम मानी। दे सरबंस जु वसतु महानी।
सुनति मोद ब्रिप्रनि के होवा। महां उदार प्रभू कहु जोवा ॥ १९ ॥
'जैसे उज्जल बंस उदारा। तैसो सुठ सरूप अवितारा।
जिम सरूप तिम मति है ऊचे। जैसी मति तिम गुन बहु सूचे ॥ २० ॥
आदि उदार सूरता लहैं। बालिक बय मांहि इस विधि अहैं'।
तबि श्री सतिगुर गंगा तीर। गमने संग दिजन की भीर ॥ २१ ॥
करि शनान को बंसवतंस[2]। दीनसि दान तबहिं सरबंस।
बिप्प्रनि बहु अनंद को पाइ। ले सभि वसतु दरब समुदाइ ॥ २२ ॥
उसतति करी अनेक प्रकारा। ले करि गमने कई हजारा।
सगरी पुरि रुद्र की बीच। कीरति करति ऊच अरु नीच ॥ २३ ॥
जबि गुर सभि किछ दीनो दान। संगति गन मसंद सुनि कान।
वसतु बटोरनि कीनि घनेरी। घने बसत्र आने तिस बेरी ॥ २४ ॥
दरजी ल्याइ सिवावनि करे। बाहन मोल आनिबो करे।
दिन केतिक इम बीते जबै। निकटि निकटि सुधि पसरी तबै ॥ २५ ॥

---

1. स्वाभाविक ही 2. गुरु जी

जौन पुरे की संगति आई। गुर की कार दरब गन लयाई।
जो प्रेमी गुरबखश मसंद। सभि मंहि मुखि धरि आइ अनंद ॥ २६ ॥
गावति शबद हज़ूर पहूंचे। सुनहिं अनेक राग हुइ ऊचे।
करि दरशन को अरपि अकोर। बदति हैं पग जुग कर जोरि ॥ २७ ॥
करी कामना जाचहिं जोइ। पूरति भए प्रभू तबि सोइ।
तीन दिवस गुर के ढिग रहे। जथा जोग सिरुपाउ सु लहे ॥ २८ ॥
'बाल आरबल सुंदर सूरति। रची बिधाते सभि गुन पूरति'।
इत्यादिक बहु करति प्रशंशा। 'हुइ हैं सोढिबंस अवितंशा' ॥ २९ ॥
भयो दरब गुर निकटि घनेरा। सकल साज बनवायहु फेरा।
बहुर चलनि की कीनसि त्यारी। दे सिरुपाउ संगतां सारी ॥ ३० ॥
सुनि सुनि जसु को नर समुदाए। कहहिं 'करहु सिख, शरनी आए'।
देखि भाउ तिन के मन केरा। पग पाहुल दीनसि तिस बेरा ॥ ३१ ॥
जिन जिन पीयसि भए निहाला। गुर प्रभाउ को लख्यो बिसाला।
मिलि संगति सभि अरज़ उचारी। 'चलहु प्रभू ! अबि पुरी मझारी ॥ ३२ ॥
सिवका आदि नयो सभि साज। ऊपर चढ़ि चाले महाराज।
भीर[1] हज़ारहूं नर की संग। गमने गुरू निहारति संग ॥ ३३ ॥
सुरसरि तीर तरी अनुवाई। उतरनि पार अरूढ़ि गुसाईं।
केवट नवका पार लंघाए। दरब दीनि बहु, से हरखाए ॥ ३४ ॥
जिस जिस गरीअनि जाहिं अगारी। चढ़ी अटारनि दरसहिं नारी।
जिम घन मैं तड़िता[2] चमकावै। बिसद सदन महिं तथा सुहावैं ॥ ३५ ॥
अधिक भीर पुरि गरीअनि बीच। बूंदति दूर ऊच अरू नीच।
निकहि होनि की शकति न पावैं। नीठ नीठ गुर अग्र सिधावैं ॥ ३६ ॥
महां कुलाहल पुरि महिं होवा। चढि कोठनि नर नारिन जोवा।
पुशपनि बरखा कहु बहु डारैं। मंद मंद गमंनति निहारैं ॥ ३७ ॥
कहैं कि 'महांराज सम लच्छन। बैस तरुन हुंइ बडे ब्रिच्छन[3]।
क्रिपा द्रिशटि देखति सभि ओर। जित कित खरे सरब कर जोरि ॥ ३८ ॥
किति क थाउं नहिं प्रापति होइ। जहिं थिरता करि दरशन जोइ।
तिस छिन जिन जिन सतिगुर हेरा। भयों सभिनि आनंद घनेरा ॥ ३९ ॥
जिस नहिं पिखे रहयो पछुतावति। 'भाग मंद, हम लहे न आवति।
जाति बजार बिखै सु निहारै। थिरे दूर ही बंदन धारै ॥ ४० ॥
तुंग अटा घन अटा मिलंती[4]। धुज धामन पर गन फहिरंती।
मनो पंख को लाइ चहंती। उडहिं गगन कहु इम द्रिशटंती ॥ ४१ ॥

1. भीड़ 2. बिजली 3. चतुर 4. ऊँची अटारियां बादलों को छूती हैं

चित्रति भीत बिहंग अरू बाग़। अधिक शिवाले पूजन लागि।
बनक धनद* सम बैठे ब्रिंद। करति बनन को सुखी बिलंद ॥ ४२ ॥

पिखि आवति गुर ह्वै सभि ठांढे। हाथनि जोरि नमहिं मुद बांढे।
सभि दिशि देखति सतिगुर चले। सभि भाखति 'हम दिशि मुख भले' ॥ ४३ ॥

कहौं कहां लौ पुरि की कथा। उतसव भयो कुलाहल जथा।
घर घर दर दर गुर की कीरति। कांशी बिखै महां बिसतीरति ॥ ४४ ॥

अंतर पुरि उतारनि करे। खान पान सुपते सुख धरे।
भई प्राति त्यारी करिवाई। साजे वाहिन रुचिर सुहाई ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गुरु गोबिंद सिंह काशी पुरी प्रवेश करनि' प्रसंग बरननं नाम चतुर चत्वारिंसती अंशु ॥ ४४ ।

---

*कुबेर

अंशु ४५

लखनौर आगमन प्रसंग

दोहरा

सगरीं निस महिं सिख मिलैं शबद अनिक बिधि गाइं।
ताल म्रिदंग रबाब ते सतिगुर भले रिझाइं ॥ १ ॥

चौपई

प्राति भई गुर कीनि शनाने। सिक्खयनि चरन पखारनि ठाने।
चरनोदक लै निज निज धामू। पान कर्यो ले श्री प्रभु नामू ॥ २ ॥
सभि थल महिं छिरकावनि कर्यो। सहत कुटंब सिक्ख गन तर्यो।
वाहिन होइ त्यार ढिग आए। दासनि गन को बहु हरखाए ॥ ३ ॥
दै धीरज सभिहिनि इकसार। सतिगुर होति भए असवार।
निकसे कांशी पुरि को छोरा। गमने करि मुख पशचमि ओरा ॥ ४ ॥
आदर हेतु पुचावनि आए। खरे करे कहि गुर समुदाए।
सभि को हटकि अगारी चाले। स्यंदन मातनि आवति नाले ॥ ५ ॥
अपर बिहीर सकल चलि आवा। नवों समाज समूह बनावा।
इसी रीति मारग महिं चले। करति अनेक बिलासनि भले ॥ ६ ॥
डेरा टिकहि भानु के ढरे। गुर आगवन जि सुनिवो करे।
जनु सिक्खयनि को नवनिधि पावै। आनंद धारि धाइ ढिग आवैं ॥ ७ ॥
'औचक गुर दरशन हम पावति। जिन हित कोस हज़ार सिधावति।
मरू थल महिं जिम पावति मेवा। तिम इत देश दरस गुरदेवा ॥ ८ ॥
लै लै अनिक अकोरनि मिलै। इकादुइ मजल कितिक संग चलै।
बिबिध बिधिनि की सेवा ठानहि। अंन दुगध दधि घ्रित को आनहि ॥ ९ ॥
इम ही सगरे मारग आए। पुरहिं कामना जन समुदाए।
राम चंद की नगरी औध[1]। बसे जहा बहु बीति औध ॥ १० ॥
पावनता की औध[2] मनो है। नर नारनि को बास घनो है।
तिस पुरि मैं सतिगुर प्रवेशे। सुधि को सुनि सुनि सिक्ख अशेषे ॥ ११ ॥

1. आयोध्या 2, पवित्रता की चरम सीमा

धाइ धाइ सभि आनि मिले है। करि बंदन दे भेट भले हैं।
जे अनजान सु बूझहिं आपी। 'इह को बालिक रूप प्रतापी ? ॥ १२ ॥
सुंदर मूरति दिपहि उदारा। लखी अति किसू देव अवतारा।
जिस ते नर गन ठानि अदाइब। बंदहिं चरन कमल जन साहिब' ॥ १३ ॥
जे सिख जानहिं तिनहिं सुनावहिं। 'इह सतिगुरु के पुत्र सुहावहिं।
श्री गुर रामदास की बंस। इह बिधि ते सुंदर अवितंश ॥ १४ ॥
हरि गुविंद श्री अरजन नंदन। जिनहुं तुरक गन कीनि निकंदन।
जिन के सुत श्री तेग बहादर। जिनि पग पूजहि बहु जग सादर ॥ १५ ॥
सो पूरब की दिशि चलि आए। तिन के सुत श्री गुजरी जाए*।
अबि निज देश पंजाब सिधारैं। सुनि सुनि नर गन आनंद धारैं ॥ १६ ॥
को कर जोरति सीस निवावहिं। को धरि चौंप अकोर चढ़ावहिं।
क्रिपा द्रिशटि को देखति भले। पुरि बज़ार गरीअनी महिं चले ॥ १७ ॥
वहिर कर्यो डेरा शुभ थान। उतरि परे सतिगुर भगवान।
रूचिर प्रयंक पीठ पर बैठे। तहिं के सिख गन होइ इकैठे ॥ १८ ॥
सभि सेवा हित चलि करि आए। चावर चून घ्रितादिक ल्याए।
त्रिण दाना करि बहुत बटोरा। बंदे चरन कमल कर जोरा ॥ १९ ॥
कुशल प्रशन संगति प्रति कीना। सुनि 'अनंद' सभिहिनि कहि दीना।
बैठे कितिक काल गुर तीर। भई आनि करि दीरघ भीर ॥ २० ॥
हरखति सभि दरशन कहु करैं। जथा शकति भेटनि को धरैं।
इतने महिं बंदर गन आए। तिन को देखि प्रभु बिकसाए ॥ २१ ॥
निकटि हेरिबे हेतु तमाशा। चने गिरावति भे तिन पासा।
खैबे हेतु धाइ मिलि गए। को आपस महिं लरते भए ॥ २२ ॥
तबि सतिगुर गुड़ को मंगवाइ। पिखिनि लराई दियो धराइ।
तबि कपि कूदि परे बलवंते। इक काटति इक भाज चलंते ॥ २३ ॥
इक चींकत बड़ शबद उठावैं। इक लर परे, छीनि इक खावैं।
दंद नखन के करहिं प्रहारा। निकस्यो श्रोणत किस तन फारा ॥ २४ ॥
बदन नितंब लाल जिन रंग। कुद्धति आपस महिं करि जंग।
देखि देखि श्री गुर बिकसावैं। मातुल संग कहैं दिखरावैं ॥ २५ ॥
द्वै घटका लगि परचे रहे। इत उत बिचरति पुनथिर बहे।
जथा जोग संगति के साथ। क्रिपा करति बोले गुरनाथ ॥ २६ ॥
संध्या भई सु भोजन भयो। सूपकार भरि थारहि लयो।
आनि अचावन करि त्रिपताए। भई जामनी गुर सुपताए ॥ २७ ॥

*गुजरी जी के पुत्र।

पहिरूदार खरे हुइ रहे। सगरी वसतु सुचेत लहे।
पुर्नहि प्राति को जागि शनाने। करि त्यारी मारग प्रसथाने ।। २८ ।।
ग्राम नगर मग को उलघंते। सने सने सुख सहित चलंते।
हरीद्वार श्री गंगा जहां। चलि करि आइ पहूंचे तहां ।। २९ ।।
मयापुरी को महां महातम। दरशन परसन ते सुध आतम।
उतर्यो सिवर गुरु को आइ। सुनि करि सिख जे उर हरखाइ ।। ३० ।।
दरसन देखि देखि सुख पायो। जथा शकति करि दरब चढ़ायो।
अपर सेव को करी संभारनि। अपर लोक बहु करति निहारनि ।। ३१ ।।
निशा कीनि बिसराम गुसाईं। प्राति उठे करि सोचि सबाई[1]।
सुरसरि पावन जल महिं मज्जै। जिस परसे सभि के अघ भजै ।। ३२ ।।
कहि महिमा तबि लौ दिज आए। जाचति भए दरब समुदाए।
निकसि गुरु जबि बाहरि बैसे। दीनसि धन ले आनंद जैसे ।। ३३ ।।
इस प्रकार दिन कितिक बिताए। कर्यो कूच पुन पंथ सिधाए।
दोइ मजल करि पहुंचे तहां। सुरजसुता[2] प्रवाहति जहां ।। ३४ ।।
करि शनान तरनी चढ़ि चाले। श्यामल जल अविलोकि बिसाले।
जबि उरार उतरे गुर आइ। संगी पहुंचे तबि समुदाइ ।। ३५ ।।
हुइ असवार चलनि जबि लागे। पंथ बहीर प्यानो आगे।
तनहि पिता के आइ संदेसे। भेजे जबि दिल्लीसु प्रवेशे ।। ३६ ।।
'तुम को आवति लगी सवारी। रहे प्रतीखत कितिक अगारी।
हम अबि तुरकेशुर सिर होइ। तजहिं शरीर लखहिं सभि कोइ ।। ३७ ।।
नहीं अनंदपुरि करहु पयाना। एक ग्राम लखनौर सथाना।
तहिं मसंद जेठा इक बासहि। तिस अवास महिं करहु निवासहि ।। ३८ ।।
पुन सुधि पठहिं तुमारे पास। तबि अनंद पुरि करहुं निवास।
तावति बसहु ग्राम तिस मांही। आगे गमन करहु किम नांही' ।। ३९ ।।
सुनति नानकी मन बिसमाई। गुजरी द्रिग आंसू ढरि आई।
संकट बड़ो पाइ भरि स्वासा। बिनस्यो तूरन हुतो हुलासा ।। ४० ।।
पुन बूझयो सिख 'किम इह होवा ? किस विधि महिं सतिगुर को जोवा'।
सरब ब्रितांत सुनावहु हमैं। दरशनि करि त्यागे किह समैं ? ।। ४१ ।।
जुग माता सुत ढिग हुइ तीनो। सिख ने छोरि प्रसंग कहि दीनो।
जिम कशमीर बिप्प्र गन आए। अहिदी जिम तुरकेश पठाए ।। ४२ ।।
'सैफाबाद चुमासा बाने। खोजनि फौज फिरी चहुं पासे[3]।
आप आगरे को पुन गए। तुरकनि के बसि तिह ठां भए ।। ४३ ।।

---

1. सारी यमुना नदी 3. चारों ओर

दिल्ली ते बड चंमू चढ़ाई। अधिक सुचेती करि ले आई।
मुख प्रसंन मुझ संग बखाना। मग महिं मिलहु जाइ किस थाना ॥ ४४ ॥
नही पत्रिका लिखिबे भई। बाकनि साथ खबर पठ दई।
सासू नुखा चित बसि भारी। 'हे प्रभु! कहां करी गति न्यारी' ॥ ४५ ॥
ठटक रही नहिं चलिबो चाहा। मन बूडयो बड कशट प्रवाहा।
पुन सिख कहि बहु बिधि समुझाई। 'इम तुम को अबि नहिं बनिआई ॥ ४६ ॥
गुरु आप ही कारन कीनि। तुम को हुकम जथा बिधि हीनि।
करहु उताइल बिलम न लावहु। पहुंचहु तिसी ग्राम थिरतावहु ॥ ४७ ॥
साहिबज़ादे को प्रितपारहु। गुर सरूप नित इनहिं निहारहु।
बहुत बारि तागीद बखानी। करहिं न चिंता शोक महानी ॥ ४८ ॥
सो सिख लैके संग प्याने। पंथ उलंघि पहुंचि तिस थाने।
तिस मसंद घर उतरे जाई। आनंद पुरि सभि वसतु पठाई ॥ ४९ ॥
वाहन आदि सकल ले नाल। गमन्यो गुर मातुल जु क्रिपाल।
सास नुखा दोनहु तबि रही। सुत जुति, जिम जानहि को नहीं[1] ॥ ५० ॥
पग वंदन जेठा करि प्रीति। सेवति सरब रीति घर नीत।
नहिं को जान सक्यो इत देश। मिलि बालनि महिं खिलति हमेश ॥ ५१ ॥
दिन प्रति वधहि सरीर बिसालहि। शत्रुन घने घरनि जो घालहिं[2]।
और कथा बसिबे लखनौर। कहौं फेर जहिं अवसर ठौर ॥ ५२ ॥
अबि दिल्ली महिं गुर की कथा। सुनहुं गुरु सिख बरनौं जथा।
सैंन समेत जबहि चलि आए। देखनि हेतु ब्रिंद उमडाए ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'लखनौर आगमन' प्रसंग बरननं नाम पंच चत्वारिसती अंशु ॥ ४५ ॥

---

1. जैसे कोई जान ही न सके 2. नाश करते हैं

अंशु ४६

परेत जून उधार करनि प्रसंग

दोहरा

दिल्ली महिं तिस घर बिखे रहै देव जिस माहिं।
जो हठ करि नर तहि बसहि मारति कै तरसाहि ।। १ ।।

चौपई

सगरे नगर बिखै इह रौरा। 'नहिं प्रवेश हुइ को नर पौरा।
त्रासति सकल रहैं नर बाहर। दिन महिं भी न निकटि हुई जाहर ।। २ ।।
बीच जामनी बसि है कौन। ऐसो हुतो भयानक भौन।
तुरकेशुर की आइसु करे। तिस सथान श्री गुरू उतरे ।। ३ ।।
चहुं दिशि चौकीदार बिठाए। संग जि दास वहिर उतराए।
'सभि हिंदुनि को पीर कहावै। अबि मारसि इस छुट नहिं जावैं ।। ४ ।।
कै धरि त्रास दीन महिं[1] आवै। तुरक सकल मानुख हुइ जावैं।
बिना जतन ते इह बिधि होई। कै मरि जाहि डरहि सभि कोई ।। ५ ।।
नौरंग साथ कहै उमराव। 'रावर ने किय भलो उपाव।
बिन मारे हिंदू मरि जै हैं। नाहि त डर करि तुरक बैन है ।। ६ ।।
जबि इह दीन बिखै हुइ जाइ। सभि की अटक चुकहि इक भाइ।
इहं हिंदुनि को गुरु कहावै। इस पीछै सभि के मन भावै ।। ७ ।।
मूरख मिलहिं परस्पर कहैं। गुर क्या करहिं, दुशट नहिं लहैं[2]।
अपनी दई वसतु को लेहिं। करि कै कूरे तुरक अछेह[3] ।। ८ ।।

---

1. मुसलमानी धर्म को धारण करे 2. दुष्ट यह नहीं जानते कि गुरु जी क्या करने वाले हैं। अच्छी तरह से

चौंकीदार खरे चहुं पासे। अंतर तिस घर के गुर बासे।
मिट्यो प्रकाश तिमर जबि छायो। देहि भायनक प्रेत सु आयो ॥ ९ ॥

हाथ जोरि पद बंदन ठानी। भयो दीन मुख बिनै बखानी।
'प्रभु जी! बास तुमारो भयो। धनं अहो मैं दरशन दयो ॥ १० ॥

करहु मोहिं पर हुकम बडेरा। जानहु आप मोहि कहु चेरा।
जल सपरशिबे शकती नांही। जे अहार ल्यावहुं तुम पाही ॥ ११ ॥

मोहि हाथ को अचहु कि नहिं लिहु। अपर सेव मैं करहु जु कहि दिहु।
इहां जि दोखी दुशट तुमारे। कहो जिसहि देवहुं तिस मारे ॥ १२ ॥

गहो नगर ते दूर बगावहुं[1]। कोइन जानै तहां पुचवाहुं।
पुत्र आदि तिनके करि नाश। करौं उपारनी जरैं अवास ॥ १३ ॥

रावर की आइसु अनुसारी। मैं करि सकौं सकल ही कारी।
श्री गुर तेग बहादर कह्यो। 'हम ने द्वेशी को नहिं लह्यो ॥ १४ ॥

नहिं किसहुं संघारनि बनै! सरब जीव निज भागनि सनै।
दैव देति दुख सुख सभि काहूं। इह नहिं दोश अपर किस माँहू ॥ १५ ॥

पंडित, मूढ, राव अरू रंका। सभि के सीस काल को डंका।
करम शुभाशुभ जे करियंत। गमनहिं संग होति जबि अंत ॥ १६ ॥

कारन करन एक करतारा। तिस आगे क्या जीव बिचारा।
मारहि राखहि सभि को सोइ। यां ते रहीऐ तूशनि होइ ॥ १७ ॥

सुनि कै प्रेत बिचरति भयो। श्री गुर बासो मम ढिग थियो।
सेवा करहुं इनहुं की कोई। मोहि क्रितारथता तबि होई ॥ १८ ॥

अंतर ध्यान भयो ततकाला। गमन्यो जहां बजार बिसाला।
खोजति फिरति बिचारति सोइ। तिन के हित लेवौं वथु कोइ ॥ १९ ॥

जो मुझ कर ते भच्छन करहिं। जिस महिं दूशन को नहिं धरहिं।
पाकयो अंन अनेक प्रकार। मक कर ते नहिं करहिं अहारा ॥ २० ॥

नांहि त बनी परी जु मिठाई। बिबिध भांति हाटन हलवाई।
ले पहुंचावति अचहिं सुखारें। निज प्रसंनता मो पर धारे ॥ २१ ॥

अपर वसत क्या लेवौं ऐसे। अचवहिं गुर चहैं चित जैसे।
सकल बजार खोजिबो कर्यो। एक दुकान आनि कै थिर्यो ॥ २२ ॥

---

1. फैंक दूं

मेवा हुतो वलायत केरा । भांति भांति माधुर फल हेरा ।
सेव संधुरी[1] अर जरदालू । नशपाती पिसता रस आलू ।। २३ ।।

संगतरे, दारम[2] सुभ दाने । नाना भांतिनि के रस साने ।
तिनहुं देखि के प्रेत बिचारा । इन ले चलौं जुकरहिं अहारा ।। २४ ।।

मोर हाथ ते दूशति होइ न । इसते बिना अपर बिधि कोइ न ।
उचित अहार प्रमान उचावा[3] । नाना बिधि को जो मन भावा ।। २५ ।।

पुन पौने[4] गहि ले करि हाथ । आवति भयो बेग बड साथ ।
श्री गुर के धरि दीनि अगारी । भयो दीन बहु बिनै उचारी ।। २६ ।।

'अंगीकार करहु इह मेवा । बनौं क्रितारथ मैं करि सेवा ।
भाग जगे पूरब अबि मेरे । इहां इकाकी तुम को हेरे ।। २७ ।।

पुन तुम भए पराहुन चारी । बसति हुतो मैं इहां अगारी ।
आवनि आज आप को भयो । मैं बडभाग जानि निज लयों' ।। २८ ।।

इम बिनती सुनि कै तिस केरी । क्रिपा द्रिशटि श्री सतिगुर हेरी ।
दीन जानि अंगीक्रित कीनसि[5] । मेवा अचन हेतु कर लीनसि ।। २९ ।।

रुच्यो जितिक सो कीनि अहारा । पर्यौ रह्यो जो तहां बिथारा ।
पुन पोने को चूपन लागे[6] । छीलकै डारति हैं कुछ आगे ।। ३० ।।

वहिर हवेली ते कुछ डारहिं । समुख प्रेत गुर दरश निहारहि ।
अधिक प्रसंन होति मन माहूं । चितवति रिदै दोख अबिदाहूं ।। ३१ ।।

श्री गुर तेग बहादुर फेर । बोले क्रिपा द्रिशटि को हेरि, ।
को कुकरम तैं बर्सहि कमावा ? जिस ते प्रेत जूनि[7] तन पावा ।। ३२ ।।

सुनि करि हाथ बंदि तबि कह्यो । 'इस कुकरम ते अस तन लह्यो ।
पर्यौ शरीकन महिं बड़ झगरा । विरसा मोर हटावति सगरा ।। ३३ ।।

तबि मैं करि कै कूरो धरम । सभि के मन उपजायो भरम ।
झगड़ा लियो जीत मैं सारो । लगै पाप नहिं, रिदै बिचारों ।। ३४ ।।

तिसी दोश ते अस मैं भयो । जिस जूनी मैं बहु दुख थयो ।
आप करहु करुना जे मोहि । देहु छड़ाइ महतां सुख होहि' ।। ३५ ।।

---

1. सिंधूरी रंग से सेब 2. अनार 3. अनुमान से उठा लिया 4. गन्ने 5. स्वीकार किया 6. गन्ना चूसने लगे 7. छिलके 2. जन्म

सुनि श्री मुख ते बाक बखाने। 'परे चुपाक चुप हित ठाने[1]।
सेव करी तांके फल लीजै। 'घोंर जून ते छुटिबो कीजै' ।। ३६ ।।

सुनति चुपाक चूप[2] तिन लीने। नाना बिधिनि स्वाद रस कीने।
ततछिन तजि के सकल बिखाद। उत्तम गति प्रापति अहिलाद ।। ३७ ।।

बहुर सतिगुर सुख को पाइ। सैन करि जुग नैन मिलाइ।
हिदुंनि धरम राखि बे कारन। भए प्रब्रित करनि क्रित दारून[3] ।। ३८ ।।

अपनो नाम साच दिखराबनि। करि बहादरी धरम बचावनि।
जिस प्रकार करि सकहि न कोई। करिबे कहु संम्रथ इक सोई ।। ३९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'परेत जून उधार करनि' प्रसंग बरनंन नाम खशट चत्वारिंसती अंशु ।। ४६ ।।

---

1. छिलके प्रेम से चूस ले 2. चूस लिए 3. आप भयंकर क्रिया करने लगे हैं

अंशु ४७

सिक्खय अज़मत करनि प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु घर ते वहिर को दिए चुपाक बगाइ ।
परे जाइ करि तहिं कछू सिक्ख हुते जिस थाइं ॥ १ ॥

चौपई

इक सिख ने लै करि मुख पायो । चूपति भयो स्वाद रस आयो ।
गुरु उचिशट[1] को कर्यो अहारा । शकति सहित भा ततछिन भारा ॥ २ ॥
करि अहंकार अधिक उर फूला । जानति भा न को मम तूला[7] ।
इसी प्रकार भई भुनसार । सूरज उद्यो मिट्यो अंधकार ॥ ३ ॥
तबि तुरकेशुर के नर आए । शांति रूप सतिगुरु जिस थाएं ।
नहीं प्रेत ने कछू बिगारा । नहीं त्रसे, बैठे सुख भारा ॥ ४ ॥
इम सुनि गुरू हकारनि करे । तुरकेशुर ने उर हठ धरे ।
निकसे भवन बिखै ते जबै । मिले सिक्ख सगी जे तबै ॥ ५ ॥
बंदन कीनि चरम सिर धरि कै । बोल्यो द्वै करि जोरनि करि कै ।
'श्री सतिगुर क्यों सकट सहीअहि । मो कहु नैन सैन सों कही अहि ॥ ६ ॥
मैं समरथ हौं सगरी भांति । चहौं सु करौं पिखहु सक्खयात[1] ।
सौं हज़ार लाखन क्या गनौं । तुरक तुरक पति जुति सभि हनौं ॥ ७ ॥
बाकी संतति रहै न जैसे । मैं करि करम दिखावौं ऐसे ।
इह मांहि जे बिलंब कछु लहो । अपर करौं जे आइसु कहो ॥ ८ ॥
दिल्ली अरू लवपुरि बड़ खाना । जिन मांहि तुरकनि ज़ोर महाना ।
इसत्री आदि सुता सुत सारे । बसहिं मलेछ सहित परवारे ॥ ९ ॥
दोनहुं नगरन की छित जेति । अपने हाथ उठावौं तेती ।
बड़े बेग सो इन टकराइ । भगन करौं मंदिर समुदाइ ॥ १० ॥

---

1. गुरु जी का बचा भोजन 2. मेरे तुल्य कोई नहीं 3. साक्षात, प्रकट

पुन औंधे करि देवौं गेर। जिसते दुशट न उकसहि फेर।
इत्यादिक है शकति बिसाला। बाक आप कीजहि इस काला ॥ ११ ॥
रावर केर अनादर करिई। तुरक मंदमति कुछ न बिचरई।
चौकीदार खरे चहुं पासे। कैद कर्यो चाहति दुख रासे ॥ १२ ॥
इन ते क्यो सहीए अपमान। ऐसी करहुं परहिं पग आनि'।
इम सिख ते सुनि करि मुखकाए। गही बाहुं गुर हाथ दबाए ॥ १३ ॥
ऐंचनि कीनि शकति जे भई। छूछी देहि तथा हुइ गई।
जथा ऊख ते रस निकसावै। खोर[1] रहे, बिन सार गिरावै ॥ १४ ॥
भयो असार लख्यो मन मांही। प्रथम शकति उर पय्यति नांही।
पशचाताप करति दुख पावै। इह क्या भयो रिदै मुरझावैं ॥ १५ ॥
सतिगुर कह्यो करहु जिम होवै। हकरावहु पुरि जे बड़ दोवैं।
इम सुनि कै बोल्यो कर जोरि। भयो दीनि दिखि तिन मुख ओर ॥ १६ ॥
'करन हरन जग के तुम बरता। चहे करहु सभिहिनि के करता।
लखी न महिंमा अधिक प्रतापा। कर्यो जनावनि को मैं आपा ॥ १७ ॥
करौं सहाइ गुरु की अबै। हतौं तुरक जे दोखी सबै।
ऐसी करहुं इनहुं के संग। जर समेत[2] तरु सगरो भंगा ॥ १८ ॥
भई शकति जबि मो महिं भारी। सरब जथारथ गिरा उचारी।
रावरने बाहू मम गही। भयो रंक न शकति कछु रही ॥ १९ ॥
अखिल बिनास्यो जो मम दाप[3]। जिम वांछति तिम बरतहु आप।
धीरज सहत गंभीर उदारा। कवन लखै भिप्प्राय[4] तुमारा ॥ २० ॥
रचहु भविख्यत क्या सु ब्रितांत। नहिं को जानि सकहि अस भांति।
श्री गुर तेग बहादर सूनि कै। कीनि जनावनि तिसको भनिकै ॥ २१ ॥
'शरधा धारि संग तैं आयो। सिक्खी धरम भले निबहायो।
पुन तुरकन को हेरि कुफेर। मन महिं गिनती गिनति बडेर ॥ २२ ॥
शंका करों हमारे मांहि। सम्म्रथ हैं कैधों नांहि।
यां ते छीलक तुव दिशि गेरे। तैं कबि आगे ऊख न हेरे ॥ २३ ॥
स्वाद देखिवे हित इछ धारी। मुख मैं पाइ उचिशट हमारी।
तबि शकती तुझ महिं हुइ आई। चहति जु हुतो अबहि दिखराई ॥ २४ ॥
जिस समुंद्र ते जल कन पावै। पून तिस आगे गरब जनावै।
अपनि आप को करहि बखानै। जिसते लीनसि तिस नहिं जानै ॥ २५ ॥

1. खाली छिलका 2. जड़ सहित 3. अहंकार 4. अभिप्राय-मतलब

जिन सेवा करि भी तुझ मांही। सो क्या इम करि सकि हैं नांही।
इस प्रकार की सुधि नहिं जानी। मैं करि दै हौं-करति बखानी ॥ २६ ॥
सतिगुर करहि क्रित्त को जैसे। सिख्य न तरकहि तिस कहु कैसे।
हुइ प्रसंन बरतहि अनुसारी। सो सिख सुखद मोख अधिकारी ॥ २७ ॥
गुर सरबग्य जानि सभि करै। सिख अलपग्य गरब क्या धरै।
यांते सिमरहु श्री करतारा। सो सभि जीवन को आधारा ॥ २८ ॥
सुनति सिक्खय ने बंदन ठानी। 'तुमरी गति तुम ही प्रभु जानी।
तुरक अवग्या करहिं तुमारी। सो हम ते नहिं जाति सहारी ॥ २९ ॥
यांते तुमरे निकटि बखानी। छिमहु प्रभु ! हम बुधि अनजानी।
बहुर न करि हैं कबहि उचारी। जिम भावहि कीजहि तिम कारी ॥ ३० ॥
इस प्रकार सिख को समुझाइ। गमने गुर ग्यान गति दाइ।
केतिक चौकीदार सिपाही। चले संग गहि आयुध पाही ॥ ३१ ॥
हित तकराई के चहुं ओर। जाति साथ दिखरावति जोर।
सने सने गमनति मग जात। कुछक सिक्ख जिनके पशचात् ॥ ३२ ॥
श्री सतिगुर तबि जाइ पहुंचे। दुरग तुरक पति के भित ऊचे।
पुनहि पौर मैं भए प्रवेश। खरे सुभट गहि शसत्र अशेश ॥ ३३ ॥
पौर मनोहर पाहन[1] केरा। शिलपनि चित्र बिसाल उकेरा[2]।
बहुत देश के नर जहिं खरे। निज निज ग़रज़ अरज़ को करे ॥ ३४ ॥
तहिं ते उलंघति अंतर गए। जहां कचहिरि दुशटनि किए।
संग सिक्खय अरू चौकीदार। देखति बडे बडे सरदार ॥ ३५ ॥
हिंदू तुरक अनेक निहारैं। अति अवगुन को कुछ न बिचारैं।
श्री गुर जबहि कचहिरी बरे। चौकी तहां बिछावनि करे ॥ ३६ ॥
सुजनि उसावनि उज्जल जहां। बैठे श्री सतगुर जी तहां।
अखिल कचहिरी पूरन भई। मुकता हरिन ते दुति नई ॥ ३७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'सिक्खय अज़मत करनि' प्रसंग नाम सपत चत्वारिंसती अंशु ॥ ४७ ॥

1. पत्थर 2. खुदाई की-पत्थर में चित्रों की

अंशु ४८

नौरंग प्रसंग

दोहरा

श्री गुर हरि गोविंद के नंदन बंदन जोग।
शांति मती बैठे प्रभु देखति भे सभि लोग ॥ १ ॥

चौपई

तरकेशुर हंकार बिसाला। दुशट तुरंगा महित कुचाला।
दीन बधावनि चाहती मंद। हिंदू जग महिं रहहि न पंद[1] ॥ २ ॥

परमेशुर सो बंधहि दावा। महां मूढ मति ते गरबावा।
निशकंटक जिस राज महाना। शत्रु कहूं सुनिय नहिं काना ॥ ३ ॥

चारहुं दिशा चमूं जिस फिरिई। सकल देश सद ही अनुसरई।
मारहि, बंधहि, लेवहि छीन। सरवनरेश बसी निज कीनि ॥ ४ ॥

जिम रावन त्रै लोकनि राजा। तिम इस छित पर सहित समाजा।
चारहुं ओर खरे क़र जोरे। जे न्रिप बडे सभिनि सिर मौरे ॥ ५ ॥

श्री सतिगुर बोले तिह साथ। 'क्या हम सो कहिं दिल्ली नाथ ?
कौन काज हमरे बसि जोवा। जो तुम ते नहिं पूरन होवा ॥ ६ ॥

सुनति दुशतम मूरख मानी। महां पाप करता धुम हानी।
अस नौरंग बोलयो 'मम काज। है जो करहू सुनहु तुम आज ॥ ७ ॥

सभि जग मुसलमान करि देना। एक मई सभि को पिखि लेना।
हिंदू रहै न भू महि कोऊ। इह निशचा हमरे दिढ होऊ ॥ ८ ।'

---

*हिन्दु मर्यादा

काचो हिंदुन को मति कूड़ा[1]। वर्कहिं तुफान मिलहिं गन मूड़ा।
इनहिं चलावौं राह खुदाइ। दोजक गिरते लेहु बचाइ ॥ ९ ॥
होहि दीन महि कलमा कहैं। चलहिं शरा महिं नेकी लहैं।
रोजे ईद नवाज कुरान। इन को धारहिं साथ इमान ॥ १० ॥
मुसलमान हुंद कहे जु मेरे। तिसै पदारथ देउं घनेरे।
नांहि त धन लैकै हुइ जांइ। कै निज झगरो लेहिं जिताइ ॥ ११ ॥
जिमीं इनाम देति हौं तांही। धारैं शरा खुशी के मांही।
किधौं तुरक की तनिया होइ। सुंदर देखति जाचै कोइ ॥ १२ ॥
निज दुहिता[2] तक अरपौं तांही। आइ जु हिंदु शरा के मांही।
सुता दरब आदिक सभि दै कै। ज्यों क्यों करि इह जीव रिझै कै ॥ १३ ॥
लयाइ दीन महिं शरा मझार। इह जानहूं बड परउपकार।
हमरे मति महिं महां सबाब[3]। सिफती करहि खुदाइ अदाब[4] ॥ १४ ॥
असली काज अहै इह मेरो। करहि जु फेर न मानहि हेरों।
तिसके साथ शत्रुता नीत। करि हौं मैं सभि रीति अनीत ॥ १५ ॥
जो शुभ होइ मानि है कह्यो। दीन बिखै आवहि चित चह्यो।
सो हम भ्राता केर समान। सरब रीति लै सुखन महान ॥ १६ ॥
सुनि श्री तेगबादर भाखा। 'जिम खुदाइ की हुइ अभिलाखा।
तिम मानी चही अही हम तुम को। जिस परमेशुर के नहिं सम को ॥ १७ ॥
जे प्रभु चहै त हिंदु न जनमै। तुरक जनम ही ह्वै निस दिन मैं।
दोनहुं उतपति होवति जहिं कहिं। लखहु कि रखहि, दुहन को जग महिं ॥ १८ ॥
जे तुम कहो जानीयहि कैसे। तिस पर सुनहुं करहु बिधि ऐसे।
लेहु पंच मन मिरचै कारी[5]। ढेर करहु इक थान सुधारी ॥ १९ ॥
गन ईंधन तिस के चहुं ओर। नीके अगनि प्रकाशहु जोर[6]।
अशट जाम लौ दाहति रहीए। पुन उत्तर हम देहिं सु लहीए ॥ २० ॥
इम नुरंग ने मानी बात। गुर बाहर आए बख्यात।
चौकीदार साथ ही भए। कारा ग्रिह महिं ले करि गए ॥ २१ ॥
रहति भए सतिगुर सुख संगे। निज नौकार सों कहयो नुरंगे।
'मिरच पंच मण लयावहु आछे। चहुंदिशि अगनि दाहु करि पाछे ॥ २२ ॥
अशट जाम लौ करिकै दाह। आछी बिधि जिम होइ सुभाहु[7]।
सुनि कै तथा करति बिधि भयो। इक निस दिन पावक दिपतयों ॥ २३ ॥

1. झूठा (धर्म) 2. पुत्री 3. हमारे धर्म में यह बड़ा पुण्य है 4. अदब, सत्कार 5. काली मिर्चें 6. जोर से 7. अच्छी तरह जलकर राख हो जाय

सीतल सुआह भई जबि तिनै। जाइ नुरंगे से ! सुधिभने।
सुनि तुरकपति ने जबि बानी। करे हकारनि गुर गुनखानी ॥ २४ ॥
ढ़िग बिठाइ कै सकल जनाई। 'हम कीनसि तुम जथा बताई।
उत्तर मोहि दीजीए सोई। जिसते इकमय सभिजग होइ ॥ २५ ॥
जबि निज करि हौ अंगीकारा। ह्वै जु मनोरथ महां तुमारा।
पूरन करौं अखिल मैं फेर। दीन बिखे आए कहु हेरि ॥ २६ ॥
सतिगुर कह्यो 'जु मिरचन सुआह। लाइ नरन सगरी मसलाह[1]।
लेहु चारणी[2] सों तिस छाणु। जो उबरहिं सो उत्तर जाणु' ॥ २७ ॥
नौरंग ने सुनि मनुज पठाए। काज़ी मुल्लां लीनि बुलाए।
सतिगुर पास बिठावनि करे। 'समझहु तुम इहां कहां उचरे' ॥ २८ ॥
सगरी भसम निकटि मंगवाई। बहु नर ते कर सों मसलाई।
छानति भए चारनी धारे। मसलि मसलि छिद्रन तर डारे ॥ २९ ॥
सगरी भसम छानिबो कीनि। साबत मिरचैं निकसी तीन।
हाथन साथ सु मसल घनेरी। भई न भगनि सभिनि सो हेरी ॥ ३० ॥
सरब भसम ते उबरी सोइ। ज्यों की त्यों देखति सभि कोइ।
जिनके आंच छुई नहिं नेरे। पिखि पिखि बिसमहिं लोक बडेरे ॥ ३१ ॥
धरी नुरंगे तबि निज हाथ। बोल्यो बाक गुरनि के साथ।
क्या उत्र इस बिखे तुमारे। ज्यों हम पूछ्यों बिदत उचारे ॥ ३२ ॥
इन महिं क्या अज़मत दिखराई। मिरच रास ते तीन बचाई।
क्या हम जानहिं देहुं बताइ। मान्यों दीन कि नहिं मन ल्याइ' ॥ ३३ ॥
सुनि श्री तेग बहादर कह्यो। 'अजहुं नहीं उत्तर तुम लह्यो ?
जिम खुदाइ की मरज़ी अहै। उत्तर तथा मिरच इह कहैं ॥ ३४ ॥
इक करि देउं चहि इह तेरी। नहिं खुदाइ की, हमने हेरी।
पूरब हिंदु तुरक जग दोइ। अबि ते तीन जानीए होंइ ॥ ३५ ॥
तोहि मनोरथ छूछा परैं। जतन अनेकनि ते नहिं सरैं।
हम तुम जीव कहां तिस आगे। अपनी शकति दिखावन लागे ॥ ४६ ॥
सकल खलक खालिक की गाईए। इस महिं आपा नहीं जनाईए।
अपनि धरम सभिनि के प्यारो। सुख कांखी नहिं तजहि दुखारो ॥ ३७ ॥
निज निज धरम राखही जोइ। उत्तम गति सो प्रापति होइ।
परंपरा की रीति महानी। कौन सकहि इस को करि हानि ॥ ३८ ॥

---

1. मसलने को कह 2. छलसी

इस भूतल पर भए घनेरे। तेजवंत समरथ बडेरे।
गरबत गमनति जो बिपरीत। मूलसमेत जाति सो बीत॥ ३९॥

जिस प्रभु ने इह जीव उपाए। रच्छक हुइ सो बनहि सहाए।
अपर बिखै क्या शकती अहै। करम कुकरम करनि को चहै॥ ४०॥

यांते मिरचन को द्रिशटांत। प्रभू मरज़ी देखनि सक्खयात।
हुइ एको, दोइ न रहै। बनँहि तीन, पुन थिरता लहै॥ ४१॥

इह खुदाइ की लखहुं रज़ाइ। जिस का कोइ न सकहिं मिटाई।
चलिवो श्री प्रभु के अनुसारी। धरम रीति इहु लखहु हमारी॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ द्वादश रासे 'नौरंग' प्रसंग बरननं नाम अशट चत्वारिंसती अंशू॥ ४८॥

अंशु ४६

दिल्ली महि श्री गुर प्रसंग

दोहरा

कारग्रिह महिं सतिगुरु पठि दीने तुरकेश ।
रिदे बिचार उचारतो बैठी सभा अशेश ॥ १ ॥

चौपई

'इह हिंदुनि को गुरु कहावै । अजमत इस महिं द्रिशटि सु आवै ।
अगनि ब्रिंद महिं मिरचै तीन । जलनि न दई दिखावनि कीनि ॥ २ ॥
अपर मंच मन सगरी जरी । बिना तीन ते इक न उबरी[1] ।
करामात इह नहीं दिखावै । पढि कलमा न शरा महिं आवै ॥ ३ ॥
अपने हठ को दिढ़ करि पालै । कहे हमारे पर नहिं चालै ।
भयो कैद दुख लहै घनेरा । तऊ न मानति है इक बेरा' ॥ ४ ॥
सुनि करि शरा फास के बंधे । नौरंग संग भनहि मति अंधे ।
'राखहु कैद ताड़ना लहे । सरब प्रकार कठन हुइ रहे ॥ ५ ॥
मिलिबे देह न किस के संग । पावति कशट बंध लिहु अंग ।
बहु दिन महिं अकुलाइ बिसालै । कहे तुमारे महिं तबि चालै ॥ ६ ॥
इम श्री तेग बहादर गए । काराग्रिह महिं बैठति भए ।
दिल्ली नगर बसहिं सिख गुर के । धरहिं प्रेम भाउ दिढ़ उर के ॥ ७ ॥
इक सिख ने गुर हेतु अहारा । करनि हुतो तिन रिदे बिचारा ।
अबि तो पुरि महिं सतिगुर रहै । जो सिक्खयनि के स्वामी अहैं ॥ ८ ॥
तिन को अपने सदन बुलाइ । असन अचावौं रुचिर बनाइ ।
अहैं कैद महिं, जो नहिं आवहिं । लै करि जाउं, तिसी थल खावहिं ॥ ९ ॥

1. बच रही

सभि ते अधिक भाग बडिआई। होहि मोहि कहु जे बन जाई।
मम घर चरन पाइं नहिं जेई। तहां गए ते अर्चहिं न तेई॥ १०॥
मंद भाग अपनो तबि जानी। गुर प्रसंन नहिं ह्वै इम मानौं।
इत्यादिक गन तुरक बिचारति। गयो कैद थल हुइ प्रेमारतु॥ ११॥
बूझि सिपाहिनि गा गुरु पास। खरो भयो ढिग कहि अरदास।
नमो ठानि करि जोरे हाथ। पुलत बिलोचन जल के साथ॥ १२॥
'सुनहु नाथ! अभिलाखा मोरी। बहु दिवसन की रिदै वडेरी।
श्री गुर सदन चरन को पावहिं। मोर हाथ ते भोजन खावहिं॥ १३॥
असमंजस जानहिं बिधि जोऊ। निशचा होति मोहि कहु तोऊ।
प्रेम अधीन प्रभू हैं मेरे। अनकरनो भी करहिं सु प्रेरे॥ १४॥
पूरहु, इच्छा काथ! हमारी। अचहु असन कहु चलि इकबारी।
नांहि त करहु इहां लै आवौं। बैठि समीप अहार अचावी॥ १५॥
सुनि सिख बिनती, प्रभू अलावहिं। 'करि तिआर हम भोजन खावहिं।
तोहि सदन महिं आवहिं बैसे। इच्छा पूरहि तव उर जैसे॥ १६॥

दोहरा

ह्वै प्रभाति जबि आगली दिवस आई है जाम।
अचवहिं भोजन पहुंचि कै बैठि तिहारे धाम॥ १७॥

चौपई

सुनि सतिगुर बच बिन संदेह। हरख भयो सिख बिसमय लेहि।
अहैं कैद महिं, चौकी पास। तऊ आइ हैं मोर अवास॥ १८॥
बंदन करि उतलावति गयो। रूचिर अहार करनि उदतयो।
कर्यो तिहावल बहु सुच धारी। पुन पाइसु[1] करवाइसि त्यारी॥ १९॥
ओदन[2], पहित[3], स्वाद दधि बरे[4]। करे पातरे मंडे[5] खरे।
अधिक सलवण[6] स तुरश[7] बनाए। इत्यादिक बहु मधुर कराए॥ २०॥
इम करत्यों भोजन अभिराम। बासुर होति, भयो जबि जाम।
सदन सिख्य के प्रगटे आइ। कह्यो, छुधा हमको अधिकाइ॥ २१॥
जो अहार तैं त्यार कराइ। सो अबि ल्यावहु देहु अचाइ।
देरि न करहु नीर को आनहु। बैठहिं हम किस थान बखनाहु॥ २२॥
देखि प्रेम अरू भाउ बडेरे। भो सिख चलि आए घर तेरे।
देखति सिख्य बिलंद अनंद्यो। हाथ जोरि पग पंकज बंद्यो॥ २३॥

1. खीर 2. चावल 3. दाल 4. दही बड़े (भल्ले) 5. पतली रोटी 6. नमकीन 7. खट्टे भोजन

सुंदर चौंकी दई बिछाइ। नए बसत्र उज्जल ते छाइ।
क्रिपा निधान! बैठीए आप। सिख के पाप संतापहिं खाप ।। २४ ।।
दास प्रेम के बसि महिं रहो। नित परलोक सहाइक अहो।
बहुत दिवस की इच्छा मेरे। कबि पूरहिं गुर आवहिं डेरे ।। २५ ।।
मम चित की लखि अंतरजामी। कर्यो क्रितारथ, सतिगुर स्वामी।
इत्यादिक करि भाउ घनेरा। कीनि प्रसादि त्यार तिस बेरा ।। २६ ।।
दरशन हेतु अपर सिख आए। कर जोरहिं अरु सीस निवाए।
बिनै उचारहिं चरन सपरसैं। प्रेमी आइ सुनति ही दरसैं ।। २७ ।।
तबि सिख ने जल कर महिं धारे। हित करि गुरु के चरन पखारे।
बसत्र साथ पौछनि करि नीके। पुनहि पलोसति आश्रै जी कै ।। २८ ।।
जिन चरनन की सेवा कारन। सुर सिहाहिं किम करि हैं धारन।
सो सिख बडभागी ने गहि करि। नेत्रनि साथ सपरशति धरि धरि ।। २९ ।।
सरब प्रशादि परोसनि करिओ। गुर आगै बडि धार सु धरिओ।
रूचि सों ले करि स्वाद अहारा। अच्यो बिलोकति भाउ उदारा।
तिस सिख को शरधालू देखि। तहिं घर आए जलधि बिबेक ।। ३० ।।
तहिं परोस महिं इक सिख रहै। करनि अहार गुरु हित चहै।
हाथ जोरि करि गुरु अगारी। बिनै सहित निज चाहि उचारी ।। ३१ ।।
'श्री गुरु जी मेरी अरदास। आवहु भोर हमार अवास।
क्रिपा करहु निज दास जनी जै। भोजन भाउ समेत अचीजै ।। ३२ ।।
पावन पावन करि घर पावन[1]। मैं निहाल हौं तुमरे आवनि'।
अधिक दीनता पिखि सिख केरि। नेत्र क्रिपाल कह्यो तिस बेरी ।। ३३ ।।
'सुद्ध भावना जे उर तोही। सो सतिगुर ते पूरन होहीं'।
अस कहि सिक्खनि दे संतोशा। जिस ते दिढ उर बधहि भरोसा ।। ३४ ।।
मंद मंद सतिगुर पुन चले। जिन दरशन ते दुख दल मले।
मिलहि सिक्ख को, बंदन ठानहिं। पुन आपस महिं मिलहिं बखानहिं ।। ३५ ।।
'श्री प्रभु सरब भांति समरत्थ। चहहिं सु करहिं धरै सिर हत्थ।
सकल जगत सिरजन अरू पालन। करहिं छिनक महिं सभि को घालन[2] ।। ३६ ।।
शकति महत ते महत धरति हैं। दास हज़ारनि काज करति हैं।
अबि तुरकेशुर कैद परें हैं। को जानै किम छिमा धरे हैं ।। ३७ ।।
नांहि त सुत बनिता सभि साज। अरु तुरकन को जहिं लगि राज।
एक बोल ते देहिं बिनास। जथा बज्र गिर जुति तरू घास ।। ३८ ।।

---

1. घर में पवित्र चारण रखिए 2. क्षण में नाश करते हैं

महां ताण जुति भए निताणे। कारन कौन, सकहिं नहीं जाणे।
सभि छित महिं सिमरे जहिं कहां। पहुंचहिं होइं सहाइक महां ॥ ३९ ॥
इह गति सुनी पिखी सभि जाइ। कैद परनि गति लखी न जाइ।
सभि घट घट की जाणन हारे। छिन महिं लाखहुं कोस पधारे ॥ ४० ॥
इत्यादिक अज़मत को धारे। छपी नहीं बिदती जग सारे।
तऊ कशट को सहैं सरीर। जानी जाइ न क्यों धरि धीर[1] ॥ ४१ ॥
मिलहिं परसपर सिख इम कहैं। पूरन गुरु भेद किम लहैं।
पुन सतिगुरु काराग्रिह आए। पूरब सम बैठे तिस थाएं ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'दिल्ली महि श्री गुर प्रसंग' वरननं नाम ऊन पंचासति अंशु ॥ ४९ ॥

---

1. पता नहीं क्यों धैर्य धारण कर रखा है

अंशु ५०

दिल्ली महिं श्री गुर प्रसंग

दोहरा

सिख के करि भोजन अच्यो निकसे जबि तिस द्वार ।
पिखे मुलाने तबि तहां जर बर हुइ गो छार ।। १ ।।

चौपाई

नर संगी थे, नित पुछवायो । इन के घर कैसे करि आयो' ?
किन हूं तहां सु कीनि बतावनि । 'इस के कर भोजन किय खावन ।। २ ।।
अपनी सिक्ख जान करि भाऊ । अच्यो अहार रिदे हरखाऊ ।
मतसर अगन मुलाने मन महिं । जरबर भयो भसमि तिस छिन महिं[1] ।। ३ ।।
जबि लगि तुरक बनहिं इह नांही । नहिं मानहिं हिंदून्न मांही ।
हिंदुवान को मूल इही है । अबि निशचै भी बात सही है ।। ४ ।।
दुशट गिनति इम रिदे मझार । पहुंच्यो नौरंग के दरबार ।
'जो श्री तेग बहादर गह्यो । तुम जो करनि मनोरथ चह्यो ।। ५ ।।
तिस को मूल जानीएं आछे । बने तुरक इस, सभि हुंइ पाछे ।
लाखहुं नर तिस के अनुसारि । पूजहिं आइसु मानि उदार ।। ६ ।।
अबि तिस की कीजहिं तकराइ । वहिर कैद ते ह्वै न कदाई ।
अबि सिक्खयनि के घर चलि जाइ । करि आदर सो असन अचाइ ।। ७ ।।
लोक वहिर के मिलति जि रहैं । कैद बिखै तौ किम दुख लहै ।
मिलहि न नर बाहिर को जाइ । सो नहिं निकसहि रहि इक थाइं ।। ८ ।।

1. क्षण में जलकर राख हो गया ।

काराग्रिह महिं तबि दुख भाइ। मिलहि न को, बैठहि मुरझाइ।
सभि दिशि ते निरास जबि होइ। कह्यो तुमारो मानहि सोइ ॥ ९ ॥
सुनि नुरंग मन रिस्यो घनेरा। 'किसके हुकम करहि पुरि फेरा।
जमादार को लेहु बुलाइ। तिसको गुनहा देहु सजाइ ॥ १० ॥
पुरि महिं फिरहि, हुकम नहिं मेरो। सो कैसे बिचर्यों नर हेरो ?'
चलि आयो तिस पूछनि कीनसि। 'तैं क्यो वहिर निकसिबे दीनसि ॥ ११ ॥
हुकम दियो तुझ, करि तकराई। कोठन अंदर राखि टिकाई।
वायु लगनि न देहु बहिर के। कठन सथान राखि द्रिढ करिके' ॥ १२ ॥
जमादार ने सुनति बखाना। 'बैठे रहहिं एक ही थाना।
नहिं अंतर ते वहिर निकासों। जानि कहां पुरि करे अवासो ॥ १३ ॥
कर को कसि कै एक सिपाही। गाढो ठाढो रहि तिन पाही।
आठो जाम खरो इक रहै। टरहिं न थल ते द्रिशटि सु लहै' ॥ १४ ॥
सुनति मुलाने कीनि उचारा। मैं सिख के घर आप निहारा।
इह मुकरहि सभिहिनि के गांही। पुन पिखि कहौं शाहु के पाही ॥ १५ ॥
अब तौ कही न मानहि मेरी। साची लखहु बिलोचन हेरी'।
इतन प्रसंग होइ हटि रह्यो। उपालंभ[1] तिस को बहु कह्यो ॥ १६ ॥
जमादार सुनि कै चलि आइव। हिंत तकराई सभिनि सुनाइव।
'कोइ न गुर ढिग जाने देहु। गमनहिं पास, हटाई सुलेहु ॥ १७ ॥
करी गुरु ढिग बहु तकराई। सो दिन बीत्यो निसा बिताई।
भई भोर सिखि कीनि प्रशादि। गुरु, घर आइ धरहिं अहिलाद ॥ १८ ॥
भांति भांति के भोजन करे। क्रिपा निधान ध्यान करि सिमरे।
एक जाम जबि दिन चढ़ि आवा। सतिगुर पहुंचे दरस दिखावा ॥ १९ ॥
प्रविशनि लगे सिक्खय घर जबिहूं। पिखे मुलाने के नर तबि हूं।
पुरि की गरी गरी के मांहि। फिरति निहारति जित कित जाहिं ॥ २० ॥
नर पिखि गमन्यों निकटि मुलाने। 'मैं हेरे सिख घर प्रविशाने'।
सुनि नौरंग ढ़िग पहुंच्यो धाई। 'नर पठि आप लेहु दिखराई ॥ २१ ॥
करनि अहार गए सिख घर महिं। साच कैं लेहु लखि उरमहिं'।
शाहि तबहि भेजे नर दौरे। जिस अवास के प्रविशे पौरे ॥ २२ ॥
करे बिलोकनि बैठि बिराजे। मुख प्रसंन पिखि कलमल भाजे।
पिखति शाहि को जाइ सुनायो। ततछित जमांदार बुलिवायो ॥ २३ ॥

1. गिला 2. झूठ

'पेखहु मूड़ ! कूड़ कहिं काली । सिख घर गमन्यो करति कुसाली ।
तुमने कह्यो न मान्यो मेरा । देउं दंड लयो दरब बडेरा ।। २४ ।।

कारागि्रह ते तिस निकसाइ । पुरि महिं फिरहि असन कित खाइ ।
दिन प्रति इसी रीति चलि जातो । सिक्खयनि के घर भोजन खातो ।। २५ ।।

कौन बात ते इम तैं कीनसि ? किधौं दरब रिशवत[1] ते लीनसि' ।
डर्यो शाह ते द्वै कर जोरे । कह्यो कि 'मैं आइव तिस ठौरे ।। २६ ।।

कोशठ के अंतर अबि छोरे । करे कपाट असंजति पौरे ।
तारे[2] मारि रख्यो दर तांही । ह्वै सनद्ध दिढ खरो सिपाही ।। २७ ।।

जे मम कह्यो झूठ उर ल्यावौ । तो नर अपनो पठि, दिखरावौं' ।
सुनति शाहु बिसमयो मन महां । शीघ्र पठायो नर इक तहां ।। २८ ।।

खोली कपाँट निहारनि करे । बैठे सतिगुर आंनद भरे ।
पिखि करि गमन्यों शाहु सुनायो । 'कोशठ अंदर मैं दिखि आयो ।। २९ ।।

बहुर पठायो सिख कै घर महि । बैठे पिखे, खरे हुए दर मैं ।
मूरति एक पिखी द्वै थांन । सुनति शाहु जुति भए हिरान ।। ३० ।।

रिदे विचारहिं-लख्यो न जाए । द्वै सथान पुनि पिखिनि पठाए ।
द्वे मूरति द्वै थान निहारी । इक सिख ग्रिह, इक कैद मझारी ।। ३१ ।।

'अज़मतवंत[3]' कहति हैं केई । केतिक कौ निशचा शुभ होई ।
नौरंग अति खुनस्यो मन मांही । इह क्या रीति करति दिखराई ।। ३२ ।।

अस न होई छल बल करि जाइ । कारागि्रह ते निकसि सिधाई ।
गह्यो मरू[4] करि जतन बनाए । हाथनि आयहु काल बिताए ।। ३३ ।।

अबि मनाइ कै मैं मन आई । करों शरा मति, तुरक बनाई ।
इह जबि कलमे को पठि लेहि । बहुर अपर हिंदू रहिं जेहि ।। ३४ ।।

अनायास[5] सभि हूं बनि जाइं । गुर भयो, सिख किम ठहिराइं ।
यांते इह संग जतने करीजै । दीन बिखै जिम किम ले लीजै ।। ३५ ।।

जमादार कारागि्रह केरा । तिह ताड्यो कहि त्रास घेनरा ।
'दिखी अहु चल्यो जाइ महिं क्यों हूं । अबि सिक्खयनि ग्रिह गमन्यो ज्यों हूं ।। ३६ ।।

राति दिवस दिढ होइ सिपाही । शसत्र सहित ढांढो रहि पाही ।
आंखनि आगे देखति रही अहि । त्रास मोहि दिशि ते तिस कही अहि ।। ३७ ।।

---

1. घूस 2. ताले 3. करामाती 4. बड़ी कठिनाई से 5. बिना प्रयत्न किए

कह्यो जि मान लेहि किस रीति । ताड़न करे त्रास इह चीत ।

तौ मम ढिग तबि आइ कहीजै । रहहु सुचेत विलास बिसास नकीजै ॥ ३८ ॥
जे करि जांहि निकसि करि कैसे । होइ ताड़ना तुझ पर तैसे ।
संकट घने पाइ जिम सोई । करहु सु रीति जि सूधा होई' ॥ ३९ ॥
इम ताड़न करि पठ्यो सिपाही । सावधान ठांढो रहु पाही ।
करामात करि जे करि गयो । तौ नहिं दोश तनक हम भयो ॥ ४० ॥
इस बिधि बिन, अस को चलि जायो । कौण दोथणी ने किम जायो* ।
इम बिचार कीनसि तकराई । काराग्रिह महिं गुर सुखदाई ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'दिल्ली महिं श्री गुर प्रसंग' बरननं नाम पंचासति अंशु ॥ ५० ॥

---

*किस मां ने जन्म दिया है

अंशु ५१

दिल्ली महिं प्रसंग

दोहरा

बीते केतिक दिवस जबि काराग्रिह के मांहि।
सरब रीति ते कठनता करहि तुरक बदराहि ॥ १ ॥

चौपई

पुनहिं मुलाने काजी और। मिलि मसलत कीनसि इक ठौर।
'हिंदुनि गुर गह्यो दिढ शाहू। कर्यो कैद बहु संकट मांहूं ॥ २ ॥
कितने दिवस सुबीत गए हैं। ताड़न अनिक प्रकार किए हैं।
रचंक हठ नहिं त्यागनि कीनसि। बध्यो प्रथम दिढता लीनसि ॥ ३ ॥
अनिक उपाइ किए बहु रोका। इक सम मुख तिन को अवलोका।
नहीं त्रास ते देख्यो हीन। बदन प्रकाश प्रसंनता लीनि ॥ ४ ॥
नहीं शर्हा महिं आवनि मनाहि। कह्यो शाह को रिदैं न आनहिं।
अपनि आप को लखहि बडेरा। करहि तरक तुरकन मतजेरा[1] ॥ ५ ॥
अबि चलि पातशाहु समुझावहु। अपनो खाना तिसे खुवावहु।
अस मसलत करि गमने सोइ। कुचल शरा के बंदे जोइ ॥ ६ ॥
साथ अदाइब[2] कुरनश[3] करिकै। बारि बारि तसलीम सु धरि कै।
पहुंचि शाहु ढिग बुधि समुझाई। 'बनहि तुरक इक इक अपर उपाई ॥ ७ ॥
बहु दिन बिना अहार बिताए। अधिक छुधातुर भा दुख पाए।
कुठ्यो[4] मास आप मंगवावउ। डारि मसाले लवन रिझावउ ॥ ८ ॥
करि कै त्यार देगचे मांही। पास लिजाइ खुलावहु तांही।
जब खाना तुमरो ले खाइ। तबिहू तुरक आप बनि जाइ ॥ ९ ॥

---

1. तुर्कों के मत को निम्न समझता है 2. सत्कार सहित 3. प्रणाम, सलाम 4. मुसलमानों की रीति के अनुसार काटा हुआ मांस

बहुत प्रबोधहिं तर समुदाइ। लालच सभि ते अधिक दिखाइ।
सभिहिनि के तुम पीर बनहुंगे। तिम करि हैं जिम आप मनहुगे ॥ १० ॥
इत्यादिक कहि अनिक प्रकारे। दुइ त्रै चलि उमराव तुमारे।
समुझावहु दे बहु बड़िआई। साम दाम के रचहिं उपाई ॥ ११ ॥
जिम किम करहू उचाबच बात[1]। आनहु शरा बीच बक्ख्यात'।
इम सुनि मसलत मानी शाहू। महां दुशट चालसि बदराहू ॥ १२ ॥
अपनि खान को खाना त्यार। करिवाइस मतिमंद गवार।
द्वै उमराव लीए निज साथ। गमने खाना धरि करि हाथ ॥ १३ ॥
कारागिह महिं चलि करि गए। मानुख दसक संग मैं थिए।
जहिं बैठे तुरकन जर नासक[2]। रछक हिंदुनि केर प्रकाशक ॥ १४ ॥
इसी हेतु तन धन पर छोरनि। तुरकन के सिर ठीकर फोरनि।
राज तेज अतिशै बड़ जोई। जिन के सम जग महि नहिं कोई ॥ १५ ॥
तिन कहु भली भांति करि कूरे। चहति विनास्यो सतिगुर पूरे।
कोशठ अंतरि बैठे जहां। देखति भए जाइ करि तहां ॥ १६ ॥
प्रथमै निज पख को नमुझाए। उमरावन दोनहूं बच गाए।
'क्यों तुम संकट इतो सहारो। कह्यो शाह को सिर पर धारो ॥ १७ ॥
तुम को करि है पीरन पीर। अरपहि मुहिरैं, मुकता, हीर।
सभि सलाम करि मानहिं आन[3]। पातशाहि इम कीनि बखान ॥ १८ ॥
जौ तुम चहहु निकाह[4] करायो। लेहु शाहु दुहित मन भायो।
इसते परे अपर बड़िआई। रही न पाछे दें जु बताई ॥ १९ ॥
पठ्यो देगचा पास तुमारे। खावहु, कलमा मुखहु उचारे।
नांहित बादी शाहु सुभाइ। चहै सु करहि न फेर्यो जाइ ॥ २० ॥
केतिक प्रान हानि करि दीने। निज हठ को पूरन करि लीने।
यांते अबि समझहु मन मांही। तुव सहाइता कबि तिन नांही ॥ २१ ॥
जिसकी फिरै सकल जग दोही। अस नहिं बली जु सनमुख होही।
किस उपाइ ते छटन करि हो। नाहक परे महां दुख भरि हौ ॥ २२ ॥
लेहु दैगचा खावहु खाना। पुन छुटि ऐश करहु बिधि नाना।
मानहु बात, कहे हम आछे। नांहि त पछुतावहुगे पाछे' ॥ २३ ॥
सुनि मति मंदन के इम बैन। कह्यो देगचे दिशि करि नैन।
'क्या इस महिं तुम कीनि पकावन ? कहां सिद्ध हुइ इसके खावनि[5] ? ॥ २४ ॥

1. ऊंची नीची बातें 2. तुर्कों का जड़ से नाश करने वाले 3. आज्ञा का पालन करते हैं 4. विवाह 5. इसके खाने से क्या होगा ?

क्या निशचे करि हमरि खुवावति । कौन काज तुमरो बनि आवति ।
धरम भ्रिशट अपरन करि देना । इस हठ करि तुम बहु दुख लेना ।। २५ ।।
परवदगार[1] बिसार्यो मन ते । खोटे काज करति हो तन ते ।
ढांपन[2] दिहु उतारि इस केरा । अपनि भावना फल लिहु हेरा' ।। २६ ।।
खाने को समीप जो खर्यो । तिस ने ढांपन सुनति उतर्यो ।
जबहि देगचा तुरक उघारा । तिस महिं अचरज भयो निहारा ।। २७ ।।
लघु लघु सूकर निकसे घने । घुर घुर शब्द अधिक ही भने ।
को मेंडक सम निकसहिं बाहिर । फांधि तेगखे दौरति ज़ाहिर ।। २८ ।।
को तिस ते दीरघ निकसंते । मूखक[3] समसर फिरति बुलंते ।
को तिस ते भी बड़े दिसंते । जिम मंजार[4] बचा चपलंते ।। २९ ।।
केतिक सम मंजार भए हैं । निकसि निकसि गन वहिर गए हैं ।
कारे, कबरे, बिसद बिसाले । इंगट मुख जिन[5], इत उत चाले ।। ३० ।।
लघु लांगुल को बहुत डुलावैं । कान सकोचैं तहां भ्रमावैं ।
भए भूर भै भीत सु भाजे । निकसि निकसि गमनै दरवाजे ।। ३१ ।।
तुरकन के पैरन विच्च[6] दौरें । प्रविशे जाइ बसन निस ठौरें ।
जहां बनहि खाना तिन केरा । धाइ धाइ तहि करते फेरा ।। ३२ ।।
तिन के बासन को मुख लाइ । दौड़ दौड़ करि दिए रुढ़ाइ ।
जल को जाइ समरशहिं अंग । छुवे तिनहुं के बसत्रनि संग ।। ३३ ।।
शसत्रनि साथ सपरशहिं देही । घुर घुर करति फिरति जहिं केही ।
काराग्रिह महिं सभि इसथान । दौरहिं फिरहिं स त्रास महान ।। ३४ ।।
काचो पाको अंन जितेक । तिस मुख लावहिं खाहिं जितेक ।
को काराग्रिह तजे पलाई । बीच बजार फिरहिं उतलाई[7] ।। ३५ ।।
'तौबा तौबा' तुरक करंते । 'क्या होयहु' कुछ नांहि जनंते ।
'भए नपाक[8] सकल ही रीती । कहां इमान[9] रह्यो गा बीती ।। ३६ ।।
भोजन बासन बसन हमारे । बद[10] छुहि गए फिरति ही सारे ।
मारहु मारहु देहु निकासहिं' । चहुंदिशि तुरकनि शबद प्रकाशहिं ।। ३७ ।।
दौर दौर तिन संग बिदारैं । को भज जाइ कितिक को मारैं ।
काराग्रिह महिं दौर मच्यो है । को जनु[11] भड़थू पाइ नच्यो है ।। ३८ ।।
गहि भाले शमशेरहिं हाथ । भाजे फिरहिं सूकरनि साथ ।
अपदा जनु तुरकन पर आई । पूछै ते कछु कह्यो न जाई ।। ३९ ।।

---

1. पालक, ईश्वर 2. ढक्कन 3. चूहा 4. बिल्ला 5. जिनके मुंह हिलते हैं 6. में (पैरों में) 7. शीघ्रता से 8. अपवित्र 9. धर्म 10. बुरे (सुअर) 11. मानो

कारग्रिह महिं पकरैं जोइ। हहिरे[1] तुरक, हिंदू सुखि होइ।
सभिहिनि की मति बिसमै भई। क्या इहु गति, जानी नहिं गई ॥ ४० ॥
चहुंदिशि महिं हुइ कै तुरकाना। कितिक घेर मारे तिस थाना।
कितिक पलाए पुरि ते निकसे। हेरि हेरि हिंदू जन बिगसे ॥ ४१ ॥
कारग्रिह के जितिक सिपाही। तन ने बसत्र उतारे तांही।
जल महिं गुसल कर्यों मिलि सभिहूं। अपर सुथल सुधराए तबिहू ॥ ४२ ॥
उचित राखिबे सो रखि लई। नाहिं त बसतु अपर को दई।
महां दुखी होए मतिमंद। हमरों भयो इमान निकंद[2] ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'दिल्ली महिं प्रसंग' बरननं नाम एक पंचासती अंशु ॥ ५१ ॥

---

1. डर गए 2. नष्ट

अंशु ५२

दिल्ली को प्रसंग

दोहरा

पौर पौर पर ठौर पुरि करहिं परसपर बात ।
'गह्यो गुरु हिंदवान को अजमत जुति बक्ख़यात ॥ १ ॥

चौपई

तपत देगचे आग पकाए । तिस महिं सूकर गन निकसाए ।
लघु लघु घुर घुर बोलति फिरैं । तुरकनि अंग सपरशन करैं ॥ २ ॥
हते कितिक श्रोणत तिन बह्यो । दौरति मारति तिन लग रह्यो ।
छीटैं परी तिनहुं पर सारे । हुइ घाइल बहु थान बिगारे ॥ ३ ॥
जित कित कारागि्रह के महिं । दीसति फिरते इत उत जाहिं ।
गयो इमान तिनहु को जनीअति । रुधिर सपरश्यो सभि को सुनीअति ॥ ४ ॥
हिंदुनि के गुर शकति दिखाई । भइ मूड़ कुछु लखी न जाई ।
सुनि सुनि करि हिंदू बिसमाए । नौरंग को निंदति समुदाए ॥ ५ ॥
डरहिं दुशट ते दुर दुर कहैं । 'मंद मती महिमा नहिं लहैं ।
महां जुलम करता वड पापी । साधू जन कहु बहु संतापी ॥ ६ ॥
इह तुरकनि को तेज विनाशै । करनि कठन हठ अस उर आशै* ।
इस प्रकार पुरि रौरा पर्यो । घर घर दर दर सुनिवे कर्यो ॥ ७ ॥
तिन उमरावन कीनि शनानै । बसत्र अपर ही पहिरनि ठानै ।
पछुतावति बिसमावति रिदे । शाहु समीप गए सो तदे ॥ ८ ॥
तसलीमात करी हुइ खरे । सरब ब्रितांत सुनावनि करे ।
'पठे तुमारे ले करि गए । कह्यो को कहिते भए ॥ ९ ॥

---

*हठ धारण किए रखना ही इसके मन का आशय लगता है

किंचत नहीं त्रास करि मानी। अधिक ढीठता मन महिं ठानी।
कहै जि तुम किस धरम छुटावहु। इसको फल बड संकट पावहु ॥ १० ॥
जबि गाढे हुइ हम ने भनो। तबि अचरज कीनसि तुम सुनो।
देनि लगे सो खान अहारा। तिस बासन को बदन उघारा[1] ॥ ११ ॥
बद बहु निकसे गने न जाइ। इत उत फिरति कैदीअनि मांहि।
सकल मकान जु बैठन केर। करे नपाक फिरे फिर फेरि ॥ १२ ॥
हेरि हेरि हम अचरज होए। लघु लघु गन निकसे सभि जोए।
दौरि दौरि कहि करि मरिवाए। कितिक नगर ते बहिर पलाए ॥ १३ ॥
बिसमै लोक हजारों आवति। भई भीर हेरनि हित धावति।
ठौर ठौर दौरै बड रौर। खरे कैदखाने के पौर ॥ १४ ॥
अलप देगचा हुतो पकायो। गन शूकर को इह निकसायो।
सभिहिनि के मन भई गिलान। पछुतावति लखि हानि इमान ॥ १५ ॥
उर हरि करि उर अस किय करनी। जिस प्रकार तुम सों हम बरनी।
पुनहि देगचा होयहू छूछा। बिसमे लोकन को किह पूछा ॥ १६ ॥
सभिनि शनान सु बसत पखारे। रंकन को दिय कितिक उतारे।
तऊ गिलान[2] रिदे महिं राखति। या खुदाइ-बिसमत मुख भाखति ॥ १७ ॥
सुनि नौरंग बादी मति मूडा। दीनि शरा हठ कठन अरूढा।
फरके ओठ लाल करि नैन। रिस करि गरबति बोलति बैन ॥ १८ ॥
'तिस को हमने पूरब कह्यो। करामात दिहु जिम चित चह्यो।
नटति रह्यो[3] नहिं कछू दिखाई। मुझ मैं अजमत अहै न काई ॥ १९ ॥
बहुत बारि मैं कह्यो तिसी को। अजमत दिहु, खलास करि जीको[4]
अबि जे खाना लगे खुवावनि। क्यों इह करी आप दिखरावनि ॥ २० ॥
कहैं झूठ, है अजमत धारी। बहु अन बन क्या करहिं विचारी।
तऊ जाइ बूझहु तिस माही। साच पुरख तू पईयति नांही ॥ २१ ॥
तैं बखान कीनसि हम पाहू। अजमत मैं न दिखावौं करहू।
अबि क्यों करामात दिखराई। बोलसि कूर, क साचो गाई ॥ २२ ॥
गामनहु निकटि पूछिबो करी अहि। हम दिशि ते बहुत्रास उचरी अहि।
कहति हुतों—अजमत नहिं मेरे। इह क्या कीनसि बहुतनि हेरे ॥ २३ ॥

1. उस बरतन का ढक्कन उठाया 2. घृणा 3. टालते रहे 4. अपना छुटकारा करवा ले

हटि करि उत्तर मुझ ढिग ल्यावउ। क्या कहि है सो सकल सुनावहु'।
इम सुनि कै दोनो उमराव। गमने पुन कैदिनि की थाव ॥ २४ ॥
बैठे बूझनि सतिगुर करे। 'साथ निहारे शाहु उचरे।
मैं जबि करामात को कह्यो। हेतु बिलोकनि चित महिं चह्यो ॥ २५ ॥

नटति भयो तबि मोहि अगारी। नहिं अजमत मो महिं लघु भारी।
क्यों न शाहु को तबि दिखराई। जिसते पावति अधिक बडाई ॥ २६ ॥
पुन काराग्रिह मैं रूकि करि कै। अनिक रीति के संकट भीर कै।
हम कहु अबि दिखरावनि करी। तिस ते शाहु रिदे रिस भरी ॥ २७ ॥
करामात को राखति अहो। मुख ते बहुर झूठ को कहो।
तुमरे अनबन हेरि महाने। उत्तर बूझ्यो शाहु सुजाने ॥ २८ ॥
आप अबहि उत्तर दिहु जैसे। जाइ सुनावहिं तिस को तैसे।
रिस करि रह्यो शाहु मन मांही। पठ्यो हमैं, आए चली पाहीं' ॥ २९ ॥
सुनि श्री तेग बहादर राइ। उमरावन को कह्यो बुझाइ।
'इस को तुम अजमत नहिं जानो। मन के खोट बिचार पछानो ॥ ३० ॥
करहि भावना जैसे कोइ। तिस को तस फल[1] प्रापति होइ।
श्री ख़ुदाइ दरगाह मझार। एव न्याव है सदा उदार ॥ ३१ ॥
धरम भ्रिशट हमरे कहु चह्यो। तिस को फल तुम तैसो लह्यो।
हिंदू जनम हमारो जानि। कुट्ठ्यों पठ्यो मास हित खान[2] ॥ ३२ ॥
तुमरे हुती शूकरनि आन[3]। छुवहूं न जिस को, कहां सु खान।
तिस आमिख ते सो बनि गए। लघु तन अनिक उपजते भए ॥ ३३ ॥
चहति हूते पर धरम बिगारा। यांते तुम इमान कहू हारा।
इह उत्तर दीजहि तिस जाइ। ताकहि पर, सु परहि गर आइ[4] ॥ ३४ ॥
करामात हमरे महिं नांही। करहिं दिखावनि तौ किम काहीं'।
इम सुनि दौन गए उमराव। पहुंचे हुतो शाह जिस थाव ॥ ३५ ॥
कहिबति गुर की सकल सुनाई। 'हम महिं करामात नहिं राई।
भयो भावना कहूं फल एही। बने मास ते शुकर जेही ॥ ३६ ॥

हम ने अजमत नहिं दिखराई। तुम ही बात कुफेर[5] बनाई'।
सुनि करि शाहु रोस कहु धारा। सभिहिनि महिं अस बाक उचारा ॥ ३७ ॥

---

1. वैसा ही फल 2. मार कर मांस खाने के लिए भेजा 3. सौगंध 4. जो पराए का बुरा सोचता है, वह उसी के गले में आ पड़ता है 5. उलटी

'कै इस कहु मैं तुरक बनाऊं। शरा आपनी बिखै चलाऊं।
कै इसते अजमत पतीआऊं। जिम मुख ते मैं कहौं कराऊं ॥ ३८ ॥
द्वै महिं एक करहि जब आछे। बंदखलास करौं तब पाछे।
जे करि तुरक होनि नहिं मानहि। अज़मत केर छपावनि ठानहि ॥ ३९ ॥
सिरर* आपने कहु निरबाहै। तौं अपनो नहिं जीवन चाहै।
मैं देवौं इसको मरिवाइ। निज लाइक की पाइ सजाई ॥ ४० ॥
तौ जग महिं जानहिं डर मेरौ। फेर मनोरथ पूरन हेरौं'।
इम कहि तूशन भा तुरकेश। महां मंद मति चहति कलेश ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'दिल्ली को प्रसंग' बरननं नाम दोइ पंचासति अंशु ॥ ५२ ॥

*हठ

अंशु ५३

शनानं प्रसंग

दोहरा

इत्यादिक तरकति महां तुरकेशुर मति मंद ।
नाश कर्यो चहि राज को हतसि प्रताप बिलंद ॥ १ ॥

चौपई

इस प्रकार गुर कैद मझारा । करहिं बिलास अनेक प्रकारा ।
होवहि दिनप्रति बहु तकराई । सायुध[1] खरो रहहि दर थांई ॥ २ ॥
रात दिवस महिं एक समाना । दिढ हुई राखै देखहि थांना ।
जाम जामनी जबिहूं रहै । तबि सतिगुर मज्जन को चहैं ॥ ३ ॥
उठि प्रयंक पर ते ततकाल । तजि बंधन सभि तहां क्रिपाल ।
तारो खुल, कपाट छुट जाहिं । जब कारागिह ते निकसाहिं ॥ ४ ॥
थिर्यो रहै तहिं पिखहि सिपाही । जिसकी द्रिशटि परहि कुछ नांही ।
मंद मंद जमना दिसि जाते । तट पर खरे होइ पुन नाते[2] ॥ ५ ॥
मंद मंद निस महिं चलि आवैं । तिसी रीति बंधन पर जावैं[3] ।
थिर प्रयंक पर तैसो होइ । जथा प्रथम ही कीने सोइ ॥ ६ ॥
जब के कैद बिखै गुर आए । इस बिधि मज्जन करि मन भाए ।
एक दिवस श्री गुर पयाने । पावन जमना हेतु शनाने ॥ ७ ॥
दीरघ महिजिद[4] बिखै मुलाना । सो उठ करि तित की निपयाना ।
जहां शनान करति गुन खानी । पठति बदन जपु आदिक बानी ॥ ८ ॥
निकट होइ तिन गुरु पछाने । बिसम्यो—किम पग बंधन हाने ।
अस नहिं होइ चले इह जावैं । बहुर शाहु के हाथ न आवैं ॥ ९ ॥
गुर हिंदुन को शर्हा मनावैं । जिसते दीन तुरक बिरधावैं ।
जे अबि रौरा पाइ सुनाऊं । नरन हकारि इसे गहिवाऊं ॥ १० ॥

---

1. शस्त्रधारी—सिपाही 2. स्नान करते हैं 3. कैद में पड़ जाते हैं
4. मसजिद (बड़ी)

सनै सनै कै संगि सिधारी। कहां जाइ सभि गती निहारी।
वहिर निकसि पुरि ते जब जाइं। नरन बुलाइ तबै गहिवाइ ॥ ११ ॥
इम बिचार रखि द्रिशटि मझारी। मंद मंद ह्वै चल्यो पिछारी।
करि शनान सतिगुर पुन आए। काराग्रिह मंहिं जब प्रविशाए ॥ १२ ॥
देखति हट्यो मुलाना तहां। रिदे बिचार भई—गति कहां।
चौकीदार मिले इन संग। मोच देति बंधन सरबंग ॥ १३ ॥
बहुर जाइ बंधन को धारहिं। मज्जन करहिं सुनहिं निरवारहिं[1]।
दरब दियो हुइगो समुदाइ। जिसते निसमंहिं इत उत जाइं ॥ १४ ॥
नहिं आछी इह जानी परै। चल्यो जाइगो तौ दुख धरैं।
भोर होति मैं शाहु सुनाऊं। करि तागीद सुचित करिवाऊं ॥ १५ ॥
इम चितवति चित बिखे मुलाना। बैठे महिजिद भई बिहाना[2]।
पहिर बसत्र को दुशट बडेरा। गमन्यों शाहु निकट तिस बेरा। १६ ॥
निस की गाथा बैठि सुनाई। 'गुर हिंदुन जो कैद कराई।
सो मैं फिरति रात को हेरा। इक जाम होती तिस बेरा ॥ १७ ॥
बंधन अंग बिखे तिस नांही। करति ! गुसल[3] जमना जल मांही।
मैं देखति गमन्यो तिस पाछे। करि मज्जन मन भावति आछे ॥ १८ ॥
काराग्रिह पुन जाइ प्रवेशा। मैं हटि आइ बिलोक अशेशा।
चौकीदारनि कौ धन दीनि। जिनहुं सुचेती नाहि न कीनि ॥ १९ ॥
निकस जाइगो इक दिन मांही। इस बिधि राखी[4] करहिं जि नांही।
बिन संकट दीने गुर हिंदू। नहिं धारहिगो शरा बिलंदू ॥ २० ॥
अतिशै दुखी होइ बिन बस ते[5]। तौ इह परहि शरा के रसते'
सुनि नुरंग बिसम्यो मति मंद। चौकीदार बुलाए ब्रिंद ॥ २१ ॥
कहति भयो 'क्या कहै मुलाना ? क्यों न रहति ह्वै कै सवधाना।
बंधन तजि शनान हित जावति। मिले तांहि सों, क्यों न हटावति' ॥ २२ ॥
तब कर जोरि सिपाही कहै। 'भिरे किवार सु तारो रहै।
सायुध ठांढ़े द्वार अगारी। तकराई निस दिन करि भारी ॥ २३ ॥
बिन निंद्रा ते देखति भले। एक हटहि दूसर करि खले ॥
जे अज़मति करि गुरु चलि जावै। करि शनान काराग्रिह आवै ॥ २४ ॥
कहां दोश तौ हमरे मांही। नेत्रनि ते न बिलोक्यो जाही।
प्रथम आपने निरने कीनि। धरि सिक्खयनि के भोजन लीनि ॥ २५ ॥
सुनि मुल्लां कहि 'अज़मत कहां। लोकन ठगहि सिहर[6] करि महां।
बिरमावति कुछ करि दिखरावै। दरब आदि सिख ब्रिंद चढ़ावैं ॥ २६ ॥

---

1. स्नान करते समय बंधन को उतार देते हैं 2. सवेर हो गई 3. स्नान 4. रक्षा 5. बेबस होकर 6. जादू

पावहि जबहि सज़ाई कठोर। हुइ निरास कुछ चलहि न ज़ोर।
शरा मानि ले है तनकाला। बधहि दीन जग तबहि सुखाला ॥ २७ ॥
बिना त्रास ते मानहिं नांही। साहस अधिक धर्यों उर मांही।
मिहरवानगी आप करंते। बड मरातबा देवि कहंते ॥ २८ ॥
केतिक दिन राखहु तकराई। छल बल करे निकस नहिं जाई'।
सुनि कै शाहु कह्यो तिन साथ। 'ठांढे रहहु शसत्र गहि हाथ ॥ २९ ॥
देखति रहो न आलस करी अहि। को ढ़िग आइ, न सकल निबरी अहि।
खान पान नहिं पहुंचनि दीजै। अब के त्रास अधिक तहिं कीजै' ॥ ३० ॥
इम तुरकेशर मुरख महां। अपने चाकरान सन कहां।
सुनि करि उर धरि उर महिं भारी। करि सलाम को शाहु अगारी ॥ ३१ ॥
श्री गुर के ढिग चलि करि आए। बैठे जहां अनंद उपाए।
इक रस हरख शोग बिन सदा। ब्रह्म समाधि लगी जद कदा ॥ ३२ ॥
जमादार दोनहु कर जोरि। बारि बारि बर चरन जिहोरि।
बिनै कीनि निज त्रास बतायो। 'हम को अबहिं शाहु बुलवायो ॥ ३३ ॥
कहे सु —जमना जल महिं जाइ। जाम जामनी रहे अनाइ[1]।
संग नहीं नर, एकल फिरैं। याते हम को ताड़न करैं ॥ ३४ ॥
हम तो दीन आपके आगे। तुरकेसुर के चाकर लागे।
रोके रुकहु न किस ते आप। साचै करहु कहहु बर स्राप ॥ ३५ ॥
हम पर क्रिपा करहु नित ऐसे। तुरके शुर ते त्रास न जैसे'।
तब सतिगुर धीरज धरवाई। 'नहीं त्रास कीजै चित राई[2] ॥ ३६ ॥
प्रेमी जानि तोहि को कह्यो। काराग्रिह आपे हम लह्यो।
नांहि त चले जाति किस देस। खोजे पावति नहीं असेस[3] ॥ ३७ ॥
अपन चाकरी महि सवधान। रहु ठांढ़ो हुइ आयुध पान।
जानो हुतो, न बंधे जाति। इम बिचार नहिं कीजे भ्रांति ॥ ३८ ॥
भले हमारो कहहु न काहूं। रहो सुचेत बैठ करि पाहूं'।
इम सुनि जमादार हरखायो। गुर दिशि ते सभि त्रास गवायो ॥ ३९ ॥
कोशठ अंतर रहहिं उदार। करहिं असंजति वहिर किवार।
तारा मारि करहिं तकराई। खरे सिपाही रहै सदाई ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'शनान प्रसंग' बरननो नाम तीन पंचासति अंशु ॥ ५३ ॥

---

1. स्नान कर रहे थे 2. रंचक मात्र भी मन में भय न रखो 3. सारे जगत में

अंशु ५४

मतीदास प्रसंग

दोहरा

सिख कोटन की कैद को इक बच करे खलास ।
सो तुरकेशर कैद महिं ! परखहु गुरु विलास ॥ १ ॥

चौपई

मूढ नुरंगे इक दिन मांही । गुर ब्रितंत चितव्यो, मति नांही ।
आइ शरा महिं अबहि सुखाला । अजमत किधो दिखाइ बिसाला ॥ २ ॥
इक मुल्ला कहु निकट हकारा । निज आशै तिस पास उचारा ।
'हिंदुनि को गुर कैद मझारी । समझावहु इम करहु उचारी ॥ ३ ॥
करामात अपनी दिखरावउ । नांहि त शरा बिखै तुम आवउ' ।
सुनत शाहि ते आशै उरका । नहीं महातम जानहि गुरका ॥ ४ ॥
जिस थल हुते सु आइ मुलाना । कह्यो शाहु को सकल बखाना ।
'हजरत ने भेज्यो तुम तीर । भन्यो—जि अहो हिंद के पीर ॥ ५ ॥
लाखहुं सिख कहाइ तुमारे । सभि मानहिं करि भाउ उदारे ।
धन आदिक वसतू अरपंते । बैठहुं तुम बन गुर महंते ॥ ६ ॥
अजमत धरि करि गुरु कहावहु । सो हज़रत को तुम दिखरावहु ।
जिम भाखहि तिम कीजहि आपू । लखहि तुहारो बड परतापू ॥ ७ ॥
तब श्री गुर नानक के रूप । तुम को जानहि वलीं[1] अनूप ।
मानहि शाहु दरब को दै है । सभि ते बड सनमान बधै है ॥ ८ ॥
रामराइ जिम रस है राखा । करति सु रह्यो शाहु जिम भाखा ।
पातिशाहि सों तिस बनि आई । सरब रीत की लही बडाई ॥ ९ ॥
तथा तुमारो आदर होइ । मानहि शाहु निमहि[2] सभि कोइ ।
जे अजमत कहु धारति नांही । आवहु आप शरा के मांही ॥ १० ॥
दरब ग्राम ते आदि पदारथ । कहि करि पुरवहु अपनो स्वारथ ।
सभिनि संग होवहु इक रंग । दे मरातबा तुमहि उतंग[3] ॥ ११ ॥

1. अवतार 2. झुकेंगे (सारे) 3. ऊँचा पद

दोनहुं मैं इक लीजहि मान। मुशकल सकली बनहि असान।
मालिक मुलखन बली बिलंद। कहै सु मानहु रहहु अनंद ॥ १२ ॥
सुनति मुलाने ते बच असे। श्री गुर तेग बहादर हसे।
'तुमहि सलतनत दई खुदाइ। खलक अदल हित तखत बिठाइ ॥ १३ ॥
जौ तुम करि इहु खलकत अदल। पावहुगे खुदाइते फज़ल[1]।
होइ बिअदली तौ पछुतावहु। सरब राज ऐश्वरज गवावहु ॥ १४ ॥
करामात को नाम कहिर है। करहिं न संत, समान सिहर है।
करि अज़मत दिखराइं उदारा। गुनहगार दरगाह मझारा ॥ १५ ॥
निज निज धरम सभिनि कहु प्यारे। जो जिस धारति सो तिसतारे।
हम तौ दोनहूं बात न मानहिं। करहि शाहु जैसे मन जानहिं ॥ १६ ॥
निम्रि भूत जब कीनि बखान। मतीदास निज गुरु दिवान।
चिरंकाल को गुर ढिग रहै। सुनि बाक न मन महिं सहै ॥ १७ ॥
तप को बल गुर सेवा ठानी। नहीं समावहि शकति महानीं।
श्री सतिगुरु अरु मुल्ला सुनति। मतीदास रिस को धरि भनति ॥ १८ ॥
'निरबल सम बोलहु तुम कैसे। नहीं भावते मुझ बच ऐसे।
सभि गुरुअन की जोति उदारा। करति प्रकाशन आप मझारा ॥ १९ ॥
तुरकन की निशठुरता[2] खोटी। अपनि शकति ते करहु न होटी[3]।
परे कैद महिं कशट सहारहु। अपनो प्राक्रम नहीं संभारहु ॥ २० ॥
आठहूं गुर को सुजसु वडेरा। लघु क्यों करति आप इस बेरा।
अपर नरन सम ह्वै तुम वैसे। लखहिं अबल अपजस जग तैसे ॥ २१ ॥
तुरकेशुर संतन को दोखी। इस को मिल्यो न को जन रोखी[4]।
जे अब रावरि आग्या पावौं। ऐसी करामत दिखरावौ ॥ २२ ॥
जितक मुहंमद उमम्त सारी[5]। सभि के सिर फूटहिं इक बारी।
मारगहिं कहिर, कहिर दिखराऊं। नाश करों इन सफा उठाऊं ॥ २३ ॥
राउ रंक हुइ दुशट न फेरा। चितवहि बुरा न संतन केरा।
जे सभि की आग्या दिहु नांही। ब्रिद जमन[6] राखनि चितचाही ॥ २४ ॥
पुरखाधम[7] संतन दुखदाई। राज ससित इस दयो बिनसाई।
मतीदास की सुनि अस बानी। रिदै बिचार कीनि गुनखानी ॥ २५ ॥
शकति धरहि उर जरी न जाइ। हमरो आशै नहीं लखाइ।
ब्रह्म ग्यान महिं अब लगि काचा। लख्यो न सभि जग एको साचा ॥ २६ ॥

---

1. अनुकंपा 2. कठोरता 3. हटाना 4. गुस्सा करने वाला 5. जितने सारे मुहम्मद के अनुयायी हैं 6. यवन—मुसलमान 7. अधम पुरुष—नीच

को मारति मरता है कौन। ब्रह्म रूप अद्वै सभि भौन।
बिन इम जाने चाहति कर्यो। सेवा तप तेजहिं बड धर्यो ।। २७ ।।
ब्रह्म ग्यान बिन उर हंकारो। मिटै न कीने जतन हजारों।
'अहं' चोर भगती धन लूटे। ब्रह्म ग्यान के बल करि छूटे ।। २८ ।।
अस नहिं होइ क्रोध को धारि। करि अजमत गन देहिं संघार।
इस ते शकति निकासी चही अहि। फेर बोलहि, चित न लही अहि ।। २९ ।।
इम सतिगुर ने रिदे बिचारा। मतीदास को पास हकारा।
'तूं मम मित्त सहाइक भारी। जिस प्रकार अब गिरा उचारी ।। ३० ।।
सो करि सकहिं, कूर इह नांहीं। सरब संघारहिं इक छिन मांही।
ऐसे समैं बाक अस कह्यो। भा प्रसंन मैं हित निज लहायो ।। ३१ ।।
अब इह इच्छा सीख हमारी। नमो करहु करतार अगारी'।
मतीदास सुनि कै इम करनन। करी बंदना सतिगुर चरनन ।। ३२ ।।
ततछिन शकती ऐंचन कीनि। पाइ जार ज्यों जल ते मीन।
विकसति मुख ते सतिगुर कह्यो। 'अब तुम करहु जथा चित चह्यो ।। ३३ ।।
मतीदास तब रह्यो बिचार। शकति न देखी अपनि मझार।
तप सेवा ते संचन कीनि। अब सतिगुर ने ऐंच सु लीनि ।। ३४ ।।
हाथ जोरि कीनसि अरदास। 'अब तो रह्यो न कुछ मुझ पास।
आप चरहु तुम तैसे करो। भरे सखन करि सखने भरो ।। ३५ ।।
बिन मरजी सतिगुर की कह्यो। हरी शकति, मैं इह फल लह्यो।
छिमा करहु बखशहु प्रभु मोही। करहु क्रिपा शरनागत तोही ।। ३६ ।।
तुमरो चरित नहीं मैं जान्यों। पिख्यो अनादर संकट मान्यो[1]।
हेरि लोक अगजसु को करैं। शकति हीन जानति सिख फिरैं ।। ३७ ।।
इह गति मोते[2] जरी न जाइ। क्या तुरकेशुर देउं खपाइ'।
श्री मुख बिकसे बाक बखाना। 'मतीदास मोहि प्रिय महाना ।। ३८ ।।
तऊ सुनहुं इह गुहज कहानी। मो बिन दूसर को नहिं जानी।
मुशट भांग श्री बाबे लीनि। राज हिंद बाबर को दीनि ।। ३९ ।।
श्री गुर दयो दान नहिं फिरै। यांते हम सिर दैबो करैं।
सिर दै करि इन को करि झूठे। दई वसतु फिर लेहिं सु मूठे[3] ।। ४० ।।
जे हम सिर को देहिं न इहां। रहै राज तुरकनि घर महां।
बड अपराध कमावहि जबै। इनकी जरां[4] उखेरहिं तबै ।। ४१ ।।

---

1. आपका अनादर देखकर मैंने दुख मनाया था 2. मुझ से 3. लूट लेंगे 4. जड

है कि नहीं इह आछी बात। क्रोध करहिं उर तूं पछुतात।
इम समझहु रहु रिदे अनंद। नहिं कोपहु नहिं झुरहु बिलंद ॥ ४२ ॥
सुनि सभि भेद चरन पर पर्यो। मतीदास उर आनंद भर्यो।
सभि बिधि सुनी मुलाने हेरी। अविरंग निकट गयो तिस बेरी ॥ ४३ ॥
भाख्यो सरब ब्रितांत शिताब। मतीदास को सवाल जबाब।
तन मन ते जर* गयो विशेश। क्रोध भरे बोल्यो तुरकेश ॥ ४४ ॥
मतीदास को कीनि बुलावनि। दुइ तखते महिं कर्यो वंधावनि।
हुकम जलादिन तबहि उचारा। कै आरा सिर पर तिस धारा ॥ ४५ ॥
अरधो अरध चिराइ सु डारा। पर्यो प्रिथी पर ह्वै दो फारा।
दोनहुं तन ते जपुजी पढै। हेरति सभि के अचरज बढै ॥ ४६ ॥
होइ दुखंड न जीवति कोई। इह तो पठति जियति जिम होई।
भोग पाइ करि दोनहुं तन ते। गुरपुरि पहुंच्यो प्रेमी मन ते ॥ ४७ ॥
उत्तम गति को प्रापति होवा। गुरु चरित्र को अचरज जोवा।
महां गंभीर धीर सम धरनी। लखि न सकहि को सतिगुर करनी ॥ ४८ ॥

इति श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'मतीदास प्रसंग' बरननं नाम चतुर पंचासति अंशु ॥ ५४ ॥

*जल गया

अंशु ५५

सिक्खयनि छुटन प्रसंग

दोहरा

मतीदास प्रभु पुरि गयो कंप उठे सिक्ख और।
धरि करि त्रास बिसाल को पिखि काराग्रिह ठौर ॥ १ ॥

चौपई

निसा परी बड भयो अंधेरा। हाथ जोरि बोले तिस बेरा।
सुनहु गुरु जी ! हते कुथाइं। तुरकेशुर हठ अधिक बधाइ ॥ २ ॥
अबहि न छोरहि हम को जीवति। दिन प्रति कशट देवि पर थीवति।
बंधन पाइन महिं परवाए। पहिरु[1] करि सुचेत ठहिराए ॥ ३ ॥
निस दिन महिद होहि तकराई। नहिं कैसे अब निकसन पाई'।
सुनि गुर कह्यो 'चहहु जे जाना। तौ अब निस महिं करहु पयाना ॥ ४ ॥
कैद तुरक की तजि निकसीजै। चले जाहु निज घर सुख लीजै'।
सुनि सिक्खयनि जिन मन डर हौले। बोले तब शरधा ते डोले ॥ ५ ॥
'बंधन परे अंग महिं भारे। पहिरू खरे शसत्र कर धारे।
अहैं असंजति पौर किवारे। डारि शिंखला तारो मारे ॥ ६ ॥
किम अब निकसनि बनहिं हमारो। मरबो हुइ हैं रिदे बिचारो'।
सुनि श्री तेग बहादर भाखा। 'कहहु जथा पुरीअहि अभिलाखा ॥ ७ ॥
बंधन पाइन ते छुट जै है। सगरे पौर किवार खुलै हैं।
चौकीदार न देखहि कोई। चले जाहु जिस इच्छा होई ॥ ८ ॥
गुरू बदन[2] ते निकसे बैन। पिख्यो तिनहुं पग बंधन हैन।
तारे छुट करि खुले किवारा। पर्यो पाहरु नींद मझारा ॥ ९ ॥

---

1. पहरेदार 2. मुंह

उमगे निकसनि को सिख तीन। गुर पग पर तब बंदन कीनि।
'पहुंचहिं रावरि के सुत पास। कहां संदेसा करहिं प्रकाश ॥ १० ॥
सरब कला समरथ गुन खानी। कहां रचहु को सकहि न जानी।
अपनी गति तुम जानहुं आपे। हरख न शोक रंच भर बयापे ॥ ११ ॥
हम पर क्रिपा धारि मुचवाए[1]। किम तुमरे घर भाखहिं जाए'।
श्री गुर तेग बहादर बोले। 'भाखो—राखहु धरि अडोले ॥ १२ ॥
इम ही कारज है हम करना। अंत समा सब ही पर बरना।
चिंता शोक न कीजहिं कोई। कूरा करहिं, तुरक पति जोई ॥ १३ ॥
सभि जग को दुख दायक पापी। बिनसहि, वधहि न तेज कदापी।
पूरब जनम करे तप भारे। करहिं दगध इंधन सम सारे ॥ १४ ॥
साहिबज़ादा अब लखनौर। वध्यो सरीर भयो बल ठौर।
अपनो पुरि संभारहु जाई। न्रिभै बसहु तहिं चित न काई ॥ १५ ॥
शुभ अनंदपुर अधिक बसावहु। अब न रहहु इह ठां, चलि जावहु।
इह संदेसा मनहु हमारो। चिंता शोक न कछु उरधारो ॥ १६ ॥
अंत समा हमरे तन केरा। केतिक दिवस पहूंच्यो नेरा।
आन थान भी तजिबो तन को। इस थल करि कूरा तुरकन को ॥ १७ ॥
इह कारन लखि रहहु निचिंत। कशट न धारहु रिदै कमंत।
निकसहु अब तुम लखहि न कोई। सुनति सिक्खय त्रै गमने सोई ॥ १८ ॥
किनहूं न हेरे वहिर पयाने। हरखति ह्वै कर छिपप्र[2] सिधाने।
निकस गए तारे पुन भिरे[3]। प्रथम समान सकल कुछ करे ॥ १९ ॥
जनु म्रितु के मुख से निसकाए। पंथ पयानति तूरन धाए।
पहुंचे आनि जबहि लखनौर। देखति गुरु कुटंब तिस ठौर ॥ २० ॥
तीनहुं बंदन करि ढिग बैसे। भन्यों गुरु जिम भाख्यो तैसे।
मात नानकी दुख बहु पाइ। बारि बारि बुझहिं पछुताइ ॥ २१ ॥
'तुम सम क्यों नहिं निकसत आए। तुरक कैद महिं क्यों दुख पाए'।
सुनि तीनहु सिक्खयनि समुझाई। 'कहैं कि—अंत समा नियराई ॥ २२ ॥
इहां त्याग तन कूरो करैं। राज तेज तुरकन को हरैं।
तुम आनंद पुरि जाने कह्यो। निज पुरि बसहु, इही गुर चह्यो' ॥ २३ ॥
सासु नुखा दीनहुं दुख पावैं। कहा करी गति—सतिगुर ध्यावैं।
बाल सरूप कह्यो गुर पूरे। 'है अनंदपुरि केतिक दूरे ॥ २४ ॥

1. छुड़ाया है 2. शीघ्र 3. फिर ताले लगा दिए

तहिं रमणीक थान कै नांही। सतिगुर पुरि बसाइ जिस मांही।
पहुंचनि बसबे आइसु दीनि। तौ हम जाइं तहां हित कीनि' ॥ २५ ॥
दोनहुं मातन सों कहिं बैन। 'मानहु बाक चित को है न।
इहां कहां लगि दुर हम रहैं। पित को पलटा लैवे चहैं ॥ २६ ॥
करों तुरक की जरां उखारनि। मारन करौं जंग रचि दारून।
अब लखनौर बिखै नहिं बसना। उचर्यो पिता आप जे रसना' ॥ २७ ॥
सुनि द्वै मातन उर को पावैं। बहु बिधि कहि सुत को समुझावैं।
इस बिधि कहहु न किसै सुनावहु। गर्हहिं न आइ, थिरहु इस थावहु ॥ २८ ॥
नहिं को जानहिं बास करंते। वसहु इकाकी थल सुखवंते'।
सुनि गुर मातय को तब कहै। 'पित बच हम निशचा अहै ॥ २९ ॥
कहैं सु होइ भविक्खत मांही। अटल बाक सो डोलहि नांही।
क्यों बिखाद महिं चिता करो। हुइ कल्यान रिदै नहिं डरो ॥ ३० ॥
सकल कला समरत्थ उदारे। चहैं जू करैं सु पिता हमारे।
आपहि जाइ कैद महिं परे। आपहि तन तजिबे उर धरे ॥ ३१ ॥
सभि के अहैं सहाइक सोइ। तिन हित जतन करहि क्या कोइ।
भंजहिं रचहिं जगत कहु सारे। तिन आगै क्या तुरक बिचारे ॥ ३२ ॥
एक बाक़ ते नाश करंते। पीर अमीर नहीं उबरंते।
तिन हित चिता करनि उपाइ। अहै बाद सो निशफल जाइ' ॥ ३३ ॥
इत्यादिक बहु कहि समुझाई। सुत ते सुनि कुछ धीरज पाई।
पठें अनंदपुर को नर फेर। वाहिन हित मंगवावनि केर ॥ ३४ ॥
श्री गुजरी कहि तिह समझायो। 'मम भ्राता संग देहु अलायो।
एक तुरंग मोल बड़ केरा। ले आवहु शिंगारि बड़ेरा ॥ ३५ ॥
ब्रिखभन जोरहु स्यंदन आनहु। नर ब्रिंदन ले करि प्रसथानहु'।
जथा गुरु की दशा, सुनावहु। सुनि चलि परहु नहीं बिलमावहु' ॥ ३६ ॥
इत्यादिक दे अपर संदेसे। रिदे बिसूरत कशट बिशेशे।
सतिगुर की दिशि चितवति घनी। कहां करी हे प्रभु जग धनी ॥ ३७ ॥
सास निकट द्रिग ते जल छोरति। होनहार नाहिन को मोरति।
त्रिधा अधिक सुत सुनति प्रसंग। संकट दीरघ ब्यापति अंग ॥ ३८ ॥
ढिग मसंद जेठा समझावै। 'सतिगुरु करहिं जथा उर भावै।
राऊ अंत तन को निज जानि। तुरक तेज की चाहति हान ॥ ३९ ॥

तुम कहु होति सनेह घनेरे। गुर के हरख शोक नहिं नेरे।
तऊ तिनहु के नित अनुसारी। रहिबो आछी रिदै बिचारी ॥ ४० ॥
तिन सथान अब साहिबज़ादा। प्रितपारहु सभि रे अहिलादा।
जथा कहैं करीयहि तिम बाती। देखति रही अहि सीतल छाती ॥ ४१ ॥
कब कब जेठा कहि परचावैं। सकल बिधिनि की सेव कमावै।
अपर कथा लखनौर जु कीनि। वरनन करो प्रेम रस भीन ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'सिक्खयनि छुटन प्रसंग' बरननं नाम पंचासति अंशु । ५५ ॥

अंशु ५६

शाह भीख मिलनि प्रसंग

दोहरा

प्रथम बसे जुग मात जुति गुर इकाकी होइ।
सेवक इक भी संग नहिं तन तीनहु तहिं जोइ ॥ १ ॥

चौपई

जो कुछ होइ चाहि चित सेवा। जेठा करहि जानि गुरदेवा।
इक दिज भोजन आनि बनावै। दोइ समै करि स्वाद अचावै ॥ २ ॥
दिन महिं तहिं गन बालिक मेल। वहिर ग्राम ढिग खेलति खेल।
किंदुक[1] डंडा[2] गहि जुग हाथ। फैंकहि दूर मार करि नाथ ॥ ३ ॥
बालिक धाइ गहैं तहिं गेरहिं। पुन डंडा हति किंदुक प्रेरहिं।
कबहूं ब्रिछन पर चढि चढि कूदहिं। हारहि बाल तांहि द्रिग मूंदहिं ॥ ४ ॥
कबहूं भाग चलहिं किह आगे। अधिक भ्रमावहिं हाथ न लागे।
कब दुइ दिशि बालिक सभि होइ। खेलहिं परे बंध करि दोइ ॥ ५ ॥
जीत हार की खेल मचावहिं। धावहि एक ओज को लावहिं।
इक ऐंचहि एक छुट करि जावैं। इक लर करि निज सदन सिधावैं ॥ ६ ॥
इक को इक खिझाइ करि रोकहिं। इम खेलत जे लोक विलोकहिं।
'किस छत्री को बालिक अहै। कितक दिनन ते इस थल रहै ॥ ७ ॥
परचै बालिक ब्रिंद मझारा। मात हकारहि बारंबारा।
निकट बिठाइ अचाइ अहारे। 'घर महिं थिरहु, न फिरि दिन सारे' ॥ ८ ॥
बरजे रहैं न, जाइं वहिर को। बाल बुलावहिं खेल ठहिर को[3]।
प्रेम धरहिं सगरे चलि आवहिं। क्रीड़ा अनिक प्रकार मचावहिं ॥ ९ ॥
शाही भीख जो पटणे गयो। तीन मास के दरसति भयो।
निकट ग्राम दिस बसबे केरा। जहां प्रिथोदक तीरथ[4] हेरा ॥ १० ॥

---

1. गेंद 2. बल्ला 3. खेलने के स्थान पर 4. एक तीर्थ का नाम, जिसे पहोआ भी कहते हैं

तहिं ते तीन कोस तिस जानहिं। ग्राम सिआणा[1] नाम बखनहिं।
कब तहिं रहैं कबहि कुहड़ाम[2]। सिमरति नित खुदाइ को नाम ॥ ११ ॥
ठसका नाम गाम इक चीनो। किस तुरकेशुर ने तिस दीनो।
चाहति चित बखशावनि काज। जबहि भविक्खयत सिघन राज ॥ १२ ॥
नहिं छीनहिं सो देग जु मोरी। इही कामना नित प्रति लोरी।
निज अज़मत करि उर महिं जाने। तेग देग के धनी महाने ॥ १३ ॥
मम समीप आए लखनौर। एक परि लै संगी और।
कहूं जानि को लीनि बहाना। पहुंच्यो आइ गुरु जिस थाना ॥ १४ ॥
किंदुक को डंडा हति प्रेरहिं। बालिक ते न बुचहिं[3] पुन गेरहिं।
हुइ समीप गहि कदम पदम को। सिजदा कुनद[4] अनंद सदम को ॥ १५ ॥
पुन कर जोरति खरो अगारी। करि तरीफ बहु अरज़ गुज़ारी।
'धनं भाग में होइसि आजू। दरसे आवि गरीब निवाजू ॥ १६ ॥
पिखि बालिक इकठे हुए आए। निज संगन जुति भे समुदाए।
शाहु भीख कुछ कहिबो चाही। इत उत देखे करि बहुपाही ॥ १७ ॥
लिए उठाइ आपनी गोद। न्यारो भयो बिलंद प्रमोद।
सभिहिनि को कहि 'ठांढे रहि अहि। अबहि छिप्र आवहिं, थिर रही अहि ॥ १८ ॥
सभि ते दूर खरे तब होइ। पट सों रज झारति पग दोइ।
बूझन लग्यो सकल ही गाथ। 'दुशट तुरकपति दिल्ली नाथ ॥ १९ ॥
आप गए चलि पिता तुमारे। परे जाइ तिस कैद मझारे।
छुटहिं कि नहीं कहां गति होइ। चहहु सु करहु बिलम नहिं कोइ ॥ २० ॥
इह रावरि क्या खेल पसारा? जान सकहि नहिं जिह जग सारा'।
अजमत जुति प्रेमी तिह जाना। मरम बात को सकल बखाना ॥ २१ ॥
'श्री नानक की दात[5] बिसाला। बाबर लीनि सु पूरब काला।
अब इहु गरब रह्यो मति मूढा। शर्हा चलावनि हठहि अरूढा ॥ २२ ॥
हिंदू तुरक दौन ही मारे। परंपरा का धरम बिगारे।
पिता हमारे दे करि सीस। जरां उखारहिं खल अविनीश ॥ २३ ॥
नवौं पंथ हम साजनि करैं। तेज राज कौ तिन महु धरैं।
इस कारन ते सतिगुर गए। तन को अंत जानि निज लए' ॥ २४ ॥
सुनि करि शाहु भीख कर जोरे। 'मैं रावरि के चरन निहोरे।
अचल रहै जग टुकरा मोरा। जब हुइ गुरु पंथ को जोरा ॥ २५ ॥

1. गाँव का नाम 2. यह भी एक गाँव का नाम है 3. पकड़ते हैं 4. नमस्कार करता है 5. देन

रिदे कामना रहै हमेश। पुरवहु करुना करहु विशेश।
सुनि गुर श्री मुख गिरा उचारी। 'चिरंकाल रहि देग तुमारी ॥ २६ ॥
जो तेरे टुकरे को खोवहि। खोयो जाइ, सु नहिं थिर होवहि।
पंथ हमारे महिं बहु रहै। अपनि मनोरथ पूरन लहैं ॥ २७ ॥
शाहु भीख सुनि हरख्यो घनो। जाच्यो जिम, तिम ही सभि बनो।
बातन करति, अंग ते धूर। पौंछति रह्यो प्रेम करि भूर ॥ २८ ॥
इत्यादिक कुछ आन बखानति। गोद उठाए तित को आनति।
हाथन साथ पलोसति चरनं। जनके हरन जनम अर मरनं ॥ २९ ॥
जहिं बालिक महिं खेलति आगे। तिह थां गोद उतारि सुभागे।
कदम पदम को सिजदा कीनि। रिदे ध्यान सोई धरि लीनि ॥ ३० ॥
गमन्यों बहुर आपने थान। मन ही मन आनंद महान।
मीर दीन जो पीर बिसाला। रह्यो निहारति थिर तिस काला ॥ ३१ ॥
रिदै संदेह बिलंद उठावा। कहां पीर मति ते बवरावा।
असमंजस अस जिसने कीनि। नहीं तुरक सहि सकहिं प्रबीन ॥ ३२ ॥
मिलि जब चल्यो पंथ महिं कह्यो। 'सुनहु पीर! तुमको बड लह्यो।
सिजदा करति सरब तुरकाना। जानहिं अज़मतवान महाना ॥ ३३ ॥
कहां कर्यो अब हिंदू बालिक। हेरति चरन पर्यो ततकालिक।
तुरक जनम तुम बैस बडेरी। लखीन—मनता है बड मेरी' ॥ ३४ ॥
शाहु भीख सुनि उत्तर दीना। 'तुमने नहीं भेव कुछ चीना।
श्री नानक गादी पर जोइ। हुइ खुदाइ की दरगहि सोइ ॥ ३५ ॥
जब सभि पीर पहूचहिं जाइ। थिरहिं पीर आगे समुदाइ।
तब इह ऊचे थल चलिआवैं। सभिहिनि को निज दरस दिखावैं ॥ ३६ ॥
जिसने जो कहिबो तब होइ। इन सों कहै, पूर हैं सोइ।
नहिं खुदाइ किन देख्यो कहां। इही रूप कै औरे अहा ॥ ३७ ॥
अब निज तन जो धारनि कीनि। दरसे तहां जनम जहिं लीनि।
हिंदू तुरक रहे जग दोइ। परखे तहां पहुंचि मैं सोइ ॥ ३८ ॥
धरी कामना अज मैं आइ। कीनि जाचना लीनि सु पाइ।
तरुन होइ तन रन[1] को करैं। तेज तुरक गन को सभि हरैं ॥ ३९ ॥
दिल्ली अरु लवपुरी[2] मझार। सभि की कैहैं पाग उतार।
रहनि देहिं नहिं पति किस केर। करहिं धूल जो सैल उचेर[3] ॥ ४० ॥

1. रण, युद्ध 2. लाहौर 3. पर्वत की भांति ऊँचे

निज टुकरा बखशावनि गयो। क्रिपा करी मुहि को बर दयो'।
मीर दीन को सरब ब्रितांत। कीनि सुनावनि हरखति गात* ॥ ४१ ॥
कवि संतोख सिंह करति उचारे। तिस को ग्राम सु निकट हमारे।
चहुं दिशि सिंहन राज बड़ेरा। ठसका ग्राम बीच हम हेरा॥ ४२ ॥
शाहु भीख के रहे फकीर। देति देग जो आवहि तीर।
सिंह भूप नहिं छीन्यो काहू। रह्यो तिनहुं ढिग सभि के मांहू ॥ ४३ ॥
श्री गुरु गोबिंद सिंह के बैन। जग महिं अटल, मिटहिं किम हैन।
सभि सगति गुरु सिमरन करो। बिघन दुहुं लोकनि के हरो॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'शाह भीख मिलनि प्रसंग' बरननं नाम खशट पंचासती अंशु ५६ ॥

---

*प्रफुलित शरीर

अंशु ५७

कूप निकसावन प्रसंग

दोहरा

अमर बारता कछु कहों जिम बीती लखनौर।
बल सरीर बिद्धति गुरु जो सभ जग सिरमौर ॥ १ ॥

चौपई

ग्राम ननेड़ी निकटि अहै जिह। घोघा नाम मसंद बसै तहिं।
प्रथम गुरु जब तीरथ गए। तब सो मिल्यो हुतो ढिग अए ॥ २ ॥
कितिक समें रहि संग गुजारा। दरब लोभ बहु रिदे मझारा।
माता गुजरी की इक दासी। सेवा करति रहति नित पासी ॥ ३ ॥
तिह बिरमाइ मूढ ले गयो। पुन पाछे पछुतावति भयो।
जब लखनौर गुरु चलि आए। सुनि करि चहित लेउं बखशाए ॥ ४ ॥
खेलति हुते ब्रिंद मिलि बालि। तहां आनि दरसे ततकाल।
हाथ जोरि निज अरज़ गुज़ारी। 'मैं मसंद नित गुरु अनुसारी ॥ ५ ॥
आप बास कीनसि लखनौर। नहिं रहिबे की नीकी ठौर।
अलप सथान अजर महिं जिन के। कोठे छत छोटे थल तिनके ॥ ३ ॥
मम घर महिं करुना करि चलो। समा बितावहु बसि थल भलो'।
सुनि गुर कहति 'भाउ उर तेरे। चलि हैं प्रथम लेहिं जब हेरे* ॥ ७ ॥
बिन असवारी ह्व न प्याना। पहुंचहिं जबहूं आइ टिकाना'।
इम बहु बारि आइ करि पास। हित ले चलनि करहि अरदास ॥ ८ ॥
सतिगुर निज मातन सो कहैं। 'इक मसंद कहिं' मम घर रहै।
थान कुशाद सदन है सुंदर। लियन बने वहिर अरू अंदर ॥ ९ ॥
श्री गुजरी नहिं जानहि तांही। सुत सन भनति ,चलनि अबनांही'।
इम केतिक दिन बीतै जबै। जल मीठो लखनौर न सबै ॥ १० ॥

---

*पहले तेरा प्रेम देखेंगे, फिर चलेंगे

पान करति गुर केतिक वारी। कहैं 'अहै खारी इह बारी।
आछो स्वाद न पीवनि विखै। मधुर इहां को कूप न पिखैं' ॥ ११ ॥
सुनि गुजरी चित चिंत उपावै। अस नहि होहि अपर थल जावैं।
जेठे संग बूझना ठानी। 'नीको अहै कि नहि कित पानी ? ॥ १२ ॥
रुचहि नहीं इह साहिबजादे। सभि को लगहि नहीं कुछ स्वादे'।
जोरि हाथ तिन भन्यों सुनाई। 'क्रिपा तुमारी जे हुइ जाई ॥ १३ ॥
भने बाक ते मीठी होइ। पान करहिं स्वादल सभि कोइ।
किसी कूप को मधुर न अहै। इह बिनती सगरे नर कहैं' ॥ १४ ॥
सुनि गुजरी नहि जान्यो पानी। नंदन दिशि ते चिंत महानी।
बहुर ग्राम के जे नर नारी। सभि पीवति खारी अस वारी ॥ १५ ॥
कहि जेठे को पंच बुलाए। मिलि मानव पहुँचे समुदाए।
उठ माता घर वहिर सिधारी। अवनी तहां समीप निहारी ॥ १६ ॥
कर की शारत[1] करति बताई। 'निकसहि जल मीठो इस थाईं।
करि उपाई को लेहु निकासी। नर नारिन पीवहिं सुखरासी' ॥ १७ ॥
सुनति पंच कर जोरि बखानी। 'निशचे इहां मधुर हुइ पानी।
बाक आपके निशफल नांही। सगरो ग्राम पान सुख पाही ॥ १८ ॥
तऊ लगावनि की समरत्थ। तबहि बनहि जब धन हुइ हत्थ।
करहिं बटोरन सभि ते जबै। सनै सनै हुइ सक है तबै ॥ १९ ॥
थोरे सदन सु धन ते हीन। अबहि कहां करहिं जि दीन।
श्री गुजरी सुनि करुना छाई। सभिनि साथ इम कह्यो बुझाई ॥ २० ॥
'लग्यो कूप आगे को इहां। बीत्यो सभा पिछारी महां।
पूर्यो गयो म्रित्तका साथ। इक मिहनत कीजहि निज हाथ ॥ २१ ॥
राहक ब्रिंद आज लगि जय्यै। करि तूरनता सकल खनययैं।
मधुर नीर को सुख सभि पाओ। मम नंदन को प्रथम पिआओ ॥ २२ ॥
त्यार तिहावल[2] करि अब ल्याओ। करि अरदास ब्रिंद बरताओ।
श्री नानक जी होंइ सहाइ। सिमरहु नाम विघन गन जाइं' ॥ २३ ॥
सुनि सभि के चित चौप वड़ेरी। चहति बिलोक्यो गन तिस बेरी।
जिम माता शुभ बात बखानी। मिलि पंचन नर गन तिम ठानी ॥ २४ ॥
पंचाम्रितु ततकाल कराइ। भनि अरदास दीनि बरताइ।
नाम सिमर श्री नानक केरा। खनन लगे पर गने तिसबेरा ॥ २५ ॥

---

1. हाथ का संकेत 2. कड़ाह—प्रसाद

भ्रितका केतिक जबहि निकारी। खनति कूप की मणहि निहारी।
मुदत भए सभि खोदन करे। को निकासि माटी को धरे।। २६।।
सकल ग्राम के नर मिलि गए। तूरन कार करति सो भए।
दिवस तीसरे कीनसि त्यारी। निकस्यो मधुर तबहि बर बारी।। २७।।
सतिगुर के समीप लै आए। पान कीनि आछे हरखाए।
बहुर अखिल नर पीयसि पानी। महिमा मानी महद महांनी।। २८।।
गुरु को कूप नाम तिस भयो। अब लगि अहै मधुर जल थियो।
मातुल[1] की प्रतीखना धरिते। कब आवहिं चल आनंद पुरि ते।। २९।।
हय आदिक सामग्री ल्यावैं। तब अखेर को वहिर सिधावैं।
पिखहिं ठौर लखनौर चुकोद[2]। चढहिं किकान कुदाइ समोद।। ३०।।
बूझहिं मातन को बहु बारी। 'कब आवहिं मातुल हितकारी ?'।
सुनि दिन गिनहि जननि परचावैं। 'बाज साज साजति बिलमावैं।। ३१।।
हित तुमरे सुंदर करिवाइ। बसत्र शसत्र आनहिं समुदाइ।
अब नहिं बिलम, आज कै काली। पहुचयो लखहु सु आइ उताली'।। ३२।।
इम प्रतीखते चलि करि आयो। वसतु सकल गुर के हित ल्यायो।
उतरि तुरंग ते बंदन ठानी। जुग मातन को नमो बखानी।। ३३।।
मुदत गुरु मातुल को मिले। बूझि अनंदपुरि की सुधि भले।
'पित को हुकम भयो तहिं जाने। कितिक दिवस महिं करहिं पयाने।। ३४।।
इसी हेतु बुलवाइसि तोही। पिखन देश अभिलाखा मोही'।
कह्यो क्रिपाल क्रिपालहि संग। 'बरते वडे गुरु किस रंग।। ३५।।
हम सभिहिनि बो तजि करि गए। कैद तुरक की प्रापति भए।
महां दुशट इह नौरंग पापी। प्रभु संतन को कुटिल प्रतापी।। ३६।।
इम किसहुं को भेद न दीना। औचक पंथ आगरे लीना।
जे तुरकशुर करति खुटाई। जंगल देश सिक्ख समुदाई।। ३७।।
जहां न बस दुशटन को कोई। सुख सो बास तिनहुं महु होई।
कहां जान करि गुरु प्रवीन। बंधन बिखै जाइ तन दीनि।। ३८।।
सुनि सचित बच साहिब बोले। 'करन करावन प्रभु अडोले।
तिन हित करनि मनोरथ घने। हम तुम को इह नांहि न बने।। ३९।।
होनहार को करहिं बनाइ[3]। करहिं जु होनहार हुइ जाइ।
सकल कला समरथ सुख दाते। भूत भविक्खयत के सभि ग्याते।। ४०।।

---

1. मामा की 2. चारों ओर 3. वे स्वयं होनी के निर्माता हैं

तिन को कह्यो मानबो भले। सुप्रसंन अनुसारी चले।
मरजी देखनि के हम गरजी। निज कारज की कीजहि अरज़ी ॥ ४१ ॥

सरब ग्यान के करतब मांही। सुमतिवंत तरकति कब नांही।
इम समझहु चित चिंत बिसारहु। कर्यो हुकम को निशचै धारहु' ॥ ४२ ॥

जुग मातन के सहित क्रिपाल। अस उपदेशैं गुरु क्रिपाल।
चित विचार करि जानी साची। सुमति शुभ गिरा उबाची ॥ ४३ ॥

खान पान करि सुख सों सोए। निसा बिती तब जागनि होए।
सौच शनान ठानि करि आछे। हय अरुढबे सतिगुर बाछे ॥ ४४ ॥

इति श्री प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'कूप निकसावन प्रसंग बरननं' नाम सपत पंचासति अंशु ॥ ५७ ॥

अंशु ५८
लखनौर प्रसंग

दोहरा

जीन जरी जरि कीनि तब बर बाजी पर डारि ।
सुंदर साज्यो साज सों चपलति बली उदार ।। १ ।।

चौपई

गुरन मनाइ गुरु के नंदन । मन सिमरे गन बिघन निकंदन ।
चढे तुरंग संग चपलाई । प्रेरन कीनि बाग उठाई ।। २ ।।
एक बाज ले आइ क्रिपाल । कहि करि ताहि मिलायो नाला ।
मीर शिकार भयो तब आगे । चले वहिर को आनंद पागे ।। ३ ।।
सभि के रिदे प्रफुल्लत होए । गुरु पितामा के सम जोए ।
चढति अनूठी सज्यो तुरंग । मनहुं बीर रस भा सरबंग ।। ४ ।।
बदन प्रफुल्लति कमल मनो है । चपल बिलोचन तेज घनो है ।
पूरब उत्तर की दिशि चाले । करति अखेर म्रिगन को भाले ।। ५ ।।
मातुल सो बातन शुभ करते । बिचरति वाहिर उजार निहरिते ।
मंद मंद कर तुंद[1] पलावै । दास तुरंगम संग सिधावैं ।। ६ ।।
इत उत बिहरति भए अनंद । एक जाम लौ गुर मुकंद ।
कुछ अखेर करि घर को आए । जुग मातन मग दिशि द्रिग लाए ।। ७ ।।
उदत मुदत दिखि पौत्र बदन को । खरी पौर पर त्याग सदन को ।
उतरे नमो करति घर बरे[2] । संग क्रिपाल आपने करे ।। ८ ।।
इस बिधि केतिक दिवस बिताए । खेलति मेलि बाल समुदाए ।
पुन इक दिन घोघा चलि आयहु । ले चलिबे हित बाक अलायहु ।। ९ ।।
चाहति रिदे—अवग्या होई । सेवा करि बखशावौं सोई ।
बिचरति वहिर मिल्यो सतिगुर को । बंदति भन्यो मनोरथ उर को ।। १० ।।

---

1. तेज 2. घर में प्रवेश किया

'सुंदर सदन बने बहु मेरे। बसहु आप लिहु पूरब हेरे।
पावन करहु कामना मोही। कई बार भाख्यो ढिग होही ॥ ११ ॥
सुनि क्रिपाल सों कर्यो प्रकाश। 'इक दिन चली अहि इसै अवास'।
'आछी बात प्रभाति पयानहुं'। इम कहि तिस कहु राखन ठानहु ॥ १२ ॥
करि मसलत निस महिं बिसरामे। भोर जनि हय पाइ भिरामे।
मिस अखेर के चढ़े गुसाईं। संग क्रिपाल दास समुदाई ॥ १३ ॥
घोघे को करि लीन अगारी। पहुंचि ननेड़ी ग्राम मझारी।
हय पर चढ़े खरे तहिं थिए। बंदति नर सतिगुर ढिग आए ॥ १४ ॥
इक ने होइ समीप बताई। 'इस घोघे अस कीनि खुटाई।
सुनति रिसे ततछिन हटि आए। दियो स्राप 'इस बंस नसाए' ॥ १५ ॥
मग चलि पहुंचे नगर अंबाले। तिस ते दक्खन दिशि को चाले।
जबहि बरोबर पुरि की आए। पतिशाही उपबन तिस थाएं ॥ १६ ॥
कर्यो बिलोकनि तरुवर नीके। दक्खण दिशा थिरे तिस हीके।
चहुं दिशि महिं पाकी जिस मीत। ठांढे तहां बाज कर लीति ॥ १७ ॥
तामा[1] तिसे खुलावनि करे। आछे त्रिपतायहु तहिं खरे।
उतरे नहीं बहुर चलि आए। संध्या भई भानु असताए ॥ १८ ॥
तबहि आनि पहुंचे लखनौर। बिसरामे सोढ़ी सिरमौर।
इक दिन बहुर चढ़े चलि आए। म्रिगन पलाइ दूर थिए ॥ १९ ॥
ग्राम भुसथले को बड थेह। ठांढे भए जाइ सुख ग्रेह।
कितक समा जब खरे बितायो। लखी ते इक रंघड़ आयो ॥ २० ॥
बिचरति हित शिकार के जाई। तिस के संगि हुतो इक नाई।
गुरु पछान आनि पग नयो[2]। तब रंघर ने बूझनि कियो ॥ २१ ॥
'किसको बालिक सहित प्रतापू ? राजन के समान बड दापू[3]'।
'गुरु हमारो' भाख्यो नाई। 'जिनको सभि जग पूजहि आई ॥ २२ ॥
सुनि रंघर के सिदक बिसाला। बंदन हित आयो ततकाला।
तरकश ते सरपंच निकासे। धर करि कर महिं होयसि पासे ॥ २३ ॥
गुरु आगे करि सीस निवायहु। 'बसत रहो' बर हेरि अलायहु।
सु प्रसनं मुख ते सुनि बैन। रंघर भने समुख करि नैन ॥ २४ ॥
खर सर निरमल लेहु उपाइन। पुनहि सप्रसौं कर सों पाइन'।
पिखि शरधा गहि लीने हाथ। तब तिन धर्यो चरन पर माथ ॥ २५ ॥

1. बाज का भोजन 2. पांव पर आकर झुका 3. तेज

पुन हरखति दुइ सदन सिधारा। सतिगुर हय निज मारग डारा।
आवति भे लखनौर मझारा। निस बिसराम कीनि सुखु धारा ॥ २६ ॥

इस प्रकार तहिं समैं बितायो। चितवहिं पित संदेश पठायो।
जुग मातन ढिग बैठ बखानी। 'किम चलबे की मसलत ठानी ॥ २७ ॥
बसन अनंद पुरि अपनि सथाना। हुकम गुरन कहु चहियहिं माना।
त्यारी करहु पंथ प्रसथानै। इत बसबो अब नीक न जानै ॥ २८ ॥
सतिगुर क्रित महिं चित न काई। सभि बिधि महिं समरथ सभि थांई।
तुरक निकट जे चहति न जाना। तौ किस को बल चलति महाना[1] ॥ २९ ॥
देश मवासे जंगल आदि। तिहठां हमरे सिक्ख आबादि।
इसते आदिक अनिक उपाइ। अनंद समेत बसत बहु थाइ ॥ ३० ॥
सुने बिप्प्र कशमीरी आए। तिन ते पाती पठि फुरमाए।
तुरकेशुर के निकट पठाए। पहुंचि मिले सुब्रितंत सुनाए ॥ ३१ ॥
तब ते अवरंग लगे हकारनि। तोरा करति शरा के कारन।
प्रथमहि अहिदि निकट पठाए। तिनहुं संग नहिं गुरू सिधाए ॥ ३२ ॥
सैफाबाद थिरे जब आइ। खोजन हित गन फौज पठाइ।
मिल्यो न कोई किस थल कबै। ह्वै करि त्याग आपगे तबै ॥ ३३ ॥
जाइ आगरे सूचन हेतु[2]। पठी मुद्रका हीरा स्वेत।
गयो अयाली दयो दुशाला। सो गहि लीनि देखि कुतवाला ॥ ३४ ॥
संग सिपाही ले करि गयो। उपबन आइ बतावति भयो।
तिह ते ले संग दुरग उतारे। इम सतिगुर तिस थान सिधारे ॥ ३५ ॥
काराग्रह ते जे छुटि आए। सभि इत्यादि प्रसंग सुनाए।
कारन करन आप ही कीना। को न हटाइ सकहि हित मीना ॥ ३६ ॥
करहु अनंदपुरि की अब त्यारी। सुनि मातन द्रिग आंसुन डारी।
दीरघ स्वास लेति बहु बारी। 'करता पुरख कहां करि कारी ॥ ३७ ॥
बिना मिले बिन भने प्याने। संकट महिं करि सभि गलताने।
हम ते अब कुछ कर्यो न जाइ। सोचति चित निस दयोल बिताइ ॥ ३८ ॥
थिरे ग्राम इस, लखहि न कोई। केतिक समैं बितीतन होई।
अब लौ तुम कुछ भए न स्याने। हम क्या कहैं करहु जिम जाने ॥ ३९ ॥
किस बिधि होति न मन उतशाहू। चितागनि[3] जारति उर मांहू'।
सुनि बोले मातन के बैन। 'गुर करुना ते हम को भै न ॥ ४० ॥

1. किसी महाबलि का चलना है 2. सूचना देने के लिए 3. चिंता रूपी अग्नि

मो ते छप्यो जाइ कित नांही। कब लौ बैठ रहौं घर मांही।
कब लौ तजहि अनंद पुरि थाना। इहां बसन महिं को गुन जाना ॥ ४१ ॥
अब मरो चित परचति नांही। बहुर चलन पित आइसु मांही।
मातुल सभि समाज ले आयो। बैठनि इहां नहीं मन भायो' ॥ ४२ ॥
इम करि मसलत हुकम बखाना। 'प्यारी करहु प्राति प्रसथाना।
दास ब्रिंद को कहिं इम दयो। सभि महिं बिदत गमन तब भयो ॥ ४३ ॥
जो जिस चहियति सो तिस लीनि। त्यारी की निज आइसु दीनि।
सभि वाहन दानाव्रिन चारि। मरदति अंगन सरब सुधारि ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'लखनौर प्रसंग बरननं' नाम अशट पंचासति अंशु ॥ ५८ ॥

अंशु ५६

कीरतपुर आगवन प्रसंग

दोहरा

तिस निम महिं बिसराम करि दुखति मात लखि दोई।
कहि धीरज के बाक पुन ढिग क्रिपाल थिर होइ ॥ १ ॥

चौपई

'अति समरत्थ जुति पिता हमारे। चर्हाहि, सु रर्चाहि न लगहि अवारे।
तुरकेशुर जुति पिता तुरकानहिं। एक बाक ते ततछिन हानहिं ॥ २ ॥
गुर की बात कहां सो कहैं। तिनके दासनदास जु अहैं।
सभि सलतन को करहिं बिनाश। होहि एक ही जानि हतास ॥ ३ ॥
मतीदास जिम कह्यो तहांही। सो भी बात सुनी कै नांही।
सिख काराग्रिह ते जो आए। हुते निकट तिन सकल बताए ॥ ४ ॥
बरज्यो गुरन, शकति सभि लीनि। तिस को तुरकन पुन हनि दीनि।
तन को अंत आपनो जाना। दोश देन हित कीनि बहाना ॥ ५ ॥
महिमा तिन की तुम सभि जानहुं। क्यों संकट चिता जुति ठानहुं।
प्राति होति सिख तहां पठावहु। आप आनंद पुरि ओर सिधावहु ॥ ६ ॥
सुनि पित के सभि रीति संदेसे। आन सुनावहि भाखहिं जैसे।
सगरो उर आशै तिन कहै। सकल शकति के मालिक अहैं ॥ ७ ॥
सुनति नानकी पुनहिं बखानी। 'पठहु दास इह नीके जानी।
सुध ले करि तूरन चलि आवै। कहां करनि तिनकै मन भावै' ॥ ८ ॥
अस मसलत करि निस बिसरामे। उठे बहुर जब ही रहि जामे*।
सोच शनान ठानि ततकाला। करवाइस त्यारी सु क्रिपाला ॥ ९ ॥
एक सिक्ख पठि दिल्ली ओर। 'हम दिशिते बंदहु कर जोरि।
कहि करि पाती को लिखवाइ। पहुंचहु शीघ्र अनंद पुरि आइ ॥ १० ॥

---

*एक पहर रात रहने पर उठते हैं

मात कशट प्रापत सभि कहीअहि। अपर सुनावहु जिस बिधि लहीअहि'।
सुनि संदेश को सिख प्रस्थाना। मारग दूर करति नित प्याना ॥ ११ ॥
इति क्रिपाल जुति गुरु क्रिपाल। जानि महूरत भलो बिसाल।
हुतो खड़ग खर निरमल धारा। कुछक अलप ले निज कर धारा ॥ १२ ॥
नौ सतिगुर को सिमरनि करिकै। 'बनहु सहाइ' ध्यान उर धरिकै।
'वाहिगुर' कहि गर महिं पावा। पट लपेटि कर कसी सुहावा ॥ १३ ॥
हुकम बखानि तुरग मंगावा। जिस पर जीन महां छबि छावा।
उठ करि आप प्रकरमा करिकै। बंदन ठानि बाग कर धरिकै ॥ १४ ॥
भए अरूढ सु चलबे कारन। कर्यो समीप क्रिपाल हकारन।
अपर दास ले संग समुदाए। मारग गमन करैं तजि थाए ॥ १५ ॥
कितक त्यागि नर माता पास। 'आनि संभारहु वसतू रास।
स्यंदन संग चले सभि आवहु। त्यारी ठानहु नहिं बिलमावहु' ॥ १६ ॥
इम कहि चले अनंद पुरि ओर। देखन की चित महिं बहु लोर।
अनिक बिलासन करते जाति। कहूं अखेर खेल बहु भांति ॥ १७ ॥
किस थल तरल तुरंग कुदावै। सम सथान पिख कहूं पलावैं।
बोलहिं बहु मातुल के साध। कहूं बाज को छोरहिं नाथ ॥ १८ ॥
जेठा आदि जि नर लखनौर। करि बंदन हटि गे निज ठौर।
मात नानकी गुजरी दोइ। सहित प्रेम सेवा जिस जोइ ॥ १९ ॥
'सुख सों बसहु वधहि परवार। दूध पूत हुइ सदन मझार'।
इत्यादिक सबि को बर दै के। स्यंदन पर आरूढन ह्वै कै ॥ २० ॥
नर नारिनि गन नमो करंते। बिछरत प्रेम नैन जलवंते।
दै धीरज म्रिदु बाक उचारे। रथ प्रसथानी पंथ मझारे ॥ २१ ॥
अपर वसतु सभि दास संभारी। गमने लै लै गुरु पिछारी।
चले जाम जुग मारग बिखै। भानु ढर्यो जब लोचन पिखै ॥ २२ ॥
डेरा कर्यो थान शुभ हेरा। खान पान अनवाइ घनेरा।
सभि बहीर आयहु तिह मिले। होइ त्रिपत बिसरामै भले ॥ २३ ॥
सुपत जथा सुख निसा बिताई। भई प्राति त्यारी करिवाई।
तब अरूढ़ करि पंथ पयाने। करति अखेर जाति मुद माने ॥ २४ ॥
इस प्रकार नित प्रति मग चले। अनिक बिलासति बिलसति भले।
गमने जांहि संग समुदाए। मिलहिं सिक्ख जहिं जहिं सुन पाए ॥ २५ ॥
अरपि अकोरन सेवन ठानहिं। खान पान त्रिण दाना आनहिं।
नमो चरन करि पिखहिं सरूप। दिपहि तेज बड भूपन भूप ॥ २६ ॥

गुर मूरति की सूरति रूरी। गुन चातुरतादिक बर पूरी।
कितिक समैं लगि देखति रहैं। उठ्यो न जाइ उठन उर चहैं॥ २७॥
नीठ नीठ करि सदन सिधार्रहि। अधिक प्रसंसा मिलहि उचारहि।
'जग गुरता बर उचित बडेरा। सुत श्री तेग बहादर केरा॥ २८॥
जिन महुं लच्छन जथा पितामा। हते शत्रु घाल्यो संग्रामा।
दिल्ली पति सगरे जग शाहू। पाइ पराजै भै उर मांहू॥ २९॥
अपरन की गिनती को कहै। बडे बहादुर सभि नर लहैं।
तिन सभ क्रांति इनहु की हेरी। बाल आरबल बिखै बडेरी॥ ३०॥
इत्यादिक मग के पुरि ग्रामू। हेरि हेरि हरखहिं अभिरामू।
उलंघि गए रोपर पुरि चालति। सने सने मजलालप[1] डालति॥ ३१॥
प्रथम गई सुध कीरत पुरि मैं। सुनति प्रमोद नारि नर उर मैं।
सूरज मल के पौत्रे दोइ। निकसे लेनि अगाऊ होइ॥ ३२॥
गनी गरीब अपर नर सारे। निकसे संग जुगम परवारे।
पहिर दूर आए हित आदर। लखि नंदन श्री तेग बहादर॥ ३३॥
बंदन करी सरब ही मिले। कुशल प्रशन करि दुहि दिशि भले।
कहति बतक[2] अंतर ले गए। डेरा करनि उतारति भए॥ ३४॥
सुंदर सदन सिधार प्रवेशे। उस्यो प्रयंक पीठ पर बैसे।
सतिगुर बूझनि लगे तदाई। 'देहु आपने नाम बताई॥ ३५॥
हम सभ बाल बैस, मिल खेलहिं। राखहिं निकटि, मेल निज मेलहि।
सुनति मेवड़े बिदत बताए। 'श्री सूरज मल तुमरे ताए॥ ३६॥
तिन के द्वै पौत्रे शुभ एही। गए अबहि बैकुंठ तजि देही।
नाम गुलाब राइ इह जेठे। श्यामदास लघु जो ढिग बैठे॥ ३७॥
रहैं अलंब तुमारे अबै। एक गुरु की संतति सबै'।
इत्यादिक बोले बहु बात। इतने महिं पहुंची जुग मात॥ ३८॥
सूरज मल घरनी[3] तबि आइ। सादर स्यंदन ते उतराई।
गर सो मिली जिठानि दिरानी। गुजरी वां के पग लपटानी॥ ३९॥
घर अंतर ले जाइ बिठाई। मसतक टेकति आनंद पाई।
अपर प्रसंग बखानौं कहा। सेवा करति भए समि महां॥ ४०॥
अधिक सनेह वधावनि कीनि। चिर बिछरे मिलि कै सुख लीनि।
अनिक प्रकार अहार कराए। प्रेम सहित कहि करि अचवाए॥ ४१॥

जथा जोग मिलि सभि परवारु। बड गुर दिशि ते रिदे खभारु[4]।
'गए आप तुरके गुर पास। कर्यो चहैं छित दुशर बिनास॥ ४२॥

---

1. छोटे छोटे पड़ाव करते हैं 2. बातें करते हैं 3. पत्नी 4. बड़े गुरु अर्थात् श्री गुरु तेग बहादर जी के कष्ट सुनकर दुख हुआ

करे फिकर के ज़िकर घनेरे। सुपत जथा सुख निस बडहेरे।
जागे जबि प्रभाति ह्वै आई। सौच शनान ठानि गोसाईं ॥ ४३ ॥
चह्यो चढन जबि सभि मिलि आए। 'आज न जान देंहि अगवाए।
बास करहु शुभ थान निहारहु। अपनि बडिनि की पुरी बिचारहु ॥ ४४ ॥
श्री हरिराइ बाग़ लगवायहु। नाना रीति साथ सुधरायहु।
करहु बिलोकनि आनंद देहै। तरुवरु सफल फूल बिकसे हैं ॥ ४५ ॥
गुरू पितामा को शुभ थान। दरशन करहु बंदना ठानि।
श्री गुरदित्ता तुमरो ताया। गिर पर ऊचे थान सुहाया ॥ ४६ ॥
सभि थल हैं अवलोकन जोग। तुमहिं पिखहिं कीरत पुरि लोग।
इत्यादिक कहि करि म्रिदु, सादर। राखे सुत श्री तेग़ बहादर ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे द्वादश रासे 'कीरतपुर आगवन प्रसंग' बरननं नाम एक ऊनशशटी अंशु ॥ ५९ ॥

अंशु ६०

लोह पिंजरे प्रवेश गुर प्रसंग

दोहरा

करि मुकामे[1] निज सतिगुरु पंचांम्रितु करिवाइ ।
चले बिलोकन बाग को सगरे संग लवाइ ॥ १ ॥

चौपई

भए प्रवेश अशेश निहारा । आरू अरु अमरुद, अनारा ।
खरे रसाल बिसाल उचेरे । फले फालसे फल बहुतेरे ॥ २ ॥
बदरी तरु कदलीन बगीचे । बारि बारि बारी बर सींचे ।
राइबेल, चंपक, चंबेली । फैली महिकति गंधि सुहेली ॥ ३ ॥
खिर्यो केवरा, हार शिगार । सेव मालती, गन गुलजार ।
गेंदा, कुलगा[2], ब्रिंद बधूप[3] । खिरनी, जामन खरी अनूप ॥ ४ ॥
निंबू, नौरंगी अंगूर । संगतरे सुंदर रस पूर ।
कठल, बढल[4], बट, पीपर[5] खरे । पंकति करी सुहावति खरे ॥ ५ ॥
रचे सथंडल[6], रोंस बिसाला । निरमल नीर सभिनि महिं चाला ।
बिचरति सतिगुर नर समुदाए । माली रचि डाली को ल्याए ॥ ६ ॥
धन गन दे करि सकल बिलोका । छाया सघन तेज रवि रोका ।
कर्यो सराहनि इत उत हेरि । गमने थान पितामे फेर ॥ ७ ॥
तबि लौ पंचाम्रित समुदाइ । आन्यो लोकन सीस उठाइ ।
दरशन देखि थान को निमे । करि अरदास अरप तिह समे ॥ ८ ॥
बंट्यो सकल नरन के मांही । अनंद समेत त्रिपत हुइ खांही ।
सभि सथान के दरशन करे । बहुर गमन करि गिर सिर चरे[8] ॥ ९ ॥
ताए को थल जाइ निहारा । करि बंदन थिर ह्वै तिस बारा ।
दिन बहु चढ्यो सु पुरि महिं आए । अचवि अहार स्वाद त्रिपताए ॥ १० ॥

---

1. डेरा करके 2. गनार फल 3. गुल दुपहरी 4. एक फल जिसका अचार डालते हैं 5. पीपल 6. चबूतरे 7. धूप को रोक रखा है, घनी छाया के कारण 8. पर्वत की चोटी पर गए

अपर सथल पुरि महिं शुभ जेई। अविलोके फिर करि सभि तेई।
अनिक भांति की बातनि करते। संग गुरु दिखरावति फिरते ।। ११ ।।
सभि दिन चाव समेत बितायो। दरशन करि सभि पुरि हरखायो।
निस बिसराम कर्यो सभि काहूं। भयो अनंद पिखि घर घर माहूं ।। १२ ।।
भई भोर प्रभु सौच शनाने। 'त्यारी की जहिं' बाक बखाने।
ततछिन ज़ीन डारि हय लयायो। गमन करनि गुरु निकट जनयो।। १३ ।।
सुनि करि आइ तुरंगम चढे। निज पुरि पिखनि अनंद मन बढे।
चढि करि मातुल संग क्रिपाल। सेवक सिक्ख ब्रिंद हवै नाल[1] ।। १४ ।।
मात नानकी गुजरी दोइ। चढि स्यंदन पर गमनी सोइ।
सुनति अनंद पुरि नरनि अनंद। मिलि इक थल हित पिखनि मुकंद ।। १५ ।।
अनिक अकोरन अरपन करन। पुरि ते निकसे कीनि पधारन।
आगे गमने केतिक दूर। खरे प्रतीखति आइ हदूर ।। १६ ।।
बैठे उठि उठि देखनि करे। अधिक प्रेम को सभि उरधरे।
कीरतिपुर ते गुरु सिधारे। पहुचि सत्तद्रव केर किनारे ।। १७ ।।
निरमल नीर हेरि हरखाए। सिंध गामनी सुदा बहाए[2]।
आवति देखि दूर असवारी। मुदति ब्रिंद नर चले अगारी ।। १८ ।।
अधिक उमाहित पहुँचे आई। बाल बैस अविलोक गुसांई।
चरन कमल पर सीस निवाए। ब्रिंद अकोरन को अरपाए ।। १९ ।।
कुशल प्रशन सभि सो गुर करे। 'क्रिपा आप की हम सुख धरे'।
बिप्प्र, बनिक ते आदिक सारे। मिले अंनदति रूप निहारे ।। २० ।।
सभि को ले करि अपने साथ। सने खने गमने मग नाथ।
बूझति सकल बारता जाते। हाथ जोरि नर कहिं बहु भांते ।। २१ ।।
इक दिशि दिखति गिरन की धारा। दिशा दूसरी सतुद्रव धारा।
पहुंचे पुरि अनंद महिं जाई। गिरजा[3] को गिर दियो दिखाई ।। २२ ।।
शारत[4] कर की करी क्रिपाल। 'इह नैणा देवी जन पाल[5]।
सभि ते ऊचो सैल बिसाल। करहि बास दाती बर जाल ।। २३ ।।
सुनि क्रिपाल के बाक क्रिपाला। देखति नमो करी ततकाला।
चहुंदिशि आनंदपुरि की अवनी। कीनि बिलोकन नीके खनी ।। २४ ।।
हरित दूरबा जल सरवाई[6]। तरुवरू खरे हरे समुदाई।
चारहुं कोद प्रमोदहि दाइक। देखति धर्यो हरख जग नाइक[7] ।। २५ ।।

---

1. साथ 2. समुद्र की ओर जाने वाली सतलुज नदी सदा बहती थी 3. नैना देवी 4. हाथ से संकेत किया 5. दासों का पालन करने वाले, अर्थात् गुरु जी 6. जल के हरे रंग के जाले से घास हरा हो गया है 7. गुरु जी

जहां सदन बड गुरु चिनाए। उतरे तबहि थिरे तिस थाए।
मात नानकी गुजरी आई। स्यंदन उतरि सदन प्रविशाई॥ २६॥
सिख सेवक समाज ले आए। अंतर धरि संभार समुदाए।
चावरू चून सिता घ्रित ल्याए। लागे करनि देग[1] मन भाए॥ २७॥
पंचाम्रित घनो करिवाइसि। पठि अरदास सभिनि बरताइसि।
पुरि नर अरु संगी त्रिपताए। 'धंन धंन सतिगुरु' अलाए॥ २८॥
खान पान सभि कीनि अहारा। गुरु बसे पुरि अनंद मझारा।
जहिं कहिं सुधि आवन की होई। गुरु सुनि सुनि चले आंइ सभि कोई॥ २९॥
अरपि उपाइन पाइन पास। करहिं अनेक खरे अरदास।
दिन प्रति होति भीर अधिकाई। दरसहिं सतिगुर पर बल जाई[2]॥ ३०॥
सहित मसंद संगता आवैं। अनिक अकोरन को अरपावैं।
इस प्रकार दिन कितिक बिताए। बसति अनंद पुरि अनंद उपाए॥ ३१॥
अबि सुनियहि दिल्ली पुरि गाथा। रची गुरु जिम तुरकन साथा।
मतीदास मरि गुर पुरि गयो। पीछे सिक्खयनि उर डर भयो॥ ३२॥
निस महिं निकसे भई प्रभाती। ब्रिद सिपाही लखे न राती।
दिनकर चढे बिलोके तबै। कैदी तीन निकसिगे कबै॥ ३३॥
द्वार किवार अंसजति सारे। हम खोली सांकर लगि तारे।
बेरी[3] उतरी परी निहारी। भए अचंभै सभिमति मारी॥ ३४॥
देखहिं खोज परै नहिं चीना। 'हे खुदाइ! इह क्या कित कीना'।
जमादार दौर्यो चलि आयो। इत उत देखति बहु डरपायो॥ ३५॥
किम निकसे? अचरज को माने। तबि सतिगुर को बूझनि ठाने।
'साथी तुमरे कहां सिधाए?। दिहु बताइ नतु शाहु रिसाए'[4]॥ ३६॥
सुनि भाख्यो 'ले गयो खुदाइ। तुम तें नहीं कशट को पाइ।
अरु तिनु सों क्या काज तुमारो। कीनो पकरनि शाहु हमारो॥ ३७॥
बैठे हम, चाहहु तिम करो। गए दास ते क्यों उर डरो।
सुनि करि अवरंग कौ सुधि दीनि। 'निस महिं निकस गए सिखतीन॥ ३८॥
रहे किवार भिरे तिम तारे[5]। नहीं 'पाहरू किनहिं निहारे'।
इम सुनि कोप नुरंगे कर्यो। जमादार के संग उचर्यो॥ ३९।
'मिल्यो रोइ तिन संग सिपाही। धन हित लोभ कीनिं मन मांही।
तुमहि जलादन[6] ते मरवाऊं। जेकरि भेव दोश कहु पाऊं॥ ४०॥

---

1. लंगर, भोजन 2. न्योछावर होते हैं 3. बेड़ी-लोहे की कड़ी 4. नहीं तो बादशाह गुस्से होगा 5. किवाड़ भी वैसे ही बंद रहे और ताले भी लगे रहे 6. जल्लाद-वधक

पाइ त्रास को कहि कर बंदि। 'खतावंद लखि करहु निकंद[1]।
सहित कुटंव दीजीयहि फांसी। कहां करहिं अजमत जिन पासी' ॥ ४१ ॥
सुनि अवरंग के होयसि छोह। कह्यो 'लेहु दिढ पिंजरा लोह।
तिस महिं हिंदुन गुरु बिठावहु। शिंखल भेरहु[2] कुलफ[3] लगावहु ॥ ४२ ॥
करहु तंग चौकस रहि खरे। आठहुं जाम द्रिशटि महिं करे।
अस नहिं होहि निकसि करि जाहिं। इस बिन शरा चलहि जग नाहिं ॥ ४३ ॥
इक उमकार संग करि दयो। गुर ढिग आइ कहति सो भयो।
'क्यों हठ धरहु शाहु के साथ। जो बड हठी जगत सभिनाथ ॥ ४४ ॥
मानहुं शर्हा देहि वडिआई। नांहि त देहि पिंजरे पाई।
सुनि गुर कह्यो : 'धरम जिस जिसको। प्यारो धरम, निबाहे तिस को ॥ ४५ ॥
हम तौ कबहुं न मानहिं एहो। जथा करहिं तिम करिबे देहो।
तुरकन तेज अंत अबि आयो। जिसते अस करिमनु बिरमायो ॥ ४६ ॥
जरा उखारहिं नींव तुमारी। गेरहिं सागर खार मझारी[4]।
बहुर न राज रहहि जग मांही। करहिं बिनाशन इस बिधि तांही ॥ ४७ ॥
सुनि करि तब पिंजरा मंगवाइ। पग बंधन जुति बीच बिठाइ[5]।
शिंखल भेरी कुलफ लगायो। इक रस सतिगुर बदन सुहायो ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ द्वादश रासे 'लोह पिंजरे प्रवेश गुर प्रसंग' बरननं नाम शशटी अंशु ॥ ६० ॥

---

1. नाश 2. कुंडी बंद कर दो 3. ताला लगा दो 4. खारी समुद्र में 5. दोनों पैर बांधकर, गुरु जी को पिंजरे में बैठा दिया

अंशु ६१

श्री गुरु तेग बहादर प्रसंग

दोहरा

सभि की खातर जमा तबि लोह पिंजरे पाइ ।
गुरदित्ता बेरी सहित सेवहि जिम फुरमाई ।। १ ।।

चौपई

करति भए अतिशै तकराई । जमादार ढिग ठहिर्यो आई ।
निस महिं बिसरामहिं गुर पासी । नरन जगावहि नींद बिनासी ।। २ ।।
दिन पंचक महिं सिख सो गयो । गुरदित्ते संग मेला भयो ।
सतिगुर सुत की सुधि सभि भाखी । 'मिलिबे को अबि मैं अभिलाखी ।। ३ ।।
मात नानकी कहे संदेसे । सगल कुटंब सचिंत विशेशे ।
सो सभि चाहौं गुरनि सुनाई । किम मिलिबो हुइ कहो उपाई ।। ४ ।।
गुरदित्ते सिक्ख साथ बखानी । 'कहौं बहुर, गुर मरज़ी जानी' ।
वहिर कहुं ठहिरायहु नेरे । संग सिपाही तिस को हेरे ।। ५ ।।
गुर सेवा हित इत उत फिरे । पग बंधन युति सो सभि करे ।
गुर समीप तबि अंतर गयो । सिख आगवन सुनावति भयो ।। ६ ।।
गुरु कह्यो 'तिस प्राति हकारहिं । सुनहिं सकल सुधि' बहुर उचारहिं ।
कहि दिहु तिस को करहु अरामू । हुइ निशचिंत जपहु सतिनामू' ।। ७ ।।
'कितिक समै मैं बाहिर आयो । गुर को कहिबो तांहि सुनायो ।
भई प्रबिरत जामनी जबै । खरे सिपाही जाग्रत तबै ।। ८ ।।
जमादार दे त्रास जगावै । बीच पिंजरे द्रिशटि टिकावै ।
बीत गई जबि आधी राति । भए लोप, गुर दिखहि न गात* ।। ९ ।।
देखति इत उत खरो सिपाही । बोल्यो तुरत 'गुरु अबि नांही ।
लगे कुलफ सांकरि तिम लहै । द्वार किवार असंजत अहैं' ।। १० ।।

---

*शरीर

जमादार सुनि आयो दौरा। लग्यो बिलोकनि सगरी ठौरा।
मग निकसनि को कहूं न पायो। किम कित गमने मन बिसमायो ॥ ११ ॥
'सने सने बोलहु बच हौरे। नहिन सुनाउ परहि बड रौरे।
घर दर सगरे हेरनि करे। बहुर जाइ कोठन पर चरे॥ १२ ॥
ऊपर तरे खोज करि सारे। हेरि हेरि हहिरे हिय हारे।
बिसमत भए न चलहि उपाई। गुर दित्ते संग कहैं सुनाई ॥ १३ ॥
'कहां गयो गुर खोज न पावैं। दिहु बताए नतु, मार करावैं।
'मैं क्या जानौं दूर टिकायो। निस महिं निकटि न होने पायो' ॥ १४ ॥
जमादार जुति सकल सिपाही। निशचै कर्यो तबहि मन मांही।
'कामल करामात करि गए। आगे कई बार इम भए' ॥ १५ ॥
इक बोल्यो अस हुती न आगै। थिरे पिंजरे अबि दुःख लागै।
नहिं ऐहैं कित निकसि सिधारैं। सहैं कशट क्यों समरथ भारैं' ॥ १६ ॥
जमादार कहि 'इक रस रहे। दीन-मलीन न मुख दुख लहे।
सुप्रसंन अरबिंद मनिंद। दीन बाक नहिं, जथा नरिंद ॥ १७ ॥
शाहु क्रूर हम को गहि लेहि। जानहिं कहां, सज़ाइ जु देहि
मिलि सभि कै, अबि चलहिं पलाइ। बसहिं कहूं लें जान बचाइ ॥ १८ ॥
कै हिंदुन गुर तेग बहादर। प्राति होति लउ सिमरहु सादर।
नहीं जीवका हतहिं हमारी। बिदतहिंगे इस थान मझारी ॥ १९ ॥
अधिक बिसूरत बिसमति अहैं। 'बूझहि शाहु, कहां हम कहैं।
अज़मत करि निकसे नहिं मानहिं। इनहूं निकासे हमहिं बखानहिं ॥ २० ॥
चिंतातुर चितवति गुर मूरति। कबि ले नाम मिले गन झूरति।
थिरे समीप पिंजरे सारे। कठन नौकरी करनि बिचारे ॥ २१ ॥
इम हेरति अरणोदै होवा। औचक तबि गुर दरशन जोवा।
बीच पिंजरे प्रथम समान। सुख सो बैठे क्रिपा निधान ॥ २२ ॥
सम सूरज के हेरन करे। मुख पंकज समसर तबि खिरे।
'धंन धंन' सभिहूंनि बखानी। हाथनि बदि बंदना ठानी ॥ २३ ॥
हरखति निज निज सदन सिधारे। जमादार बनि दीन उचारे।
'महिमा महि महिं महां महानी। मैं अबि निशचै करि उर जानी ॥ २४ ॥
लोक प्रलोक सुखद जन केरे। जागे बडे भाग अबि मेरे।
करहु मुरीद, निकसि करि चालो। सेवा करौं रहौं मैं नाले ॥ २५ ॥
मम मरजी के जितिक सिपाही। चलहिं संग नित रहिं तुम पाही।
क्यों संकट बिच कैद सहारो। शाह कुकरमी साहस वारो ॥ २६ ॥
जग ते करहु उधार हमारो। इह सलाह शुभ रिदे न टारो'।
जमादार ते सुनि बहु बिकसे। मुख मुसकान बाक इम निकसे ॥ २७ ॥

'तैं शरधा उर धारनि करी। शाहु कुमतिं की दुरमति हरी।
इस को फल सुख पाइं घनेरो। आगैं बधहि बंस बहुतेरो ॥ २८ ॥
निज आशैं हम तोहि सुनावैं। तुरकेशुर सिर दोश चढावैं।
हतहिं तेज तुरकनि को सारा। जथान ठहिरहि पावक पारा ॥ २९ ॥
जे हम छुट्यो चहति कित जांहि। तौ किम परति कैद के मांहि।
श्री नानक को बर इन भयो। राज जगत को बाबर लयो ॥ ३० ॥
अटल बाक हमरे गुर केर। जथा न चलहि वायु ते मेरु।
राज पुशत लौ-जबि बर जाचा। क्रिया निधान तबहि इंउ बाचा ॥ ३१ ॥
तब कुल मैं जबि हुइ अन्याइ। करि कूरे छीनहिं तबि आइ।
अबि इन कशट जगत कउ दीना। कर्यो चहै हिंदुनि धरम हीना ॥ ३२ ॥
संत अनेक मतनि के जोइ। प्रान बिनाशी कीने सोइ।
ब्रिंद तुरक तन महिं दरवेश। मारे इन दै कशट विशेश ॥ ३३ ॥
श्री नानक के बर को जानि। इस को करि न सक्यो को हानि।
हिंदु तुरक अरबिंद मनिंद। ब्रिदन दुखद जया निस इंद ॥ ३४ ॥
दे सिर को इस करि अपराधी। हतहिं सकल जग की जिम ब्याधी।
शरधा भाव सहित तुव जाना। बात मरम की कीनि बखाना ॥ ३५ ॥
देखति रहहु जथा अबि होवै। राज तुरक घर ते सभि खोवै'।
सुनिकैं जमादार गुरबानी। जान्यों भेत बंदना ठानी ॥ ३६ ॥
'सतिगुर तुम सभि बिधि समरत्थ। छुटनि छुटावनि जग को हत्थ।
क्या कहि सकहिं शकति ते हीने। भूत भविक्खयत लखहु प्रबीने' ॥ ३७ ॥
कहति सुनति होई जब प्राती। मिटी सकल की धरकति छाती।
श्री गुर तेग बहादर कह्यो। 'हमरो सिख इक बाहिर रह्यो ॥ ३८ ॥
तिह बुलाइ अबि आनहुं पासा। हम दिशि रखि निचिंत भरवासा।
सुनि करि जमादार धरि भाऊ। जान्यों रिदै विसाल प्रभाऊ ॥ ३९ ॥
आप जाइ कारागिह बाहिर। खोज्यो सिख जिम रहै अजाहर*।
संग आपने ले करि गयो। गुर के निकटि पुचावति भयो ॥ ४० ॥
सावधानता प्रथम जु करिही। हट्यो तबहि, भरवासा धरि ही।
महां शकति जुति आपहि आए। कैद परनि बड हेतु बताए ॥ ४१ ॥
क्या करि सकहि तिनहुं रखवारी। चहैं सु करैं न लगैं अवारी।
हम दुरमति करि क्यों दुख पावैं। जिनहुं अवश्यक दोजक जावैं ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गुरु तेग बहादर प्रसंग' बरननं नाम एक शशटी अंशु ॥ ६१ ॥

---

*छिप रहा था

अंशु ६२

संदेश पठन प्रसंग

दोहरा

लोह पिंजरे महिं गुरू नमो करी सिख देखि।
मुच्यो बिलोचन जल तबै संकट रिदै बिशेख। १ ॥

चौपई

हाथ जोरि सभि अरज गुज़ारी। 'आइसु मानि कुटंब तुमारा।
तजि लखनौर अनंदपुरि गए। ब्रिध माता को संकट भए ॥ २ ॥
बारि बारि ले स्वास बडेरे। बैठति उठति द्रिगन जल गेरे।
तिम श्री गुजरी बहु दुख पावै। तुमरी दिशि नित प्रति चित लावै ॥ ३ ॥
कहा होइ है, लखी न जाइ। निस दिन चिंता करति बिताइ।
साहिबज़ादा दे अहिलाद। धीर धरावहिं करि तुम याद ॥ ४ ॥
कहि महिमा बिधि अनिक तुमारी। कारन कारन शकति धरि भारी।
चहैं सु करैं न लगै अवारी। आपे रची बारता सारी ॥ ५ ॥
तऊ अधिक बिरलापहिं माई। सास नुखा ह्वै कै इक थाईं।
तिन के धीर धरावनि कारन। तुमरे सुत मुहि कीनि हकारनि ॥ ६ ॥
दादी अरु निज मात सुनाइ। कह्यो कि लीजहि सुधि मंगवाइ।
जथा कहैं पित तथा सुनिजहि। धरहु प्रतीत न चिंता कीजहि ॥ ७ ॥
जो क्रिन आप करनि को गए। कौन हटाइ सकहि सो थिए।
कह्यो मोहि—सतिगुर के हाथ। करहु लिखावनि है जिम गाथ ॥ ८ ॥
आन दिखावहिं सुनि हैं जबै। धीर धरहिं दुख परहरि सबै।
इस कारन ते मैं चलि आयो। सुधि रावर की चाहति पायो ॥ ९ ॥
सिख संगति अर ब्रिंद मसंद। तुम दिशि ते सभि चित बिलंद।
मिलहिं परसपर धरहिं बिखादा। अविरंग कूर कर्यो बड बादा ॥ १० ॥

बिना मिले सभि के चलि आए। बहुत बिसूरति सिख समुदाए।'
सुनि करि सभिहिनि केर ब्रितंता। ले कागदि कर महिं भगवंता ॥ ११ ॥
कलमदान को तबि मंगवायो। जमादार को नर ले आयो।
सभि संगति प्रति लिखि उपदेशू। करे शलोक बिराग विशेशू ॥ १२ ॥
'जो नर हुई जिसके अधिकारी। सो मानहि इम सीख हमारी।
सुख प्रापति जुग लोक मझारी'। लिखे शलोक सु करति उचारी ॥ १३ ॥
श्री मुखबाक ॥

सलोक महल ९ ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिहि बिधि जल को मीन ॥ १ ॥

चौपई

इत्यादिक सभि लिखे शलोक। 'पठि हरि भजहु तजहु सभि शोक'।
सभि सिक्खयनि प्रति लिखे बनाइ। सिमरहु नाम सु चिंत मिटाइ ॥ १४ ॥
पुन माता प्रति लिख्यो श्लोक। 'सुनि करि लेहु शोक को रोक।
जग महिं नहिं थिरता किस केरी। बिनसि गए जिन शकति बडेरी' ॥ १५ ॥

श्री मुखवाक महला ९ ॥

राम गइओ रावनु गइओ जावउ बहु परवार ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारि ॥ ५० ॥
चिंता ताकि कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इह मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥
जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु के काल ॥
नानक हरिगुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥ ५२ ॥

चौपई

मात नानकी लिखि समुझाई। अरु गुजरी की चिंत मिटाई।
'रामचंद राजा अवितार। बिजै कीनि छित जीति उदार ॥ १६ ॥
रावण जीत लीनि त्रै लोकु। बड परिवार वध्यो बिन शोक।
राज समाज कौन गिन सकै। सुर गन डरैं, दिशा जिस तकै ॥ १७ ॥
सभि बिधि बडे सभिनि ते दौन*। सो भी गए त्यागि निज भौन।
सुपन समें महिं सुपनो साचा। सोग हरख दुख सुख रहि राचा ॥ १८ ॥
जबि जाग्रत सु अवसथा होइ। रच्यो समाज बिन सिगा सोइ।
झूठो जानहि, नहिं पछुतावै। तिम रचना जग की द्रिशटावै ॥ १९ ॥

*दो भाई—राम तथा लक्ष्मण

तिस हित ममता धारहि जीवत। कछू न रहहि, बिनासी थीवत।
होइ जाइ अनहोनी जोइ। उचित करनि के चिंता सोइ ॥ २० ॥
जो सभि संग एक सम होइ। तिस ते चिंता करै न कोइ।
जो उपजहि सो बिनसनहार। परसों, आज कि काल बिचार ॥ २१ ॥
यां ते हरिगुन गाइ बिसाल। त्यागहु सगरे जग जंजाल।
'हम दिशि की नहिं चिंता ठानहु। तनको अंत समा अबि जानहु ॥ २२ ॥
हुते निकटि तुम, तिमही बनति*। जथा दूर बैठे हम भनति।
यांते शोक चिंत को त्यागहु। सत्तिनाम के सिमरन लागहु' ॥ २३ ॥
दोनहुं प्रति शलोक लिखि तीन। 'करहु न दुख' सीख्या अस दीनि।
पुन अपने सुत को पति आवन। हित परखन के—किम धर भावन ॥ २४ ॥
लखहि शकति महिं हम को कैसे ? लख्यो जाइ अस आशै जैसे।
तिस बिधि दोहा लिख्यो बनाइ। श्री गुर तेग बहादर राइ ॥ २५ ॥

श्री मुखबाक ॥

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गजि जिउ होहु, सहाइ ॥ ५३ ॥

चौपई

पूरब जनम केर बिरतंत। कहि सिमरन को श्री भगवंत।
लिख्यो पता जिम करी सहाइ। रणकरि राखश दए खपाइ ॥ २६ ॥
अबि इह दुशट उठाइ खुटाई। बंधन दए अंग मैं पाई।
गही ओट परमेशुर केरी। जिम गज की छेदी पग बेरी ॥ २७ ॥
सो अबि समा आइ करि होवा। नहिंन सहाइक तुम बिन जोवा।
इक दोहा लिखि करि निज हाथ। बहुर बनाइ अपर को नाथ ॥ २८ ॥

श्री मुखबाक ॥

राम नामु उरि मै गहिओ जाकै सम नही कोई ॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥
संग सखा सभ तजि गए कोऊ न निबहिओ साथ ॥
कहु नानक इह बिपत मै टेक एक रघनाथ ॥ ५५ ॥
नाम रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुरमंतु ॥ ५६ ॥

*यदि तुम्हारे पास होते तब भी यही कुछ होना था

चौपई

इम शलोक सतिगुरु सभि लिखे। अधिक विराग कह्यो जिन बिखे।
अनिक रीतिं को आशै और। करि सूचक सिरमौर ॥ २९ ॥
पुन इकठो करिकै निज हाथ। देति भए बोले सिख साथ।
'तूरन चले जाहु मग मांहू। पहुंचहु श्री गुबिंद के पाहू ॥ ३० ॥
पुन उत्तर कटि कै लिखवाओ। निकटि हमारे सिख इक आओ।
तन तजिबे के दिन अबि थोरे। बिन बिलंब आवहु इत ओरे ॥ ३१ ॥
इन महिं सभि को बात बतावहु। बिन बिसराम जाइ पुन आवहु।
श्रमत पंथ महिं तू नहिं होइ। निस दिन गमनहु बिघन न कोइ ॥ ३२ ॥
हम दिशि ते सभि को ध्रित दैहौ। शोक चित तजि प्रभु सिमरै हौ।
सुप्रसंन मुख ते जबि भाखा। प्रमुख सिक्ख सिर धरि पर राखा ॥ ३३ ॥
'धनं गुरु तुमरी बडिआइ। इकरस सुख दुख ब्रित्ति टिकाई।
मुख ते कहहु लिखहु बिधि आन। बराहु आर रीति भगवान' ॥ ३४ ॥
करि बंदन को बारंबार। निकस्यो काराग्रिह के द्वार।
चल्यो शीघ्र गुरपुरि मग मांही। निस दिन महिं ब्रिसरामहि नांही ॥ ३५ ॥
भोजन करन शौच इशनानै। थिरहि इतिक नतु पंथ पयानै।
निस दिन गमन्यो नहिन थकेवा। जानहि कर्यो बाक गुरदेवा ॥ ३६ ॥
इम शीघर ही मग उलंघायो। तजि रोपर कीरत पुरि आयो।
टिक्यो नहीं आगे चलि पर्यो। दरशन श्री अनंदपुरि कर्यो ॥ ३७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'संदेश पठन प्रसंग' बरननं नाम दोइ सशटी अंशु ॥ ६२ ॥

अंशु ६३

जग गुरता अरपन प्रसंग

दोहरा

द्वै घटिका बासुर चढे करि तन सौच शनान ।
बैठे हुते दिवान महिं श्री गुरु दया निधान ।। १ ।।

चौपई

लए प्रत्रिका सिख चलि आयो । पग पंकज पर सीस निवायो ।
हाथ जोरि करि अपरन कीनि । पिता पठ्यो-लखि लीनि प्रबीन ।। २ ।।
चिट्ठा खोलि जानि सभि आशै । उठि गमने जुग मातनि पासै ।
सास नुखा गुर रूप चितारति । कहां होइ-इम संसै धारति ।। ३ ।।
कबि कबि ज़िकर फिकर के करैं । दुशट तुरकपति ते चिति डरैं ।
गुर महिमा जानैं भलिभांती । तऊ सनेह मनि दुख छाती ।। ४ ।।
कितिक मसंद सिक्ख गन दास । पहुंचे धरे मौन थित पास ।
बैठे निकटि मात के जाई । मुख दादी दिशि कर्यो सुनाई ।। ५ ।।
'सतिगुर लिख्यो आपने हाथ । भने संदेसे हम तुम साथ ।
संगति प्रति उपदेश बतायो । इह सिख अबि ही ले करि आयो' ।। ६ ।।
इम कहि पिख्यो मेवड़े ओर । 'लिहु कर महिं बाचहु सभि छोरि*' ।
मानि हुकम तिन पठ्यो सुनाओ । संगति प्रति जिम प्रथम बतायो ।। ७ ।।
बहु शलोक बैंराग जनावैं । जग महिं थिर को रहिनि न पावै ।
बडे बडे हुइ सभि चलि गए । राम क्रिशन अवितार जि भए ।। ८ ।।
पुन लच्छन भाख्यो ब्रहम ग्यानी । तन महिं हंता जिनहु न मानी ।
नहिं किस हूं ते भै उर पावै । आप और नहिं त्रास उपावैं ।। ९ ।।
उसतति निंदा कंचन लोह । मान अमान समानै होहि ।
पुन जननी बिरधा हित धीर । होनहार ही तजनि शरीर ।। १० ।।

*खोल कर

यांते उचित न चिंता करनी। सुपने जग की समता बरनी।
जिसकी आदि, अंत तिस होइ। उपजन वारो बिनसति सोइ॥ ११॥
यांते सभि त्यागहु जंजाल। सासि सासि हरि प्रभू समालि।
पुन सपूत के संग संदेस। लिख्यो जु पठ्यो सु सुन्यो अशेश॥ १२॥
गन शलोक जबि पठे सुनाए। सभि के लोचन जल भरि आए।
भए मौन कुछ कह्यो न जाई। हाथ जोरि पुन सिक्ख सुनाई॥ १३॥
'श्री मुख ते मो प्रति फुरमाइ। साहिबज़ादे निकटि पठाइ।
पुन उत्तर लिखिवावनि कीजै। बिना बिलम हम ढिग पठि दीजै॥ १४॥
यांते नहिं बिलंब अबिधारो। लिखि करि उत्तर पठहु बिचारो'।
गुरु नंदन सुनि जान्यों आशै। सकल शकति को बल जिन पासै॥ १५॥
सूरज ससि की रोकि रखैया। ब्रह्म लोक लौ बल अतिसैया[1]।
हाथ जोरि इंद्रादिक थिरैं। जथा हुकम सो ततछिन करैं॥ १६॥
क्या नर बपुरे तिनहुं अगारे। अवनि उडाइं फूक इक मारे।
एक बात ते सभि तुरकाना। शाहु कि रंक होहि परहाना[2]॥ १७॥
जो सहाइता सभि की करैं। रिदे मनोरथ जे सिख धरैं।
दूर कि नेर कि अवनि अकाश। सिमरैं मन पहुंचति जन पास॥ १८॥
सकल कला समरथ गुर ऐसे। निज सहाइता चाहति कैसे।
जिनके दासनि दासनि दास। जगहि निवाजहिं करहिं कि नाश॥ १९॥
तिन सहाइता करनि अजोग। मानहिं हुकम चौदहूं लोग।
श्री नानक की जोति उदारा। अधिक प्रकाशति जिनहुं मझारा॥ २०॥
इम बिचार करि गुर के नंदन। पूरब लिखी आपनी बंदन।
'चित महिं चहहु सु तुरत बनावहु। तउ भली बिधि शकति दुरावहु॥ २१॥

श्री मुखवाक॥ पातशाही १०॥

बल होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाइ।
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मैं तुम ही होत सहाइ॥ ५४॥

चौपई

इस प्रकार उत्तर लिखि पाती। सभि की नमो लिखी सुख शांती।
'तीन लोक के मालक आप। चहो सु रचहु उथापन थाप'॥ २२॥
इत्यादिक लिखि बहुर बिचारा। समैं अलप तनु तजनि मझारा।
आनहि सीस जाइ सिख जोइ। नहिं बिलमैं अरु निरभै होइ॥ २३॥

1. अधिक 2. नाश

जो आयहु सो नहिन पठायो। अमर दास को निकटि बुलायो।
'करहु गौन अबि पौन समानो। पहुंचहु निकटि त्रास नहिं मानो ॥ २४ ॥
सभि दिशि ते अभिबंदन करीअहि। जो कारन हुइ खरे निहरीअहि।
किस दिशि ते नहिं संसै धरीअहि। आवन जानो करति न डरीअहि' ॥ २५ ॥
हाथ जोरि गुर ते सुनि बानी। भयो त्यार चलिबे कहु, मानी।
बारंबार नानकी माता। 'मैं अति ब्रिधा सुनो सुख ताता' ॥ २६ ॥
श्री गुजरी मनदीन उचारे। 'तुम दरशन की प्यास हमारे।
जिम जानहु तिम रचहु गुसांई। तुमरे महिं चित रहै सदाई ॥ २७ ॥
लई पत्रिका सिक्खय सिधायहु। नमो करति ही नहिं बिलमायहु।
दिल्ली पुरि के पंथ सिधारा। निस दिन गमन्यो जाइ सुखारा ॥ २८ ॥
कितिक समै महिं पहुंच्यायो जाइ। पौर पुरी के प्रविश्यो धाई।
डर बिहीन काराग्रिह गयो। सतिगुर अंतरि देखत भयो ॥ २९ ॥
हाथ जोरि करि सीस निवायो। बदन प्रफुल्लत दरशन पायो।
धरी पत्रिका गुर अगारी। सुधि कुटंब की सकल उचारी ॥ ३० ॥
कर धरि खोलि पठी ततकाला। श्री सतिगुर उर धीर बिसाला।
निज नंदन को आशै परखति। अधिक गंभीर जानि मन हरखति ॥ ३१ ॥
लाखहुं बरखन को तप दीहा। इनके उपजावन हित प्रीहा।
एकंकार अराधनि करे। झटकी सिंह खाल कर धरे ॥ ३२ ॥
तबि हूं पुरशोतम के अंस। उपजे जग मानस के हंस।
लाखहुं राखश खंडि खपाए। जोश्रा अधिक थिरे रनथाए ॥ ३३ ॥
मिली चंडका पाइ बिजै को। मुदत दिए वर, देखि अजै को।
सतिजुग आदि बिखै उपंने। तबि के तपन तपहिं मन मंने ॥ ३४ ॥
उग्र तपन ते व्याकुल देव। भयो तेज अस तप को सेव।
जबि अराधना लखी हमारी। एकंकार दया तबि धारी ॥ ३५ ॥
तबि गुरता हित कर्यो पठावनि। जीव करोरन करि हैं पावन।
शकति महिद ते महिद मझारी। तनक न तऊ जनावन धारी ॥ ३६ ॥
अजर जरन हम सिर लौ ठानैं। इह धीरज भी महिद महानै।
तिनहुं कीनि हम ते अधिकाई। चहैं दुरावनि नहिं न जनाई ॥ ३७ ॥
उचित गुरु नानक मसनंद। अजर जरन महिं लखे बिलंद।
गुर घर बिखै बडी वडिआई। इनको जग गुरता बनिआई ॥ ३८ ॥
सु प्रसंन हुइ हुकम वखाना। 'भो सिख! जाहु बिलम करि हाना।
श्री फल पैसे पंचहुं आनि। रूचिर बिलोकहु होइ महान' ॥ ३९ ॥

कारागिरह ते सिख तबि गयो। सुंदर श्री फल को पिखि लयो।
संग पंच पैसे धरि हाथ। पहुंच्यो ततछिन जिह ठां नाथ ॥ ४० ॥
ले श्री तेग बहादर कर मैं। धर्यो ध्यान नंदन को उर मैं।
बंदन कीनि सु अरपि अगारी। जग गुरता दीनसि बलभारी ॥ ४१ ॥
नौ तन मंहि जो बरती जोति। सुत मंहि करी प्रवेश उदोत।
सिख सों हुकम कर्यो 'ले जइऐ। अरपहु श्री गोबिंद, गुर हइऐ ॥ ४२ ॥
नहिं बिलमहु मग निस दिन चलो। धरे शीघ्रता तिन सों मिलो'।
इम कहि इक शलोक लिखी दीनि। निज नंदन को अरपनि कीनि ॥ ४३ ॥

श्री मुखवाक ॥

नाम रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद।
कहु नानक इह जगत मैं किन जपिओ गुर मंतु ॥ ५६ ॥

चौपई

सुनि सिख हुकम मानि प्रसथाना। करि बंदन उर को डर हाना।
कारागिरह को तजि ततकाला। करति शीघ्रता मारग चाला ॥ ४४ ॥
इत अनंदपुरि गुजरी मात। सुपति जथा सुख भी जबि राति।
औचक उठी पाइ दुह सुपने। सतिगुर को चितवति चित अपने ॥ ४५ ॥
अति चिंता सों रात बिताई। तूशनि ठानि किसू न जनाई।
संकट अधिक पाइ मन मांही। बैठी भई प्राति लखि तांही ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'जग गुरता अरपन प्रसंग' बरननं नाम तीन सशटी अंशु ॥ ६३ ॥

अंशु ६४

श्री तेग बहादर प्रसंग

दोहरा

चिंतातुर अवनी पिखति नेत्रनि ते जल जाति।
नमस्कार हित करनि के चलि आए ढिग तात ॥ १ ॥

चौपई

बैठे निकटि सपूत प्रबीना। देखि मात दिशि बूझनि कीना।
'अबि लौ आज न मज्जन कर्यो। नेम शबद को पाठ न रर्यो ॥ २ ॥
क्या चितवति चिंता चित मांही। मो संग भेद कहहु किम नाही।
श्री गुजरी दुह सुपन सुनाए। 'हे नंदन! निस महिं मुझ आए ॥ ३ ॥
पिता तुमारे अपने कर ते। पैसे पंच नालीअर धरते।
अरपन करते तुमहुं अगारी। इम सुपनो आयो इक बारी ॥ ४ ॥
पुन सतिगुर को धर सिर न्यारो। पिखि सुपने महिं भा दुख भारो।
तबि की चिंता मैं कर रही। मन थिरता को पावति नहीं ॥ ५ ॥
पठहु सिक्ख लघु देहु तुरंग। आनहि सुधि को तूरन संग।
पहुंचहि पुरि संगति के मांहि। डेरा करहि निकटि पुन जाहि ॥ ६ ॥
करि दरशन ततछिन हटि आवै। इम मेरे मन महिं अबि भावै।
सुनि जननी ते गिरा दुबारी। पठ्यो सिक्ख तूरन करि त्यारी ॥ ७ ॥
कर्यो हुकम 'आगे सिख गयो। मग महिं मिलै कि पुरि थिर भयो।
तांहि पठावहु शीघ्र सु आइ। तू गुर मिलहु जाइ तिस थाइं' ॥ ८ ॥
सुनि सिक्ख हुकम बंदना करिकै। गवन्यो मारग गुरु सिमरि कै।
उत सिख दिल्ली ते चलि आयो। इह अनंदपुरि तजि धायो ॥ ९ ॥
दोनहुं सिक्ख पंथ चलि परे। सतिगुर बीच पिंजरे थिरे।
मुख प्रसंन इकरस दुति पावै। हरख शोक ते नहिं न डुलावैं ॥ १० ॥

किितक द्योस इस भांति बिताए। तबि चवगत्ता कोप उपांए।
मोर मनोरथ सिद्ध न होवा। नहीं शर्हा महिं सभि जग जोवा ॥ ११ ॥
सभि हिंदुनि को गुरु किवार। सो अर रह्यो न भा अनुसारि।
इम चितवति चित्त महिं चवगत्ता। पर्यो लोह पिंजर दुख अत्ता ॥ १२ ॥
पठौं मुलाने अबि बुझवांवौं। मानहिं शर्हा दीन महिं ल्यावौं।
नांहि त करामात दिखरावै। जिस बल ते जग गुरु कहावै ॥ १३ ॥
दुहुं महिं एक मानि है जबै। करौं खलासी तिसकी तबै।
नतु दैहौं मैं कतल कराइ। जिसते डरपैं नर समुदाइ ॥ १४ ॥
दिल दलील दिल्लीपति ऐसे। करति, तेज सभि बिनसै जैसे।
एक मुलाना इक उमराइ। लखि मतिवंते निकटि बुलाइ ॥ १५ ॥
'गुर हिंदुन काराग्रिह मांही। अबि लौ कह्यो सु मान्यों नांही।
जाइ करहु समुझावनि तांहू। देहु सजाइ, मानि ले जाहूं ॥ १६ ॥
त्रास दिखावहु अनिक प्रकारा। जिसते आवहि शर्हा मझारा।
कहहु लोभ की बात बडेरी। करहि निकाहु सुता संग मेरी[1] ॥ १७ ॥
राज समाज बिलंदहि लै है। उर हरखाइ दीन जे ऐ है।
कहे किताबन जितिक उपाइ। दे सुतादि ले शर्हा मनाइ ॥ १८ ॥
जिम किम दीनि बिखै किस आनहिं। इस ते महां सबाब[2] बखानहिं।
करनि दीन को सदा बिलंद। भयो, न ह्वै है मोहि मनिंद ॥ १९ ॥
तिम हिंदुन महिं गुरु समान। नहीं आन जे पिखिय जहान।
कलमा पठहि एक इहु जबै। मान लेहिं सिख इसको सबै ॥ २० ॥
लाखहुं लोक शर्हा चलि परैं। हेरि हेरि पुन को नहिं अरै।
दीन मजब[3] के मुख हम दोइ। जानी जाइ कौन बिधि होई ॥ २१ ॥
इस बिधि करे जि मानहि नांहि। करामात दे—भाखहु तांहि'।
सुनि दोनहुं अवरंग ते गए। पहुंचे गुरहि बिलोकति भए ॥ २२ ॥
बैठे बदन प्रसंन अदीना[4]। नहीं कैद को दुख कुछ चीना।
खरे भए देखति बिसमाए। कह्यो 'शाहू तुम निकटि पठाए ॥ २३ ॥
क्यों तुम कशट सह्यो चिर काल। क्यों हठ धार्यो रिदै बिसाल।
क्यों नहिं भोगहु ऐश अनेक। क्यों नहि गहो शाहु की टेक ॥ २४ ॥
लाखहु लोक शर्हा महिं आए। सो सगरे हज़रत बडिआए।
तुमहिं शिरोमणि सभि को करै। कहै जु शाहु न पुन कबि फिरै ॥ २५ ॥

1. मेरी लड़की के साथ विवाह कर ले 2. पुण्य 3. धर्म 4. अधर्मी

दुखतर[1] आदि देनि जिन मानी। अपर देनि की कहां कहानी[2]।
भलो आपनो क्यो न बिचारहु। इहां ऐश, मर भिसत[3] सिधारहु॥ २६॥
जो दानाइ न त्यागनि करै। कह्यो शाहु को सिर पर धरै।
नांहिन हज़रत[4] के चित रोस। दे मरवाइ न जानहिं दोश॥ २७॥
तीन बात निरनै करि लीजै। लखहु भली सो धारनि कीजै।
शर्हा चलहु कलमे कहु पढि मुख। देही शाहु भोगहु सभि बिधी सुख॥ २८॥
जे हठ करहु न मानहु एहो। करामात कामल हुइ देहो।
जिम हज़रत तुम ते करिवावै। तिम करि देह देखि हरखावै॥ २९॥
रामराइ जिस तुमरो पोता। सदा शाहु अनुसारी होता।
बार सैंकरे अजमत दीनी। जिम हज़रत कहि तिम तिन कीनी॥ ३०॥
दरब हज़ारहुं नित प्रति पावै। अपनी संगती तदा ब्रिधावै।
जिसको भा ऐशवर्ज बिलंद। तुम भी हूजहु तिसहि मनिंद॥ ३१॥
जे इह दोनहुं नांहि न मानहुं। अपने पान प्रान कह हानहुं[5]।
नहिं त्यागहि कबि जीवति तोही। अधिक हठीला गनीयहि ओही॥ ३२॥
शर्हा मानि, कै अजमत दैन। किधों म्रितू अपनी करि लैन।
इन तीनहुं महिं लखहु जु नीकी। हिय के बीच करहु सो ठीकी[6]॥ ३३॥
तिन ते सुनि श्री तेग बहादर। धरम निबाहनि बिखै बहादर।
उत्तर भन्यो 'धरम हम हिंदू। अति प्रिय को किम करहिं निकंदू॥ ३४॥
लोक प्रलोक बिखै सुखदानी। आन न पईयति जांहि समानी।
मति मलीन मूरख मति जोइ। इस को त्यागहि पांमर सोइ॥ ३५॥
दीन दुनी महिं दुख को पावै। जम सज़ाइ दे नहिं त्रिपतावै।
सुमतिवंत हम कहु क्यों त्यागहिं। धरम राखिबे नित अनुरागहिं॥ ३६॥
इसत्री आदि पदारथ सारे। रंच लोभ नहिं रिदै हमारे।
क्यों तुम कहहु, न अंगीकारैं। राखहिंगे निज धरम, न हारैं॥ ३७॥
झख मारहिं मूरख चवगत्ता। जग द्रोही, खल, दुशट, कुपत्ता।
इस के बडे सेव करि पाई। अबहि बिनाशहि सकल कमाई॥ ३८॥

---

1. लड़की 2. बात ही क्या है? 3. स्वर्ग 4. औरंगज़ेब 5. अपने ही हाथों अपने प्राणों का नाश करोगे 6. हृदय में ठीक प्रकार से सोच लो

करामात कहिं कहिर करन को। प्रभु के लोक न करहिं धरन को।
जिम बाज़ीगर नरनि रिझावै। कुछ ते कुछ करि तुरत दिखावै ॥ ३९ ॥

सो हम को कबि लगहि न नीकी। नहीं कामना किम हुइ ही की।
जहि प्रभु लोक संत समुदाइ। तिन महिं किम बैठहिं, शरमाइ ॥ ४० ॥

दोनहुं अंगीकार न हमरे। करि निरनै भाखहिं ढिग तुमरे।
कोट जतन ते फिरहिं न फेरे। कहो करोर बार हुइ नेरे ॥ ४१ ॥

त्रितीए प्रान हाव की बात। सो हम सहैं, अपने गात।
हिंदू धरम रखहिं जग मांही। तुमरे करे बिनस है नांही' ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ द्वादश रासे 'श्री तेग बहादर प्रसंग' बरननं नाम चतरसशटी अंशु ॥ ६४ ॥

अंशु ६५

श्री तेग बहादर प्रलोक गमन प्रसंग

दोहरा

अटल निठुर संदेह, बिन कहे वाक निरधार ।
सुनि गुर ते उमराव सो कोप्यो दुशट गवार ।। १ ।।

चौपई

संग मुलाने बैन बखाने । 'कह्यो शाहु को नांहिन माने ।
लोह पिंजरे महिं भी पायो । नहीं त्रास कुछ मन महि ल्यायो ।। २ ।।
अनिक भांति की पाइ सजाइ । करि जबरी ते लेहु मनाइ ।
समुझायहु किम समुझै नांही । आवन जानि निफल इन पाही' ।। ३ ।।
भनै मुलाना 'छुटै न कोई । लखीयति प्रान हान इन होई ।
उत हज़रत को हठ नहिं टरै । इत इक सम ही हठ को धरैं ।। ४ ।।
दोनहुं कहि गमने ढिग शाहू । सकल प्रसंग भन्यो तिस पाहू ।
क्योंहू नहि मानहिं कुछ कह्यो । कैद कशट ते त्रास न लह्यो ।। ५ ।।
मुदत अनिंद बदन जिन केरा । हम समुझाइ रहे बहुतेरा' ।
सुनि बोल्यो मूरख चवगत्ता । जे अस धरम बिखै दिढ रत्ता ।। ६ ।।
तेग बहादर नाम धरायो । कौन मायना* या महिं पायो ।
हिंदुन के गुर पूज कहावहु । नाम विअरथ नहीं रखवावहु ।। ७ ।।
सो बहादरी किम हम जानै । तेग बहादर जगत बखानै ।
बूझहु जाइ बताहि सोइ । नांहि त बड सजाइ अबि होइ' ।। ८ ।।
बहुर पठे दोनहुं चलि आए । 'नाम माइना' देहु बताए ।
राख्यो कौन हेतु करि नामू । बूझति शाहु भयो रिस धामू ।। ९ ।।

*अर्थ

सुनि सतिगुर बोले मति धीर। 'नाम रूप इह धरम सरीर।
इस महिं कारन राख्यो जोइ। निरनै करि भाखहिं सुनि सोइ॥ १० ॥
तेग पुलादी[1] आदि हल्लबी[2]। जाति अनेकन केर जुनब्बी[3]।
कैसी तीखन होइ बनाई। अति सूखमधारा सुधराई॥ ११ ॥
अग्र तांहि कै कागद धरि कै। काचे तागे सो बंधि करि कै।
हीहि सबिद्दयक[4] बड तलवारा। हमरे तन पर करै प्रहारा॥ १२ ॥
अपर बारता कहीए कांते। कागद भी न सकहि छिद तांते।
इह अजमत है नाम हमारे। कहै जि हुइ न प्रतीत तुमारे॥ १३ ॥
तौ अजमाइश करि लिहु देखि। कहे साच, सो लेहु परेखि[5]'।
इह जबि उत्तर गुरु प्रकाशा। चपलति गए शाहु के पासा॥ १४ ॥
'करामात पहिले नहिं मानति। अपनि नाम पर अबहि बखानति।
कहै सु-देखि लेहु अजमाइ। तिखी तेग कागद न कटाइ'॥ १५ ॥
सुनि अविरंग कीमत बड तेग। कहि कोशप अनवाइ सवेग।
ले निज कर महिं तुरत निकारी। अतिशै खर धारा सु निहारी॥ १६ ॥
निज हदूर कागद को लै के। तागे संन बंधिबो कै के।
इक सय्यद ढिग देख्यो ज्वान। बाहू बडी अधिक बलवान॥ १७ ॥
कितिक मुलाने अर उमराव। करे संग देखनि चित चाव।
सुनिकै जिस किसने निज कान। हेरन हेतु चले तिस थान॥ १८ ॥
उत नुरंग इम करतो भयो। इत सतिगुर ढिग सिख पहुंच्यो।
जमादार ढिग पहुंच्यो सोइ। भाख्यो मिलिनि गुर संग होइ॥ १९ ॥
उर तुरकनि ते करि उर मांही। निज संग ले गमन्यो गुरपाही।
बंदनि कहि सभि कहे संदेस। 'सुध हित आयो शीघ्र विशेश'॥ २० ॥
तबि सतिगुर सभि बिधि समुझांयो। 'अंत समां तनको अबि आयो।
रहो ठौर काराग्रिह नेरे। सीस आइ झोरी बिच तेरे॥ २१ ॥
बिना त्रास बिड बिलम सिधारो। पहुंचि अनंदपुरि महिं ससकारो[6]।
भले समैं पहुंच्यो अबि आइ। सीस हमारो ले पहुंचाइ'॥ २२ ॥
सुनिकैं जमादार सिख दोइ। चल्यो द्रिगनि ते जल तबि रोइ।
गुर समुझाए 'धीर धरीजै'। परमेशुर कहु सिमरन कीजै॥ २३ ॥
निकटि सेव हित मिख गुरदित्ता। तिसको धीरज बहु बिधि दित्ता[7]।
'हमरे पाछै छोरहिं तोहि। करहूं तथा जिम उर मैं होहिं'॥ २४ ॥

---

1. फौलादी तलवार 2. तुर्की के एक नगर का नाम है 3. एक नगर का नाम, जो तुर्की में है 4. शस्त्र विद्या में निपुण्य 5. परीक्षा कर लो 6. दाह संस्कार करो 7. दिया

बोल्यो हाथ जोरि 'मम आसा। इत उत रहौं आपके पासा।
नहिं पाछे मैं जीवन करि हौं। तातकाल निज प्रानन हरि हौं ॥ २५ ॥
सुनि सतिगुर तिह बाक बखाना। 'पंच कोस पुरि ते तुम थाना।
भाई ब्रिद्ध रह्यो इक बारी। गुरु ग्वालियर केर मझारी ॥ २६ ॥
तबहि तुरंगम लै संग सारे। तहिं थिर करे त्रिणनि को चारे।
तहां जाइ तजीअहि निज प्रान। कीजहि हमरे संग पयान' ॥ २७ ॥
इम कहि सभि को दियो हटाइ। जमादार सिख भे बिसमाइ।
इतने बिखे सकल चलि आए। अधम शाहु दे तेग़ पठाए ॥ २८ ॥
पिखि सतिगुर को कीनि बखान। 'जिम तुम कह्यो शाहु सुनि कान।
अज़मत नाम हेतु पतिआवन। नर ब्रिंदन को कीनि पठावन ॥ २९ ॥
क्यों नाहक निज प्रान बिनासहु। मानहु शर्हा सु जियन बिलासहु'।
कह्यो गुर 'इह तेग जु ऐहै। नहिं कागद को छेदि सकै है ॥ ३० ॥
हमरो कह्यो साच ही जाने। नहिं प्रतीत तौ परखन ठानहुं'।
तबहि पिंजरे द्वार उघारा। निकसे बहिर बिग्यान उदारा ॥ ३१ ॥
पुन काराग्रिह को बड पौर। सो निकसे सोढी सिरमौर।
लोक हज़ारहुं सुनि सुनि आए। दूर दूर सभि बरजि हटाए ॥ ३२ ॥
हिंदू ब्रिंद तुरक समुदाए। खरे बज़ार बिखै बिसमाए।
निकटि कूप लघु, तिस थल गए। जल निकसायो मज्जन किए ॥ ३३ ॥
जपुजी पाठ करनि पुन लागे। बैठे, हुतो बिरछ तिस आगे।
कह्यो 'जबहि हम सीस निवाइं। तबि देखहु, तुम तेग़ चलाइ' ॥ ३४ ॥
इम कहि सतिगुर तरूवरू तरे। बैठि अडोल पाठ जप करे।
मग्घ्र पंचमी सुदी पछानहुं। सुरगुरवार* तबहि पहिचानहुं ॥ ३५ ॥
संमत सत्तरां सै बत्तीसा। भाणा वरतायो जगदीशा।
सीस दीयो पर सिरर न दीना। धरम सु राख्यो सरब प्रवीना ॥ ३६ ॥
ढर्यो दुपहिरा जबि इक घरी। जपजी पठति सु पूरी करी।
भोग पाइ जबि सीस निवायो। पुन ऊपर को जबहि उठायो ॥ ३७ ॥
सईयद तबि करि कै बल बाहू। तेग प्रहारि ताकि गर मांहू।
करी चलावनि गई न तहिं लौ। धर ते सिर उतर्यो गुर पहिलौं ॥ ३८ ॥
फोको वार झटक भुज परी। लगी न ग्रीवा महिं, उर धरी।
उड्यो सीस हुइ अंतर ध्याना। वही अंधेरी धूल महाना ॥ ३९ ॥
सभि के मुंदे बिलोचन ऐसे। कछू बिलोक्यो जाइ न जैसे।
हाइ हाइ सभि तिह छिन कीना। बड अपराध तुरकपति लीना ॥ ४० ॥

*बृहस्पतिवार

धरक उठी सभि की तबि छाती। लख्यो रिदे, भा बड उतपाती।
तिह सिख की झोरी* सिर आयहु। त्रसति होहि तिन भले छपायहु ॥ ४१
हटि किसहूं की दिशि नहिं देखा। निकस्यो पुरि ते शीघ्र विशेखा।
जितिक बेग बपु महिंबल जेता। गमन्यों मारग महिं करि तेता ॥ ४२ ॥
निस बासुर महिं कीनि प्याना। नहिं बिसराम कीनि किस थाना।
सिमरति गुरु ग़रीब निवाज। 'राखहु निज दासन की लाज' ॥ ४३ ॥
निकसि गयो पुरि ते सिख जबै। बही अंधेरी मिटिगी तबै।
धर पर धर सभि नरनि निहारा। नहीं सीस, लखि कै उरधारा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ द्वादश रासे 'श्री तेग बहादर प्रलोक गमन प्रसंग' बरननं नाम पंच शशटी अंशु ॥ ६५ ॥

---

*झोली-गोदी

अंशु ६६

श्री गुरु तेग बहादर जोती जोत सच्च खंड गमन प्रसंग

दोहरा

ब्रहमादिक मघवा अमर आइ गगन महिं छाइ।
हेरहिं अचरज को धरैं मिलति भए समुदाइ ॥ १ ॥

चौपई

सिर दे हिंदुनि धरम उबारहिं। तुरक राज की जरां उखारहिं।
वड उतसाहु करति सभि आए। 'जै गुरु जै गुरु' मुखहुं अलाए ॥ २ ॥
'धंन गुरु, तुम बिन अस काजू। अपर करहि को दिखय न आजू।
हिंदु धरम जग लियो बचाइ। सभि सुर गन की कीनि सहाइ ॥ ३ ॥
जे जग विखै न हिंदू रहिते। सुर हित हमन कौन निरवहिते[1]।
ब्याहि आदि तिस महिं जो करैं। सो अहार हमरे मुख परै ॥ ४ ॥
काज अनिक महिं हमन करंते। सो सुर गन को त्रिपत करंते।
यांते हिंदू गन अरु देव। राखन करे प्रभू गुर देव ॥ ५ ॥
इम आपस महिं कहिं सुर सारे। रुचिर बिमान ल्याइ तिस वारे।
मणि गन खचित सु मुकता लरी। झालर लरकति चहुं दिश खरी ॥ ६ ॥
महां प्रकाश गगन महिं होवा। शुद्ध आतमा किनहूं जोवा।
चढि बिवान महिं गुरु बिराजे। चहुं दिशि ह्वै करि देव समाजे[2] ॥ ७ ॥
करति प्रशंशा अनिक प्रकारा। 'श्री गुर तुमरे चरित अपारा।
नहिं को जानै भेव उदारे। गुन गन धरि हो वार न पारे ॥ ८ ॥
जबहि म्रिजादा जग बिगरै है। तबि तुमरे अवतार सु ह्वै हैं।
कुछ अचरज हुइ नहीं तुमारे। धरहु धरम की नित प्रतिपारे ॥ ९ ॥
जेकरि धरम बिनाशी होइ। हम समेत जग रहै न कोइ।
प्रथम करहु उतपति सभि केरी। पुन प्रतिपाला चहहु बडेरी ॥ १० ॥

1, कौन हवन करता 2. देवताओं का समाज

बे मिरजाद करहि तिह मारो। सदा होति सभि के रखवारो'।
सुरनि प्रसंसा कीनि जितेक। कहौं कहां लगि करौं बिवेक ॥ ११ ॥
निरत अपसरां करति अगारी। गावति होति कुलाहल भारी।
'जै जै' करति जाति संग सारे। 'हम गुर राखे' मुखहुं उचारे ॥ १२ ॥
सच्चखंड को चल्यो बिमान। सभि दिशि देखहि दया निधान।
म्रिद बाकन सों दे दे धीरा। करी बिनाशनि सुर गन पीरा ॥ १३ ॥
'रहे निचिंत तुरक जर गई। राज तेज दिनप्रति बिनसई।
गुरु गुबिंद पंथ उपजावैं। रण रचि सने सने बिनसावैं ॥ १४ ॥
नहीं नगारबंद को रहै[1]। अस बिनाश दुसहि[2] को लहैं'।
सादर सुर सभि दए हटाई। शकति न पहुंचनि की अगुवाई ॥ १५ ॥
सतिगुर सच्चिखंड को गए। थिर हुइ सुर जै जै बच किए।
अबि दिल्ली पुरि की जिम कथा। श्रोता सुनहुं बिती तहि जथा ॥ १६ ॥
जबि सतिगुर को उतर्यो सीस। औचक हौल्यो रिदै दिलीश[3]।
धूल कंकरी खींचत पौन। गई बेग ते थिर जिस भौन[4] ॥ १७ ॥
सो थल हाल्यो त्रास उपंना। धीर हुलास तुरत ही मंना।
मति बिसमति देखति चहुं कोद। ततछिन हन्यो बिनोद प्रमोद ॥ १८ ॥
कहां भयो-सोचति मति अंधा। मनहुं आनि जमदूतन बंधा।
उशटनि पर जिहबा बहु फेरै[5]। फेरि फेरि दर की दिशि हेरै ॥ १९ ॥
इतने महिं उमराव सु आए। सय्यद नांगी तेग उठाए।
संग मुलाने अचरज धारति। कितिक परसपर बात उचारति ॥ २० ॥
अविरंग को सलाम करि खरे। देखि सभिनि को बूझन करे।
'कहां करी अरु कहां निहारी। तहि किम भई बारता सारी ॥ २१ ॥
तबि उमरावनि प्रेरनि कर्यो। सईअद सरब ब्रितंत उचर्यो।
'हुकम आपको जबि ले गए। थिरे पिंजरे हेरति भए ॥ २२ ॥
हित समुझावनि कुछ बच कहे। पुन अजमत परखनि को चहे।
सुनि करि निकसि गुसल करि लीनि। सिर निवाइ सिजदा पुन कीनि ॥ २३ ॥
तबि निजबल ते तेग़ चलाई। नहिं ग्रीवा महिं लगबे पाई।
उतर्यो धर[6] ते पहिलां ही। मनहुं अगारी[7] लाग्यो नांही ॥ २४ ॥
कागद बंधि धार पर जैसे। देखि लेहु अबि लौ थिर तैसे।
कट्यो न रंचक तुट्यो न तागा। प्रथम समान तेग़ सों लागा ॥ २५ ॥

---

1. तुर्कों की शान में नगारा बजाने वाला कोई नहीं रहेगा 2. भयंकर नाश होगा 3. दिल्ली के शासक के मन में भय पैदा हुआ 4. जिस घर में औरंगज़ेब टिका हुआ था 5. होंटों पर जिह्वा फेरता है 6. धड़ 7. मानो पहले सिर लगा हुआ ही नहीं था

सभि सों जैसे प्रथम उबाचा। कट्यो न कागद कर्यो सु साचा।
लोक हज़ारहुं दूर कि नेरैं। सगरे खरे तिनहुं दिशि हेरैं॥ २६॥
अचरज भयो सीस नहिं पायो। पिख्यो न किनहुं किसू उठायो।
ब्रिंद सिपाही इत उत फिरैं। खोजि रहे नहिं दिखिबो करैं॥ २७॥
सभि को डर दे ऊच सुनायो। तऊ न किसते हाथनि आयो।
एक एक को बहुर बिलोका। सभि को गमन करनि ते रोका॥ २८॥
खोजे ग़नी गरीब सु जित्ते। तऊ सीस नहिं पायो कित्ते[1]।
कै ज़मीन मैं प्रविशयो जाई। कै असमान उड्यो सहिमाई॥ २९॥
जबि लौ धर पर लाग्यो रह्यो। तबि लौ तहां सकल ही लह्यो।
मैं जबि ही कर तेग उभारी। ऊपर ग्रीवा चह्यो प्रहारी॥ ३०॥
भयो लोप अविलोक्यो नांही। खरे हज़ारहुं लोकन मांही'।
मूरख शाहु विसूरति भारा। 'नहिं छल समुझयो नहिं न बिचारा॥ ३१॥
सिरर न दीनसि निज सिर दीना। जिन महुं करामात अति पीना[2]।
अबि धर पर राखहु चुकसाई। होइ न अस, को छपि ले जाई॥ ३२॥
पुरि महिं डिंडम[3] दीजहि फेर। संगति मैं सिख जो इन केर।
लेकरि जाइ करहि, ससकारा। जिम हिंदुनि की रीति उदारा॥ ३३॥
इम करि हुकम सभा महिं भाखा। 'लखे न हमु इम छल रचि राखा।
देकरि दोश मोहि सिर भारी। तन त्यागन महिं बिलम बिसारी॥ ३४॥
कहे न मोरे अज़मत लाई। बारि बारि बहुतिनि समुझाई।
मन बिसराम न हुइ अबि मेरा। उतपातनि ते हौल बडेरा॥ ३५॥
नर खुशामदी सुनति बखाने। 'तुम बहु कह्यो, नैक नहिं माने।
आगे कतल भए बहुतेरे। शर्हा न मानहिं चलहि कुफेरे[4]॥ ३६॥
पूरब बीत गई जो बात। क्या बिसार तिस, क्यों पछुतात ?।
अज़मत वंत भयो तौ कहां। मानी शर्हा न नीकी लहा॥ ३७॥
हिंदू तुरक शर्हा बिन घने। सरमद आदि हजारहुं हने।
इस की क्या चिंता चित करो। सीन बधावनि तुम अनुसरो'॥ ३८॥
लोकनि भने धीर तो धारी। तऊ गह्यो मन संसे भारी।
पुर महिं डिंडम दर दर फेरा। सुनहिं सिक्ख सगये तिस बेरा॥ ३९॥
त्रास तुरकपति को अति धारैं। 'हम सिख सेवक' नहीं उचारैं।
किनहुं न गुर की लोथ[5] उठाई। लखहि सही करि, दे मरवाई॥ ४०॥

---

1. कहीं पर भी सीस न मिला 2. बहुत भारी 3. डोंडी 4. उलटे चलने वाले
5. शव

घर घर दर दर दुरि दुरि[1] सारे। नर नारी सभि काढहिं गारे।
'हाहाकार' करहिं पुरि सारो। 'अपराधी पापी हतिआरो। ४१ ॥
जिन की पूजा सभि जग करै। सेवति सुख की इच्छा धरै।
सुत बित आदि कामना पैहैं। बांछहि नरक पर कढ लैहैं ॥ ४२ ॥
करामात के सिध अपारा। नहिंन दिखावनि को प्रन धारा।
रिदै न समुझ्यो आशै गूढ। अस प्रभु कतल कराए मूढ ॥ ४३ ॥
गुर सिख हम को जबिही जानहि। सहित कुटंब प्रान को हानहि'।
इम निंदा करि गारि निकारहिं। मिलि करि हाहाकार उचारहिं ॥ ४४ ॥
बिदत न होति, छपे सभि कहैं। दुशट हठी खल को मन लहैं[2]।
कारागि्रह के पौर अगारी। तहिं सतिगुर धर धरा मझारी ॥ ४५ ॥
सनध बद्ध तहि खरे सिपाही। हेरि हेरि नर त्रिय गनजाही।
हाहाकार उचारति कहैं। 'तुरक नाश भा थिर नहिं रहैं' ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ द्वादश रासे 'श्री गुरु तेग बहादर जोती जोत सच्च खंड गमन प्रसंग' बरननं नाम खशट सशटी अंशु ॥ ६६ ॥

---

1. छिप छिप कर 2. मन में मूर्ख को दुष्ट और हठी समझते हैं

अंशु ६७

श्री गुरु तेग बहादर शरीर ससकारन प्रसंग

दोहरा

हुतो लुबाणा सिक्ख तहिं ब्रिखभ ब्रिंद जिह पास ।
गिनती बिखै हज़ार दस निकटि रखै गन दास ॥ १ ॥

चौपई

गुर कारन को सुनि दुख पायो । दरस बिलोकन के हित आयो ।
तरे ब्रिच्छ के गुर धर पर्यो । देखि बिलोचन महिं जल भर्यो ॥ २ ॥
हम सिक्खयनि को धिक बहु भारी । इम सतिगुर की दशा निहारी ।
प्रथम आपने प्रान न दए । तुरक त्रास ते दुरि दुरि गए ॥ ३ ॥
सुनि डिंडम को किनहुं न मानी । हम नहिं सिक्खय, न दे मत हानी[1] ।
ससकारन को करौ उपाऊ । जथा न जानि सकहिं नर काऊ ॥ ४ ॥
बिदत करौं, होइ न ससकारा । गहहि कि देहिं मोहि को मारा ।
गुरु सहाइक होहिं जि मेरे । छपि करि ले गमनहुं किस बेरे ॥ ५ ॥
कर्यो मनोरथ घर हटि गयो । अनिक उपाइ सु चितवत भयो ।
ब्रिखभ ब्रिंद इकठे करिवाए । कितिक सकट महिं तूल[2] भराए ॥ ६ ॥
करे इकत्र आपने नर गन । ठान्यो जतन कीनि निरनै मन ।
सकट भरे प्रथमै पहुंचाए । कुछ मिस करि तिस थान टिकाए ॥ ७ ॥
हांक दयो ब्रिखभनि को लारा[3] । जमना दिशि को प्रथम सिधारा ।
निगामोद[4] जहिं घाट कहावै । तिस दिशि ब्रिखभनि ब्रिंद चलावै ॥ ८ ॥
तरनि तनूजा के तट होइ । तित के पौर प्रवेश्यो सोइ ।
संग संबूह लुबाणा करे । पुशट लशटका कंधे धरे ॥ ९ ॥
बैल हांकणी बोलति बोली । सांभति इत उत ते करि टोली ।
जबि ते साहिब कीनसि भांणा । बड़े बेग ते बायु पयांणा[5] ॥ १० ॥

---

1. कहीं मार न डाले 2. रूई 3. पंक्ति 4. निगंमबोध—यमुना के किनारे एक घाट 5. तेज़ हवा चली

उडहि गरद फैली बहु रैन[1]। नर नारनि के पूरहि नैन।
मसलहिं हाथनि साथ घनेरे। बसत्रनि संग अछादति हेरे॥ ११॥
आतप मंद भई सभि ठौरा। छाद्‌यो भानु तेज भा थोरा।
मानव किंतिक बरे घर मांही। दिन मलीन पिखि निकसे नांही॥ १२॥
ब्रिद ब्रिखभ जबि बरे बज़ार। पसरी धूर भयो अंधकार।
इकतौ बायु कुफेरी बहै। दुतीए ब्रिखभ उडाई अहै॥ १३॥
सूधे चलि बजार को आए। देखे नरनि बैल समुदाए।
इत उत टरे काहिली पाइ। आप आप को गए बचाइ॥ १४॥
बोलति उचे बैल हटावति। काराग्रिह बज़ार को जावति।
चौकीदार सिपाही खरे। गुर की लोथ बिलोकनि करे॥ १५॥
कहे शाहु के नहिं ससकारी। छपि के लेहि न, से रखवारी।
थोरो दिवस रह्यो तबि आइ। भई भीर ब्रिखभन समुदाइ॥ १६॥
इत उत करति ब्रिंद बन जारे। पहुंचे गुरु धर जाइ निहारे।
मिल बैलन तहिं लौ चलि गए। हेतु उठावनि के हठ किए॥ १७॥
हेरि भीर ब्रिखभन की बडी। राखे अपनि थान कौ छडी[2]।
तरजति बरजति हैं बहुतेरे। तऊ कुलाहल होति बडेरे॥ १८॥
सकटनि के गडवान पुकारति। गन बनजारे ऊच उचारति।
गरद उडनि ते छाहे नैन। गए निकटि 'हटि हटि' कहि बैन॥ १९॥
दाव तकाइ सकल दिशि देखा। गुर माइआ बिरमाइ अशेखा।
धर दिशि द्रिशटि न किस की हेरी। नर पँचहु उचाइ तिसि वेरी॥ २०॥
ततछिन तूल सकट ढिग ल्याए। भली प्रकार बीच पहुंचाए।
करति शीघ्रता बुधि उपजावें। इत उत हेरति सरब दुरावैं॥ २१॥
घनी तूल ते छादन कीने। जिस प्रकार को सकहि न चीने।
मन ही मन मनाइ उर धरैं। 'अपनो काज आप गुर करें'॥ २२॥
करि बंदन को हटि करि गए। बैलन बीच इतहिं उत भए।
लारा गमन्यों जाति अगारी। हांकति जाति बोलते भारी॥ २३॥
बायू ब्रिखभन[3] धूल उडाइ। सभि की द्रिशटि बिलोचन छाई।
पुरि के पौर निकसि जबि गए। सकट त्यार चलिबे को भए॥ २४॥
आइ सिपाही देखनि लागे। सतिगुरु को घर लख्यो न आगे।
सभिनि बिखै माच्यो तबि रौरा। इत उत खोजति भे सभि ठौरा॥ २५॥

---

1. अंधेरा 2. अपनी जगह को छोड़ दिया 3. आंधी तथा बैलों ने

मन महिं मान्यों अधिक अचंभा। इह किनहुं बडि दंभ अरंभा।
केतिक दौरे जाइ निहारे। बैलन सहित जितिक बनजारे ॥ २६ ॥
एक एक कौ तरजति[1] धरि धरि। छोरति हेरति निरनैं करि करि।
तिम ही ब्रिखभ छूछ सभि हेरे। अपर नरनि खोजति फिरि फेरे ॥ २७ ॥
इम देखति सकटनि ढिग आए। गिनहिं एक कमती हुइ जाए।
गडवानन को तरजति कहैं। 'तुम महिं एक सकट नहिं लहैं ॥ २८ ॥
कयों निकासनि, कहां दुरायो। तिस महिं गुर को धर तुम बायो।
दिहु बताइ नतु कैद करैंगे। मारि मारि तुम प्राण हरैंगे' ॥ २९ ॥
गाडीवानन शरधा धारी। गिनहिं न जाइं इनहुं मति मारी।
निरभै हुइ करि बाक बखानैं। 'बिना दोश किस प्राननि हानै ? ॥ ३० ॥
हजरत के घर न्याउं कि नांही। कैसे करहि कैद के मांही।
निकटि थिरे, हम गए न क्यों हूं। देखि खोज लिहु भावहि ज्योंहूं' ॥ ३१ ॥
गिनहिं सकट सो गिने न जांही। पिखि करि लख्यो साच इह प्राहीं।
पुरि महिं गरी गरी फिरि हेरी। पाइ न खोजि फिरे तिसबेरी ॥ ३२ ॥
गडवावन सभि संग बखाने। जोरि ब्रिखभ लै सकट पयाने।
सने सने चलि कै तहिं आए। जहिं बनजारे मिलि समुदाए ॥ ३३ ॥
'भए सहाइक सतिगुर आपे। किसी दुशट को नांहिन जापे[2]।
तुम समीप लगि हम लै आए। छपि करि देहु दाग किस थाएं ॥ ३४ ॥
बिलम करन की बाति न आछे। तुरक अचंभै खोजति पाछे'।
बनजारे ततबीर[3] बिचारी। 'इम कीजहि जिम ह्वै न चिनारी' ॥ ३५ ॥
छपरनि के घरि कितिक बनाए। तिन महिं बसत हुते समुदाए।
बसतु सकेल निकारी सारी। चिखा[4] तिनहुं के बीच उसारी ॥ ३६ ॥
नर गन मिले काज ततकाला। करति भए धरि भाउ बिसाला।
सभि छपरनि को अगनि लगाई। चिखा बीच तहिं अधिक जलाई ॥ ३७ ॥
काशट बहुत घ्रित गन डारा। लगी हुतासन लाट उदारा।
अरध जली तबि रौर मचायो। 'किनहुं आनि इत अगनि लगायो' ॥ ३८ ॥
इत उत फिरति बुझावति मनो। दूत कि नेरे सभि ने सुनो।
दौर दौरि केतिक चलि आए। बुझहि नहीं, घर अधिक जलाए ॥ ३९ ॥
ईंधन को संचै बहु कर्यो। कहां निकासहिं बीच सु जर्यो।
इम फरेब सभिहिनि महिं करकै। ससकारे सतिगुर सुधरिकै ॥ ४० ॥

---

1. पकड़ पकड़ कर ताड़ना करते हैं 2. पता नहीं चला 3. विचार किया
4. चिता

भई प्रभाति पुशप चुनि सीऊ। तांब्र गागरैं भरि करि दोऊ।
नीवों खन्यो[1] सुखात[2] बिसाला। चिखा थान गाडी ततकाला ॥ ४१ ॥
कोइ न जानि सक्यो मति हीने। इम सतिगुर ससकारनि कीने।
घनो तिहावल तबि करिवायो। सिख संगति सभि मेल बनायो ॥ ४२ ॥
शबद रबाबी मिलि तहिं गायो। करि अरदास सभिनि बरतायो।
जोड़मेल इम करि सभि रीति। शरधा धरति अधिक मन प्रीत ॥ ४३ ॥
चिख सथान पर छान छवाई। दीप जलावति रहे सदाई।
हरि मंदिर जिम पुनहिं उसार्यो। सो प्रसंग अबि नहीं उचार्यो ॥ ४४ ॥
कथा बिखै अवहर जहिं पाऊं। सो सभि नीकी रीति सुनाऊं।
गुर सिक्खन को अधिक रिझाऊं। जिस ते गुर मिलिबे बर पाऊं ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे 'श्री गुरु तेग बहादर शरीर ससकारन प्रसंग' बरननं नाम सपत शशटी अंशु ॥ ६७ ॥

---

1. गढ़ा खोदा 2. गड्ढा

अंशु ६८

श्री तेग बहादर प्रसंग

दोहरा

ठौर ठौर रौरा पर्यो, 'प्रथम सीस नहिं पाइ।
लोप भयो गुर घर अबहि, देखि रहे थाइं ॥ १ ॥

चौपई

मूढ नुरंगे ढिग सुधि गइ। 'प्रथम सीस की जो बिधि भई।
तिम ही धर धरनी महिं बर्यो[1]। कै आकाश महिं ऊरध चर्यो ॥ २ ॥
किस हूं ते कुछ जाइ न जानी। भयो लोप देखति अगवानी'।
सुनि सुनि अचरज को तबि शाहू। रह्यो बिसूरत बहु मन माहूं ॥ ३ ॥
करामात कामल बड अहे। तऊ न रंच दिखावनि चहे।
खरे सिपाही गन रखवारे। धर सिर दुरे[2] न किनहुं निहारे ॥ ४ ॥
भनहिं मुलाने 'जे दुर गए। तुमहुं काज अपने करि लए।
शर्हा न मानी प्रान बिनासे। अबि नर मानहिं जथा प्रकाशे ॥ ५ ॥
सभि के उर उर होहि बिसाला। हुकम अदूली[3] ते अस हाला[4]।
समुझायहु बहु बारि घनेरे। नहिं मान्यो हठ ठानि बडेरे ॥ ६ ॥
सुनि करि भनहि मूढ चवगत्ता। हिंदु धरम की राखी सत्ता।
मोर मनोरथ भयो न सोई। कलमा पठहि तुरक जग होई' ॥ ७ ॥
जमादार को तबहि बुलायहु। तरजि कह्यो 'तैं क्या करि आयहु।
सिर धर की न करी तकराई। सभि ते को लै गयो चुराई ॥ ८ ॥
हाथ जोरि तिन गाथ बुझाई। 'सीस समैं नर थे समुदाई।
सईयद अरु उमराव मुलाने। खरे रहे कुछ गयो न जाने ॥ ९ ॥

1. धरती में घुस गया है 2. धड़ और सिर दोनों छिप गये 3. आज्ञा का उल्लंघन
4. ऐसी दशा होती है

महां फतूर धूर जुति बायू। बही बेग ते पिखि न सकायू।
पुन बनजारन के गन बैल। चले जाति पावति बड ऐल[1] ॥ १० ॥
खरे सुचेत सिपाही खरे। रखवारी धर के तरु तरे[2]।
छप्यो तबहि नहिं कीनि बिलोकनि। सभि दिशि ते नर कीने रोकनि ॥ ११ ॥
रहे खोज क्योंहूं नहिं पायो। अजमत सों कुछ बस न बसायो'।
सुनि सुनि हौल होति उर शाहू। तऊ न कहि सकि है किस पाहू ॥ १२ ॥
रात प्रबिरती चित अधीना। रूचि करि खाना खान न कीना।
जबि प्रयंक पर पहुंच्यो पापी। हित सुपतनि के निंद्रा व्यापी ॥ १३ ॥
मतीदास जो गुर दीवान। प्रथम शहीद भयो तिस थान।
अपराधी के ढिग चलि गयो। अधिक क्रोध हिरदे उपज्यो ॥ १४ ॥
तऊ गुरु ते धारहिं त्रास। नहिं पापी को कीनि बिनाश।
पाटी[3] तबि प्रयंक की गही। डार्यो उलटि गिर्यो तर तहीं ॥ १५ ॥
भड़भड़ाइ ठांढो हुई गयो। शबद श्रवन महिं इम सुनि लयो।
दिल्ली पुर मैं जे सुपतै हैं। प्रान बिनास आपने पै हैं ॥ १६ ॥
वहिर नगर ते निकसि सिधावों। परालबध लों जीवन पावौं।
बहुर नरक महिं पाई सजाई। गुरु अवग्या अधिक कमाई ॥ १७ ॥
सुनति त्रास धरि दास बुलाए। खरे समीप करे समुदाए।
सूधा करवायो परयंक। पौढ्यो पुन भैभीत सशंक ॥ १८ ॥
नींद न पाइ, न जुटे बिलोचन[4]। नाना बिधि सोचति चित सोचन।
हठ ते कहति न दूजे पास। होहि न हजो हिये इह त्रास ॥ १९ ॥
जागति सगरी राति बिताई। खरे पाहरु प्राति सु आई।
आदि निवाज अनिक उपचार। करति भयो मज्जन को धारि ॥ २० ॥
बिंद कलाम पढ़ी बहु बारी। आयहु उठि पुन सभा मझारी।
बीत्यो जथा दुशट के संग। कहौं बहुर मैं अखिल प्रसंग ॥ २१ ॥
दिल्ली महिं नहिं सुपतनि पायो। रह्यो वहिरी ही उर डरपायो।
इहठां द्वादश पूरनि राशि। जिम रबि बरतहि बारहिं मास ॥ २२ ॥
तिम सतिगुर को महिद प्रकाश। बरन्यों बर विच द्वादश रासि।
एक रासि जिम सूरज चले। बहुर दूसरी गमनति मिले ॥ २३ ॥

1. शोर 2. वृक्ष के नीचे 3. बाही 4. आंखें बंद नहीं होतीं, नींद नहीं आती

तिम गुरुता रथ पर असवार। उदे जगत, बिनस्यो अंधकार।
गिरा समूह रिशम जिन केरी। सिक्खी आतप[1] दिपहि बडेरी ॥ २४ ॥
ब्रह्म ग्यान जिन तेज बिलंद। भगति सु गति के बसी मुकंद।
हिंदू तुरकनि पंथ अनेक। कहैं कहां लगि उडनि बिबेक ॥ २५ ॥
गन को चमतकार छपि गयो। गुर प्रताप सभि ऊपर भयो।
प्रेमी संत महंत अनंत। इह पंकज जित कित बिकसंति ॥ २६ ॥
तोम तेज तुरकेश तमीपति[2]। फीको पर्यो, प्रकाश भयो हति।
शर्हा कुचलणी निशा बिनाशी[3]। हिंदू कोक[4] पाइ सुखरासी ॥ २७ ॥
सहित मुलाने नौरंग चोर। छीनति धरम दरब करि जोर।
सो लज्जति दबक्यो दुख भर्यो। दिल्ली पुरि ते काढनि कर्यो ॥ २८ ॥
पीर चकोर भए अनमने। कुमुद तुरक मुरझावति घने।
बांग पुकारू जंबुक मोटे[5]। दुरनि लगे जित कित चित खोटे ॥ २९ ॥
काज़ी पेचक भे मति अंधे। तशनि हुइ बैठे जनु बंधे।
तमचर[6] जाति अनिक जे अहैं। से उमराव आदि दुख लहैं ॥ ३० ॥
इम सूरज श्री सतिगुर उदे। तम अग्यान समीप न कदे।
करामात जुति अनिक अनंदे। नाना बरन खिरे अरबिंदे ॥ ३१ ॥
गन जग्यासी भौर लुभाए। महिद प्रेम मकरंदहि पाए।
सिक्खी बहु सुगंधता भई। सगरे जगत पसर करि गई ॥ ३२ ॥
सत्तिनाम सिमरन शुभ सार। जहिं कहिं भयो प्रकाश उदार।
जिसको पाइ सुखी जग भयो। सभि महिं सुजसु गुरनि को थियो ॥ ३३ ॥
कर्यो ग्रिंथ गुर कीरति केरो। पठन श्रवन फल पाइ बडेरो।
श्री सतिगुरु के अनिक बिलासा। गुपत बिदत सभि होंहि प्रकाशा ॥ ३४ ॥
अजर जरन आदिक गुन घने। सभि को जानहिं, बहु बिधि भने।
सुनहि असुत, सुत को चित बांछे। प्रापत होइ सहित गुन आछे ॥ ३५ ॥
सुनहि दारिदी धन को पावै। सतिगुर महिं शरधा बिरधावै।
जुग लोकनि कल्याण उपावै। सिक्खी की बिधि उर उपजावै ॥ ३६ ॥
कलमल बिनसहिं नाम सुध्यावन। सने सने ह्वै है मन पावन।
भगति बिराग रिदे उपजंति। सति संगति मिल ह्वै है संत ॥ ३७ ॥
मो महिं शकति न हुती बिसाला। बधति लालसा रही सु चाला।
अपनीं कथा आप बनिवाई। दास जानि मुझ दई बडाई ॥ ३८ ॥

---

1. धूप 2. औरंगज़ेब का तेज चाँद के समान है 3. शरा रूपी खोटी रात बीत गई 4. हिंदू रूपी चकवा 5. मौलाना मोटे गीदड़ 6. चमगादड़

सुरसरि सम गुर कीरति पावन। जिसके मिले पाप गन जावनि।
निंदक मूरख मतसर धारी। राशभ, महिख, कोल समभारी[1] ॥ ३९ ॥
खोरु[2] पाइ कुबच को भाखैं। दूखति करनि गांदली काखैं।
सो झख मारति रहैं कुपत्ते[3]। बिगरहि नहिं कबहूं रस अत्ते[4] ॥ ४० ॥
सारद चंद बदन बर सारद[5]। बंदौं पद अरबिंदनि सारद[6]।
पारब्रह्म सतिगुर दस ध्याइ[7]। बंदौं बारि बारि सि न्याइ ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे द्वादश रासे कवि संतोख सिंह विरचताया भाखाया नवम गुरु 'श्री तेग बहादर प्रसंग' बरननं नाम अशट शशटी अंशु ॥ ६८ ॥

इति द्वादश राशि समापतं मसत शुभ मसत ॥

रासि बारहवीं समाप्त

1. गधों, भैंसों तथा सुअरों की भांति भारी 2. शोर 3. बेशरम 4. अत्यंत रस वाली 5. शरद ऋतु के चांद की भांति श्रेष्ठ तथा उज्ज्वल मुख 6. शारदा-सरस्वती 7. दस गुरुओं का ध्यान धर कर

संज्ञा-कोश

अंगद—(१) दूसरे सिक्ख गुरू। १०-२०

(२) एक प्रकार का आभूषण जो बाहुओं पर बांधा जाता है। ११-५८

अंबका—देवी। ११-५०

अंबरीश—अम्बरीष, विष्णु, अयोध्या का एक भक्त राजा। दुर्वासा ऋषि से इसकी रक्षा करने के लिए विष्णु ने दुर्वासा के पीछे अपना सुदर्शन चक्र छोड़ा था। ११-४६

अरजन—(१) पंचम सिक्ख गुरू १०-१

(२) तीसरे पांडव। ११-६०

अवरंग—मुग़ल शासक औरंगजेब। १०-१९

अमरदास—तीसरे सिक्ख गुरु। १०-२०

अनीराइ—छठे सिक्ख गुरु हरिगोबिंद जी का पुत्र। ११-१८

अटलराइ—छठे सिक्ख गुरु जी का चौथा पुत्र। ११-१८

अलख—ईश्वर का एक नाम। ११-५३

अकबर—प्रसिद्ध मुगल शासक। १२-१

अम्रत सरीर—अमृतसर नगर के निवासी। ११-२२

अलीशेर—एक गांव। ११-३६

अभिखकनि—अभिषेक, विधि के अनुसार मंत्रों द्वारा जल छिड़क कर अधिकार प्रदान करना। ११-५९

अघासुर—(१) एक दैत्य।

(२) कंस का सेनापति जिसे कृष्ण ने मारा था। ११-६०

अक्रूर—कृष्ण के चाचा जो कि एक भक्त थे। ११-६०

अशट जोगनी—दुर्गा की आठ सहचरी। १२-१३

अहीशा—शेष नाग। १२-१९

अदिती—अदिति, कश्यपऋषि की पत्नी जिससे सूर्य, बावन आदि तैंतीस उत्पन्न हुए थे। १२-२०

अफगन शेर—शेर अफगन, कशमीर का मुग़ल शासक। १२-२७

अमरेशुर थान—कशमीर का प्रसिद्ध तीर्थ अमरनाथ। १२-२९

अहदी—कर्मचारी, संदेशवाहक। १२-२९

अपसरां—अपसराएं, परियां। १२-६६

अयुद्धया—अयोध्या, सूर्यवंशी राजाओ की राजधानी, जहां पर रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था। १०-२२

आगम निगम—शास्त्र। ११-५०

आदि ग्रिथ—गुरू ग्रंथ जिसका संपादन पंचम गुरु जी ने किया था। ११-१४

आमल—शासक। १२-२१

आलमगीर—औरंगजेब का एक नाम। ११-३१

आलमगंज—पटना नगर की एक बस्ती। ११-५७

आसावार—गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वाणी जिसका कीर्तन प्रतिदिन सुबह को गुरुद्वारों में होता है। ११-२७

इंद्र—एक प्राचीन वैदिक देवता जो अंतरिक्ष में रहता है। यह देवताओं का राजा माना जाता है। १०-२५ १२-६३

उतफुल नयना—प्रफुल्लित नयनों वाली देवी। ११-५०

उदालक—लेसुए का पेड़। ११-५८

उछा—एक सिक्ख। १०-२

उनीसर—एक राजा। १०-२५

उमराव—प्रतिष्ठित लोग, सरदार, राजा के निकटवर्ती। १०-१४

ऋचीक—एक ऋषि। १०-२६

एमनाबाद—पाकिस्तान के गुजरांवाला जिला का एक नगर, गुरु नानक देव जी ने वहां के शासक मलिक भागो के भोजन में से रक्त निकाल कर और लालो खाती की सूखी रोटी में से दूध निचोड़ कर यह सिद्ध किया था कि परिश्रम की कमाई दूध के समान और गरीबों के शोषण से प्राप्त धन से बने छत्तीस प्रकार भोजन रक्त के समान होते हैं। ११-३५

औध—अयोध्या नगर। १२-४६

कपल—कपिल मुनि जो सांख्य-दर्शन के प्रवर्तक थे। १०-२४

कमलदास—कमलीआ नामक एक सिक्ख। १२-२८

कमलाकंत—विष्णु, ईश्वर। ११-१४

कपि (पार लंघाइव)—वानर सेना राम चन्द्र जी ने सागर से पार किया था, जब लंका पर आक्रमण किया था। ११-१७

कलमा—मुसलमान धर्म का मूलमंत्र। १२-२७

कलपतरू—कल्पतरू, स्वर्ग का वह वृक्ष जो मुंहमांगी वस्तुएं प्रदान करता है। १२-८

कवच—एक मंत्र जिसका पाठ करने वाले अपने आपको शत्रु से सुरक्षित समझते हैं। १२-१

कलगी—वह बहुमूल्य पर जो राजा लोग अपनी पगड़ी अथवा ताज में लगाते हैं। ११-२७

कर्रा—एक गाँव। १३-३३

करतापुरख—ईश्वर का एक नाम। ११-७

कलियुग—चार युगों में चौथा युग, वर्तमान। ११-४७

कहकह दीवार—मुसलमानी विश्वास के अनुसार काफ नामक पर्वत पर एक दीवार जिसके पार देखने वाला व्यक्ति केवल हंसता ही रहता है और कुछ बता भी नहीं सकता। १०-५७

काला करमचंद—एक किसान का नाम। १०-७

कालू—गुरू नानक देव जी के पिता। १२-१६

कांशीपुरी—वाराणसी। ११-५४

कातनी—रूई की पूनियां रखने की पिटारी। १२-१९

काबल—काबुल, अफगानिस्तान की राजधानी। १०-२८

काज़ी—मुसलमान धर्म के नियमानुसार न्याय करने वाला, न्यायाधीश। १२-४८

क्रमनाशा—काशी और विहार प्रांत के बीच की एक नदी। ११-५५

कामरू—आसाम प्रांत का ज़िला, कामरूप। १२-१

कामक्ख्या—कामाख्या नामक देवी का मन्दिर जो गोहाटी नगर के निकट स्थित है, जहां पर नग्न देवी की पूजा होती है। १२-१

क्रिशन कुइर—आठवें सिक्ख गुरु हरिकृष्ण जी की माता। १०-५५

क्रिपाल—गुरु गोबिन्द सिंह जी के मामा। ११-५९

कीरतिपुर—हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर जहां पर दशम गुरु जी ने काफी समय तक निवास किया था। १०-१

कुरान—मुसलमानों का धर्म ग्रंथ। १२-१४

कुहड़ाम—'घुड़ाम' नामक गाँव जो पटियाला राज्य में स्थित है। १२-१४

कुंभकरण—रावण का एक भाई। १०-२४

कुरुक्षेत्र—हरियाणा में स्थित वह स्थान जहां पर महाभारत का युद्ध हुआ था। ११-४३

कैरवनि—कौरव, कुरु सन्तान। ११-१७

कैल—एक गाँव। ११-३५

कैथलपुरि—करनाल ज़िला का एक नगर, कवि संतोख सिंह यहीं के निवासी थे। ११-४३

केसी—केशी नामक दैत्य जिसे कृष्ण जी ने मारा था। ११-६

कौड़े राहक—कौड़े जाति के किसान। १०-१

कौसक—कौशिक, विश्वामित्र। १०-२४

क्रिपाल—गुरु गोबिंद सिंह जी के मामा। ११-२३

खंजर—छोटी तलवार, गुरु तेग-बहादुर जी ने जहां पर खंजर गाड़ा था वहां पर बसे गाँव का नाम। १२-११

खटकड़—एक गाँव। १३-३५

खरक—एक गाँव। १३-३४

खशटी—षष्टी, चन्द्रमास के पक्ष की छठी तिथि। बच्चे के जन्म के छटे दिन बाद किया जाने वाला एक यज्ञ। १२-१३

खक्खे--एक मुसलमान जाति। १२-२७

खीवा—एक गाँव। ११-३६

खूंडी—छड़ी। ११-३७

ख्याले—एक गाँव। ११-३८

गंधर्व - गाने का काम करने वाले देवता जो स्वर्ग में रहते हैं। १०-५३

गंदाधूम - तम्बाकू। गुरु जी के समय भारत में तम्बाकू पीने का रिवाज प्रचलित हो चुका था। ११-४४

गंडका—एक नदी। ११-६०

गया—बिहार का एक पुण्य स्थान। ११-५४

गड़ीआ—एक सिक्ख। ११-२

गागा - एक गाँव। ११-४१

गालव—एक ऋषि। १०-२५

गिरथान—वह पहाड़ी स्थान जिसे सब नैना देवी कहते हैं। ११ २८

गिरपति कहलूरी -कहलूर रियासत का पहाड़ी राजा। ११-२७

गिरजा—नैना देवी जो हिमाचल प्रदेश में है। १२-६०

गिलोरा—एक मसंद। १२-३३

गीता—श्रीमद्भगवदगीता हिन्दुओं का धार्मिक ग्रंथ। १०-३७

गाँधी—विश्वामित्र के पिता का नाम जो कि एक राजा था। १०-२६

ग्रंथ साहिब—सिक्खों का पूज्य ग्रंथ जिसे आदि ग्रंथ भी कहते हैं। १०-२७

गुरबखश—एक मसंद जिसे आठवें गुरु ने अपने देहांत के समय 'बाबा बकाले' का शब्द कह कर नवें गुरु का पता बताया था। १०-४२

गुजरी—गुरु तेग बहादुर जी की पत्नी और गुरु गोबिंद सिंह जी की माता। ११-२३

गुरदास—एक सिक्ख। १०-२

गुरदित्ता—(१) झंडा का पुत्र, एक सिक्ख। १०-२७

(२) सातवें गुरु जी के पिता। १०-५५

गुग्गा—एक पीर का नाम जिसने अपने वश में साँप कर रखे थे। ११-३७

गुरना—एक गाँव। ११-४१

गुल गुल्ली आन—एक कुल। ११-४१

गुआहाट पुरि—गोहाटी नगर जो आसाम प्रान्त की राजधानी है। १२-१

गुलाब राइ—गुरु तेग बहादुर जी के भाई सूरजमल जी के पोते का नाम। १२-५६

गैंडा - भिक्खी नामक गाँव के चौधरी देस राज का पुत्र। ११-३९

गोबिंदपुरा—एक गाँव ११-४१

गोंदा - एक सिक्ख ११-३४

गुरु गोबंद सिंह—दशम सिक्ख गुरु। १०-१

गोइंदवाल—अमृतसर ज़िला का एक नगर जिसे तीसरे गुरु जी ने बसाया था। १०-२

ग्वालियर—मध्य प्रदेश की राजधानी १२-६५

ग्यासुर—गय नामक असुर का तीर्थ, गया। ११-५७

घुरबार—घोड़ों की रखवाली करने वाला, साईस ११-४०

घोघा—एक मसंद १२-५७

चंडूर—एक मल्ल का नाम ११-६०

चंडका—एक देवी का नाम १२-१

चंद्राइण—एक व्रत १०-२६

चंदोवा—चंदवा, कपड़े फूलों आदि का छोटा मंडप १०-३७

चकवानि—चकवा नामक पक्षी जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि यह रात को अपने जोड़े से अलग हो जाता है। ११-३८

चकोरे—एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चन्द्रमा प्रेमी और अंगार खाने वाला माना जाता है। १२-४

चवगता—मुगल जाति का दूसरा नाम। १०-१९

चाहल—एक जाति ११-३७

चिहका—एक गाँव १२-३३

चपाक—गन्ने के छिलके १२-४६

छंतनि—गुरु रामदास जी द्वारा रचित वाणी जिसका कीर्तन 'आसा दी वार' नामक वाणी के साथ सवेर के समय गुरुद्वारों में किया जाता है। ११-५६

छूहनी—अक्षौहिणी, वह सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े २१८७० रथ तथा २१८७० हाथी होते हैं। ११-५९

जंगल देश—पंजाब का मालवा प्रांत जिसमें लुधियाना फिरोजपुर आदि ज़िले शामिल है। ११-३३

जमना—यमुना नदी १०-९

जथेदार—सेना पति १०-१३

जंड—एक जंगली वृक्ष, सांगर ११-३८

जपुजी—गुरु नानक देव जी द्वारा रचित एक वाणी। गुरु ग्रंथ साहिब का आरम्भ इससे होता है। ११-८

जच्छ—(१) यज्ञ, देवयोनी विशेष

(२) एक तीर्थ।

(३) पाण्डवों द्वारा स्थापित।

यक्ष - राम यक्ष, रत्न यक्ष, तरखू यक्ष और 'बाहर यक्ष'। बाहर यक्ष' नामक गाँव अब तक है। ११-४३

जमधरा—एक घातक शस्त्र ११-५०
१२-१०

जरा राखशी—जरा नामक राक्षसी। ११-५१

जनम कुंडली—फलित ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिस मे किसी के जन्म के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है। १२-१३

जसुधा—यशोदा, नन्द की पत्नी, श्री कृष्ण जी की माता। १२-२२

जम—यमराज, मृत्यु का देवता। १२—३०

जगत सेठ—एक धनी सिक्ख का नाम। १२-४१

जहांगीर—मुगल शासक, अकबर का बेटा। १०-३२

जस्सा—दसवें गुरु जी का एक सिक्ख जिस ने भाई भगतू की विधवा से शादी करने की बात कही थी जिस के कारण भाई भगतू के पुत्र गौरसाल ने जस्सा को मरवा दिया था। १०-१०

जींद—हरियाणा प्रांत का एक ज़िला, एक नगर। १२-३५

जीवंधा—जाटों की एक जाति। ११-४३

जुधिशटर राऊ—पांच पांडवों में सब से बड़ा, जिसे सत्यवादी और धर्म-परायण कहते थे। ११-३

जुजानी भूप—ययाति-राजा नहुष के एक पुत्र का नाम जिस का विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ था। १०-२५

जुगराज—उस व्यक्ति का नाम जिस ने जोगा नामक गाँव बसाया था। ११-३६

जुन्नवी—टर्की का एक प्रसिद्ध नगर। १२-६५

जेठा सुत—बड़ा पुत्र, पृथी चंद। १०-१६

जेठा—एक मसंद का नाम। १२-५६

जैत—कौड़ा जाति का एक व्यक्ति १०-६

जोगा—एक गाँव का नाम। ११-३५

जोधपुर—राजस्थान की एक रियासत। १२-१

जौनपुरा—उतर प्रदेश का एक नगर जो गोमती नदी के किनारे स्थित है। १२-४४

जै सिंह सवाई—जैपुर का शासक। १०-३२

झंडा—एक सिक्ख। १०-२७

झब्बे—तारों आदि का फुंदा जो कपड़ों की शोभा बढ़ाने के लिए लगाया जाता है। १०-४४

ठसके—यह गाँव, करनाल जिला की तहसील थानेसर में स्थित है। १२-१४

ढट्टा—पाकिस्तान के सिंध प्रांत का एक नगर। १०-१६

ढाका—बंगला देश की राजधानी। १२-४

ढिल्लवीं—एक गाँव । ११-३५

तरनि तनूजा—तरणि तनूजा, सूरज की पुत्री; यमुना नदी। १०-५५

तिलोखरी—एक गाँव का नाम, जो गुरु हरिकृष्ण जी की समाधि 'गुरुद्वारा बाला साहब' से लग भग आधे मील की दूरी पर दिल्ली प्रशासन में स्थित है। १०-५४

तिलोका—एक सिक्ख। ११-३४

तुरक—मुसलमान, मुग़ल शासक औरंगज़ेब ११-९

तिहावल—घी, खांड तथा आटे बना भोजन, कड़ाह प्रसाद ११-२२

तीनहुं देव—ब्रह्मा, विष्णु, शिव ११-३३

गुरु तेग बहादुर—नवें सिख गुरु जिन्हें औरंगज़ेब ने दिल्ली के चाँदनी चौक में शहीद करवा दिया था। इनकी स्मृति में 'सीसगंज' गुरुद्वारा कायम है। १०—१

तेहन—एक खत्री जाति, दूसरे सिक्ख गुरु इसी जाति में से थे। १०-२७

त्रिपुरारि—शिव १२-२८

त्रिणावरत—तृणावर्त नामक दैत्य जो कृष्ण के हाथों मारा गया था। ११-६०

त्रिशंकू—एक प्राचीन राजा। ११-५५

त्रिसंधया—सवेर, दोपहर, शाम, तीन संध्या। ११-४८

थनेसर—थानेश्वर (थानीसर) हरियाणा में स्थित एक हिन्दू तीर्थ। ११-५४

थान अजीत—रक्षा की दृष्टि से सुरक्षित स्थान समझकर आनन्दपुर नगर बसाना शुरु किया। ११-२८

दरबार—राज सभा, धर्म स्थान ११-३१

दस्वंध—आय का दसवां भाग जो सिख दान में देते है। ११-४

दमदमा—वह स्थान जहां पर गुरु जी ने दम लिया अथवा विश्राम किया था। यहां पर आपकी स्मृति में गुरुद्वारा बना हुआ हैं, तलवंडी साबो। ११-३९

दसमोद्वार—योगी जहां पर साँसों को चढ़ा लेते है। ११-५३

द्वाराका दास—एक सिख द्वारका-काठियावाड़ की एक प्राचीन पवित्र पुरी जिसे हिन्दू लोग चार धामों में से मानते हैं। कृष्ण जी यहीं के निवासी थे। ११-६०

दानव—माखो नामक दैत्य जिसने नवें गुरु जी को आनन्दपुर नगर बसाते समय यह कह कर डराया था कि नगर उसके निवास स्थान पर न बसाया जाये। जब गुरु जी पर उसका बस न चला तो उसने अपना नाम कायम

रखने के लिये प्रार्थना की । गुरु जी ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके आनन्दपुर का नाम माखोवाल रखा । ११-२९

दिवान—सभा, सत्संग । १०-१२

द्रुहण--ब्रह्मा । ११-५०

दुरनिरीछना—न दिखाई देने वाली देवी । ११-५०

दुशटदमन—दुष्टों का नाश करने वाला । देवी ने यह वरदान गुरु गोबिंद सिंह जी को दिया था । अत: आपको दुष्ट दमन भी कहते हैं । ११-५१

दुरजोधन—कुरू वंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ट पुत्र । ११-१५

देश बंगाल—बंगाल प्रांत । १२-४

देग—चौड़े मुंह वाला बरतन, जिसमें कड़ाह प्रसाद त्यार करके रखा जाता था । यहां पर देग 'कड़ाह प्रसाद' के लिये प्रयुक्त किया गया है । ११-३१

देसराज—सरवर के एक पुजारी का नाम जो भिक्खी ग्राम का सरदार था । गुरु तेग़ बहादुर जी ने इसके गले में से सरकार की छड़ी निकाल कर पांच तीर प्रदान किए थे और बरदान दिया था कि वे तीर उसकी रक्षा करेंगे । ११-३८

दैत बली बल—बलीबल नामक दैंत्य । ११-४३

द्रोपती—राजा द्रुपद की पुत्री पाण्डवों की पत्नी इसे द्रुपदसुता भी कहते हैं । ११-४६ ११-३

दौलतखां—लोधी शासक जिसके पास गुरु नानक देव जी ने नौकरी की थी । १२-१६

दाउ—एक सिख । १०-२

द्वाबा देश—दुआब, दो नदियों के बीच का प्रदेश—पंजाब में व्यास तथा सतलुज नदी के बीच का क्षेत्र । १०-२०

दासू तथा दातू—दूसरे गुरु जी के दो पुत्र । १०-२

दिवोदास—चंद्रवंशी राजा भीमरथ के पुत्र का नाम । १०-२५

दारा शिकोह—औरंगज़ेब का भाई । १०-४०

दुरग गवालियर—गवालियर का किला जिसमें मुग़ल शासक जहांगीर ने ५२ राजाओं और छठे गुरु जी को बंदी बना कर रखा था और छठे गुरु जी ने ५२ राजाओं को मुक्त करवा दिया था । १०-३२

धंना—एक प्रसिद्ध भक्त, जिसके पशु भगवान स्वयं चराया करते थे । ११-५४

धमधान—एक गाँव । ११-४१

धनेसर—कुबेर । ११-५८

धरमराज—राजा युद्धिष्टर । ११-६०

ध्रमसाला—धर्मस्थान; गुरुद्वारा । ११-२८

धीरमल्ल—(१) एक मसंद । १०-१

(२) सातवें गुरु का छोटा भाई और नवें गुरु का भतीजा जिसे गुरु जी के साथ शत्रुता करने के कारण सिक्ख समाज में सत्कार की दृष्टि से नहीं देखा जाता । १०-१९

धुंधु—मधुराक्षस का पुत्र । १०-२४

ध्रू—ध्रुवतारा, एक भक्त । ११-३३

धेनक—एक दैत्य । ११-६०

धोबन—आसाम की एक जादूगरनी जिसे गुरु तेग बहादुर जी ने निस्तेज किया था । १२-९

नन्दलाल—एक सिक्ख । ११-४२

नईमखार—संस्कृत नैमिषारण्य (नीमखार) एक प्राचीन वन जिसे आजकल हिन्दुओं का एक तीर्थ माना जाता है। यह स्थान उत्तरप्रदेश के सीतापुर जिला में है । १०-२६

नरदक देश—हरियाणा के हिसार, गुड़गाँव ज़िलों का इलाका । १३-३३

ननेड़ी—एक गाँव । १२-५७

नत्था भाई—ढाका का एक सिख । १२-५

नव निद्धनि—कुबेर के नौ प्रकार के खजाने । १२-१०

नामदेव—महाराष्ट्र का एक भक्त जिसकी वाणी गुरु ग्रंथ में दरज है। नामदेव छीपा जाति का था और एक दंतकथा के अनुसार ईश्वर ने उसके लिए नया छप्पर (भवन) बनवाया था । ११-५४

नानक बाबा—पहले सिक्ख गुरू । १०-२१

नाभे पुरि—पंजाब का नाभा नगर जो कि पहले राजा की रियासत थी । १०-६

नानकी—(१) गुरु तेग बहादुर जी की माता, गुरु हरिगोबिंद जी की पत्नी। १०-५६

(२) गुरु नानक देव जी की बड़ी बहन ।

नारद—एक प्रसिद्ध देवर्षि जो कलह प्रिय थे । १२-१

निनावा—गुरु के सिक्ख भगतू का पुत्र । १०-१२

निकाह—मुसलमान रीति का विवाह । १२-५१

निगामोद—निगमबोध, दिल्ली के पास यमुना नदी के किनारे पर एक पवित्र स्थान, एक घाट । १२-६७

नीलकंठ—शिव का एक नाम । ११-५४

(माता) नेती—सातवें गुरु जी की माता का नाम । १०-१२

नैनादेवी—हिमाचल में एक देवी का स्थान । ११-२७

नौरंगशाह—मुग़ल शासक औरंगजेब । १०-२७

पंचाम्रित—कड़ाह प्रसाद । ११-२३

पंघूरा—गुरु ग्रंथ साहब रखने का खटोला। ११-२६

पंचबीर—एक विश्वास के अनुसार भैरव, हनुमान आदि पांच वीर जो संकट के समय श्रद्धालुओं की रक्षा करते है। ११-३८

पंथ खालसा—सिख समुदाय। ११-५२

पंजाल—कश्मीर में स्थित एक पर्वत का नाम। १२-२८

पंनग—नाग। १२-२१

पंजोखरा—पंजाब का एक गाँव। १०-३७

पग पाहुल—चरणामृत। १२-४४

परपौता—पोते का बेटा, आठवें गुरु जी की ओर संकेत है। ११-१

पटणे नगर-पटना, बिहार प्रांत की राजधानी जहां पर गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म हुआ था। 'जन्म स्थान' नामक गुरुद्वारा वहां पर बना हुआ है। ११-५७

पटियाला—पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर जो कि पहले एक रियासत थी। १०-९ १२-३०

पशौर—पेशावर, पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर। १०-३७

पारबती—शिव की पत्नी। १२-२७

पारसी—(१) फारसी भाषा। १०-४३

(२) पारस देश का निवासी।

पाद पखारे—चरण धोकर चरणामृत देने की पुरानी रीति के अनुसार आठवें गुरु ने राजा जय सिंह तथा उसकी पटरानी को चरणामृत दिया और अपना सिख बनाया। १०-४७

प्रिथीए—गुरु रामदास जी के बड़े पुत्र का नाम, पृथीचंद। १०-१९

प्रिथोदक—पृथूदक, एक प्राचीन तीर्थ-स्थान जो सरस्वती नदी के दक्षिण तट पर स्थित है। आजकल इसे पिहोवा कहते हैं। १२-५६

पिनाकू—पिनाक नामक धनुष। १२-२७

पीर—मुसलमान संत। ११-३०

पुरशोतम—मर्यादा पुरुषोतम राम चन्द्र जी। ११-१७

पुरहूत—इन्द्र। १०-३२

पुनरबस—पुनर्वसु, सताईस नक्षत्रों में से सातवां। १०-५४

पुरिहसतन—हस्तनापुर, दिल्ली का प्राचीन नाम। ११-६१

पुरिकरतार—कर्तारपुर, अमृतसर जिला का एक नगर जिसकी नींव पंचम गुरु जी ने रखी थी। १०-१

पुरंदक—इन्द्र। ११-५०

पूतना—एक राक्षसी जो कंस की प्रेरणा से गोकुल में कृष्ण को मारने के लिए गई थी, परन्तु वह कृष्ण द्वारा स्वयं मारी गई थी। ११-६०

पैसे पंच नलेर—सिक्ख गुरुओं की यह रीति थी कि अपने उत्तराधिकारी

गुरु के आगे पांच पैसे तथा एक नारियल रखकर उसे गुरुआई सौंप देते थे। यहां पर भी आठवें गुरु जी ने उसी रीति का पालन किया। १०-५२

पौन पुत्र—पवनपुत्र; भीमसेन पाण्डव। ११-६०

फगो चाचा—सहसराव नगर का एक प्रसिद्ध सिक्ख जिसने गुरु तेग बहादुर जी के निवास के लिए नये भवन का निर्माण करवाया था। ११-५४

फलगू—बिहार प्रांत की एक नदी; जगाधरी के पास एक तीर्थ स्थान। ११-५७

बरे—एक गाँव। ११-४०

बरंब्रूह—वरदान मांग। ११-५१

बड़े—कामरूप के राजाओं के पूर्वजों की ओर संकेत है। १२-९

बठिंडा—पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर। १०-१०

बरार—एक जाति। १०-१०

बलख बुखारा—अफग़ानिस्तान का एक प्रांत। १०-१६

बड़वानल—बड़वाग्नि, समुद्र में जलने वाली आग। १०-४७

बकाला—अमृतसर ज़िला का एक नगर जहां पर नवें गुरु जी प्रकट हुए थे। आठवें गुरु जी के देहांत के पश्चात् यहां पर सोढी वंश के २२ व्यक्ति अपने आपको गुरु कहलाने लगे थे और मसंदों की सहायता से अपनी पूजा करवाने लगे थे, परन्तु अंत में गुरु तेग बहादुर जी ही वास्तविक गुरु प्रकट हुए थे। १०-५२

बनजारे—लुबाणा जाति के सिक्ख। १२-६७

बखतरपोश—जिसने कवच पहन रखा हो, योद्धा। ११-५०

बरखेशीआन—अपनी जड़ आप उखाड़ने वालों की कुल। ११-४१

ब्रह्म पुत्र—भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो मानसरोवर से निकल कर आसाम प्रांत में से होती हुई बंगाल की खाड़ी में जा गिरती है। ११-४५

बणी बदरपुर—एक गांव, यहां पर गुरु जी की स्मृति में गुरुद्वारा बना हुआ है। ११-४५

बहिलो—एक जाति। १०-२७

बभीखन—विभीषण, रावण का भाई जिसे रामचन्द्र जी ने लंका का राजा बनाया था। १०-४०

बांगर बांगड़, हरियाणा के हिसार, करनाल तथा इसके आस पास का इलाका। ११-४१

बारना—कैथल के इलाके का एक गांव। ११-४४

बाला—तलवंडी का एक जाट जो गुरु नानक देव जी के साथ देश विदेश में भ्रमण करता रहा माना जाता है। १२-२४

बाबर—पहला मुग़ल शासक जिसने सिकन्दर लोधी को हरा कर मुग़ल साम्राज्य की नींव रखी। १२-६१

बाज—एक मांसाहारी पक्षी; गुरु गोबिंद सिंह जी के पास सफेद रंग का बाज था। ११-२७

बाहिया—बाईस गाँवों के समूचे इलाके का नाम जो जिला भटिण्डा में हैं। ११-३४

बामनी—गया के एक घाट का नाम। ११-५७

बिसाखी—वैशाख मास का पहला दिन जिसे पर्व के रूप में मनाया जाता है, वैसाखी। ११-२१

बिपासा—पंजाब की व्यास नदी ११-२३

विंध्याचल—विंध्य भारत के मध्य में पूर्व पश्चिम में फैली पर्वत श्रेणी। ११-५०

ब्रितासुर—एक दैत्य ११-६१

ब्रिहदरथ—वृहद्रथ, एक राजा जो जरासंध का पिता था। यहां पर जरासंध के जन्म का वर्णन किया गया है। ११-५९

ब्रिध—एक मुखिया सिख जो पहले गुरु जी से लेकर छठे गुरु जी तक रहा। १०-२

बिराड़—एक जाट जाति। १०-४

बिलावल—एक प्रकार का राग १०-१२

बिशनु—विष्णु, एक प्रसिद्ध हिंदू देवता जिसे सृष्टि का पालन पोषण करने वाला माना जाता है। १०-२२

बिस्वामित्र—विश्वामित्र, एक ब्रह्मर्षि। १०-२५

बिदर—(१) एक कृष्ण भक्त, जो कि एक दासी का पुत्र था।

(२) पांडु के छोटे भाई का नाम। ११-४६

बिशनसिंह—एक राजपूत राजा १२-१

बुलाढ़ा—भटिण्डा जिला का एक नगर, बुढलाढा। ११-४१

बुलाकीदास—पूर्व के एक ससंद का नाम। १२-४१

बूड़ा—एक सिख १०-२

बेदी—खत्रियों का एक वंश गुरु नानक देव जी इसी वंश में से थे। १०-२७

बेल—सुबेल- दो दैत्य ११-५०

बैतरनी—वैतरणी, नरक स्थित एक नदी का नाम। १२-२०

बैसनो धरम—वैष्णव धर्म जिसके अनुयायी शाकाहारी होते हैं। ११-४७

भंदेहरी—एक गाँव ११-३६

भगतू—एक सिख १०-२

भक्खर—दुआब सिंध सागर का एक नगर १०-१६

भगवती—भीमा, भद्रा, भैहरा भवानी अथवा देवी के नाम ११-५०

भल्लयनि भल्ला जाति के लोग; तीसरे गुरु अमरदास जी इसी जाति में से थे। १०-१

भृगुसुत—शुक्राचार्य १०-२६

भांग मुशट—यह पंक्ति मुग़ल शासक बाबर की ओर संकेत करती है जिसे एक कहावत के अनुसार गुरु नानक देव जी की भांग की मुट्ठी के देने पर राज्य करने का वरदान मिला माना जाता है। ११-५०

भाई बिध—गुरु जी का एक प्रसिद्ध सिख १०-२
१०-१८

भाट नकीब – राजाओं तथा बड़े लोगों का यश गायन करने वाली एक जाति। १०-१२

भिक्खी—एक गाँव ११-३७

भिंभर—जम्मू प्रांत का एक नगर। १२-२८

भीख—भीखनशाह नामक एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर जो कुहड़ाम गाँव का निवासी था और जो गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म के तुरंत पश्चात् दर्शन करने के लिए पटना को चल दिया था। वहां पर इसने बालक गुरु जी के आगे एक मटकी में दूध और दूसरी में पानी रख कर परख की थी कि आप हिन्दुओं के गुरु हैं अथवा मुसलमानों के पीर। गुरु जी ने दोनों पर अपने हाथ रख कर यह सिद्ध कर दिया था कि आप किसी विशेष वर्ग अथवा जाति के लिए नहीं आए, सब के साझे हैं। १२-१४

भीलनी—जंगली जाति की स्त्री, जिसने प्रेम में आकर रामचन्द्र जी को झूठे बेर खिलाए थे और रामचन्द्र जी ने उसका उद्धार किया था। ११-४६

भीम—युद्धिष्टर के छोटे भाई, जो अर्जुन से बड़े थे। ११-६०

भुसथला—एक गाँव। १२-५८

भूपाल—(१) एक गाँव।
(२) मध्य प्रदेश की राजधानी। ११-३६

भूरा—ऊनी वस्त्र, कम्बल ११-४१

भैरव—शिव के गण ११-५०

मंजी—गद्दी, खाट, खेटाला। १०-५६

मंत्रनि—जादू टोने। १२-१

मनि—साँप की मणि। १२-२१

महिलां—गुरु जी की पत्नी। १०-१३

मधुकैटभ—एक दैत्य का नाम। १०-२२

महांदेव—गुरु रामदास जी का पुत्र और गुरु अर्जुन देव जी का बड़ा भाई। १०-२९

मक्खणशाह—एक प्रसिद्ध व्यापारी सिक्ख जिसके डूबते हुए जहाज़ की रक्षा गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी दैवी शक्ति से की थी। इसी सिख ने बकाला नगर में गुरु तेग़ बाहदुर जी को सच्चा गुरु प्रकट किया था। ११-३

मद्रदेश—रावी और जेहलम नदियों के बीच का क्षेत्र, पंजाब प्रांत। ११-३

मईआ—एक सिख। ११-३४

मनमुक्खनि—मनचीता काम करने वाले, गुरु जी की आज्ञा के अनुसार न चलने वाले। ११-३६

मसंद—गुरुओं की ओर से श्रद्धालुओं से भेंट इकट्ठी करने वाले। १०

मघवा—इन्द्र । १२-६६

मरदाना—एक डोम जो गुरू नानक देव जी का बालसखा था और जो आजीवन उसके साथ रहा और रबाब नामक यंत्र बजाकर गुरू जी के साथ मिलकर गुरुबानी का कीर्तन करता रहा । १२-२४

मतीदास—गुरू तेग़ बहादर जी का एक निकटवर्ती सिक्ख जिसे दिल्ली के चाँदनी चौक में आरे से चीरकर गुरू जी से पहले मुग़ल शासक औरंगजेब द्वारा शहीद करवा दिया गया था । १२-२६

मकरोड़—एक गाँव ११-४१

महंत—साधु समाज का प्रधान ११-४३

मधसूदन—मधुसूदन, कृष्ण का एक नाम ११-४६

मलूक दास—एक साधु जिसने गुरू तेग़ बहादर जी के बारे में यह सुनकर कि आप शिकार करते हैं, उनके दर्शन करने के विचार का त्याग कर दिया था, परन्तु बाद में जब गुरू जी ने दैवी शक्ति द्वारा उसके भोजन के थाल में दाल, चावल आदि भोजन की अपेक्षा मांस आदि की झलक दिखाई, तब उसका संशय दूर हुआ । ११-४७

मथरा—मथुरा । उत्तर प्रदेश में यमुना के किनारे बसा एक प्राचीन नगर जहां पर कृष्ण जी का जन्म हुआ था । ११-६०

महीज—किसानों की एक जाति । १०-६

मान सिंह—एक राजपूत राजा जो अकबर का समकालीन था । १२-१

मायापुरी—हरिद्वार के पास एक नगर १२-४५

मानिकपुर—एक नगर । ११-४७

मागध—मगध, दक्षिण बिहार का प्राचीन नाम । ११-६०

माझा देश—केन्द्र पंजाब १०-२

मीणनि—धीरमल्ल के अनुयायी जिन्हें गुरुओं के साथ ईर्ष्या करने के कारण सिक्ख धर्म में सत्कार का दृष्टि से नहीं देखा जाता । १०-५२

मुरीद—चेले । ११-३०

मुसल्ला—वह चटाई जिसे बिछाकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं । १२-१४

मुहंमद—अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम संप्रदाय चलाया । १२-२७

मुल्लां मुलाना—मुसलमान धर्म के ज्ञाता, पण्डित । १२-४८

मुंगेर—एक नगर । १२-४

मुलतान—एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो अब पाकिस्तान में है । १०-१६

मुहरू—एक व्यक्ति का नाम । १०-२

मुशटक—मुष्टिक नामक वंश के दरबार के एक पहलवान का नाम । ११-६०

मुसाहिब—मुसाहब, औरंगज़ेब के पार्श्ववर्ती । १०-४०

मुगलसखां – एक मुग़ल शासक। १०-१३

मूलोवाल— एल गाँव। ११-३४

मेहां—नंदलाल का बेटा। ११-४२

मेवड़े—गुरू के हुज़ूरी सिक्ख जो सिक्खों द्वारा लाई गई भेंटों को गुरु जी की ओर से स्वीकार करते थे। १०-११

मौड़—एक गाँव, जहां पर गुरु जी को देसराज को दोबारा सरवर की पूजा में लग जाने और गुरु जी को पांच तोड़ डालने का पता चला था। ११-३९

रंगाभाटी –आसाम प्रांत में एक स्थान जहां पर गुरु तेग़ बहादर जी की स्मृति में गुरुद्वारा बना हुआ है। १२-१

रंघर—जाटों की एक जाति। १३-३३

रबाब—तार वाला एक यंत्र। १०-१२

रबाबी —रबाब बजाने वाले डोम जाति विशेष जो गुरवाणी का कीर्तन किया करते थे। १०-१२

रलीए—रल्ला नामक गाँव। ११-३६

रघूबर—राम चन्द्र। १०-१८

राइ बुलार—तलवंडी का मुसलमान शासक जो गुरू नानक देव जी का अनुयायी बना था। १२-१६

रजोरी पुरि– जम्मू-काशमीर का एक नगर। १२ २८

रक्तबीज –एक दैंत्य का नाम। ११-५०

रांकापति —चन्द्रमा। ११-४६

रामराय सातवें गुरू जी का ज्येष्ठ पुत्र जिसने औरंगज़ेब को करामातें दिखाई थीं, जिसके कारण गुरु हरिराय जी ने इसे गद्दी से वंचित कर दिया था। १०-१९

रामदास गुरू—चौथे सिख गुरु। १०-४

रामायन—रामायण, एक ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन है। १०-२४

राजसूअ—राजसूय, वह यज्ञ जिसे करने वाला केवल सम्राट ही होता है। ११-६०

रावण—लंका का प्रसिध्द राक्षस राजा जिसे रामचन्द्र ने मारा था। १२-६२

रिटिव—उतंक ऋषि की ओर संकेत है, जिसने राजा वृहदशव को 'धुंधा' नामक दैंत्य का बध करने को कहा था। १०-२२

रोपर—पंजाब का एक नगर, रोपड़। ११-३०

१०-२२

लंमे देशनि—दक्षिणी क्षेत्र। १०-३७

लवपुरी लाहौर का पुराना नाम। लाहौर नगर अब पाकिस्तान में है। १०-१३

लखनौर एक गाँव जहां पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने खारी जल की धरती के होते हुए कुँआ खुदवाकर मीठा जल निकलवाया था। १२-४५

ललाबेग कंबर — कंबर जाति का ललाबेग नामक तुर्क।

लालो शूद्र एमनाबाद का खाती जिसके भोजन में से गुरू नानक देव जी ने निचोड़ कर दूध निकाला था और उसके घर में रहकर जाति पाति के भेद भाव को खत्म किया था। ११-४६

लुबाणा सिक्ख सिरकी आदि बनाने वाली सिक्ख श्रेणी। १२-६०

लूखी — एक गाँव। १२-५८

लोहीआ — काले नामक व्यक्ति का भतीजा। १०-९

वरुण — एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। १०-२६

विनत सूत—गरुड़। १०-२५

विपासा — पंजाब की व्यास नदी का प्राचीन नाम। १०-२

शकरगंग—वह स्थान जहां पर पंचम गुरू जी ने कुँआ लगवाया था। १०-१८

शजादा —औरंगजेब का पुत्र। १०-४३

शत्रु अजात — राजा युध्दिष्टर, पाण्डवों में से सबसे बड़ा। ११-६०

श्याम दास गुरु तेग़ बहादर जी के भाई सूरजमल के पोते का नाम। १२-५६

श्री गुरु हरिगोबिन्द की दारा— नानकी, गुरु तेग़ बहादर जी की माता। ११-१५

श्री माता — आठवें गुरू जी की माता। १०-३६

श्रोणा सीलता—श्रोणभद्रा नदी। ११-६०

शाहजहां — मुग़ल शासक जिसने आगरा का ताजमहल बनवाया था। १०-२७

शाहु—औरंगज़ेब के लिए प्रयुक्त किया है। १०-३३

शिकरा—एक प्रकार का बाज पक्षी। १२-२१

शीहा—एक मसंद का नाम जो धीरमल्ल के पक्ष वाला था। ११-११

शेखे—एक गांव। ११-३४

संघेड़ा—एक जाति। १०-२

संदली—काले के भतीजे का नाम। १०-९

संन्यासी— एक साधु संप्रदाय जिसे वैरागी त्यागी भी कहा जाता है। ११-५४

सतद्रव—पंजाब की सतलुज नदी ११-४

सय्यद—मुसलमानों की एक जाति। मुसलमान धर्म के अगुआ हज़रत मुहम्मद इसी जाति में से थे; ११-३०

एक मुसलमान फकीर जिसकी पूजा वृहस्पतिवार को की जाती है। ११-३७

सीलता सासुरी—एक प्राचीन नदी जो पंजाब के कुरुक्षेत्र के समीप बहा करती थी। ११-४३

सत, रज, तम— सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण, तीन गुण। ११-४२

ससे—खरगोश। ११-४९

समत शिंग— हिमालय की सात चोटियों वाली पर्वत श्रृंखला जहां पर

बैठ कर गुरु गोबिंद सिंह जी ने इस संसार में जन्म लेने से पहले कई युग तपस्या की थी। ११-५१

सहसराव—ससराम नगर। ११-५४

सद्दू—एक सिक्ख। १०-२

सच्च खंड—स्वर्ग। १२-६६

सरमद—वह मुसलमान फकीर जिसे दिल्ली की जामा मस्जिद के पास औरंगजेब ने इस लिए मरवा दिया था क्योंकि उसने औरंगज़ेब के गुरु तेग बहादुर जी के प्रति व्यवहार की निंदा की थी। १२-६६

सहदेव—राजा जरासंध का पुत्र। ११-६१

संगलादीप—भारत के दक्षिण में स्थित एक द्वीप, जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं। गुरु नानक देव जी ने सिंहल के राजा शिवनाम को अपना अनुआई बनाया था। ११-५४

सबरी—भीलनी, जिनके झूठे बेर प्रेम वश होकर रामचन्द्र जी नें खाए थे। ११-५४

स्यामल बारी—काले जल वाली यमुना नदी। ११-४८

संतदास—गुरु के सिक्ख भगतू का पोता और जीवन का पुत्र। १०-१९

सगर—एक सूर्यवंशी राजा। १०-२४

संतोख सिंह—गुर प्रताप सूरज का रचियता, कवि। १०-२७

संगत—सत्संगी पुरुषों का समूह। १०-३६

सलामालेकम—मुसलमानों का प्रणाम। १२-३३

समाना—पटिआला जिला का एक नगर। १२-३२

स्राप—अभिशाप, आठवें गुरू जी की परीक्षा लेने कारण संतान के दुख का अभिशाप दिया था। १०-४७

सिरहंद पटियाला ज़िला का एक प्रसिध्द नगर सरहंद, जहां के मुगल शासक ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दो पुत्रों को जीवित दीवार में चिनवाकर शहीद करवा दिया था। ११-२९

सिआणा—एक गांव। १२-५६

सिद्धूअनि—एक कुल का नाम। ११-४१

सिक्खी—सिक्ख समुदाय। १०-५५

सिध्द अठारहिं—अठारह प्रकार की सिध्दियां। १०-१६

सिरोपाव—वरदान के रूप में दी गई पूरी पोशाक। १०-१६

शिव की पुरी काशी। १२-४३

सीतल—सीतला, चेचक। १० ४१

सुरसरी—गंगा नदी। ११-४७

सुधासर—अमृत सरोवर, अमृतसर नगर। १०-२

सुमुंड-एक मुनि का नाम सभुन्द नाम का एक राक्षस। १२-२३

सुखमनी एक वाणी का नाम जो पंचम गुरु जी की रचना है। ११-८

सुग्रीव—बालि का छोटा भाई जो रामचन्द्र जी का सखा था। १०-४०

खुढेल-एक गांव। ११-५४

सूरज सुता—यमुना नदी। १२-५४

सूलीसर-एक गांव। ११-४०

सूली—मृत्यु दंड देने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला यंत्र। ११-४०

सूरज ग्रहण—राहू द्वारा सूर्य का आच्छादन। इस अवसर पर हिंदू-तीर्थों पर मेले लगते हैं। ११-५३

सूरजमल सोढी—छठे गुरु जी का पुत्र। १०-२०

सूत—पुराणों की कथा करने वाला। ११-४७

सैफ़दीन—एक मुग़ल शासक जिसने सैफाबाद नामक नगर बसाया था। १२-३१

सोहींवाल—एक गाँव। ११-३५

सोदामा—कृष्ण का एक सहपाठी मित्र जो बहुत दरिद्र था। ११-४६

सोढां कुल टीका सोढियों के कुल के शिरोमणि, अर्थात् श्री गुरु हरिकृष्ण जी, आठवें सिक्ख गुरु। १०-३७

सोढी एक वंश। १०-१

हलिहरि—कृष्ण तथा बलभद्र। ११-६०

हरिराय—सातवें सिक्ख गुरु। १०-१

हरि क्रिशन—आठवें सिक्ख गुरु। १०-१

हरीके एक गाँव। १०-२

हरिगोबिंद—आठवें सिक्ख गुरु। १०-२

हजरत—औरंगजेब की ओर संकेत है। १०-४३

हरिचंदौरी—गंधर्व नगर, मिथ्या नगर। १०-५०

हरीद्वार—प्रसिध्द हिंदू तीर्थ। १२-४५

हलबी—टर्की का एक प्रसिध्द नगर। १२-६५

हरिमंदर—अमृतसर का स्वर्ण मन्दिर ११-२१

हडिआए—संगरुर जिला का एक नगर जहां पर नवें गुरु जी ने ज्वर से पीड़ित लोगों को छोटे से सरोवर में स्नान करने से स्वस्थ होने का वरदान दिया था। ११-३४

हली—बलराम। ११-४७

हासी—हरियाणा के हिसार ज़िला का एक नगर, हांसी। १२-३३

हिंदवनि गुरु—हिन्दुओं का (गुरु) गुरु तेग़ बहादुर जी की ओर संकेत है। ११-३०
१२-३८

हिसार—हरियाणा प्रांत का एक नगर १२-३३

हीस—एक प्रकार की कंटीली लता। ११-३०

हुंडी—ऋण लेने तथा देने से संबंधित पत्र। ११-५

हुकमनामा—गुरुओं द्वारा सिक्खों को लिखा जाने वाला आज्ञा पत्र। १०-२२

हेमकूट—हिमालय में वह, स्थान जहां पर गुरु गोविंद सिंह जी ने पहले जन्म में तपस्या की थी। ११-४९

हेहर—एक जाति। १०-२

हौद—हौदा, हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला चौखटा जिसमें सवार बैठते हैं। १२-२१